तीर्थ विधान पद्धतिः



मन्दिर श्री केदारनाथ जी



[परमेष्ठी ब्रह्मणे ब्रह्म स्वयम्भु ब्रह्मणे नम]

प्रकाशक—

ग्रन्थकार—विश्वनाथ शर्मा लाल मोहरिया

पता—

पं० विश्वनाथ नेत्रप्रसाद शर्मा

लालमोहरिया गुप्तकाशी

गढ़वाल उत्तर प्रदेश

प्रति १०००] श्री सम्वत् २०१७ के अषाढ़ सुदी [मूल्य ६)

तीर्थ विधान पद्धतिः

समर्पण

श्री भारत सरकार की सेवा

में

समर्पित

अतएव इस आश्रित की यह शुभकामना।
मङ्गल मय हो यही मेरी प्रार्थना है॥

जय हिन्द

सम्वत् २००११ आषाढ़ शुदि

प्रकाशक—
ग्रन्थकार—विश्वनाथ शर्मा आलमोहरिया
पुरोहित श्री केदारनाथ जी
ग्रा० [illegible] पो० गुप्तकाशी
[illegible]



मुद्रक—पं० बिहारीलाल शुक्ल
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस,
लखनऊ

भूमिका:

श्री गणेशाय नमः ॥ तीर्थ शब्द का सामान्य अर्थ होता है कि जिसके द्वारा पापादि से तैरा जाता है अर्थात् पापों के अथवा अज्ञानादि के फल रूप दुःख सागर में डूबने से बचा जाय। वह तीर्थ शब्द वाच्य कहलाता है। तीर्थ शब्द के अनेक अर्थ होते हैं अर्थात् तीर्थ बहु शब्द वाच्य है। यथा—अङ्गुष्ठ मूलस्य तले ब्राह्म तीर्थं प्रचक्षते कायनं गुली मूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयो रधः ॥ मनु ॥ याज्ञवल्क्यस्मृति में भी लिखा है कनिष्ट देशिन्य गुष्ट मूला न्यग्रं करस्यच प्रजापति तीर्थं। और अग्रभाग में देव तीर्थ और प्रदेशिनी तर्जनी तथा अङ्गुष्ट के बीच में पितृ तीर्थ कहलाता है। अतः इन इन स्थानों से ही ब्रह्मा आदि देवताओं के लिये तर्पणादि का जल छोड़ना चाहिये संध्योपासन आदि के समय ब्राह्म तीर्थ से आचमन करना चाहिये प्राजापत्य तीर्थ काही नाम ऋषि तीर्थ है। क्योंकि कनिष्ठिका के मूल पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्ग में साढ़े तीन कोटि तीर्थ हैं। परन्तु यहां तो वर्णनीय केदारादि पृथ्वी के ही तीर्थ स्थावर मुख्य हैं। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार रस रुधिरादि सात धातुओं वाले एक ही शरीर में कोई अंग पवित्र कोई मध्यम कोई निकृष्ट माना जाता है। यथा—ऊर्ध्व नाभेर्मेध्य तर पुरुषः परि कीर्तितःयस्मात्मेध्यतमस्त्वस्यमुख मुक्त तपं भुवाः। मनु०॥ अतएव पृथ्वी का कोई खास स्थान अथवा जलाशय अति पवित्र माना जाता है। अतः वही मुख्य तीर्थ कहलाता है। पृथ्वी में कहीं पाषाण मृत्ति का आदि अंशो में सत्व गुणी प्रभाव है॥ और कहीं जल में स्वच्छता पवित्रता आदि गुण हैं इसीलिये इन भूस्थित केदारादि तीर्थों में जप तप दान स्नान तर्पण पिण्ड श्राद्ध पट् रात्रि निवासादि रेतोदकपान मत्र विन् करने का बड़ा महात्म शास्त्रों में वर्णित है। अर्थात् सत्यादि रूप धर्मों का आचरण करने से तीर्थ सेवी (यात्री) उत्तम फल को पाता है। और जन्म जन्मान्तरीय कर्म बन्धनों को दूर कर निर्वाणपद (मोक्ष) को भी प्राप्त कर लेता है: गृहस्थी के लिये तीर्थाटन तीर्थ सेवन ही एक ऐसा शान्ति प्रद मार्ग है जिसमे आकर कम क्षण के लिये अपने सभी झंझटों को भूलकर परमात्मा के चिन्तन में लग लग जाता है। तथा सत्संगादि के धारण सत्य बोलना संयम पर रहना अहर्निश भगवद् भक्ति

में लीन होजाना दया शीलता क्षमता दानता आदि का होना सुलभ होजाता है । जिससे वह तीर्थ यात्री अपने सर्व प्रकार के पापों से तैर कर इस संसार सागर से भी पार होकर अन्त में स्वर्ग सुख का अनुभव करने लगता है । इन्हीं तीर्थों में मनुष्य के लिये विशेष सुख लाभादिक फल कहे गये हैं। इसी कारण ज्ञानि महर्षियों ने तथा अवतारी पुरुषों ने तीर्थों का ज्ञान महात्म स्थापित किया है। अतः एव पूर्व काल में ही विरक्त ज्ञानी पुरुष बद्री केदार काशी आदि तीर्थों में यागङ्गा (हरद्वार) के एकान्त स्थान में निवास करते हैं । इन विरक्त ज्ञानी तथा उत्तम कोटि के धार्मिकों से भिन्न मध्यम कोटिके साधारण मनुष्य बहुत से हैं। उन सब के लिये तीर्थ सेवन सबसे अधिकतर उपयोगी है जिसका होना पूर्व पुराय के अनुसार स्थिर है। ब्रह्म पुराण मैं लिखा है कि—यो य क—श्चि त्तीर्थ यात्रां गच्छेत् । सु सयतः स च पूर्व गृहे स्वे कृतो वास शुचिर प्रमत सं पूजयेद् भक्ति रसाद् गणेशम् ॥ देवान् पितॄन् ब्राह्मणान् पूजयेच्च एवं कुर्वतस्तस्य त्तीर्थे यदुक्त फल तस्स्या त्रात्र सन्देहं एवं इत्यादि अनेक शास्त्रों से कथित तीर्थ सम्बधी कर्त्तव्य कर्मों की विहित ता होने से तदनुसार तीर्थ यात्रा करने से मुख्य शुभ फल मिलता है। अत: मैं अपनाभूत पूर्व लिखित तीर्थ कर्म पद्धति की पूर्व त्रुटियों को न्यूनाधिक रूप से तथा उक्त पद्धति के प्रथम सस्करणीय प्रकाशक महोदय ने पद्धति लेखक के अलिखित प्रमाणों से भूमिका लेखक के साथ अप्रिय शब्दों का उल्लेख किया उसके लिये उक्त पद्धति के लेखक को अमान्य हुये । जिसके कारण उक्त महोदय की आज्ञा का पालन कर पूर्व पद्धति की सबही त्रुटियों को न्यूनाधिक रूप से यथा (अवशिष्ट कर्मों) विधः इस द्वितीय संस्करण तीर्थ विधान नामक पद्ध तिको निम्नतकिया जो सभी पुरोहिताई कर्म कराने वालों के लिये अत्यन्त ही उपयोगी रहेगी। पद्धति का प्रकाशित करने का अधिकार सग्रह कर्ता को ही रहेगा यद्यपि आजकल तीर्थों में प्रचलित कर्मों के करने वाली बहुत पद्धतियाँ प्रकाशित होगई हैं और हो रही हैं किन्तु ये कोई तो विस्तृत और कोई संक्षिप्त होने के कारण कर्म्म कराने में नव पुरोहितादियों को विशेष सौकर्य नहीं प्रतीत होता है और अब इस पद्धति मे मुझे पूर्ण विश्राम है कि सभी कर्म कराने वाले पुरोहितों की यह कठनाईयां दूर करदी गई यदि संग्रह करते हुये तथा प्रेश द्वारा भी त्रुटियां रहगई हों तो विद्वजन सूचित कर क्षमा करेंगे। यहां पर

अत्यन्त खेद से लिखना पड़ता है कि स्वर्गवासी पं० रुद्रदत्त शर्म्मा पोस्ती तथा स्वर्गवासी पं० तारादत्त जी शर्म्मा कुर्म्माञ्चली इन पितरों की कृपा से मुझे कुर्म्माञ्चल देशीय तथा अन्य देशीय पद्धति अद्धयनार्थ प्राप्त हुई जिनके द्वारा मुझे इस विषय पर राष्ट्र सेवा कुछ ही अंशों पर करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। और अपने माननीय आठ सयाना अठ्ठारह वीशी पञ्च पण्डा मण्डली का सादर अभिवादन करते हुये अपना शुभ शौभाग्य प्रकट करता हूं कि जिनके द्वारा श्री केदारनाथ संस्कृत विद्यालय शोणित पुर में स्थापित होकर जिसके सुसंचालक तथा शिलान्यास स्वर्गीय पण्डित् नारायणदत्त शर्म्मा शास्त्री लाल मोहरिया तथा स्व० पं जगन्नाथ शर्म्मा बगवाड़ी तथा स्व० पं० विहारीलाल शर्म्मा सेमवाल तथा पं० रामकृष्ण जी शर्म्मा पोस्ती जी द्वारा हुआ इन्हीं महर्षियों की असीम कृपाओं से इस अन्धकार मय जगत् में अपनी पूर्व संस्कृती का स्वप्न देखा जिसके फल स्वरूप ग्रन्थ संग्रह कर्ता के सम्मतीय तथा संशोधक कविरत्न पं० भोलादत्त शर्म्मा शास्त्री प० हरिशंकर शर्म्मा त्रिपाठी व्याकर्णाचार्य तथा पं० पीताम्बरदत्त शर्म्मा सेमवाल शास्त्री तथा पं० रघुनाथ प्रसाद शर्म्मा पुरोहित शास्त्री जी द्वारा हुवा। तथा श्रीमान् पं० पुरुषोत्तमदत्त जी शर्म्मा बगवाड़ी बी ये यल् यल् बी। तथा पं० शिव प्रसाद् जी शर्म्मा बगवाड़ी बी ये यल् एल् बी पं गुणानन्द शर्म्मा खाली बी० ए० तथा पं०महिमानन्द जी शर्म्मा मैठानी शास्त्री तथा पं०तुलशीराम जी शर्म्मा पोस्ती तथा पं० दिवाकर दत्त जी शर्म्मा नेमवाल तथा पं० स्यामादत्त जी शर्म्मा पुरोहित प्रवृत्ति आदि सज्जनों ने अनेक प्रकार से ग्रन्थ पुराणों द्वारा तथा विषय सूचनाओं द्वारा सहायता पहुंचाकर अनुगृहीत किया। तथा ग्रन्थ संग्रह कर्त्ता के सर्वोच सहायक श्रीमान् डा० नरेन्द्र सिंह भण्डारी एम० ए० महोदय ने श्री पं० विहारी लाल शर्म्मा शुक्ला प्रेटिंग प्रेस लखनऊ द्वारा मुद्रित कराकर सफल परिश्रम किया क्योंकि आप उपरोक्त सज्जनों ने अपना २ अमूल्य समय नष्ट कर और मेरे इस पूज्य पितरों के स्मृति उपलक्ष कार्य पर महान् कृपा की जिसका कि मैं आभारी हूं। शुभंभूयात् ॥ गच्छतः स्खलनंक्वापि भवतेव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ इति शम् ॥

लेखक-प्रकाशक—

पं० विश्वनाथ शर्म्मा लालमोहरिया

पुरोहित श्री केदारनाथ जी गढ़वाल उत्तर प्रदेश

तीर्थ विधान पद्धतिः

(ग्रंथ संशोधन कर्तुः स नम्र किंचिन्न वेदनम्)

अयि हृद्या भावुका पाठक महोदयाः इत्थं प्रुवतो मम चेतसि समुदेति महान् हर्षोल्लास । यद्यपि तीर्थ विधान पद्धति वाजपेयी पं० विश्वनाथ शर्मणा लालमोहरियो पाह्वयेन शोणित पुर गुप्तकाशी गढ़वाल मण्डल वास्तव्येन समस्त तीर्थ कर्मा नुरागिणां पुरोहितानां कृते तीर्थ कर्मतथा देवी पूजनादी नवरात्र विधाना दिना द्वितीय संस्करणे किंचिन्मात्र वृद्धितया विविधा गम पुराण ग्रन्थेभ्य स्तोत्रादि कर्म सम्पादनाय संगृह्य स्वर्गीय स्वीय कनिष्ट पितृव्य श्री के० संस्कृत विद्या लयस्य प्रथम संस्थापक पण्डित श्री नारायण दत्त शास्त्रिणां स्मृति, उपलक्ष्ये। तीर्थ विधान पद्धतिः मद्गन्ति के च संशोधनाय प्रवृत्तासीन्। मयापिहि नरकर कमल स्वर्णाक्षर विलिखित तीर्थ विधान सरणि रासादितो पलभ्या यो पान्त यथा मति संशोधिता तदर्थं मेपदयालु महानुभावो भूयो भूयो धन्य वादार्हः। यतो लोको पकाराय महता श्रमेण विरच्य प्रकाश्यं नीता । अतो ग्रन्थ प्रचारायः तीर्थ कर्म प्रवर्तकाः पुरोहिता अपरे कर्म काण्ड विशेषज्ञाः सज्जना बहुशो विनि वेद्यन्ते यत्किल ग्रन्थों ऽयं समस्त पाठशाला (विद्यालयेषु) सकल छात्राणां पाठ्य पुस्तकेषु निधाय सर्वो पकृतये प्रचार णीय स्यादिति कर उपयोगो च प्रतीयतेनि निवेदनम्मम ।

मामकः—कविरत्न पं० भोला दत्त शास्त्री थाला भूतपूर्व अध्यापक मारवाड़ी संस्कृत पाठशाला मीर घाट काशी बनारस ।

श्री के० संस्कृत विद्यालय शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल
श्री रघुनाथ कीर्ति संस्कृत विद्यालय देवप्रयाग गढ़वाल ।

तीर्थ विधान पद्धतिः

श्री हरिशंकर त्रिपाठी साहित्य केशरी व्याकरणा चार्य —
श्रीकेदारनाथ संस्कृत विद्यालय प्रधानाध्यापक महोदयानां

सम्मतिः

अद्य महान् प्रमोदोऽयमरोऽयं यन्मयेयं लेखनी तत्र सम्मति दानाय प्रचाल्यते । यदर्थं एतावन्तं कालं सर्वे पुरोहिता विद्वांसः साभिलाषाः सोत्कण्ठाश्चासन् ।

मन्ये तीर्थ कर्म प्रवर्त्तकानां पुरोहितानां पाठक महोदयानां विदुषां चकृते नतादृगन्यत्कर्म काण्ड पुस्तकं यथा बहुपकारकं यथा विविध पूजा समलङ्कृतं । तीर्थ विधान पद्धति, नामकं पुस्तकं मयाः दृष्टं तत्र काल प्रभावेण कर्म काण्ड पद्धति लुप्त प्रायता मुपगता । सम्प्रतिमहतीं दुख स्यामालोच्य लोकस्य महो पकाराय गढ़वाल मण्डलान्वर्गत गुप्त-काशि पार्श्व वर्त्ति-शोणितपुर ग्राम वास्तव्य विद्या रसिक पण्डित श्री विश्वनाथ शर्म वाजपेय लालमोहरिया, इत्यु पनामकेन नेपालराज्य (राष्ट्र) पुरोहितेन विरचित मतीव मनोहरं तीर्थ विधान पद्धवि नामकं पुस्तकं वर्तते श्रौत—स्मार्त विधिना कर्मकाण्डो पयोगि विविध विषय सन्निवेश नमनोहरं विधिवन्न्यास-प्रतिष्ठा-मन्त्र भेद पुरस्सरंञ्च वितन्यते । एतादृशं ग्रन्थ रत्नं सम्यगा लोच्य ब्रह्मानन्दः समजनि । अनेक ग्रन्थतः ग्रन्थकृद्भिर्महता प्रयत्नेन सारमुद् धृत्य प्रकाश्यते । स्थले-स्थले समुपयुक्त टिप्पण्यादिभिः सर्वेषान्तु नूनमेव बहुप कृतम् । नेयं महतीन्यूनता संस्करणे नैतेन पूरितेति । संस्करण मिदं ममेषामवश्य मेवो पादेयतां भजते । वस्तुतः परिलाष्यन्त महोदयैः कर्मकाण्डपरीक्षामु-ग्रन्थोऽयं नियोजितः स्याचर्हि नून मेव भारतीयानां महानुप कारोभवेत् । इति मदीयो विश्वासः । सर्वैरयं ग्रन्थः संग्राह्यः प्रचारणीयश्च । इति संप्रार्थ्य विरमामि ॥

जाताः पूर्व मनेक शास्त्र कुशला विज्ञा भविष्यन्तिवै,
सन्तोस्त्येव तथापि कैश्चन युधैं लोको पकार क्षमा ।
ईदृक् तीर्थ विधान पद्धति रियं यत्नेन नो निर्मिता ।
धन्याः सन्तु मुदा स्फुटा विरचिता श्री विश्वनाथेनया ॥ १ ॥

पण्डित श्री हरिशंकर शर्मा त्रिपाठी
सा० केशरी—व्याकरणाचार्यः

तीर्थ विधान पद्धतिः

आर्य वैदिक धर्म समु पास का विद्वांसः । भारतेऽस्मिन् त्रिविधानि पुस्तकानि सन्ति कानि चितु कार्य सम्पादने विषमानिकानिचितु सरलानि तीर्थेपु गत्वा सर्वे तीर्थ कर्म कर्त्तारः स्व कार्याणी साव यन्ति कार्याणेतु येन केनाप्यु पायेन साध्यन्ते एव किन्तु वैदिक कर्म कतृणां सहृदया नां कर्णं कुहरिपु इदं तिरोहितं नस्यात् यद् वाजपेय वंशा उपमन्युगोत्रा वतंसः पं० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया महोदय संगृहितेमां तीर्थ-विधान पद्धति मवलोक्य नितरां मोदते मन्मनः यद्दि पूर्वा पेक्षय न्यून विषयेभ्यः सम्पूरिता निखिल कर्म कतृणांञ्च सौख्याय वर्धिता अतीवो पयोगी च वर्तते तीर्थेपु वा अन्य पर्वा वसरेपु यदाकदापि अनया पद्धत्यानुसारेण पूजा पाठ पिण्ड तर्पणादि कर्म कारयितु अविज्ञो पिविज्ञो भवति सर्वेषां मुपकाराय च अति परि श्रमेण सगृहिताः अतः धन्य वादा र्हाः इमे महानु भावाः लुप्त वैदिक धर्मस्य महतो रक्षा कृता सर्वे तीर्थ पुरोहिताः तथा चान्य पुरोहिताः पद्धति संग्रह कर्तु उत्साहं वर्धन्ताम् बहु पल्लव्य वितेनकिम् इति शम् ॥

श्री महन्त पं० पीताम्बर दत्त शर्मा शास्त्री

सेमवाल द्वि० अ० श्री के० संस्कृत विद्यालय

शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल उ० प्रदेश

श्री मान् लालमोहरियाजी मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप तीर्थविधान पद्धति प्रकाशीत करने जारहे हैं यद्यपि आप अनेक शास्त्र विशारद मेधावी पंडित है ही तथापि कर्मकान्ड की द्रष्टी से आपका स्थान विशेष ऊंचा है क्योंकि कर्मकान्ड के स्तर को उन्नत करनेके हेतु आप जो अनवरत प्रयत्नशील रहते है फल स्वरूप तीर्थ कर्म पद्धति आदि प्रत्यक्ष साक्षी है, यहां यह कहना आवश्यक होगा कि समय २ पर आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों ने किन महान् त्रुटियों की पूर्ती की है विशेषतः तीर्थ पुरोहित ब्राह्मणों के लिए आपकी यह महान् देन है, अस्तु

आज भी मुझे पूर्ण आशा तथा विश्वास है भगवदनुग्रहसे आपकी तीर्थविधानपद्धति अवश्य ही सबके लिए उपयोगी सिद्ध बनकर कर्मकान्ड जगतमें चूडामणि की तरह देदीप्यमान होकर आपके मन कमल को विकसित करने के लिए सूर्यका रूप धारण करेगी भगवान हमारी आशा को सफल करें यही हमारी कामना है।

भवदीय—

दिः ४-४. ५४ } रघुनाथप्रसाद पुरोहित शास्त्री

मौजा भणिग्राम पो० गुप्तकाशी, जिला गढ़वाल पौड़ी

विषयाऽनुक्रमणिका:

विषयाऽनुक्रमणिका:

श्री तीर्थ विधान पद्धत्याऽनुक्रमणिका:
विद्वज्जनानां अभिप्रायाः

नोट—पुस्तक के वृहद् हो जाने के कारण वेद मन्त्र भी छोटे हैं। अक्षरों में दिया गया ॥ क्षमा ॥

श्री केदारनाथजी

कार्यालय श्री केदारनाथ मन्दिर कमेटी

श्री माननीय पं० जी

सादर अभिवादन

आपकी तीर्थ विधान पद्धति की पुस्तक प्राप्त हुई धन्यवाद। पुस्तक बहुत सुन्दर है आपको इस प्रयास के लिये बधाई है, यहाँ तीर्थ विधान पद्धति की कमी थी आपने उसे पूरा कर दिया।

नारायणदत्त बहुगुणा
सेक्रेटरी श्री केदारनाथ
मन्दिर, कमेटी
३१-७-५४

श्री कालीमाताजी

कार्यालय मंदिर श्री कालीमठ गढ़वाल

वतभवान् श्रीमान् पं० जी सादर प्रणाम्!

आज आपकी तीर्थ विधान पद्धति की १ पुस्तक उपलब्ध हुई। सधन्यवाद! पुस्तक बहुत सुचारु हैं आपको इस प्रयास के लिए बधाई है। यहां तीर्थ विधान पद्धति की न्यूनता थी आपने उसे पूरा कर दिया।

नारायणसिंह राना मठ मठापति
मंदिर कालीमठ
६-६-५४

प्रेषक—मैनेजर श्री केदारनाथ संस्कृत विद्यालय
शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल।

प्रापक—श्री विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया मौजा
शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल

महोदय आपकी लिखी हुई तीर्थ विधान पद्धति विद्यालय को उपलब्ध हुई पुस्तक प्रत्येक कर्म करने के लिये उपयुक्त एवं प्रशंसनीय है।

अतः विद्यालय की ओर से आपको हार्दिक धन्यवाद है आपकी शुभ कामनाओं की सफलता चाहते हैं।

मैनेजर राजनारायण
श्री केदारनाथ संस्कृत विद्यालय
शोणितपुर, पो० ऑ० गुप्तकाशी
गढ़वाल

दिनांक १६ २-५५

श्रीमान् पं० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया
ग्राम—शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल

आपके द्वारा प्रकाशित "तीर्थविधान पद्धति" नामक पुस्तक प्राप्त हुई। इसको देखने से इस समय जो कर्मकान्ड में आवश्यकता थी उसका आपने इस पुस्तक में पूर्ण संग्रह किया। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इसके लिये आपको हार्दिक धन्यवाद।

भिषक् चूडामणि प० प्रेमवल्लभ शास्त्री
रजिस्टर्ड वैद्य
पो० सिंगाही (खीरी)
दिनांक ३ मार्च १९५५ ई०

PRIME MINISTER'S SECRETARIAT, INDIA.

पत्र संख्या ४-६४-५४.

New Delhi-2. the 10 अगस्त १९५४.

प्रिय महोदय,

आपका ३० जुलाई का पत्र तथा साथ में भेजी हुई 'तीर्थ विधान पद्धति' नाम की पुस्तक प्रधान मंत्री सचिवालय में प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद।

श्री विश्वनाथ शर्मा लालनोहरिया,
पो० श्रीकेदारनाथ,
जि० गढ़वाल, उत्तर प्रदेश।

भवदीय—
(सर्व प्रकाश)
प्राइवेट सेक्रेटरी

श्री ५ नेपाल सरकार

श्री माननीय प्रधान मंत्रीज्यूको सचिवालय

पत्र संख्या.....................

नेपाल २७-७-०११

प्रिय महाशय,

तपाईंले २०११ कार्तिक ११ प्र० मा पठावनु भएको पत्र तथा तिर्थ विधान पद्वती सधन्य वाद, प्राप्त भये कोले सूचित गरेकोछु।

भवदीय—
Bay रानाल,
विष्णुप्रसाद रानाल,
प्राइभेट सेक्रेटरी,
प्रधान मन्त्री, नेपाल।

श्री विश्वनाथ शर्मा,
लालमोहरिया पंडा,
पो० गुप्तकाशी,
गढ़वाल, उत्तर प्रदेश।

श्री दर्बार पुलचोक काठमाण्डो
इण्डियन इम्बेशी नेपाल

श्रीमान पं० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया पण्डा,

आपका कृपा पत्र तथा तीर्थ विधान पद्धति प्राप्त हुआ, जिसके लिये आपको हार्दिक धन्यवाद, हमारे यहाँ पर सभी लोग आपका प्रशंसा करते हैं।

आपका शुभेच्छु—
प्रा० से० केदारमणि शर्मा पाध्याय
२६-६-५४

कार्यालय सं० ग्रा० स० लि० लमगौंडी गुप्तकाशी गढ़वाल

श्री विश्वनाथजी शर्मा लालमोहरिया गुप्तकाशी गढ़वाल उ० प्र०।

आदरणीय पं० जी आपकी लिखित तीर्थ विधान पद्धति नाम की पुस्तक ग्राम सम्मति को प्राप्त हुई। पुस्तक धर्मकाण्ड के लिये अत्यन्त उपयोगी है। आपने पूर्व भी कर्मकाण्ड के विषय पर एक पुस्तक लिखी थी जिसको कि परिवर्द्धित कर कर्मकाण्डी जनों का महान उपकार किया, आपकी इस पुस्तक से समस्त भारतवर्ष भी परिचित है।

अतः इस ग्राम स० लि० लमगौंडी आपको हार्दिक धन्यवाद देती है। और आशा करती हैं कि आप अपना उक्त कार्य करते रहेंगे। पञ्चायत आपके चिरायुता के लिये भगवान से प्रार्थना करती है।

भवदीय
(मोहर) शिवकुमार पराशरी
१५-१०-५४

तीर्थ विधान पद्धतिः

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमो पृथिव्यै नमः ओषधीभ्यः ।नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महतेकरोमि॥प्रा०॥



ब्राह्मण पूजनम्

ओं भू० भुँव [illegible] ब्रह्मणे इदमासनं—स्वासनम् । ओं भू० भुँव स्व. ब्रह्मणे इदं पाद्यं—सुपाद्यम् । ओं भू० भुँव· [illegible] ब्रह्मणे इद मर्घ्यम् अस्त्वर्घ्यम् । ओं भू० भुँव· स्व ब्रह्मणे इदमाचम नीयम् । ओं भू० भुँव स्व ब्रह्मणे गन्धापान्तु-सौमङ्गल्य चास्तु । अक्षतापान्तु—आयुष्यमस्तुपुष्पाणि पान्तु—सौश्रियमस्तु ।ताम्बूलं पान्तु—ऐश्वर्यमस्तु० दक्षिणा पान्तु—बहुदेय चास्तु । नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्तये सहस्र पादाक्षि-शिरोरुबाहवे । सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटी युग धारिणेनमः ॥ सकलाराधनैः स्वर्चित मस्तु । ब्राह्मण —अस्तु स्वर्चितान मितिप्रतिवदेत् ॥ स्वस्ति मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु ॥ तथास्तु—इति प० ॥

प्रकाशक—

ग्रन्थकार—विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया

श्री केदारनाथजी, जि० गढ़वाल उत्तर प्रदेश

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

मङ्गलोचारणम् ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा ऽ स्वस्ति न ÷ पूषाविश्ववेदा ऽ । स्वस्ति नस्ताक्ष्यो॑ऽअरिष्टनेमि ऽ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ भद्रङ्कर्णेभि ऽ शृणुयाम देवा भद्रम्पश्ये माक्षभिर्य्य जत्रा ऽ । स्थिरैरङ्गै-स्तुष्टुवा छ सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु ÷ ॥ २ ॥ सम्पस्की-भिरनुगच्छेमदेवा ऽ पुत्त्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यै ऽ । नाकङ्गृभ्णाना ऽ सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि रोचने दिव ऽ ॥ ३ ॥

अथ प्रातः स्मरणसूक्तम्

हरि—ॐ प्रातरग्नि म्प्रातरिन्द्र छ हवामहे प्रातर्म्मित्त्रावरुणा प्रातरश्विना । प्रातर्भगम्पूषणम् ब्रह्मणस्पतिम्प्रातःसोम मुतरुद्रम् छ हुवेम ॥ १ ॥ प्रातर्जितम्भगमुग्र छ हुवेमवयम्पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता । आद्ध्रश्चिद्यम्मन्यमानस्तुरश्चिद्राजाचिद्यम्भगम्भक्षीत्याह ॥ २ ॥ भगप्रणे तर्भगसत्य राधो भगे मान्धिय मुदवाद दन्न ऽ । भगप्रणो तनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्न्नृ वन्त ÷ स्याम ॥ ३ ॥ उतेदानीम्भगवन्त स्यामो तप्रपित्वऽउत मद्ध्ये ऽ अह्नाम् । उतोदिता मघवन् त्सूर्य्यस्य व्वयन्देवाना छ सुमतौ स्यामः ॥ ४ ॥ भगऽएव भगवाँ २ऽअस्तुदेवास्तेन व्वयम्भगवन्त ऽ स्याम । तन्त्वाभग सर्व्वऽइज्जोहवीतिसनोभगपुरऽएताभवेह ॥ ५ ॥ समद्धरायोपसो नमन्त दधिक्कावेव शुचये पदाय । अर्व्वाचीनं व्वसु विदम्भगन्नोरथमिवाश्वा व्वाजिन ऽ आवहन्तु ॥ ६ ॥ अश्वा वर्तीर्गोमतीर्नऽउपासोव्वीरवती ऽ सदमुच्छन्तु भद्रा ऽ । घृतन्दुहाना व्विश्वत ऽ प्रपीता यूयं पात स्वस्तिमि ऽ सदा न ऽ ॥ ७ ॥ इति प्रातः स्मरणसूक्तम् ।

गणेश स्तुति–स० चि० ।

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथ बन्धुं सिन्दूरपूर्णपरिशोभितगण्ड-युग्मम् । उद्दण्ड विघ्न परिखण्डन चण्ड दण्डमाखण्डलादि सुरनायक वृन्द वन्द्यम् ॥ प्रातर्नमामि चतुरानन वन्द्यमानमिच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम् । तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं पुत्रं विलास चतुरं शिवयोः शिवाय । प्रातर्भजाम्य भयदं खलु भक्त शोक दावानलं गणविभुं

वरकुञ्जरास्यम्। अज्ञान कानन विनाशन हव्यवाहमुत्साह वर्धन मह सुतमीश्वरस्य श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्य दायकम्। प्रातरुत्थाय सततं य पठेत्प्रयत पुमान् ॥

नमस्काराः ।

श्री महागणाधिपतये नम । इष्टदेवताभ्यो नम । कुलदेवताभ्यो नम । ग्रामदेवताभ्यो नम । स्थानदेवताभ्यो नम । वास्तुदेवताभ्यो नम । वाणिहिरण्यगर्भाभ्यां नम । श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नम । श्री उमामहेश्वराभ्यां नम ।

हेमाद्रिकृतः स्नान सङ्कल्पः

अथ हेमाद्रिकृत स्नान सङ्कल्प —आचम्य प्राणानायम्य ॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नम । श्री गुरुभ्योनम । श्री सरस्वत्यैनम । वेदायनम । वेदपुरुषायनम । इष्टदेवताभ्यो नम । कुल देवताभ्यो नम । ग्रामदेवताभ्योनम । स्थान देवताभ्यो नम । श्री वास्तुदेवताभ्योनम । एतत्कर्म प्रधान देवताभ्योनम । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्योनम । अविघ्नमस्तु। सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णक । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिप । धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभाल चन्द्रोगजानन । द्वादशैतानि नामानि य पठे च्छृणुयादपि। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा सग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्लाम्बरधर देवशशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्न वदन ध्यायेत्सर्वे विघ्नो पशान्तये । अभीप्सितार्थे सिद्धार्थं पूजितोय सुरा सुरै ॥ सर्वं विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतयेनम ॥ सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते । वक्र तुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ । निर्विघ्न कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ वागीशाद्या सुमनस सार्वार्था नामुपक्रमे । य नत्वा कृत्या स्युस्त नमामिगजाननम् ॥ गण नाथ नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णु रुद्र श्रिय देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् । स्थान क्षेत्रम् नमस्कृत्य दिन नाथ निशाकरम् । धरणी गर्भ सम्भूत शशि पुत्र बृहस्पतिम् ॥ दैत्याचार्य नमस्कृत्य सूर्यपुत्र शनैश्चरम् । राहु केतु नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषत । शक्रादि देवता सर्वानृषींश्चैव तपोधनान्। गर्गं मुनि नमस्कृत्य नारद पर्वत तथा ॥ वसिष्ठ मुनि शार्दूल विश्वामित्र च शाण्डिल्य । अगस्त्य च पुलस्त्य च दक्षमित्र पराशरम् । भरद्वाज च माण्डव्यम् याज्ञवल्क्य च गालवम् ॥ अन्ये मिमस्तपोयुक्ता वेद शास्त्र विचक्षणा । तान्सर्वान् प्रणिपत्याद शुभ कर्म समारभे । लाभ स्तेषां जय स्तेषा कुतस्तेषा पराजय । येषा

मिन्द्री वर श्यामो हृदय स्थो जनार्दनः ॥ अग्रतः श्री नृसिंह श्च पृष्टतो देवकीसुतः । रक्षतां पार्श्वयोर्देवौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ ॐस्वस्ति श्रीमुकुन्द सच्चिदानन्दस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्य माया शक्ति विजृम्भिता विद्या योगात् काल कर्म स्वाभावाविर्भूत महत्तत्त्वोदिताहङ्कारोद्भूत वियदादि पञ्च महा भूतेन्द्रिय देवतानिर्मिते ऽण्डकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलया तन्मध्य-वर्ति भगवतः श्री नारायणस्य नाभि कमलोद्भूत सकल लोक पितामहस्यब्रह्मण सृष्टि कुर्वतस्त दुद्धरणाय प्रजापति प्रार्थितस्य समस्तं जगदुत्पत्ति स्थिति लयकारणस्य जगद्रक्षा शिक्षा विचक्षणस्य प्रणत पारिजातस्य अच्युता नन्त वीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्या परिमित शक्त्या ध्येय मानस्य महाजलोघ मध्ये परिभ्रमणा नाम नेक कोटि ब्रह्माण्डा नामे कतमे ऽव्यक्तमहदहङ्कार पृथिव्यप्ते जो वाय्वा काशा द्या वरणैं रावृत्ते अस्मि-न्महति ब्रह्माण्ड खण्डे आधार शक्ति श्री मदादि वाराह दंष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्त वासुकि तक्ष ककुलिक कर्कोटक पद्म महा पद्म शङ्खाघष्ट महा नागैर्ध्रियमाणे ऐरावत पुण्डरीक वामन कुमुदा ञ्जन पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रती काष्ट दिग्गज प्रतिष्ठिता नाम तल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महोर्लोक जनोलोक तपोलोक सत्य लोकाख्य सप्त लोका नामधो भागे चक्र वाल शैल महावलय नागमध्य वर्तिनो महाकाल महाफणिराज शेषस्य सहस्र-फणानां मणि मण्डल मण्डिते दिग्दन्ति शुण्डो त्तम्भिते अमरावत्य शोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती कांच्यवन्त्य लकावती यशोवती-विपुण्य पुरीप्रतिष्टते इन्द्राग्नि यम निऋति वरुण वायु कुबेरेशानाष्ट दिक्पाल प्रतिष्ठिते वर ध्रुवा धर सोमया प्रभञ्जना नल प्रत्यूष प्रभापास्याष्ट वसुभिर्विराजिते हरस्त्र्यम्बक रुद्र मृग व्याधा पराजित कपाली भैर व शम्भु कपर्दि वृषा कपि यतु रूपाख्यै कादश रुद्रै संशोभितेरुद्रोपेन्द्र सवितृधा तृत्वष्टर्यमेन्द्रे शानभग मित्र पूषाख्य द्वादशादित्य प्रकाशिते यम नियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणाध्यान समाध्यष्टाङ्ग निरत वसिष्ट बाल खिल्य विश्वामित्र दक्ष कात्यायन, कौण्डिन्य, गौतमा ङ्गिरस पाराशर्य व्यास वाल्मीक शुक शौनक भरद्वाज सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार नारदादि मुख्य मुनिभिः पवित्रते लोका लोग चलवलयिते लवणे क्षुर ससुरा सर्पिर्दधिक्षीरोदक युक्त सप्तार्णवपरिवृते जम्बूप्लक्ष शाल्मलि कुश क्रौञ्च शाक पुष्कराख्य सप्त द्वीपयुते इन्द्र कांस्य ताम्रगभस्ति नाग सौम्य गन्धर्व चारण भारतेति नव खण्ड मण्डिते सुवर्णगिर कर्णिको पेत महासरो रुहाकार पंचाशत्कोटि योजन विस्तीर्ण भूमण्डले अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्च्यवन्तिका द्वारा वतीति सप्तपुरी प्रतिष्ठिते महा

खिम्मु प्रदस्थले शाल ग्राम शम्भल नन्दि ग्रामेति ग्राम त्रय विराजिते चम्पकारण्य बद्रिकारण्य दण्डकारण्या वृंदारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य गुह्यारण्य जम्बुकारण्य विन्ध्यारण्य द्राक्षारण्य नहुषारण्य काम्यकारण्य द्वैतारण्य नैमिषारण्यादीनामध्ये सुमेरु निषध कूट शुभ्रकूट श्रीकूट हेमकूट रजतकूट चित्रकूट त्रिकूट किष्किन्ध श्वेताद्रिकूट हिम विन्ध्या चलानां हरि वर्ष किम्पुरुष वर्ष योश्च दक्षिणं नव सहस्र योजन विस्तीर्णे भरतखण्डे मलयाचल महाचलविन्ध्यया चला नामुन्तरेण स्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ सूक्तिक आवर्तकरमणक महारमणक पाञ्चजन्यसिंहल लंकाअशोक वत्य लकावती-सिद्धवती गान्धव वत्यादि पुण्यपुरी विराजिते नव खण्डोपद्वीप मण्डिते दक्षिणा या स्थित रेणुका हय सूकर काशी काञ्ची कलिकाल वटेश्वर कालांतर महाकालेति नवो खर युते द्वादश ज्योतिलिङ्ग गङ्गा (भागीरथी) (गौतमी) गोदावरिश्च यमुना सरस्वती नर्मदा तापीपयोष्णी चन्द्रभागा-कावेरी मन्दाकिनी प्रवरा कृष्ण वेण्या भीमरथी तुङ्ग भद्रामलापहा इत माला ताम्रपर्णीविशालाक्षी वञ्जुला वर्णवती वेत्रवती भोगावती विशोका कौशिकी गण्डकी वासिष्ठी प्रमदा विश्वामित्री फाल्गुनी चित्र काश्यपी सरयू सर्वपाप हारिणी करतोया प्रणीता वक्रा वक्र गामिनी सुवर्णरेखा शोणामन नाशिनी शीघ्रगाकुश वर्तिनी ब्रह्मा नन्दा महितनेत्य नेक पुण्य नदं भिविलसिते ब्रह्मपुत्र सिन्धु नदादि परम पवित्र जल विराजिते हिमवन्मेरु गोवर्धन क्रौंच चित्रकूट हेमकूट महेन्द्रमलय सह्येन्द्र नीलपारि यात्राद्यनेक पर्वत समन्विते मतङ्ग माल्यकिष्किन्ध ऋषि शृंगेति महाना ममन्विते अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग काश्मीर काम्बोज सौवीरि सौराष्ट्र महाराष्ट्र मगध नेपाल करेल वारेल पाञ्चाल गौड मालव मलय सिंहलद्रविड कर्नाटक ललाट वरहाट वरहाट पानाट पाण्ड्य निषध मागध आन्ध्र दशार्णव भोजकुरु गान्धार विदर्भ विदेह वाह्लीक बर्बर कैकेय कोशलविराट शूरसेन कोंकण केरल मत्स्य मद्रया रसिक गजूर्यावन म्लेच्छ जालन्धरेति सिद्धवत्यन्य देश विशेष भाषा भूमिपाल विचित्रते इला वृत कुरु भद्राश्वकेतु मालकिम्पुरुषरमणक हिरण्यमयादि नव वर्षाणां मध्ये भरत खण्डे बकुल चम्पक पाटलाब्ज पुन्नाग जातिकर वीररमाल कह्लार केतक्यादि नानाविधि कुसुम स्तव कविराजिते कोकन्त हिरण्य शृंगकुन्जार्बुद मणि कर्णी वट शाल ग्राम सूकर मथुरा गया निष्क्रमण लोहार्गलयोनस्य भिवमाम बदरीति चतुर्दश गुह्य विलसितं जम्बूद्वीपे कुरुक्षेत्रादि समम् मध्यंगमायाः पश्चिमदिग् भागे कुल मेरोर्दक्षिणदिग्भागे विन्ध्यस्य दक्षिणे देशे श्री शैलस्य वायव्ये देशे कृष्णा वेण्योर्मध्ये मत्स्य कूर्म वाराह नृसिंह वामन परशुराम रामकृष्ण बुद्ध कल्कीति दशावताराणां

मध्ये बौद्धावतारे गङ्गादिसरिद्भिः पाविते एवं नव सहस्र योजन विस्तीर्णे भारत वर्षे निखिल जन पावन परम भागवतोत्तम शौनकादि निवासिते नैमिषारण्ये आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मा वर्तैक देशे सूर्यान्वयभू भृत्प्रष्टिते श्री मन्नारायण नाभि कमलोद्भूत सकल जगत्स्रष्टुः परार्द्ध द्वय जीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एक पञ्चासत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंश त्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराह कल्पे स्वायम्भुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमें वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलि संज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टा विंशति तमे कलियुगे तत्प्रथमे विभागे (पादे) श्री मन्नृपविक्रमार्कात् श्री मन्नृप शालिवाहनाद्वा यथा संख्या गमेन चान्द्रसावन सौर नक्षत्रादि प्रकारेण गवानां प्रभवादि पष्टि सम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि संवत्सरे उत्तरगोलावलम्बिनि श्री मार्तण्ड मण्डले अमुकर्वो अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशिस्थे चन्द्रे अमुक स्थे सूर्ये अमुक स्थिते देवगुरो शेषेपु ग्रहेपु यथा यथा स्थान स्थितेपु सत्सु एवं गुण विशेषेणविशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक शर्मणः (भार्यया सहाधिकृतस्य) ममइहजन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्य यौवन वार्धक्या वस्थासु वाक्पाणि पांद पायू पस्थ प्राण रसना चक्षुः स्पर्शन श्रोत्रमनोभिश्चरित—ज्ञाता ज्ञात कामा काम महापातको-पपातकादि सञ्चितानां पापानां ब्रह्महनन सुरापान सुवर्णस्तेयगुरु तल्पगमन तत्संसर्गरूपमहा पातकानां बुद्धि पूर्वकाणां मनो वाक्काय कृतानां बहु कालाभ्यस्तानां उपपातकानां च स्पृष्टास्पृष्ट संकरी करणमलिनी करण पात्री करण जातिभ्रंश करण विहिता करण कर्मलोप जनितानां रसविक्रय कन्या विक्रय हय विक्रय गो विक्रय खरोष्ट्र विक्रय दासी विक्रय अजादि पशु विक्रय स्वगृह विक्रय नीली विक्रय अक्रेय विक्रय पण्य विक्रय जल चरादि जन्तु विक्रय स्थल चरादि विक्रय खेचरादि विक्रय सम्भूतानां निरर्थकवृक्षच्छेदन प्राणानपा करण ब्रह्मस्वापहरण देवस्वाप हरण राजस्वापि पर द्रव्याप हरण तैलादि द्रव्यापि हरणफलादि हरण लोहादि हरण नाना वस्तु हरण रूपाणां ब्राह्मण निन्दा गुरुनिन्दा वेद निन्दा शास्त्र निन्दा पर निन्दा भक्ष्य भक्षणा भोज्य भोजना चोष्य चोषणा लेह्य लेहना पेय पानास्पृ-श्य स्पर्शना श्राव्य श्रवणहिंस्य हिंसना वन्द्य वन्दना चिन्त्य चिन्तना याज्य याजना पूज्य पूजन रूपाणां मातृ पितृ तिरस्कार स्त्री पुरुष प्रीति भेदन परस्त्रीगमन विधवागमन वैश्यागमन दासीगमन चाण्डालादि हीन जाति गमन गुरुगमन रजस्वला गमन पश्वादिगमन रूपाणां कूट साक्षित्व पैशून्य वाद मिथ्या पवाद म्लेच्छ सम्भाषण महाद्वेषकरण मद्यवृत्तिहरण वृत्ति-

च्छेदन पर वृत्तिहरण रूपाणामित्रवञ्चन गुरुवञ्चन स्वामि वञ्चनासत्य भाषण गर्भ पातन पथि ताम्बूल चर्वणहीन जाति सेवन परान्न भोजन गणान्न भोजन लशुन पलाण्डु गृञ्जन भक्षण तालवृक्ष फलभ क्षणोच्छिष्ट भक्षणमार्जारोच्छिष्ट भक्षण पर्युषितान्न भक्षणरूपाणा पंक्ति भेदकरण भ्रूणहिंसा पशुहिंसा बालहिंसाद्यनेक हिंसोद्भूताना शौचत्याग स्नान त्याग सन्ध्यात्यागौ पासनाग्नि त्याग वैश्वदेव त्याग रूपाणा निषिद्धा चरण कुग्रामवास ब्रह्मद्रोह गुरुद्रोह पितृ मातृ द्रोह पर द्रोह पर निन्दात्मस्तुतिदुष्ट प्रतिग्रह दुर्जन स सर्गरूपाणा गोयान वृषभयान महिषी यानगर्दभयानोष्ट्र याना श्वयानभृत्याभरण स्वग्राम त्याग गोत्रत्याग कुलत्याग दूरस्थमन्त्रण विप्राशाभेदना वन्दिताशीर्वादग्रहणापवित्र सम्भाषणरूपाणा पतितजन पंक्तिभोजनादि सङ्गम वृथा मनोरथादि पापाना तथा महा पापोपपापाभ्यां नानायोनिषु यत्कृतम् । बालभावेन यत्पाप कुक्षुदर्थे च यत्कृतम् ।। आत्मार्थं चैव यत्पाप परार्थे चैव यत्कृतम । तीर्थेषु चैवयत्पाप गुर्वाज्ञाकृतम् च यत् ।। रागद्वेषादि जनितं काम क्रोधेन यत्कृतम् ।। हिंसानिद्राद्विजपामभेद दृष्टवाच यन्मया ।। देहाभि मानज पाप सर्वदा यन्मया कृतम् । भूतमव्य च यत्पाप भविष्य चैव गौतमि ।। शुष्क माद्र च यत्पाप जानता ऽ जानता कृतम् । महल्लघु च यत्पाप तन्मे नाशय जाह्नवि ।। ब्रह्महायश्चप स्तेयी तथैवो गुरुतल्पग ।। महापापानि चत्वारि तत्ससर्गी तु पञ्चम् अति पातक मन्यच्च तन्न्यून मुप पातकम् । गोवधो व्रात्यता स्तेय ऋणाना चानप क्रिया अनाहिताग्निता पण्यविक्रय परिवेदनम् । इन्धनार्थे द्रुमच्छेद स्त्री हिंसौषधि जीवनम् ।। हिंसाया त्राविधान चभृतका ध्यापन तथा प्रथमा श्रममारभ्ययत्किञ्चित्किल्बिष कृतम् ।। कृमि कीटादिहननयत्किञ्चित प्राणिहिंसनम् । माता पित्रो रशुश्रुषा तद्वाक्या करण तथा ।। अपूज्य पूजन चैव पूज्याना च व्यतिक्रम ।। अनाश्रमस्थ वाग्न्यादि देवाषु श्रूपण तथा पर कायापहरण परद्रव्योप जीवनम् । ततोऽज्ञानकृत चापि कायिक वाचिक तथा ।। मानस त्रिविध पाप प्रायश्चित्तैरे नाशितम । तस्मादशेष पापेभ्य स्नाहि त्रैलोक्य पावनि । निष्पापो ऽस्म्यद्युनादेवि प्रसादा त्तव नान्यथा ।।

स्त्रीणां विशेष :— पाणिग्रहण मारभ्य स्वकर्मा परिपालनम् । इन्द्रियाभिरति पुंसु नाना योनिषुयामवेत ।। कृमि कीटादि हनन पंक्तिभेदा न्कि तथा स्नान स्नाम्भनाचार मनसा दोष कल्पनम् ।। तत्सर्वं नाशये त्रिपथगे त्वयाऽद्य मया ।।] इत्यादि प्रकीर्ण पातकाना एतत्काल पर्यन्त मर्जिताना लघुस्थूल सूक्ष्माणा च निःशेष परिहारार्थं दशावरान् दशावरान् दशापरान् आत्मनासहितान् एक विंशति पुरुषा नुद्धर्तुं ब्रह्मलोका वधि पञ्चा

शङ्कोटियोजन [विस्तीर्णेऽस्मिन्भूमण्डले सप्तर्षि मण्डलपर्यन्तं वालुकाभिः कृतराशेः वर्षसहस्रावसाने एकैक वालुका पकर्ष क्रमेण सर्वराश्यपकर्ष-समित काल पर्यन्तं ब्रह्मलोके ब्रह्म सायुज्यता प्राप्त्यर्थं कुरुक्षेत्रादि सर्व तीर्थेप स्नान पूर्वकं सहस्रगोदान जन्य फल प्राप्त्यर्थं तथा ममसमस्त-पितॄणां आत्मनश्च विष्णवादि लोक प्राप्त्ये अधीतानामध्येष्य माणानां वा ध्यायानां स्थापनविच्छेदक्रोश घोषण दन्त विवृति, द्रुत्वं तद्रुतोचारित वर्णानां पूर्व सवर्णानां गलोपलम्बितविवृतोचारित वर्णनामूक्ष्टिप्रा स्पष्ट वर्ण विघट्टनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यथा तथा मत्वं तत्परिहारार्थं अष्टत्रिंशदनध्यायाध्ययने रथ्या सञ्चरतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययने म्लेच्छा-न्त्यजादे शृण्वतो ऽध्ययने ऽशुचिदेशे ऽध्ययने आत्मनोशुचित्वेऽध्ययने अक्षर स्वरानुस्वारपदच्छेद कण्डिका व्यञ्जन ह्रस्व दीर्घ प्लुत कण्ठ तालु मूर्धन्योष्ठ्य दन्त्य नासिका नुनासिक रेफजिह्वा मूली यो पध्मानीयो दात्ता नुदात्त स्वरिता दीनां व्यत्यये नो आरेमाधुर्याक्षर व्यक्तिहीन त्वा द्यनेक प्रत्यवाय परिहार पूर्वकं सर्वस्य वेदस्य मवीर्यत्व सम्पादन द्वारा-यथाव त्फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं देव ब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायण सन्निधौ गङ्गाभागीरथी मन्दाकिनी-अलक नन्दायां अमुक तीर्थे वा प्रवाहाभिमुखं स्नानमहं करिष्ये ॥ इतिसङ्कल्प्य स्नायात्—[यदि यजमानो वेदाधिकारी न स्यात्तर्हि तेनायं संकल्पः पुराणोक्त विधिना कार्यः उपाध्या-येन तत्करतः कारयितव्यश्च ॥] इति हेमाद्रिकृतः सङ्कल्प प्रयोगः।

अथनद्यादौनित्य स्नान प्रयोग :—शुचिर्भूत्वाकर्ता शुभ्रां यथा देश सम्भवां वा मृदमार्द्रं गोमयं कुशान् तिलानवानुसुरभीणि पुष्पाणिमस्मं चादाय तीर्थं तटे गच्छेत्। तदनन्तरंसूर्यांशुरश्च स्तीर्थानि-प्रार्थयेत्। तीर्थ प्रार्थना, नमामिगङ्गे तव पाद पङ्कजं सुरासुरै र्वन्दित्य रूपम्। भुक्तिं च मुक्तिं च ददासिनित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्॥ यागति योग युक्तानांमुनीना मूर्ध्वरेतसाम्। सागतिःसर्व जन्तूनां गौतमी तीर वासिनाम्॥ पुष्करा द्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकालेसदामम॥ त्वं राजा सर्व तीर्था नां त्वमेव जगतः पिता। याचितं देहिमे तीर्थं तीर्थ राजनमोऽस्तुते॥ अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्त्वच। वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नाना नुज्ञांप्रयच्छमे॥ अधिष्ठाय च तीर्थानांतीर्थेषु विचरन्ति याः देवता स्ताः प्रयच्छन्तु स्नानाज्ञांमम सर्वदा॥ गङ्गे चयमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

(१) वेदितप्राप्तिसे श्रावनमादि नैमित्तिकस्नानेहेमाद्रि प्रोतमहा गद्गत्वंकुर्वन्ति सर्वस्नानदानञ्चः कारयन्ति च।

नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ इति सम्प्रार्थ्य हस्तौ पादौप्रक्षाल्याचम्य संकल्पः—अद्यपूर्वो चारित एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कायिक वाचिक मानसिक वाचिक सांसर्गिक ज्ञाता ज्ञात स्पर्शा स्पर्शभुक्ताभुक्त पीतापीतादिसकल पातकनिरास पूर्वक मासनभोजन शयन गमनादि प्वनृतभाषणादि दोष निराप द्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थममुक तीर्थेस्नानमहं करिष्ये ॥ इतिसंकल्प पश्चात्—तीर्थाभिमन्त्रणम्—ॐ उरु हि राजा वरुणश्चकारसूर्याय पन्थामन्वेतवाऽउ। अपदे पादा प्रतिधातवे करुतापवक्ता हृदया विधश्चित्। नमोवरुणायाभिष्ठितोवरुणस्य पाशाः॥ १ ॥ इतिमन्त्रेण न्युब्जा ञ्जलिहस्तेन तोयमभिमन्त्रयेत् ॥ जलावर्तनम्—ॐ ये ते शतंवरुणये सहस्रं यज्ञिया पाशा विततामहान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तुमरुतः स्वर्काः ॥ २ ॥ पा० गृ० इति पूर्णाञ्जलिनापोमहणम्—॥ सुमित्रिया नऽआपऽओषधयऽसन्तु ॥ ३ ॥ इतिमन्त्रेणजलाञ्जलिंगृह्णीयात् ॥ तीर्थे तटे जल प्रक्षेपणम्—दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोस्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्मऽ ॥ ४ ॥ मृत्तिका लेपनम्—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा ᳪ सुरे स्वाहा ॥ ५ ॥ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ मृत्तिके ब्रह्म दत्तासि काश्यपे नाभि वन्दिता। त्वयाहतेन पापेन गच्छामि परमां गतिम् ॥ मृत्तिके हरमे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्। इतिसंमर्थ्य। नाभिमात्रेतीर्थे जलं प्रविश्य सूर्याभिमुखं स्थित्वास्नायात्। तत्रमन्त्रः—ॐ आपोऽअस्मान्मातरःशुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वःपुनन्तु। विश्वं हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीऽ ॥ ६ ॥ इतिमन्त्रेणनिमज्य, पुनः—ॐ चदि दाम्वऽ शुचिरा पूतऽएमि ॥ ७ ॥ इतिमन्त्रेणद्वितीय वारं निमज्य, पुनस्तूष्णीं निमज्योन्मज्या चामेत्)

(१) विष्णुस्मृतिः—प्रणवाविष्णु अरुद्रअयमंगो मिवि मोच्यते। नष्यन्ते ऽसुरसंधाने नम्यतेषु मुमुक्षुभिः ॥ (३) इतिमन्त्रेण जलंदक्षिण हस्ता ञ्जलिभिर्दक्षिणावर्तं त्रिवार मा वर्तयेत् ॥ स्नापयेत् ॥ (४) इतिमन्त्रेणाग्र ञ्जलिस्थं मुदकं स्वशत्रुमनसाविचिन्त्य तत्साधर्म्य स्वनाम मार्गेतीर्थतटे क्षिपेत् ॥ (१) मृत्तिका मादाय तस्याःत्रिभागा त्वा प्रथम भागं वाम हस्ते गृहीत्वा तेन नाभेरधः कटि प्रदेश मनुलेपयेत्। हस्तं प्रक्षाल्य ॥ (२) पुनस्ते नैव हस्तेन द्वितीयभागेन बस्ति उरु अंघे चरणौ करौ चमत्येकं तूष्णीं त्रिभिरनुलिप्य पुन र्हस्तं प्रक्षाल्याचम्य तीर्थोदकं नमस्कुर्यात् ॥ (३) इतिमन्त्रेण तृतीय भागेन दक्षिण हस्तेन स्कन्धादि नाभिपर्यन्तानिगात्राण्यनुलिप्य हस्तं प्रक्षाल्य चम्य तीर्थोदकं नमस्कुर्यात् ॥

गोमयलेपनम् अग्रमग्र चरन्ती ना मोषधीनां वनेवने। तासां वृषभ पत्नीनां पवित्रं काय शोधनम् ॥ तन्मे रोगांश्च शोकांश्च पाप मेहर गोमय। (इति मन्त्रेण गोमयमभिमंत्र्य)। ॐ मॉ नस्तोके तनये मा नऽआयुषिमानो गोषु मा नोऽअश्वे पुरीरिषऽ मानो व्वीरा नुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तऽःसदमित्त्वा-हवामहे ॥ ८ ॥ भस्मलेपनम्, क्षेपकम्—जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म, व्योमेति भस्म, सर्वं ह्वाइदं भस्म, मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति ॥ ॐ प्रसद्यभस्मना योनिम पश्च पृथिवी मग्ने, स छं सृज्य मातृभिष्ट्व ज्ज्योतिष्मा न्युनरासदऽर । ६ ॥ इति क्षेपकम् मार्जनम्—ॐ इमम्मे व्वरुणश्रुधी हवमद्या चमृडय, त्वामवस्युराचके । १० ॥ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः॥अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश छ समानऽआयुऽरप्रमोषीऽर ।११॥ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्य-विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाऽर यजिष्ठो व्वन्हितमऽर शोशुचानो विश्वाद्वेषा छ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् । १२ ॥ सत्वन्नोऽअग्ने वमोभवोती नेदिष्ठोऽ अस्याऽ उपसोव्युष्टौ, अवयक्ष्व नोवरुण छ रराणोव्वीहि मृडीक छ सुहवोनऽएधि । १३ ॥ मापोमौषधीहि छ सीर्धाम्नो धाम्नो राज स्ततों वरुणनो मुञ्च । १४ ॥ उदुत्तमं व्वरुणपाश मस्म-दवाधमंवि मध्यम छ श्रथाय अथात्वय मादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम । १५ ॥ मुञ्चन्तु मा शपथ्या दथो वरुण्यादुत अथोयमस्य पड्वीशात्सर्वस्म्मा देव किल्विषात् । १६ ॥ अवभृथनि चुम्पुणनिचेरुरसि निचुम्पुणःऽ१ । अवदेवैर्देव कृतमेनोयासिष मवमर्त्यै र्मर्त्यं कृतम्पुरु राव्णो देवरिषस्पाहि । १७ ॥ (इतिमन्त्रैः सर्वाङ्गा-निमार्जयित्वा । पश्चात्तूष्णींस्नात्वाचम्य) पुनदर्भैर्मार्जनम् ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्ज्जे दधातन महेरणाय चक्षसे । १८ ॥ योवःशिव तमो रसस्तस्य भाजयतेह नःउशतीरिव मातरः । १९ ॥ तस्म्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जन यथा च नःऽ । २० ॥ इदमांपऽप्रवहता वद्यञ्च मलञ्चयत् यच्चाभि दुद्रोहा नृतं यच्च शेपेऽअभीरुणम् आपोमा तस्मादेनस ऽःपवमानश्चमुञ्चतु ॥ २१ ॥ हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्मॉं ऽआविवासति हविष्मान्देवोऽअध्वरो

४पूर्णाञ्जलिति मन्त्रेण सोदकं गोमयं सूर्याय दर्शयित्वा तेन त्रिवार मङ्गानि ललाटादिपादतल पर्यन्तानि मृल्लेपन वदनुलिप्य स्नापयेत् ॥ १ । इति मन्त्रेण ललाटा द्यङ्गेषु भस्म लेपनं कृत्वा ॥ २ । तत्र सजलेन कुश त्रयेण नाभि दक्षिण पार्श्वमारभ्य शिरो नीत्वा नाभि वामपार्श्व पर्यन्तं मात्मानं पावयेत् ॥

हविष्मतीं ऽअस्तु सूर्यं—।२२॥ देवीरापोऽ अपान्नपाद्योवऽ उर्मिर्हविष्यऽ इन्द्रियावान्मदिन्तम । तन्देवेभ्यो देवत्रावत्त शुक्रपेभ्यो येषाम्भागस्थ स्वाहा ।२३॥ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्याऽ उन्नयामि समापोऽ अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीऽ२ । २४ ॥ अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजस्वश्चितानाऽ याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन्याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीऽ[1] । २५ ॥ द्रुपदादिव मुमुचानऽ स्विन्नऽ स्नातो मलादिव पूतम्पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसऽ । २६ ॥ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभि स्रवन्तु नऽ । २७ ॥ अपा रस मुद्वयस सूर्ये सन्त समाहितम् । अपा रसस्य योरसस्त म्वोगृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टतमम् । २८ ॥ अपो देवी रुप सृज मधुमतीर यक्ष्माय प्रजाभ्य—तासा मास्थाना दुत्जिहता मोषधयऽ सुपिप्पलाऽ१ । २९ ॥ पुनन्तुमा पितरः सोम्यास—पुनन्तुमा पितामहाऽ पुनन्तुप्रपितामहाऽ पवित्रेण शतायुषा विश्वमायु र्व्यश्नवै । ३१ ॥ अग्नऽआयू षि पवस आसुवोर्जमिषञ्च नऽ आरे बाधस्व दुच्छुनाम् । ३२ ॥ पुनन्तुमा देवजनाऽ पुनन्तु मनसा धिय—पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदऽ पुनीहिमा ।३३॥ पवित्रेण पुनीहिमाशुक्रेणदेवदीद्यत् अग्ने क्रत्वा क्रतूँ । ऽरनु ।३४॥ यत्तेपवित्र मर्चिष्यग्ने विततमन्तरा ब्रह्मतेन पुनातुमा ।३५॥ पवमानऽस्सोऽ अद्य न- पवित्रेण विचर्षणिऽ यऽ१ पोता स पुनातुमा । ३६ ॥ उभाभ्यान्देव सवित ऽपवित्रेण सवेन च माम्पुनीहि विश्वत— । ३७ ॥ वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्वयस्तन्वोवीतपृष्ठाऽ तयामदन्तऽ सधमादेषु वय स्याम पतयोरयीणाम् ।३८॥ (इति मन्त्रै मीर्जयित्वा पश्चा दुदक स्पृशेत् ॥) तत —ॐ विश्वपतिर्म्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेणसूर्यस्यरश्मिभि—तस्यते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामऽ पुनेतच्छकेयम् ।३९॥ वाचस्पतिर्म्मा पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि—तस्यै० । ४० ॥ देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि—तस्यै० । ४१ ॥ तत —ॐ पुनातु इमग्ने ब० । ४२ ॥ इति मन्त्रेण ॐ पुनातु वरुणाया० । ४३ ॥ इति मंत्रेण ॐ भुव पुनातुस्वग्नोऽ अ० । ४४ ॥ (इति मन्त्रेण) ॐ स्व पुनातु-स स्वग्नोऽअ० । ४५ ॥ (इतिमन्त्रेण) ॐ मह पुनातु-मापो

---

(१) इति मन्त्रेण नाभेरूर्ध्व माजयत् ॥ (२) इति मन्त्रेण नाभ रधो मार्जयेत् ॥ (३) इति मन्त्रेण मर्धाद्धे मा० ॥ (४) अपामार्गस्तथा दूर्वाभिमार्जनं आवश्यदिनैमित्तिक स्नाने कुर्यान्नतु नित्य स्नाने ॥

मौप० । ४६ ॥ (इतिमंत्रेण) ॐ जनः पुनातु-उद्धत्तमम्० । ४७ ॥ (इति मंत्रेण) ॐ तपः पुनातु-मुञ्चन्तु मा० । ४८ ॥ (इतिमंत्रेण) ॐ सत्यं पुनातु-अवभृथ नि० । ४९ ॥ (इति मंत्रेण) ॐ तत्सवितुर्व्व । ५० ॥ सर्वं पुनातु ॥ (इति कुशैर्मार्जयित्वा) ॥ अपामार्गेण मार्जनम् (क्षेपकम्) ॐ अपाघमपकिल्विषमप कृत्यामयोरपः-अपोमार्गत्व मस्मद्‌पदुऽस्वप्न्य ७ सुवः । ५१ ॥ (इति मंत्रेणापामार्गैस्त्रिभिः मार्जयेत्) ॥ ततः-दुर्वांकुरेण मार्जनम्—ॐ काण्डां त्काण्डा त्प्ररोहन्ती परुषःपरुष स्परि एवानोदूर्व्वेप्रतनु सहस्रेण शतेन च: ।५२॥ (इति क्षेपकम्) (इति मंत्रेण दूर्वाभि स्त्रिभिर्मार्जयेत्) ॥ अघमर्षणम् ततोघ्दयमाणपद् पञ्चाणामन्यतमे नान्तर्जले मग्नोऽनुच्छ्वस्त्र सप्त घमर्पणं कुर्यात् तद्यथा ॐ द्रुपदादिं० । ५३ ॥ (इति वात्रिः पठेत्) ॥ आयङ्गौऽ पृश्निरक्रमी दसदन्मातरंपुरःऽ । पितरञ्चप्रयन्त्स्वः । ५४॥ (इतिवात्रिः पठेत्) ॥ सशिरसं प्राणायामं वात्रिः पठेत् । यथा—ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितु० स्वरोम् । ५४ ॥ इति सप्त व्याहृति स्पूर्विकांस शिरस्कां गायत्रीं वात्रिः पठेत् ॥ ॐ इति त्रात्रिः पठेत) विष्णु ध्यानम्—यद्वापरमात्मानं विष्णु शेष शायिनं सायुधंस श्री कमेकाम मनसाध्यायेत्) एवं स्नानं कृतंस्यात् ॥ स्नानाङ्ग तर्पणम्—ॐ ब्रह्मादयो देवा स्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्देवास्तृ० । ॐ भुवर्देवा स्तृ० ॐ स्वर्देवास्तृ० ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृ ॐ सनकादिद्वै पायनादयो ऋषय स्तृप्यन्ताम् ॐ भूर्ऋषयस्तृ ॐ भुवऋषयस्तृ ॐ स्व ऋषयस्तृ ॐ भूर्भुवःस्व ऋषयस्तृ० ॐ कव्येवाड नलादय. पितर स्तृप्यन्ताम् ॐ भूः पितर स्तृ० ॐ भुवः पितर स्तृ०, ॐ स्व पितर स्तृ० ॐ भूर्भुवः स्वःपितर स्तृ० ॥ (ततः आचम्य सव्येन यक्ष्म तर्पणं कुर्यात्) । यक्ष्मतर्पणम्—यन्मया दूषितं तोयं शारीरमल सम्भवात् । तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥ (इति मंत्रेण तीर्थ तटे तिलमिश्रं जलाञ्जलिं निक्षिपेत् ॥) पश्चात् लतादिकेषु शिखोदक त्यागः—लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः । ते सर्वे तृप्ति मायान्तु

---

(१) प्रथमे देवतर्पणे पूर्वाभिमुखः सकुशत्रयं गृहीत्वा । तदग्रैः सव्येन देवतीर्थे नोङ्कारपूर्वकं देवेभ्य एकैक मञ्जलिंदद्यात् ॥ (२) द्वितीये ऋष्यादि तर्पणे उदगग्रान् दर्भान्धृत्वा तदग्रैर्निवीत्या प्रजापति तीर्थे नोङ्कारपूर्वक मृषिभ्यो द्वौद्वावञ्जलीदेयौ ॥ (३) तृतीये पितृ तर्पणे भुग्नान्दक्षिणा ग्रमूलान् दर्भान्धृत्वाप सव्येन पितृतीर्थे नोङ्कारपूर्वकं पितृभ्यस्त्रीं स्त्रीनञ्जलीन्दद्यात् ॥ इति नद्यादौनित्य स्नान प्रयोगः ॥ (४) व्रताः ॥

मयोत्सृष्टे शिखोदके ॥ (इतिमन्त्रेण स्कन्दिग्भागेशिराग्रं निष्पीडयेत् तवोधौते वाससी परिधाय भस्मादिधारयेत् ततोगृहे व्रजेत्) इति ॥

गङ्गा पूजनम् ।

तीर्थे गत्वा जलस्पर्शनपूर्वकं गङ्गां प्रणम्य भूतशुद्धिं सविधाय सूर्यपूजनं कृत्वा च नारिकेलादि फल ताम्बूल चार्पयित्वा पाणी प्रक्षाल्य आचम्य प्रथमयात्रायां प्रायश्चित्तसंकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादि अमुकोऽहं द्वादशाब्दषडब्द सार्द्धाब्द एकाब्द वा प्राजापत्याम्नायीभूतहिरण्य ब्राह्मणाय दास्ये इति ब्राह्मणाय सुवर्णं दत्वा गङ्गाम्भसि प्रविश्य स्नात्वाचम्य कुशतिलजलान्यादाय अद्येत्यादि अमुकोऽहं यावच्छेन्नाय वत्सरो माघवर्ष सहस्रान्तस्वर्गमहित्व प्राप्तिकामो वपनं करिष्ये ॥ इति संकल्प । अथ मन्त्र आत्मन शुद्धिकामो वा पितृणां मुक्ति हेतवे वपनं चकरिष्यामिनीरेऽहं तव जाह्नवि ? ॥ २ानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् केशान्वपाम्यहम् । महापापोपपापाश्च केशलोमनखा द्विजा । क्षुरिङ्गिश्नन्तु सर्वाङ्गे ते मे दोषा पतन्त्वत्र । इति जलमुत्सृज्य मुण्डन कृत्वा ॥ अनेन मन्त्रेण गङ्गा प्रार्थयेत् ॥ ॐ नमो देवाधिदेवाय शितिकण्ठाय दण्डिने । रुद्राय चापहस्ताय चक्रिणे वेधसे नम ॥ सरस्वती च सावित्री वेदमाता गरीयसी । सान्निध्यन्तुभवत्वत्र तीर्थपाप प्रणाशनी इति सम्प्रार्थ्य कुशतिलजलान्यादाय ॥ ॐ विष्णु रे । श्रीमद्भपुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमत्समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिप्रलयकारस्य रच शिक्षा विचक्षणस्य प्रर्णपारिजातस्य अच्युतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिनारायणस्याचिन्त्या परिमित शक्त्याध्रियमाण महाजलौघमध्य परिभ्रममाणस्यानेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमे महदह ङ्कारपृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महदण्डकटाहमध्ये आधार शक्तिकूर्मानन्ताद्यष्टदिग्गजोपरिस्थिते सप्तपातालस्योपरिभाग महरगेन्द्रो परस्याष्टी भार महाकाल शेषस्य सहस्रफणामणिद्युते दिग्दन्तिदन्तशुण्डा दण्डेन लोकालोकाचलवलये मध्यञ्चसुमेरुकर्णिकारुचिरक्षीरोदार्णवपरिवेष्टिते जम्बुप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौञ्च शाक पुष्करसप्तद्वीपैर्दीपिते भारतवर्षे भरतखण्डे अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका द्वारावती कुरुक्षेत्र पुष्करादि नाना तीर्थ युते कूर्म भूमौ मध्यरेखायां पूर्वदिग्भागीरथ्या पश्चि मतीरे सकल सृष्टिपरार्द्धस्य चीयानां ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धस्य प्रथमाब्दे प्रथममासे प्रथमदिवसे अह्निद्वितीयायाम तृतीये मुहूर्ते प्रथमघटिकायां

सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमे युगे कलियुगस्य प्रथमे चरणे बौद्धावतारेऽमुक नाम वत्सरे महानक्षत्रे च एवं विधि पञ्चाङ्गादिके अमुक नाम दिवसे नक्षत्रे एवं विधि, अमुक योगेऽमुक नाम करणशुभ मुहुर्तेऽमुक समयेऽमुकराशिस्थितेरवौऽमुकराशिस्थिते चन्द्रेऽमुकराशि स्थितेभौमेऽमुक राशिस्थिते बुधेऽमुकराशि स्थिते देवगुरौअमुक राशिस्थिते शुक्रेमुकऽराशिस्थिते शनौअमुक राशिस्थते केतौऽमुक राशिस्थिते राहौ एवं गुण विशेषेण विशिष्टायां अमुकऋतौअमुक मासेऽमुक पक्षेऽमुकतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुक राशिः ॥ अमुक नामाहं ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा संचितानां पातकानां ब्रह्महनन मद्यपान सुवर्णस्तेय गुरुतल्प गमनतत्संसर्गकरूप बुद्धि पूर्वकानां मनोवाक् काय कृतानां महापातकानां बहुकालाभ्यस्तानां उपपातकानां स्पृष्टास्पृष्ट सकरीकर्णं अपात्रिकर्णं जाति भ्रंश करण रसविक्रय गोविक्रय खरोष्ट्र महिषी विक्रय अजादि पशु विक्रय ब्राह्मण दुर्भाषण निरर्थकद्रुमच्छेदनदमानया कर्णं ब्रह्मस्वहरण जाति भ्रंश करण रविदेवराज स्वापहरण ब्राह्मणनिन्दा वेदनिन्दा शिवनिन्दा अभक्ष्य भक्षणं अभोज्यभोज्यं अचोष्याऽऽचोषणं अपेयापानं अस्पृश्य स्पर्शनं अश्राव्यस्य श्रवणंअघ्रे याघ्राणम् अहिंस्याऽऽहिं सनम् अवन्ध्याऽऽवन्धनम् अचिन्त्यचिन्तनम् अयाच्याऽऽयाचनम् अपूज्यपूजनम् व्यतिक्र मातृपितृतिरस्करणं स्त्री पुरुष प्रतिभेदनम् परस्त्रीगमनं पशुयोनि गमनं अयोनिबीज स्यापनम् कुटसाक्षित्वा वाद मिथ्यापवाद परद्रोह पर हानि चौर्य करणं म्लेच्छसं भाषणम् म्लेच्छसंङ्गासनम् ब्रह्म द्वेषणं स्वामी भेदनं मित्र वधनम् भार्यानिन्दनम् गर्भपातनम् रजस्वला मुखास्वादनम् निषिद्धकालमैथुनम् दासीगमनं वैश्या गमनम् सम्भाषण स्पर्शनम् परान्न भोजनम् कुपात्र पात्र भोजनम् गणिकान्न भोजनम् निकृष्टान्नभोजनम् पंक्ति भेद करम् म्लिसहभोजनम् परशेष भोजनम् लघुस्थूल सुक्ष्मण पर्वकराहु केतु पराग निमित्त कुरुक्षेत्राधिकरण क्षेत्रीय संग दानक सुवर्ण भारदान जन्य फल दश गुण विध्वंशदानक गङ्गास्नान फल सहस्र गुण फल प्राप्ति कामः श्रुतिस्मृति वेद पुराणोक्त समस्त फल प्राप्त्यर्थं पूर्वोक्त प्रायश्चित्ता निवृत्ति पूर्वकं पश्चिमवाहिन्याः श्रीगङ्गायाः चैतस्याः सचैलं स्नानमहं करिष्ये ॥ इति स्नात्वा तत्प्रार्थनाο—॥ महापापो पपापंच नानायोनिषु यत्कृतम् । बाल भावादिक पापं पर द्रोहादिकाँस्तथा ॥ १ ॥ देहादिः मानसं पापं सर्वदायन्मया कृतम् । भूतभव्यं भविष्य च पापेदं देहबन्धनम् ॥ २ ॥ तस्मा दशेष पापौघान् किल्विषाश्चतथावद्धि, शरणागत दीनार्थं स्नाहिजाह्नवि-

सर्वदा ॥ ३ ॥ गर्भपार्मगतं दुःखं गतं मे व्याधिबन्धनम् ॥ निष्पापाद्य-धुनादेवि प्रसादात्तवनान्यथा ॥ ४ ॥ उत्तीर्य्य धौतवासांसि परिधाय स्नान वासांसि ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ सन्ध्यावन्दननित्यकर्मादिकं कृत्वा ॥

ततो गङ्गां पूजयेत् ॥ गणपतिं नमस्कृत्य—अर्घ्यसंस्थाप्य आचम्य प्राणायामं कृत्वा अद्येत्यादि अमुकोऽहं सकल पापक्षयपूर्वकं। श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्ये यथो पमिलित सालंकारैः श्रीगङ्गापूजन महं करिष्ये॥ ध्यानम्॥शिवकर निषण्णां शुभ्रवस्त्रां त्रिनेत्रां, कलघृत कलशोद्य सारसला भीत्यभीष्टाम् विधिहरि रूपांसि सिन्धु कोठार सुवर्णां कलितवसिनदुकूलां जाह्नवी त्वां नमामि॥ चतुर्मुखां त्रिनेत्रां च सर्वा वयव शोभिताम्, रक्त कुम्भा सितां भोजां वरदो नलसत्कराम्, सीत वक्षोपरीधाना मुक्तामणि विभुषिताम्, एवं सत्सु सौम्यां च चन्द्रायुत समप्रभान् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा गङ्गायै नमः आवाहनम्, आसनम् मापस्नानम् मधुपर्कम् आचमनीयम्-वस्त्रम् सर्व भूषादिकैः त्रैलोक्य सज्जा निवारकैःममो पपादितैर्वस्त्रैस्सत्वसन्ना भवमातरः ॥ धूपम्॥वनाङ्गां गुग्गुलं धूपं सुगन्धि सुमनोहरम्, आघ्रेयं सर्व देवानां गृहाण परमेश्वरि ॥ दीपम् ॥ महाण महलं दीपं घृतवर्ति समन्वितम्। रुद्रनेत्र नमोस्तुभ्यम् मम मूर्ति नमो नमः। अथ नैवद्यम् ॥ नैवद्य गृह्यतां देवि नानाभक्ष्यसमन्वितम् मयोपपादितं देवि नैवेद्यं प्रति गृह्यताम् ॥ताम्बूलम्॥ अथद्वादश नामभिर्गङ्गां पूजयेत् ॥ ॐ नमो भगवत्यै नमः ॥ ॐ नमो नारायण्यै नमः ॥ ॐ नमो हरायै नमः॥ ॐ नमो गङ्गायै नमः ॥ ॐ नमो विश्वमुखायै नमः ॥ ॐ नमो मृतायै नमः ॥ ॐ नमो दक्षायै नमः ॥ ॐ नमः शिवायै नमः ॥ ॐ नमोरेवत्यै नमः ॥ ॐ नम भूत्यै नमः ॥ ॐ नमो नन्दिन्यै नमः ॥ ॐ नमः ॥ स्वारायै नमः॥ इति द्वादश नामभिः सम्पूज्य अथ प्रार्थना-परदार परद्रव्यपरद्रोहोद्युमेमति विपरमुखा अनेकृत्ते प्रसादा तव सुव्रते ॥ अर्घ्यं दद्यात् ॥ ततो सङ्कल्प ॥ अद्याऽमुकोऽहं सकल पापक्षय द्वारा श्रीगङ्गाया पूजनस्य सांगफल प्राप्त्यर्थं मिदं सुवर्णऽमुकतीर्थवासिने ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे अभिषेकपाठादिकं कुर्यात्

❀ इति गङ्गापूजनम् ❀

अथ स्वस्ति वाचनम् ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतिः प्रदिशः

सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णो स्यूरसि, विष्णो ध्रुवोसि। वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्नि र्देवता वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रो देवता मरुतो देवता विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता ॥ ४ ॥ ओं द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति पृथिवी शान्ति राप शान्ति रोषधय शान्ति वनस्पतय शान्तिर्विश्वे देवा शान्तिर्ब्रह्म शान्ति शान्ति रेव शान्ति सामाशान्तिरेधि। विश्वानि देव सवितुर्दु रितानि पराशुव। यद्भद्र तन्न आसुव ॥ शान्ति, शान्ति, शु शान्ति। भवतु ॥

गणेश पूजनम्

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गज कर्णक। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिप। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन। द्वादशैतानि नामानि य पठेच्छृणुयादपि। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लाम्बरधर देव शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदन ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितोय सुरासुरै। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नम। सर्व्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्व्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमो ऽस्तुते। सर्वदा सर्वकार्य्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषा हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरि ॥ तदेव लग्न सुदिन तदेव ताराबल चन्द्रबल तदेव विद्याबल दैवबलतदेवलक्ष्मी पते तेङ्घ्रि युग स्मरामि ॥ लाभस्तेषा जयस्तेषा कुतस्तेषा पराजय। येषामिन्दि वरश्यामो हृदयस्थोजनार्दन ॥ यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ॥ तत्र श्रीविजयो भूति र्ध्रुवा नीति मतिर्मम ॥ सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वरा। देवादिशन्तुन सिद्धि ब्रह्मेशान जनार्दन। विनायक गुरु भानु ब्रह्म विष्णु महेश्वरान् सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्य्यार्थ सिद्धये।—श्री इति गणेश समीपे हस्तस्थ दुर्वाक्षत पुष्पाणि सस्थाप्य ॥ तिलकुशजलान्या दाय ॥ सङ्कल्पम् ॥ ॐ नम परमात्मने पुराण पुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया।

प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे भारत वर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे केदारखण्डान्तर्गत सुमेरु दक्षिण पार्श्वेऽलकनन्दा मन्दाकिनी समीपे षष्टि समृवत्सराणा मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे अमुकाऽयने

अमुक शर्मा अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते श्री सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एव गुण विशेषेण विशिष्टायाम्शुभपुण्य तिथौ (ममाऽत्मन) श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं [मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् । प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थम् । सकल मनईप्सितकामना संसिद्ध्यर्थम् । लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय लाभादि प्राप्त्यर्थम् । इहजन्मनि जन्मान्तरे वा सकल दुरितोपशमनार्थं ॥ तथा च मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिल कुटुम्ब सहितस्य सपशो समस्त भय व्याधि जरा पीडा मृत्यु परिहार द्वारा आयुरारोग्यै श्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् तथा मम जन्म राशेरखिल कुटुम्बस्य वा जन्म राशे सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादशस्थान स्थितक्रूर ग्रहास्तै सूचित सूचयिष्यमाण च यत्सर्वारिष्टतद्विनाशद्वारा एकादश- स्थान स्थित वच्छुभ फल प्राप्त्यर्थम् । पुत्रपौत्रादि सन्ततैरविच्छिन्न वृद्ध्यर्थम् । आदित्यादि नवग्रहानुकूलता सिद्ध्यर्थम् । तथा इन्द्रादि दशदिक्पाल प्रस न्नता सिद्ध्यर्थम् । अधिदैविकाऽधिभौतिकाऽध्यात्मिक । त्रिविध तापो पशमनार्थम् । धर्मार्थ काम मोक्षलाभावाप्त्यर्थं च । ॐ भूर्भुव स्व अमुक कर्मणि धर्मार्थकाम हेतवे (अमुक पञ्चायतन देवता प्रीत्यर्थं) गणपत्यादि देवता प्रीतये । एवमेव कलशस्थापन पुण्याह वाचन कर्मणि तत्रादौ कार्यं निर्विघ्नार्थं गणपति पूजन करिष्ये । (इति सङ्कल्प) शुद्ध मानसैरक्षतैः ।—हे हे रम्ब त्वमे ह्येहि अम्बिका त्र्यम्बकात्मज सिद्धि बुद्धिपते त्र्यक्षलक्ष लाभ पितु पित ॥ नागास्य नाग हारत्व गणराज चतुर्भुज । भूषित स्वायुधैर्दिव्यै पाशाङ्कुश परश्वधै आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतो । इहागत्य गृहाणत्व पूजाक्रतुं रक्ष रक्ष मे ॥ आवा हीव गणेशन्तम् । पूजार्थं प्रपूजयेत् ॥ नमस्ते देव सवितरथैं प्राद्यं इस्पतये । ब्राह्मणेतेन यज्ञ मन तेन यज्ञपति तेन मामव ॥ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमतनो त्वरिष्ट यज्ञ ७ समिमं दधातु । विश्वे देवासइह मा यन्तामो प्रतिष्ठेति प्रतिष्ठाप्य । ॐ गणानान्त्वेति प्रजापति ऋर्षियजु = छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने विनियोग ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपति ७ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे वसो मम आहमजानिगर्भधमात्व मजासि गर्भधम् । ॐ भूर्भुव स्व गणपते इहागच्छेति । अथासनम्— गुरुराय नमस्तुभ्य गणाधिपतये नम । गजाननमनोहारि विप्रपुष्पं

निवारय । ॐ पुरुष ऽः एवेदं ᳪ सर्व्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम् । उतामृत त्वस्ये शानोयदन्ने नाति रोहति ॥ इति आसनम् समर्पयामि ॥ पाद्यम्—उमापुत्राय देवाय सिद्धम् वन्द्यायते नमः । पाद्यं गृहाण देवेश विघ्नराज नमोस्तुते । ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषऽ- पादो᳕ऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि । इति पाद्यम् समर्पयामि । अथार्घ्यम् । एकदन्त महाकाय नागयज्ञोपवीतक । गणाधि देव देवेश गृहाणार्घं नमोस्तुते । ॐ त्रिपा दूर्द्ध्व ऽउदैत्पुरुषऽ- पादोस्येहा भवत्पुनः᳕ । ततो विष्वङ्व्यक्रामत् साशना नशनेऽअभि ॥ २४ ॥ इति अर्घम् । समर्पयामि ॥ अथ आचमनम् । सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् आचम्यतां मयादत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॐ ततो विराड् जायत विराजोऽअधि पुरुष ऽसजातोऽअ त्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुर ऽः ॥ २५ ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ अथ स्नानम् ॥ गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः । स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्वमे ॥ ॐ तस्माद्यज्ञा त्सर्व्वहुत ऽः सम्भृतम्पृषदा ज्यम् पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्यायाम्या श्चये । इति स्नानं समर्पयामि ॥ [अथ क्षेपकम्]– अथ पञ्चमृतास्नानम्–(एक मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम् । पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृत मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐपञ्च नद्य ऽः सरस्वतीमपि यन्ति स स्रोतस ऽः । सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेभवत् सरित् । २७ ॥ इति पञ्चामृत स्नान समर्पयामि । पञ्चामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि । अथवा पृथग्मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम् ।–तत्र पयः स्नानम्–कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ ॐ पय पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा ऽः । पयस्वती ऽः प्रदिश᳕ सन्तु मह्यम् । इति पयः स्नानं समर्पयामि । पयः स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ दधिस्नानम्–(पयः सन्तु समुद्भूतं मधुराम्ल शशिप्रभम् । दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिन᳕ सुरभिनो मुखाकर त्प्रणऽआयु ᳪ षितारि षत् ॥ २८ ॥ इति दधिस्नानं समर्पयामि । दधि स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ अथ घृतस्नानम् । नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोषकारकम् । घृत तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ घृतम्मिमिक्षे । घृतमस्ययोनि घृतेश्रितोघृतम्बस्यधाम अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहा

कृतं स्तूपम स्वस्तिद्दव्यम ॥३०॥ इति घृतस्नानं समर्पयामि–घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥ (अथ मधुस्नानम् ॥) तरु पुष्प समुद्भूत सुस्वादु मधुरंमधु। तेज पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ऽ माद्धीर्न्नः ऽ सन्त्वोषधी ऽ ॥ ३१ ॥ मधुनक्त मुतोषसो मधु मत्पार्थिव ऽ रज – मधुद्यौरस्तु न ऽ पिता ॥ ३२ ॥ मधु मान्नो वनस्पति र्म्मधुमा २ँ ऽ अस्तु सुर्व्वः माद्धी र्गावो भवन्तु न ऽ ॥ ३३ ॥ इति मधुस्नान समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं–समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीय समर्पयामि॥ अथ शर्करास्नानम्–इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥–ॐ अपा छ रसस्य पोरमत्त वर्यो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो मीन्द्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वाजुष्टतमम् ॥ ३४ ॥ ॐ भूर्भुव स्व गणपति देवताभ्यो नम शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नान समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीय समर्पयामि। –अथ गन्धोदक स्नानम्–मलया चलसम्भूत चन्दनागरु सम्भवम्। चन्दन देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ –ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टा करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूताना तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ३५॥ (लक्ष्मी सुक्त मन्त्र)– भूर्भुव स्व श्रीगणपति देवताभ्यो नम पञ्च गन्धोदक स्नान समर्पयामि॥ पञ्च गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नान समर्पयामि॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीय समर्पयामि॥ –अथ उद्वर्तन स्नानम्॥–नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दन रजनीयुतम्॥ उद्वर्त्तन मया दत्त स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्॥ ॐ अ छ सुतासे। छ षु ऽ प्रच्यनाम परुषा परु। गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽ अच्च्युत ऽ ॥ ३६॥ ॐ भूर्भुव स्व श्री गणपति देवताभ्यो नम उद्वर्तन स्नानं समर्पयामि॥ उद्वर्त्तन स्नानन्ते शुद्धोदकस्नान समर्पयामि॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमन समर्पयामि॥ तत पञ्चामृतादि स्नानाङ्ग पूजा— ॐ भूर्भुव स्व श्री गणपतिदेवताभ्यो नम –वस्त्रोपवस्त्रार्थं अक्षताम् समर्पयामि। यज्ञोपवीतार्थेऽक्षतान् समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। नाना परिमल सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि। धूप दर्शयामि दीप दर्शयामि। –शर्करोपहार नैवेद्यम् ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा॥ नैवेद्य समर्पयामि। नैवेद्यान्ते हस्त प्रक्षालनार्थं मुख प्रक्षालनार्थं जलसमर्पयामि करोद्वर्तनार्थे पूगीफल ताम्बूलं समर्पयामि। हिरण्यगर्भदक्षिणा समर्पयामि कर्पूरार्तिक्य दर्शयामि। प्रदक्षिणा समर्पयामि। मन्त्र पुष्प

युक्त नमस्कारं समर्पयामि ॥ विशेषार्घ्यं–रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षकः। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्। वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद। अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम॥ प्रार्थनां समर्पयामि ॥ अर्पणम्–अनेन पञ्चामृतादि स्नानाङ्ग भूतपूजा-कृतेन ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतिदेवता प्रीयन्तां नमम ॥ (निर्माल्यं विसृज्य) पुनश्च (पञ्चायतन) गणपतिदेवताभ्यो गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य ॥ –सत्र यथा–हरिः ॐ–ॐ सहस्र शीर्षा० ॥ ३३ ॥ पुरुषऽए० ॥ ३४ ॥ एतावनास्य० ॥ ३५ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽ० ॥ ३६ ॥ ततोविराड० ॥ ३७ ॥ तस्माद्यज्ञात्स० ॥ ३८ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋच ऽः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ॐ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ३ ॥ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतऽःगावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा-ज्जाताऽ अजावय ÷ ॥ ४० ॥ तंयज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं ज्जातमग्रत ऽः। तेन देवा ऽः अयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्चये ॥ ४१ ॥ यत्पुरुषं व्यदधु ऽः कतिधाव्यकल्पयन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरुपादाऽ-उच्च्येते ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहू राजन्य कृत ऽ ऊरुतदस्य यद्वैश्य ÷ पद्भ्या ७ शुद्रोऽअजायत ॥ ४३ ॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो ऽः सूर्य्योऽअजायत श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ ४४ ॥ नाभ्याऽआसीदन्त रिक्ष ७ शीर्ष्णोद्यौऽसमवर्त्तत। पद्भ्याम्भूमि र्दिश ऽः श्रोत्रा त्तथा लोकाँ २॥ऽ अकल्पयन् ॥ ४५ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो स्यासी दाज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्म ऽःशरद्धवि ऽः ॥ ४६ ॥ सप्तास्या सन्परिधया स्त्रिऽः सप्त समिध ÷ कृता ऽः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽः अबध्नन्पुरुषम्पशुम ॥ ४७ ॥ यज्ञेन यज्ञ मय जन्त देवास्तानि धर्म्माणिप्रथमान्यासन्। तेहनाक म्महिमान ÷ सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्या ऽः सन्ति देवा ऽः ॥ ४८ ॥ स च यथा—ॐ द्यौ ऽः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्ति ÷ पृथिवी शान्तिराप ऽः शान्तिरोषधय ऽः शान्ति ÷ व्वनस्पतय ऽः शान्तिर्विश्वे देवा ऽः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति ऽः सर्व्वं ७ शान्ति रेव शान्ति ऽः सामाशान्तिरेधि ॥ ५० ॥ यतो यत ऽः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु शन्नः कुरु प्रजाभ्यो-भयन्न पशुभ्य ÷ ॥ ५१ ॥ ॐ सर्वेषां वाऽएष वेदाना ७ रसोयत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदाना ७ रसेनाभिषिञ्चति ॥ ५२ ॥ (ब्राह्मणमन्त्रः) ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपतिदेवताभ्यो नमः अभिषेकं समर्पयामि। (इति क्षेपकम्) ॥ पश्चात् देववीर्यं धृत्वा। ततो देवायाचमनम्–ॐ केशवाय नमः स्वाहा। ॐ नारायणाय नमः स्वाहा। ॐ माधवाय नमः स्वाहा—

इत्याचमनं समर्पयेत् ॥ हस्तप्रक्षालनम् । ॐ गोविन्दाय नमः ॥ वस्त्रम्- सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे । मयोप पादिते तुभ्य वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥—तस्मा द्यज्ञात्सर्वहुत ऽ ऋच ऽ सा० ॥ ५२ ॥ ॐ भूर्भुव स्व श्रीगणपतिदेवताभ्यो नम वस्त्रं समर्पयामि । वस्त्रा- न्तेऽक्षतान् अथ यज्ञोपवीतम्—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुण देवतामय उपवीत चोत्तरीय गृहाण परमेश्वर ॥)—ॐ तस्मादश्वा ऽ अ० ॥ ५३ ॥ —ॐ भूर्भुव स्व श्रीगणपति देवताभ्यो नम यज्ञोपवीत समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतान्ते ऽक्षतान्)॥ अथ गन्धम्—ॐ (श्रीखण्ड चन्दन दिव्य गन्धाढ्य सुमनोहरम् विलेपनसुरश्रेष्ट चन्दन प्रतिगृह्यताम् ॥) ॐ तयज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुष ञ्जातमग्रत ऽ तेन दे० ॥ ५४ ॥ ॐ भूर्भुव स्व गणपति देवताभ्यो नम गन्धम् समर्पयामि ॥ (अथ अक्षता ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ता सुशोभिता । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया ऽ अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रानविष्ठयामतियो जान्विन्द्रते हरि ॥५५॥ ॐ भूर्भुव स्व गणपति देवताभ्यो नम अक्षतान्समर्पयामि इति लेपनम् । अथ पुष्पाणि—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ यत्पुरुषं व्यदधु० ॥ ५६ ॥ ॐ भूर्भुव स्व गणपति देवताभ्यो नम, पुष्पाणि (सौभाग्यद्रव्य सहित च) समर्पयामि ॥ (देवेभ्य गन्ध सौभाग्यद्रव्यादीनि अनामिकाङ्गुष्ठेन अर्पयेत् अथ गणेशाय दुर्वाङ्कुरार्पणम् ।—(विघ्नवादि सर्वदेवाना दुर्वात्वं प्रीतिदा मता । क्षीरसागर सम्भूते वश वृद्धि करी भव ॥)—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुष ऽ परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ ५८ ॥ अथ धूपम् ।—वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तम आघ्रेय सर्वदेवाना धूपोऽय प्रतिगृह्यताम् । ॐ ब्राह्मणोस्य मुख मासी द्वाहूराजन्य — कृत ऽ (ऊरू तदस्य० ॥ ६४ ॥—ॐ भूर्भुव स्व गणपति देवताभ्यो नम धूप दर्शयामि ॥ अथ घृतपूरित नीराजन दीपम्—(आज्य च वर्ति सयुक्त वह्निना योजितं मया । दीप गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो० ॥ ६५ ॥ ॐ भूर्भुव स्व गणपति देवताभ्यो नम घृत पूरित नीराजन दीप दर्शयामि ॥ अथ नैवेद्यम्) शर्करावृत संयुक्तं मधुर स्वादु चोत्तमम् । उपाहार समायुक्त नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।) ॐ नाभ्या ऽ आसीदन्त रिक्ष ७ शी० ॥ ६६ ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ भूर्भुव—श्रीगणपति देवताभ्यो नम नैवेद्य समर्पयामि । नैवेद्यान्ते पानीयम्—(एलोशीर

लवङ्गादि कर्पूर परिवासितम् ॥ प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥) उत्तरापोशन हस्त प्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं आचमनीयं च समर्पयामि ॥ मुख वासार्थे ताम्बूलम् (पूगीफल महद्दिव्य नागवल्ली दलैर्युतम् । एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण० ॥ ६७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः ॥ ताम्बूलं समर्पयामि (अथ क्षेपक) फलं-(इदं फलं मयादेवस्थापितं पुरतस्तव । तेनमे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि । ॐ या ऽः फलिनीर्या ऽ अफलाऽअपुष्पा याश्चपुष्पिणी ऽः । बृहस्पति प्रसूत स्तानो मुञ्चन्त्व ᳪ हस ॥६८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः फलं समर्पयामि ॥ (दक्षिणा) हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेम । बीजं विभावसोः । अनन्त पुण्य फलद मतः शान्ति प्रयच्छमे ॥) ॐ हिरण्य गर्भ्भ ऽः सम वर्त्तताग्रे भूतस्य जात ऽः पतिरेक ऽ आसीत् । सदाधार पृथिवी न्द्यामुतेमाङ्क स्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ६९ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः दक्षिणा समर्पयामि ॥ अथ-कर्पूरार्तिक्यम्-कदली गर्भसम्भूत कर्पूरंच प्रदीपितम् आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ ॐ इद ᳪ हवि ऽः प्रजननम्मे ऽ अस्तु दशवीर ᳪ सर्व्वगण ᳪ स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्य भयसनि ॥ अग्निनीः ऽ प्रजाम्बहुलाम्मेकरो त्वन्नम्पयो रेतो ऽ अस्म्मा सुधत्त ॥ ७० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः कर्पूरार्तिक्य दर्शयामि ॥ (इति क्षेपकम् ॥) प्रदक्षिणा- (यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानिवै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥) ॐ सप्तास्या० ॥ ७१ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः आर्तिक्य सहितां प्रदक्षिणा समर्पयामि ॥ ० ॥ अथ मन्त्रः पुष्प युक्तो नमस्कारः ॥ (नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलि मया दत्ता गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ यज्ञेन यज्ञ० ॥ ७२ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः मन्त्र-पुष्पाञ्जलियुक्तं नमस्कारं समर्पयामि प्रार्थना-विघ्नेश्वराय वरदाय सुर प्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ [क्षमापनम् ॥] आवाहनं नजानामि नजानामि तवार्चनम् । पूजां चैव नजानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ गतं पापं गतं दुःख गतं दारिद्र्य मेवच-आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याश्च तवदर्शनात् ॥ अन्यथा शरणनास्ति त्वमेव शरणं मम तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥ मन्त्र हीनं क्रियाहीन भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मयादेव परिपूर्ण तदस्तुमे ॥ यदक्षर पद भ्रष्टं मात्राहीन च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर (इति क्षेपकम्) अर्पणम्-अनेना वाहना सन पाद्यार्घ्या

चमनीय स्नानवस्त्रो पवीत गन्धपुष्प धूप दीप नैवेद्यताम्बूल दक्षिणा प्रदक्षिणा मन्त्र पुष्प स्तुतैः षोडशो पचारैः अन्योपचारैश्च यथा ज्ञानेन यथा मिलितो पचार द्रव्यैः कृतेन पूजनारव्य कर्मणा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताः प्रीयन्तां न मम ॥ ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ (इति श्रीगणपति देवता पूजनम्) ।

अथ भूतशुद्धि ।

कर्ता कर्मदिवसे प्रातरुत्थाय स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य श्रीपाय गन्धाक्षतपुष्पादीन् समर्प्य आचम्य पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत्—

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये । लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ इति विष्णवे समर्पयेत् ।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ २ ॥ इति गणेशाय समर्पयेत् । ततोऽर्घ्यस्थापनं कुर्यात्, गन्धादिना—

भूमौ त्रिकोणं वृत्तं चतुरस्रमण्डलं च लिखित्वा तदुपरि आसनम् आसनस्योपरि पात्रम् पात्रस्योपरि पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ इति पवित्रं निक्षिपेत् "शन्नोदेवीति जलम् "ओं शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्रवन्तु नः । इति जलेनापूर्य "गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु, इति अङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य गन्धाक्षतपुष्पादि सूर्याय निक्षिप्य अर्घ्यपात्रं सुसम्पन्नमस्तु ३ तेन जलेन आत्मानं करिष्यमाण श्रीसूर्यादि पञ्चदेवपूजन कर्मणि निर्विघ्नता सिद्धये मम सकलमनोरथसिद्ध्यर्थञ्च भगवतः सूर्यदेवस्य प्रीतये सूर्यदेवपूजा सामग्री च सम्प्रोक्ष्य प्राणायामत्रयं विधाय पुण्डरीकाक्षाय स्मरणम् ।

अथ ध्यानम्—ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती । नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः । केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥ १ ॥ ततः सूर्यमावाहयेत् "ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भगवन् सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि इत्यावाह्य अर्घ्यं दद्यात् । एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर । ततो गन्धाक्षतैः सूर्यं पूजयेत् । ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् इति

ॐ आदित्याय नमः इति मन्त्रेण च नीराजनान्तं सम्पूज्य। धूप दीपं नैवेद्यं पुष्पाणि च सूर्य्याय समर्पयेत्॥ अथ ध्यानम्॥ आदित्यं च नमस्कार ये कुर्वन्ति दिने दिने। जन्मान्तरसहस्रेण दारिद्रयं नोपजायते। इति ध्यात्वा ततः सर्पपाक्षतैर्भूतोत्सादनं कुर्य्यात्॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे। अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया, इति। निर्गच्छतां च भूतानां वर्त्म दद्यात् स्ववामतः। तालत्रयेण सर्वान्विघ्नानुत्सार्य। पृथ्वि त्वयेति मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः, कूर्म्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः॥ ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोकाः देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ ततो गन्धाक्षतपुष्पैः। ॐ आधारशक्त्यै पृथिव्यै नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ शेषनागाय नमः ॐ चित्तशक्तये नमः इत्यासनं सम्पूज्य पुनरर्घं संस्थाप्य च पूजासङ्कल्पं कुर्य्यात् 'गन्धाद्विना भूमौ त्रिकोणवृत्तं चतुरस्रं मण्डलञ्च लिखित्वा तदुपरि आसनं आसनस्योपरि पात्रम् पात्रस्योपरि पवित्रं पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ—इति निक्षिपेत्।

शन्नो देवीति जलम् ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। इति जलेनापूर्य्य गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु, इत्यङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य गन्धाक्षतपुष्पाणि तुष्णीं निक्षिप्य अर्घपात्रं सुसम्पन्नमस्तु ३ तेन जलेन अस्मानं, करिष्यमाण अमुककर्म्मणि निर्विघ्नतया कार्यसिद्धयर्थं सकलेप्सितसिद्धयर्थञ्च श्रीमहागणपतिदेवप्रीत्यर्थमिमां पूजासामग्रीञ्च सम्प्रोक्ष्य प्राणायामत्रयं विधाय पुण्डरीकाक्षाय स्मरणम्। ततः प्रार्थनाभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलाभ्यां नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। निर्विघ्नमस्तु।

अथ गणेशाथर्वशीर्षम्।

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानू चानमवशिष्यम्॥ अव पश्चातात। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः।

त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं सच्चिदानन्दोऽद्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि । त्वं गुणत्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं अवस्थात्रयातीतः । त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् । गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितम् । तारेण रुद्धम् एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम् । अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् । बिन्दुरुत्तररूपम् । नादः सन्धानम् । संहितासन्धिः । सैषा गणेश विद्या गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः । गणपतिर्देवता । ॐ गं गणपतये नमः । एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् । एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् । रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् । रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् । भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् । एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः । नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः । एतदथर्वशीर्षं योऽधीते । स ब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते स सर्वत्र सुखमेधते । स पञ्च महापापात्प्रमुच्यते । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायंप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति । सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति । धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति । इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् । यो यदि मोहाद्दास्यति । स पापीयान् भवति । सहस्रावर्तनात् यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् । अनेन गणपतिमभिषिञ्चति । स वाग्मी भवति । चतुर्थ्यामनश्नन् जपति । स विद्यावान् भवति । इत्यथर्वणवाक्यम् । ब्रह्माद्यावरणं विद्यात् न बिभेति कदाचनेति । यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति । स वैश्रवणोपमो भवति । यो लाजैर्यजति । स वाञ्छितफलमवाप्नोति । यः साज्यसमिद्भिर्यजति । स सर्वं लभते । स सर्वं लभते । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा । सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति । महाविघ्नात्प्रमुच्यते । महादोषात्प्रमुच्यते महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते । स सर्वविद्भवति । स सर्वविद्भवति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः, इति गः ।

सङ्कल्पं ।

ॐ विष्णुर्विष्णु विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्यब्रह्मणो द्वितीयेपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगेकलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गतक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे केदारखण्डान्तर्गत-बद्रिकाश्रमेसुमेरु दक्षिणपार्श्वेऽलकनन्दा मन्दाकिन्योर्मध्ये (समीपे) षष्टिसंवत्सराणां मध्येऽमुकनामसंवत्सरे अमुकाऽयने अमुकऋतौ अमुक-मासे अमुकपक्षे अमुकवासरे अमुकतिथौ अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषे विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रोत्पन्न-अमुकराशि अमुक शर्म्मा-वर्मा-गुप्तो वा-ममाऽऽत्मनः श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्। अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थम्। प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरक्षणार्थम् । सकलमन ईप्सितकामनासं-सिद्ध्यर्थम्। लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि-प्राप्त्यर्थम् । इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितो पशमनार्थं । तथा मम सभार्यस्य स पुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्व-र्याभिवृद्ध्यर्थम् । तथा मम जन्मराशेरखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वादशस्थान स्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभ-फलप्राप्त्यर्थम् । पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थम्। आदित्यादिन-वग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थम्। तथा इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नता सिद्ध्यर्थम्। आधिदैविकाऽऽधिभौतिकाऽध्यात्मिकत्रिविध तापोपशमनार्थम्। धर्मार्थ-काममोक्षफलप्राप्त्यर्थं च। ॐ भूर्भुवः। स्वः श्रीअमुकपञ्चायतनदेवता-प्रीत्यर्थं यथा ज्ञानेन यथामिलितोपचार द्रव्यैः पुरुषसूक्तेन ध्यानाऽऽवाह-नादिषोडशोपचारैः वा पूजनमहं करिष्ये ।

दीपकलशपूजनम् पुण्याहवाचनम् ।

ततः—अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिमाश्रिता ।। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।। अप क्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।। सर्वेषामविरोधेन शिवकर्म समारभे । इति सर्षपाक्ष-तान् विकीर्य, आत्मरक्षां शिवचन्दनेन कुर्यात । तत्र क्रमः ईश्वराय नमः

पूर्वे ॥ आग्नेयेश्वराय नमः आग्नेये ॥ यमेश्वराय नमः दक्षिणे ॥ निर्ऋतीश्वराय नमः नैर्ऋत्ये ॥ वरुणेश्वराय नमः पश्चिमे ॥ वायव्येश्वराय नमः वायव्ये ॥ सोमेश्वराय नमः उदीच्याम् ॥ ईशानेश्वराय नमः ईशाने ॥ आकाशेश्वराय नमः ऊर्ध्वायाम् ॥ अनन्तेश्वराय नमः पृथिव्याम् । सर्वेश्वराय नमः । सर्वत्र ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ इति मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात् तत्र पूरके ॥ ३६ ॥ कुम्भके ॥ १२ ॥ रेचके ॥ १७ ॥ मन्त्रसंख्या ॥ ततः आचार्यः दीपकलशगणेशादीनां पूजां कुर्यात् । तत्प्रकारश्च यथा अथ दीपपूजा । पृष्ठो दिवीति प्रज्वाल्य, ॐ पृष्ठो दिवि पृष्ठोऽअग्निः पृथिव्यां पृष्ठो विश्वा ओषधीराविवेश ॥ वैश्वानरः सहसा पृष्ठोऽअग्निः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ॥ नमोऽस्त्वनन्तायेति पूजयेत् ॥ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥ नमस्ते इत्यादिना प्रणमेत् ॥ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ॥ नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ॥ सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं शुभसम्पदः ॥ मम शत्रुविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥ इति दीपपूजा ॥)–अथ कलशस्थापनम् ॥ ईशानदिग्भागे ऽ ग्रण सुशोभितं तैजसं मृण्मयं वा कलशं धान्योपरि स्थापयेत् ॥ तत्प्रकारश्च यथा– भूरसीति भूमिं संशोध्य ॥ ॐ भूमिरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥ पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ ह पृथिवीं मा हि ँ सीः धान्यमसीति धान्यं संस्थाप्य ॥ ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥ आजिघ्रेति कलशं स्थापयेत् ॥ ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः ॥ पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥ इमम्मे इत्यादिना गङ्गे चेत्यादिना पवित्रजलं प्रक्षिपेत् ॥ ॐ इमम्मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या ॥ असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ या ओषधी इति सर्वौषधीः प्रक्षिप्य ॥ ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनै नु बभ्रूणामह ँ शतं धामानि सप्त च ॥ हिरण्यगर्भ इति पञ्चरत्नानि । ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ याः फलिनीरिति फलम् ॥ ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पति प्रसूता

स्तानो मुञ्चन्त्व-ᳪ हसः ॥ यवोसीति यवान्-॥ ॐ यवोसि यवया-स्मद्द्वेषो यवयारातीर्दिवेत्त्वान्तरिक्षायत्वा पृथिव्यै त्वाशुन्धन्तांल्लोकाः पितृसदनाः पितृषदनमसि ॥ गन्धद्वारामिति गन्धम् ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परुषः परुषः स्परि ॥ एवानो दुर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ स्योना पृथिवीति मृदः॥-स्योना पृथिवि नोभवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥ अश्वत्थेव इति पञ्चपल्लवैस्तन्मुखमाच्छाद्य ॥ ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णे वो व सतिष्कृता ॥ गोभाज इत्किला सथयत्सनवथ पूरुषम् ॥ बृहस्पते इति वस्त्रयुग्मेन वेष्टयित्वा ॥ ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ उपयामगृहीतोसि बृहस्पतये त्वैषतेयोनिर्बृहस्पतयेत्वा ॥ प्रजा-पतेनेति दृष्यक्षतैर्भूषयित्वा ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेता न्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वय ᳪ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ पूर्णादर्वीति कलशोपरि पूर्णपात्रं निधाय पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ᳪ शतक्रतो ॥ तत्र तत्त्वायामिति वरुणमावाह्य पञ्चोपचारैः पूजयेत् ॥ ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेड मानो वरुणेह बोध्युरुश ᳪ समान आयुः प्रमोषीः ॥ तत्रैव, सर्वे समुद्रा इति तीर्था-न्यावाहयेत् ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ ततः कलशं स्पृष्ट्वाऽभिमन्त्रयेत् ॥ कल-शस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥ ऋग्वे-दोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥ ततः कलशं प्रार्थयेत् ॥ देव दा नवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥ उत्पन्नोसि तदा कुम्भः विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तो ये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति भुवानि त्वयि प्राणा, प्रतिष्ठिता ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेपि यतः कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्नि-ध्यं कुरुमेदेव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

ब्राह्मणेभ्यो नमः सम्पूज्य । अद्येत्यादि० अमुकोहं मम अमुक-कर्मणि पुण्याहवाचनाख्यकर्म कर्तुमेभिर्वामोक्ष गुलीव कासने गृहपति-दैवतैरमुकगोत्रान् अमुकशर्मणो ब्राह्मणान् पुण्याहवाचकत्वेन युष्मान

घृणे स्वस्ति प्रतिवचनम् ॥ ॐ कारपूर्वे विप्रस्य भवेत्पुण्याहवाचनम् ।
ततोऽक्षतान् क्षिप्त्वा । ततोऽवनिकृतजानुमण्डल कमलमुकुलसदृश
मञ्जलिं शिरसा धारयेत् । दक्षिणेन पाणिना सुवर्णपूर्णकलशं धारयित्वा
अङ्गानि धारयित्वा अङ्गानि स्पृशेत् । शिरसि मे सौभाग्यमस्तु मस्तके
श्रीकान्तिरस्तु चक्षुषो सुतेजोस्तु श्रोत्रयो श्रवणेन्द्रियमस्तु इत्यङ्गानि
स्पृशन् । ॐ दीर्घा नागानद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च । तेनायु
प्रमाणेन पुण्य पुण्याह दीर्घमायुरस्तु । शिवा आप सन्तु सौमनस्य
मस्तु अक्षत चारिष्टम् चास्तु गन्धा पान्तु सौमङ्गल्य चास्तु पुष्पाणि
पान्तु सौश्रेयमस्तु । अक्षता पान्तु बहुदेय च नोस्तु शान्ति पुष्टिस्तुष्टी
श्रीयशो विद्या विनयो बहु पुत्र चायुष्य चास्तु । य कृत्वा सर्व वेद
यज्ञक्रिया करणकर्म्मा रम्भा शुभा शोभना प्रवर्त्तन्ते तमहमोङ्कार मादिं
कृत्वा ऋग्यजु सामाथर्वणाशीर्वचनं बहुऋषिसम्मत समनुज्ञात भवद्भिरनु
ज्ञात पुण्य पुण्याहम् वाचयिष्ये, वाच्यताम् ॥ भद्र कर्णेभि शृणुयाम
देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा । स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनुभिर्व्यशे
महि देवहित यदायु ॥ ॐ देवानाभद्रा सुमतिर्ऋजुयता देवानाꣳ
रातिरभिनो निवर्त्तताम् । देवानाँ ꣳ सख्यमुपसेदिमा वय देवान आयु
प्रतिरन्तु जीवसे । दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ॥
अथात्वदीर्घायुर्भूत्वा शत वल्शाविरोहतात् ॥ न तद्रक्षा ꣳसिन पिशाचा
स्तरन्ति देवानामोज प्रथमज ꣳ ह्येतत् । यो बिभर्त्ति दाक्षायण ꣳ
हिरण्य ꣳ सदेवेषु कृणुते दीर्घमायु । ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तु-
रस्यद्रविणोदा सनरस्य प्रय ꣳ सद् । द्रविणोदा वीरवती मिषनो द्रविणों
दारा सने दीर्घमायु ॥ सविता पश्चात् सविता पुरस्तात् । सवितोत्तरात्तात्
सविताधराचात् । सवितान सुवतु सर्वतातिं सविताना रासता
दीर्घमायु ॥ नवो नवो भवति जायमानोऽह्ना केतुरुषसामेत्यग्रम् ॥ भाग
देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचन्द्र मास्तिरस्ते दीर्घमायु ॥ उच्चादिविद
क्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदा सहते सूर्येण । हिरण्यदा अमृतत्व भजन्ते
वासोदा सोम प्रतिरन्तु आयु । व्रतजपयम नियमतपस्स्वाध्यायक्रतुद
मदानविशिष्टाना सर्वेषा ब्राह्मणाना मन समाधीयताम् ॥ समाहित
मनस स्म । प्रसादन्तु भवन्त । प्रसन्ना स्म । शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु
तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु
कर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु इष्ट
सम्पदस्तु ॥ ततो बहिरक्षतान् क्षिपेत् । अरिष्टनिरसनमस्तु । यत्पाप
रोग शोकमकल्याणाव्तसद्दूरे प्रतिहतमस्तु । तन पुनर्मार्जनम् । यच्छ्रेय
स्तदस्तु उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु । उत्तरोत्तरा

क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् ॥ तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे सुमुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने सदैवते प्रीयेताम् । दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । महेश्वरपुरोगाः उमामातरः प्रीयन्ताम् । अरुन्धतीपुरोगाः पतिव्रताः प्रीयन्ताम् । विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयन्ताम् । आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम् । ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामाहेश्वरी प्रीयताम् । भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वाग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् । पुनरक्षताना बहिस्त्यागः । हस्ताश्च ब्रह्मविद्विषो हस्ताश्च परिपन्थिनः । हस्ताश्च कर्मणो विघ्नकर्त्तारः शत्रवः पराभवं यान्तु शाम्यन्तु घोराणि शाम्यन्तु पापानि शाम्यन्त्वीतयः । पुनर्माजनम् । शुभानि वर्धन्तां शिवा आपः सन्तु । शिवा ऋतवः सन्तु । शिवा ऋतवः सन्तु । शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा अतिथयः सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु । शिवावनस्पतय. सन्तु । शिवा ओषधयः सन्तु । अहोरात्रे शिवे स्याताम् । निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् । इति योगक्षेमो वै तत्र कल्पते यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते क्लृप्तप्रजानां योगक्षेमो भवति ॥ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतु सोमसहिताः आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहा प्रीयन्ताम् । भगवान्पर्जन्यः प्रीयतांम् । भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम् । भगवान्नारायणः प्रीयताम् । पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ब्राह्मणा प्र युर्वाच्यताम् । ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पालनकारकम् । वेदवृत्तोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तुनः ॥ भो ब्राह्मणाः मम गृहे अमुक कर्मणि पुण्याहं भवन्तो ब्रु वन्तु ॐ पुण्याहं ॥ ३ ॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदाः पुनीहि मा ॥ पृथिव्यामुद्धृता यान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम् । ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वः तत्कल्याणं ब्रु वन्तु नः भो ब्राह्मणा मम गृहे अमुककर्मणि कल्याणं भवन्तो ब्रु वन्तु ॥ ॐ कल्याणं ॥३॥ यथेमां वाचं कल्याणि मावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्रायचार्य्याय च स्वाय चारणाय च ॥ प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु ॥ सागरस्य यथा ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृताः ॥ सम्पूर्ण सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं भवन्तो ब्रु वन्तु ॥ ॐ ऋद्ध्यताम्

॥३॥ स्वस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवम् पृथिव्या अध्या रुहामाविदामदेवान्स्वर्ज्योतिः । स्वस्तिरस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याण वृद्धिदा । विनायकप्रिया नित्यं ताञ्च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः । भो ब्राह्मणा मम गृहे अमुककर्मणि स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ आयुष्मते स्वस्ति ॥३॥ ततो वरुण जलेनाम्रपल्लवगृहीतेन यजमानं ब्राह्मणा अभिषिञ्चेयुः ॥ ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु । पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् । विष्णोरराटमसि विष्णोःश्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा । अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्य्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवता इन्द्रो देवता वरुणोदेवता, मूर्धासिराड् ध्रुवासि धरुणा धर्त्र्यसि धरणीआयुषे त्वा वर्चसेत्वा कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव इत्यभिषेकः । ततो यजमानो वरुणदक्षिणासङ्कल्पं कुर्यात् अद्येत्यादि अमुकोऽहं ममामुककर्मणः साङ्गफलावाप्तये दक्षिणार्थमिमानि सोपस्कराणि सदक्षिणादिकानि यानि पूजितब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृजेत् ॥ इति ।

नान्दीमुख श्राद्धविधिः ।

अथ नान्दीमुखश्राद्धपद्धतिः प्रारभ्यते ॥ तत्र सावहाल्हे मुहूर्ते उत्थाय, यथापद्धता स्नान सन्ध्यादि नित्यकर्म समाप्य प्रातरष्टौ चतुरो वा ब्राह्मणान्निमन्त्रयेत् ॥ ततो वेद्यां गणपतिसहिता गौर्य्यादिषोडश मातृका गतिमाद्रतपुञ्जजलेषान्यतमेष्वधिष्ठानेषु स्थापयेत् ॥ तथा ॥ कृत्वा प्रक्षालितकरचरणः स्याचान्तः सपत्नीकः सदर्भपाणिः शुद्धासने प्राङ्मुख उपविश्य कुशत्रययवजलान्यादाय देशकालौ सङ्कल्प ॥ ॐ ममामुककर्माङ्गभूतगणपति सहितषोडशमातृपूजनमहं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्पयेत् ॥ तत्र पुराणोक्तावाहनाय ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिं हवामहे वसोमम ॥ आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ इति गणपतिं स्थापयेत् ॥ एवं

प्रदक्षिण क्रमेण गौर्य्यादिस्थापनम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्गौरि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मेधे इहा० ॐ भूर्भुवः स्वः शचि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्व सावित्री हा० ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विजये इहा० ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वःजये इहा० ॥ ७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेने० ॥ ८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधे इहा० ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहे इहा ॥ १० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्मातर इहागच्छत इह तिष्ठत ॥ ११ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्लोकमातर इहागच्छत इह तिष्ठत ॥ १२ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः हृष्टे इहा० ॥ १३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्टे इहा० ॥ १४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्तुष्टे इहा० ॥ १५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वदात्मकुलदेवते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीरिहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १७ ॥ इति गणपति सहिता एता मातृः प्रत्येकमोंकारव्याहृतिपूर्वक मावाह्य स्थापयित्वा ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्येति प्रतिष्ठां कृत्वा ॥ प्रणवादिनमोन्तेन स्व[illegible] नाम्ना षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः केनचित्पात्रेण सगुडं विलीनघृतमादाय ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा: कामधुक्षः ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण मातृणामुपरि भित्तिलग्नाः सप्त पञ्च वाधारारुत्तरोत्तरक्रमेण पातयेत् ॥ ताश्चपूजयेत् ॥ ततः ॐ आयुष्यं वर्चस्य ᳪ रायस्पोषमौद्भिदम् ॥ इद ᳪ हिरण्यं वर्चस्व ज्जैत्राया विशतादुमाम् ॥ १ ॥ नतद्रक्षा ᳪ सिन पिशाचा-स्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ᳪ ह्येतत् ॥ यो बिभर्ति दाक्षायण ᳪ हिरण्य स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ २ ॥ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ᳪ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआबध्नामि शत शारदायायुष्म ज्जरदष्टिर्यथासम् ॥ ३ ॥ इति वृद्धि सूक्तं पठेत् ॥ अथ नान्दी श्राद्ध-प्रयोगः ॥ तत्रादौ गोमयोपलिप्ते देशे श्राद्धसामग्रीं संपाद्य प्रागग्रकुशोत्तरेष्वा सनेषु प्राङ्मुखान् दक्षिणापेक्रमानुदगपवर्गान् पट्दर्भवट्क्षेत्रेश्य प्रत्यासनसमीपे तिलतैलेन दीप प्रज्वालयेत् ॥ ततः कर्त्ता प्रक्षालितकर-चरणः स्वासने उदङ्मुख उपविश्य सपवित्रोपकुशः सव्येन आचम्य प्राणानायम्य ॥ सजघनं दक्षिणं जान्वा च्य ॥ ताम्बूलादिकमादाय ॥ ॐ अद्य करिष्यमाणामुक कर्म निमित्तिकाभ्युदयिक श्राद्धे अस्मन्मात्रा-दित्रयश्राद्धसम्बधिनः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः अनेन ताम्बूलादि

तीर्थ यात्रागमने–प्रादौघृत श्राद्धंविधेयम् । यात्रान्ते गृहमागत्य-पूर्ववत् दधि श्राद्धंविधेयम् ॥

द्रव्येण कुशयदुरूपा भन्नतो मया निमन्त्रिता ॥ ॐ आमन्त्रिता स्म ॥ इति सर्वतो दक्षिणगत मात्रादिदेवदर्भे वटु निमन्त्र्य एवमेव तदुत्तरे पित्रादि मातामहादि देवदर्भवटु च क्रमेण निमन्त्र्य तत ॐ अक्रोधनै शौचपरैरिति पठित्वा स्वागतम् भवता सुस्वागतमिति प्रार्थयेत् ॥ तत पुनस्ताम्बूलादिकमादाय ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामही प्रपिता महोऽमुकामुक देव्यो नान्दीमुख्य अनेन ताम्बूलादिद्रव्येण कुशयदुरूपा भवत्यो मया निमन्त्रिता ॥ ॐ आमन्त्रिता स्म इति निमन्त्र्य एवमेव पित्रादिमातामहादि दर्भवटुद्वय क्रमेण निमन्त्रयेत् ॥ तत ॐ अक्रोधनै शौचपरैरिति पठित्वा ॥ स्वागत भवताम् सुस्वागतमिति प्रार्थयेत् ॥ ततो गन्धपुष्पादियुत पाद्य गृहीत्वा ॐ अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयसम्बन्धिन सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा एतत्पादार्घं व स्वाहा नम इति दत्त्वा एवमेव पित्रादि मातामहादिदेवेभ्योप्यर्घं दद्यात् ॥ पुन ओं अमुकगोत्राऽस्मन्माता पितामही प्रपितामहोऽमुकामुकदेव्यो नान्दीमुख्य एतत्पादार्घं श्रेया विभज्य व स्वाहा नम इति मातृवर्गेऽर्घं दत्त्वा, पित्रादिमातामहादि वर्गद्वयेऽप्यर्घं क्रमेण दद्यात् ॥ तत ओं अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयसम्बन्धिन सत्य वसुसंज्ञका विश्वेदेवा व स्वाहा नम । इति मातृवर्गदेवेभ्य आच- मनार्थं जल दत्त्वा एवमेव पितृवर्गमातामहवर्गदेवेभ्योप्याचमनं दद्यात् ॥ पुन ॐ अमुक गोत्रास्मन्मातृपितामहीप्रपिता महोऽमुकामुकदेव्यो नान्दीमुख्य इदमाचमन श्रेया विभज्य व स्वाहा नम इति मात्रादिभ्य आचमन दत्त्वा, पित्रादिभ्यो मातामहेभ्यश्चाचमन दद्यात् ॥ तत ओं अत्रामध्वमेति पठेत् । इति निमन्त्रणम् ॥ तत कर्त्ता स्वपुरत कर्म्म- पात्रं जलेनापूर्य्य गन्धपुष्पदूर्वादधियवहरित कुशास्तत्र निक्षिप्य ॥ ओं कर्म्मपात्रं सम्पन्नमिति ब्रूयात् ॥ ओं सुसम्पन्नमित्यनुज्ञात ओं अपवित्र पवित्रो वा० ओं पुण्डरीकाक्ष पुनात्विति पठित्वा कुशानीत जलेन आ- त्मानोपकरणानि प्रोक्ष्य ओं वैष्णव्यै नम ॥ ओं काश्यप्यै नम । ओं भूम्यै नम ॥ इति भूमिं सम्पूज्य ओं विष्णवे नम ॥ इति विष्णुं मनो- वाक्कायैर्नमस्कारं कुर्य्यात् ॥ ततो दूर्वाकुशयवजलान्यादाय ॥ देश कालौ सङ्कीर्त्य ओं अद्यामुकगोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीना ममुकामुकदेवीना नान्दीमुखीनाम् अमुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपि तामहानाममुकामुकशर्मणा नान्दीमुखानाम् तथा च-अमुकगोत्रा णामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुकामुकशर्मणा सपत्नि कानाममुककर्मनिमित्तं सत्यवसुसंज्ञक- विश्वेदेवपूर्वकं सपिण्डकर्मा भ्युदयिकश्राद्धम् करिष्ये इति संकल्प्य ॥ ॐ कुर्य्येतिब्राह्मणानुज्ञात समन्त्रकव्याहृतिकां गायत्रीं त्रिर्जपित्वा विष्णु स्मरेत् ॥ तत ॐ नमो

नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिश ॥ इति सर्वत्र यवान् गौरसर्षपाश्च विकीर्य ॥ वाम कटि सलग्न वस्त्राञ्चले नीवीं बध्नीयात् । तत कूष्माण्ड सूक्तेन पावमानेन च जलमभिमन्त्र्य तेन हरितैं कुशै पाकं प्रोक्षयेत् । अथासनादिदानम् ॥ तत्र तावदुदड मुख कुशत्रययवजलान्यादाय ॥ ॐ अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयश्राद्धसम्बधिन सत्यवसुसज्ञका विश्वेदेवा इदमासन वो नम इति कुशत्रयरूप सयव दक्षिणगतमासन पूर्वाग्रमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पित्रादिमातामहादिदेवेभ्योऽप्यासनमुत्तरोत्तर दद्यात् ॥ तत ॐ अद्या मुकगोत्रास्मन्मातृपितामही प्रपितामह्यो नांदीमुख्य इदमासन त्रेधा विभज्य च स्वाहा इत्युच्चार्य्य मातृवर्गे देवतीर्थेन पूर्वाग्र कुशत्रयमुत्सृजेत् । एवमेव पित्रादिमातामहादि वर्गद्वयोरपि दद्यात् तत ॐ सत्यवसुसज्ञकविश्वान्देवानावाहयिष्ये इति ब्रूयात् । आवाहय इत्यनुज्ञात सयवकर ॥ ॐ विश्वे देवा सऽआगत शृणुतामऽइम ■ हवम् ॥ एद बर्हिर्निषीदत इत्यावाह्य ॥ ॐ यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीरित्यनेन यवान्विकीर्य, ओं विश्वेदेव शृणुतेम छ हव्ममेऽ अन्तरिक्षेय ऽ उपद्यविष्ठयेऽअग्नि जिह्वाऽ उतवायजत्राऽ आसद्याऽस्मिन् बर्हिषिमादयध्वम् ॥ इति जपेत् ॥ विश्वेदेवोत्पत्तिनाम्नोरज्ञाने ॥ आगच्छन्तु महाभागाविश्वे देवा महाबला ॥ ये यत्र योजिता श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ॥ इति श्लोक पठेत् ॥ तत ओं नांदीमुखीर्मातृरावाहयिष्ये इत्युचार्य्य आवाहयेत्यनुज्ञात सयवकर ओं उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्त समिधीमहि । उशन्नुशतऽ आवहमातृर्हविषेऽअत्तवे ओं मातामहान्हविषेऽ अत्तवे इति मन्त्रोहेन यथा क्रम पित्रादीन्मातामहादींश्चावाह्य ॥ प्रदक्षिण यवान्विकिरेत् ॥ ततोदेवपूर्वक पट्सु स्वर्णादिपात्रेषु प्रतिपात्र पवित्र द्वय पवित्र वा निधाय ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शय्योरभिस्रवन्तुन ॥ इति प्रत्येक पात्रेष्वपो निक्षिप्य ॥ ॐ यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीरिति देवपात्रद्वयेषु यवान्निक्षिप्य यवोसि सोमदेवत्यो गोसवो देवनिर्मित ॥ प्रत्नमद्भि प्रक्ता पुष्टयाना दीमुखाँल्लोकान् प्रीणाहिन स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण मात्रार्घपात्रेषु यवान् क्षिपेत् ॥ तत्र सर्वत्र तूष्णीं गन्ध पुष्पाणि च दत्त्वा ॥ ॐ अर्घपात्र सपत्तिरस्त्विति ॥ अस्त्वर्घपात्रसपत्तिरित्यनुज्ञातो देवार्घपात्र वामहस्ते कृत्वा पवित्रे पलाशादिपत्रे पूर्वाग्रे विन्यस्य ओं यादिव्या आप पयसा सवभूवुर्य्याऽअन्तरिक्षा ऽ उतपार्थिवीर्य्या ॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽआप शिवा सर्ट स्योना सुहवा भवन्तु इत्यभिमत्र्य कुशत्रययवजलान्यादाय ॥ ओं अद्यास्मन्मात्रादित्रयश्राद्धसंबधिन सत्यवसुसज्ञका विश्वेदेवा एष वोऽर्घो नम इति

जुहोमि स्वाहा इति ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा, इति च पठित्वा ॥ ॐ विष्णोहव्य ꣳ रक्ष इत्यनया स्वाङ्गुष्ठ मयोमुखमनस्य मन्ने ऽवगाह्यदमन्नम् इमा आपः–इदं माज्यम् इदं हविरित्युक्त्वा ॥ ॐ अपहताऽसुरा रक्षा ꣳ सि वेदिषद ॥ इति यवान् विकीर्य वामकरेण पात्रं स्पृशन् कुशत्रययवजलान्यादाय ॐ अद्यास्मन्मात्रादित्रयशर्मासम्बन्धिनः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा इदमन्न घृताद्युपस्कर सहितं परिविष्टं हव्यममृतरूप वो नमः ॥ इति संकल्प्यासनदक्षिणा भागे जलमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पित्रादिमातामहादिद्वेभ्योप्यन्नमुत्सृजेत् ॥ पुनः मात्रादिपात्रमालभ्य ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतेऽ अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा ॥ इति पठित्वा, ॐ विष्णो हव्य ꣳ, रक्ष इत्यन्ने अङ्गुष्ठं निवेश्य ॐ अपहता इत्यन्नपात्र परितो यवान्विकीर्य कुशायवजलान्यादाय ॐ अमुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्योऽमुकामुक देव्यो नान्दीमुख्य इदमन्न घृताद्युपस्करसहितं परिविष्टं हव्यममृतरूपं त्रेधा विभज्य वः स्वाहा नमः इत्युत्सृजेत् ॥ एवमेव पित्रादिपात्र मातामहादिपात्रे च क्रमेण पात्रालम्भनादिपूर्वक संकल्प्य दद्यात् ततः ॐ अन्नहीनं क्रियाहीन विधिहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्य नांदीमुखान्मात्रादीन्यायन देवपूर्वकं भोजनपात्रेषु किंचिर्त्किचिदपो दत्वा यथासुखं जुषध्वमितिब्रूयात् ॥ ततः प्रागग्रकुशोत्तरासनो प्रविष्टः प्रणवव्याहृति पूर्विकां सकृत्त्रिर्वा गायत्रीं जप्त्वा । ॐ मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ न मधुवाता इति त्र्यृंचन पितृमन्त्रान् ॥ ततः ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँऽइभेन ॥ तृष्वीमनुप्रसितिन्द्र णानोस्तासि विद्ध्यरक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तवभ्रमासऽ आशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपू ꣳ ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गा नसन्दितो विसृज विष्वगुल्काः ॥ २ ॥ प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायु विंशो ऽ अस्या ऽ अदब्धः ॥ यो नो दूरेऽ अघशꣳसो, योऽ अंत्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ॥३॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्वन्या मित्रां ऽ ओषतात्तिग्महेते ॥ योनोऽअरातिꣳ, समिधान चक्रे नीचा तन्धक्ष्यत सन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वोभवप्रतिविध्याध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ॥ अवस्थिरा तनुहि यातु जूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥ अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि ॥ ॥ इति रक्षोघ्न सूक्तम् ॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः ॥ पुनन्तु विश्वा, भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥१॥ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोम, वृष्ण्यं भवा वाजस्य सङ्गथे ॥२॥ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्म

श्रृणि ॥ राजा मे प्राणोऽ अमृतꣳ, सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥३॥ जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्यु स्वराड् भाम मोदा प्रमोदा ऽ अङ्गुली रगानि मित्रम्मे सह ॥ ४ ॥ बाहू मेबलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म वीर्यम् ॥ आत्माक्षत्रमुरो मम ॥ ५ ॥ पृष्ठीर्म्मे राष्ट्रमुदरमꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी ॥ ऊरू ऽ अरत्नि जानुनी विशोमेङ्गानि सर्वत ॥ ६ ॥ नाभिर्म्मे चित्त विज्ञानम्पायुर्म्मेऽ पचिति भसत् ॥ आनन्दनन्दा वाण्डौ मे भग सौभाग्य पस जघाम्या पद्भ्या धर्मो ऽ स्मि विशि राजा प्रतिष्ठित ॥ ७ ॥ पय पृथिव्या पय ऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा ॥ पयस्वती प्रदिश सन्तु मह्यम् ॥ ८ ॥ इति पवमानसूक्तम् ॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुष इत्यादि षोडशर्चपुरुषसूक्तमन्यानि शिवसङ्कल्पप्रभृतीनि पवित्राणि मङ्गलानि च जपेत् । तत सर्वव्यञ्जनोपेतमन्नादुय सयवमादाय वारिणा- प्लाव्य प्रागग्रास्तृत कुशोपरि ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धा कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परा गतिमिति विकीर्य ॥ आचम्य विष्णु स्मृत्वा पुन किंचित्किंचिदपो दत्त्वा गायत्री मधुमधुमध्विति च जप्त्वा ॐ सम्पन्नमिति ब्रूयात् सुसम्पन्नमित्यनुज्ञात पिण्डानहं करिष्ये ॥ इतिपृच्छेत् ॥ कुरुष्वेत्यनुज्ञातो वालुकाभिश्चतुरस्रं प्राक्प्लव मुदक्प्लव वा मण्डलत्रयं कृत्वा तन्मध्ये । ॐ अपहता ऽ असुरा रक्षाꣳसि वेदिषद इति प्रागग्रं रेखात्रय कृत्वा प्रत्येकरेखोपरि, ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽअसुरा सन्त स्वधया चरन्ति ॥ परा पुरोनिपुरोये भरन्त्यग्नि ष्टॉंल्लोकात्प्रणुदात्यस्मादित्यङ्गारान् भ्रामयेत् ॥ तत्र रेखात्रयोपरि समूलान् प्रागग्रानुदगग्रान्वा कुशानास्तीर्य ॐ देवताभ्य इति त्रिर्जपेत् ॥ ततो नवपुटकेषु जलयवगन्धपुष्पाणि कृत्वा एक पुटकं वामहस्ते कृत्वा कुशादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवी नान्दीमुखि अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वाहा इति दर्भमूले मातृ अवनेजनं दत्त्वा एवमेव [पिता महीप्रपितामहीभ्या मध्यमयो क्रमेण दद्यात् ॥ तत ॐ अद्यामुक गोत्राऽस्मत्पितरमुकशर्मन् नान्दीमुखा ऽत्रावने निक्ष्व ते स्वाहा इति द्वितीयमण्डलस्थितकुशत्रयमूले पित्रेऽवनेजनं दत्त्वा एवमेव पिता महप्रपितामहयोस्तत्तत्कुशमध्यमाग्रयोरवनेजन दद्यात् ॥ एवमेव माता महादिषुदद्भं गृहीत्वा अग्नेषु दद्यात् । तत सर्वव्यञ्जनोपेत सर्व्वपिण्ड मन्नमुद्धृत्य कृत शेषान्नदधि बदरयवैर्मिश्रियत्वपिण्डान बिल्वोप मानिमाय एक पिण्ड कुशाग्रं स्थाप्य ॐ अमुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवि नान्दीमुखि एष दधि बदराक्षत मिश्र पिण्डस्ते नम ॥ इत्यवने जनक्रमेणा वनेजनस्थानेषु मात्रादिभ्य पिण्डान दद्यात् ॥ तत ओं अमुक गोत्राऽ स्मत्पितरमुक शर्मन्नान्दी मुख एष दधि बदराक्षत मिश्र पिण्डस्ते नम ॥

इति पितृस्थाने दद्यात् । ततो दर्भ मूलेषु मूपाणिस्थं पिण्डलेपं विमृज्य हस्तौ प्रक्षाल्याचम्य हरिं स्मरेत् ॥ ततो मात्रादि पिण्डाभिमुखांजलिं वृद्धा ॥ ओं अत्रमातरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वमिति जपित्वा उदङ्ममुखी भूय श्वास नियम्य प्रदक्षिणं परावृत्य, ओं अमीमदन्त मातरो यथा भागमा वृषायिषत्, इति जपेत् ॥ एव पित्रादि पिण्डाभिमुखो भूत्वा ओं अत्रपितरोमादयध्वमित्यादि जपित्वा मातामहादिपिण्डाभिमुखोभूत्वा ॐ अत्रमातामहादयो मादयध्वमित्यादि जपित्वा ऽ सुन्नियम्य ॐ अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥ ॐ अमीमदन्त मातामहा यथाभागमा वृषायिषतेति जपेत् ॥ ततोऽवनेजनपात्र जलेन ॐ अमुक गोत्रे मातरमुकदेवि नांदि मुखि अत्र प्रत्यवने निक्ष्वते स्वाहा ॥ इति मातृपिंडोपरि प्रत्यवनेजनं दत्वा ॥ एवमेव पितामही प्रपितामहीभ्यां तथा ॐ अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन्नांदीमुख अत्रप्रत्यवनेजनंनिक्ष्वते स्वाहा, इति पितृपिंडोपरिदद्यात् ॥ एवमेव पितामहादिभ्यः पंचभ्यस्तत्तत्पिंडोपरिदद्यात् ॥ ततो नीवीं विस्रंस्य आचम्य ॐ नमो वो मातरो रसाय नमो वो मातरः शोषाय नमो वो मातरो जीवाय नमो वो मातरः स्वाहायै नमो वो मातरो घोराय नमो वो मातरो मन्यवे नमो वो मातरो मातरो नमो घो गृहान्नो मातरो दत्तत्तोवो मातरो देष्म ॥ इति मात्रादि वर्गं नमस्कृत्य ॥ ॐ नमो पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वाहायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरोदत्त सतो वः पितराद्दष्म इति पित्रादि मातामहादि वर्गद्वयं नमस्कुर्यात् ॥ ततः ॐ एतद्वो मातरो वास इति मात्रादि पिंडेषु सूत्राणि दत्वा ॥ ॐ एतद्वः पितरो वास इति पित्रादि पट् पिण्डेषु प्रति पिण्डं सूत्रत्रयं दद्यात् ॥ ततो गन्ध पुष्प धूप दीप द्राक्षामलकमूलयवतांबूल दक्षिणादिभिः प्रतिपिण्डमभ्यर्च्य ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु इति भोजनपात्रेषु किंचित्किंचिज्जलं दत्वा ॐ सौमनस्यमस्त्विति पुष्पाणि ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति यवांश्च दद्यात् ॥ ततः ॐ नान्दीमुख्योमातरः पितामह्यः प्रपितामह्यः प्रीयंतामितिक्षीर यवोदकमक्षय्य स्थान देवः ॥ एवमेव पितरः पितामहाः प्रपितामहाः प्रीयंतामिति पित्रादिवर्गे ॥ मातामहाः प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाश्च प्रीयन्तामिति मातामहादिवर्गे च प्रत्येकमक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः कृता॰जलिः प्रार्थयेत् ॥ ॐ अघोरा मातरः सन्तु ॐ अघोराः पितरः सन्तु ॥ ॐ अघोरा मातामहाः सपत्नीकाःसन्त्विति घोक्ता ॥ मंत्रित्यनुज्ञावः ॥ ॐ गोत्रंनोवर्द्धतां दातारो नोभिवर्द्धन्ता वेदाः संततिरेव च ॥ श्रद्धाचनो माव्यगमत् बहुदेयं चनोऽस्तु ॥ अन्नंचनोबहुभवेदतिथींश्चलमे

मही । याचितारश्च न सन्तु माचयाचिष्मकञ्चन एता सत्याआशिष सन्त्विति ब्रूयात् सन्त्वित्युक्ते सपवित्रान्कुशान्प्रत्येकं मात्रादित्रयपिण्डे पित्रादित्रयपिण्डे मातामहादित्रयपिण्डे च कृत्वा ॥ नान्दीमुखीर्मातृपितामही प्रपितामही नान्दीमुखान पितृपितामह प्रपितामहान् नान्दीमुखान मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमाता महान् सपत्नीकान् स्वाग वाचयिष्य इति पृष्ट्वा वाच्यतामित्यनुज्ञात ॐ नान्दीमुखो मातृ पितामही प्रपितामह्यो नान्दीमुखा पितृपितामह प्रपिता महा नान्दीमुखा मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महा सपत्नीकाश्च प्रीयन्तामितिप्रार्थ्य प्रीयन्तामिति द्विजैरुच्यमानो पिण्डेषु जल निषिंचेत् ॥ तत सक्षव पात्राण्युत्तानीकृत्य द्रव्यदक्षिणा दद्यात् कुशात्र यवजलान्यादाय, ओं अद्यास्मन्मात्रा दित्रय श्राद्ध सम्बधि वैश्वदेविक दृढ प्रतिष्ठार्थमिमा द्राक्षामलकार्द्रक मूलकादिरूपा दक्षिणा विष्णु दैवत्याम-मुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ इत्युच्चार्य दद्यात् ॥ एवमेव पित्रादि मातामहादि वर्गेष्वदक्षिणा दद्यात् । तत ॐ अद्यामुक गोत्राणा मातृ पितामही प्रपितामहीना नान्दीमुखीना कृते वृद्ध्याभ्युदयिक श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिमा द्राक्षामलकार्द्रक मूलकादिरूपा दक्षिणा विष्णु-दैवत्यामसुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज ॥ इति मात्रादि वर्गे दक्षिणा दद्यात् ॥ एवमेव पितृवर्गं मातामहवर्गयोरपि दक्षिणा च दद्यात् ॥ तत पिण्डानुत्थापयामि इति पृष्ट्वा उत्थापय इत्यनुज्ञात पिण्डानुत्थाप्य पात्र कृत्वाऽऽनायदर्भानुल्मुक च वह्नौ क्षिपेत् ॥ ततो जलदान पूर्वकम् । ॐ विश्वेदेवा प्रीयन्तामित्युक्त्वा । प्रीयन्तामित्युक्ताव स्वस्तिभवन्तो ब्रुवन्तु इति ब्रूयात् स्वस्तीत्युक्ते प्रणिपत्य ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नोधनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञा ॥ अस्यमध्व पिबत मादयध्व तृप्तायात् पथिभिर्देवयानै ॥ इति मात्रादीन् पित्रादीन् मातामहादींश्च विसृजेत् ॥ तत ॥ आमावाजस्य प्रसवो जगम्याद्देमेद्या पृथिवी विश्वरूप ॥ आमागन्ता पितरा मातरा चामा सोमोऽमृ-तत्वेन गम्यात् ॥ इति पठित्वा प्रदक्षिणी कृत्य रक्षादीप निर्वापण पाणिभ्या कृत्वा दम्पती पादौ प्रक्षाल्याचम्य पितृन् गयादिभ्योऽन्त्या ऽ अर्घ्यं पद्मपा विप्रान्प्रभूत घृतान्नेन भोजयेत् ॥ तत उच्छिष्ट मार्जनादि करणा-नन्तर वैश्वदेव बलिकर्म कृत्वा ॐ प्रमादात्कुर्वता कर्म इति पठित्वा कर्मपूर्ति कामो विष्णु स्मरेत् । ततो गृह स्थाने सुतभृत्ययावदानिधि संयुतोऽर्चीयान ॥ इत्याभ्युदयिक श्राद्धपद्धति ॥ अथ मातृपितृ नान्दी-श्राद्धपद्धति ॥ तत्र नान्दी गणपतिमहि षोडशमातृका पूजन घृतधारा पूजन च पूर्वोक्तवत् कृत्वा ॐ आयुष्यं वर्चस्यमिति मन्त्रत्रय पठेत् ॥ तत्र

उदङ्मुख उपविश्य । आचम्यप्राणा नायम्य ॥ देशकालौ सकीर्त्य अद्य अस्तेऽयामुक कर्म निमित्तक सापत्निक नान्दीमुखश्राद्धं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्पयेत् ॥ तत दक्षिणोत्तर क्रमेण ॐ सत्यवसु सज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इदं व पाद्य पादावनेजन पादप्रक्षालन वृद्धिः ॥ तत ॐ अमुक गोत्रामातृपितामह प्रपितामह्यो नान्दीमुख्य ॐ भूर्भुव स्व इदं व पाद्य पादावनेजन पादप्रक्षालन वृद्धिः ॥ ॐ अमुक गोत्रा पितृपितामह प्रपिता महा नान्दीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इदं व पाद्य पादावने जन पाद प्रक्षालनवृद्धि । ॐ अमुकगोत्रा मातामह प्रमाता मह वृद्धप्रमातामहा सपत्निका नान्दीमुखाॐभूर्भुव स्व इदं पाद्य पादावने जन पादप्रक्षालन वृद्धि ॥ अथासन दानम् ॥ स त्यवसुसज्ञकाना विश्वेषा देवाना नान्दीमुखानाम् ॥ ॐ भूर्भुव स्व इदमासन सुखासन स्वाहा इति कुशत्रय सव्येनो दक्षिणत पूर्वाग्रमुत्सृजेत् ॥ एव सर्वत्र ॥ ॐ नान्दीश्राद्धे क्षणोक्रियेताम् तथा प्राप्नुता भवन्तौ प्राप्नुता भवन्तौ प्राप्नुवाव इति पठेत् ॥ तत ॐ अमुक गोत्राणा मातृपितामही प्रपिता महीना नान्दीमुखीनाम् ॥ ॐ भूर्भुव स्व इदमासनम् सुखासन स्वाहा, ॐ नान्दी श्राद्धे क्षणे क्रियेता तथा प्राप्नुवा भ न्तौ प्राप्नुवाव ॥ ॐ अमुक गोत्राणा पितृपितामह प्रपितामहाना नान्दीमुखानाम् ॐ भूर्भुव स्व इदमासन सुखासन स्वाहा । ॐ नान्दीश्राद्धेक्षणे क्रियेता तथा प्राप्नुता भवन्तौ प्राप्नुवाव ॥ ततो गन्धादिदानम् ॥ ॐ सत्यवसु सज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इदं व गन्धार्चन स्वाहा सपदना वृद्धि ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातृपितामही प्रपितामहीभ्य नान्दीमुखीभ्य ॐ भूर्भुव स्व इदं गन्धार्चन स्वाहा सपदना वृद्धि ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्य पितृपितामह प्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इदं गन्धाद्यर्चन स्वाहा सपदना वृद्धि ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्य सपत्निकेभ्यो नान्दीमुखेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इदं गन्धाद्यर्चन सपदना वृद्धि ॥ ततो भोजन निष्क्रय द्रव्य दानम् ॥ ॐ सत्यवसुसज्ञका विश्वेदेवा नान्दी मुखा ॐ भूर्भुव स्व इदं युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्त दास्यमान अन्न तन्निष्क्रय भूत किञ्चिद्धिरण्यममृतरूपेण स्वाहा सपादना वृद्धि ॥ ॐ अमुक गोत्रा पितृ पितामह प्रपितामहा नान्दीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इदं वो युग्म ब्राह्मण ॥ तत सक्षीर यवदानम् ॐ नान्दीमुखा सत्यवसु सज्ञकाविश्वेदेवा प्रीयताम् ॐ अमुक गोत्रा मातृ पितामही प्रपितामह्यो नान्दीमुख्य पितृपितामह प्रपितामहा नान्दीमुखा द्वितीयगोत्रामातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा नान्दीमुखा सपत्निकाश्च प्रीयन्ताम् ॥ तत

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवा इति मन्त्रं पठेत् ॥ अथ दक्षिणा दानम् ॥ ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्यो नांदीमुखेभ्य. कृतस्य नांदीश्राद्धस्यफल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्कयो भूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातृपितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक यवमूल निष्कयी भूतां दक्षिणां दातु मह मुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्य पितृपितामह प्रपितामहेभ्यो नांदीमुखेभ्य. कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्कयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्कयीभूतां दक्षिणांदातुमहमुत्सृजे ॥ माता पिता महीचैव तथैव प्रपितामही ॥ पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥ १ ॥ मातामहस्तित्पिता चप्रमातामहकादय. ॥ एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु सुमङ्गलम् ॥२॥ इति प्रार्थयेत् ॥ अस्य नांदीश्राद्धस्यकर्माङ्ग देवताः प्रीयन्ताम् अस्मिन्नांदी श्राद्धेन्यूनातिरिक्ताया विधिः सोपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात्नान्दीमुखप्रसादात्सर्वः परिपूर्णोऽस्तु अस्तुपरिपूर्णईति विप्राः ॥ समाप्ताः ॥

अथ नित्यश्राद्ध प्रयोग ।

आचम्य प्राणानायम्य । ॐ पवित्रेस्थो वै० इतिमन्त्रेण दक्षिण वामहस्तयोरनामिकायां कुशापवित्रे धृत्वा ॥ सङ्कल्पः ॥ अद्येत्यादि एवं विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ ममाऽत्मन श्रुति स्मृति पुराणोक्त गुण फल प्राप्त्यर्थं (अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां सपत्नीकानां तथा च अमुक गोत्राणां अमुक शर्मणां अस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नित्यश्राद्ध महं करिष्ये ॥ तत. दक्षिणां दद्यात् ।

अथ सामग्री

रोरी । मौली । सुपारी । ४० । अक्षत । श्वेतवस्त्र गज १ । माला जोड़ी । पुष्प । धूप । नैवेद्य । नागर पान । २१ इलायची । लौंग । मेवा । नारियल । घृत । कपूर । सिंदूर । सर्वोषधी । सुपेद सरसों । कुशा । दूर्वा । पत्ता । दोना । ४० । जव । तिल । तैल । सर्वाउषधी । ४० । दधि । दुग्ध मधु । खाँड । आँवला । बेर । दाख । अंगोछा । १२ धोती जोड़ा । १० । केसर । चन्दन । जनेऊ जोड़ा ११ । मुख्य दक्षिणा । १ ब्राह्मणदक्षिणा । १२ । पाक । इति नांदीमुख श्राद्ध सामग्री ॥इति॥

यथा, अमुकगोत्राणामस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुक शर्मणां सपत्नीकानां दक्षिणां दत्त्वा भवद्भिः प्रसादः कर्तव्यः सुकर्तव्यः। एवं मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां गोत्रनामोच्चारपूर्वकं दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः पित्रादयो मातामहाश्च इदं वः पाद्यमिति पाद्यन्दत्त्वाऽऽचम्य कुशासने उदङ्मुख उपविश्य पितॄणां मातामहानां चेदमासनम् ॥ पित्र्येक्षणः क्रियताम्। प्राप्नोतु भवान् प्राप्नुवानि। पितरो मातामहाश्च एष वो गन्धः सुगन्धः। इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि। अयं धूपः सुधूपः अयं दीपः सुदीपः। आच्छादनं दत्त्वा पूर्णतां वाचयित्वा द्विगुणं मामान्नं पात्रे संस्थाप्य प्रोक्ष्य पात्रमालभ्य तिलान्विकीर्य आमान्नेऽङ्गुष्ठं दत्त्वा। पितरः इदं वः आमान्नं सोपस्करं गयेयं भूः गदाधरो विभः ब्रह्मरूपमिदं पितृभ्य अमुक गोत्रेभ्यो-अमुक शर्मभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः स्वधा मातामहादिभ्य श्चेदमामन्नं स्वधा सम्पद्यतां नमः। दत्तमामान्न मक्षय्यमस्तु। अस्त्वक्षय्यम्। श्रीगयागदाधरः प्रीतो भवतु। ब्रह्मार्पणमस्तु। ॐ मधुव्वाताऽ ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवऽः। माद्ध्वीर्न्नऽः सन्त्वोषधीऽः ॥१॥ मधुनक्त मुतो षसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः꣡। मधुद्यौ रस्तुनऽः पिता ॥२॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ २ ॥ऽअस्तुसूर्य꣡। माद्धीर्गावो भवन्तु नऽः ॥३॥ (इति मन्त्रा ब्रह्मणेन पठनीयाः) ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥ सुप्रोक्षितमस्तु। अस्तु सुप्रोक्षितम्। शिवा आपः सन्तु। सन्तु शिवा आपः। सौमनस्यमस्तु। अस्तु सौमनस्यं। अक्षतं चारिष्टं चास्तु। अस्तु अक्षतं चारिष्टं च। दीर्घमायुःश्रेयः पितरः ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्य꣡ स्वधानमः꣡ पितामहेभ्य꣡ स्वधायिभ्य꣡ स्वधानम् ऽः प्रपिता महेभ्यः ऽः स्वधायिभ्यः + स्वधानमः। अक्षन्नपितरो ममिदन्त पितरो ऽतीतृपन्त पितरऽः पितरऽः शुन्धद्ध्वम् ॥८॥ इति मन्त्रेण स्वस्तीति ब्रूयात् कुशापवित्र त्यागः) अर्पणम्-अनेन मयाकृतेन। नित्यश्राद्ध कर्मणा मम पित्रादि स्वरूपी-जनार्दन वासुदेव प्रीयताम् ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति नित्यश्राद्ध प्रयोगः ॥

अथ तीर्थश्राद्ध विधिः ॥

तत्र क्रमः। आसनमिरएडदानं च पुनः प्रत्यवनेजनम् दक्षिणा-

सङ्कल्प पितृपात्रपूरणादिकं सर्वमनुक्रममभ्यवतों रितृतीर्थेनदेवम् ॥ ४ ॥ पूर्वप्रयोगवत् ॥—अत्र पितरः गोपीचन्दन तिलाक्षतमेव सुगन्धि पुष्पाणि सगन्धि पुष्पाणि प्रशस्तानि मन्दारादीनिपितृणां देयानि ॥

चान्न सङ्कल्प्य स्तीर्थं श्राद्धेप्वथ विधि ॥ अर्घमावाहनञ्चेवद्विजाङ् गुष्ठनिवेशनम् । तृप्ति प्रश्न च विकिर तीर्थं श्राद्धे विवर्जयेत् । नावाहन नदिगवन्ध्यो न दोषो हति सम्भव सकारुण्यञ्च कर्त्तव्य तीर्थश्राद्ध विचक्षणै । तीर्थ श्राद्धे धूरि लोचन विश्वेदेवा पूर्वक अमुकतीर्थ प्राप्ति निमित्तक श्राद्ध करिष्ये । इति सङ्कल्प इति तीर्थस्नान विधि । अथ तीर्थोपवाससङ्कल्प । अद्येत्यादि अमुकशर्माहं सकलपापक्षयार्थं अमुक तीर्थे क्षेत्रोपवास व्रतमहं करिष्ये । अद्यस्थित्वा निराहार सर्वभोग विवर्जित भो मोक्षे पुण्डरीकाक्ष शरण मे भवाच्युत इति पठेत् । अथ श्राद्धम् । य ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परम प्रधान पुरुषस्तथान्ये विश्वो द्गते कारणमारवरन्या तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥ शुक्लाम्बरधर विष्णु शशिवर्ण चतुर्भुजम् प्रसन्न वदन ध्याये त्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ इति नमस्कृत्य दक्षिण भागे भूमो चन्दनेन शखचक्रे लिखित्वा तत्रासनार्थं कुशत्रय धृत्वा तत्रा सनार्थं तत्र कर्मपात्रे संस्थाप्य पात्रे पवित्रम् । ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्व — प्रसवऽ उत्पुनाम्य छि द्द्रेणपवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभि — तस्यते पवित्र पते पवि त्र पूतस्ययत्काम पुनेतच्छकेयम् ॥ इति मन्त्रेण कर्म पात्रे । पवित्रीं निधाय, स्वदक्षिण हस्ता नामिकाया कुश पवित्रीमवधारयेत् ॥ शन्नोदेवीति जलम् । ॐ शन्नोदेवीर भीष्टयो आपो भवन्तु पीतये शॅय्यो रभि श्रवन्तुन ॥ इति जलम् । इति मन्त्रत तू । तिलोपी सोम ेयत्यो गोसवो देवनिर्मित प्रत्नमद्भि पृक्त स्वधया पितृल्लोकान्त्रीणाहिन स्वाहा । इति तिलान्क्षिप्त्वा । यावो सिति यवान् ॥ ॐ यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यवया रातीदिवत्वान्तरिक्षा यत्वा पृथिव्यैत्वा शुन्धता ल्लोका पृत्रिषदना मिनिषदनमसि । इति यवान् क्षिपेत् ॥ तत्र वरुणनाहन कुर्य्यात् ॥ ॐ आवाहयाम्यहं देवीं गात्वा त्रैलोक्यमातरम् । यस्यास्मरणमात्रेण सर्वपापप्रणाशनम् ॥ ॐ भू र्भुव स्व वरुणोत्विता इहागच्छ इहातिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । गन्धाक्षत श्वेतपुष्पाक्षतादि तूष्णीं निक्षिप्य । कमपात्र सु सम्पन्नमस्तु । अस्तु सुसम्पन्नम् । तेन ननेनात्मान सर्वाश्राद्धसामग्रीं सम्प्रोक्षयेत् । तद्यथा । अपवित्र० । प्राणानायम्य । ॐ पुण्डरीकाक्षाय नम । ३ ॥ अपसव्येन नीवीबन्धनम् । सोमस्य निविरसि विष्णो शर्म्मासि शर्म्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्या कृषीष्कृधी इति ,निविबन्धनम् ॥ वामकन्धामारोपयेत् । तत सव्येन । ॐ देवताभ्यपितृभ्य महायोगेभ्यएवच नम स्वाहाये स्वधाये नित्यमेव नमो नम । इति त्रिर्जपेत् । अपसव्येन । ॐ श्राद्धकाले गया ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् । मनसाच पितृन्

ध्यात्वा तीर्थश्राद्धं समारभेत् ॥ इति स्मृत्वा । सव्येन । प्रतिज्ञा संकल्पः ॥ अद्येत्यादि देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्राणां अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां अमुकाऽमुक शर्म्माणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां तथाऽस्मन्मातामह प्रमाता मह वृद्ध प्रमाता महानां अमुकाऽमुकशर्म्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां अक्षय तृप्त्यर्थं पावर्ण श्राद्ध विधानेन धूरिलोचन संज्ञक विश्वेदेवा पूर्वकं अमुक तीर्थ प्राप्ति निमित्तकं सपिण्डकमामान्नतीर्थं श्राद्धं करिष्ये । कुरु चेति प्रत्युक्तिः । सव्यम् । ततः विश्वेदेवा आसनदानं । अद्येत्यादि अमुक गोत्रोऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनां तथा स्मन्मातादित्रय श्राद्ध-सम्बन्धिना धूरिलोचन संज्ञकानां विश्वेषां देवानां इदमासनमस्तु । ॐ भू र्भुवः स्वः इदमासनमास्यतामास्ये । अपसव्यं कृत्वा । अमुक गोत्राणा-मस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानाममुकामुकशर्म्माणां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां इदमासनमस्तु भू र्भुवः स्वः इदमासनमास्यतामास्ये इति आसनं दत्वा । अस्मन्मातृपितामही प्रपितामहीनां अमुकामुकी देवीनां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां इदमासनमस्तु । भू र्भुवः स्वः इदमासनमास्य-तामास्ये । इति आसनं दत्वा । अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमाता महानां अमुकामुकशर्म्मणां सपत्निकानां वसुरुद्रादित्य-स्वरूपाणां इदमासनमस्तु । ॐ भू र्भुवः स्वः इदमासनमस्तु । ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनमास्यतामास्ये । इति आसनं दत्त्वा । ततः सव्यंकृत्वा । विश्वेदेवा पूजनम् ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरो रुवा हवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटि युगधारिणे नमः । इति मन्त्रेण पाद्य गन्धाक्षतैश्च सम्पूज्य, अपसव्येन । पितृब्रा-ह्मणं सम्पूज्य ॐ पितृभ्य इत्यादीनां पितृणां ओं नमो वः इत्यादीनां मातामहानां च पूजनं कुर्य्यात् । वेदीं कृत्वा । अपसव्यं कृत्वा । ॐ अपहताऽसुरा रक्षा ꣳ सि वेदिषद् इति रेखात्रयं कृत्वा । प्रथम रेखा-मने अद्येत्यादिअमुक गोत्रः अस्मित्पिता अमुक शर्मन् वसु स्वरूपपिण्डा-सनेऽवनेनिक्ष्व ॥ अद्यः अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् रुद्र-स्वरूप पिण्डासनेऽवने निक्ष्व । अद्य, अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामह अमुक शर्मन् आदित्यस्वरूप पिण्डासनेऽवने निक्ष्वः । द्वितीय रेखामने ॥ अद्य अमुक गोत्रः अस्मन्माता अमुकि देवि वसुस्वरूपे पिण्डासनेऽवनें निक्ष्व । अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामही अमुकि देवि रुद्र स्वरूपे, पिण्डासनेऽवने निक्ष्व । अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामह अमुक शर्मन आदित्यस्वरूप पिण्डासनेऽवने निक्ष्वः । द्वितीय रेखासने ॥ अद्य अमुक गोत्र अस्मन्माता अमुकि देवि वसुस्वरूपे पिण्डासनेऽवने निक्ष्व ।

अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामही अमुकि देवि रुद्र स्वरूपे पिण्डासनेऽवने निक्ष्व । अद्य अमुक गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि अमुकि देवि आदित्य स्वरूपे पिण्डासनेऽवने निक्ष्व । तृतीय रेखा सने । माता महादीनां अवनेजनानि दत्वा । सव्येन । भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया पिण्डप्रदान मह करिष्ये । अपसव्यं कृत्वा । स मोदकं तिल गुड़ पिंड वायवान् पिण्डं गृहीत्वा । अद्येत्यादि अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मन् वसुस्वरूप अस्मिन् तीर्थ श्राद्धे एवं तिल गुड़ पिंडोऽमृतकल्पो मद्दत्तस्तेस्वधा । ॐ अमुक गोत्राय अस्मत्पित्रे अमुक शर्मणे वसु स्वरूपाय । इति प्रथम रेखा मूलेऽवनेजनो परिपिंड दद्यात् । अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक शर्म्मन् रुद्रस्वरूप अस्मिन्तीर्थे श्राद्धे एवं तिलगुड़ पिण्डोऽमृत कल्पो मद्दत्तस्ते स्वधा । अमुकगोत्रः अस्मत् प्रपितामह अमुक शर्म्मन् आदित्य स्वरूपः अस्मिन्तीर्थश्राद्धे एवं तिल गुड़ पिंडोऽमृत कल्पो मद्दत्तस्ते स्वधा । इयं भूमिर्गयातुल्या इदंमुदकं गाङ्ग–द्वितिय रेखामूले–अमुक गोत्रोऽस्मत् माता अमुकी देवी वसुस्वरूपस्मिन् तीर्थश्राद्धे एष तिल गुड़ पिंडोऽमृतकल्पो मद्दत्तस्ते स्वधा०–इयं भूमिरिति–अमुक गोत्रो अस्मत् पितामही अमुकी देवीरुद्रस्वरूपं स्मिन् तीर्थश्राद्धे एष तिलगुड़ पिण्डोऽमृतकल्पो मद्धस्ते ते स्वधा । इयं भूमिरिति । अमुक गोत्रोऽस्मत् प्रपितामही अमुकी देवी आदित्य स्वरूपा अस्मिनतीर्थश्राद्धे एष तिल गुड़ पिंडोऽमृतकल्पो मद्धस्तेते स्वधा । इयं भूमि रिति० ॥ त्रितयि ॥ रेखासने मूले–अमुक गोत्राय अस्मिन् मातामह अमुक शर्म्मन् सपत्निक वसुस्वरूप अस्मिन् तीर्थश्राद्धे एष तिल गुड़ पिन्डोऽमृतकल्पो मद्दत्तस्ते स्वधा । इयं भूमिरिति अमुक गोत्राय अस्मत्मातामहाय अमुक शर्म्मणे रुद्रस्वरूपाय सपत्निकाय एष तिलगुड़ पिंडोऽमृतकल्पो मद्धस्तेपे स्वधा । इयं भूमि रिति० ॥ अमुक गोत्र अस्मत् वृद्धप्रमातामह अमुक शर्म्मन् आदित्य स्वरूप सपत्निकाय एष तिलगुड़ पिंडोऽमृतकल्पो मद्धस्तेते स्वधा–इयं भूमिरिति० ॥ ओं लेपमागिन मय भागोस्तु इति लेपभागस्य प्रतिपत्तिलेप भागस्य चद्दद्यात् । सव्येनाचम्य पुण्डरीकाक्षं स्मरन् ततः अपसव्येन । प्रत्यवनेजनम् । अमुक गोत्रः असमत् पिताअमुक शर्म्मन् वसुस्वरूप अस्मिन् तीर्थ श्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निक्ष्व ॥ अमुक गोत्रः अस्मत् पितामह अमुकशर्म्मनरुद्र स्वरूप अस्मिन् तीर्थ श्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निक्ष्व । अमुकगोत्रः असमत् प्रपितामह अमुक शर्म्मन् आदित्य स्वरूप अस्मिन् तीर्थश्राद्धेपिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अमुक गोत्रः अस्मत् माता अमुकी देवी वसुस्वरूपे अस्मिन् तीर्थश्राद्धेपिंडे प्रत्यवने निक्ष्व । अमुक गोत्रः अस्मत् प्रपिता मही अमुकी देवी रुद्रस्वरूपा अस्मिन्तीर्थ श्राद्धे

पिंडे प्रत्यवने निदव । अमुक गोत्रः अस्मत् मातामह अमुक शर्म्मन् सपत्निक वसु स्वरूप अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने, निदव ॥ अमुक गोत्रः अस्मत् प्रपितामहीअमुकी देवी आदित्य स्वरूपे अस्मिन्तीर्थ श्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निदव । अमुक गोत्रः अस्मत् प्रमाता मह अमुक शर्म्मन रूद्रस्वरूप सपत्निक अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निदव । अमुक गोत्रः अस्मत् वृद्ध प्रमातामह अमुक शर्म्मन् सपत्निक आदित्यस्वरूपे अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निदव । गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप वस्त्रादिभि पिंण्डं सम्पूजयेत् । ॐ पितृपितामह प्रपितामहीभ्यो नमः । ॐ मातृ पितामही प्रपिता महीभ्यो नमः । ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्निकेभ्यो नमः । निर्विसृज्य । सव्यं कृत्वा दक्षिणां दानं देव द्रव्यं सम्पादाय सम्पूज्यः ॥ ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रः पित्रादित्रय तथा मातादित्रय तथा अमुक गोत्र मातामहादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनां धूरि लोचन संज्ञकानां विश्वेषांदेवानां प्रीतये कृतेत द्देश देविकं पूर्वकं तीर्थप्राप्तनिमित्तकं श्राद्धकर्म्मणां सांगतासिद्धये इमां सुवर्ण निष्क्रयं ब्राह्मणं दास्ये । ॐ तत्सत्र मम तथा अमुक गोत्राणां पितृपितामह प्रपिता महानां अमुकामुक शर्म्माणां तथा मातृ पितामही प्रपितामहीनां तथा अमुक गोत्राणां अस्मत्माता मह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाय अमुकाऽमुक शर्म्मणां सपत्निकानां वसु रुद्रादित्य स्वरूपाणां तीर्थश्राद्धनिमित्तकं इदं रजत निष्क्रयं ब्राह्मणान्दास्ये ॥ तत्सत्र मम ॥ विश्वेदेवाग्रे अन्नं संस्थाप्य । ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रः पित्रा दित्रय तथा मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिभ्यो धूरिलोचन, विश्वेभ्यो देवेभ्यो इदमान्नं सोदकं सोपस्करं निषिद्ध वर्जंअमृत स्वरूपं ब्राह्मणस्य तृप्तिपर्य्यन्त यथा विभाग वः स्वधा ॥ यथा सुखेन भुङ्ध्वं भुङ्महि । अपसव्यम् । ॐ येचेह पितरो येच नेहयांश्च विद्मायां २ वचन प्रविद्मत्वंवेत्थ यतिते जात वेदः स्वधामिर्यज्ञ ६ सकृतन्जुपस्व इति पठित्वा । मधु ३ । अद्येह अमुक गोत्रेभ्यः अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः अमुकामुक शर्म्मेभ्यः सपत्निकेभ्योः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तीर्थश्राद्धे इदमामान्नं सोदकं सोपरकरं निषिद्ध वर्ज्जं अमृत स्वरूपंब्राह्मणस्य तृप्ति पर्य्याप्तं यथा विभागं वः स्वधा । तथा अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्योः अमुकाऽमुक शर्म्मभ्यः सपत्निकेभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरुपेभ्यः इदं मामान्नं सोदकंसोपरकरं निषिद्धवर्ज्जं अमृत स्वरूपं ब्राह्मणस्य तृप्ति पर्य्याप्तं यथा विभागं वः स्वधा । सव्येन । पितृ गायत्री जपेत् – देव वाम्य–इति त्रिवारं जपेत् । अपसव्य अक्षयोदक दानं ॥ अद्येह अमुक गोत्राऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां तथा अमुक गोत्रा स्मन्माता महादित्रय

श्राद्ध सम्बन्धिना श्रीरिलोचनसञ्ज्ञकाना विश्वेषां देवाना तीर्थप्राप्ति निमित्तक श्राद्धे इदमन्नोदकादियद्दत्त तदक्षय्यमस्तु ॥ अस्त्वक्षयम् । एव पितामह प्रपितामहयो । अद्यामुक गोत्रस्यास्मन्मातामहस्य अमुक शर्म्मण सपत्निकस्य वसुस्वरूपस्य अस्मिन् तीर्थश्राद्धे इदमन्नोदकादि यद्दत्तं तद् क्षय्यमस्तु । अस्त्वक्षय्यम् । एव प्रमातामहयोरपि । सव्येन । अघोरा पितर सन्तु सन्तु गोत्रन्नो वर्द्धन्ता २ सन्ततिर्वर्द्धता वेदा वर्द्धन्ता वर्द्धन्ता दातारो नोपि वर्द्धन्ता वर्द्धन्ता श्राद्धाचनो मास्यव्यगमत्-मागात् । अन्नञ्चनो बहुभवेत् । भवतु अतिथीञ्चलमेमहीं अभक्ष्य या चिताश्चन सन्तु सन्तु, मास्मयाचिष्मकञ्चन मायाचिषा इत्याशिष प्रतिगृह्य । स्वविलक सत्यानुष्ठान सम्पन्ना सर्वदायक्षयुदय पितृमातृ परारचेत सन्तस्मत् कुलजगिरा इति पठित्वा । देवताभ्य इति त्रिर्जपा ॥ इद श्राद्ध विसर्जयेत् । अद्येह अमुक गोत्राणा इति उच्चार्य्य भूरि लोचन विश्वेदेवा पूर्वक इद श्राद्ध, तीर्थश्राद्ध विधिहीन श्रद्धाक्रिया रहित सस्तु कृतमस्तु यन्न्यूनातिरिक्त तत्सर्वविष्णो प्रसादात् ब्राह्मणवचनात्सर्वं परिपूर्णमस्तु अस्तुपरिपूर्णम् ॥ वषिष्ठ ब्राह्मणस्वे इति पठित्वा विसृज्य आमा वाजस्येति प्रदक्षिणीकृत्य नीविंविसृज्य । आचम्य यस्य स्मृत्येति पठेत् अच्युताय नम इति तीर्थश्राद्ध विधि । तीर्थवासी ब्राह्मणो यजमान चन्दन पितृप्रसादाञ्च दद्यात् । पुन कर्ता अयोध्या मथुरामाया का० ॥ इति ॥

अथ शय्यादानम् ।

दीप प्रज्वाल्याचम्य गणेशपूजा कृत्वा दक्षिणोत्तरा शय्या स स्थाप्य—तत्रादौ सारदारुमयीं दृढा दन्तपत्रे हेमपट्टये रलङ्कृता हंसतूली प्रतिच्छन्ना शुभ्रगण्डोपधानिका प्रच्छादनपटी युता गन्धधूपादि वासिता पुष्प ताम्बूल कुंकुम कर्पूरागरुचन्दनदीपकोपानच्छत्रचामरव्यजनासन सप्तधान्यघृतपूर्ण कुम्भादिसहिता शय्यामासाद्य, तत्र हैम काञ्चन-पुरुष स्थापयेत् । तत पूर्वाभिमुखं उदङ्मुखो वा उपविश्य । आचम्य प्राणानायम्य । अद्येत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्याऽमुकोऽहं यथोक्त फल प्राप्तये । इष्टदेवताया प्रीतये शय्यादानं करिष्ये । (इति सङ्कल्प) । पुन शय्यादानप्रतिग्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये इति सङ्कल्प्य भूमि देवाय जन्माश्रिन्ते विप्र पुरुषोत्तम मत्यन्न यज्ञपुरुष अर्चाय प्रति गृह्णताम् । गन्धादिभि सम्पूज्य । एभिर्गन्धाक्षत पुष्पपूगीफल द्रव्यवासो लंकरणादिभि करिष्यमाण शय्यादान प्रतिग्रहार्थं त्वामहं वृणे । वृतो

स्मीति प्रत्युक्ति ततो लक्ष्मीनारायणप्रतिमा पूजन कुर्यात् । अद्येह अमुकोऽहकरिष्यमाण शय्यादानकर्म्मणः पूर्वांगत्वेन सुवर्णप्रतिमाया लक्ष्मीनारायणयो पूजनमहं करिष्ये । प्रतिमा मन्त्युत्तारण पूर्वक-पञ्चामृतैः संस्नाप्य । एतन्त इति प्रतिष्टा ॥ ध्यानम् । दक्षिणाधः करे पद्मशस्त मूर्द्ध करे न्यसेत् । वामोर्द्धे च भवेद्चक्र लक्ष्मो पृष्टे कर पर । दक्षिणास्तु भुजे दिव्या पृष्टे देवस्य चक्रिण वामेप्येक गदालक्ष्मी रत्नपात्रकराभवेत् । इति ध्यात्वा षोडशोपचारे सम्पूज्य ॥ ततो लक्ष्मीनारायण प्रतिमा शय्यो परिस्थापयित्वा-शय्या सपूज्य कृताञ्जलि पुटो भूत्वा, शय्या प्रदक्षिणीकृत्य प्रमाण्यदेव्योनम । इति चतुर्दिशं प्रणम्य, सकल्प कुर्यात् । अद्येहाऽमुकोहं यथोक्तफलवाप्ति कनकोज्वल नानारत्न समकीर्ण नानाद्रव्योपसंयुक्त नानादिव्यापसनमेव्य विमान रोहण पूर्वक षष्टि सहस्त्रवर्ष पर्य्यन्त इन्द्रलोकवासप्राप्तिकाम, इष्ट देवताया प्रीतये, इमा शुभ गण्डोपधानिका प्रच्छादनपटयुतां गन्धपुष्पादिवासिता सुपूजित लक्ष्मीनारायण प्रतिमायुता । तच्छीर्षक स्थापित घृतकुम्भपूर्णताम्रकलशोभिता, पार्श्वस्थापित ताम्बूल कुंकुम मृगमद कर्पूरागरुचन्दन जातापत्र जाताफल लवगपूगीफल नालिकर दापिकोपानह छत्रचामर दशादुरपरकरवर्ती पाकादि पात्राद्यादुरपरस्वर्ती सालकारा चतुष्कोणेषु यथा क्रम सस्थापित घृतकुंकुम गोधूम जलपूर्णपात्र युता, प्रजापति देवतया, अमुक गोत्राय । अमुक वेदाध्यायिने अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्सत्र मम दानवाक्य, यथान कृष्ण शयन शून्यं सागरजातया शय्या ममाप्य शून्यास्तु शय्या जन्मनि जन्मनि । ब्राह्मण शय्योपरि स्थित्वा, प्रतिगृह्णयात् । कृतस्य शय्या दानस्य सागता सिद्ध्यर्थ इद सुवर्णं अग्नि दैवत ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । तत्स न्ममम । ततो भूयसी सकल्प । ब्राह्मणान् । भोजयित्वा । प्रणिपत्य विसर्जयेत् ॥ इति शय्यादानविधि ॥

अथ भूमिदान विधिः ॥

ताम्रपात्रे देयभूमि सम्बन्धि मृत्पिण्ड संस्थाप्य विधि ना अर्घं संस्थाप्य सकल्प । अद्येत्यादि-अमुकोऽहं ॥ ोक्त फलावाप्तये भूमिदान करिष्ये । भूमिदानकर्मणः पूर्वांगत्वेन भूमे यथामिलितोपचारैः पूजनमहंकरिष्ये । ध्यानम् ॥ शुक्लवर्णं महाकाया, दिव्याभरणभूषिता । चतुर्भुजासौम्यवपुश्चन्द्रामुख दशप्रभा । रत्नपात्र शस्यपात्रं पात्रमोषधिसंयुतम् । पद्मञ्चैव कर्तव्यं भूयो यावद वन्दन, त्रिनामाना चतुर्णा-

प्राकार्य्यां तृष्टगतामहो, इतिध्यात्वा, भूम्यै नमः ॥ इति गन्धाक्षत पुष्पैः संपूज्य । दान संकल्प । अद्येहाऽमुकोहं सकलपाप क्षयपूर्वकं यथोक्त फलावाप्तये, इमां सुपजितां भूमिं लयोत्पत्तियोग्यां विष्णु देवत्यां अमुक गोत्रायऽमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय दास्ये । तत्सन्न मम ॥ दान वाक्यम् । यथा भूमि प्रदानस्य, कलानार्हन्ति षोडशी, दानान्यन्यानि मे शान्ति र्भूमिदानाद्भवत्विह । कृतस्य भूमिदानस्य साङ्गता सिद्धयर्थं इद सुवर्णं अग्निदैवतं दान प्रतिष्ठात्वेन तुभ्यं संप्रददे । तथा इमां दक्षिणा भूमिं दान कर्मणः साद्गुण्यार्थं । ब्राह्मणेभ्यो विविभज्य दास्ये, तथा माधव प्रीतये सिद्धान्नेन आमान्नेन वा यथा सख्याकान् ब्राह्मणान्भोजयिष्ये इति सकल्प अभिषेकतिलक मन्त्र पाठादिकं कुर्यात् । इति भूमिदानम् ॥

एकोदिष्ट श्राद्ध विधिः ॥

अथैकोदिष्ट श्राद्धविधि । तत्र पारकर सूत्रम् ॥ अथैकोदिष्ट मेकोर्घ एकं पवित्रमेक, पिण्डोना वाहन नाग्नौ करण नात्र विश्वेदेव । स्वदितमिति तृप्ति प्रश्न सुस्वदितमितिइतरे भ्युरुपतिष्ठतामित्यक्षय स्थानेऽभिरम्यतामिति विसर्गोभिरमतास्म इति वरे ॥ तत्र मध्याह्ने स्नात्वा, धौतवाससी परिधाय श्राद्धाङ्ग तर्पणं कृत्वा, श्राद्धवेमे गत्वा, दीप प्रज्वाल्याचम्य । पवित्रपाणिर्भूत्वा विष्णुं सम्पूज्य, हस्तौ सद्वतीकृत्वा । ॐ यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति पर प्रधान पुरुष तथान्ये । विश्वोद्गते कारणमीश्वरन्वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय । अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजते । त्रिदशैरपि । सर्वविघ्नच्छिदेतस्मै गणाधिपतये नम । इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा, ब्राह्मणं तैलाभ्यगं कारयित्वा सस्नाप्य । कुशोसि कुशपुत्रोसि । ब्रह्मणा निर्मितपुरा । त्वय्यर्चिते सोर्चितोस्तु यस्याहं नाम कीर्त्तये । एतन्व इति पठित्वा । ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहु बृहस्पतय । ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेनयज्ञ पतिन्तेन मामव मनाजूतिं र्जुषता माज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु विश्वेदेवासऽइहमादयन्तोमोम् प्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुव स्व पितृमान्, सम्बन्धि ब्रह्मन् सुप्रतिष्ठितो भव । ततोऽपसव्यम्विधाय । तिलान् गृहीत्वा, अद्येत्यादि अमुक गोत्रस्या स्मत्पितु अमुक शर्म्मणो वसुस्वरूपस्य सावत्सरीकैकोदिष्टश्राद्ध श्राद्धे ब्रह्मन् भवान् मयानिमन्त्रित । निमन्त्रितोस्मीति इत्युक्त । इत्वा सद्नौ कृत्वा । अक्रोधनै शौच परै सततं ब्रह्मचारिभिः, भवितव्य भवद्भिश्च मया च श्राद्धकारिणा । सर्वायास विनिर्मुक्तैः कामक्रोध विवर्जितै भवितव्य । अत्र कुर्वोपतने श्राद्ध कर्मणि सव्यन ।

आगंतवः सुस्वागतम् । अपसव्येन, एतद्वः पाद्यमस्तु । यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्करे तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ विप्राणां पाद शौचने । इति पठित्वा । पादपूजायां अत्र सुगंधं अक्षताः पुष्पाणि तुलसीदलानि च समर्प्य । पादार्घदानम् सव्येन ॥ भूमौ शंखचक्रादिकं लिखित्वा आसनं आसने पात्रं, पात्रे पवित्रं, पवित्रे स्थौ वैष्णव्यो । शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शय्योरभिस्रवंतुनः । इति जलम् । तिलोसि सोम देवत्यो गोसवो देव निर्मितः प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृल्लोकान् प्रीणाहिनः स्वाहा । इति तिलान् प्रक्षिप्य । गन्ध-पुष्पाक्षतादि प्रणवेन तूष्णीं वा यथाधिकारं निक्षिप्य । भो ब्राह्मणाः पादार्घपात्र सम्पत्तिरस्तु । अस्तु सम्पत्तिः । इति प्रत्युक्तिः । अपसव्येन । पितृब्राह्मण पादार्चनं विधाय त्वं नमः गन्धोस्तु स्वधा । अक्षताः पुष्पाणि तुलसीदलानि नमः । अद्येह अमुक गोत्रास्मत्पितुः अमुक शर्मन् वसुस्वरूप अद्यकर्तव्ये साम्वत्सरीकैकोद्दिष्टक्षयाह श्राद्धे ब्रह्मन्नेषते पादार्घोऽस्तु । पादार्घदानाचमनम् । सव्येन । स्वयमाचम्य अपसव्येन । ब्राह्मणमाचामयेत् । सव्येन । श्राद्धदेशोपवेशनं इत्युदङ् मुखं उपवेशयेत् । ततः कर्मपात्र पूरणम् । ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्यधर्त्री पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ᳪ ह पृथिवीं माहि ᳪ सीः । भूमौ शंखचक्रादिकं लिखित्वा । आसनं आसने पात्रं पात्रे पवित्रम् । पवित्रस्थो वैष्णव्यौ, शन्नोदेवीरिति जलम् । यवोसियव यास्म द्वेषो यवयारातिर्दिवस्त्वान्त रिक्षायत्वा । पृथिव्यैत्वाशुन्धन्तांल्लोकाः पितृसदनाः पितृसदनमसि । तिलोसीति तिलान् । गन्ध पुष्पाक्षतादितुष्णीं निक्षिप्य । कर्मपात्रं सुसंपन्नमस्तु, अस्तु सुसम्पन्नम् । तेन जलेनात्मानं संप्रोक्ष्य प्राणायामं विधाय । पुण्डरीकाक्षाय नमः ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो पिवा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः । हस्तौ संहतौ कृत्वा । देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यरेव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः । इति त्रिः पठित्वा ३ ।

स्नान सङ्कल्पः । सयवकुशाजलान्यादाय । ॐ विष्णु ३ अद्येत्यादि च्चार्यामुकगोत्रोऽमुक राशिरमुक शर्माहम् । अपसव्यं विधाय । तिल मोट-कादिना अमुक गोत्रस्यास्मत्पितुरमुकशर्मणः वसुस्वरूपस्यामुक गोत्राया अस्म-न्मातु, अमुकी देव्याः वसुस्वरूपायाः अद्य तृप्तिकामनाय साम्वत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धाधिकार सिद्धयर्थं आत्मनः कायशुद्धयर्थं मध्याह्न स्नानमहं करिष्ये, कुरुष्व । अमुक गोत्रायाः अस्मन्मातुः अमुकी देव्याः वसुस्वरूपाया यः स्मरेदिति क्वचिदित्यपि पाठोऽस्मदने ।

सप्तव्याधादशार्णेषु मृगा कालंजरे गिरौ । चक्रवाका सरद्वीपे हंसा सरसि मानसे । तेपिजाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगा । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ । श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधर इति पठित्वा । अपसव्यं विधाय मनसा च पितॄन्मातृ) ध्यात्वा । तत अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितु अमुक शर्मणो वसुस्वरूपस्य सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट क्षयाहश्राद्ध समारंभे इति पठेत् । सव्येन पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गयाशिर । यत्र यत्र स्मरिष्यामि पितॄणामदत्तमक्षयम् । ततोऽपसव्येन । तिलमादक गृहीत्वा वामकक्ष्या । ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णो शर्म्मासि शर्म्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्या कृषीष कृधी इति नीवीं बध्वा । ततोदिग्बन्धनम् । मोदकान् गृहीत्वा । अग्निष्वात्ता पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मेदिशम् तथा बर्हिषद पान्तु याम्यां येपितरस्था । प्रतीची माज्यपा पातु उदीचीं मयि सोमपा । विदिशश्चगणा सर्वे रक्षन्तूर्ध्व मही पिया रक्षोभूत पिशाचेभ्यस्तथै वासुर दोषत । सर्वतश्चाधिरस्तेषां यमोरक्षां करोतु मे । तिलारक्षन्तु इति । जान्दर्भारक्षन्तु राक्षसान् पंक्तिं वैश्रोत्रियो रक्षेदतिथि सर्वरक्षक । अथ ऊर्ध्वं चकालेषु हविष्मतश्च सर्वदा । तत सव्येन सामान् कुशान् गृहीत्वा । वर्म पात्रस्थ जलमभिलोडयेत् । ॐ यद्देवादेव हेडनं देवासश्च कृमाव्ययम् । अग्निर्म्मांतस्मा देन सो विश्वानमुञ्चत्यंहस यदि दिवा यदि नक्तमेना ॐ सिचकृमाव्ययम् । वायुर्म्मां तस्मादेनसो विश्वान मुञ्चत्वंहस यदि जाग्र यदि स्वप्नऽएनाॐसिचकृमवयम् । सूर्य्योमातस्मा देनसो विश्वान् मुञ्चत्वंहस । गायत्र्यात्रा । ततो दर्भतिलयुत तज्जल गृहीत्वा, पिवानमुताप्यं । शूद्रदिदृष्टिदूषित पाक पूतोऽस्तु । गायत्र्यात्र सप्रोक्षय । प्रतिज्ञा । ॐ विष्णु ३ नम परामात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय । अत्र । पृथिव्या जम्बूद्वीपे भरतखण्डे, आर्यावर्त्ते पुण्यक्षेत्रे । हिमवत्पर्वते प्रदेशे । ब्रह्मणे द्वितीय परार्द्धे । श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे कृतत्रेता द्वापरान्ते कलियुगस्य प्रथमचरणे पञ्चाब्दानां मध्ये, अमुकनाम संवत्सरे, अमुकायने, अमुकर्तौ, अमुकमासे, अमुक पक्षे तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्न, अमुक राशि, अमुक शर्म्माहं, अपसव्य । अमुकगोत्रस्याऽस्मत्पितु अमुक शर्मणो वसुस्वरूपस्य अक्षय तृप्ति कामनया अर्घपिण्ड सहित, एकोद्दिष्टक्षयाह श्राद्धविधिना पक्वान्नेन सांवत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्ध करिष्ये । ॐ कुरुष्व । इति प्रत्युक्ति । तत आसन । तिलमोदक गृहीत्वा । अद्येह अमुक गोत्राभ्याऽस्मत्पितु अमुक शर्म्मणो वसुस्वरूपस्य — अस्मत सांवत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे इदमासनमस्तु । सव्यन । भूर्भुव स्व इद मासनमास्यतां मास्ये । ततो दत्तार्घे संपादनम् ।

भूमौ शंख चक्रादिकं लिखित्वा आसनं आसने, पात्रं पात्रे, पवित्रम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यो० शन्नो देवी रिति जलम्। तिलोसीति तिलान् गन्ध पुष्पाक्षतादि तूष्णी निक्षिपेत्। भो ब्रह्मन् पित्रर्घपात्र सम्पन्नमस्तु अस्तु सपन्नम्। हस्तार्घं। सव्येन। पवित्रं गृहीत्वा। विप्रहस्ते समर्प्य, सपवित्रेषु हस्तेषु ॐ यादिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या ऽ अन्तरिक्षा ऽ उतपार्थ-वीर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽ आप. शिवाः श [illegible] स्यो नाः सुहवा भवन्तु। अद्येह, अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्म्मन्। वसुस्वरूप, अस्मिन् साम्वत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे, एषतेहस्तार्घोऽस्ति। पुनः प्रत्यर्घचं। अर्घोदकं श्रियं दद्यात्पुत्र पौत्रादि वर्द्धनम्। यस्मात्तस्माच्छिवं-मेस्यादिह लोके परत्र च। इति मूर्द्धनि अभिषिंचय। अपसव्येन, पितृ वामभागे। कुशानास्तीर्य्य। तदुपरि सपवित्रम् अर्घपात्रम्। पितृभ्यः स्थानमसीतिन्युब्जं कृत्वा तदुपरिस्वधा वांचनीयान् स पवित्रान् त्रींन्-कुशान् दक्षिणाग्रान् संस्थाप्य। आचारात् शुन्धन्तां लोकाः पितृषदना पितृषदन मसीति संप्रोक्ष्य। पितृभ्यः स्वधायिभ्य इति पूजनम्। ततोऽङ्गुष्ठं पवित्रे त्यक्त्वा। पितृब्राह्मणार्चनंविधास्यत्रक्रमः ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः, प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अत्रन्न पितरो मीम-दन्त पितरो तीनृपन्त पितरः पितरः शुंधध्वम्। गन्धोऽस्तु स्वधा। अक्षताः पुष्पाणि तुलसीदलानि। धूप दीप वस्त्र भूषण ताम्बूलादि दत्वा पुनः पवित्रे करे कृत्वा। अद्येह अमुक गोत्रः। अस्मित्पितः। अमुक-शर्म्मन्। वसुस्वरूप अस्मिन्साम्वत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्ध विप्रार्चन विधाविमानि गन्धाक्षत, पुष्प, तुलसीदल दीप, वासो भूषण ताम्बूला-दीनि मद्दत्तानि ते स्वधा। विप्रार्चन विधेः सर्वपरिपूर्णमस्तु। अस्तु परि-पूर्णम्। गन्धादि दानाचमनम्। सव्येन। स्वयमाचम्य। अपसव्येन। ब्राह्मणमाचामयेत्। सव्येन। अच्युत स्मरणम्। ततो विष्णवे नैवेद्यं परिवेश्य समर्पयेत्। नाभ्या ऽ आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत पद्भ्यां भू० ॥ इति नैवेद्यं। अपसव्यं विधाय। यथाचक्रायुधो विष्णुस्त्रै-परिरक्षति। एवं मण्डलमस्माकं सर्वभूतानिरक्षतु। इति भस्मना चतुष्कोण मण्डलं विधाय। तदुपरि भोजनपात्रं संस्थाप्य। सव्यंप्रणिधाय। अन्नं परिवेश्य। गायत्र्या अन्नं संप्रोक्ष्य। अपसव्येन। अन्वाचितवाम जानुः।

अमुक गोत्रायाः अस्मत्मातुः अमुकी देव्याः वसुस्वरूपायाः × अमुक गोत्रायाः अस्मत्मातुः अमुकी देव्याः वसुस्वरूपायाः × अमुक गोत्रे अस्म-त्मातः अमुकी देवि वसुस्वरूपे ।+

स्वस्तिका कृतिना उद्ध मुखेन। दक्षिणो परिस्थितेन। वाम हस्तेन। मधु मधु इतिवाक्रमालम्य जपति। पृथिवीते पात्रं। द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे। अमृतेऽमृतं जुहोमि। विष्णो कव्य ॐ रक्ष अत्रा दाक्षिण्येन तिलान्विकीर्य्य। अपहता ऽसुरारक्षा ॐ सि व्वेदिषदः। अंगुष्ठमहणम्। इदं व्विष्णुव्विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पा ॐ सुरे। इदमन्नं इमाआपः इदमाज्यं इदं शाकादिकं सर्वं कव्यम्। अद्येह अमुक गोत्राय अस्मत्पित्रेऽमुक शर्म्मणे वसुस्वरूपाय साम्वत् सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे। इदमन्नं इमा आपः। इदमाज्यं इदं शाकादिकं यत्परिविष्टं। यत्परिवेष्यमाणंब्राह्मणास्यातृप्ति पर्यन्तं। ब्राह्मणेभ्य आतृप्तिदारयमान मन्न च अमृतस्वरूपं मद्दत्तं तेस्वधा। ॐ येचेह पितरो येच नेह यांश्च विद्मयां २S उचनप्र० इति पोशानदत्त्वा। भो ब्राह्मणा यथा सुखेन भुञ्ज्वम्। भुंजमहे। ततः सव्येन प्रणव व्याहृति पूर्विका। गायत्रीं मध्विति मधुमतीं त्र्यक् त्रयञ्च पठेत्। ॐ मधु ३ मधुवाताऽ ऋतायते। मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वी० ॥ ॐ मधु ३ यथा शक्त्या पित्त सूक्तं, आशुः शिशान० इत्यादि पुरुष सूक्तं सप्तदशर्चीहविस्स्वादीनश्नत्सु ब्राह्मणेषु पठेत्। ततस्तुलसी शर्करा गन्धदुग्धाग्र मधुतिल गङ्गाजल-युतमन्नंताम्रादि पात्रे कृत्वा। कर्मपात्रोदकं विष्णुनिषेदितं भक्तमपि-दत्त्वा। अपसव्येन पिण्डनिर्माय। विकिरदानं। नैऋत्यां दिशि कुशत्रय भूमौ क्षिप्त्वा आसनं। असंस्कृत प्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनां। उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषुविकिरासनम्। इत्यासनम् दत्वा। सजल तिलमोदक युतमन्नं विकिरेत्। अग्निदग्धारचयेजीवा येप्य दग्धाःकुलेमम भूमौदत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परांगतिम्। येषान्नं पचते माता येषांन पचते पिता। उच्छिष्टं ये च कांक्षन्ति। तेभ्योऽन्नं दत्तमक्षयम्। उच्छिष्ट भागधेयेभ्योनमः। इति गन्धाक्षत पुष्पैः पूजनं। अंगुष्ठ पवित्रे त्यक्त्वा। हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य। सव्येनाचम्य। ततः श्राद्ध देशमागत्य। अन्येऽगुष्ठ पवित्रे करयोः कृत्वा चमेत्। अपसव्येन। ब्राह्मणहस्ते सकृद्यो दत्त्वा। सव्येन। पूर्ववद्गायत्रीमधुमतीं मध्विति च जपित्वा। भो ब्राह्मणा अस्मिन् पाकमध्ये यत्किंचिद्रोचते तत्प्रतिगृह्यताम्। सुस्वदितं। शेषान्नेन किं क्रियताम्। इष्टैः सहभुज्यतां। अपसव्येन। पिण्डदानार्थं वेदिका लेपनं गोमयेन अपहताः असुरारक्षा ॐ सिव्वेदिषदः। इति रेखा करणं कुशेन। उलमुकमूधारणम्, ॐ येरूपाणि प्रतिमुञ्चमानाः। असुरा संत. स्वधया चरन्ति परापरो निपुरो ये भरंत्यग्निष्टां ल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्। अवनेजनम्। सतिलमोदक जलं गृहीत्वा। अद्येह अमुक गोत्रः। अस्मत्पितः अमुक शर्म्मन्। वसुस्वरूप। अस्मिन्साम्वत्सरीकैकोदिष्ट

क्षयाह श्राद्धे पिण्डासने अवनेनिक्ष्व तत उपमूल लूनकुशास्तरणम् । सव्येन । पदस्मरणम् ईशान विष्णुकमलासन कार्तिकेय वह्नित्रयार्क रजनीश गणेश्वराणां, क्रौंचामरेज्य कलशोद्भवकाश्यपानां पादान्नमामि सतत पितृ मुक्तिहेतो । गङ्गागयान्तीन मस्मृत्य । गङ्गायै नम गयायै नम । गदाधराय नम । कुरुक्षेत्राय नम । श्रीतीर्थराजप्रयागाय नम । पितृस्वरूप ध्यात्वा । भो ब्राह्मण युस्मदनुज्ञया पिण्डप्रदानमह करिष्ये । ॐ कुरुष्व तनोपसव्येन । तिलमोटकयुत । पिण्ड गृहीत्वा । वाम जान्वाच्य । अद्येह अमुक गोत्र अस्मत्पित । अमुक शर्म्मन् वसुस्वरूप । अस्मत्सांम्वत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे । एषाऽन्न पिण्डोऽमृत स्वरूपो मद्दत्तस्ते स्तु । इय भूमिर्गयातुल्या । इदमुदक गाङ्ग गङ्गोदकेऽसति गङ्गाजल तुल्य वा अमुक गोत्राय 'गोत्राये' अस्मत्पित्रे । (अस्मिन्मात्रे) अमुक शर्म्मणे (अमुकीदेव्यै' वसुस्वरूपायवसुस्वरूपायै । आचारात् । लेप भागिनाभय भागोऽस्तु । इति लेप भाग पिण्डपार्श्वे दद्यात् । पिण्डास्तरण कुशेष । करोन्मार्जन कृत्वा । हस्त प्रक्षालनम् । सव्येन । उदङ् मुखेन च मरुन्नियमन । तत परावृत्य । अपसव्येन । अमीमदन्त पितरो यथा भाग मा वृषायिषत । तत प्रत्यवने जनम् । अद्येह – अमुक गोत्र अस्मत्पित । अमुक शर्मन् वसुस्वरूप अस्मिन् सांम्वत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । किंचिन्नीविविस्र सनम् । नमोव इति षड्ञलिकरणम् । ॐ नमो व पितरोरसाय नमोव पितर पोषाय० ॥ त्रिगुणित सूत्रदानम् । एतद्व पितरो वास आधत्त । उर्ज्जकरणं कर्मपात्रोदकेन । ॐ ऊर्जंवहन्तीरमृत घृत पय कीलाल परिश्रुतम् स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन । सव्येन । देवताभ्य इति त्रिर्जप भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया पिण्डार्चनमह करिष्ये । ॐ कुरुष्वेति प्रत्युक्ति । तत अपसव्येन । पिण्डार्चा । पिण्डार्चनविधावत्रमम । गन्धोस्तु स्वधा । अक्षता पुष्पाणि तुलसी दलानि । पितृभ्य स्वधायिभ्य स्वधानम पितामहेभ्य स्वधायिभ्य स्वधानम अपिता० ॥ वस्त्र । धूप, दीपो, नैवेद्य, ताम्बूल भूषण च समर्प्य । अद्येह अमुक गोत्र अस्मत्पित अमुक शर्मन्-वसुस्वरूप अस्मिन्सांम्वत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे । पिण्डार्चनविधि विमान गन्धाक्षततुलसीदल वासो धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल भूषणानि

अमुकगोत्र अस्मन्मात अमुकीदेवावसुस्वरूप –अमुकगोत्रे अस्मन्मात अमुकीदेवा वसुस्वरूप ।

अमुकगोत्र अस्मन्मात अमुकीदेवा वसुस्वरूपे –अमुकगोत्रे अस्मन्मात अमुकादेवीवसु स्वरूप ।

मंदत्तानि तेस्वधा । सव्येन । पिण्डार्चन विधेः सर्वपरिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । ततः पिण्डाम भूमौ सुप्रोक्षितमस्तु । अस्तु सुप्रोक्षितम् । शिवा आपः सन्तु २ । विप्रकरे जलदानं । अपांमध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणस्य करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे । सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् । लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु । लक्ष्मीर्वसति पुष्करे । लक्ष्मीर्वसति सदा गोष्ठे सौमनस्यं सदास्तुमे । अक्षता चारिष्टं चांतु । अक्षतं चास्तु मे नित्यं शान्ति पुष्टिकरं परम् । यद्यच्छ्रेयस्करं लोके । तत्तदस्तु सदा मम । ततः कुशैः क्रमेपात्रोदकेन । मूर्द्धन्याभिषेकं कुर्यात् । मम कुले दीर्घमायुरस्तु । अस्तु शान्ति रस्तु । अस्तु पुष्टिरस्तु अस्तु वृद्धिरस्तु । यच्छ्रेयस्तदस्तु । यत्पापं रोगः शोको दुःखः दारिद्र्य' तत्प्रतिहतमस्तु, अमृताभिषेकोऽस्तु । ततोऽक्षयोदक दानम् । अक्षय्यन्तु विप्रकरएव अपसव्येन । अद्येह + अमुक गोत्रस्य अस्मत्पितुः अमुक शर्म्मणो वसुस्वरूपस्य । अस्मिन्साम्वत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं यद्दत्तं तदक्षयमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । सव्येन प्रार्थनाशीर्ग्रहणम् । अघोराः पितरः सन्तु २ । गोत्रन्नो वर्द्धतां । दातारोनोभि वर्द्धन्ताम् । वेदाः वर्द्धन्ताम् वर्द्धन्ताम् । सन्ततिं र्वर्द्धन्ताम् । श्रद्धा च नोमा व्यगमत् मागाः । बहुदेयं चनोऽस्तु । अस्तु अन्नं चनो बहुभवेत् भवतु । अतिथि ञ्चलभेमहि लभध्वम् । याचितारश्चनः सन्तु मास्मयाचिष्मकंचन मायाचेथाः एता एव आशिषः सत्याः सन्तु २ । ततः स्वधावाचनम् । सव्येन । भो ब्राह्मणाः युष्मदनुज्ञया स्वधां वाचयिष्ये वाच्यताम् । अपसव्येन । स्वधावाचनीयान् त्रीन् कुशान् पिण्डो परि संस्थाप्य । तिलमोटकंजलञ्च गृहीत्वा । अद्येह + अमुक गोत्रेभ्यो ऽस्मत्पितृभ्यो ऽ अमुकशर्म्मभ्यो वसुस्वरूपेभ्योऽस्मिन् साम्वत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धे । ब्रह्मन् मधु स्वधोच्यताम् अस्तुस्वधा । स्वधावाचनीये स्वपोनिपं चति । ॐ ऊर्जवहन्तिरमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन । दुग्धेनाप्यूर्जकरण माचारात् । केचिन्मते नीराजनम् । उत्तानं पात्रं कृत्वा ॥ पितरः स्वर्गलोके प्रस्थिता भवन्तु । सव्येन दक्षिणाम् कल्पः । अद्येह अमुक गोत्रस्य । अस्मत्पितुः अमुक शर्मणो वसु स्वरूपस्य । अक्षय तृप्ति प्राप्त्यर्थं कृतस्यास्य । साम्वत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धस्य । साङ्गता सिध्यर्थं न्यूनातिरिक्त परिपूर्त्यर्थं इदं रजतं वा

अमुक गोत्रायाः ऽ अस्मन्मातुः अमुकी देव्याः वसुस्वरूपायाः ॥ अमुक गोत्रयाः अस्मन्मातुः अमुकी देव्याः वसु स्वरूपायाः ॥ गोत्राभ्यः मन्मातृभ्यः अमुकीदेवीभ्यः वसुस्वरूपाभ्यः ।

रजतनिपत्रयिर्णीं इमां दक्षिणा श्राद्धभोक्तृ ब्राह्मणेभ्योऽन्येभ्योपि विभज्य दातुमुत्सृजे । ॐ तत्सन्न मम । सत्यानुष्ठान सम्पन्ना. सर्वदायज्ञ-बुद्धय पितृमातृपराश्चैव । सत्त्वस्मन् इज्ञनानरा , अक्षता., पान्तु स्वाशिषु भवन्तो ब्रवन्तु । स्वस्तीतिविप्रोक्ति । विशेष पूजाः । पितृभ्य स्वधायिभ्य इति । आयु प्रजाधनं विद्या । स्वर्गं मोक्षंसुखानिच । प्रयच्छन्ति तथा राज्य न्नृणां प्रीता पितामहा । आयु. पुत्रान् यशः स्वर्गं । कीर्तिंपुपुष्टिबलं श्रियम् । पशून् सुखं धनं धान्य प्राप्नुयां पितृपूजनात् । ततोपसव्येन । पिण्डमुत्थाप्य । सव्येनाघ्राय अपसव्येन । पात्रान्तरेनिधाय । पिण्डस्थाने शंखचक्रादिक लिखित्वा । गन्धपुष्पपात्रतै पूजयेत् । पिण्डस्थाने अन्नन्नम गन्ध अक्षता पुष्पाणि । सव्येन तत्र दीपं सस्थाप्य । षट् ऋतून् पूजयेत् । ॐ वसन्ताय नम । ॐ ग्रीष्माय नमः । ॐ वर्षाभ्यो नम । ॐ शरदे नम. । ॐ हेमन्ताय नमः । ॐ शिशिराय नम. । ततो हस्तौ संहतौ कृत्वा । पातु पितृगणा. सर्वे यस्मास्थानादुपागता । सर्वे ते हृष्टमनस सर्वान् कामान्ददन्तुमे । ये लोका दानशीलाना । येलोका पुण्य कर्मणाम् । सम्पूर्णान्सर्वभोगैस्तु । तान् व्रजध्वसुपुष्कलान् । इहास्माक शिवंशान्तिरायुरारोग्यसम्पद' । वृद्धि सन्तानवर्गस्य जायतामुत्तरोत्तरा । दीपस्थाने दीप । अपसव्येन । पिण्ड-स्थाने पिण्डा । यमक्वरम भुद्य । य कश्चित्पितृरूपेण । तिष्ठते परमेश्वर । सोऽयंश्राद्ध प्रदानेन तृप्तिं यायतु शाश्वतीम् । गयाया पितृ-रूपेण स्वयमेको जनार्दन । यं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्ष मुच्यते च ऋण-त्रयात् । पञ्चक्रोश गयाक्षेत्रं । क्रोशमेक गयाशिर । यत्रयत्रस्मरिष्यामि पितृणा दत्तमक्षयम्. शमीपत्रप्रमाणेन पिण्ड दद्याद्गयाशिरे, उद्धरेत्सप्त गोत्राणा कुलमेकोत्तर शतम् । पितु शत गुणंपुण्यं सहस्रं मातु रुच्यते । भगिन्या शतसाहस्रं, सोदर्य्ये दत्तमक्षयम् । सव्येन । अधदिने अपरमपि श्राद्धं पदहिरण्यं उदयास्तमयन्तं, यत्तं यद्वाक्ये तत्तद्गंङ्गाद्वारे अमृतो भूतते स्वधा । देवताभ्य पितृभ्यश्च, महायोगीभ्यएवच । नम स्वधायै । नित्य मेव नमो नम । त्रि पठित्वाम्म व्याधा दशार्णेषु । मृगा कालञ्जरेगिरौ चक्रवाका शरद्वीपे, हंसा सरसिमानसे । तेपि जाता कुरुक्षेत्रे, ब्राह्मणा वेदपारगा । प्रस्थिताद्दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ । श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वादेवगदाधरम् । मनसा चपितृन्ध्यात्वा । मानरं वा ततो-पसव्येन । अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितु अमुकशर्म्मणो । वसुरुद्रस्वरूप साम्यन्तमुद्दिश्यैकोद्दिष्टप्रसाद श्राद्धं निमृते । सव्यम् । इदंश्राद्धमया विधिहीनं-कालहीनं, वाक्यहीनं, श्रद्धाहीनं, दक्षिणाहीनं, भावनाहीनं यत्कृतं तद् सुकृतमस्तु । प्रमादात्मोभाद्व्याद्यात्कृतं तत् विष्णो प्रसाद ।

ब्राह्मण वचनात्सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम । अपसव्येन । कुशेन विप्रस्पर्शः । उत्तिष्ठेति ब्राह्मणमुत्थापयेत् । ॐ उत्तिष्ठब्राह्मणस्पते देवयं तत्वेमहे । उपयन्तुमरुतः स्वधानवऽइन्द्रप्रयश्शर्म वाचा । इति ब्राह्मण-मुत्थाप्य । स्थानान्तरे निधाय । अभिरम्यताम् । इतिविसर्जयेत् । अभि-रताम । इति प्रत्युक्तिः । सव्येन । कर्मपात्रं गृहीत्वा । आमावाजस्ये त्यनुव्रज्य । प्रदक्षिणी करणम् । ॐ आमाव्वाजस्यप्रसवो जगम्या । देमेद्यावा पृथिवीविश्वरूपे । आमागन्तांपितरा मातरा चामासोमोऽ-मृतत्वेनयरम्यात् इत्यनुव्रज्यप्रदक्षिणीकृत्वा नमस्कुर्य्यात् । कर्मपात्रं विप्रपा-दूर्मेनिनीत्वा । अपसव्येन । कुशाब्राह्मणस्यशिरवा मोचनंकृत्वा । नीवीं विसृज्य पाणिना दीपं निर्वाप्य सव्येनाचम्य । यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या । तपोयज्ञ क्रियादिषु न्यूनं संम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम् । ॐ अच्युताय नमः ३ कायेनवाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानु स्मृतिः स्वभावात् । करोमि यद्यत्सकलंपरस्मै नारायणेति समर्पयेत् । चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेवच हूयतेच पुनर्द्वाभ्यां तस्मैयज्ञात्मनेनमः । अद्यमे सफलं जन्म-अद्यमे सफलं तपः । अद्यमे गोत्रजाः सर्वे यातावोऽ तुमहादियम् । पत्रशाकादि दानेनक्लेशिता यूयमी दृशः ४ तत् क्लेशमिह संजातं विस्मृत्यक्षन्तुमर्हथ । सूक्तस्तोत्र जपं त्यक्त्वा । पिण्डाघ्राणञ्चदक्षि-णाम् । आह्वानंस्वागतंचार्घं बिना च परिवेषणम् । विसर्जनं सौमनस्य । माशिषं प्रार्थनं तथा । पितामन्यत् प्रकर्त्तव्यं प्राचीना वीतिनासदा ॥ इति एकोद्दिष्टश्राद्धविधिः ।

अथ पार्वणश्राद्धप्रयोगः ।

तत्रा पराह्णे स्नात्वा । मध्याह्न सङ्कल्पः । यवकुश जलान्यादाय । ॐ विष्णु ३ । नमः परमात्मने श्रीब्रह्मपुराण पुरुषोत्तमाय तत्सदिह पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्त्ते पुण्यक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेत वाराहनाम्निकल्पे कृतत्रेताद्वापरान्ते अष्टा-विंशति मे कलियुगे कलियुगस्य प्रथमचरणे वैवस्वतनाम मन्वन्तरेप-भ्रष्टानामसध्येऽमुक नामसंम्वत्सरे दक्षिणायने शरदृतौ (भाद्रश्चेत् वर्षा ऋतौ) आश्विनमासे कृष्णपक्षे यथानाम नक्षत्र योग करण मुहूर्त वारान्वितायामुक वारान्वितायांममुकपुण्यतिथौ । अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक-राशिऽमुकशर्म्माऽहं । अपसव्यं कृत्वा तिलमोटकसहितं जलं गृहीत्वा । अमुक गोत्राणामस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानाममुकामुक शर्मणां-सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामक्षय्यतृप्ति प्राप्तिकामनया पुरूरवो-

द्रवसंज्ञकविश्वेदेवपूर्वकं सकलपापक्षयार्थं पार्वणश्राद्ध विधिना ऽ मुकपार्वणश्राद्धाधिकार सिद्ध्यर्थमात्म शुद्ध्यर्थं ॥ मध्याह्नस्नानमहं करिष्ये ॥ ॐ कुरुष्वेतिप्रत्युक्तिः ॥ इति सङ्कल्प्य ॥ धौतवाससी परिधाय तर्प्पणं कृत्वा ॥ श्राद्ध देशेगत्वा । दीपं प्रज्वाल्याचम्य पवित्रपाणिर्भुत्वा । शुक्लां वरधर विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदन ध्याये त्सवविघ्नोपशान्तये । इति विष्णु सम्पूज्य हस्तौ संहतौकृत्वा । ॐ यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं स्तथान्ये । विश्वोद्गतेःकारण मोश्वरंवा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय । अभीप्सीतार्थसिद्ध्यर्थं पूज्यते + त्रिदशैरपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः । इति पुष्पाञ्जलिंदत्वा । ब्राह्मणान् तैलाभ्यङ्ग पूर्वकंमण्डलाद्बहिः संस्नाप्य प्रतिष्ठा । एतन्ते देवसवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणेतेन यज्ञ मवसेनयज्ञरसिन्तेन मानव मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ छं समिमं दधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्ततामो ३ म्प्रतिष्ट । ॐभूर्भुवस्वः । वैश्वदेविक कुशब्राह्मन सुप्रतिष्टितोभव । एवं पैतृक ब्राह्मणादीनामपि । ॐ एतन्त इति पठित्वा । ॐ भूर्भुवः । पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धि कुशब्रह्मन् सुप्रतिष्ठतो भव । कुशोसि कुशपुत्रोसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा । त्वय्यार्चिते सोर्चितोस्तु यस्याहं नामकीर्तये । एव मातामह ब्राह्मणस्यापि प्रतिष्ठा । मातामह सम्बन्धि कुशब्रह्मन् सुप्रतिष्ठितोभव । कुशोसिकुशपुत्रोसीति पठित्वा । यवान् गृहीत्वा अद्येत्यादि । अमुकसम्वत्सरे । दक्षिणायने । शरदृतौ अश्विन मासे । महालयापरपक्षेकन्यांगतेसवितरि । (भाद्रे सिंहस्थिते इतिपठेत्) अमुकतिथौ । अमुकगोत्राऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां । अमुकगोत्राऽस्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां । पुरूरवो माद्रवसंज्ञकानां । विश्वपान्देवानां । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे । वैश्वदेविक क्षणे । कुशब्रह्मन् त्वं मया निमन्त्रितः निमन्त्रितोऽस्मीति प्रत्युक्तिः । हस्तौ संहतौकृत्वा अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः । भवितव्य भवद्भिश्च मयाच श्राद्धकारिणा । सर्वायास विनिर्मुक्तैः कामक्रोध विवर्जितैः । भवितव्यं भवद्भिर्नोद्यतने श्राद्धकर्मणि आगतंवः सुस्वागतम् । एतद्वः पाद्यमस्तु । यत्फलं कपिलादाने कार्त्तिक्यां ज्येष्टपुष्करे । तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ विप्राणाम्पादपूजने । ततोपसव्येन । तिलान् गृहीत्वा । अद्येद अमुक सम्वत्सरे दक्षिणायने शरदृतावाश्विने मासि । महालयापरपक्षे । कन्यांगते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्राणां । अस्मत्पितृ पितामहप्रपितामहानां । अमुकामुक शर्म्मणां । सपत्निकानां बसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां । अद्य कर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे, पित्रा-

दित्रय श्राद्धकृत्ये कुशानक्षन् त्व मया निमन्त्रित निमन्त्रितोऽस्मि । इति प्रत्युक्ति । बहुत्वेतु भो ब्राह्मणा भवन्तो मया निमन्त्रिता निमन्त्रिता स्म । अक्रोधनैरिति पठित्वा । सव्येन । आगतव सुस्वागतम् । अपसव्येन । एतद्व पाद्यमस्तु । पत्फलमिति पठेत् । ततो मातामहाना । अपसव्यम् । अद्येहेत्यादि अमुक गोत्राणा । अस्म न्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमाता महाना । अमुकामुक शर्मणा सपत्निकाना । वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणा । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे । मातामहादित्रय श्राद्धकृत्ये । कुश-ब्रह्मन् त्वमया निमन्त्रित ॥ निमन्त्रितोऽस्मि । इति प्रयुक्ति ॥ अक्रो-धनैरिति पठित्वा । [illegible]येन । आगंतव सुस्वागतम् । अपसव्येन । एतद्व पाद्यमस्तु । यत्फलमिति पठेत् । सव्येन पादार्घं सपाद्यगन्धपुष्पाक्ष तादि तूष्णीन्निक्षिप्य । पादार्घपात्र गृहीत्वा । अद्येह अमुक सम्वत्सरे । अमुकायने । अमुकर्त्तौ । अमुकमास । अमुकपक्षे । अमुक तिथौ । अमुक गोत्राऽस्मत्पित्रा दित्रय श्राद्धसम्बन्धिन । अमुकगोत्राऽस्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिन । पुरूरवो मार्द्रव सञ्ज्ञक विश्वेदेवा + अद्यकर्त्तव्ये अमुक पार्वणश्राद्धे । वैश्वदेविक ब्रह्मन्नेपत्त पादार्घोऽस्तु । तत पैतृक-कर्म । अपसव्येन । पादार्घं सपाद्य । हस्ते गृहीत्वा । अद्येह अमुक सम्वत्सरे दक्षिणायने । शरदृतौवाश्विने मासे । महालयापरपक्षे । कन्या-गते सवितरि । अमुक तिथौ । अमुक गोत्रा अस्मत्पितृ पितामहप्रपिता मह । अमुकामुक शर्म्माण सपत्निका । वसुरुद्रादित्यस्वरूपा । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धि कुशब्रह्मन्नेपते पादार्घोऽस्तु । अद्येह । अमुक सम्वत्सरे । दक्षिणायने । शरदृतौ चाश्विने मासे । महालया परपक्षे कन्यागते । सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्रा । अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा । अमुकामुक शर्म्माणा सपत्निका । वसुरुद्रा दित्य स्वरूपा । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे । मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धि कुशब्रह्मन्नेपते पादार्घोऽस्तु । पादार्घदाना चमनम् । सव्येन । स्वयमाचम्य । विश्वेदेवा नाचामयेत् । अपसव्येन । पितृब्राह्मण मातामह ब्राह्मणानाचामयेत् । सव्येन । श्राद्ध देशोपवेशनम् । ब्रह्मन्नुत्तिष्ट । अत्रोपविश्यतामिति । प्राङ्मुख । वैश्वदेविक ब्राह्मणम् । अपसव्येन । उदङ्मुख । पित्रादि ब्राह्मणेनुपवेशयेत् सव्येन । तत कर्मपात्रपूरणम् । भूमिं स्पृशेत् । भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ꣳ ह पृथिवीं माहि ꣳ सी । भूमौ गन्धाक्षतादिभिः लिखित्वा । आसन आसने पात्रम् । पात्रे

+ क्वचित् पादार्घे स्नानमिच्छन्ति ।

पवित्रम् पवित्रेस्थोवैष्णव्यौ० ॥ शन्नोदेवीरितिजलम् । शन्नोदेवीरभिष्टयऽ आपो० । यवोसि यवयास्म द्वेषोयवया राती दिवेत्वान्तरिक्षा यत्त्वापृथिव्यैस्त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि । इति यवान्क्षिपेत् । तिलोसि सोम दैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिःपृक्तः स्वधया पितृल्लोकान्प्रीणाहिनः स्वाहा । गन्धपुष्पाक्षतादि तूष्णीं निक्षिप्य । कर्मपात्रं सुसम्पन्नमस्तु । अस्तु सुसम्पन्नम् । तेन जलेनात्मान सम्प्रोक्ष्य । श्राद्धसामग्रीश्च सम्प्रोक्ष्य । प्राणायामं विधाय । पुण्डरीकाक्षाय नमः ३ । ॐ अपवित्रः पवि० । हस्तौ संहतौ कृत्वा । देवताभ्यः पितृभ्यश्च । महायोगीभ्य एवच । नमः स्वहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः । इति त्रिः पठित्वा ÷ सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालं जरे गिरौ चक्रवाकाः सरद्वीपेहंसाः सरसि मानसे तेपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रास्थिता दीर्घ मध्वानं यूयं किमवसीदथ । श्राद्धकाले गयांध्यात्वा ध्यात्वादेवंगदाधरम् । मनसा च पितृन्ध्यात्वा । ततोपसव्येन । अद्येत्याद्युल्लिख्य । अमुक गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां । अमुकामुक शर्माणां सपत्नीकानां वसुरुद्रा दित्यस्वरूपाणां । तथाऽमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां । अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां । अक्षयतृप्ति प्राप्त्यर्थं पुरूरवो मार्द्र व सञ्ज्ञक विश्वेदेव पूर्वकम् । अमुक पार्वणश्राद्धं समारभे । सव्येन । पञ्चक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गयाशिरः । अनन्त गर्भिणं सार्धं क्रोशं द्विदल मैवच, प्रादेशमात्र विज्ञेयं पवित्रं यत्रकुत्रचित् । सप्तव्याधा दशार्णेष्विति पठनेव्यऽपसव्यमस्ति कुत्र चित् । यत्रयत्र स्मरिष्यामि । पितॄणां दत्तमक्षयम् । ततोऽपसव्येन । तिलमोटकं गृहीत्वा । वाम कट्याम् । आरोपयेत् ॐ सोमस्य नीविरसिविष्णोः शर्मासि शर्म्म यजमानस्येन्द्रियस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि । इति नीवीं बध्वा ततो दिग्बंधनम् । मोटकानगृहीत्वा । अग्निष्वाताः पितृगणाः प्राचींरक्षन्तु मे दिशम् । तथा बर्हिषदः पान्तु यामीये पितरस्तथा । प्रतीचीं माज्यपापान्तु । ऊदीचीमपि सोमपाः । विदिशश्च गणा- सर्वेरक्षन्तूर्द्ध मधोपिवा । रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः, सर्वतश्चाधिपस्तेषां, यमोरक्षां करोतुमे । तिलारक्षन्तु दितिजान्दर्भारक्षन्तु गक्षसान । पंक्तिं वैश्रोत्रियोरक्षेदतिथिः सर्वरक्षकः । अत ऊर्द्धं च कोणेषु हविष्यं तरच सर्वदा । ततः सव्येन । सायान्कुशान् गृहीत्वा । कर्मपात्रयं जलमभि लोडयेत् । ॐ यद्देवादेवहेडनं देवासःचकमाव्ययम् । अग्निर्म्मा तस्मादेन सो विश्वान्मुञ्चत्व ꣳ हस. । यदिदिवायदि नैना ꣳ सिचकृमाव्ययम् । व्वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मु० चत्व ꣳ हस. । यदिजायदप्रदिश्व मऽएना ꣳ सिचकृमा व्वयम् । सूर्यो

मातस्मा देनसो विश्वान्मुच्चत्वा ७ हसः । गायत्र्याच । ततो दर्भतिल युतम् । तज्जलं दिग्बन्धे । सव्यमस्ति । एकेवाम्पुस्तके ।) गृहीत्वा । पाकविधानमुत्ताय्र्यं । शूद्रादि बृष्टिदूपिन् पाकपूतोस्तु श्राद्धयोग्यो भवतु । इति गायत्र्यान्न सम्प्रोक्ष्य । अथ प्रतिज्ञा । यवकुश जलान्यादाय । ॐ विष्णुः ३ नमः परमात्मने श्रीपुराण पुरुषोत्तमाय । अत्र पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भरतखण्डे । आर्य्यावर्तैकदेशान्तर्गते मध्ये । अमुकनामसंम्वत्सरे । दक्षिणायने शरदृतौ (श्राद्धेन वर्षा ऋतौ ।) आश्विन मासे । महालया परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्रोत्पन्नः । अमुक राशिः । अमुक शर्म्माहं । अपसव्यम् । तिलमोटकञ्चगृहीत्वा । अमुक-गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां । अमुकामुक शर्म्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां । तथामुकगोत्राणां । अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमात महानां अमुकामुक शर्म्माणां सपत्निकानां । वसु-रुद्रादित्य स्वरूपाणां । अक्षय तृप्तिकामनया पुरुरवो मार्द्रव संज्ञक विश्वेदेव पूर्वकं अर्घपिण्डसहित पक्वान्नेन पावणश्राद्ध विधिनामुक-पार्वणश्राद्धं करिष्ये । ॐ कुरुष्व इति प्रत्युक्तिः । ततः सव्येनासनम् । ऋजु कुशद्वय यवानादाय । अद्येहेत्येयादि । अमुक नामसम्वत्सरे । दक्षिणायने शरदृतौ आश्विन्य मासे महालयापरपक्षे । कन्यांगते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्राऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिना । तथामुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां पुरुरवो मार्द्रवसंज्ञ-कानां । विश्वेषां देवानां इदमासनमस्तु । ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनमा-स्यताम् आसामहे । ततोपसव्येन तिलमो टकं गृहीत्वा । पैतृकं कर्म । अद्येहेत्यादि । अमुक नाम सम्वत्सरे । दक्षिणायने । शरद ऋतौ आश्विन मासे । महा लयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि अमुक तिथौ । अमुक गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां । अमुकामुकशर्मणां । सपत्निकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां । अमुकपार्वणश्राद्धे पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिकुशासनं । इदमासनमस्तु । सव्येन । भूर्भुव.स्वः इदमासन मास्यताम् । आसे । अपसव्यम् । पुनस्तिलमोटकम् गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां । अमुकामुक शर्म्माणां । सपत्निकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां । अमुक पार्वण-श्राद्धे । मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धि कुशासनं । इदमासनमस्तु । सव्येन भूर्भुवः स्वः इदमासन मास्यताम् । आसे ततः आवाहनम् । सव्य विधाय । कुशद्वययवान गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्रा स्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः तथामुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः पुरुरवो मार्द्रव संज्ञकान्विश्वान्देवानहमावाहयिष्ये ।

ॐ आवाहय इति प्रत्युक्तिः। ॐ विश्वदेवास ऽ आगत शृणुताम् ऽ इम ध्वं हवम्। एदंर्व्वर्हिन्निषीदत। इत्यावाह्य प्रदक्षिणं यवान विकीर्य। ॐ व्विश्वेदेवाः शृणुतेम ध्वं हवम्मे येऽअन्तरिक्षे य ऽ उपविष्ठ। येऽअग्निजिह्वाऽ उतवा यजत्राऽ आसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयध्वम्। आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवामहाबलाः। ये यत्र विहिता श्राद्धे सावधाना भवन्तुते ॐ आगच्छत। ततोपसव्येन पितॄनावाहयेत्। तिलमोटकं गृहीत्वा। अद्येह। शरद् ऋतौ। आश्विनमासे महालयापरपक्षे कन्यां गते सवितरि। अमुकतिथौ। अमुक गोत्रान्। अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुका अमुकशर्म्मणः सपत्निका नावसुरुद्रादित्य स्वरुपान् पितॄन्। आवाहयिष्ये। ॐ आवाहय। ॐ उसन्तस्त्वा निधि मह्य शंतः समिधीमहि। उशन्तु शतऽआवह पितॄनूहविषेऽअत्तवे। इत्यावाह्यऽ प्रदक्षिण तिलान् विकीर्य-आयन्तुनः पितरः सोम्या सोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोफिब्रुन्तुतेव वन्त्वस्मान्। ये मया निमन्त्रिताः पूर्वं पितरः पितृपक्षगाः। आश्रित्य पितृ कार्येषु सावधाना भवन्तुते। आगच्छन्तु। इति जपेत्। मातामहानावाहयेत्। अपसव्येन। तिलमाटकं गृहीत्वा। अद्येह। शरदऋतौ। आश्विनमासे महालया परपक्षे। कन्यांगते सवितरि अमुकतिथौ। अमुकगोत्रान्। अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहान्। अमुकामुक शर्म्मणः सपत्निकान्वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणाम् मातामहानावाहयिष्ये। ॐ आवाहय। उसंतस्त्वेत्य नया वाह्याऽप्रदक्षिणं। तिलान् विकीर्य। आयन्तुनः इति जपेत्। आगच्छन्तु। ततः सव्येन। हस्तार्घस्थापनम्। देवाम द्वावेकवा। ततो भूमौ शंखचक्रादिकं लिखित्वा। आसनम् आसने पात्रं। पात्रे पवित्रम्। पवित्रेस्थौ व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसव ऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। इति पवित्रम् निक्षिपेत्। शन्नोदेवीरभिष्ठयऽ आपोभवन्तु

(यमः) समूलस्तु भवेद्दर्भः पितृणा श्राद्धकर्मणि। मूलेत लोकाञ्जयति शक्रस्यतु महात्मनः। (व्यासः) तर्पणादीनि कार्याणि पितृणा यानि कानिच तानिस्युद्दिगुणैण दर्भेस्सप्तपत्रोवपेयतः। अथ वर्ज्याः कुशाः श्राद्ध प्रदीपे। पिण्डार्थां स्तरखेच तर्पणविधौ त्याजानिवृत्ताः कुशाःशद्गर्भाः अग्निघृताश्च पथियेमुक्ता मलोत्सर्जने। नो वो ब्रह्मगुणो भयास्थित परे दत्वास्तया वन्दिना इति वर्ज्याः। दर्भादीन्स्वयमा हरेत्क्रयलानीते स्तुकार्या क्रिया। कुपाभावेकाशः। अन्योपिसन्ति विस्तरभयान्न लिखितम्।

पीतये । शन्योरभिश्रवन्तुनः । इति जलम् । यवोसीति यवान् गन्धपुष्पाक्षतादि प्रणवेन तूष्णीं वा यथाधिकार निक्षिप्य । एवं रीत्या त्रीणि पित्रार्घ्य पात्राणि । आसनं । आसने पात्रं पात्रं पवित्रम् । पवित्रेस्थोव्वैष्णव्याविति । शन्नोदेवीरिति जलम् । तिलोसीति तिलान् । गन्धं पुष्पाक्षतादि प्रणवेन तूष्णीं वा निक्षिप्य । ततः भो ब्राह्मण देवार्घ पात्रपरिपूर्णेस्ताम् । इति प्रत्युक्तिः । एकार्घ्ये देवार्घ्य पात्रं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । ॐ एवं रीत्या पित्रादीनामपि । पित्रर्घ पात्राणि परिपूर्णानिसन्तु । सन्तु यथा माता मह्यार्घ्य पात्राणि परिपूर्णानि सन्तु । २ ततः सव्यंविधाय । पवित्रं गृहीत्वा । विप्रहस्ते समर्प्य । सपवित्रेपु हस्तेपु ॐ यादिव्याऽ आपःपयसा संवभूवुर्याऽ अन्तरिक्षाऽ उत पार्थि वीर्याः हिरण्य वर्णा यज्ञियास्तानऽ आपः शिवाः शंथं स्योनाः सुहवा भवन्तु । अद्येह अमुक सम्वत्सरे । दक्षिणायने । शरद् ऋतौ आश्विनमासे महालया परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुक तिथौ अमुक गोत्राऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः । तथामुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनःपुरूर वार्द्रव सञ्ज्ञकविश्वेदेवाः ⊛ अमुक पार्वणश्राद्धे एषवो हस्तार्घोऽस्तु । पुनः प्रत्यर्घंच । पैतृक कर्म । सव्येन । सपवित्रेपु हस्तेपु यादिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । अर्घ्यपात्रं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्र । अस्मत्पितः अमुक शर्म्मन् सपत्निक वसुस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे एपते हस्तार्घोऽस्तु सव्येन । पुनः प्रत्यर्घंच । पुनः सपवित्रेपु हस्तेपु या दिव्या इति पठित्वा । अपसव्यं विधाय, अर्घ्यपात्रं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्रः । अस्मत्पितामह । अमुक शर्मन् सपत्निक रुद्र स्वरूप । अमुक पार्वण श्राद्धे । एषते हस्तार्घोऽस्तु । सव्येन पुनः प्रत्यर्घंच । पुनः सपवित्रेपु या दिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । अर्घ्यपात्र गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्र । अस्मत्प्रपितामह । अमुक शर्मन् सपत्निक । आदित्य स्वरूपं । अमुक पार्वणश्राद्धे । एपते हस्तार्घोऽस्तु । सव्येन पुनः प्रत्यर्घंच । सपवित्रेपु हस्तेपु या दिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । हस्तार्घपात्र गृहीत्वा ।

अथ विश्वेदेवाःतत्र शातवृहस्पतिः । इष्ट श्राद्धे ऋतु दक्षौ सत्यवसू काम्ये । नैमित्तिके कालकामौ धुरिलोचनौ । पुरूरवो मार्द्रवश्च पार्वणे समुदाहृता । यत्र यतेषा नाम न ज्ञायते । तत्र श्लोक उच्चारणीयः । आगच्छन्त्विति ।

⊛ विश्वेदेव विषय शंख बृहस्पति वचनं पूर्वमुक्तं तत्र पुरूरवो मार्द्रवश्चेति पाठे पुरूरवमाद्रवश्चेति वैदिकग्रन्थ ।

अद्येह अमुक गोत्र । अस्मन् मातामह । अमुक शर्मन् सपत्निक वसुस्वरूप । अमुक पार्वणश्राद्धे एपते हस्तार्घोऽस्तु । सव्येन । पुनः प्रत्यर्घंच । सपवित्रेषु हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अप-सव्येन । हस्तार्घपात्रं गृहीत्वा अद्येह । अमुक गोत्रः अस्म-न्मातामह । अमुक शर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप । अमुक पार्वणश्राद्धे एपत हस्तार्घोऽस्तु । सव्येन । पुनः प्रत्यर्घंच सपवित्रेषु हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । हस्तार्घ पात्रं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्र । अस्मद्वृद्धप्रमातामह अमुक शर्मन् सपत्निक । आदित्यस्वरूप । अमुक पार्वण श्राद्धे एपते हस्तार्घोऽस्तु । सव्येन । पुनःप्रत्यर्घंच । ततः सर्वान संश्रवान् प्रथमे पितृ * पात्रे समवनीय । अर्घोदकं श्रिय दयारपुत्रपौत्रादि वर्द्धनम् । यस्मोत्तस्माच्छ्रियं मेस्या दिह लोके परत्रच । इति मूर्द्धिनि अभिषिच्य । अपसव्येन । पितृधामभागे कुशानास्तीर्य । तदुपरि सपवित्रं पित्रर्घपात्रं मातामहार्घपात्रंच पितृभ्यः स्थान मसीति न्युब्जं कृत्वा । तदुपरि स्वधावाचनीयान् सपवित्राम त्रीन्कुशान्दक्षिणाग्रान् संस्थाप्य । आचारत् । ॐ शुन्धन्तांल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदन मसीति संप्रोक्ष्य । पितृभ्यः स्वधायिभ्य इतिपूजनम् । ततोङ्गुष्ठ पवित्रे त्यक्त्वा सव्येन पूजनं । विश्वेषां देवानाम् अर्चनवि-धावत्रं नमः । इति विश्वेदेव ब्राह्मणहस्ते जलं दत्वा । नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्र पादाक्षिसिरोरुबाहवे । सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटि युगधारिणे नमः । अनेन गन्धादिभिःपूजनम् । गन्धोऽस्तु स्वाहा । यवाः पुष्पाणि । तुलसीदलानि अपसव्येन । पितृणाम् । संविन्धकुशविप्रस्य । अर्चनविधावत्रंनमः । ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधा-यिभ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरो मीमदन्तपितरो वीतृपन्त पितरः पितरः शुंधध्वम् । अनेनपितृणाम् पूजनम् । नमो वः पितरो रसायेति माताम-

---

* अत्र श्राद्ध माध्यम् । प्रथमे पात्रे संश्रवान् समवनीय । पात्रं न्युब्जं कृत्य पितृभ्यः स्थानं मसीति पात्रेण तत प्रथमं पात्रं न्युब्जं करोति भूमौ । तिल कुशान्दक्षिण मूलान्निक्षिप्य तेषां मुपरिन्यब्ज मधोमुखं करोति गन्ध्या-दिभिः पूजयेदित्युक्तः वैश्वदैविक पात्र संश्रवा अपि प्रथमे पात्रे निक्षिप्यन्ते-एवं मातामह प्रथम पात्रेऽपि संश्रवान् समवनीय न्युब्जं कृत्वा वक्ष्यमाणं कुर्यात । अत्र प्रथम पात्रं दैवरात्र माहुः । तदुक्तम् । पितृपात्रं तदुत्तानं कृत्वा । विप्रान्विसर्जयदिति । आवृतास तत्रतिष्ठति पितरः शौनकौ ब्रवीत । सं श्रव शब्देनार्घ पात्रलग्नापावयवाऽभिधीयन्त नहस्तदन्तच्युताः ।

हानां श्राद्धसम्बन्धि कुशविप्रार्चनविधावत्र नमः शेषं पूर्ववत् । गन्धास्तु स्वधा । अक्षताः पुष्पाणि तुलसीदलानि । धूप दीपौ पुनः पवित्रकरे कृत्वा । सव्येन । यवकुशान जलञ्च गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्रास्मत्पित्रादित्रय श्राद्ध सम्बधिनः तथाऽमुक गोतास्मन्मातामहादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः । अमुक पार्वणश्राद्धे । पुरूरवार्द्रव संज्ञकाः विश्वेदेवाऽर्चनविधाविमानि गन्धाक्षत पुष्पतुलसीदल धूपदीपवासोभूषणादीनि मद्दत्तानि यथा विभागं वः स्वाहा । विश्वेदेवसम्बन्धि कुशविप्रार्चन विधेः सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । ततोपसव्येन । तिलामोदक युतं जलं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्राः । अस्मत्पितृ पितामह प्रपिता महाः । अमुकामुक शर्मणः सपत्निका वसु-रुद्रादित्य स्वरूपाः । अमुकपार्वणश्राद्धे । कुशविप्रार्चन विधा-विमानि जलगन्धाक्षतपुष्पतुलसीदलधूपदीपवासोभूषणादीनि मद्दत्तानि यथा विभागशः विप्रार्चन विधिस्सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परि-पूर्णम् । गन्धान्ते द्विजानाचमनम् । सव्येन स्वयमाचम्य । विश्वेदेवब्राह्मण-माचामयेत् । अपसव्येन-पित्रादिब्राह्मणा माचामयेत मातामहादि-ब्राह्मणानप्याचामयेत् । सव्येन । अच्युतस्मरणम् । ततः यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यम्परिरक्षति । एवंमण्डलमस्माकं सर्वभूतानि रक्षतु । इति विश्वेदेवब्राह्मणसमीपे । अपसव्येन । पितृमातामहब्राह्मणसमीपे भस्मना मण्डले कार्य्ये । भस्मना चतुष्कोणमण्डलानि विधाय * तेषामुपरि भोजनपात्राणि संस्थाप्य । पितृद्विजसमीपे जलपात्रं संस्थाप्य । घृताक्त-मन्नं विहितमादाय मद्धत्य सम्प्रोक्ष्य पृच्छति । भो ब्राह्मणा युष्मदनुज्ञया अग्नौ, अग्नौ करणमहं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । विप्रपाणौ जलेवाग्नौकरण-होमः । ÷ अपहोमः ÷ अपसव्येन । तिलमोदकयुतमन्नं गृहीत्वा । ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा । इदमग्नये कव्य वाहनाय । ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा । इदं सोमाय पितृमते । किञ्चिद्धुतशेषं पित्रादि-ब्राह्मणेभ्यो दत्त्वा । शेषं पिण्डार्थे स्थापयेत् । ततः सव्येन । परिवेषणाम् ।

---

* अग्नौकरणहोमश्च कर्त्तव्य उपवीतिना । अपसव्येन वा कार्यो दक्षिणाभिमुखेन च । इति छन्दोगपरिशिष्टे । कात्यायनानां त्वपसव्येनैव पितृ-पितृयज्ञ वद्धु भवेदिति सर्वातिदेशात् । सव्य तु छन्दोगपरम् । छन्दोगा शुद्धुः सव्येनापसव्येन बाहुवः । इति कल्पतरुरत्नाकरयोरुक्तेः । अग्नौपूर्वं च पश्चाद् मासतृप्तिरिरिति(?) । मिलितेन रहितं कृतमप्यकृतमुच्यते । चतुष्कोणं द्विजाग्रस्य त्रिकोणं क्षत्रियस्य तु । मण्डलाकृतिर्वैश्यस्य शूद्रस्याभ्युक्षणं स्मृतम् । इति मनुः ।

प्रथमं विष्णवे नैवेद्यम् । ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत पद्भ्यांम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ ॥ अकल्पयन । विष्णो साङ्गसपरिवार सवाहन इदं अमृतस्वरूपन्नैवेद्यं गृहाण स्वाहा इति निवेद्य । ततो वैश्वदैविकपूर्वकं सुशीतजलसहितो-ष्णान्न परिवेषणम् । रजतादि पात्रेपुकुर्य्यात् गायत्र्या अन्नंसम्प्रोक्ष्य । अन्वाचितदक्षजानुः स्वस्तिकाकृतिनाऽधोमुखेन वामोपरि स्थितेन दक्षि-णहस्तेन ॐ मधु३ इति पात्रमालम्य जपति । पृथिवी तेपात्रं द्यौर-पिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमितेऽ मृतं जुहोमि । विष्णो हव्यꣳरक्ष । इति प्रादक्षिण्येन यवान् विकार्य्य । अपहताऽअसुरा रक्षाꣳसिवेदिषदः अङ्गुष्ठग्रहणम् । ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधान्निदधे पदम् । समूढमस्य-पाꣳसुरे । इदमन्नम् । इमा आपः इदमाज्यम् । इदं शाकादिकं सर्वं हविः । अद्येह अमुकसम्वत्सरे । दक्षिणायने शरद ऋतौ अश्वि-नमासे महालयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक-गोत्रास्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिम्यः तत अमुगोत्रा अस्मन्मातामहा-दित्रयश्राद्धसम्बन्धिम्यः पुरूरवार्द्रवसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यांऽस्मिन् अमुकपार्वणश्राद्ध इदमन्नं इमा आपः इदमाज्यं इदं शाकाः दिकं यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं ब्राह्मणस्यातृप्तिपर्यन्तं अमृतस्वरूपं मद्दत्तं यथाविभाग वः स्वाहा । इति भूमौ जलं प्रदद्यात् । ब्राह्मणहस्तदाने प्रत्यवायः । ॐ ये देवासो दिव्यैकादशस्थपृथिव्या मद्ध्ये कादशस्थ । अपसु क्षितौ महिनैकादशस्थ तेदेवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् । इति पठित्वा । विप्रहस्ते जलमर्पयेत् नमो देवेभ्यः । तथा गायत्र्याऽन्नं सम्प्रोक्ष्य । अपसव्यम् कृत्वा । अन्वाचितवामजानुः । स्वस्तिकाकृतिना ऊर्ध्वमुखेन दक्षिणोपरिस्थितेन वामहस्तेन मधु३ । इति पात्रमालम्य जपति पृथ्वीते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते । अमृतं जुहोमि । विष्णो कव्यꣳ रक्ष । अप्रादक्षिण्येन तिलान्विकीर्य । अपहताऽअसुरा-रक्षाꣳसिल्वेदिषदः । अङ्गुष्ठग्रहणम् इदं विष्णुरिति पठित्वा । इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्य । इद शाकादिकं सर्वं कव्यम् । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्पितृपितामह प्रपितामहेभ्यः । अमुकामुकशर्मभ्यः सपत्निकेभ्यो वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यं । इदं शाकादिकं यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं

ॐदैवे नुचानहस्ताभ्या उत्तानाभ्यान्तु पैतृके । दवे सव्यमपः कृत्वा अपसव्यन्तु-पैतृकेइति वचनात् ॥—॥ पृथ्वीपात्रमिति पात्राभिमन्त्रणम् । कृत्वेदं विष्णुरि-त्यन्ने द्विजाङ्गुष्टं निवेशयेत् । (स्मृतिसङ्ग्रहे) २) १) या,

ब्राह्मणस्यातृप्तिपर्यन्तं ब्राह्मणेभ्य आतृप्तिदास्यमानमन्नंचअमृत स्वरूपं मद्दत्तं यथाविभागं वः स्वधा । ॐये चेह पितरो येचनेहयांश्चविद्म या ३ ॥ऽ उचनप्रविद्मत्वं व्वेत्थ यतिते जातवेदस्वधाभिर्यज्ञ ᳪ सुकृतं जुषस्व । इति पितृब्राह्मणहस्ते । आपोशानं, दत्वा॰ पुनः मातामहपात्रे । उत्तानाभ्यां पाणिभ्यां । मधु३ इति पात्रमालभ्य जपति । पृथिवी ते पात्रमिति । विष्णोकव्यंᳪ रक्ष । इति । आपादक्षिणेन तिलान्विकीर्य । अपहताऽअसुरा रक्षा ᳪ सि व्वेदिषदः अङ्गुष्टमहणं इदं विष्णुरिति पठित्वा । इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यं । इदं शाकादिकं सर्वं कव्यं । पुनः । तिलमोदकं जलञ्च गृहीत्वा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्यः । अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः । अमुकाऽमुक शर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यो वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यं । इदंशाकादिकं यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं ब्राह्मणस्यातृप्तिपर्यन्तं ब्राह्मणेभ्य आतृप्तिदास्य मानमन्नं च । अमृतस्वरूपं मद्दत्तं यथाविभागं वः स्वधा । येचेह पितर इति पठित्वा इति मातामहब्राह्मणहस्ते । अपोशानं दत्वा यथासुखेन भुङ्ध्वम् । इत्याज्ञां दद्यात् भुंज्महे । इति विप्रोक्तिः ततः सव्येन । प्रणवव्याहृतिपूर्वकं गायत्रीम्मधुमतीश्चऋक्त्रयं च पठेत् । ॐमधु ३। मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ᳪ रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमाँ २॥ऽ अस्तु सूर्य्यः । माध्वीर्गावो भवन्तुनः मधु ३ यथाशक्त्या पितृसूक्तं आशुः शिशान इत्यादि सप्तदशर्चां रुधिरसत्रादीनश्च्यसु विप्रेषु पठेत् तत तुलसीशर्करागव्यदुग्धाज्यमधुतिलगंगाजलयुतमन्नं ताम्रपात्रे कृत्वा । एकमग्रोदकं विष्णुनिवेदितमन्नमग्नौ करणान्नशेषमपि दत्वा । अपसव्येन । पिण्डान्निर्मा .य । विकिरदानम् ॐ नेत्रर्त्यान्दिशि कुशाग्रं भूमौ क्षिप्त्वा । आसनम् । असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम् । उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम् । इत्यासनं दत्त्वा ।

आपोशानं वामभागे भुवापानसमाचरेत् । दक्षभागे ... पः कुर्यात्सोमपानफलं लभेत् । + (प्रचेताः) आपोशानप्रदोषाग सावित्री त्रिर्जपेदथ । मधुवाता इति त्र्यचं मध्वित्येवत् त्रिकन्तथा । + प्रचेताः भुञ्जानेषु ... विप्रेषु स्वगस्तुप्रभावमन्त्रम् । जपेदभिमुखो भूत्वा विष्णुश्चैव विशेषतः । इत्त मर्गीनिः । श्राद्धमलकमात्रांस्तु पिण्डान् कुर्यात पार्वणे । पिण्डोपपाते प्रतिमावर मूलक दर्भे पिण्डे च पिरसी इने पुनः पिण्डा प्रदातव्या न्येन पार्वेन स्पदस्वात् ।

सजलतिलमोटकयुतमन्नं विकिरेत् । अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् । येषान्न पचते माता येषान्न पचते पिता । उच्छिष्टं ये च कांक्षन्ति तेभ्योऽन्नंदत्तमक्षयम् । उच्छिष्ट भागधेयेभ्य नमः । इति गन्धाक्षतपुष्पैः पूजमेन । अङ्गुष्ट-पवित्रे त्यक्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षल्य । सव्येनाचम्य । ततः श्राद्धदेशमागतय । श्रन्ये अङ्गुष्ट पवित्रे करे कृत्वाचमेत् । अपसव्येन । पितृपूर्वं । सकृत्सकृदापो दत्त्वा । सव्येन । विश्वेदेवब्राह्मणहस्तोऽपि चुलुकदानम् । पूर्वमद्गायत्रीं । मधुमतीं मध्विति च जपित्वा भो ब्राह्मणा अस्मिन्पाकमध्ये यत्किञ्चिद्रोचते तत्प्रतिगृह्यताम् । तृप्ताः स्थः । तृप्ताःस्मः । शेषान्नेन किं क्रियताम् इष्टैः सभुज्यताम् । अपसव्येन पिण्डदानार्थं वेदिकालेपनं गोमयेन । अपहता इति रेखाकरणं कुशेन + ॐअपहतोऽसुरा रक्षा ꣳसि वेदिषदः । उल्मुकधारणम् । ॐ येरूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽसुराःसन्तः स्वधया चरन्ति । परा पुरा निपुरो ये भरंत्यग्निस्टॉल्लोकात्प्रणुदात् त्यस्मात् सतिलजलमोटकं गृहीत्वा । अद्येह । अमुकसम्वत्सरे । दक्षिणायने शरदृतौ आश्विन मासे । महालया परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रः अस्मत्पिता । अमुकशर्मन् । सपत्निक वसुस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे पिण्डासने अवनेनिक्ष्व । अद्येह । अमुकगोत्रः । अस्मत्पितामहः । अमुकशर्मन् सपत्निकरुद्रस्वरूपः । अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डासने अवने निक्ष्व । अद्येह । अमुकगोत्रः । अस्मत्प्रपितामह । अमुकशर्मन् सपत्निक आदित्यस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे पिण्डासने । अवनेनिक्ष्व । ततः । उपमूललूनकुशास्तरणम् ÷ । सव्येन । पद्स्मरणम् । ईशान विष्णुकमलासनकार्तिकेयवह्नत्रपार्करजनीशगणेश्वराणां क्रौंचामरेभ्यकलशोद्भवकाश्यपानां पादन्नमामि सततं पितृ-

---

* (क) ततश्चर्वाशनं पात्रे गृहीत्वा विविधं कुर्यः । तेषामुच्छेषणस्थाने विकिरं निक्षिपेद्भुवि । (कात्यायनः) विकिरोत्तर गायत्र्यादिजपं तृप्तिप्रश्नं चाह । (आश्वलायनः) स्फ्येन लेखमुल्लिखेत् । अपहता असुरा रक्षांसिवेदिषद इति । ब्राह्मणपुराणे विशेषः । निहन्मि सर्वयदमेध्यमंत्रहताश्च सर्वे । सुरदानवा मया । रक्षांसि यक्षाश्च पिशाचसङ्घा हवा मया यातुधानाश्च सर्वे । एतन्मन्त्रेण सुसंयतात्मा दर्भेण देवी विलिखेदिति । पिण्डपितृयज्ञे कात्यायनः) दक्षिणेनोल्लिखत्यपहता । इत्यपरेण वा । अमपेदाया दक्षिणात्वेन पुरस्ता करोति ये रूपाणीति । आश्वलायनः)

४ सदाच्छिन्नैरवस्तोर्येति ।

मुक्ति हेतो। गङ्गा गया गदाधरादीन् संस्मृत्य। गङ्गायै नमः। गदधराय नमः। कुरुक्षेत्राय नमः। ॐ श्री तीर्थराजाय प्रयागाय नमः। पितृस्वरूपं ध्यात्वा। भो ब्राह्मणा युष्मदनुज्ञया पिण्डप्रदानामहं करिष्ये। ॐ कुरुष्व। ततोऽपसव्येन। तिलमोदकयुतं सजलं पिंडं गृहीत्वा। वामजान्वाच्य। अद्येह। दक्षिणायने। शरदृतौ आश्विनमासे। महालयापरपक्षे। कन्या गते सवितरि। अमुकतिथौ अमुकगोत्रः। अस्मत्पितः। अमुकशर्मन् सपत्निक वसुस्वरूप। अमुकपार्वणश्राद्धे। एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो मद्दत्तस्तेऽस्तु। इयं भूमिर्गयातुल्या। इदमुदक गांगम्। गङ्गोदके ऽसति गङ्गाजल तुल्यं वा। अमुक गोत्राय। अस्मत्पित्रे। अमुकशर्मणे सपत्निकाय वसुस्वरूपाय। अद्य इ। अमुक गोत्र। अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप। अमुकपार्वणश्राद्धे। एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो मद्दत्तस्तेऽस्तु। इय भूमिर्गयातुल्या इदमुदक 'गाङ्ग' (गङ्गाजलतुल्यं) वा। अमुकगोत्राय। अस्मत्पितामहाय अमुकशर्मणे। सपत्निकाय। रुद्रस्वरूपाय। अद्येह अमुकगोत्र। अस्मत्प्रपितामह। अमुकशर्मन्। सपत्निक। आदित्यस्वरूप। अमुकपार्वणश्राद्धे। एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो मद्दत्तस्तेऽस्तु। इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदऽगाङ्ग (गङ्गाजलतुल्यम्) वा। अमुकगोत्राय। अस्मत्प्रपितामहाय। अमुकशर्मणे। सपत्निकाय। आदित्यस्वरूपाय। अद्येह। अमुकगोत्र। अस्मन्ममातामह। अमुकशर्मन्। सपत्निक वसुस्वरूप। अमुकपार्वणश्राद्धे। एषोऽन्नपिण्डोऽमृत स्वरूपो मद्दत्तस्तेऽस्तु। इय भूमिर्गयातुल्या इदमुदक गाङ्ग, (गङ्गाजलतुल्यम्) वा। अमुकगोत्राय अस्मन्मातामहाय। अमुकशर्मणे सपत्निकाय वसुस्वरूपाय अद्येह। अमुकगोत्र अस्मत्प्रमातामह। अमुकशर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप। अमुकपार्वणश्राद्धे। एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो मद्दत्तस्तेऽस्तु। इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदक गाङ्ग (गङ्गाजलतुल्य) वा। अमुकगोत्राय। अस्मत्प्रमातामहाय। अमुकशर्मणे सपत्निकाय रुद्र स्वरूपाय। अद्येह अमुकगोत्र। अस्मत् वृद्धप्रमातामहाय। अमुकशर्मणे सपत्निकाय। आदित्यस्वरूपाय। लेपभागिनामयं भागोऽस्तु। इति लेपभागं पिण्डपार्श्वे दद्यात्। प्रतिपिण्डं प्रतिभागं वा कुशाधारात्। पिण्डास्तरणकुशेषु करोन्मार्जनं कृत्वा हस्तप्रक्षालनम्। सव्येन।

× (दर्भास्तरणानन्तरमाह सुमन्तुः) अत्रनिवर्शं निस्त्वेति पुरुष पुरुषप्रति। त्रिस्त्रिरेकेन हस्तेन पिंदचौवावनेजनम्। कात्यायनेन वर्हिस्तरण तूष्णींमवनेजन-मुक्तम्। तत्र यथा शौचव्यवस्था।

पिण्डदानाचमनम् ❀ करे पुष्पाणि संगृह्य । उदङ्मुखेन । अपसव्येनात्र पितर इति जपः । ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभाग मा वृषायध्वम् । उदङ्मुखेनैव । सव्येन । मरुन्नियमनम् । ततः परावृत्य । अपसव्येन । अमीमदन्त पितरो यथा भागमावृषायीसत । पिण्डोपरि पुष्पं दत्वा । ततः प्रत्यवनेजनम् । अद्येह अमुकनाम सम्वत्सरे दक्षिणायने । शरद ऋतौ आश्विनमासे । कन्यागते सवितरि । महालयापरपक्षे । अमुकतिथौ । अमुकगोत्र । अस्मत्पितः अमुकशर्मन् सपत्निक वसुस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह अमुकगोत्र । अस्मत्पितामह । अमुकशर्मन् सपत्निक । रुद्रस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह अमुकगोत्र । अस्मत्प्रपितामह । अमुकशर्मन् सपत्निक । आदित्यस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह । अमुकगोत्र । अस्मन्मातामह । अमुकशर्मन् । सपत्निक वसुस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह अमुकगोत्र । अस्मत्प्रमातामह । अमुकशर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह । अमुकगोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह । अमुकशर्मन् सपत्निक । आदित्यस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । किंचिन्नीवीविस्रंसनम् । नमो वः इति षडञ्जलीकरणम् । ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नो वो गृहान्न पितरो दत्त सतो वः पितरोः मेतद्वः पितरो वासः ॥ सूत्रदानम् ❀ एतद्वः पितरो वास इति । ऊर्जकरणकर्म-पात्रोदकेन । ॐ ऊर्जं वहन्तिरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयेत मे पितॄन् । सव्येन । देवताभ्य इति त्रिर्जपेत् । भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया पिण्डार्चनमहं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । अपसव्येन । पिण्डार्था पिण्डार्चनं विधावत्रं नमः । गन्धास्तु स्वधा । अक्षताः ।

❀ मनु—पुष्पपिण्डा स्ततस्तां स्तुप्रयतो विधिपूर्वकम् ॥ तेषु दर्भेषु तं हस्तं विमृज्यालेपभागिना ❀ मनुः) आचम्योदक परावृत्य त्रिराचम्य शनैरसून् । षड्ऋतूंश्च नमस्कुर्यात् पितॄन् नेवचमन्त्रवित ।

❀ (श्राद्धचिन्तामणौ नाम) एतद्वः वास इति अरान् पृथक् पृथक् । अमुकामुकगोत्रे तत्तुभ्यं वासः पठेद्बुधः (ब्रह्म नाम) कौशेयं क्षौमकार्पासं दुकूलं महतं तथा श्राद्धे स्वेतानि यो दद्यात् कामनाप्नोति चोत्तमान् । (व्याम) गन्ध पुष्पाणि धूपश्च । दीपश्च विनिवेदयेत (देवश्च) दधियां सर्वभोगश्च । (मतिरिवब्रह्मपुराणेषु) ।

पुष्पाणि तुलसीदलानि । ॐ पितृभ्यः । स्वधायिभ्यः । स्वधानमः । पितामहेभ्यः ।। स्वधायिभ्यः । स्वधानमः । प्रपितामहेभ्यः । स्वधायिभ्यः स्वधानमः । अत्रपितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् । अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत । वस्त्रम् । धूपदीपौ नैवेद्यम् । ताम्बूलम् । भूषणञ्च समर्प्य—तिलमोदकं जलञ्च गृहीत्वा । अद्येह । अमुकगोत्राः । अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः । अमुकामुकशर्मणः । सपत्निकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः । तथामुकगोत्राः । अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः । अमुकामुकशर्माणः । सपत्निकाः । वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः । पिण्डार्चनविधाविमानि गन्धाक्षतपुष्पतुलसीदलवासोधूपदीपनैवेद्यताम्बूलभूषणानि तुलसीपत्राणि च मद्दत्तानि यथाविभाग वः स्वधाः । पिण्डार्चनविधेः सर्वं परिपूर्णमस्तु अस्तु परिपूर्णम् । सव्येन । पिण्डापभूमौ सुप्रोक्षितमस्तु । अस्तु सुप्रोक्षितम् । शिवा आपः सन्तु सन्तु । विप्रकरे । जलं अर्वा मध्ये स्थिता देवाः सर्वमस्तु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणस्य करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे । सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् । लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे । लक्ष्मीर्वसते सदागोष्ठे । सौमनस्य सदास्तु मे । अक्षताश्चारिष्टमन्तु । अक्षतञ्चास्तु मे नित्यं शान्तिपुष्टिकरं परम् । यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तुसदा मम । ततः कुशैः कर्मपात्रोदकेन मूर्द्धाभिषेकं कुर्यात् । ममकुले दीर्घमायुरस्तु । अस्तु शान्तिरस्तु । अस्तु पुष्टिरस्तु । अस्तु वृद्धिरस्तु । अस्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु । यत्पापं रोगः शोको दुःखं दारिद्र्यं । तत्प्रतिहतमस्तु । अमृताभिषेकोऽस्तु । ततोऽक्षय्योदकदानम् । अक्षय्यन्तु । विप्रकर एव * अपसव्येन तिलमोदकसहितं जल गृहीत्वा । अद्येह । अमुकसम्वत्सरे । दक्षिणायने । शरद ऋतौ । आश्विनमासे । महालयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रस्य । अस्मत्पितुः । अमुकशर्मणः । सपत्निस्य । वसुस्वरूपस्य । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यद्दत्तं तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् ।— अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्मत्पितामहस्य । अमुकशर्मणः सपत्निकस्य । रुद्रस्वरूपस्य । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यद्दत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यं । अद्येह । अमुकगोत्रस्य अस्मत्प्रपितामहस्य । अमुकशर्मणः । सपत्निकस्य । आदित्यस्वरूपस्य । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यद्दत्तंतदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् ।

---

* (वृद्ध मार्तण्ड) त्रिवृता नामगोत्रेण करे देयं तिलोदकम् । प्रत्येकं त्रिवृतोयेन अक्षय्यमिदमस्तीति ।

प्रद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्मन्मातामहस्य । अमुक शर्मणः । सपत्निकस्य वसुस्वरूपस्य । अमुक पार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यद्दत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्मत्प्रमातामहस्य । अमुकशर्मणः सपत्निकस्य । रुद्रस्वरूपस्य । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । मद्दत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् । अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्मद्वृद्धप्रमातामहस्य । अमुकामुकशर्मणः सपत्निकस्य । आदित्यस्वरूपस्य । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । मद्दत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । सव्येन । यवकुश जलमादाय । अद्येहाऽमुकगोत्र । अस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां । तथाऽमुकगोत्रास्मन्मातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां पुरुरवो माद्रवसंज्ञकानां । विश्वपदेवानां अस्मिन् पार्वणश्राद्धे वैश्वदेविककृत्ये । इदमन्नादकादिकम् । यद्दत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् । इति ततः प्रार्थना शीर्महणम् । अघोरा पितरः सन्तु । सन्तु । गोत्रन्नो वर्द्धताम् । वर्द्धताम् दातारो नोभिवर्द्धन्ताम् । वर्द्धन्ताम् । वेदाः वर्द्धन्ताम् । वर्द्धन्ताम् । सन्ततिं वर्द्धताम् । वर्द्धताम् श्रद्धाचनो माव्यगमत् । मागाः बहुदेयं च नोस्तु । अस्तु । अन्नञ्च नो बहु भवेत् । भवत । अतिथींश्च लभेमहि । लभध्वम् । याचितारश्च नः । सन्तु । सन्तु । मास्मयाचिष्म कञ्चन । मा याचेथाः । एता एव । आशिषः । सत्याः । सन्तु । सन्तु । ततः स्वधा वाचनम् + भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया स्वधां वाचयिष्ये । वाच्यताम् । अपसव्येन । स्वधावाचनीयान् त्रीन् कुशान् । पिण्डोपरि संस्थाप्य । सजलतिलमोटकं गृहीत्वा । अद्येह । अमुकनामसम्वत्सरे । दक्षिणायने । शरदृतौ । आश्विनमासे । महालयापरपक्षे । कन्यागते । सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्पितृभ्योऽमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यो वसु स्वरूपेभ्यः । अमुक पार्वण श्राद्धे । ब्राह्मणा । मधु मधु स्वधोच्यताम् । अस्तु स्वधा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्यः । अस्मत्पितामहेभ्यः । अमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यः । रुद्रास्वरूपेभ्योः ऽमुकपार्वणश्राद्धे । ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां । अस्तु स्वधा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्प्रपितामहेभ्योऽमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यः । आदित्यस्वरूपेभ्योऽमुकपार्वणश्राद्धे । ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां । अस्तु स्वधा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मन्मातामहेभ्योऽमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यो

(गोभिलः) अघोराः पितरः सन्त्वित्युक्ते स्वधां वाचयिष्ये इति पृच्छति । पितृभ्यः स्वधोच्यतामित्युक्तेऽस्तुस्वधेत्यु च्यमानो धाराः दद्यात् ऊर्जं वहन्तीरमृतं मिति ।

रुद्रस्वरूपेभ्यो ऽमुकपार्वणश्राद्धे ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां अस्तु स्वधा। अद्येह। अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्प्रमातामहेभ्योऽमुकशर्मभ्यः। सपत्निकेभ्यो रुद्रस्वरूपेभ्यो ऽमुकपार्वणश्राद्धे ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां। अस्तु स्वधा। अद्येह। अमुकगोत्रेभ्योऽस्मद् वृद्धप्रमातामहेभ्योऽमुकशर्मभ्यः। सपत्निकेभ्य आदित्यस्वरूप्योऽमुकपार्वणश्राद्धे। ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यताम्। अस्तु स्वधा। स्वधावाचनीयेष्वपोनिपंचति। ॐ ऊर्ज्जं व्वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्। दुग्धेनाप्यूर्जकरणमाचारत्। केचिन्मते नीराजनम्। उत्तानं पात्रं कृत्वा + पितरः स्वर्गलोके प्रस्थिता भवन्तु। सव्येन। दक्षिणा-सङ्कल्पः। देयद्रव्यं सम्प्रोक्ष्य पूजनं कार्यम्। हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे। अद्येह। अमुकसंम्वत्सरे। अमुकायने। अनुकर्तौ। अमुकमासे। अमुकपक्षे। अमुकतिथौ। अमुकतिथौ। अमुकगोत्रोत्पन्नः। अमुकराशिः। अमुकशर्माहं। अमुक गोत्राणाम्। अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां। अमुकामुकशर्मणाम्। सपत्निकानाम्। वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणाम्। तथामुकगोत्राणाम्। अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाम्। अमुकामुकशर्मणाम्। सपत्निकानां। वसुरुद्रादि त्यस्वरूपाणाम्। अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थं। पुरूरवोमाद्रवसंज्ञक विश्वेदेवापूर्वकं। कृतस्यास्य अमुकपार्वणश्राद्धकर्मणः। साधु गुण्यार्थम्। इदं रजतं। सोमदेवतं रजतनिष्क्रयिणीं दक्षिणाम्। वा श्राद्धभोक्तृभ्याब्राह्मणेऽन्येभ्योऽपि दातुमुत्सृजे। ॐतत्सन्मम। पुनः सुवर्णं सम्प्रोक्ष्य। हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे। इति संम्पूज्य। यवकुशानादाय। अद्येह। अमुकगोत्राऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां। तथामुकगोत्रास्मन्मातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां। पुरूरवोमाद्रवसंज्ञकानां। विश्वेषां देवानां प्रीतये। वैश्वदेविक कर्मणः। साधुगुण्यार्थम्। इदं सुवर्णमग्निर्दैवतम्। मनसोपदिष्टां दक्षिणां वा ब्राह्मणेभ्यो दातुमुत्सृजे। ॐ तत्सन्मम। स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। स्वस्तीति विप्रोक्तिः। विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इति म्हीति। विश्वेदेव ब्राह्मणा प्योपणा प्रीयंतां वो विश्वेदेवाः स्वविलकं सत्यानुष्ठानसम्पन्नाः। सर्वदा यद्यायुद्धयः॥ पितृ-

---

(नागखण्डे) उत्तान मर्घ्यंवाचस्तु कृत्वा दद्याच्च दक्षिणम्। हिरण्यन्देवतानांचपितृणां रजतन्तथा (कालिकायामाचार्यः) दद्याद्यज्ञोपवीत्ये यताम्बूलं दक्षिणा तथा।

मातृपरश्चैव ॥ संत्वस्मात् कुलजा नराः ॥ अक्षताः पान्तु ॥ अशीर्भेहणमितिब्राह्मणार्पणपुष्पाणि सङ्गृह्य ॥ विशेषपूजनं ॥ सव्येनैव ॥ पितृभ्यः ॥ स्वधायिभ्य इति ॥ आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च । प्रयच्छन्ति तथा राज्यन्नृणां प्रीताः पितामहाः । आयुःपुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिम्पुष्टिं बलं श्रियम् । पशून् सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयां पितृपूजनात् । ततोऽपसव्येन । पितामहपिण्डमुत्थाप्य । सव्येनाघ्राय । पात्रान्तरे निधाय । पिण्डस्थाने शङ्खचक्रादिकं लिखित्वा । गन्धपुष्पाक्षतैः ॥ षड्ऋतून्पूजयेत् । पिण्डस्थाने अत्रनमः सुखन्ध । अक्षताः पुष्पाणि । सव्येन । तत्र दीपं संस्थाप्य । ॐ वसन्तायनमः । ॐ ग्रीष्माय नमः । ॐ वर्षाभ्यो नमः । ॐ शरदे नमः । ॐ हेमन्ताय नमः । ॐ शिशिराय नमः । हस्तौसं हतो कृत्वा । यान्तु पितृगणाः सर्वेयस्मात् स्थानादुप गताः । सर्वेते हृष्टमनसः सर्वकामप्रपूरकाः । ये लोका दानशीलानां ये लोकाः पुण्यकर्मणाम् । सम्पूर्णान् सर्वभोगैस्तु तान्व्रजध्वं सुपुष्कलान् । इहास्माकं शिवं शान्तिरायुरारोग्यसंपदः । वृद्धिः सन्तानवर्गस्य जायतामुत्तरोत्तरा । दीपस्थाने दीपः अपसव्येन । पिण्डस्थाने पिण्डः । असंचर मभ्युक्ष्य कुर्यात् । यः कश्चित् पितृरूपेण तिष्ठते परमेश्वरः । सोऽयं श्राद्धप्रदानेन तृप्तिं लभतु शाश्वतीम् । गयायां पत्ररूपेण स्वयमेको जनार्दनः । यं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते च ऋणत्रयात् । पञ्चक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गयाशिरः । यत्र यत्र स्मरिष्यामि पितॄणामन्नमक्षयम् । शमीपत्रप्रमाणेन पिण्डन्दद्याद्गयाशिरे । उद्धरेत्सप्त गोत्राणां कुलमेकोत्तरं शतमम् । पितुः शतगुणं पुण्यं सहस्रं मातुरुच्यते । भगिन्यां शतसाहस्रं सोदर्ये दत्तमक्षयम् । सव्येन । अद्य दिने अपरमपिश्रामं पक्वं हिरण्यं उदयास्तमयपर्यन्तं यद्दत्तं यद्दास्ये । तत् स्वर्गद्वारे । अमृतीभूयवः स्वधा । देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः३। सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालंजरे गिरौ । चक्रवाकाः सरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे । तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ । श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् । मनसा च पितॄन् ध्यात्वा । ततोऽपसव्येन । अद्येत्याद्युच्चार्य्य अमुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाम् । अमुकामुकगोत्राणां सपत्निकानां । वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां । तथा अमुकगोत्राणां । अस्मन्मातामह । प्रमातामह । वृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकशर्म्मणां सपत्निकानां । वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां । अक्षयतृप्त्यर्थं पुरूरवामाद्रवसंज्ञक । विश्वेदेवपूर्वकं ।

अर्घपिण्डसहित । अमुकपार्वणश्राद्ध । विसृजे । सव्यम् । इदममुक पार्वणश्राद्ध । विधिहीन । कालहीन । वाक्यहीन । श्रद्धाहीन । दक्षिणा हीन । यत् कृत । तत् कृतमस्तु । प्रमादाल्लोभाद्भयाद्वा यत्रकृत । तत् श्रीभगवद्विष्णो ब्राह्मणवचनात् । सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । कुशेन विप्रस्पर्श । पितृब्राह्मणपूर्वकम् । ब्राह्मणानुत्थापयेत् । पितृमाता महब्राह्मणयोरपसव्यनोत्थापनम् । सव्येन । वैश्वदैविकब्राह्मणस्य । ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे । उपयन्तु मरुत सुदानवऽइन्द्रप्रा शूर्भवासचा । इति । ब्राह्मणानुत्थाप्य पात्रान्तरे निधाय । ॐ व्वाजेवा जेवतव्वाजिनो नोनधनेषु व्विप्राऽअमृताऽऋतज्ञा अस्यमध्व पिबत मादय ध्वतृप्तायातपथिभिर्देवयानै । इति विसृज्य ❀ कर्मपात्र गृहीत्वा आमावाजस्येत्यनुव्रज्य । प्रदक्षिणीकरणम् । ॐ आमा वाजस्यप्रसवो जगम्यान्मे द्यावापृथिवीविश्वरूपे । आमागतांपितरामातराचामासो मोऽमृतत्वेनगम्यात् । इत्यनुव्रज्य । प्रदक्षिणीकृत्य । नमस्कुर्यात् । कर्मपात्र विप्रपादाग्रे निनीय । अपसव्येन । नीवीं विसृज्य । पाणिना दीप निर्वाप्य । तान् समुद्रान् समतरन् स्वर्गान्प्राप्यविष्टपत्रऽइष्टकानाम् । पुरोपव्यसान सुकृत्यलोके यत्र गच्छ यत्र पूर्वे परेता सर्व्वं विधायापस्य । हस्ते जल गृहीत्वा । यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यून सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् । ॐ अच्युताय नम ३ । चतुर्भिश्च २ द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नम ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णो सम्पूर्णं स्यादिति श्रुति ॥ अद्य मे सफल जन्म अद्य मे सफलं तप । अद्य मे गात्रजा सर्वे याता वैकुण्ठमद्य दिवम् ॥ पत्रशाकादि दानेन क्लेशिता यूयमीदृशा । तत्क्लेशमिह संजात विस्मृत्य क्षन्तुमर्हथ । मूलोत्तोभजय त्यक्त्वापिण्डप्राणं च दक्षिणाम् । आह्वानं स्वागतं चार्घं विना च परिवेषणम् ॥ विसर्जनसौमनस्य माशिषप्रार्थनं तथा । पित्र्यमन्यत्कर्त्तव्य प्राचीनावीतिना सदा ॥ दैवपूर्वमिदं श्राद्ध पितृपूर्वविसर्जनम् । सर्वकर्मापसव्येन दक्षिणाग्रनवर्जितम् ॥ इति ॥

गुप्तकाशी गुप्तदान प्रयोग

गुप्तकाश्यां पुरावृत्तं तीर्थस्थानमथो शुभा । 'यत्रचनायनिवासक्ष

❀ (यजुष) आमावाज इति अननुव्रजन्नेव विसर्जयत् (प्रचेता) ब्राह्मणान्सत्कृत्य कृत्वा पितृपूर्वविसर्जनम् । (छन्दोवेदे) आमावाजेति मन्त्र पुष्टेनाश्च प्रदक्षिणम् ।

लोकमङ्गलदायकम् ॥ १ ॥ कर्णयामि समासेन सावधानेन वै शृणु । यच्छ्रुत्वा सर्वपापानि विलय यान्ति यात्रिणाम् ॥ २ ॥ पुराणवचन चेत्थ शिवाराधनमानसैः ॥ सिद्धैस्त स्थापनं पूर्वं कृत सिद्धाश्रम तत ॥ ३ ॥ केचिद्वदन्त्याधुनिका विश्वनाथस्य सङ्गते । यदा यवनराजोऽसौ काशी गन्तु प्रचक्रमे ॥ ४ ॥ तदान्तर्हितो देवो गुप्तकाशी तत स्मृता । न चेत्तद्विना शक्य स्थानाख्यान भवेदिदम् ॥ ५ ॥ कुन्तलश्यामलो मन्ये विनाख्यानेन वै कथम् । न वा पूर्वप्रणीतेषु ग्रन्थेष्वित्यपि दृश्यते ॥ ६ ॥ तस्मान्मन्ये शङ्करेण गङ्गायमुनयोरिह । गुप्ति रूप सुविज्ञाय यद्वा कृत्वा च मन्दिरम् ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठाप्य च भूनाथ तदाख्यायि ततस्त्विदम् । अन्यथा पूर्वग्रन्थेषु कथ नाम न दृश्यते ॥ ८ ॥ स्थानमासाद्य लोकेन धार्मिकेण तथाविध । गुप्तदान च कर्त्तव्य यथाविभवविस्तरैः ॥ ९ ॥ स्वर्णवस्त्रसु [illegible]स्तैर्नारिकेलादिभि फलैः । गुप्तदान प्रकर्त्तव्य यात्रासफल मानसैः ॥ १० ॥ आदौ कायिकशुद्ध्यर्थं धेनुदानमपि फलम् । चोराम मुनिभि प्रोक्त सर्वदा शुभकर्म्मणि ॥ ११ ॥ एव कृत्वैव यात्रार्थी समाराध्य च विश्वपम् । ययाद्देवं ततो द्रष्टुं केदारं वर्त्मना तत ॥ १२ ॥ एव कृत्वैव यात्रार्थी केदारे लभते शिवम् । निर्धूय सर्वपापानि कृपया शङ्करस्य च ॥ १३ ॥ ततो गुप्तदानकर्त्ता यात्रार्थी (र्थिनी वा) सामग्रीं (१) सम्यक् सम्पाद्य प्रत्यूषे च तत्र गङ्गायमुनयोर्धाराद्वयेन पूजनपूर्वक सङ्कल्पस्नान कुर्यात् । शुद्धवस्त्र परिधाय श्रीनिखिलनाथाय नम नम केदारेश्वराय नदीश्वराय चेति नमस्कृत्य मन्दिरप्राङ्गण एवोपविश्य तीर्थ पुरोहितकर्तृकाचम्य विष्णु २ निरावम्य सिद्धम् ३ ॐ अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्था गतोऽपि वा । य स्मरेत्पुण्डरीकाक्ष स बाह्याभ्यन्तर शुचि ॥ इत्यनेन वामहस्तजलमभिमन्त्र्य शिरसि निक्षिपेत् । ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता । येभूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया । इति भूतशुद्धि सविधाय । अस्य श्री आसनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि सुतल छन्द कूर्म्मो देवता आसने विनियोग । ॐ हिरण्यवर्णा सुभगा हिरण्यकश्यपुर्मही तस्यै हिरण्या दापये सत्या अकरं नम । इत्यक्षतान् ॐ भूर्भुव स्व पृथ्वि ! इहागच्छेह तिष्ठ पाद्यादीनि समर्पयामि पृथिव्यै नम सम्पूज्य । ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्व विष्णुना धृता । त्व च धारय मा भद्रे पवित्र कुरु चासनम् ॥ इति साम्प्रार्थ्य जलपूजन पूर्वक सूर्यं पूजयेत् ततो गणपतिं नमस्कृत्य च शरीरशुद्ध्यर्थं गोदान

[१] सामग्री मुद्रा, रक्षत, तावदुन गाना, घ नी, माला, स्वर्णराज तदभाव रजत, तदभावे कांस्यपात्र, अभाव ताम्रपात्र, ग न्ध पुष्पादि ।

कुर्यात् अथवा गोप्रत्याम्नायीभूतं द्रव्यं तीर्थपुरोहिताय दत्त्वा तत्कुर्यात्। ततो गुप्तदानसामग्रीं पाद्यगन्धाक्षतपुष्पधूपादिभिस्तत्तन्मन्त्रोच्चारणपूर्वकं समर्प्य सङ्कल्पं कुर्यात्-ॐ नमः परमात्मने पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गतगुप्तनागाख्या क्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे केदारखण्डान्तर्गतसुमेरुदक्षिणपार्श्वे मन्दाकिन्यास्तटे समीपे वा षष्टिसंवत्सराणां मध्येऽमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायनेऽमुकर्तौ अमुकमासे पक्षे तिथौ वारे नक्षत्रे योगे च अमुकराशिस्थिते सूर्ये चन्द्रे भौमे बुधे गुरौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ एवं गुणविशेषणविशिष्टायां तिथौ-अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकराशिः अमुकवेदाध्यायी अमुकवेदशाखाध्यायी सूत्राद्यभियुक्तः अमुकपुत्रोऽमुकपौत्रोऽमुकदेशग्रामवास्तव्योऽहं अमुकशर्मा वर्मा वा गुप्तो वा श्रीकेदारबदरीश्वरादिदेवदर्शनार्थी यात्री ममात्मनः सकलदुरितोपशमनार्थं तथेह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृतकायिकमानसिकवाचिकपापनिवारणाय त्रिविधतापोपशमनार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तसत्फलावाप्तये सूर्यादिनवग्रहजनितसर्वारिष्टनिवृत्तये राजद्वारे सभादिषु सर्वत्र विजयहर्षादिमनोवाञ्छितप्राप्तये पुत्रपौत्रादिआयुरारोग्यलाभाय च धनधान्यादिसमृद्धये श्रीकेदारबदरीश्वरप्रयोत्तराखण्डयात्रायामस्याम् गुप्तकाशीस्थयाञ्चात्र यात्रा सफलीकरणाय गुप्तदानरूपेणेदं हिरण्यमग्निदैवत्यं रजतं चन्द्रदैवतं ताम्रमर्कदैवतं विष्णुदैवतं वा कांस्यं तीरादैवत्यं नारिकेलं वनस्पतिदैवत्यं वस्त्रादिकं तत्तद्दैवत्यं अमुकपुरोहिताय तुभ्यं सम्प्रददे—इति संकल्प्य तद्दानं तस्मै तीर्थपुरोहिताय दत्त्वा तदाशीर्वचनं मोभिपेत लब्ध्वा च विसर्जनार्थं षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य भक्त्या प्रणम्य क्षमां याचयेत् त्रिः परिक्रमेच्चेति शुभम्। इति गुप्तदान।

प्रयोगविधि अत्र शय्यादानकरणमपि मङ्गलम्। अतः शय्यादानकरणार्थिभिर्यात्रिभिस्तत्प्रयोगविधिरस्यामेव पद्धतौ-अन्यत्रावलोकनीय इति।

अथ शिवाथर्वशीर्षम्।

(शिर उपनिषत्) ॐ देवा ह वै स्वर्गलोकमायंस्ते रुद्रमपृच्छन् को भवानिति। सोऽब्रवीदहमेकः प्रथममासीद्वर्तामि च भविष्यामि च नान्य

कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति । सोऽन्तरादन्तरं प्राविशत्सोऽहं नित्यानित्यो व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्माब्रह्माहं प्राञ्च प्रत्यञ्चोऽहं दक्षिणाञ्च उदञ्चोऽहम धश्चोर्ध्वश्चाहं दिशश्च प्रतिदिशश्चाहं पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं सावित्र्यहं गायत्र्यहं त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्चाहं छन्दोऽहं सत्योऽहं गार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहवनीयोऽहं गौरहं गौर्यहं मृगहं यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोऽहं ज्येष्ठोऽहं श्रेष्ठोऽहं वरिष्ठोऽहमापोऽहं तेजोऽहं गुह्योऽहमरण्योऽहमक्षरमहं क्षरमहं पुष्करमहं पवित्रमहमुग्रञ्च वलिश्च पुरस्ताज्ज्योतिरित्यहमेव सर्वेभ्यो मामेव स सर्वः समो यो मा वेद स देवान् वेद सर्वांश्च वेदान् साङ्गानपि ब्रह्म ब्राह्मणैश्च गां गोभिर्ब्राह्मणान् ब्राह्मणेन हविर्हविषा आयुरायुषा सत्यं सत्येन धर्मेण धर्मं तर्पयामि स्वेन तेजसा । ततो ह वै ते देवा रुद्रमपृच्छन् ते देवा रुद्रमपश्यन् ते देवा रुद्रमध्यायन् ते देवा ऊर्ध्वबाहवो रुद्रं स्तुवन्ति ॥ १ ॥ ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः ॥ १ ॥ ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च विष्णुस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २ ॥ ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च स्कन्दस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३ ॥ ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चेन्द्रस्तस्मै० ॥ ४ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाग्निस्तस्मै० ॥ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च वायुस्तस्मै० ॥ ६ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सूर्यस्तस्मै० ॥ ७ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सोमस्तस्मै० ॥ ८ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् येऽष्टौ ग्रहास्तस्मै० ॥ ९ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् ये चाष्टौ प्रतिग्रहास्तस्मै० ॥ १० ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च भूस्तस्मै० ॥ ११ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च भुवस्तस्मै० ॥ १२ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च स्वस्तस्मै० ॥ १३ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च महस्तस्मै० ॥ १४ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् या च पृथिवी तस्मै० ॥ १५ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चान्तरिक्षं तस्मै ॥ १ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् या च द्यौस्तस्मै० ॥ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् याश्चापस्तस्मै० ॥ १८ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च तेजस्तस्मै० ॥ १९ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च कालस्तस्मै० ॥ २० ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च यमस्तस्मै० ॥ २१ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च मृत्युस्तस्मै० ॥ २२ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चामृतं तस्मै० ॥ २३ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चाकाशं तस्मै० ॥ २४ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च विश्वं तस्मै ॥ २५ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च स्थूलं तस्मै० ॥ २६ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सूक्ष्मं तस्मै० ॥ २७ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च शुक्लं तस्मै० ॥ २८ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च कृष्णं तस्मै ॥ २९ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च

कृत्स्नं तस्मै० ॥ ३० ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यच्च सत्य तस्मै० ॥ ३१ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यच्च सर्वं तस्मै० ॥ ३२ ॥ ७ ॥ भूस्ते आदिर्मध्यं भुवस्ते स्वस्ते शीर्षं विश्वरूपोऽसि ब्रह्मैकस्त्वं द्विधात्रिधा वृद्धिस्त्वं शान्तिस्त्वं पुष्टिस्त्वं हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं विश्वमविश्वं कृतमकृतं परमपरं परायणश्च त्वम् । अपामसोमममृता अभूमा गन्म ज्योतिरविदाम देवान् । किं नूनमस्मान् कृणवदराति किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य सोमसूर्य पुरस्तात्सूक्ष्म पुरुष । सर्वं जगद्धितं वा एतदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषं ग्राह्यमग्राह्येण भावं भावेन सौम्यं सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण वायव्यं वायव्येन ग्रसति तस्मै महाग्रासाय वै नमो नम । हृदिस्था देवता सर्वा हृदि प्राणा प्रतिष्ठिता । हृदि त्वमसि यो नित्यं तिस्रो मात्रा परस्तु स । तस्योत्तरत शिरो दक्षिणत पादौ य उत्तरत स ओङ्कार य ओङ्कार स प्रणव य प्रणव स सर्वव्यापी स सर्वव्यापी सोऽनन्त योऽनन्तस्तत्तारं यत्तार तच्छुक्लं यच्छुक्लं तत्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्मं तद्वैद्युतं यद्वैद्युतं तत्परं ब्रह्म यत् परं ब्रह्म स एक य एक स रुद्र यो रुद्र स ईशान य ईशान स भगवान् महेश्वर ॥१॥ अथ कस्मादुच्यते ओङ्कार । यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति तस्मादुच्यते ओंकार । अथ कस्मादुच्यते प्रणव । यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुःसामाथर्वाङ्गिरसं ब्रह्म ब्राह्मणेभ्य प्रणामयति नामयति च तस्मादुच्यते प्रणव । अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी । यस्मादुच्चार्यमाण एव यथा स्नेहेन पललपिण्डमिव शान्तरूपमोतप्रोतमनुप्राप्तो व्यतिषक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापी । अथ कस्मादुच्यतेऽनन्त । यस्मादुच्चार्यमाण एव तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्चास्यान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्त । अथ कस्मादुच्यते तार । यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्मव्याधिजरामरणसंसारमहाभयात्तारयति त्रायते च तस्मादुच्यते तारम् । अथ कस्मादुच्यते शुक्ल । यस्मादुच्चार्यमाण एव क्लन्दते क्लामयति च तस्मादुच्यते शुक्लम् । अथ कस्मादुच्यते सूक्ष्मं । यस्मादुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मो भूत्वा शरीराण्यधितिष्ठति सर्वाणि चाङ्गान्यभिमृशति तस्मादुच्यते सूक्ष्मम् । अथ कस्मादुच्यते वैद्युतम् । यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्ते महति तमसि द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतम् । अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म । यस्मात् परमपरं परायणं च बृहद् बृहत्या बृंहयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म । अथ कस्मादुच्यते एक य सर्वान् प्राणान् सम्भक्ष्य सम्भक्षणेनाज संसृजति विसृजति तीर्थमेके व्रजन्ति तीर्थमेके दक्षिणा प्रत्यञ्च उदञ्च प्राञ्चोऽभिव्रजन्त्येके तेषां सर्वेषामिह सङ्गति साकं

स एकोऽभूदन्तश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः। अथ कस्मादुच्यते रुद्रः। अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वान्देवा २। नीशते ईशानी-भिर्जननीभिश्च शक्तिभिः। अभित्वा शूर नो नुमो दुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्रतस्थुष इति तस्मादुच्यते ईशानः। अथ कस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः। यस्माद्भक्तान् ज्ञानेन भजत्यनुगृह्-णाति च वाचं संसृजति विसृजति च सर्वान् भावान् परित्यज्यात्म ज्ञानेन योगैश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः। तदेतद्रुद्रचरितम् ॥ ४ ॥ एषोह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पुर्वोह जातः स उ गर्भे अन्तः स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जना तिष्ठति सर्वतोमुखः। एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य इमॉंल्लोकानीशत् ईशनीभिः। प्रत्यङ् जना तिष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोप्ता॥ यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको येनेदं सर्वं विचरति सर्वम्। तमीशानं वरदं देवमीड्यंनिचाय्ये मां शान्तिमत्यन्तमेति। क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्धया सञ्चितं स्थापयित्वा तुरुद्रे। रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणमिषमूर्जेण परावोनुनायन्तं मृत्यु-पाशान्। तदेतेनात्मन्ने तेनार्धचतुर्थेन मात्रेण शान्तिं संसृजति पशु-पाशविमोक्षणं या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या रक्तावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेद् ब्रह्मपदम्। या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णवर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेद्वैष्णवं पदम्। या सा तृतीया मात्रा ईशानदेवत्या कपिलावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेदैशानं पदम्। या सार्धचतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्याऽव्यक्तीभूता खं विचरविशुद्धा स्फटिकसन्निभवर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेत्पदमनामयम्। तदे तदुपासीव मुनयो वाग्वदन्ति न तस्य ग्रहणमयं पन्था विहित उत्तरेण येन देवा यान्ति येन पितरो येन ऋषयः परमपरं परायणं चेति। बालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वंदेवं जातरूपं वरेण्यम्। तमात्मस्थ येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति नेतरेषाम्। यस्मिन् क्रोधं याञ्च तृष्णां क्षमाञ्चात्क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं। बुद्धया सञ्चितं स्थाप-यित्वा तु रुद्रे रुद्रमेकत्वमाहुः रुद्रो हि शाश्वतेन वै पुराणे नेषमूर्जेण तपसा नियन्ताग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं ह्या इदं भस्म मन एतानि चक्षुंषि यस्माद्व्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्म। नाङ्गानि संस्पृशेत् तस्माद् ब्रह्म तदेतत्पाशुपतं पशुपाशविमो-क्षणाय ॥ ५ ॥ योऽग्नौ रुद्रोयोऽप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश। य इमा विश्वाभुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये। यो रुद्रोऽ-ग्नौ यो रुद्रोऽप्स्वन्तर्यो रुद्र ओषधीर्वीरुध आविवेश। यो रुद्र इमा

विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः ॥ यो रुद्रोऽप्सु यो रुद्र ओषधीषु यो रुद्रो वनस्पतिषु । येन रुद्रेण जगदूर्ध्वं धारितं पृथिवी द्विधा त्रिधा धर्त्ता धारिता नागा येऽन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः । मूर्धानमस्य संसेव्याप्यथर्वा हृदयञ्च यत् । मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानोऽधिशीर्षतः । तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुज्झितः । तत् प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथो मनः । न च दिवो देवजनेन गुप्ता न चान्तरिक्षाणि न च भूम इमाः । यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं तस्मादन्यन्न परं किञ्चनास्ति । न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं नोत भव्यं यदासीत् । सहस्रपादेकमूर्ध्ना व्याप्तं स एवेदमावरीवर्ति भूतम् । अक्षरात् सञ्जायते कालः कालात् व्यापक उच्यते । व्यापको हि भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदा शेते रुद्रस्तदा संहार्यते प्रजाः । उच्छ्वसिते तमो भवति तमस आपोऽप्स्वङ्गुल्या मथिते मथितं शिशिरे शिशिरं मथ्यमानं फेनं भवति फेनादण्डं भवत्यण्डाद्ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो वायुः वायोरोङ्कारः ओङ्कारात्सावित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति । अर्चयन्ति तपः सत्यं मधु क्षरन्ति यद्ध्रुवम् । एतद्धि परमं तपः । आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों नम इति ॥ ६ ॥ य इदमथर्वशिरो ब्राह्मणोऽधीते । अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति । अनुपनीत उपनीतो भवति । सोऽग्निपूतो भवति । स वायुपूतो भवति । स सूर्यपूतो भवति । स सोमपूतो भवति । स सत्यपूतो भवति । स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति । स सर्वैर्वेदैरनुध्यातो भवति । स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति । तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति । गायत्र्याः षष्टिसहस्राणि जप्तानि भवन्ति । प्रणवानामयुतं जप्तं भवति । स चक्षुषः पङ्क्तिं पुनाति । आसप्तमात् पुरुषयुगान्पुनातीत्याह भगवानथर्वशिरः । सकृज्जप्त्वैव शुचिः स पूतः कर्मण्यो भवति द्वितीयं जप्त्वा गणाधिपत्यमवाप्नोति । तृतीयं जप्त्वैवमेवानुप्रविशत्यों सत्यमों सत्यमों सत्यम् ॥ इति ॥

अथ शिवापराधक्षमापनस्तोत्रम् ।

आदौ कर्मप्रसंगात्कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः । यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ १ ॥ बाल्ये दुःखातिरेकान्मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति ॥ नानारोगादिदुःखाद्रुदनपरवशः शंकरं न स्मरामि क्षन्तव्यो मेऽपराधः

शिव ३ भो श्रीमहादेव शंभो ॥२॥ प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसंधौ दष्टो नष्टो विवेकः सुतधनयुवति स्वादु सौख्ये निषण्णः ॥ शैवी चिंताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं क्षंतव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥३॥ वार्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम् ॥ मिथ्या मोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं क्षंतव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव० ॥४॥ नो शक्यं स्मार्तकर्मप्रतिपद गहन प्रत्यवायाकुलाख्यं श्रौते वार्ता कथमें द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे ॥ ज्ञातो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव० ॥५॥ स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिकृते नाहृतं गांगतोयं पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्खण्डबिल्वीदलानि ॥ नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पैस्त्वदर्थं क्षंतव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव० ॥६॥ दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिंगं नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितं पूजितं न प्रसूनैः ॥ धूपः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥७॥ ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यप्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो हव्यं ते लक्षसंख्यै हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः ॥ नो तप्तं गांगतीरे व्रतजपनियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥८॥ स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुण्डले सूक्ष्ममार्गे शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटित विभवे ज्योतिरूपे पराख्ये ॥ लिंगज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥९॥ नग्नो निःसंगशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहांधकारो नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित् ॥ उन्मन्यावस्थया त्वां विगतकलिमलं शंकरं न स्मरामि क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव० ॥१०॥ चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शङ्करे सर्पैर्भूषितकंठकर्णविवरे नेत्रोत्थ वैश्वानरे ॥ दंतित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥११॥ किं वानेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं किंवा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम ॥ ज्ञात्वैतत्क्षणभंगुरं सपदिरे त्याज्यं मनो दूरतः स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम्॥१२॥ आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनम् प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः काला जगद्भक्षकः ॥ लक्ष्मीस्तोयतरंगभंगचपला विद्युच्चलं जीवितं तस्मात्त्वां शरणागतं शरणदत्वं रक्ष रक्षाधुना ॥१३॥ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो

॥ ४० ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं शिवापराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥८॥

अथ प्राणप्रतिष्ठा :

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य । ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि । जगत्सृष्टिः प्राणशक्तिर्देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रों कीलकम् । प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः —ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमः—मुखे । जगत्सृष्टयै प्राणशक्त्यै नमः—हृदये । आँ बीजाय नमः लिङ्गे । ह्रीं शक्तये नमः—पादयोः । क्रों कीलकाय नमः—सर्वाङ्गेषु । एवं न्यास कृत्वा । ॐ अ, कं, खं, गं, घं, ङं, आं—पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां-नमः । ॐ इं, चं, छं, जं, झं, ञं, ईं—शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां-नमः । ॐ उं, टं, ठं, डं, ढं, णं, ऊँ त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणाऽत्मने मध्यमाभ्यां-नमः । ॐ एं, तं, थं, दं, धं, नं, ऐं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ओं, पं, फं, बं, भं, मं, औं, वचनादानगमनानन्दविसर्गात्मने नमः । कनिष्ठिकाभ्यां-नमः । ॐ अं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, ळं, अः—मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तविज्ञानाऽत्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां-नमः । एवं हृदयादि । (नाभेरारभ्य पादान्तम् । आँ, इति, पाशबीजम् । हृदयादारभ्य नाभ्यन्तं ह्रीं, इति, शक्तिबीजम् । (मस्तकादारभ्य हृदयान्तम् 'क्रों' इति, अङ्कुशबीजमन्येन ॥ अथध्यानम्—रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्च बाणान् बिभ्राणा-सृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ (शिरसि तथा हृदि करं दत्त्वा)-ॐ आँ, ह्रीं, क्रों, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, सः—सोऽहम् प्राणा इह प्राणाः । ॐ, आँ, ह्रीं, क्रों, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, सः—जीव इह स्थितः । ॐ आँ, ह्रीं, क्रों, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, सः—सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थानीहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॐ १, ॐ २, ॐ ३, ॐ ४, ॐ ५, ॐ ६, ॐ ७, ॐ ८, ॐ ९, ॐ १०, ॐ ११, ॐ १२, ॐ १३, ॐ १४, ॐ १५, इति प्रणवस्य पञ्चदशावृत्तीः (कृत्वा) अनेन मम देहस्य पञ्चदश संस्काराः सम्पद्यन्ताम् । इत्युक्त्वा पञ्चधाम् (ॐ नमो भगवते रुद्राय)

इति त्रीन्प्राणायामान्कृत्वा ॥ यथा पर्वतधातूनां दोषान्दहति पावकः। एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा।

अथ महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः।

सङ्कल्प—अद्येत्यादि पूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं यजमानस्य शरीरेऽमुकपीडानिरास-द्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जय-देवताप्रीत्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये—ॐ अस्य श्रीमहा-मृत्युञ्जयमन्त्रस्य। वसिष्ठ ऋषिः। श्रीमृत्युञ्जय रुद्रो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। हौं बीजम्। जूं शक्तिः। सः कीलकम्। मृत्युञ्जयप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। न्यासाः—वसिष्ठऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदये हौं बीजाय नमः गुह्ये। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐ त्र्यम्बकं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः। ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ एवं हृदयादि॥ ध्यानम्—चन्द्रो-द्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदिव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्राङ्कुशां भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे॥ १॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य॥ ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तेजआत्मकं दीपं दर्शयामि। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि॥ मन्त्रोद्धारः—ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ॥ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ। उत्तरन्यासं कृत्वा॥ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥ *मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः* पीडितं कर्मबन्धनैः॥ अर्पणम्—अनेन महामृत्युञ्जयपाठ्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः—प्रीयतां न मम॥ अथ षट्प्रणवयुक्त मृत्युञ्जय-महामन्त्रः—सङ्कल्पं पूर्ववत्। ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात्० ॐ सः जूं हौं ॐ स्वः भुवभूः॥ अर्पणम्—पूर्ववत्॥ इति षट्प्रणवयुक्त-

मृत्युञ्जयमहामन्त्रः ॥ एवं जपानन्तरं देवपूजनं कृत्वा ॥ प्रार्थना—मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥ तावकस्त्वद्गतप्राणास्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु त्र्यम्बकम् ॥ जपनिवेदनम्—जपसाङ्गता-सिद्ध्यर्थं यथाकामनया द्रव्येण दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ इति महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः ॥

अथ शिवपूजापद्धतिः।

अथ यन्त्रोद्धारः ॥ अनुक्तकल्पे यन्त्रं तु लिखेत्पद्मदलाष्टकम्। षट्कोणकर्णिकं तत्र वेद द्वारोपशोभितम्। अथ मन्त्रोद्धारः। नमस्कारं समुद्धृत्य वामनेत्र समन्वितम्। वारुणं सुरपूर्वं च वायुं ललाट संयुतम्। मनूप चाक्षरं मन्त्रं यथाकाम फल प्रदम्। प्रणवादिर्यदा देवि तदा मंत्रः षडक्षरः इति। अथ मन्त्रः ॥ ओ३म् नमः शिवाय, इति मूलमन्त्रः। अथ पूजाप्रयोगः। सामग्रीं संपाद्य नित्यकर्म विधाय, नववस्त्रं परिधाय ओ३म् विष्णुर्विष्णुर्हरिर्हरिः ३ त्रिराचम्य ॐ सिद्धं ३ ॐ नमो भगवते रुद्रायेति प्राणानायम्य, कर्मपात्रजले, गङ्गाद्यावाहनं कुर्यात्। गन्धपुष्पाक्षतै रभ्यसम्पूज्य तेन जलेनाऽऽत्मानं सम्प्रोक्ष्य ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां०। ॐ पुण्डरीकाक्षम्पुनातु ३। नमस्कारः। दक्षिणे० ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ शंखनिधये नमः। वामे, ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ पद्मनिधये नमः। आसनशुद्धिः। ॐ पृथ्वीत्वयेति-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मोदेवता, आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ हिरण्यवर्णां सुभगां हिरण्यकशिपुमंहि। तस्या हिरण्यद्रापये तस्या अपरं नमः। इत्यक्षतान् क्षिपेत्। पुनः ॐ विश्वशक्त्यै नमः। ॐ महाशक्त्यै नमः। ॐ कूर्म्मासनाय नमः। ॐ योगासनाय नमः। ॐ अनन्तासनाय नमः। ॐ विमला सनायनमः। मध्ये, ॐ परम सुखास-नाय नमः। ॐ भूर्भुवस्वः आत्मासनाय इति मन्त्रेण पुष्पादिनाऽऽसन आसनदानम् ॥ पाद्यादिभिर्भूमिं, आसनं च सम्पूज्य ॥ प्रार्थयेत् ॥ ॐ पृथिव्त्वया धृताः लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ततः शिखाबन्धनीयात् ॥ ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांस शोणित भोजने। तिष्ठ देवि शिखामध्ये, चामुण्डे चापराजिते। विष्णोर्नाम सहस्रेण, शिखाबन्धं करोम्यहम् ॥ अथदिग्बन्धनम् ॥ ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूताः भुवि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। इति भूतानुत्सार्य ॥ ॐ

सर्वभूतनिवारकाय, शार्ङ्गाय सशराय सुदर्शनायास्त्रराजाय हुं फट् स्वाहा ॥ इति तालत्रयकृत्वा ॥ ततः स्वदक्षिणभागे पुष्पाक्षतैः । ॐ गुरुभ्यो नमः । ॐ परमगुरुभ्यो नमः । ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः । ॐ पूर्वसिद्धिभ्यो नमः । ॐ आचार्येभ्योनमः । ततः स्ववामभागे ॥ ॐ गणेशाय नमः । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ क्षेत्रपालाय नमः । ॐ योगिनीभ्यो नमः । ॐ क्षेत्रेशाय नमः । पुनर्दिग्बन्धनम् ॥ ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् सर्वेषामविरोधेन ब्रह्म कर्म समारभे ॥ वाम हस्तेन भूमिं त्रिवार ताडयेत् ॥ अथ भूशुद्धि ॥ ॐ भूरसीत्यस्य प्रजापति ऋषि मातृका देवता, प्रस्तारपङ्क्तिश्छन्द, भूशुद्धौ विनियोगः । भूमौ हस्तौ कृत्वा । ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीयच्छ पृथिवींद ॐ ह पृथिवीं माहिंसीः । भैरव नमस्कार ॥ ॐ भूतानामित्यस्य कौडिन्यऋषि, नारायणो देवता, अनुष्टुप्छन्द, भैरव नमस्कारे विनियोग ॥ पुष्पाञ्जलिंधृत्वा ॥ ॐ यो भूतानामधिपतिर्यस्मिँल्लोकाऽ अधिश्रिता यऽईशो महतो महांस्तेन गृह्णामि त्वामहं मयि गृह्णामित्वामहम् ॥ ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञादातु मर्हसि ॥ इति भूतशुद्धि । ॐ नमः शिवायेति प्राणायाम त्रय कृत्वाऽऽचम्य । ॐ सुशान्तिर्भवतु ॥ ॐ स्वस्तिनऽ इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु । ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम हि, देवहितं यदायु ॥ त पत्नी भवतुग्रुष्टेमन्वा पुत्रं व्यात् भिरुक्वाहिरण्ये ॥ नाक गृभ्णाना सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिव ॥ अथ नमस्कारा । अविघ्ननाशिने मंगल मूर्तये नमः । श्रीरिष्टदेवताभ्यो नमः ॥ श्रीग्रामदेवताभ्यो नमः । श्री स्थानदेवताभ्यो नमः । श्री वास्तुदेवताभ्यो नमः । श्री वा ेहिरण्यगर्भाभ्या नमः । श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः । श्री उमामहेश्वराभ्या नमः । श्री शचीपुरन्दराभ्या नमः श्री मातृपितृचरणकमलेभ्या नमः । ॐ सर्वेभ्योदेवेभ्यो नमः । ओं सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ निर्विघ्नमस्तु ॥ ओं अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थंपूजितोय सुरासुरैः । सर्वविघ्न हरस्तस्मै श्री गणाधिपतयेनमः । ओं सर्व मगल मागल्ये शिवे सर्वार्थसाधके । शरण्येत्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ ओं लाभस्तेषा जयस्तेषा कुतस्तेषा पराजय । येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः । ओं लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ओं समस्तरमणाणे नमः ॥ ततः सकल्प कुर्यात् ॥ ओं विष्णुर्विष्णुर्हरिर्हरि ॥ त्रिराचम्य । ओं नमः परमात्मन

पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो० एवं गुण विसेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ। अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माहं ममात्मनः वा, आमुष्क यजमानस्य श्रुति स्मृति पुराणेतिहासोक्त सत्फल प्राप्तये सकलैश्वर्याभिः वृद्धयर्थं, अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं, प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरसं रक्षणार्थं, सकल मनेप्सित कामना संसिद्ध्यर्थं, लोके वा सभायां, राज द्वारे वा। सर्वत्र यशोविजय लाभादि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनिजन्मान्तरेवा, सकल दुरितोपशमनार्थं, तथा मम सभार्यस्य, सपुत्रस्य, सबांधवस्याखिलकुटुम्बसहितस्य, सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडाल्मृत्यु परिहार द्वारा, आयुरारोग्यैश्वर्य्याभिवृद्ध्यर्थं। तथा, ममाखिल कुटुम्बस्य जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध, चतुर्थाष्टम, द्वादशस्थान स्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं, सूचयिष्यमाणं, यस्सर्वारिष्टं, तद्विनाशद्वारा, एकादशस्थानस्थित, वच्छुभफलप्राप्तये, पुत्रपौत्रादिसंततेरविच्छिन्न वृद्धयर्थं आदित्यादिनवमहानुकूलतासिद्ध्यर्थं, तथा, इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नतासिद्धयर्थं, आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिक, त्रिविधतापोपशमनार्थं, धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थंच, ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिव प्रीतये, पञ्चन्यासपूर्वकं यथा ज्ञानेन, यथा लब्धे नोपचारेण श्री साम्बसदाशिवपूजनकर्माहं करिष्ये॥ ततः ॐ अस्य श्री शिव पञ्चाक्षर मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छंदो, श्रीसाम्बसदा शिवोदेवता, ॐ बीजं, शंशक्तिः, शिवायेति कीलकं, चतुर्वर्ग फलावाप्तये जपे विनियोगः। ॐ शिरसि वामदेव ऋषिः नमः। मुखे, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदि ॐ साम्बसदा शिवाय नमः। गुह्ये, ॐ बीजाय नमः। पाद्योः ॐ शंशक्त्ये नमः। सर्वाङ्गे, ॐ शिवायेति कीलकाय नमः॥ ततः ॐ हृदयाय नमः। नँ शिरसे स्वाहा। मँ शिखायैवषट्। शिं कवचायहुम्। वाँ नेत्रत्रयायवौषट्। यँ अस्त्रायफट्। ततोध्यायेत्—ॐ पञ्चवक्त्रो दशभुजो सर्व देवोत्तम प्रभुः। वेदोपगीतः सर्वज्ञः सोम सूर्य्याग्नि लोचनः॥ गौरीभूपति वामाँगो कल्याण गुणसागरः। सर्वलोकपतिः श्रीमान् सर्व देवार्चितो विभुः॥ निष्फलोपिगुणोनित्यो निर्मलो निरुपाधिकः। निरञ्जनो निराकारो निरवद्यो निरामयः॥ ज्योतिः स्वरूपो विमलो चिद्घनः सकलात्मकः। एकः पूर्णः शिवः शान्तो मायातीतोऽक्षरो वरः। इति हृदये-ध्यात्वा। ॐ नमः शिवायेति दशधाजप्त्वा॥ अर्घ्य स्थापन कुर्यात्॥ भूमौ रक्तचन्दनेन त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मण्डल विलिख्य। ॐ एँ व्यापक मण्डलाय नमः। इति सम्पूज्य। ॐ मँ वह्निमण्डलाय दश कलात्मने नमः। शिवार्घ्यपात्राय नमः। इति आधारं सम्पूज्य ॐ फट्इतिअर्घ्यं पात्रप्रक्षालनम्॥ ततोऽर्घ्यं पात्रमाधारोपरि सँस्थाप्य

ॐ श्रीअर्कमण्डलायद्वादशकलात्मने शिवार्घ्य पात्राय नमः। इत्याधारोपरि पात्रं सम्पूज्य ततः ॐ नमः शिवायेति मूलमन्त्रेणार्घ्य पात्रं वारिणा परिपूर्य ॐ गङ्गे च यमुने चेति०। ततः ॐ संसोममण्डलात षोडशकलात्मने श्रीशिवार्घ्यामृताय नमः। इति सम्पूज्य नम इति। गन्धम् वषट् इति पुष्पम्। अक्षतांश्चक्षिपेत्॥ अंकुश मुद्रया सूर्य मण्डलात्तीर्थानावाह्य, मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्यधेनुमुद्रया ऽमृतीकृत्य योनिमुद्रयापरमीकृत्य सुगन्धादि द्रव्यं च निःक्षिपेत्। तेनार्घ्योदकेन सर्वासामग्रीं सम्प्रोक्ष्य, आपोहिष्ठेति मन्त्रेण, आत्मानं चाभिसिञ्चयेत्॥ ततः घण्टा पूजयेत्॥ ॐ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थंतु रक्षसाम्। सर्वभूतहितार्थाय घण्टानादंकरोम्यहम्। इति वादयित्वा घण्टां प्रपूजयेत्॥ ॐ सुपर्णो सि०॥ ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थ गरुडायनमः—आवाहयामि सर्वोपचारार्थे पाद्य गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि घन्टा मुद्रांच प्रदर्श्य॥ ततो वामे धूपपात्रं॥ दक्षिणे दीपपात्रं संस्थाप्य, पाद्यादीनि समर्पयामि, गन्धर्वदेवाय धूपपात्राय नमः। वन्हि दैवताय दीपपात्राय नमः। सम्पूज्य। आदौ गृह वास्तु पुरुषं पूजयेत्। गृहाभित्तौ, वा, भूमौ, अक्षतैः। ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवानः। पे यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्वः शन्नो चवद्विपदेशं चतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्व, गृह वास्तु पुरुषाय नमः। पाद्यादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ पूजयोऽसि मयावास्तो होमोचैरर्चनैः शुभैः। प्रसीद वह्निदेवेश देहि मे गृहजं सुखम्। ॐ वास्तु पुरुषाय नमः॥ ततः पीठ पूजां कुर्यात्पुष्पाक्षतैः ॐ मण्डूकायनमः। ॐ कालाग्नि रुद्रायनमः। ॐ आधार शक्तये नमः। ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ प्रपञ्चपद्माय नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ वाराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधार्णवाय नमः श्वेत द्वीपाय नमः। ॐ मणिमण्डपाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। ॐ स्वर्णसिंहासनाय नमः। ॐ सितछत्राय नमः। ॐ श्वेतचामरर्य्येय नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्य्याय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ सविन्नलायनमः। ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्योनमः। ॐ विकारमयकेशरेभ्यो०। ॐ पञ्चाशद्वर्णे बीजाढ्य कर्णिकायै नमः। ओं सं सत्वाय नमः॥ ओं रं रजसे नमः। ओं तं तमसे नमः॥ ओं मायायै नमः। ओं विद्यायै नमः। ओं सूर्येन्दु वह्निमण्डलेभ्यो नमः। ओं आत्मने नमः। ओं अन्तरात्मने नमः। ओं परमात्मने नमः। ओं ज्ञानात्मने नमः। ओं मायातत्वाय०। ओं विद्यातत्वाय०। कलातत्वाय०।

ओं परतत्त्वाय नमः ॥ ततः पूर्वातिक्रमेण । ओं वामदेवाय नमः । ओं ज्येष्ठाय० । ओं रुद्राय० । ओं कालाय० । ओं कालविकरणाय० । ओं बलाय० । ओं बलविकरणाय० । ओं बलप्रमथिने० । ओं सर्वभूतदमनाय० ओं मनोन्मनाय । मध्ये, ओं नमो भगवते सकल गुणात्मने अनंत पीठात्मने नमः ॥ अथावाहनम् ॥ ओं आगच्छ देवदेवेशलिङ्गेऽस्मिन् सुस्थिरोभव । स्थिरोभूत्वा महादेव पूजां गृहाण नमोऽस्तुते ॥ श्रीसांबसदाशिवाय नमः ॥ ततः नूतनमूर्तीनां प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ तद्यथा । ओं अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामथर्वाणि छन्दांसिक्रियामय वपुः प्राणाख्या देवता ओं बीजं ह्रीं शक्ति क्रौं कीलकं आसां नूतनमूर्तीनां प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ अनामिकाङ्गुष्ठयोगेन । पञ्चगव्येन पञ्चामृतेनवा । ॐ ओं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः एषां शिवस्य नूतन लिङ्गानां प्राणा इहप्राणाः ॥ पुनः अनेनैव मंत्रेण एषां शिवस्य नूतनलिङ्गानां जीव इह स्थितः ॥ पुनः एषां । शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि एषां शिवस्य नूतनलिङ्गानां सर्वेन्द्रियाणि । वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायु पस्थानि इहैवागत्य सुखचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ पुनर्वेदोक्त मन्त्रेण । ओं एतन्तेदेव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञम वतेनयज्ञपतितेन मामव । ओं मनोजूतिः० ॥ पश्चात्संस्कारसिद्धये पञ्चदश प्रणवाहुतीः कारयेत् ॥ यथा ओं ओं ओं इति पञ्चदश वार १५ पठेत् ॥ अनेन आसां नूतनमूर्तीनां जातकर्मगर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि । इति वदेत् ॥ प्रार्थना । ओं स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्समिहागतः । सान्निध्यंतु महादेव स्वार्चायां परिकल्पय ॥ अनेन प्राण प्रतिष्ठादि कर्मकृतेनश्रीसाम्बसदाशिवोदेवता प्रीयतां नमम ॥ ततः प्रतिकर्के प्रत्येक पञ्चामृतेनाभिषेकं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ दुग्धेन ओं आप्याय स्वेति गोतम ऋषि पयोदेवता ऊर्ध्ववक्त्रे ईशानाय क्षीरस्नाने विनियोग. ॥ ओं कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषा जीवनं परम् । पावनं यज्ञ हेतुश्च पय. स्नानार्थमर्पितम् ॥ ओं पय पृथिव्यां० ॥ स्नानार्थं दुग्धं समर्पयामि श्रीसांबसदाशिवाय नम. । एषः गन्धः ॥ एतानक्षतान् । इमानि पुष्पाणि समर्प० । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यंनिवेदयामि श्रीसांब० ॥ ततोऽर्चनं ओं ईशान सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपति शिवोमे अस्तु सदाशिवोम् ॥ ततश्शुद्धोदकम् । ओं आपो आभान्निति ब्रह्मगोतम ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः विश्वे देवादेवता आपः स्नाने विनियोगः । ओं आपो अस्मान्मातरः

शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु विश्व ठँ् हिरि प्रं प्रवहन्तिदेवी रुद्रद्रादिभ्यः शुचिरा पूतऐमि । दीक्षातंपसस्तिनूरसि त्वां तां शिवा ओं शगमां परिदधेभद्रं वर्णपुष्यन् स्नानार्थे शुद्धोदकं समर्पयामि श्रीसाम्व-सदा० ॥ एवं सर्वत्र । ततः दधिस्नानं ओं दधिकाव्णेति वामदेव ऋपि रनुष्टुप्छन्दः दधिदेवता पूर्ववक्रे वामदेवाय दधिस्नाने विनियोगः । ओं दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिनोमुखा करत्प्रणऽआयु ठँ् षितारिषत् ॥ ओं पयसस्तु समुद्भूतं० ॥ स्नानार्थे दधिं सम० श्रीसाम्स० एप गन्धः । एतानक्षतान् इमानि पुष्पाणि स० धूपमाघ्रा-पयामि । दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निपेदयामि, श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः । ततः शुद्धोदकं पूर्ववत्, वा, ॐ असोयस्ताम्रो० । दधिस्नानान्तरं शुद्धो-दकं समर्पयामि ॥ ततो ऽक्षतः । ॐ वामदेवायनमोज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठा-यनमोरुद्राय नमः काल यनमः कलविकरणाय नमोबलविकरणायनमो ॥ ततो घृतम् ॥ ओं घृतंमिमीक्षेतिगृत्समद ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः दक्षिण वक्रेअघोरायघृस्नाने विनियोगः । ओं घृतम्मिमीक्षे घृतमस्ययोनि घृते-श्रितो घृतंवस्यधाम । अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा घृतं वृषभ वक्षि-हव्यम् । ओं नवनीत समुत्पन्नं० स्नानार्थे घृतं सम० श्रीसांव० । एव गन्धः । एतानक्षतान् । इमानि पुष्पाणि । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं निवेदयामि । श्रीसाम्वशिवाय नमः । अक्षतैः ओं अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोर । तरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तुरुद्र रूपेभ्यः ॥ शुद्धोदकम् । ओं असोपस्ताम्रोऽ अ० । घृत स्नानानन्तरं शुद्धोदक सम० । श्रीसाम्व० ॥ अथ मधुस्नानम् । ओं मधुवातेति गोत्तमऋषि गायत्रीछन्दो मधुदेवता पश्चिमवक्रे तत्पुरुषाय मधुस्नाने विनियोगः । ओं मधुवाताऽऋतायते मधुक्षरन्तिसिंधवः माध्वीर्यः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोपसो मधुमत्पार्थिव ठँ् रजः मधुद्यौरस्तुना पिता मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तुसूर्य माध्वी-र्गावो भवन्तुनः । ओं तरुपुष्प समुद्भूतं० । स्नानार्थं मधु स० । श्री-सांव० ॥ एप गन्धः । एतानक्षतान् । इमानि पुष्पाणि । धूपमा० । दीपं दर्श० । नैवेद्यं निवेद० । श्री साम्वशिवाय० ॥ अक्षतैः ॥ ओं० तत्पुरुषायविद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् । शुद्धोदकं० । ओं असौय० । मधुस्नानानन्तरं शुद्धोदकं सम० । श्री साम्व० ॥ अथ-शर्करास्नानम् । ओं अपा ँ् रसमित्यस्य इन्द्रबृहस्पति ऋषी अनुष्टुप्छन्दः उत्तरवक्रे सद्यो जाताय शर्करास्नाने विनियोगः । ओं अपा ठँ् रस मुद्वय स ठँ् सूर्ये संत ँ् समाहितम् । अपा ठँ् रसस्य योरस स्तवोगृह्णाम्म्युत्तम-मुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्म्येपते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमं ॥

श्रीं इत्त सार समु० । स्नानार्थे शर्करां सम० श्री साम्ब० । एप गन्धः । एतानक्षतान । इमानि पुष्पाणि । धूपमा० । दीपं दर्श० । नैवेद्यं नि० । श्री साम्बसदाशिवाय० । अक्षतैः ॥ ओं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वैनमः । भवे भवे नाति भवे भवस्य मॉ भवद्भवाय नमः ॥ पुनः शुद्धोदकं । ओं असोयस्ताम्रोऽअ० । शर्करास्नानानन्तरं शुद्धोदकं स्म० श्री साम्बसदाशिवाय० ॥ ततः पुनरावाहनादि षोड़शोपचारैश्च पूजयेद्यथा॥ (उत्तरांग शिवपूजनम्) अथपुष्पांजलिगृहीत्वाऽऽवाहनं कुर्यात् । ओं आगच्छ भगवन्देव स्थानेचात्र स्थिरोभव । ओं नमः शम्भवाय० । इत्यावाह्य! ओं भूर्भुवः स्वः सॉग सपरिवार सायुध सशक्तिक श्रीसाम्बशिवे हाग च्छेह तिष्ठ इहसु प्रतिष्ठितो वरदोभव । अथासनम् । ओं रम्यंसु शोभन दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभं । आसनंच मयादत्तं गृहाण परमेश्वर । ओं यातेरुद्रशिवा० इत्यासनार्थे, पुष्पाणि समः श्री साम्ब० ॥ अथपाद्यम् । ओ३म् उष्णोदकं निर्मलंच सर्वसौगन्ध संयुतं । पादप्रक्षालनार्थायदत्तं ते प्रतिगृह्यताम् । ओं यामिषुंगिरि श० । इदं पाद्यं सम० श्रीसाम्ब० । अथार्घ्यम् । ओं अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह । करुणा करमेदेव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥ ॐ शिवेनवचसात्वा० अर्घ्योदकं मम० श्रीसाम्ब० ॥ अथाचमनीयम् । ॐ सर्वतीर्थसमायुक्तं सुरभिर्निर्मलं जलम् । आचम्यतां मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ओं अध्यवोचदधि० । इदमाचमनीयं सम० श्री साम्ब० । अथस्नानम् । ओं गंगा सरस्वतीरेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः स्नापितोसि मयादेव तथा शांति कुरुष्वमे । ओं असोयस्ताम्रो० । इदं जल समर्प० श्रीसाम्ब० । अथ गन्धोदकम् । ॐ मलया चलसं भूतं चन्दनागरु सम्भवम् । चन्दनं देव देवेश स्नानायं प्रतिगृह्यताम् ॥ ओं गन्धद्वारां दुराध० । गन्धादकं समर्प० श्रीसाम्बसदा० । पुनः शुद्धोदकं च समर्प० ॥ श्रीसाम्ब० । अथ हरिद्रादिचूर्णम् । ओं नाना सुगंधि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् । उद्वर्तनं मयदत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम ॥ उद्वर्त्तं नार्थमिदं हरि ओ३म् अठ् शहः शुनाने अठ् शुहः प्रयच्छनापकृणाधकृ+ । गन्धस्ते सोमरतु मशयर सोऽस्त्वन्युतः । पुनः शुद्धोदकं सम० श्रीसाम्ब० अथ पञ्चामृतम् । ओ३म् पयोदधिघृतं चैव मधुच शर्करायुतम् । पञ्चामृत मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ओ३म् पञ्चनद्यः सरस्वती० । स्नानार्थं पञ्चामृत सम० श्रीसाम्ब० । पुनराचमनीयं । ओ३म् पुनराचनीयं पदीयते नय सुरंगृहाणदेवदेवेश क्षमस्व मय येममा । ओ३म् अमोयोरुसर्पति० । पुनराचमनीयं सम० श्रीसाम्ब० । ततः पुरुष सूक्तेन, ओ३म सहस्रशीर्षेति० महाभिषेकं कुर्यात् ॥ ओ३म् अमृताभिषेकं तु ३ इति त्रिवारं

यदेत् ॥ अथयज्ञोपवीतम् । ओ३म् नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणदेवतामयम् । उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर । ओ३म् नमोऽस्तुनील० । यज्ञोपवीतं सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथवस्त्रम् ॥ ओ३म् सर्वभूताधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् । ओ३म प्रमुंचधन्वन० । वस्त्रं समर्प० श्रीसाम्ब ॥ अथगन्धम् । ओ३म श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । ओ३म् विज्यंधनु—क० ॥ इदं गन्धं सम० श्रीसाम्ब-सदा० ॥ अथाक्षतान् ॥ ओ३म् अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठकुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर । ओ३म् परिते-धन्वनोहेति० अक्षतान्निवेदयामि श्रीसाम्ब० ॥ अथपुष्पाणि ॥ ओ३म् माल्यादीनिसुगंधिनि मालत्यादीनिवैप्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ओ३म् यातेहेतिर्मीढुष्ट० ॥ पुष्पाणि सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथबिल्वपत्रम् । ओ३म् त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रंच त्रियायुधम् । त्रिजन्म पाप संहारमेकबिल्वं शिवार्पणम् । ओ३म् शिवभव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः । मायावा पृथिवीऽभिशोचीर्मान्तरिक्षं मावनस्पतीन् ॥ बिल्वदलानि सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथपुष्पमाला ॥ ओ३म् नाना सुगंधिभिर्युक्तं ऋतुजैः कुसुमैः शुभैः । मया या ग्रथिता माला गृहाण त्वं सुरेश्वर । ओ३म् यद्यशोप्सरसा ॥ इमां पुष्पमाला सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथसौभाग्यद्रव्यम् ॥ ओ३म् हरिद्रां कुङ्कुमं चैव सिंदूरं कज्जलान्वितम् सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाणाम्बिकया सह । ओ३म् अहिरिवभोगैः पर्य्येति० । सौभाग्यद्रव्यं सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथदूर्वांकुराणि ॥ ओ३म् हरिताःश्वेत वर्णा वा पञ्चत्रिपत्र संयुताः । दूर्वांकुराः मयादत्ताः गृहाण भवनायक । ओ३म् वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् । ओ३म् अवतत्य धनु० ॥ धूपमाघ्रापयामि श्रीसाम्ब० ॥ अथदीपम् ॥ ओ३म् आज्यं सवर्ति संयुक्तं वह्निनायो जितंमया दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह । ओ३म नमस्तेआयुधाया० ॥ दीपं दर्शयामि श्रीसाम्ब० ॥ अथनैवेद्यम् ॥ ओ३म् शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम् । उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । ओ३म् मानोमहान्त मुत्त० । ओ३म् प्राणाय स्वाहा०, ओ३म् अपानाय स्वाहा, ओं व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ओं सामानाय स्वाहा, एभिर्पञ्चभिर्मन्त्रैः ग्रासमुद्राः प्रदर्श्य । इदं नैवेद्यं निवेदयामि श्रीसाम्ब० । मध्येपानीयम् ॥ ॐ एलोशीर लवंगादि कर्पूर परिवासितम् । प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ वरुणस्योत्तं० ॥ पुनर्जलम् ॥ ओं-

मन्दाकिन्या जलं पूर्वकस्यापि विशुद्धये। सततं देवदेवेश गृहाण मम भक्तित.। ॐ शन्नोदेवीर भी०। उत्तरोपामनार्थं करमुख प्रक्षालनार्थं पुनर्जलंसम० श्रीसाम्ब०। अथताम्बूलम्। ॐ पूंगीफल महादिव्य नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिमयुक्तं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम् ओं यत्पुरुषे०.। मुख शोभनार्थमिदं ताम्बूलसम० श्रीसाम्ब०॥ अथ फलानि॥ ओं नानाविधानिपक्वानि फलानि स्वादु जानि च गृहाण देव देवेश प्रसन्नोभव देवविभो। ओं या फलानिर्य्याऽफ०॥ एतानिफलानि-सम०॥ श्रीसाम्ब०॥ अथदक्षिणाम्॥ ओं हिरण्य गर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसो। अनन्त पुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छमे॥ ओं हिरण्यगर्भ सम०॥ इमांदक्षिणा सम०॥ अथकर्पूरा र्तिक्यम्॥ ओं कदलीगर्भसम्भूत कर्पूरं च प्रदीपितम। आरार्त्तिक्यमहं कुर्वे पश्यमेवरदोभव॥ ओं इदं हवि प्रजन०॥ इदं कर्पूरार्तिक्यं दर्शयामि श्रीसाम्ब०॥ अथप्रदक्षिणा॥ ओं यानिकानिच पापानिजन्मान्तर कृतानि च। तानिसर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।। ओं मानस्तोकेतनये०। सर्व पापा पनुत्तये प्रदक्षिणा करोमि श्रीसाम्ब०॥ अथ पुष्पाञ्जलिम्। ओं नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिमयादत्ता गृहाण परमेश्वर॥ ओं नमस्तऽआयुधा०। इमापुष्पाञ्जलिसम० श्रीसाम्ब० तव सफला र्थम्॥ ओं रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानाम भयंकर्ता त्रातामव भवार्णवात्॥ वरदत्वं वरदेहि वाञ्छितं-वाञ्छितार्थद॥ इति मन्त्रेणार्घ्यस्थं पूगीफलं देवता सम्मुखे निवेद्य॥ ओं अनेन सफलार्घ्येणफलदोस्तुमदामम। इत्यर्घोदकेनदेवस्नापयेत्॥ अथ प्रार्थना॥ ओं भूत्यालेपनभूषित प्रविलसन्नेत्राग्निदीपाङ्कुर कण्ठेभ्रगपुष्पदाम सुभगो गङ्गा जलं पूरित। ईषनाग्र जटामपल्लवयुतो-स्मन्नाकमण्डपे शम्भुमङ्गल कुम्भता मुपगतो भूयात्मताश्रेयसे। श्रीसाम्ब शिवाय०। ततो नामावर्त्तेन पुष्पाक्षतैरष्टमूर्त्तीन्पूजयेत्॥ ॐ सर्वाय क्षिति मूर्त्तयेनम॥ ॐ भवायजलमूर्त्तयेनम॥ ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तयेनम। ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नम। ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नम॥ ॐ पशुपतये यजमान मूर्त्तये०। ॐ महादेवाय सोम मूर्त्तये०। ॐ ईशानाय सूर्य मूर्त्तये०॥ तत्र पूर्वे ॐ वामदेवाय नम। दक्षिणे ॐ अघोराय नम। पश्चिमे ॐ तत्पुरुषाय नम॥ उत्तरे ॐ ईशानाय नम। मध्ये-ॐ साम्ब सदा शिवाय नम॥ पाद्यादिभिर्निवेद्यान्तं संपूज्य॥ पुष्पं गृहीत्वा ॐ देव देव महादेव भक्तानुग्रहतत्पर। अनुग्राह्योऽस्मि देवेश परिवारार्चनाय मे॥

इमामावरणां पूजां गृहाण सुमुखोभव ॥ श्रीसाम्ब० ॥ अथ मधुपर्केण, वा शिवार्घ्यामृतेन पुष्पाक्षत युतैः तर्पयेत् ॥ अष्टदलेप्रागादिक्रमेण ॥ ॐ नन्दिने नमः ॥ इहागच्छेहतिष्ठ । नन्दीश्रीपादुकांपूजयामितर्पयामि नमः । ओं महाकालाय नमः । इहागच्छेहतिष्ट । महाकालंश्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः । ओं गणेश्वराय नमः । इहाग० । गणेश्वरं श्रीपादुका० । ओं वृषाभाय नमः । इहागच्छे० । वृषभश्रीपादुकां० । ओं भृगिरिटिनेनमः । इहाग० भृगिरिटिं श्रीपादु० । ओं स्कंदायनमः । इहाग० स्कन्दंश्रीपा० । ओं वीरभद्रायनमः । इहाग० वीरभद्रंश्रीपा० । ओं चण्डीश्वरायनमः । इहाग० । चण्डीश्वरं श्रीपादु० । ततोऽर्घ्यामृतम् ओं अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सल । भक्तयासमर्पयेत्तुभ्यमिदमावरणार्चनम् ॥ इदमाव रणार्चनं श्रीमान्यसदाशिवस्यदक्षिणहस्ते समर्पयामि । इति प्रत्यावरणार्चने । ततः पाद्यादिभिर्नैवेद्यान्तं सम्पूज्य । पुनस्तर्पयेत् ॥ मध्ये—ओं ईशानायनमः । इहागच्छेह० ईशानं श्रीपादुकांपूज० । ओं अघोरायनमः । इहाग० अघोरंश्रीपादु० । ओं सद्योजातायनमः । इहाग० सद्योजातंश्रीपा० । ओं अनन्तायनमः । इहाग० अनन्तंश्रीपादु० । ओं सूक्ष्मश्रीपा० । ओं शिवाय नमः । इहाग० शिवश्रीपा० । ओं एकपतयेनमः । इहाग० एकपतिश्रीपा० । रुद्रायनमः । इहाग० ॥ रुद्रंश्रीपा० । ॐ त्रिमूर्त्तयेनमः । इहाग० त्रिमूर्त्तिश्रीपा० । ॐ श्रीकण्ठायनमः इहाग० श्रीकण्ठंश्रीपा० । ॐ सत्पतये नमः । इहाग० । सत्पतिं श्रीपादु० । ॐ शान्त्यै नमः । इहाग० ॥ शान्तिं श्रीपा० । ॐ विद्यायैनमः इहागच्छे० । विद्यांश्रीपा० । ॐ निवृत्त्येनमः । इहाग० निवृत्ति श्रीपा० । ॐ प्रतिष्ठायैनमः । इहाग० प्रतिष्ठांश्रीपा० ॐ वामदेवायनमः । इहाग० वामदेवं श्रीपा० । ॐ ज्येष्ठायनम. । इहाग० । ज्येष्ठं श्रीपा० । ॐ श्रेष्ठाय नमः । इहाग० । श्रेष्ठं श्रीपा० । ओं रुद्रायनमः । इहाग० रुद्रंश्रीपा० । ॐ कालायनमः । इहाग० कालंश्रीपादुकां० । ॐ कलविकरणायनमः । इहा० कलविकरण श्रीपा० । ओं बलायनमः इहाग० बलश्रीपादु० । ॐ बलविकरणायनमः ॥ इहाग० बलविकरणश्रीपा० । ओं बलप्रमथिनेनमः ॥ इहाग० बलप्रमथिनंश्रीपा० । ओं सर्वभूतदमनायनमः । इहाग० । सर्वभूतदमनंश्रीपा० । ओं मनोन्मनायनमः । इहाग० मनो न्मनंश्रीपा० ॥ ततोऽर्घ्यामृतम् ॥ ओं अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणाग० ॥ ततः पाद्यादिभिर्नैवेद्यान्तं संपूजयेत् ॥ पुनस्तर्पयेत पूर्वे ओ हृदयायनमः । इहाग० हृदयंश्रीपा० । अग्नेय नंशिरसेस्वाहा । इहाग० शिरः श्रीपा० ।

ईशाने मं. शिखायै वषट् । शिखांश्रीपा० । नैर्ऋत्यां शिकवचाय-हुम । कवचंश्रीपा० वायव्ये वां नेत्रत्रयायवौषट् । नेत्रत्रयं श्रीपा । मध्ये—यै यस्त्रायफट् । अस्त्रं श्रीपा० ॥ ततः परितं ॥ ओं अणि-मायैनमः । इहाग० अणिमांश्रीपा० । ओं महिमायै नमः । इहाग० महिमांश्रीपा० । ओं लघिमायैनमः । इहाग० ल-घिमा श्रीपा० । ओं गरिमायैनम । इहाग० गरिमांश्रीपा० । ओं प्राप्त्यै नमः ॥ इहाग० प्राप्तिश्रीपादु० । ओं प्राकाम्यै नमः । इहाग० प्राकामीं-श्रीपा० । ओं इषितायै नम । इहाग० । इषितांश्रीपा० । ओं वसितायै-नमः । इहाग० वसितांश्रीपा० । ओं ब्राह्म्यै नमः । इहाग० ब्राह्मीश्रीपा० । ओं माहेश्वर्य्यै नमः । इहाग० माहेश्वरीं श्रीपा० । ओं कौमार्य्यै नमः । इहागच्छे० कौमारीश्रीपा० । ओं वैष्णव्यै नमः । इहाग० वैष्णवीं श्रीपा०॥ ओं वाराह्यै नम । इहाग० वाराहीश्रीपा० ॥ ओं रुद्राण्यै नमः ॥ इहाग० रुद्राणीश्रीपा० ॥ ओं चामुण्डायै नम. ॥ इहाग० चामुण्डांश्रीपा० ॥ ओं चण्डिकायै नम ॥ इहाग० ॥ चण्डिकांश्री० । पुनः प्रागादिक्रमेण ॥ ओं असितागभैरवायनम ॥ इहाग० असितांगभैरवंश्रीपा० । ओं रुरु भैरवायनमः ॥ इहाग० रुरुभैरवंश्रीपा० ॥ ओं चण्डभैरवायनमः । इहाग० चण्डभैरवंश्रीपा० ॥ ओं क्रोधभैरवायनमः ॥ इहाग० क्रोधभैरवश्रीपा० । ओं उन्मत्तभैरवायनम ॥ इहाग० उन्मत्त भैरवंश्रीपा० ॥ ओं कालभैरवाय-नमः ॥ इहाग० कालभैरव । श्रीपा० ॥ ओं भीषणभैरवायनम. ॥ इहाग०॥ भीषणभैरव श्रीपा० । ओं संहारभैरवायनमः ॥ इहाग० संहारभैरवं श्रीपा० । ततोऽर्घ्यांश्च नम् ॥ ओं अभीष्टसिद्धिम्मेदेहिशरण० ॥ पाद्यादिभि-र्नैवेद्यान्तं पूजयेत ॥ अथच । ओं भवायनमः ॥ इहाग० ॥ भवंश्रीपा० ॥ ओं ईशानायनम इहाग० ईशानं श्रीपा० । पशुपतये नम. । इहाग० । पशुपतिं श्रीपा० । ओं रुद्रायनमः । इहाग० । रुद्रंश्रीपा० । ओं उग्राय-नम । इहाग० । उग्रंश्रीपा० ॥ ओं भीमायनमः । इहाग० । भीमं श्रीपा० । ओं महादेवायनमः । इहाग० ॥ महादेवं श्रीपा० । ओं अनन्ताय नमः । इहाग० अनन्तंश्रीपा० । ओं वासुकिनेनम. । इहाग० वासुकिंश्रीपा० । ओं तक्षकायनम । इहाग० तक्षकंश्रीपा० । ओं कुलीरकायनमः । इहा-गच्छे० । कुलीरकंश्रीपा० । ओं कर्कोटकायनम. । इहाग० कर्कोटकंश्रीपा० । ओं शङ्खपालायनम । इहाग० शङ्खपालंश्रीपा० । ओं कम्बलायनम. । इहाग० कम्बलंश्रीपा० । ओं चतुरायनम । इहाग० चतुरंश्रीपा० ओं धनञ्जयायनम । इहाग० धनञ्जयंश्रीपा० । ओं पृथिव्यैनम । इहाग पृथिवीं-श्रीपा० । ओं ईश्वरायनमः इहाग० । ईश्वरंश्रीपादु० । ओं अर्जुनायनम. । इहाग० अर्जुनंश्रीपा० । ओं माधवायनम । इहाग० माधवं श्रीपा० ।

ओं भर्त्रेनमः । इहाग० भर्त्तारंश्रीपा० । ओं नलायनमः । इहाग० नलं-श्रीपा० । ओं रामायनमः । इहाग० रामंश्रीपादु० । ओं हिमवतेनमः । इहाग० हिमवन्तंश्रीपा० । ओं निषदायनमः । इहाग० निषदश्रीपा० । ओं ध्यानायनम. । इहाग० । ध्यानंश्रीपा० । ओं माल्यवतेनम । इहाग० । माल्यवन्तंश्रीपा० । ओं परिजातायनमः । इहाग० पारिजातंश्रीपा० । ओं हेमकूटायनमः । इहाग० हेमकूटंश्रीपादु० । ओं गन्धमादनाय नम. । इहाग० ।। गन्धमादनं श्रीपादुकां० । ततोऽर्घ्यामृतम् । ओं अभीष्टसिद्धिमेदेहिश० इदमावरणार्चनम् । श्रीसाम्ब-शिवस्य दक्षिणहस्ते निवेदयामि ।। ततः पाद्यादिभिः सम्पूज्य पुनरावरणम् ।। ॐ इन्द्रायनमः ।। इहाग० इन्द्रश्रीपा० ।। ओं अग्नये-नमः । इहाग० अग्निश्रीपा० । ओं यमायनम. इहाग० । यमंश्रीपा० । ओं निऋतयेनम. । इहाग० । निऋतं श्रीपा० ।। ओं वरुणायनमः । इहाग० वरुणंश्रीपा० । ओं वायवेनमः । इहाग० । वायुश्रीपा० । ओं कुबेरायनमः । इहाग० कुबेरं श्रीपा० ।। ओं ईशानायनमः । इहाग० ।। ईशानं श्रीपा० । ओं ब्रह्मणेनमः । इहाग० ब्रह्माणं श्रीपा० । ओं अनन्ताय नमः । इहाग० अनन्तश्रीपा० ।। पुनः प्रागा-दिक्रमेण ।। ओं वंवज्राय नम. । इहाग० । वज्रंश्रीपा० । ओं शंशक्त-येनमः ।। इहाग० शक्तिश्रीपा० ।। ओं दं दण्डायनमः ।। इहाग० दण्डंश्रीपा० ॐ खं खगायनमः ।। इहाग० खङ्ग श्रीपा० ।। ॐ पं पाशायनमः ।। इहाग० पाशंश्रीपा० ।। ॐ अंकुशाय नमः । इहाग० अकुंशश्रीपा० ओं ग गदायैनम ।। इहाग० गदांश्रीपा० ।। ओं शं शूलायनम. ।। इहाग० ।। शूलश्रीपा० । ओं पद्मायनमः इहाग० पद्म-श्रीपा० । ओं चक्रायनमः ।। इहाग० चक्रं श्रीपादु० ।। पुनस्त ।। त्क्रमेण ।। ओं ऐरावतायनमः ।। इहाग० ऐरावतं श्रीपा० ।। ओं मेषायनमः ।। इहाग० । मेषंश्रीपा० ओं महिषायनमः इहाग० महि-षंश्रीपा० ।। ओं प्रेतायनमः ।। इहाग० प्रेतंश्रीपा० ।। ओं मकराय-नमः ।। इहाग० मकरंश्रीपा० ।। ओं मृगायनमः ।। इहाग० मृगश्रीपा० ।। ओ३म वृषभायनमः ।। इहाग० वृषभंश्रीपा० ।। ॐ नरायनमः ।। इहाग० नरंश्रीपा० ।। ॐ गरुडायनमः इहागच्छ गरुडंश्रीपा० ।। ॐ हंसायनम. ।। इहाग० हंसंश्रीपा० ।। पुनः पूर्वादिदिक्षु ।। पूर्वे-विप्रवर्ण श्वेताभसहस्रफण युतशेषायनमः ।। इहाग० शेषंश्रीपा० । आग्नेय वैश्यवर्ण नीलाभ पञ्चशतं फणयुत तक्षकायनमः ।। इहाग० तक्षकंश्री-पादुकां० दक्षिणे-विप्रवर्ण कुङ्कुमाभ सहस्रफणयुत अनन्तायनमः । इहाग० अनन्तश्रीपा० ।। नैऋत्यां—क्षत्रियवर्ण रक्ताभसप्तशत फण-

युतवासुकिने नम ॥ इहाग० वासुकिन श्रीपा ॥ पश्चिमे विप्रवर्ण पीताभपञ्च शतफणयुतशङ्खपालायनम ॥ इहाग० शङ्खपाल श्रीपादु० ॥ वायव्ये—वैश्यवर्ण नीलाभ शतफणयुत पद्मायनम ॥ इहाग० पद्म श्रीपा० ॥ उत्तरे शूद्रवर्ण श्वेताभत्रिशत फणयुतकर्कोटकायनम । इहाग० । कर्कोटक श्रीपा० ॥ ततोऽर्घ्यामृतम् ॥ ॐ अभीष्टसिद्धिमे देहि शर० ॥ इदमावरणार्चनम् । ओं तत्सत्सदाम्बसदाशिवस्य दक्षिण हस्ते समर्पयामि ॥ पुन पूर्ववत्पाद्यादिभिर्नैवेद्यान्त पूजयेत् ॥ तत गन्धपुष्पाक्षतयुत जलेनतर्पयत् ॥ ओं भव देव तर्पयामि ॐ शिवदेवंतर्पयामि । ओं ईशानदेव तर्पयामि । ओं पशुपतिदेवतर्पयामि । ॐ रुद्रदेवंतर्पयामि ओं उग्रदेवतर्पयामि ओं भीमदेवंतर्पयामि । ॐ महान्तदेव तर्पयामि । ॐ देवदेव तर्पयामि ॥ तत ॥ ॐ ज्येष्ठायनम इतिजलम् । ओं श्रेष्ठायनम इतिमधुपर्कम् । ओं कालायनमइतिगन्धम् । ॐ कलविकरणायनम इति दीपम् । ॐ भवोद्भवायनम इति नैवेद्यम् ॥ ततोऽष्टपुष्पाञ्जलिनिवेदयेत् ॥ ध्यानपूर्वकम् ॥ ओं भवायदेवायनम ओं सर्वायदेवायनम । ओं ईशानायदेवायनम । ओं पशुपतयेदेवायनम । ओं रुद्रायदेवायनम । ओं उग्रायदेवायनम । ओं भीमायदेवायनम । ओं महतेदेवायनम ॥ तत ॥ ओं भवस्यदेवस्यपत्न्यैनम । ओं सर्वस्य देवस्य पत्न्यैनम । ओं ईशानस्यदेवस्य पत्न्यैनम । ओं पशुपते देवस्य पत्न्यै नम । ओं रुद्रस्यदेवस्य पत्न्यैनम । ओं उग्रस्यदेवस्यपत्न्यैनम । ओं भीमस्य देवस्य पत्न्यैनम । ओं महतोदेवस्यपत्न्यैनम ॥ तत धूप दीपनी राजनचामरादिभि सम्पूज्य ❀ प्रार्थयेत ॥ ओं वन्दे महेश सुरसिद्ध सेवित भक्तैर्सं पूजित पादपद्मम् । विद्याप्रदभक्तजनैक वन्द्याध्यायेद्धिवंदामङ्गलं महेशम् । योयोगमाया प्रतितोहिपुंसा ज्ञान विवक्ते विलयस्तुनित्यम् । संसारयनाथं कलिकल्मषघ्नंध्यायेदिदं लिङ्गगत महेशम् ॥ श्रीमत्साम्ब सदा । शिवार्पणमस्तु ॥ ततोऽष्टोत्तरशत ओं नम शिवायेति मन्त्रम् जपेत् । पुष्पाञ्जलिंकुर्यात् ॥ ओं नम ओं धातुरूपाय नमोऽक्षर वपुषे । नमोनादात्मने तुभ्यनमो बिन्दुकलात्मने । ॐ नमस्ते लिङ्गरूपाय नानारूपायतेनम । त्व माताखर्वलोकाना त्वमेव जगतापिता । ॐ त्वधाता त्व सुहृन्मित्रसर्वप्रिय प्रपितामह । नमस्ते भगवन् रुद्र भास्कर मितेजसे । ॐ भीमाय व्योम रूपाय पशुपतयेनमः । महादेवाय सोमाय अमृताय नमास्तुते । ॐ उग्राय यजमानाय नमो । फर्मकर्णि

❀ शिव महत्व जानामि कमल द्रव्य चार्चयेत् ॥ यथेष्टरूपम ॥

लिङ्गानांशिवरूपाणां यन्मया पूजनंकृतम्। तेन त्वं भगवान् रुद्र वाञ्छितार्थं प्रयच्छमे। ॐ तत्सत्साम्बसदाशिवार्पणमस्तु। ततः उत्थाय पुष्पपूरितांजलिं कृत्वा॥ ओ३म् यज्ञेनयज्ञ मयजन्त देवास्तानिधर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमान सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने, नमो वयन्वै श्रवणाय कुर्म हे। समेकामान् काम कामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणो ददातु। कुबेरायवश्रवणाय महाराजायनमः॥ ओं स्वस्ति, साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ट्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्य मयं समन्त पर्यायीस्यात्। सार्वभौम सार्वायुष आन्तादापरार्द्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्य्यन्ता या एक राडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिविष्टारोमरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य काम प्रेविश्वेदेवाः समासदः॥ ओं विश्वत शचक्षुरुतः विश्वतो मुखो विश्वो तो बाहुरुत विश्वस्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतः त्रैर्द्यावाभूमीं जनयन् देवऽएकः॥ ओं साम्बसदा शिवायनम इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य॥ प्रदक्षिणांकुर्यात्॥ ओं सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः देवायद्यज्ञं तन्वानाऽअवन्धन्पुरुषंपशुम्। ओं यानिकानिच०॥ अथक्षमापनम्॥ ओं आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजांचैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥ अन्यथाशरणं नास्ति त्वमेव शरणंमम। तस्मात्कारुण्यं भावेनक्षमस्वजगदीश्वर गतं पापं गतं दुःखं गतंदारिद्र्यमेवच। आगता सुख सम्पत्तिः पुण्यायाश्च तवदर्शनात्॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तुमे॥ यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतांदेव प्रसीद करुणानिधे॥ ओं करचरण कृतंवा कायजं कर्मजंवा श्रवण नयनजंवा मानसं वापराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥ ओं त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव भ्राता च सखा त्वमेव। त्वमेवविद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममदेवदेव॥ ओं साम्बसदाशिवायनमः॥ ततः जलसंप्रोक्षणम्॥ ओं शतं भवति शतायुर्वैपुरुषः शतंद्रियरेवेन्द्रियं वीर्य्यं मात्मंघत्ते ओं स्वस्ति मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु। आराध्यदेवताः। सुप्रसन्नाः वरदाः भवन्तु। इच्छितमनकामना संसिद्धिरस्तु। ब्राह्मणाम् युक्तयास्तु॥ —इतिशिवपूजनम्।

नीराजनम्।

ओं जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीश, शिव० त्वन्मां पालय नित्यं, कृपया जगदीश॥ शिव ओं हर हर हर महादेव॥१॥ कैलाशे-

गिरिसिखरे, कल्पद्रुम विपिने शिव० ॥ गुञ्जति मधुकर पुञ्जे कुञ्जवने गहने ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥२॥ कोकिल कूजित मञ्चति हंसावन ललिता शिव० ॥ विदधति कला पलास्यं मोदान्मद सहिता: ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥३॥ तस्मिल्ललित सुदेशे, शालामणि रचिता, शिव० ॥ तन्मद्धे हरनिकटेगौरी मुद सहिता ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥४॥ भूषण भूषितदेहा रमयति निज रमणम् ॥ शिव० ॥ ब्रह्मेन्द्रादि सुरेशै राधित सञ्चरणम् ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥५॥ विबुध वधूवहु नृत्यति, हलया हुलादयुतम् ॥ शिव० ॥ गायति किन्नर-राजः सप्तस्वर रचितम् ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥६॥ धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग मारभते, शिव० ॥ क्वणक्वण ललितं वेणु मधुरं नादयते ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥७॥ रुणु रुणु चरणे रचयति, नूपुरसुजल्पलितम् ॥ शिव० ॥ चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिकताम् ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥८॥ तां तां लुप चुप तालं वादयते ॥ शिव० ॥ अङ्गुष्ठाङ्गुलिनादं लास्ये कृतं कुरुते । शिव ओं हर हर हर महादेव ।९॥ कर्पूरद्युति गौर पञ्चानन सहितम् । शिव० ॥ त्रिनयन शशिधर मौलिं, विषधर कण्ठ युतम् ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥१०॥ सुन्दर जटा कलापं, पावक युत भालम् ॥ शिव० ॥ डमरु त्रिशूल पिनाकंकर धृत नृक पालम् । शिव ओं हर हर हर महादेव ॥११॥ शङ्ख निनादं कृत्वा, झल्लरि मारभते ॥शिव०॥ नीराजयते ब्रह्मा वेदार्थं चि ते ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥१२॥इति मृदु चरण सरोजे, हृत्कमले धृत्वा ॥शिव०॥ अवलोकयति महेशं कामादि हित्वा ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥ १३ ॥ मानवकपाल मालं पन्नगधर कलितम् ॥ शिव० ॥ वाम विभागे गिरिजा, रूपं बहुललितम् ॥ शिव ओइम् हर हर हर महादेव ॥ १४ ॥ सुन्दर शरीरे शितशिव, कृतभस्माऽऽभरणम् ॥ शिव ॥ इति वृषभध्वजरूपं तापत्रय हरणम् ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥ १५ ॥ ध्यानं सन्ध्या समये शुचि हृदये धृत्वा ॥ शिव० स्थाणुं गिरिजानाथं गिरिशं अभि नत्वा ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥ १६ ॥ प्रति दिन मेव पठनं भक्त्या यः कुरुते शिव० ॥ शिव सायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥ १७ ॥ ओं इदं ७ हविः प्रजननम्मेऽ अस्तु दशवीरं ७ सर्व-गण ७ स्वस्तये ॥ आत्म सनि प्रजासनि पशुसनि लोक सन्य भयसनि ॥ अग्नि ७ प्रजाम्बहुलाम्मे करो त्वन्नं पयोरेतोऽस्मासुधत्त ॥ १८ ॥ ओं भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आरात्रिक्यं दर्शयामि । ओं सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः देवायद्यज्ञ न्तन्वानाऽ-

अवधनम्पुरुषम्पशुम १ पापानि सर्वाणि पदेपदे या हरत्यहो तत्क्षणमेवनॄणाम्। प्रदक्षिणां तांपरि भक्ति भावात् समाचरेदेव १ मयि प्रसीद ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवायनमः प्रदक्षिणां समाचरामि—इति ॥

श्रीमद्रुद्राऽभिषेकप्रयोगः।

आचम्य प्राणनायम्य शान्तिसूक्तं पठित्वा सुमुखश्चेत्यादि गणपतिस्मरणं कृत्वा सङ्कल्प-अद्येत्यादि० एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममाऽऽत्मनः यजमानस्य वा श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा झटिति सर्वव्याधिनिरासपूर्वकं सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रदेवता प्रीत्यर्थं यथाज्ञानेन यथामिलितोप चारद्रव्यैः षडङ्गन्यासपूर्वकं पुरुषसूक्तेन ध्यानाऽवाहनादि षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च सकृद्रुद्रावर्त्तनेनाभिषेक (रुद्रं महारुद्रमतिरुद्रं वा) पूर्वकं पूजनमहं करिष्ये ॥

षडङ्गन्यासाः-मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिऋषिः बृहतीच्छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे जपे विनियोगः ॥

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टय्यज्ञ ष्ठ समिमन्दधातु ॥ व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो ३म्प्रतिष्ठ ॥ ओं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ अबोधग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता शिरोन्यासे जपे विनियोगः॥ ओं अबोध्यग्निः ष्ठ समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम् ॥ युह्वाऽइवप्रव यामुज्जिहानाः ष्ठ प्रभानवः सिस्रतेनाकमच्छ ॥ ओं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता शिखान्यासे जपे विनियोगः ॥ ॐ मूर्द्धा नन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ॥ कविं ष्ठ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥ ओं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ मर्म्माणित इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः विराट्छन्दः मर्म्माणि देवता कवचन्यासे जपे विनियोगः ॥ ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् । उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्ते कृणोतुजयन्त्वानुदेवा मदन्तु ॥ ओं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा देवता नेत्रन्यासे जपे विनियोगः ॥ ओं ओं व्विश्वत श्चक्षुरुत व्विश्वतो मुखो व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएक ॥ ओं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ मानस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, जगतीछन्दः एकरुद्रो

देवता अघोरन्यासे जपे विनियोगः। ओं मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिष ऽः ॥ मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्त ऽः सदमित्त्वा हवामहे ॥ ओं अस्त्राय फट् ॥६॥

इति न्यासान् कृत्वा षोडशोपचारैः साम्बशिवं सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं समर्प्य (रुद्रमन्त्रैः) अविच्छिन्नजलधारया अभिषेकः कार्यः॥ क्षमापनम्—आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ अर्पणम्—अनेनावाहनादिषोडशोपचारैः अन्योपचारैश्चयथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पूजनाख्येन कर्मणा ओं भूर्भुवः स्वः श्रीभवानीशङ्करदेवताः प्रीयन्तान्न मम ॥ ओं तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

अभिषेकविचारः—

'षेडावेदाङ्गिरामश्च रामद्विकैकम्। द्वौ द्वौ पृथग्भिर्मन्त्रैस्तु नमस्कारात्मकाः स्मृताः ॥ वाजश्च सत्यमुक्त्वां इमावाग्निरंशुम् तथाग्निकः ॥ एका चैव चतस्रश्च त्र्यश्विनाज इति क्रमः ॥ एवं चमकानेकादशधा विभज्य एकैकमार्गं नमकेषु संयोज्य पठेत्स 'रुद्र' ॥ तैरेकादशरुद्रैः 'लघुरुद्रः' तैरेकादशगुणैः 'महारुद्रः' ॥ तैरेकादशावृत्तैः 'अतिरुद्रः' । इति॥

रुद्रसंख्याफलं देवि शृणुष्व वदतो मम।
एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥
संकल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यासाङ्गेषु सकृत् सकृत्।
स्नात्वा पञ्चामृतेनैव ध्यानपूर्वं शिवं जपेत् ॥ २ ॥
बालग्रहोपशान्त्यर्थमेकावृत्तिमुदीरयेत्।
वमनगोरशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३ ॥
महोपशान्त्यै कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने ?
महामये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ४ ॥
नवावृत्त्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत्।
राजवश्ये विभूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ५ ॥
रुद्रैस्त्रिभिः कामसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते।
रुद्रैः पञ्चभिः शत्रुरेव तथा स्त्री वश्यतामियात् ॥ ६ ॥
रुद्रैः सप्तभिः सौख्यं स्याच्छ्रियमाप्नोति मानवः।
नवरुद्रैः पुत्रपौत्रधनधान्यसुखान्वितः ॥ ७ ॥
राजभीतिविनाशाय वैरस्योच्चाटनाय च।
धर्मार्थकाममोक्षार्थं सम्पदाय ततः परम् ॥ ८ ॥

अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशःश्रिये ।
राजवृद्धप्रदेयाय महारुद्रैकसंख्यया ॥ [illegible] ॥
त्रिभिश्चैव महारुद्रैरसाध्यसाधनाय च ।
पञ्चभिश्चमहारुद्रैः राज्यकामः प्रसाध्यते ॥ १० ॥
सप्तभिश्चमहारुद्रैः सप्तलोकः प्रसाध्यते ।
नवभिश्च महारुद्रैः पुनर्जन्म न जायते ॥ ११ ॥
अतिरुद्रैकसंख्येन देवत्वं आप्नुयान्नरः ।
डाकिन्यादिभये प्राप्ते एकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ १२ ॥
भूतप्रेत पिशाचानां भये च गुणवृत्तितः ।
महद्रोगदशायाञ्च पञ्चावृत्तिं न संशयः ॥ १३ ॥
ज्वरातिसारवोपादौ वातपित्तकफादिषु ।
सर्वरोगापशान्त्यर्थं सप्तावृत्तिन्न संशयः ॥ १४ ॥
सर्वार्थसाधनायैव नवावृत्तिं पठेन्नरः ।
असाध्य रोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणे ॥ १५ ॥
अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्याय वै पुनः ।
सर्वशान्तिर्भवेत्तत्र रुद्रावृत्त्या न संशयः ॥ १६ ॥
यथा तथा–पद्धतौ का दर्शिनीकृती ।
रुद्रएकादशरुद्रतः एका वृत्तिरे आभि महारुद्रस्य कथ्यते ।
एकादश महारुद्रैः रतिरुद्र इति स्मृतः ॥ १७ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ हरिःॐ ॥ गणानान्त्वागणपतिं [illegible] हवा-
महे प्रियाणान्त्वाप्रिय पतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिꣳ
हवामहेव्वसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भधमा त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥ १ ॥
गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह ॥ बृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिꣳ
शम्यन्तुत्वा ॥ २ ॥ द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदायाश्चषट्पदाः ॥
विच्छन्दायाश्चसच्छन्दाः सूचीभिꣳ शम्यन्तुत्वा ॥ ३ ॥ सह-
स्तोमाः सहच्छन्दसऽआवृतꣳ सहप्रमाऽऋषयः सप्तदैव्याः ॥
पूर्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽअन्वालेभिरेरथ्यो नरश्मीन् ॥ ४ ॥ ॐ
यज्जाग्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति ॥ दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्यो-
तिरेकन्तन्मेमनꣳ शिवसंकल्पमस्तु ॥ ५ ॥ येनकर्म्माण्यपसोमनी-
षिणोयज्ञेन कृण्वन्तिविदथेषुधीराः ॥ यदपूर्व्वंयक्षमन्तः प्रजानान्त-
न्मेमनꣳ शिव संकल्पमस्तु ॥ ६ ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्य

ज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्रियतेतन्न्मेमनः शिवसङ्कल्पम स्तु ॥ ७ ॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्व्वम् ॥ येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्न्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ८ ॥ यस्मिन्नृच ऽः सामयजू छ षियस्मिन्प्रतिष्ठिठतारथनाभाविवारा ऽः यस्मिंश्चित्त छ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्न्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ९ ॥ सुषारथिरश्वानिवयन्न्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽइव ॥ हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्न्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ १० ॥ इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

हरिः ॐ ॥ सहस्रशीर्षापुरुष ऽः सहस्राक्ष सहस्रपात् ॥ सभूमि छ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुष ऽः एवेद छ सर्व्वंय्यद्भूतंय्यच्चभाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्च पूरुष ऽः पादोस्यव्विश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुष ऽः पादोस्येहाभवत्पुनः ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ ४ ॥ ततो व्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुष ऽः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुर ऽ. ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽः सम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रेव्वायव्व्यानारण्याग्ग्राम्याश्चये ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋच ऽः सामानि जज्ञिरे ॥ छन्दा छ सि जज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्मादश्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादत ऽः गावोह जज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥ ८ ॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रत ऽः ॥ तेन देवाऽअयजन्त साद्ध्याऽऋषयश्चये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषँव्व्यदधु ऽ. कतिधाव्व्यकल्पयन ॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते ॥ १० ॥ ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृत ऽः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्या छ शूद्रोऽअजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षो ऽः सूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष छ शीर्ष्णोद्यौ ऽः समवर्त्तत ॥ पद्भ्यांभूमिर्दिश ऽः श्रोत्रात्तथालोकाँ २ ऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ॥ व्वसन्तोस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्म ऽः शर·

द्धयि ऽः ॥ १४ ॥ सप्तास्यांसन्परि धयस्त्रि ऽः सप्तसमिधंः कृताऽः ॥
देवायद्यज्ञन्तंन्वानाऽअ्ब्रधन्न्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेनयज्ञमयज-
न्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानंः सचन्त
यत्रपूर्वेसाध्याः ऽः सन्ति देवा ऽः ॥ १६ ॥ अद्भ्य ऽः सम्भृत ऽः
पृथिव्व्यैरसाच्चविश्वकर्म्मण ऽः समवर्त्तताग्ग्रे ॥ तस्यत्वष्टा विद-
धद्रूपमेतितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्ग्रे ॥ १७ ॥ व्वेदाहमेतम्पुरुषम्म-
हान्तमादित्यवर्णन्तमसः ऽः परस्तात् । तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिना-
न्य ऽः पन्थाव्विद्यतेयनाय ॥ १८ ॥ प्रजापतिश्चरतिगर्ब्भेऽ अन्तर-
जायमानो बहुधाव्विजायते ॥ तस्ययोनिम्परि पश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हत-
स्थुर्भुवनानि व्विश्वा ॥ १९ ॥ यो देवेभ्यऽ आतपति यो
देवानाम्पुरोहितः ॥ पूर्व्वोयोदेवेभ्यो जातो नमोरुचायब्राह्मये ॥ २० ॥
रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तो देवाऽअग्ग्रेतदब्रुवन् ॥ यस्त्वैवम्ब्राह्मणोव्विद्या-
त्तस्यदेवा ऽअसन्वशे ॥ २१ ॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहो-
रात्रेपार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्म
ऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ २२ ॥ इति रुद्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

हरिःॐ ॥ आशु ऽः शिशानोव्वृषभोनभीमोघनाघन ऽःक्षोभणश्चर्ष-
णीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिष ऽ एकवीर ऽः शतꣳसेना ऽ अज-
यत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥ सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्कारेणदु-
श्च्यवनेन धृष्णुना ॥ तदिन्द्रेणजयततत्सहद्ध्वंयुधोनर ऽ इषुहस्ते-
नव्वृष्णा ॥ २ ॥ सऽइषुहस्तै ऽः सनिषङ्गिभिर्व्वशीस ꣳ स्रष्टासयुधऽ
इन्द्रोगणेन ॥ सꣳसृष्टजित्सोमपाबाहुशर्द्ध्युग्रधन्वाप्रतिहि-
ताभिरस्ता ॥ ३ ॥ बृहस्पतेपरिदीयारथेन रक्षोहामित्रा-
२॥ऽअपबाधमान ऽः ॥ प्रभञ्जन्सेना ऽः प्रमृणोयुधा-
जयन्नस्माकमेद्ध्यवितारथानाम् ॥ ४ ॥ बलविज्ञायस्थविर-
ऽः प्रवीर ऽः सहस्वान्वाजी सहमानऽ उग्र ऽः ॥ अभिवीरोऽ अभिसत्त्वा
सहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥ ५ ॥ गोत्रभिदङ्गोविदंव्वज्ज्र-
बाहुञ्जयन्तमज्ज्मप्रमृणन्तमोजसा ॥ इमꣳसजाताऽ अनुवीरयद्ध्व-
मिन्द्रꣳसखायो ऽ अनुसꣳरभद्ध्वम् ॥ ६ ॥ अभिगोत्राणि सहसा
गाहमानोदयोव्वीर ऽः शतमन्न्युरिन्द्रः ॥ दुश्च्यवन ऽः पृतनाषाडयुद्ध

प्रोस्माकꣳ सेनाऽअवतु प्रयुत्सु ॥ ७ ॥ इन्द्रऽ आसान्नेता बृहस्पति-
र्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीना-
म्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ८ ॥ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽ आदित्या-
नाम्मरुताꣳ शर्द्ध उग्रम् ॥ महामनसाम्भुवनच्यवानाङ्घोषो देवानाञ्ज-
यतामुदस्थात् ॥९॥ उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनाम्मामकानाम्मनाꣳ-
सि ॥ उद्वृत्रहन्वाजिनाँ वाजिनान्युद्रथानाञ्जयतां यन्तु घोषाः ऽ
॥ १० ॥ अस्माकमिन्द्रऽ समृतेषु ध्वजेष्वस्माकँय्याऽइषवस्ता जयन्तु ॥
अस्माकँव्वीराऽउत्तरे भवन्त्वस्माँ२ ॥ऽ उ देवाऽ अवता हवेषु ॥ ११ ॥
अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ॥ अभि प्रेहि निर्द-
ह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥ १२ ॥ अवसृष्टा परापत शर-
व्ये ब्रह्म सꣳशिते ॥ गच्छामित्रान्प्र पद्यस्व मामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः ऽ
॥ १३ ॥ प्रेता जयता नरऽ इन्द्रो वः ऽ शर्म्म यच्छतु ॥ उग्रा वः सन्तु बाह-
वोऽनाधृष्या यथासथ ॥ १४ ॥ असौ या सेना मरुतः ऽ परेषामभ्येति नऽ
ओजसा स्पर्द्धमाना ॥ ताङ्गूहत तमसापव्रतेन यथामीऽ अन्योऽ अन्य-
न्न जानन् ॥१५॥ यत्र बाणाःऽ सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽ इव ॥ तन्नऽ इन्द्रो
बृहस्पतिरदितिः ऽ शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु ॥१६॥ मर्म्माणि
ते वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् । उरोर्वरीयो वरुण-
स्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु ॥१७॥ इति रुद्रे तृतीयोऽध्याय ॥३॥

हरि ॐ ॥ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यम्मध्वायुर्दधद्यज्ञपता-
वविहुतम् ॥ वातजूतो योऽअभिरक्षति त्मना प्रजाः ऽ पुपोष पुरुधा विरा-
जति ॥१॥ उदु त्यञ्जातवेदसन्देवँव्वहन्ति केतवः ॥ दृशे विश्वाय
सूर्य्यम् ॥ २ ॥ येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तञ्जनाँ ॥ऽ अनु ॥ त्वँव्वरु-
ण पश्यसि ॥३॥ दैव्यावध्वर्यूऽआगतꣳ रथेन सूर्य्यत्वचा ॥ मध्वा यज्ञ-
ꣳ समञ्जाथे । तम्प्रत्नथा ऽयँव्वेनश्चित्रन्देवानाम् ॥४॥ तम्प्रत्नथा
पूर्व्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदꣳ स्वर्व्विदम् ॥ प्रतीचीनँव्वृज-
नन्दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्तमनु यासु वर्द्धसे ॥५॥ अयँव्वेनश्चोदयत्पृश्नि-
गर्भा ज्योतिर्ज्जरायू रजसो विमाने ॥ इममपाꣳ सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्न
विप्रा मतिभी रिहन्ति ॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य वरुण-
स्याग्नेः ॥ आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थु-

पंश्च ॥ ७ ॥ आनऽइडाभिर्विदथेसुशस्तिव्विश्वानरऽः सविता देवऽ
एतु ॥ अपियथायुवानोमत्सथानो व्विश्वञ्जगदभिपित्वेमं
नीषा ॥ ८ ॥ यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य ॥ सर्व्वन्त-
दिन्द्रतेव्वशे ॥ ९ ॥ तरणिर्व्विश्वदर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ व्विश्वम-
माभासिरोचनम् ॥ १० ॥ तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तो-
र्व्वितत ऽः सञ्जभार ॥ यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्रीवा-
सस्तनुतेसिमस्मै ॥ ११ ॥ तन्मित्रस्यव्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्क
कृणुतेद्योरुपस्थे ॥ अनन्तमन्यद्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्यद्धरितऽः
सम्भरन्ति ॥ १२ ॥ वण्महाँ२ऽ असिसूर्य्यबडादित्यमहाँ२ऽ
असि ॥ महस्तेसतोमहिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२ऽअसि ॥ १३ ॥ बट्
सूर्य्यश्रवसामहाँ२ऽ असिसत्रादेवमहाँ२ऽअसि ॥ मन्हादेवानाम-
सूर्य्यः ॥ पुरोहितोव्विभुज्ज्योतिरदाभ्यम् ॥ १४ ॥ श्रायन्त-
ऽइवसूर्य्यंव्विश्वेदिन्द्रस्यभक्षत ॥ व्वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्रति-
भागन्नदीधिम ॥ १५ ॥ अद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्यनिरंहसः पिपृ-
तानिरवद्यात् ॥ तन्नोमित्रोव्वरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथि-
वीऽ उतद्यौः ॥ १६ ॥ आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृत-
म्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ १७ ॥
इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

हरिः ॐ ॥ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः बाहुभ्यामु-
तत्तेनमः ॥ १ ॥ याते रुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयान-
स्तन्वा शन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥ यामिषुङ्गिरिशन्त-
हस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीः पुरुषञ्जगत्
॥ ३ ॥ शिवेनत्वचसात्वागिरिशाच्छावदामसि ॥ यथानः सर्व्व-
मिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ता-
प्रथमोदैव्योभिषक् ॥ अहींश्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चयातुधा-
न्योधराचीः परासुव ॥ ५ ॥ असौयस्ताम्रोऽअरुणऽउतबभ्रुः
सुमङ्गलः ॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशो
वैषाꣳहेडऽईमहे ॥ ६ ॥ असौयोवसर्पतिनीलग्रीवोव्वि-
लोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः

सदृष्टोमृडयातिन ऽः ॥ ७ ॥ नमोऽस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे ॥
अथोये ऽ अस्यसत्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः ॥ ८ ॥ प्रमुञ्चधन्व-
नस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ॥ याश्चतेहस्त ऽ इषव ऽः पराताभग-
वोवप ॥ ९ ॥ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्ल्योबाणवाँ २ ॥
ऽउत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधि ऽः ॥ १० ॥ याते
हेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्म-
यापरिभुज ॥ ११ ॥ परितेधन्वनोहेतिरस्मान्वृणक्तुविश्वतः ॥
अथोय ऽइषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहितम् ॥ १२ ॥ अवतत्यधनु
ष्ट्व ँ सहस्राक्षशतेषुधे । निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुम-
नाभव ॥ १३ ॥ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे ॥ उभा-
भ्यामुततेनमोबाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ १४ ॥ मानोमहान्तमुतमानोऽ-
अर्ब्भकम्मानऽ उक्षन्तमुतमान ऽउक्षितम् ॥ मानोवधी ऽः पितर-
म्मोतमातरम्मानः प्रियास्तन्न्वोरुद्ररीरिष ऽः ॥ १५ ॥ मानस्तोके
तनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानो ऽ अश्वेषुरीरिष ऽः ॥ मानोवीरा-
न्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्त ऽः सदमित्त्वाहवामहे ॥ १६ ॥ नमोहि
रण्यबाहवे । सेनान्ये दिशाञ्चपतये नमो नमो वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्य
ऽः पशूनाम्पतये नमोनमः शष्पिञ्जरायत्विषीमते पथीनाम्पतये नमो
नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमोनमोबभ्लुशाय ॥ १७ ॥
नमोबभ्लुशाय । व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्यहेत्यैजगता-
म्पतयेनमोनमो रुद्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः नमः
सूतायाहन्त्यैवनानाम्पतये नमोनमोरोहिताय ॥ १८ ॥ नमोरोहिताय-
स्थपतयेवृक्षाणाम्पतयेनमो नमो भुवन्तयेवारिवस्कृतायौषधीनाम्पतयेन-
मोनमोमन्त्रिणेवाणिजायकक्षाणाम्पतये नमो नमः ऽउच्चैर्घोषायाक्र-
न्दयते पत्तीनाम्पतयेनमोनमः कृत्स्नायतया ॥ १९ ॥ नमः कृत्स्नायतया ॥
धावतेसत्वनाम्पतयेनमोनम ऽ सहमानायनिव्याधिनऽ आव्याधि
नीनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणे ककुभायस्तेनानाम्पतयेनमोनमो-
निचेरवेपरिचरायारण्यानाम्पतयेनमोनमोवञ्चते ॥ २० ॥ नमोवञ्च-
तेपरिवञ्चतेस्तायूनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणे ऽ इषुधिमतेतस्कराणा-
म्पतयेनमोनमः सृकायिभ्योजिघांसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमो

सिमद्धयोन कृच्छरंद्धयोव्वि कृन्तानाम्पतयेनमं ÷ ॥ २१ ॥ नमं ऽः उष्णी-पिणें ॥ गिरिचरायंकुलुञ्चानाम्पतयेनमो नमं ऽइषु मद्धयोधन्वायिभ्यं-श्श्चवोनमोनमंऽ आतन्वानेभ्यं ÷ प्प्रतिद्धानेभ्यश्श्चवोनमोनमंऽ आयच्छद्भयोस्यंद्धयश्श्चवोनमोनमोंव्विसृजद्भयं ÷ ॥ २२ ॥ नमोंव्वि-सृजद्धयोव्विद्धयंद्धयश्श्चवनमो नमः ÷ स्वपद्धयो जाग्रंद्धयश्चवोनमो-नम ऽः शयनेभ्यऽआसीनेभ्यश्श्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भयोधावंद्धयश्श्च-वोनमोनमं ÷ सभाभ्यें ॥ २३ ॥ नमं ÷ सभाभ्यं ÷ सभापतिभ्य-श्श्चवोनमोनमोश्श्वेभ्योश्श्वपतिभ्यश्श्चवोनमोनमंऽआव्व्याधिनीभ्यो-व्विविध्यन्तीभ्यश्श्चवोनमोऽनमऽउगणाभ्यस् ÷ तृहतीभ्यंश्श्चवो-नमोनमोंगणेभ्यं ÷ ॥ २४ ॥ नमोगणेभ्यों । गणपतिभ्यम्श्श्चवोनमो-नमोव्व्रातेभ्योव्व्रातपतिभ्यश्श्चवोनमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्श्च-वोनमोनमोव्विरूपेभ्योव्विश्श्वरूपेभ्यश्श्चवोनमोनम ऽः सेनाभ्य ऽ. ॥ २५ ॥ नम ऽः सेनाभ्य ऽः । सेनानिभ्यंश्श्चवोनमोनमों रथिभ्यों ऽअरथेभ्यंश्श्चवोनमोनमं ÷ क्षत्तृभ्य ÷ सग्रहीतृभ्यंश्श्चवोनमोनमों महद्भयो अर्भकेभ्यंश्श्चवोनमं ÷ ॥ २६ ॥ नमस्तक्षंभ्यो । रथकारें-भ्यंश्श्चवोनमोनम ऽः कुलालेभ्य ऽः कर्मारेभ्यश्श्चवोनमोनमोनिषा-देभ्यं ÷ पुञ्जिष्ठेभ्यश्श्चवोनमोनमं ÷ श्श्वनि भ्योमृगयुभ्यं श्श्चवो नमोनम ऽः श्श्वभ्यं ÷ ॥ २७ ॥ नमऽः श्श्वभ्य ऽ. । श्श्वपतिभ्यश्श्चवो-नमोनमोभवायंचरुद्रायचनमं ÷ शर्वायचपशुपतयेचनमोनीलंग्रीवाय-चशितिकण्ठायचनमं ÷ कपर्दिने ॥ २८ ॥ नमं ÷ कपर्दिने च्युप्तके-शायचनमं ÷ सहस्राक्षायचशतधन्वनेचनमों गिरिशायाय च शिपिविष्टायं चनमो मीढुष्टमायचेषुमतेचनमोह्रस्वाय ॥ २९ ॥ नमोह्रस्वायं । चवामनायचनमों बृहते चवर्षीयसेच नमोव्वृद्धायचस-वृधेच नमोग्ग्रयायचप्रथमायचनमंऽआशवें ॥ ३० ॥ नमंऽआशवें । चाजिरायचनम ऽः शीघ्र्यायच नमंऽऊर्म्यायचावस्वन्या-यचनमोनादेयायचद्वीप्यायच ॥ ३१ ॥ नमों ज्येष्ठाय । च कनि-ष्ठाय च नमं ÷ पूर्वजायचापरजायचनमोंमध्यमायचापगल्भा-यचनमोजघन्यायचबुध्न्यायचनम ऽः सोभ्याय ॥ ३२ ॥ नमः सोभ्याय । चप्रतिसर्यायचनमोयाम्याय च क्षेम्यायचनम ऽः श्लो-

क्यायच वसुन्न्यायचनमं ऽउर्व्वर्य्यायचखलत्यायचनमोव्वन्न्याय ॥३३॥
नमोवन्न्याय चकक्ष्यायचनमं ÷ श्रवायचप्रतिश्रवायचनमंऽआशुषेणा-
यचाशुरथायचनमं ऽ शूरायचावभेदिनेचनमोविल्मिने ॥ ३४ ॥
नमोविल्मिने । चकवचिने चनमोवर्म्मिणेचव्वरूथिनेचनमं ÷ श्रु-
तायचश्रु तसेनायचनमोदुन्दुभ्यायचाहनन्न्यायचनमोधृष्णवे ॥ ३५ ॥
नमोधृष्णवे । चप्रमृशायचनमोनिषङ्गिणेचेषुधिमतेचनमंस्तीक्ष्णेषवेचा-
युधिनेचनमं ÷ स्वायुधायचसुधन्वनेच ॥ ३६ ॥ नम ऽ स्रुत्याय ।
चपथ्यायचनम ऽ काट्यायचनीप्यायचनम ऽ कुल्यायचसरस्याय-
चनमोनादेयाय चवैशन्तायचनम ऽ कूप्याय ॥ ३७ ॥ नम ऽ
कूप्याय । चावट्यायचनमोवीध्रियायचातप्यायचनमोमेघ्यायच-
विद्युत्यायचनमो व्वर्ष्यायचावर्ष्यायचनमोवात्याय ॥ ३८ ॥
नमोवात्याय । चरेष्म्यायचनमोवास्तव्यायचवास्तुपायचनमं ऽ
सोमाय चरुद्रायचनमस्ताम्रायचारुणायचनमं ÷ शङ्गवे ॥ ३९ ॥
नमं ÷ शङ्गवे । चपशुपतयेचनमऽउग्रायचभीमायचनमोग्रेवधा-
यचदूरेवधायचनमोहन्त्रेचहनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो
नमस्ताराय ॥ ४० ॥ नमं ÷ शम्भवाय । चमयोभवायचनमं ÷
शङ्करायचमयस्करायचनमं ऽ शिवायचशिवतराय च ॥ ४१ ॥
नम ऽ पार्य्याय । चावार्य्यायचनमं ÷ प्रतरणायचोत्तरणायचनमं-
स्तीर्थ्यायचकूल्यायचनमं ÷ शष्प्याय चफेन्न्यायचनमं सिकत्याय
॥ ४२ ॥ नमं ÷ सिकत्याय । चप्रवाह्यायचनमं ÷ किं ऽ
शिलायचक्षयणायचनमं ÷ कपर्दिनेचपुलस्तयेचनमं ऽ इरिण्यायचप्रप-
थ्यायचनमोव्रज्याय ॥ ४३ ॥ नमोव्रज्याय । चगोष्ठ्याय
चनमस्तल्प्यायचगेह्यायचनमोहृदय्यायचनिवेष्प्यायचनम ऽ काट्या-
यचगह्वरेष्ठायचनम ऽ शुष्क्याय ॥ ४४ ॥ नम ऽ शुष्क्याय ।
चहरित्यायचनमं ÷ पां ऽ सव्यायचरजस्यायचनमोलोप्यायचोल-
प्यायचनम ऽ ऊर्व्यायचसूर्म्यायचनमं ÷ पर्ण्याय ॥ ४५ ॥ नमं ÷
पर्णाय । चपर्णशदायचनमं ऽ उद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमं ऽ
आखिदतेचप्रखिदतेचनमं ऽ इषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्चवोनमो नमोव
ऽ किरिकेभ्योदेवाना ऽ हृदयेभ्योनमोविचिन्वत्केभ्योनमोविक्षि-

न्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्म ॥ ऽः ॥ ६४ ॥ नमोऽस्तु-
रुद्रेभ्योयेन्तरिक्षेयेषांवातऽइषवः ऽः तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणा
दशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ऽः ॥ तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुते
नोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्म ऽः ॥ ६५ ॥
नमोऽस्तु । रुद्रेभ्योयेपृथिव्यांयेषामन्नमिषवः ऽः । तेभ्योदशप्राची-
र्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ऽः तेभ्योनमोऽअस्तु
तेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्च नो द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्म
ऽः ॥ ६६ ॥ इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

हरिः ॐ ॥ वयँ सोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ऽः ॥
प्रजावन्त ऽः सचेमहि ॥ १ ॥ एषते रुद्रभाग ऽः सहस्वस्राम्बिं-
कयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभाग ऽ आखुस्तेपशु ऽः ॥ २ ॥ अव
रुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथा नोवस्यसस्कर द्यथान ऽः
श्रेयसस्करद्यथानोव्यवसाययात् ॥ ३ ॥ भेषजमसि भेषजङ्ग-
वेऽश्वायपुरुषायभेषजम् । सुखम्मेषायमेष्यै ॥ ४ ॥ त्र्यम्बकंयजामहे
सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥
त्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥ उर्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षी
यमामुत ः ॥ ५ ॥ एतत्ते । रुद्रावसन्तेन परो मूजवतोऽतीही ॥ अवतत
धन्वापिनाकावस ऽः कृत्तिवासाऽअहिँ सन्न ऽः शिवोऽतीहि ॥ ६ ॥
त्र्यायुषञ्जमदग्ने ऽः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु-
त्र्यायुषम् ॥ ७ ॥ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिँ
सी ऽः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वा-
यसुवीर्याय ॥ ८ ॥ इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

हरिः ॐ ॥ उग्रश्च । भीमश्चध्वान्तश्चधुनिश्चसासह्वाँ
श्चाभियुग्वाचविक्षिप ऽः स्वाहा ॥ १ ॥ अग्निँ हृदयेनाशनिँ
हृदयाग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेनभवंयक्ना ॥ शर्वम्मतस्नाभ्यामीशा-
नम्मन्युना महादेवमन्त ऽः पर्शव्येनोग्रन्देवंवनिष्ठुनावसिष्ठहनु ऽः
शिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥ २ ॥ उग्रँल्लोहितेनमित्रँ सौव्रत्येन
रुद्रन्दौर्व्रत्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेनमरुतोबलेनसाध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्य-
कण्ठ्यँ रुद्रस्यान्त ऽ पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्वस्यवनिष्ठु ऽः

पशुपते॑ऽः पुरीतत् ॥ ३ लोमभ्य॒ऽः स्वाहा॒ लोमभ्य॒ऽः स्वाहा॑त्वचे स्वाहा॑त्वचेस्वाहा॒लोहि॑ताय॒स्वाहा॒लोहि॑ताय॒स्वाहा॒मेदो॑भ्य॒ऽः स्वाहा॒ मेदो॑भ्य॒ऽः स्वाहा॒ । मा॒ ᳚ सेभ्यः॒ स्वाहा॑मा॒ ᳚ सेभ्य॒ऽः स्वाहा॒स्नाव॑भ्य॒ऽः स्वाहा॒स्नाव॑भ्य॒ऽः स्वाहा॒ स्थभ्य॒ऽः स्वाहा॒ स्थभ्य॒ऽः स्वाहा॑म॒ज्जभ्य॒ऽः स्वाहा॑ म॒ज्जभ्य॒ऽः स्वाहा॑ रेत॑सेस्वाहा॑पा॒यवे॒स्वाहा॑ ॥ ४ ॥ आ॒या॒साय॒ स्वाहा॑ प्राया॒माय॒स्वाहा॑संय्या॒साय॒स्वाहा॑ वियासाय॒स्वाहो॑द्या॒साय॒स्वाहा॑ ॥ शु॒चेस्वाहा॒शोच॑ते॒स्वाहा॒शोच॑माना॒य॒स्वाहा॒शोका॒य॒स्वाहा॑॥५॥ तप॑से॒स्वाहा॒ । तप्य॑ते॒ स्वाहा॒तप्य॑माना॒य॒स्वाहा॑ । त॒प्ताय॒ स्वाहा॑घ॒र्म्माय॒ स्वाहा॑ । निष्कृ॑त्यै॒स्वाहा॒प्राय॑श्चित्त्यै॒ स्वाहा॑ भेष॒जाय॒स्वाहा॑ ॥ ६ ॥ य॒माय॒स्वाहा॒न्त॑काय॒स्वाहा॑मृ॒त्यवे॒ स्वाहा॑ ॥ ब्रह्म॑णे॒स्वाहा॑ब्रह्महत्या॒यै॒ स्वाहा॒ विश्वे॑भ्यो॒देवे॑भ्य॒ऽः स्वाहा॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒ ᳚ स्वाहा॒ ॥ ७ ॥ इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

हरिः ॐ । वाज॑श्च । मे॒प्रस॒वश्च॑मे॒प्रय॑तिश्च मे॒प्रसि॑तिश्च॒ मे॒धी॒तिश्च॑ मे॒क्रतु॑श्चमे॒स्वर॑श्च मे॒श्लोक॑श्च मे॒श्रा॒वश्च॑मे॒श्रुति॑श्च मे॒ज्योति॑श्च मे॒स्व॒श्च मे॒य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ १ ॥ प्राण॒श्च॑ । मे॒पा॒नश्च॑मेऽव्यानश्च॒मे॒सु॑श्च॑मेचि॒त्तञ्च॑म॒ऽ आधी॑तञ्च॒मे॒वाक्च॑मे॒ मन॑श्च मे॒च॒क्षु॑श्च मे॒श्रोत्र॑ञ्च मे॒दक्ष॑श्च मे॒बलं॑च मे॒य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ २ । ओज॑श्च । मे॒सह॑श्च म ऽ आ॒त्मा च॑मे त॒नूश्च॑मे॒ शर्म्म॑ च मे॒वर्म्म॑ च मे॒ऽङ्गा॑नि च मे॒ऽस्थीनि॑च मे॒परू॑ ᳚ षि च मे॒शरी॑राणि च म॒ऽआयु॑श्च मे॒ज॒रा च॑मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यं॑च म॒ऽआधि॑पत्यञ्च मे॒म॒न्युश्च॑ मे॒भाम॑श्च मे॒ऽम॑श्च मे॒ऽम्भ॑श्च मे जे॒मा च॑मे महि॒मा च॑ मे वरि॒मा च॑मे प्रथि॒मा च॑मे व॒र्षि॒मा च॑ मे द्राघि॒मा च॑मे वृ॒द्धञ्च॑मे॒ वृद्धि॑श्च मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ ४ ॥ (न०) ॥ स॒त्यञ्च॑ मे श्र॒द्धा च॑मे जग॑च्च मे॒धनं॑ च मे॒विश्वं॑ च मे॒मह॑श्च मे क्री॒डा च॑मे॒मोद॑श्च मे जा॒तञ्च॑मे जनि॒ष्यमा॑णञ्च मे सू॒क्तञ्च॑मे सुकृ॒तञ्च॑मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ ५ ॥ ऋ॒तञ्च॑ । मे॒मृतं॑च मेय॒क्ष्मञ्च॒ मेना॑मयच्च मे जी॒वातु॑श्च मे दीर्घायु॒त्वञ्च॑ मेन॒मि॒त्रञ्च॑ मेऽभ॑यञ्च मे सु॒खञ्च॑ मे॒शय॑नञ्च मे सू॒षाश्च॑ मे सु॒दिन॑ञ्च मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ य॒न्ता च॑ । मे ध॒र्त्ता च॑मे॒ क्षेम॑श्च मे॒धृति॑श्च मे॒ विश्वं॑ च मे॒ मह॑श्च मे सं॒वित् च॑ मे॒ ज्ञात्रं॑ च मे॒ सू॒श्च॑ मे प्र॒सूश्च॑ मे॒ सीरं॑ च मे॒ लय॑श्च मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ ७ ॥

शर्म्म । श्रेमर्यश्चमे प्रियश्चमेकामश्चमेकामश्चमेसौमनसश्चमेभग-श्चमेद्रविणञ्चमेभद्रञ्चमेश्रेयश्चमेवसीयश्चमेयशश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ८ ॥ (न०) । ऊर्क्च । मे सूनृताचमे पयश्चमेरसश्चमेघृतञ्च मेमधुचमेसग्धिश्चमे सपीतिश्चमेकृषिश्चमेवृष्टिश्चमेजैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् । ९ ॥ रयिश्च । मेरायश्चमेपुष्टञ्चमेपुष्टिश्चमेविभुचमेप्रभुचमेपूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमेकुयवञ्चमेक्षितञ्चमेन्नञ्चमक्षुच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १० ॥ वित्तञ्च । मेवेद्यञ्चमेभूतञ्चमेभविष्यच्चमे सुगञ्चमेसुपथ्यञ्चम ऽऋद्धञ्चम ऽऋद्धिश्चमेक्लृप्तञ्चमेक्लृप्तिश्चमेमतिश्चमसुमतिश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ११ ॥ व्रीहयश्च । मेयवाश्चमेमाषाश्चमेतिलाश्चमेमुद्गाश्च मेखल्वाश्चमे प्रियङ्गवश्चमेणवश्चमे श्यामाकाश्चमेनीवाराश्चमेगोधूमाश्चमेमसूराश्चमेयज्ञेन कल्पन्ताम्॥१२॥ (न०) अश्माच । मे मृत्तिकाचमेगिरयश्चमे पर्वताश्चमेसिकताश्चमेवनस्पतयश्चमे हिरण्यञ्चमेयश्चमेश्यामञ्चमे लोहञ्चमेसीसञ्चमेत्रपुचमेयज्ञेनकल्पन्ताम ॥ १३ ॥ अग्निश्च । मऽआपश्चमेवीरुधश्चम ऽओषधयश्चमेकृष्टपच्याश्चमे कृष्टपच्याश्चमेग्राम्याश्चमेपशवऽआरण्याश्चमेवित्तञ्चमेवित्तिश्चमे भूतञ्चमेभूतिश्च मेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १४ ॥ वसुच । मेवसतिश्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्चमेर्थश्चम ऽएमश्चमऽइत्याचमेगतिश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १५ ॥ (न०) ॥ अग्निश्च । म ऽइन्द्रश्चमेसोमश्चम ऽइन्द्रश्चमे सविताचमऽइन्द्रश्चमेसरस्वती चमऽइन्द्रश्चमेपूषाचमऽइन्द्रश्चमेबृहस्पतिश्चमऽइन्द्रश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १६ ॥ मित्रश्च । मऽइन्द्रश्चमेवरुणश्चमऽइन्द्रश्चम धाताचमऽइन्द्रश्चमेत्वष्टाचमऽइन्द्रश्चमेमरुतश्चमऽइन्द्रश्चमेविश्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम ॥ १७ ॥ पृथिवीच । मऽइन्द्रश्चमेन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्चमे द्यौश्चमऽइन्द्रश्चमेसमाश्चमऽइन्द्रश्चमेनक्षत्राणि चमऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमऽइन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् । १८ ॥ [न०] ॥ अंशुश्च । मेरश्मिश्चमेदाभ्यश्चमेधिपतिश्चमऽउपांशुश्चमेन्तर्यामश्चम ऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमऽआश्विनश्चमेप्रतिप्रस्थानश्च मेशुक्रश्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १९ ॥ आग्रयणश्च । मेवैश्वदेवश्चमेध्रुव

वश्शंचमे मैरश्वा नुरश्चंमऽऐन्द्राग्निश्चंचमे मुहावैश्वदेवश्चं
मे मरुत्वतीयांश्चमेनिष्केवल्यश्चमे सावित्रंश्चंमेसा
रस्वतश्चमेपात्क्नीवनश्चं मेहारियोजनश्चंमेयुज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ २० ॥
स्रु चश्च मे चमुसाश्चमे व्वायुव्यानिः चमेद्रोणकलशश्चंमे ग्रावांण-
श्चमेधिपवंणेचमेपूतभृच्चमऽआधवनीयश्चमेवेदिश्चमे बुर्हिश्चंमेवभृथ-
श्चंमे स्वगाकारश्च मेमज्ञेनंकल्पन्ताम ॥ २१ ॥ [न०] ॥ अग्निश्चं ।
मेघर्म्मश्चंमेर्क्कश्चंमेसूर्यश्चमेप्राणश्चं मेश्वमेधश्चंमेपृथिवी चमे
दितिश्चमे दितिश्चमेद्यौश्चंमेङ्गुलंय ऽः शक्वंरयोदिशंश्चमे युज्ञे नं
कल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ व्व्रतञ्चं । मऽऋुतव श्चमे तपश्चमे सम्वत्सुर-
श्चंमेहोरात्रेऽऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरेचंमेयुज्ञे नंकल्पन्ताम् ॥ ·३ ॥
[न०] । एकाच । मेतिस्रश्चमे तिस्रश्चमेपञ्चचमेपञ्चचमेसुप्तचंमे
सुप्तचंमेनवंचमे नवंचमुऽएकांदशाचंमुऽएकांदशाचमे त्रयोंदशाचमे त्रयों-
दशाचमे पञ्चंदशामे पञ्चंदशांचमेसुप्तदशाचमे सुप्तदशांचमें
नवंदशाचमेनवंदशाचमुऽएकंवि छ शतिश्चमुऽएकंवि छ शतिश्चमेत्र-
योविछशतिश्च मेत्रयोविं छ शतिश्चमेपञ्चवि छ शतिश्चमेपञ्चवं व छ
शतिश्चमेसुप्तवि छ शतिश्चमे सुप्तविं छ शतिश्चमे नवंवि छ
शतिश्चमेनवंवि छ शतिश्चमऽएकंत्रिं छ शच्चमुऽएकंत्रिं छ शच्चमे-
त्रयंस्त्रिं छ शच्चमेयुज्ञे नंकल्पन्ताम् ॥ २४ ॥ [न०] ॥ चतंस्र-
श्चत्र । मेष्टौचमेष्टौचमे द्वादंशाचमे द्वादंशाचमेषोडंशाचमेषोडंशचमेवि छ शति
श्चंमेवि छ शतिश्चंमेचतुंवि छ शतिश्चमे चतुंविं छ शति-
श्चंमेष्टावि छ शतिश्चमेष्टाविं छ शतिश्चमेद्वात्रिं छ शच्चं
मेद्वात्रिं छ शच्चमेषट्त्रिं छ शच्चमेषट्त्रिं छ शच्चमेचत्वारि छ
शच्चमेचत्वारि छ शच्चमेचतुंश्चत्वारि छ शच्चमेचतुश्चत्वारि छ
शच्चमेष्टाचंत्वारि छ शच्चमेयुज्ञे नंकल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ [न०] ॥
त्र्यविश्च । मेत्र्यवीचंमेदित्यवाट्चमेदित्यौहीचंमेपञ्चांविश्च चमपञ्चांवी-
चंमेत्रिवत्सश्चंमे त्रिवत्साचंमेतुर्य्यवाट्चमेतुर्य्यौहीचंमेयुज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥
२६ ॥ पृष्ठवाट्च । मेपष्ठौहीचंमऽउक्षाचं मेव्वशाचंमऽऋषभश्चंमेव्वे-
हश्चंमेनुड्वांश्चमेधेनुश्चंमेयुज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ २७ ॥ [न०] व्वाजाय
स्वाहां प्रसवाय स्वाहांपिजायस्वाहाक्रतवेस्वाहाव्वसंवेस्वाहांहुर्पतंयेस्वाहा

हान्हेमुग्धाय स्वाहामुग्धायवैन ॐ शिनाय स्वाहाविन ॐ शिने ऽ-
आन्त्यायनाय स्वाहान्त्यायभौवनाय स्वाहा भुवनस्यपतये स्वाहाधिपतये
स्वाहाप्रजापतये स्वाहा ॥ इयन्ते राण्मित्रायय्यन्तासि यमन ऊर्जेत्वा वृ-
ष्ट्यैत्वा प्रजानान्त्वाधिपत्याय ॥ २८ ॥ आयुर्य्यज्ञेन । कल्पताम्प्राणो
यज्ञेन कल्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेन कल्पता ऽः श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतांवाग्यज्ञेन
कल्पताम्मनो यज्ञेन कल्पता मात्मा यज्ञेन कल्पताम्ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता
ञ्ज्योतिर्य्यज्ञेन कल्पता ऽः स्वर्य्यज्ञेन कल्पताम्पृष्ठंयज्ञेन कल्पतांयज्ञोयज्ञे-
नकल्पताम् ॥ स्तोमश्चयजुश्च ऽऋक्चसामचबृहच्चरथन्तरञ्च ॥
स्वर्द्देवा ऽअगन्मामृता ऽअभूमप्रजापतेः ऽः प्रजा ऽअभूमवेट्स्वाहा ॥
२९ ॥ इति रुद्रे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

हरिः ॐ । ऋचंवाचम्प्रपद्ये मनोयजु ऽः प्रपद्ये
सामप्राणम्प्रपद्ये चक्षु ऽः श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥ वागोजः सहौजो
मयिप्राणापानौ ॥ १ ॥ यन्मेछिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो-
वातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मेतद्दधातु ॥ शन्नोभवतु भुवनस्ययस्प-
तिः ॥ २ ॥ भूर्भुवः ऽः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्यधी
महि ॥ धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ कयानश्चित्र ऽआभुवदूती-
सदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ ४ ॥ कस्त्वा । सत्योमदा-
नाम्म ॐ हिष्ठोमत्सदन्धसः ॥ दृढाचिदारुजेवसु ॥ ५ ॥ अभीषुणः ऽः ।
सखीनामविता जरितृ णाम् ॥ शतम्भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥ कयात्वन्न
ऽऊत्याभिप्रमन्दसेवृषन् ॥ कयास्तोतृभ्य ऽआभर ॥ ७ ॥ इन्द्रोविश्व-
स्यराजति ॥ शन्नोऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोमित्रः श-
ंवरुणः ऽः शन्नोभवत्वर्य्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिः ऽः शन्नोविष्णुरु-
रुक्रमः ऽः ॥ ९ ॥ शन्नोवातः । पवता ॐ शन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥
शन्नः ऽः कनिक्रदद्देवः ऽः पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु ॥ १० ॥ अहानिशम्भ-
वन्तु नः ऽः श ॐ रात्री ऽः प्रतिधीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्राग्नीभवतामव-
ोभिः ऽः शन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणावाजसातौ
शमिन्द्रासोमासुविताय शंय्योः ऽः ॥ ११ ॥ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽआपोभवन्तु
पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तु नः ऽः ॥ १२ ॥ स्योनापृथिवि । नोभवान्नृक्षरा-
निवेशनी ॥ यच्छानः ऽः शर्म्मसप्रथाः ॥ १३ ॥ आपोहि । ष्ठामयोभुव-

स्तानऽऊर्जंदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ १४ ॥ योवं + शिवतंमोरस-स्तस्यंभाजयतेहनं ÷ ॥ उशतीरिवमातर ÷ ॥ १५ ॥ तस्माऽअरंङ्गमाम-योयस्यक्षयायजिन्वथ ॥ अपोजनयथाचन ऽः ॥ १६ ॥ द्यौः ऽः शान्ति-रुन्तरिक्षं छ शान्ति ÷ पृथिवीशान्तिराप ऽः शान्तिरोषधय ऽः शान्ति ÷ ॥ वनस्पतयऽः शान्तिर्विश्वेदेवा ऽः शान्तिर्ब्रह्मशान्ति ऽः सर्व छ शान्ति ऽः शान्तिरेवशान्ति ऽः सामाशान्तिरेधि ॥ १७ ॥ दृतेह छ हंमा-मित्रस्यमाचक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहञ्चक्षुषा सर्वाणि भूतानिसमीक्षे ॥ मित्रस्यचक्षुषा समीक्षामहे ॥ १८ ॥ दृतेह छ हंमा । ज्योक्तेसन्दृशिजीव्यासञ्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्यासम् ॥ १९ ॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥ अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतय ÷ पावकोऽअस्मभ्यं ऽ शिवोभव ऽ ॥२०॥ नमस्ते अस्तुविद्युतेनमस्तेस्तन-यित्नवे ॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयत ऽः स्व ÷ समीहसे ॥ २१ ॥ यतोयत ऽः समीहसेततोनोऽअभयंकुरु ॥ शन्नं ÷ कुरुप्रजाभ्योभयन्न ऽः पशुभ्यं ÷ ॥ २२ ॥ सुमित्रियानऽआपऽओषधय ऽः सन्तुदुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्म ऽः ॥ २३ ॥ तच्चक्षुर्देवहि-तम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदं ÷ शतञ्जीवेमशरद ÷ शत छ शृणुयामशरदं ÷ शतम्प्रब्रवामशरद ÷ शतमदीना ऽः स्यामशरदं ÷ श-तम्भूयश्चशरद÷ शतात् ॥ २४ ॥ इति रुद्रे शान्त्यध्यायः ॥ ६ ॥

अथ रुद्रे स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्यायः

हरि ÷ ओं स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवा ऽः स्वस्तिनं ÷ पूषाविश्ववेदा ऽः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमि ऽः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ओं पयं ÷ पृथिव्याम्पय-ऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधा ऽः ॥ पयस्वती ऽः प्रदि-शं ÷ सन्तुमह्यम ॥ २ ॥ ओं विष्णोरराटमसिविष्णो ऽः श्नप्त्रेस्थोविष्णो ऽः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवम-सिविष्णवेत्वा ॥ ३ ॥ ओं अग्निर्देवतावातोदेवतासूर्योदेवता चन्द्रमादेवतावसवोदेवतारुद्रादेवता दित्या देवतामरुतोदेवताविश्वेदेवा-

देवादेवत्वाद्बृहस्पतिर्दुवतेन्द्रो देवताव्वरुणो देवता ॥ ४ ॥ ॐ सद्योजातं-
प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ÷ ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवा-
यनमः ÷ ॥ ५ ॥ वामदेवायनमो ज्येष्ठायनमः ÷ श्रेष्ठायनमो रुद्रायनमः
ऽः कालायनमः ऽः कलविकरणायनमो बलविकरणायनमो बलायनमो बल-
प्रमथनायनमः ऽः सर्वभूतदमनायनमो मनोन्मनायनमः ऽः ॥ ६ ॥
अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य ऽः ॥ सर्वेभ्य ऽः सर्वशर्वेभ्यो नमः-
स्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्य ऽः ॥ ७ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ ईशान ऽः सर्वविद्यानामीश्वर ऽः सर्व-
भूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदाशिवोम्
॥ ९ ॥ ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मामाहिꣳ-
सी ऽः ॥ निर्वर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय-
सुवीर्य्याय ॥ १० ॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥
यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ११ ॥ ॐ द्यौ ऽः शान्तिरन्तरिक्षꣳ
शान्तिः ÷ पृथिवी शान्तिराप ऽः शान्तिरोषधय ऽः शान्तिः ÷ ॥ वनस्-
पतय ऽः शान्तिर्विश्वेदेवा ऽः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः ऽः सर्वꣳ शान्तिः
ऽः शान्तिरेव शान्तिः ऽः सा मा शान्तिरेधि ॥ १२ ॥ ॐ सर्वेषां वा-
ऽएष वेदेन रसेना ꣳ रसेनाभिषिञ्चति स्वाहा माममुष्यामुष्मैवनेन ꣳ रसेनाभिषिञ्चति
॥ १३ ॥ इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्यायः ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥
अनेन कृतेन रुद्राभिषेककर्मणा श्रीमद्भवानीशङ्कर- महारुद्रः प्रीयतां न मम ॥
ॐ सदाशिवार्पणमस्तु ॥ इति ॥

अथ श्रीशिवसहस्रनाम प्रारभ्यते ।

व्यास उवाच ॥ एकदा मुनयः सर्वे द्वारकां द्रष्टुमागताः ॥
वासुदेवं च सोत्कंठाः कृष्णदर्शनलालसाः ॥ १ ॥ ततस्तु भगवान्
प्रीतः पूजां चक्रे यथाविधि ॥ तेषामासीनतो गृह्य बहुमानपुरःसरम् ॥२॥
तैः पृष्टः कथयामास कुमारप्रभृतं च यत् ॥ चरितं मुनिसारघ्नं लोकानन्द-
कर्रं परम् ॥ ३ ॥ मार्कण्डेयमुखाः सर्वे सायमाह्निकक्रियोत्थिताः ॥
कृष्णः स्नानमथो चक्रे गृहाय कुमारं तिमि ॥४ ॥ सूर्योपस्थानसन्ध्या

च स्मृतिधर्ममनुस्मरन् । शिवपूजां ततः कृष्णो गन्धपुष्पाक्षतादिभि ॥
५ ॥ चकार विधिवद्भक्त्या नमस्कारयुतां शुभाम् ॥ जय शङ्कर सोमेश
रक्ष रक्षेति चाब्रवीत् ॥ ६ ॥ जजाप शिवसाहस्रं भुक्तिमुक्तिप्रदं विभो ।
अनन्यमानसः शान्तः पद्मासनपरः शुचिः ॥ ७ ॥ ततस्ते विस्मयापन्ना
दृष्ट्वा कृष्णविचेष्टितम् ॥ मार्कण्डेयोऽवदत्कृष्णं बहुशो मुनिपुङ्गवः ॥ ८॥
मार्कण्डेय उवाच ॥ त्वं विष्णुः कमलाकान्तः परमात्मा जगद्गुरुः ॥
तव पूज्यः कथं शम्भुरेतत्सर्वं वदस्व मे ॥ ९ ॥ व्यास उवाच ॥ अथ
ते मुनयः सर्वे मार्कण्डेयं समर्पयन् ॥ वचोभिर्वासुदेवस्य पृष्टं साधु
त्वयेति च ॥ १० ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ साधु साधु मुने पृष्टं हिताय
सकलस्य च ॥ अज्ञातं तव नास्त्येव तथापि च वदाम्यहम् ॥ ११ ॥
दैवतं सर्वदेवानां सर्वकारणकारणम् ज्योतिर्यत्परमानन्दं सावधानमतिः
शृणु ॥ १२ ॥ विश्वसाधनमीशानं गुणातीतमजं परम् ॥ जगतस्तस्थुषो
ह्यात्मा मम मूलं महामुने ॥ १३ ॥ यो देवः सर्वदेवानां ध्येयः पूज्यः
सदाशिवः ॥ स शिवः स महादेवः शङ्करश्च निरञ्जनः ॥ १४ ॥ तस्मा-
न्नान्यपरो देवस्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ सर्वज्ञः सर्वगः शम्भुः सर्वात्मा
सर्वतोमुखः ॥ १५ ॥ पठ्यते सर्व वेदान्ते सिद्धान्ते यो मुनीश्वरैः ॥
तस्मिन्भक्तिर्महादेवे मम धातुश्च निर्मला ॥ १६ ॥ महेशः परमं ब्रह्म
शान्तः सूक्ष्मः परात्परः ॥ सर्वान्तरः सर्वसाक्षी चिन्मयस्तमसः परः ॥
१७ ॥ निर्विकल्पो निराभासो निःसङ्गो निरुपद्रवः ॥ निर्लेपः पुरुषाध्यक्षो
महापुरुष ईश्वरः ॥ १८ ॥ तस्य चेच्छाभवत्पूर्वं जगत्स्थित्यन्तकारिणी ॥
वामाङ्गादभवत्तस्य सोऽयं विष्णुरिति स्मृतः ॥ १९ ॥ जनयामास
धातारं दक्षिणाङ्गात्सदाशिवः ॥ मध्यतो रुद्रमीशानं कालात्मा परमेश्वरः ॥
२० ॥ तपस्तपन्तु भो वत्सा अब्रवीदिति वा वचः ॥ ततस्ते
शिवमात्मानं प्रोचुः संयतमानसाः ॥ २१ ॥ स्तुत्वा तु विविधैः स्तोत्रैः
प्रणम्य च पुनः पुनः ॥ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऊचुः ॥ तपः केन प्रकारेण
कर्त्तव्यं परमेश्वर ॥ २२ ॥ ब्रूहि सर्वमशेषेण स्वात्मानं वेत्सि नापरः ॥
शिव उवाच ॥ कायेन मनसा वाचा ध्यान-पूजाजपादिभिः ॥ २३ ।
कामक्रोधादिरहितं तपः कुर्वन्तु भो सुराः ॥ देवा ऊचुः ॥ त्वया
यत्कथितं शम्भो दुर्ज्ञेयमजितात्मभिः ॥ २४ ॥ सौम्योपायमतो महान्
वद कारुण्यवारिधे ॥ शिव उवाच ॥ सहस्रनाममद्विद्यां जपन्तु
ममसुव्रताः ॥ २५ ॥ यथा संसारमग्नानां मुक्तिर्भवति शाश्वती ॥
शृण्वन्तु तद्विधानं हि महापातकनाशनम् ॥ २६ ॥ पठतां शृण्वतां सद्यो
मुक्तिः स्यादनपायिनी ॥ ब्रह्मचारी कृतस्नानः शुक्लवासा जितेन्द्रिय
॥ २७ । भस्मधारी मुनिर्मौनी पद्मासनसमन्वितः ॥ ध्यात्वा मां सकला-

योशं निराकारं मुनीश्वरम् ॥ २८ ॥ पार्वतीसहितं शर्वं जटामुकुटमण्डि
तम् ॥ वसानं चर्म वैयाघ्रं चन्द्रार्द्धकृतशेखरम् ॥ २९ ॥ त्र्यम्बकं दि
वृषारूढं कृत्तिवाससमुज्ज्वलम् ॥ सुरार्चितपदद्वन्द्वं दिव्यभोगं सुसुन्दरम्
॥ ३० ॥ बिभ्राणं सुप्रसन्नं च कुठारं च वराभयम् ॥ दुर्द्धर्षं कमलासीनं
नागयज्ञोपवीतिनम् ॥ ३१ ॥ विश्वकायं चिदानन्दं शुद्धमक्षरमव्ययम् ।
सहस्रशिरसं शम्भुमनन्तकरसंयुतम् ॥ ३२ ॥ सहस्रचरणं दिव्यं सोम
सूर्याग्निलोचनम् ॥ च योनिमजं ब्रह्म शिवमाद्यं सनातनम् ॥ ३३ ॥
ब्रह्मरूपाजं दुर्भेद्यं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ निशाकरकलाक्रान्तं सेवनं
भक्तरागिणाम् ॥ ३४ ॥ पिनाकिनं विशालाक्षं पशूनां पतिमीश्वरम् ॥
कालात्मानं कालकालं देवदेवं महेश्वरम् ॥ ३५ ॥ ज्ञानवैराग्यसम्पन्नं
योगानन्दमयं परम् ॥ शाश्वतैश्वर्यसम्पन्नं महायोगीश्वरेश्वरम् ॥ ३६ ॥
समस्तशक्तिसंयुक्तं पुण्यकायं दुरासदम् ॥ तारकं ब्रह्म सम्पूर्णमणीयांसं
महत्तमम् ॥ ३७ ॥ यतीनां परमं ब्रह्म यतीनां तपसः फलम् ॥ सर्वमिह
स्वसमाधीनं तपस्विजनमन्मथम् ॥ ३८ ॥ खगेन्द्रविष्णुनमितं मुनिसिद्ध
निषेवितम् ॥ महान्तं महात्मानं ध्यानानामपि दैवतम् ॥ ३९ ॥ अथ शिव
कवचप्रारम्भः ॥ शान्तं पवित्रमोङ्कारं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमम् । शङ्करो
मे शिरः पातु ललाटं भाललोचनः ॥ ४० ॥ विश्वचक्षुर्दृशौ पातु रुद्रो
मम भ्रुवावपि ॥ गण्डौ पातु महेशानः श्रुती रक्षतु पूर्वजः ॥ ४१ ॥ कपालं
मे महादेवः पातु नासां सदाशिवः ॥ मुखं पातु हविर्भोक्ता ओष्ठौ पातु
महेश्वरः ॥ ४२ ॥ दन्तान् रक्षतु चन्द्रस्तालु सोमकलाधरः ॥ रसनां
परमानन्दः पातु गल्लौ शिवप्रियः ॥ ४३ ॥ चिबुकं पातु मे शम्भुः स्म
श्रू शत्रुविनाशकः । कूर्चं पातु मम कण्ठं नीलकण्ठोऽवतु ध्रुवम्
॥४४॥ स्कन्धौ स्कन्दपितावाहू बहुहस्तधरः सदा ॥ उरवाहू महानाद्यं
करौ त्रिपुरमर्दनः ॥ ४५ ॥ अङ्गुली पातु पञ्चास्यः पर्वाणि च सहस्र
पात् ॥ हृदयं पातु सर्वात्मा स्तनौ पातु पितामहः ॥४६॥ उदरं इन्दुकपातु
मध्यं मे मध्यमेश्वरः ॥ कुक्षी पातु भवानीशः पृष्ठं पातु कुलेश्वरः ॥४७॥
प्राणान्मे प्राणदः पातु नाभिं भाम कटिं विभुः ॥ सक्थिनी पातु मे भगा
जानुनी जनकाधिपः ॥४८॥ जङ्घे पुररिपुः पातु चरणौ भवनाशनः ॥
शरा पातु मे सर्वा बाह्यमाभ्यन्तरं शिवः ॥ ४९ ॥ इन्द्रियाणि हरः
पातु सर्वत्र जयवर्द्धनः ॥ पूर्वे पातु मृडः पातु दक्षिणे यमसूदनः ॥ ५० ॥
वारुण्यां भक्तिलाधीशः कौबेर्यां मे महेश्वरः ॥ ईशान्यां पातु भूतेशः
आग्नेय्यां रविलोचनः ॥ ५१ ॥ नैर्ऋत्यां भूतभृत्पातु वायव्यां बलवर्द्धनः ॥
ऊर्ध्वं पातु महादेवः अधः संसारनाशनः ॥ ५२ ॥ सर्वत्र सुरदः पातु बुद्धिं
पातु सुलोचनः । एवं न्यासादिकं कृत्वा साक्षाच्छम्भुसमो भवेत् ॥ ५३ ॥

नमो हिरण्यबाहवे इति पठेन्मन्त्रं तु भक्तितः ॥ नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतये पशुपतये नमो नमः ॥ ५४ ॥ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्वमां भवोद्भवाय नमः ॥ ५५ ॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ ५६ ॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्य ॥ ५७ ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ५८ ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ ५९ ॥ सद्यो जातादिभिर्मन्त्रैर्नमस्कुर्यात्सदाशिवम् ॥ ततः सहस्रनामेदं पठितव्यं मुमुक्षुभिः ॥ ६० ॥ सर्वकार्यकरं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥ सर्वगुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकहितप्रदम् ॥ ६१ ॥ मन्त्राणां परमं मन्त्रं भवदुःखपङ्कमिदं तु ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ ॐ नमः शिवायेति षडङ्गन्यासः । ॐ नमः शम्भवाय च हृदयाय नमः ॥ ॐ नमो भवाय च शिरसे स्वाहा ॥ ॐ नमः शङ्कराय च शिखायै वषट् ॥ ॐ नमो मयस्कराय च कवचाय हुम् ॥ ॐ नमः शिवाय च नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ नमः शिवाय शिवतराय च अस्त्राय फट् ॥ नमोऽस्तु स्थाणुरूपाय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने ॥ चतुर्मूर्तिवपुश्छाय भूषिताङ्गाय शम्भवे ॥ ॐ अस्य श्रीवेदसाराख्यपरमदिव्यशिवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः ॥ सदाशिवो देवता ॥ ॐ नमः इति बीजम् ॥ शिवायेति शक्तिः ॥ चैतन्यमिति कीलकम् ॥ सदाशिवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथध्यानम् ॥ ॐ कोटिसूर्यप्रतीकाशं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ॥ शूलटङ्कगदाचक्रकुन्तपाशधरं विभुम् ॥ ॐ नमः पराय देवाय शङ्कराय महात्मने ॥ कामिने नीलकण्ठाय निर्मलाय कपर्दिने ॥ १ ॥ निर्विकल्पाय शान्ताय निरहङ्कारिणे नमः ॥ अनर्घ्याय विशालाय शूलहस्ताय ते नमः ॥ २ ॥ निरञ्जनाय शर्वाय निःशंकाय परात्मने ॥ नमः शिवाय भर्गाय गुणातीताय वेधसे ॥ ३ ॥ महादेवाय पीताय पार्वतीपतये नमः ॥ केवल्याय महेशाय विशुद्धाय बुधात्मने ॥ ४ ॥ चैतन्याय सुवेशाय निःस्पृहाय स्वरूपिणे ॥ नमः सोमाय भूताय धानायामितेजसे ॥ ५ ॥ अव्ययाय जगत्स्रष्ट्रे जनकाय पिनाकिने ॥ निराधाराय सिद्धाय मायातीताय ते नमः ॥ ६ ॥ बीजाय सर्वभूताय पशूनां पतये नमः ॥ पुरन्दराय भद्राय पुरुषाय महीयसे ॥ ७ ॥ महाचन्द्रोपरूपाय ज्ञानिने

शुद्धबुद्धये ॥ बुद्धाय बहुरूपाय ताराय परमात्मने ॥ ८ ॥ पूर्णाय
सुरेशाय ब्रह्मणेऽनन्तमूर्तये ॥ निरक्षराय सूक्ष्माय कैलासपतये
नम ॥ ९ ॥ निरामयाय कान्ताय निराकाराय ते नम ॥
सलिलात्मस्वरूपाय सोऽहं तत्त्वाय ते नम ॥ १० ॥ नि[illegible]-
लम्बाय नित्याय नित्याया पतये नम ॥ आत्मारामाय
रूप्याय पूज्याय परमेष्ठिने ॥ ११ ॥ विकर्तनाय भीमाय
शम्भवे विश्वरूपिणे ॥ हंसाय हंसनाथाय प्रसिद्धाय नमो नम
॥ १२ ॥ परात्पराय रुद्राय भवायालक्ष्यशक्तये ॥ दक्षहन्त्रे
निधीशाय कालहन्त्रे मनस्विने ॥ १३ ॥ विश्वमात्रे जगद्धात्रे जगन्नेत्रे
नमो नम ॥ जटिलाय विरोगाय पवित्राय मृडाय च ॥ १४ ॥ निरवद्याय
धीराय निरवद्याय ते नम ॥ नाट्याय रविनेत्रायव्योमकेशाय ते नमः ॥
चतुर्भोगाय साराय योगिनेऽनन्तमायिने ॥ १५ ॥ धर्मिष्ठाय वरिष्ठाय
पुरत्रयविघातिने ॥ गिरिष्ठाय गिरीशाय वरदाय नमो नम । १६ ॥
व्याघ्रचर्माम्बरायाय दिशाम्बराय ते नम ॥ परमार्थाय मानाय प्रमथाय
रत्नचक्षुषे ॥ १७ ॥ आद्याय शूलहस्ताय शितिकण्ठाय तेजसे ॥ उमाय
वामदेवाय श्रीकण्ठाय च ते नम ॥ १८ ॥ विश्वेश्वराय सूर्याय गौरीशाय
पराय च ॥ मृत्युञ्जयाय वीराय वीरभद्राय ते नम ॥ १९ ॥ विरूपाक्षाय
नित्याय वह्निनेत्राय ते नम ॥ जालन्धरशिरश्छेत्रे द्विषिपे हितकारिणे
॥ २० ॥ महाकालाय वैद्याय घुसृणेशाय ते नम ॥ नम ॐ काररूपाय
सोमनाथाय ते नम ॥ २१ ॥ रामेश्वराय शुचये भीमेशाय नमो नम ॥
त्र्यम्बकाय निरीहाय केदारायनमो नम ॥ २२ ॥ गङ्गाधराय वरये
नागनाथाय ते नम ॥ भीमप्रियाय महसे रक्मीशाय नमो नम ॥ २३ ॥
पूर्णाय भूतपतये सर्वज्ञाय दयालवे ॥ धर्माय धनदेशाय जगचर्माम्बराय
च ॥ २४ ॥ भालनेत्राय यज्ञाय श्रीशैलपतये नम ॥ कृशानुरेतसे
नीलकाहिताय नमो नम ॥ २५ ॥ अन्धकासुरहन्त्रे च पावनाय बलाय
[illegible] ॥ चैतन्याय त्रिनेत्राय दक्षनाशकराय च ॥ २६ ॥ नम सहस्रशिरसे
जपरूपाय ते नम ॥ सहस्रचरणायाथ योगिहृत्पद्मवासिने ॥ २७ ॥
सद्योजाताय वन्द्याय सर्वेश्वरमयाय च । आमोघाय प्रगल्भाय गायत्री
वल्लभाय च ॥ २८ ॥ व्योमाकाराय विप्राय नमो विप्रप्रियाय च ॥
अघोराय सुधेशाय देवरूपाय ते नम ॥ २९ ॥ विद्वत्तमाय वरदाय
दिग्वासाय नन्दिने ॥ अधर्मशत्रवे शब्ददुन्दुभीमवनाय च ॥ ३० ॥
[illegible] गुर्वे जगत्प्राणाय ते नम ॥ नमो महर्षि [illegible] पञ्चवक्त्राय
शङ्गिने ॥ ३१ ॥ हरिकेशाय विभवे पञ्चाक्षरात्मने प्रतिज्ञे ॥ नम
पन्नगाभरणाय गोवर्द्धनगमाय च ॥ ३२ ॥ प्रभवे जगदीशाय कालकूट-

विपादिने ॥ सिद्धेश्वराय सिद्धाय सहस्रवदनाय च ॥ ३३ ॥ नमः सहस्रहस्ताय सहस्रनयनाय च ॥ सहस्रमूर्तये तुभ्यं विष्णवे जितशत्रवे ॥ ३४ ॥ काशीनाथाय गोप्त्रे ते नमस्ते विश्वसाक्षिणे ॥ हेतवे सर्वबीजानां पालकाय नमो नमः ॥ ३५ ॥ जगत्संहारकाराय त्रिधावस्थाय ते नमः ॥ एकादशस्वरूपाय नमस्ते बहुमूर्तये ॥ ३६ ॥ नरसिंहमहादर्पघातिने शरभाय च ॥ भस्माभ्यक्ताय तीर्थाय जाह्नवीजन काय च ॥३७॥ देवदानवदैत्यानां गुरवे ते नमो नमः ॥ दलिताञ्जनभासाय नमो वायुस्वरूपिणे ॥ ३८ ॥ नमः स्वच्छस्वरूपाय प्रसिद्धाय नमो नमः ॥ वृषध्वजाय गोप्त्राय जगद्यन्त्रप्रवर्तिने ॥ ३९ ॥ अनाथाय प्रजेशाय विष्णुशर्वहराय च ॥ हरिविधातृकलहनाशकाय नमो नमः ॥ ४० ॥ गदाहस्ताय वटवे गगनाय नमो नमः ॥ कैवल्यफलदात्रे ते परमाय नमो नमः ॥४१॥ ज्ञानगम्याय ज्ञानाय घण्टारवप्रियाय च । पद्मासनाय पुण्याय निर्वाणाय नमो नमः ॥ ४२ ॥ अयोनये सदेहाय ह्युत्तमाय नमो नमः ॥ अन्तकालाधिपतये विशालाक्षाय ते नमः ॥ ४३ ॥ कुबेरबन्धवे तुभ्यं सोमाय सुखिने नमः अमृतेशाय सौम्याय खेचराय च धन्विने ॥ ४४ ॥ प्रियंवदाय दक्षाय वन्दिने विमलाय च ॥ गिरीशाय गिरित्राय गिरिशान्ताय ते नमः ॥ ४५ ॥ पारिजाताय बृहते पञ्चयज्ञाय ते नमः ॥ शरण्याय विशिष्टाय बालरूपधराय च ॥ ४६ ॥ जीवितेशाय पुष्टाय पुष्टानां पतये नमः ॥ भवहेत्वे हिरण्याय कनिष्ठाय नमो नमः ॥४७॥ मध्यमाय विधात्रे च शूराय सुभगाय च ॥ आदित्यतपनाथाय पुण्यश्लोकाय ते नमः ॥४८॥ महाह्रस्वाय ह्रस्वाय वामनाय नमो नमः ॥ नमस्तत्पुरुषायाथ चतुर्दंष्ट्राय मायिने ॥ ४९ ॥ नमो धूर्जटये तुभ्यं जगदीशाय ते नमः ॥ जगन्नाथाय महते लीलाविग्रहधारिणे ॥५०॥ अभयाय नमस्तुभ्यममराय नमो नमः ॥ अताग्राय नमस्तुभ्यमरणाय नमो नमः ॥५१॥ नीवाप्पए नमस्तुभ्यमनादिनिधनाय च ॥ व्यालेशाय व्यक्ताय नमस्ते परमात्मने ॥५२॥ तपसे स्थूलरूपाय नमः परशुधारिणे ॥ नमः खट्वाङ्गहस्ताय नागहाराय ते नमः॥५३॥ वरदाभयहस्ताय घण्टाहस्ताय ते नमः ॥ धन्वराय नमस्तुभ्यत्रिनाग नमो नमः ॥५४॥ अणिमादिगुणेशाय पञ्चमहाभयाय च ॥ पुरातनाय शुद्धाय कमलनयनाय च ॥५५॥ पुण्योदयाय पद्माय विद्रुमाय नमो नमः ॥ उदाराय विचित्राय विचित्रगतये नमः ॥५६॥ वाणिगुह्राय निलये निर्गुणाय नमो नमः ॥ परमेशाय शेषाय नमः परतराय च ॥५७॥ महेन्द्राय सुरेशाय कर्णिकारप्रियाय च ॥ महापातकनाशाय नमस्ते कामरूपिणे ॥५८॥ विद्याणां मोक्षरूपाय ते नमः । सम्राजे चन्द्रचूडाय करुणाय नमाय च ॥५९॥ अनन्ताय वीरदाय चन्द्राय ते नमः ॥

परमज्योतिषे पद्मगर्भाय सलिलाय च ॥६०॥ तत्वाधिकाय तत्वाय नमो दीर्घाय रङ्गिणे ॥ नमस्ते पाण्डु रङ्गाय गौराय ब्रह्मचारिणे ॥६१॥ अणवे निष्कलायाथ सामगानप्रियाय च ॥ नमोऽरूपाय घोराय नमस्ते पुण्य मूर्तये। ६२॥ कलाधराय पूज्याय पञ्चभूतात्मने नम ॥ निर्वाणाय च तथ्याय पापनाशकराय च ॥६३॥ विश्वतश्चक्षुषे कालयोगिनेऽनन्त रूपिणे॥ सिद्धसाधकरूपाय नमो मेदनिरूपिणे। ६४॥ अगण्याय प्रता पाय सुधाहस्ताय ते नम॥ श्रीवल्लभाय निधये स्थाणवे मधुराय च॥६५॥ उपाधिरहितायास्य नम सुखराशये॥ नमो मुनीश्वरायाथ शिवानन्दाय ते नम ॥६६॥ रिपुघ्नाय नमस्तेनोराशयेऽनुत्तमाय च॥ चतुर्मूर्तिस्वरूपाय नमो बुद्धीन्द्रियात्मने। ६७॥ उपद्रवहरायाथ प्रियसदर्शनाय च॥ भूतनाथाय भूताय वीतरागाय ते नम ॥६८॥ नैष्कर्म्याय निरूपाय षड नन्याय विशुद्धये॥ कुलशाय भूतभृते भुवनेशाय ते नम ॥६९॥ हिरण्य बाहवे जीवनरदाय नमोनम ।आदिदेवाय भर्गाय चन्द्रसञ्जीवनाय च।७०॥ हराय बहुरूपाय प्रसन्नाय नमो नम ॥ आनन्दभारतायाथ कृत्स्याय नमो नम ॥७१॥ नमो मोक्षफलायाथ शाश्वताय विरोगिणे॥ ब्रह्ममोक्तसुपेणाय दक्षयज्ञविघातिने॥ ७२॥ नम सर्वात्मने तुभ्य विश्वपालाय ते नम। विश्वगर्भाय गर्भाय वेदगर्भाय ते नम ॥७३॥ ससारार्णव मग्नाना दु खससारहेतवे॥ मुनिप्रियाय जीवाय मूलप्रकृतये नम ॥ ७४॥ समस्त बन्धने तेजोमूर्तये ते नमो नम ॥ आश्रमस्थापकायाथ वर्णिने सुन्दराय च॥७ । मृगबाणार्पणायाथ शारदावल्लभाय च॥ विचित्रमायिने तुभ्यमलङ्करिष्णवे नम । ७६॥ बहिर्मुखमहादर्पमथनाय नमो नम॥ नमोऽष्टमूर्तये तुभ्य निष्कलङ्काय ते नम ॥ ७७॥ नमो हृद्याय मोक्ष्याय यन्नाथाय ते नम ॥ नम ॥ नमो मध्याय मुख्याय वसिष्ठाय नमो नम ॥ ७८॥ अम्बिकापतये तुभ्यं महादन्ताय ते नम ॥ सत्यप्रियाय सत्याय प्रियनृत्याय ते नम ॥ ७९॥ नित्यनृत्याय वेदिने मृगहस्ताय ते नम ॥ अर्द्ध नारीश्वरायाथ कुठारयुतपाणये॥ ८०॥ वरामयप्रदात्रे ते बहुरूपाय ते नम ॥ मदार्थाय सुमन्त्राय कीर्तिस्तम्भाय ते नम ॥८१॥ नम कृतागमायाथ वदान्तपठिताय च॥ अमावाय श्रुतिमते बहुश्रुतिताय च श्रमणाय नमस्तुभ्य गन्धात्ममदकारिणे। पाण्डीनाय बोद्धाय सर्वज्ञताय नम ॥ ८३॥ अचार्य अजननाय नमस्तुभ्यं चिदात्मने॥ रसज्ञाय नमस्तुभ्य रसनारहिताय च॥८४॥ अमूर्ताय मूर्ताय सदसत्पतये नम ॥ निरिन्द्रियाय सत्याय परज्योतिस्वरूपिणे॥ ८५॥ नमस्ते सर्वगाय नमोऽदित्र्यै दयालय॥ सर्गस्थितिविनाशाना कर्त्रे ते प्रेरकाय च॥ ८६॥ नमोऽन्तर्यामिने सर्वदिग्व्याय नमो नम॥ षडूर्मपतये ते

पुराणाय नमो नमः ॥ ८७ ॥ वामदक्षिणपार्श्वाय लोकेश हरिशालिने ॥ नमः सकलकल्याणदायिने प्रसवाय च ॥ ८८ ॥ स्वभावो मारवीराय सूत्रकाराय ते नमः ॥ विपयार्णवमग्नानां-समुद्धरणसेतवे ॥ ८९ ॥ अस्ने-हस्नेहरूपाय वार्ताविक्रान्तवर्तिने ॥ यत्र सर्वतः सर्वं सर्वं यत्र नमो नमः ॥ ९० ॥ नमो महार्णवावाय मारकराय नमो नमः ॥ भक्तिगम्याय भक्तानां सुलभाय नमो नमः ॥ ९१ ॥ दुष्प्रधर्षाय दुष्टानां विज्ञेयाय विवेकिनाम् ॥ अलौकिकाय लोकाय ह्यलोकाय नमो नमः ॥ ९२ ॥ पूर्यित्रे विशेषाय कुशलाय शुभाय च ॥ नमः कर्पूरगौराय सर्पहाराय ते नमः ॥ ९३ ॥ नमः संसारपाराय कमनीयाय ते नमः ॥ वह्निदर्पविघाताय वायुदर्पविघातिने ॥ ९४ ॥ जरातिगाय वीर्याय वेद्याय व्यापिने नमः ॥ सूर्यकोटिप्रकाशाय निष्क्रियाय नमो नमः ॥ ९५ ॥ चन्द्रकोटिसुशीताय कपिलाय नमो नमः ॥ नमो गूढस्वरूपाय निश्चलाय पराय च ॥ ९६ ॥ नमः सत्यप्रतिज्ञाय नमस्ते सुसमाधये ॥ एकरूपाय शून्याय विश्वनाभि-हृदाय च ॥ ९७ ॥ पर्वोत्तमाय लोकाय प्राणाय सुहृदे नमः ॥ नमः परायणायाथ चिन्मात्राय नमो नमः ॥ ९८ ॥ ध्यानगम्याय ध्येयाय ध्यानरूपाय ते नमः ॥ नमस्ते शाश्वतैश्वर्यविभवाय नमो नमः ॥ ९९ ॥ नमः प्राणेश्वरायाय सर्वशक्तिधराय च ॥ धर्माधाराय धन्याय पुष्कलाय नमो नमः । १००॥ प्रतिष्ठायै धर्मगोप्त्रे निखनायाग्रजाय च ॥ योगेश्वराय योगाय योगगम्याय ते नमः ॥ १ ॥ महेन्द्रोपेन्द्रचन्द्रार्कनमिताय नमो नमः ॥ महर्षिवन्दितायाथ प्रकाशाय सुधर्मिणे ॥२॥ नमो हिरण्य-गर्भाय नमो हिरण्मयाय च ॥ जगद्बीजाय हाराय सेव्याय क्रतवे नमः ॥३॥ आधिपत्याय कामाय स्वराय यशसे नमः ॥ नमः प्रचेतसे ब्रह्मम-थाय सकलाय च ॥४॥ नमस्ते रुक्मवर्णाय नमस्ते ब्रह्मणेनये ॥ योगा-त्मनेऽचिन्तिताय दिव्यनृत्याय ते नमः ॥ ५ ॥ जगतामेकनाथाय माया-बीजाय ते नमः ॥ सर्वहृत्पद्मविष्टाय ब्रह्मनाकभ्रमाय च ॥६॥ ब्रह्मा-नन्दाय भवते ब्रह्मण्याय नमो नमः ॥ भूमिभारार्तिसंहर्त्रे भवसारथये नमः ॥७॥ हिरण्यगर्भपुत्राणां प्राणसंरक्षणाय च ॥ दुर्वाससे षड्विकार-रहिताय नमो नमः ॥८॥ नमो देहार्द्धकान्ताय षडूर्मिरहिताय च ॥ महत्ये भवनाशाय ताम्राय परमेष्ठिने ॥९॥ अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकाय नमो नमः ॥ एकाकिने निर्मलाय द्रविणाय दमाय च ॥१०॥ नमस्त्रिलोचना-थाय शिपिविष्टाय बभ्रवे ॥ त्रिविष्टपेश्वरायाय नमो व्याघ्रेश्वराय च ॥११॥ विश्वेश्वराय दात्रे ते नमश्चण्डेश्वराय च ॥ व्योमेश्वराय धुनिने फल्गुकेशाय ते नमः ॥१२॥ योगेश्वराय च नमो दिवोगुमेश्वराय च ॥ नागेश्वराय न्यायाय न्यायनिर्वाहकाय च ॥ १३ ॥ शरण्याय सुगात्राय

कालचक्रप्रवर्तिने ॥ त्रिचक्षणाय दंष्ट्राय श्वेताश्वाय नमो नमः ॥१४॥
नीलजीमूतदेहाय परात्मज्योतिषे नमः ॥ शरणागतपालाय महाबलपराय
च ॥१५॥ सर्वपापहरायाय महानादाय ते नमः ॥ कृष्णस्य जयदात्रे ते
बिल्वकोशाय ते नमः ॥ १६ ॥ दिव्यभोगाय दृष्टाय कोविदाय नमो
नमः ॥ कामपालाय चित्राय विचित्राय नमो नमः ॥ १७ ॥ नमो माता-
महायाथ नमस्ते मातरिश्वने ॥ निःसङ्गाय सुनेत्राय विघ्नेशाय जयाय च ॥
१८ ॥ व्याजसंमर्दनायाथ मध्यस्थाय नमो नमः ॥ अगुष्ठशिरसा लंका-
नाथदर्पहराय च ॥१९॥ व्याघ्रपुरनिवासाय नमः सर्वेश्वराय च ॥ नमः
परावरेशायजगत्स्थावरमूर्त्तये ॥२०॥ नमोऽप्यणुप्रमेयाय शार्ङ्गिणे विष्णु-
मूर्त्तये ॥ नारायणाय वामाय सुग्रीवाय नमो नमः ॥२१॥ नमो ब्रह्माण्ड-
मालाय गोधराय वरूथिने ॥ घण्टानादाय सूनाय नमः पातालवासिने
॥२२॥ नमस्ताराधिनाथाय वागीशाय नमो नमः ॥ सदाचाराय गौराय
पुराणपुरुषाय च ॥२३॥ संसारमोचकायाथ वर्णिने लिंगरूपिणे ॥ सच्चि-
दानन्दरूपाय पापराशिहराय च ॥२४॥ अतर्क्यायाप्रमेयाय प्रमाणाय
नमो नमः ॥ कलिमासाय भक्तानां भुक्तिमुक्ति प्रदायिने ॥२५॥ गजारये
विदेहाय त्रिलिङ्गरहिताय च ॥ नमो राजाधिराजाय चैतन्यविभवाय च
॥२६॥ नमः शुद्धात्मने ब्रह्मज्योतिषे स्थविराय च ॥ मयोभवे च दक्षाय
समर्थाय च यज्वने ॥२७॥ चक्रेश्वराय रुचये नमो नक्षत्रमालिने ॥ अन-
र्थनाशकायाथ मस्मलेपकराय च ॥२८ ॥ सदानन्दाय विदुषे सगुणाय
विरोधिने ॥ दुर्गमाय शुभाङ्गाय मृगव्याधाय ते नमः ॥२९॥ प्रियाय
धर्म्मधाम्ने ते प्रयागाय विभागिने ॥ आचायामृतपानाय सोमपाय
तपस्विने ॥३०॥ नमो विचित्रवेषाय पष्टिसंबद्धनाय च॥ चिरन्तनाय पशुपे
स्थविराय ध्रुवाय च ॥३१ ॥ नियमायामगण्याय व्योमाकाशाय ते नमः ॥
संवत्सराय सौम्याय स्थानदाय स्थविष्णवे ॥ ३२ ॥ व्यायमाय फला-
ध्याय महाकर्त्रे प्रियाय च ॥ गुणत्रयस्वरूपाय नमः सिद्धिस्वरूपिणे
॥ ३३ ॥ नमो नमःस्वरूपाय स्वच्छाय पुरुषाय च ॥ कालान्तराय
चंद्राय नमो ब्रह्माण्डरूपिणे ॥ ३४ ॥ अनित्यनित्यरूपाय तदन्तर्वर्तिने
नमः ॥ समस्तार्याय शुक्लाय पुण्याय पतये नमः ॥ ३५ ॥ पञ्चतन्मात्र-
रूपाय पञ्चकर्मेन्द्रियात्मने ॥ विश्वमङ्गलाय पूर्णाय नमस्ते विषयात्मने
॥ ३६ ॥ अनवद्याय शान्ताय स्वतन्त्रायामृताय च ॥ नमः प्रौढाय
प्राज्ञाय योगारूढाय ते नमः ॥ ३७ ॥ मन्त्रज्ञाय प्रभावाय प्रदीप-
विभवाय च ॥ विश्वधामाय दक्षाय वेदनिःश्वसिताय च ॥ ३८ ॥
महाप्राज्ञाय सुधीराय नागचूडाय ते नमः ॥ श्यामाय पापहर्त्राय
स्कन्धाय पक्षिणे नमः ॥ ३९ ॥ तेजस्काय रहस्याय स्वर्याय च

वरीयसे ॥ गहनाय विरामाय सिद्धान्ताय नमो नमः ॥ १४० ॥
महीधराय होत्रे ते वटवृक्षाय ते नमः ॥ ज्ञानदीपाय दुर्गाय सिद्धा-
न्तनिश्चयाय च ॥ श्रीमते मुक्तिबीजाय कुशलाय विलासिने ॥ ४१ ॥
प्रेरकाय विशोकाय हविर्द्धानाय ते नमः ॥ गम्भीराय सहायाय भोज-
नाय सुभोगिने ॥ ४२ ॥ महायज्ञाय तीक्ष्णाय नमस्ते भूतचारिणे ।
नमः प्रतिष्ठितायाथ महोत्साहाय ते नमः ॥ ४३ ॥ परमार्थाय शिशवे
प्रांशवे च कपालिने ॥ सहजाय गृहस्थाय सन्ध्यानाथाय जिष्णवे
॥ ४४ ॥ षड्भिः सुपूजितायाथ त्रिदलासुरघातिने ॥ जनानन्दाय
योग्याय कामेशाय किरीटिने ॥ ४५ ॥ अमोघविक्रमायाथ भगनाय
दलघातिने ॥ सन्नामायः नरेशाय शुचिहास्याय ते नमः ॥ भूतिप्रियाय
भूम्ने ते श्येनाय मधुराय च ॥ ४६ ॥ मनुष्यबाह्यगतये कृतज्ञाय
शिखण्डिने ॥ निर्लेपाय जटाढ्याय महाकालाय भीरवे ॥ ४७ ॥
नमो विरूपरूपाय शक्तिगम्याय ते नमः ॥ नमः सर्वाय सत्त्वसत्पराय
सुव्रताय च ॥ ४८ ॥ नमो भक्ति प्रियायाथ श्वेतरक्तपराय च ॥
सुकुमारमहापापहराय रथिने नमः ॥ ४९ ॥ नमस्ते धर्मराजाय धना-
ध्यक्षाय सिद्धये ॥ महाभूताय कल्पाय कल्पनारहिताय च ॥ १५० ॥
ख्याताय जितविश्वाय गोकर्णाय सुचारवे ॥ श्रोत्रियाय वदान्याय
दुर्वलाय कुटुम्बिने ॥ ५१ ॥ विरजाय सुगन्धाय नमोविश्वम्भराय
च ॥ भवातीताय पष्ठाय नमस्ते सामगाय च ॥ ५२ ॥ अद्वैताय
द्वितीयाय कल्पराजाय भोगिने ॥ चिन्मयाय नमः शुक्लज्योतिषे
क्षेत्रगाय च ॥ ५३ ॥ सर्वभोगसमृद्धाय साम्बाय च नमो नमः ॥
नमस्ते स्वप्रकाशाय स्वच्छन्दाय सुतन्तवे ॥ ५४ ॥ सर्वज्ञमूर्तये तुभ्यं
हिरण्यरेतसे नमः ॥ शारदाय सुशीलाय कौशिकाय धनाय च ॥ ५५ ॥
अभिरामाय तत्त्वाय व्यक्तकल्पाय ते नमः । अरिष्टमथनायाथ
सुप्रतीकाय ते नमः ॥ ५६ ॥ आशवे ब्रह्मगर्भाय वरुणायेन्दवे नमः ॥
नमः कालाग्निरुद्राय श्यामाय सुजनाय च ॥ ५७ ॥ अहिर्बुध्न्या-
याजराय गुह्येशाय सशान्तये ॥ नमः समयनाथाय सोमपाय
गुह्याय च ॥ ५८ ॥ निर्मलाय नमस्तुभ्यं छन्दसाराय दंष्ट्रिणे ॥
ज्योतिर्लिङ्गाय पित्रे च जगत्सौहृत्कारिणे ॥ ५९ ॥ नमः
कारुण्यनिधये श्लोकाय जयशालिने ॥ ज्ञानोदराय बीजाय जनविधा-
महेतवे ॥६०॥ अवधूताय शिष्टाय छन्दसां प्रभवे नमः ॥ नमः फेण्याय
गुह्याय सर्वबन्धविमोचिने ॥६१॥ उदारकीर्तये शश्वत्प्रसन्नवदनाय च ।
वसवे वेदकाराय नमो भ्राजिष्णुविष्णवे ॥६२॥ चक्रिणे देवदेवाय गदा-
हस्तायसुत्रिणे ॥ नमस्ते पारिजाताय गणाधिपतये नमः ॥६३॥ सर्वशास्त्रा-

धिपतये प्रजनेशाय ते नमः ॥ सूक्ष्मप्रमाणमूर्ताय सुरपार्श्वगताय च ॥ ६४॥ अशरीराय शुक्राय सर्वान्तर्यामिणे नमः ॥ सुकेशाय सुपुष्पाय श्रुतये पुष्पमालिने ॥६५॥ मुनिध्येयाय मुनये बीजस्थाय मरीचये ॥ चामुण्डजनकायाथ नमस्ते कृत्तिवाससे ॥६६॥ व्योमकेशाय योग्याय धर्मपीठाय ते नमः ॥ महावीर्याय दीप्ताय शुद्धाय शनये नमः ॥६७॥ शिष्टेष्टाय मघवते केवये करुणाय च ॥ कारणाय भगवते बाणदर्पहराय च ॥६८॥ अतीन्द्रियाय रम्याय ज्ञानानन्दकराय च ॥ सदाशिवाय धीस्थाय चिन्त्याय चन्द्रमौलिने ॥६९॥ नमस्ते जातुकर्ण्याय सूर्याध्यक्षाय ते नमः ॥ ज्योतिषे कुण्डलीशाय वरदायाचलाय च ॥७०॥ वसन्ताय सुरप्रये जयारिमथनाय च ॥ प्रेतपुरञ्जयायाथ वृषदस्याय ते नमः ॥७१॥ रोचिष्णवे सुरजिते श्वेतपीताय ते नमः ॥ नमस्ते चञ्चरीकाय समिक्षमथनाय च ॥ ७२॥ प्रमाथिने निदाघाय चित्रगर्भाय ते नमः ॥ शिवालयाय स्तुत्याय तीर्थदेवाय ते नमः ॥ ७३ ॥ निरवद्याय दानाय विचित्रशक्तये नमः ॥ नमस्तुल्याय महसे वितानपतये नमः ॥ ७४ ॥ अहङ्कारस्वरूपाय मेधाधिपतये नमः ॥ विक्रमाय स्वतन्त्राय स्वतन्त्रगतये नमः ॥ ७५ ॥ अपाराय तत्त्वविदे सुपर्वीराय ते नमः ॥ पञ्चास्याय सदान्याय विश्वप्राणेश्वराय च ॥ ७६ ॥ अगोचराय सूक्ष्माय क्षीयाय वडवाग्नये ॥ फेण्याय पद्महस्ताय नमस्ते जमदग्नये ॥ ७७ ॥ अनावृताय मुक्ताय मातृकापतये नमः ॥ नमस्ते बीजकोशाय तीव्रानन्दाय मुक्तये ॥ ७८ ॥ नमस्ते विश्वदेवाय शान्तरागाय ते नमः ॥ त्रिलोचनाय तोयाय हेमगर्भाय ते नमः ॥ ७९ ॥ अनाद्यन्ताय वषट्काय मनोनाथाय ते नमः ॥ ज्ञानस्कन्धाय तुष्टाय कपिलाय महर्षये ॥ १८० ॥ नमस्त्रिकाग्निकालाय देवसिंहाय ते नमः ॥ नमस्ते मणिपूराय चतुर्वेदाय ते नमः ॥ ८१ ॥ स्वभावाय सुवासाय हन्तज्ञाय ते नमः ॥ नमस्ते शिवधर्माय महाधर्माय ते नमः ॥ ८२ ॥ प्रमन्नाय नमस्तुभ्यं सर्वान्तर्ज्योतिषे नमः ॥ शावम्भुवे कुलेशाय पक्षरावममन्महे ॥ ८३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ जपन्तु सततं देवा नाम्नां दशशतीमिमाम् ॥ मम प्रीतिप्रियकरीं महामोक्षप्रदायिनीम् ॥ ८४ ॥ संग्रामे जयदात्रीं च सर्वासिद्धिमयीं शुभाम् ॥ यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ८५ ॥ पुत्रकामो लभेत्पुत्रं राज्यकामस्तु राज्यनाम् ॥ प्राप्नुवन्त्यरया भक्त्या धनधान्यादिकं बहु ॥ ८६ ॥ शिवालये नदीतीरेऽश्वत्थमूले विशेषतः ॥ प्रजपेत्सिद्धिदं देवाः शुचौ देशे शमीतले ॥ ८७ ॥ धनकामस्तु जुहुयाद्घृताक्तैर्बिल्वपत्रकैः ॥ मोक्षकामस्तु गव्येन घृतेन प्रतिनामतः ॥ ८८ ॥ पुत्रकामस्तु जुहुयात्

विपतये यज्ञेशाय ते नमः ॥ सूक्ष्मप्रमाणमूर्ताय सुरपार्श्वगताय च ॥ ६४॥ अशरीराय शुभ्राय सर्वान्तर्यामिणे नमः ॥ सुकेशाय सुपुष्पाय स्तुतये पुष्पमालिने ॥६५॥ मुनिध्येयाय मुनये वीजस्थाय मरीचये ॥ चामुण्डजनकायाथ नमस्ते कृत्तिवाससे ॥६६॥ व्योमकेशाय योग्याय धर्मपीठाय ते नमः ॥ महावीर्याय दीप्ताय बुद्धाय शनये नमः ॥६७॥ शिष्टेष्टाय मघवते केतवे करुणाय च ॥ कारणाय भगवते बाणदर्पहराय च ॥६८॥ अतीन्द्रियाय रम्याय ज्ञानानन्दकराय च ॥ सदाशिवाय धीरयाय चिन्त्याय चन्द्रमौलिने ॥६९॥ नमस्ते जातुकर्ण्याय सूर्याध्यक्षाय ते नमः ॥ व्योधिपे कुण्डलीशाय वरदाभयपालाय च ॥७०॥ वसन्ताय सुरभये जयारिमथनाय च ॥ प्रेतपुरञ्जयायाथ पृषदश्वाय ते नमः ॥७१॥ रोचिष्णवे सुरजिते श्वेतपीताय ते नमः ॥ नमस्ते चञ्चरीकाय तमिस्रमथनाय च ॥ ७२॥ प्रमाथिने निदाघाय चित्रगर्भाय ते नमः ॥ शिवालयाय स्तुत्याय तीर्थदेवाय ते नमः ॥ ७३ ॥ निरवद्याय दानाय विचित्रशक्तये नमः ॥ नमस्तुल्याय महसे वितानपतये नमः ॥ ७४ ॥ अहङ्कारस्वरूपाय मेधाधिपतये नमः ॥ विक्रमाय स्वतन्त्राय स्वतन्त्रगतये नमः ॥ ७५ ॥ अपाराय तत्त्वविदे त्र्यम्बकाय ते नमः ॥ पञ्चास्याय चतुरास्याय विश्वप्राणेश्वराय च ॥ ७६ ॥ अगोचराय सूक्ष्माय क्षेमाय वडवाग्नये ॥ फेण्याय पद्महस्ताय नमस्ते जमदग्नये ॥ ७७ ॥ अनावृताय शुक्राय मातृकापतये नमः ॥ नमस्ते बीजकोशाय बीजानन्दाय सुकये ॥ ७८ ॥ नमस्ते विश्वदेवाय शान्तरागाय ते नमः ॥ त्रिलोचनाय लोपाय हेमगर्भाय ते नमः ॥ ७९ ॥ अनाद्यन्ताय वरदाय मनोनाथाय ते नमः ॥ ज्ञानस्कन्धाय तुष्टाय कपिलाय महर्षये ॥ १८० ॥ नमस्त्रिकाग्निकालाय देवसिंहाय ते नमः ॥ नमस्ते मणिपूराय चतुर्वेदाय ते नमः ॥ ८१ ॥ स्वभावाय सुवासाय अन्वज्ञाय ते नमः ॥ नमस्ते शिवधर्माय महाधर्माय ते नमः ॥ ८२ ॥ प्रसन्नाय नमस्तुभ्यं सर्वान्तर्ज्योतिषे नमः ॥ स्वयम्भुवे कुलेशाय पञ्चराञ्चसमन्महे ॥ ८३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ जपन्तु सततं देवा नाम्नां दशशतीमिमाम् ॥ मम चातिप्रियकरीं महामोक्षप्रदायिनीम् ॥ ८४ ॥ संग्रामे जयदात्रीं च सर्वासिद्धिमयीं शुभाम् ॥ यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ८५ ॥ पुत्रकामो लभेत्पुत्रं राज्यकामस्तु राज्यवान् ॥ प्राप्नुयात्परया भक्त्या धनधान्यादिकं बहु ॥ ८६ ॥ शिवालये नदीतीरेऽश्वत्थमूले विशेषतः ॥ प्रजपेत्सिद्धिर्दं देवाः शुची देशे शमीतले ॥ ८७ ॥ धनकामस्तु जुहुयाद्घृताक्तैर्बिल्वपत्रकैः ॥ मोक्षकामस्तु गव्येन घृतेन प्रतिनामतः ॥ ८८ ॥ पुत्रकामस्तु जुहुयात

श्रीगणेशायनमः ॥ चांपेयगौरार्द्धशरीरकायै कर्पूरगौरार्धशरीरकाय ॥ धम्मिल्लकायै च जटाधाराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥१॥ रणत्क्वणत्कंकणनूपुरायै मिलत्फणाभासुरनूपुराय ॥ हेमांगदायै भुजगांगदाय नमः शिवायै०॥२॥ कस्तूरिकाकुङ्कुमचर्चितायै चिन्तारजःपुञ्जविचर्चिताय ॥ सुकुण्डलायै फणिकुण्डलाय नमः शिवायै० ॥३॥ मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय ॥ दिव्याम्बरायैच दिगम्बराय नमः शिवायै० ॥ ४ ॥ प्रोत्फुल्लनीलोत्पललोचनायै विकासपङ्केरुहलोचनाय ॥ समेक्षणाय विषमेक्षणाय नमः शिवायै० ॥ ५ अम्भोरुहश्यामलकुन्तलायै तडित्प्रभाभासुरजटाधराय ॥ जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ६ ॥ सदा शिवानां प्रियभूषणायै सदा शिवानां प्रियभूषणाय ॥ शिवान्वितायै च शिवान्विताय नमः शिवायै० ॥ ७ ॥ प्रपञ्चसृष्ट्युन्मुखलास्यकायै त्रैलोक्यसंहारकृतान्तकाय ॥ कृतस्मरायै विकृतस्माराय नमः शिवायै० ॥ ८ ॥ नमस्ते भगवद्रुद्रभास्करामिततेजसे ॥ नमो भवाय देवाय शिवाय परमात्मने ॥९॥ शर्वाय क्षितिरूपाय सदा सुरभिदे नमः ॥ ईशानाय नमस्तुभ्यं स्पर्शमात्राय ते नमः ॥१०॥ महादेवाय सोमाय अमृतेशाय ते नमः॥ उग्राय यजमानाय नमो मीढुष्टमाय ते नमः॥११॥ नमोऽस्तु ते शंकर शान्तिमूर्ते नमोऽस्तु ते चन्द्रकलावतंस ॥ नमोऽस्तु ते कारण कारणाय नमोऽस्तु ते कारणवर्जिताय ॥१२॥ स एव धन्यस्तव भक्तिभाजां तवार्चको यः कुरुते सदैव ॥१३॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥१४॥

इतिश्रीस्कन्दपुराणे शिवस्तुतिः सम्पूर्ण ॥

श्रीगणेशाय नमः

शिवमहिम्नस्तोत्रम् ।

श्रीपुष्पदन्तउवाच ।

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ॥ अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन् ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥ अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ॥ स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः

कस्य न वचः ॥२॥ मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन् किं
वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् । मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥ तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुद-
यरक्षाप्रलयकृत् त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु । अभव्या-
नामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जड-
धियः ॥४॥ किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो
धाता सृजति किमुपादान इति च । अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥ अजन्मानो लोकाः
किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर
संशेरत इमे ॥ ६ ॥ त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने
प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ॥ रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनाना-
पथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥ महोक्षः
खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकर-
णम् ॥ सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां न हि स्वात्मा-
रामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥ ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्व-
ध्रुवमिदं परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ॥ समस्तेऽप्ये-
तस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा
मुखरता ॥ ९ ॥ तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः परिच्छेत्तुं
यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ॥ ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश
यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥ अयत्नादा-
पाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ॥
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फू-
र्जितमिदम् ॥ ११ ॥ अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं बलात्कैला-
सेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ॥ अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठ-
शिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥ यदृद्धिं
सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ॥
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिर-
सस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥ अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपाविधेयस्या-
ऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ॥ स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न
श्रियमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥ १४ ॥ असि-
द्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य
विशिखाः । स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा
न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥ १५ ॥ मही पादाघाताद्व्रजति सहसा

संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ॥ मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥ वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ॥ जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्य-नैनोन्नेयं धृतमहिमादिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥ रथः क्षोणी यन्ता शतधृति-रगेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ- चरणपाणिः शर इति ॥ दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु:परतन्त्राः प्रभु-धियः ॥ १८ ॥ हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मा न्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ॥ गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥ १९ ॥ क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ॥ अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ २० ॥ क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ॥ क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥ प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा । धनुष्पा-णेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याध-रभसः ॥ २२ ॥ स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथनपुष्पायुधमपि । यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनादवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥ श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ॥ अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २४ ॥ मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रम-दसलिलोत्सङ्गितदृशः ॥ यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये दधत्यन्त-स्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥ २५ ॥ त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च । परि-च्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं न विद्मस्तत् तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥ त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरान-कारायैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ॥ तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धा-नमणुभिः समस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७ ॥ भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महांस्तथा भीमेशानावि-ति यदभिधानाष्टकमिदम् ॥ अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥ २८ ॥ नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ॥ नमो

बर्पिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥ २९ ॥ बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः । जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥ कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ॥ इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥ असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ॥ लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥ असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ॥ सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥ अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ॥ स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥ महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ॥ अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥ दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ॥ महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३६ ॥ कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ॥ स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३७ ॥ सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ॥ व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥ श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण । कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥३९॥ इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः । अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥४०॥ इति स्कन्दपुराणे पुष्पदन्तगन्धर्वराजविरचितं श्रीसदाशिवमहिम्नाख्यं स्तोत्रं संपूर्णम् । श्रीसदाशिवार्पणमस्तु । श्रीरस्तु ॥

देवीपूजनम् ॥

अथ ध्यानम् । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥ ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥ अथ आवाहनम् ॥ ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण-

रजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१॥ अथ आसनम् ॥ तामऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥ अथ पाद्यम् ॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥ अथ अर्घ्यम् ॥ काँसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥ अथ आचमनीयम् ॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये ऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥ ५ ॥ अथ स्नानीयम् ॥ आदित्य वर्णे तपसो धिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायांतरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः ॥ ६ ॥ अथ पञ्चामृतस्नानम् ॥ तत्रादौ पयसा—ॐ पयपृथिव्यांम्पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ अथ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपोषु अस्मान् मातरः शुन्धयन्ते घृतेन नो घृत्वः पुनन्तु ॥ विश्वश्वंहि हिरिप्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि ।—अथ दध्ना ॥ ॐ दधि क्राव्णोरश्वस्य वाजिनः॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूंषि तारिषित् ॥ अथ शुद्धोदक स्नानम् ॥ आपो अस्मान्० ॥ अथ घृतेन ॥ ॐ घृतमिमक्षे घृतमस्य योनिघृ तेश्रियोघृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमावह मादयस्वस्वाहा कृतं वृषभव्वक्षिहव्यम् ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपो अस्मा० ॥ अथ मधुस्नानम्—॥ ॐ मधुव्वाता ऋताय० ॥ शुद्धोदकस्नानम्० ॥ ॐ आपो अस्मान्० ॥ अथ शर्करास्नानम ॥ ॐ अपां ऽं रसमुद्वयस ऽं सूर्य्ये सन्त ऽं समाहितम् ॥ अपां ऽं रसस्य यो रसस्तम्वो गृह्णा म्युत्तम मुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपो अस्मान्० ॥ गन्धोदकस्नानम् ॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ उद्वर्तनस्नानम्—ॐ अंऽशुनाते अंऽशुः पृच्यतांपरुः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः ॥ पुनः शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपो अस्मान्० ॥ ततः ॐ श्री जगदम्बायै नमः ॥ इति नाममन्त्रेण रक्तगन्धाक्षतरक्तपुष्पधूपदीपनैवेद्यानि समर्प्य ॥ वस्त्रं समर्पयेत् ॥ उपैतु मा देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्ति वृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥ यज्ञोपवीतम् ॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥ रक्तचन्दनम् ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीमीश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥ अक्षतम् ॥ ॐ अक्षन्न मीम-

दन्त ह्यश्रिया अभूपत् ॥ अस्तोपतस्त्र भानवो-ऽतिरुणा नविष्ठ्या मतीयोजान्विन्द्रते हरिम् ॥ पुष्पाणि ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥ धूपम् ॥ कर्दमेन प्रजाभूतामयि सम्भ्रमकर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् । ११ दीपम् ॥ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मेगृहे निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले । १२ । नैवेद्यम् ॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १३ ॥ दक्षिणाम् ॥ आर्द्रां यः करिणीयष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४ ॥ प्रदक्षिणाम् ॥ तामऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानाम् ॥ १५ ॥ पुष्पाञ्जलिमन्त्रम् ॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् । सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६ ॥—सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।१७॥ धनमग्निर्धनं वायुर्धनंसूर्यो धनं वसुः । धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥ १८ ॥ वैनतेय सोम पिब सोमं पिबतु वृत्रहा । सोम धनस्य सोमनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ १९ ॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां भक्ताना श्रीसूक्तं जपेत् ॥ २० ॥ पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षी पद्मसम्भवे । तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ २१ ॥ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियम् । विष्णु सप्रियीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ २२ ॥ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमही । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ २३ ॥ पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि । विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥ २४ ॥ आनन्दकर्दमः श्रीदश्चिक्लीत् इति विश्रुताः । ऋषयः श्रियपुत्राश्च मयिश्रीर्देवी देवता ॥ २५ ॥ ऋणरोगादिदारिद्य पापच अपमृत्यवः । भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ २६ ॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमान महीयते । धनधान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ २७ ॥

देव्या आर्तिः—वेदोक्त—

प्रयागतीरनिवासिनि नितमपतिराधे पाराभारविहारिणी नारायणि

हृद्ये । प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये प्रपन्नपालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये ॥ जय देवि जय देवि जय देवि जय मोहनिरूपे । मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे ॥ १ ॥ दिव्यसुधाकरवदने कुन्दोज्ज्वलरदने पद्मनखजनजिंत मदने मधुकैटभकदने । विकसितपङ्कजनयने पन्नग पतिशयने खगपति-वहने गहने सङ्कटवनदहने । जय देवि० ॥ २ ॥ मञ्जीराङ्कितचरणे मणि-मुक्ताभरणेकिंचिद्वस्त्रावरणे वक्राम्बुजधरणे शक्रामयभयहरणे भूसुरसुख करणे करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे॥जय देवि०॥ ३॥ छित्वा राहु-ग्रीवां पासि त्वं विबुधान् ददासि मृत्युमनिष्टं पीयूषं विबुधान् । विहरसि दानवऋद्धान्समरे संसिद्धान् मध्वमुनीश्वरवरदे पालय संसिद्धान् ॥ जय देवि० ॥ ४ ॥

अथ देव्या अथर्वशीर्षम् ।

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवी । साब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चा शून्यं अहमानन्दानानन्दो अहं विज्ञानाविज्ञाने अहं ब्रह्माब्रह्मणी द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये । इति चाथर्वणी श्रुतिः । अहं पञ्च भूतानि अहं पञ्च तन्मात्राणि अहमखिलं जगत् वेदोऽहमवेदोऽहम् विद्याहमविद्याहम् अजाहम् नजाहम् अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् अहꣳ रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि अहमिन्द्राग्नी अहमश्विना उभा अहꣳ सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि अहं विष्णुमुरुक्रमम् ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि अहं दधामि द्रविणꣳ हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् अहꣳ सुवेपितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रेव एवं वेद सदैवी ꣳ सम्पद् माप्नोति देवा अब्रुवन् । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् । दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुराञ्नाशयित्र्यै ते नमः देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति । सा नोमन्द्रेष मूर्जदुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् । सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् । महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् । अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्षया दुहिता तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृत बन्धवः ॥ कामो योनिर्वज्र-पाणिर्गुहा हंसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः पुनर्गुहा सकला मायया,

चापृथक् क्लेशा विश्वमालादि विद्याः ॥ एषात्मशक्तिः । एषा विश्वमोहिनी पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा । एषा श्री महाविद्या । य एवं वेद स शोकं तरति । नमस्ते भगवति मातरस्मान्पाहि सर्वतः सैषा वैष्णवा वसवः सैवैकादशरुद्राः सैषा द्वादशादित्याः सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचयक्षसिद्धा सैषा सत्त्वरजस्तमांसि सैषा, ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतिष्कला काष्टादि विश्वरूपिणी तामहं प्रणौमि नित्यम् । पापापहारिणी देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी । अनन्तां विजयां शुद्धा शरण्यां सर्वदा शिवाम् ॥ वियदाकारसंयुक्तं वीतिहोत्र समन्वितम् । अर्द्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ एवमेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्ध चेतसः । ध्यायन्ती परमानन्द मया ज्ञानाम्बुराशयः वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात् षट्वक्त्रसमन्वितम् ॥ सूर्यो वाम श्रोत्रबिन्दु संयुक्ताष्ट तृतीयकम् ॥ नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरायुक्तयः ॥ विच्चे नवार्णं कोणस्य महानानन्ददायकः ॥ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम् । पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् ॥ त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघं भजे । भजामि त्वां महादेवि महाभयविनाशिनि ॥ महादारिद्रयशमनी महाकारुण्यरूपिणी । यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति ॥ तस्मादुच्यते अज्ञेया । यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या । यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मा दुच्यते अजा । एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते ऽनेका अतएवोच्यते ऽज्ञेयानन्तालक्ष्याजैकानेका । मन्त्राणां मातृकादेवी शब्दानां ज्ञानरूपिणि । ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्त्तिता । तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् । नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ इदमथर्वशीर्षं योऽधीते । सपञ्चाथर्वशीर्षफलमाप्नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योर्चांप्रस्थापयति । शतलक्षं प्रजप्त्वापि नार्चा शुद्धिं च विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः । दशवारं पठेयस्तु सद्यः पापः प्रमुच्यते । महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति निशीथे तुरीयसंध्यायां

जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमाया जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति स महामृत्युं तरति। य एवं वेद इत्युपनिषत्॥

हवनविधिः।

तत्र कर्त्ता शुभदिने ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थाय शौचादिविधिं कृत्वा स्नानसन्ध्यावन्दनादिनित्य कर्म विधाय नवमहत वासः परिधाय सर्वां यज्ञसामग्रीं सम्पाद्य प्राङ्मुखः स्वासने उपविश्य ॐ विष्णुर्विष्णुर्हरिर्हरिः त्रिराचम्य स्थानदेवतागणेशादि पञ्चाङ्गदेवता सर्वतोभद्रमण्डलदेवता पूजनं विधाय शान्तिस्तवं पठित्वा॥ ततः कर्मपात्रजले गंगाद्यावाहनं वा, अर्घपात्र स्थापनं कुर्यात्। यथा—भूमौ जलेन गन्धेन वा त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्र मण्डलं विलिख्य तदुपरि त्रिपादिकां तदुपरि ताम्रमयार्घ पात्रं संस्थाप्य तत्र जलं दद्यात्। ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ ॐ इमम्मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचता परुष्ण्या। असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्यासुषोमया इति तीर्थान्यावाह्य॥ यत्राक्षता-न्निक्षिपेत्—ॐ दशकलात्मने धर्मप्रदवह्निमण्डलाय नमः। ॐ द्वादशकलात्मने ऽर्थप्रदसूर्यमंडलाय नमः। ॐ षोडशकलात्मने कामप्रदचन्द्रमण्डलाय नमः। मॅं सत्त्वाय नमः। रॅं रजसे नमः। अॅं अन्तरात्मने नमः। मॅं परमात्मने नमः। धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य योनिमुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः अर्घस्था गङ्गादिसप्तसरित इहागच्छत, इह तिष्ठत सर्वतीर्थात्मकायार्घपात्राय नमः सम्पूज्य। ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्भास्वते विष्णु तेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सदसत्फलदायिने। इति वारत्रय सूर्यायार्घजलं दत्वा॥ अवशिष्टजलेन सर्वां यज्ञसामग्रीं सिक्त्वा॥

अग्निनामानि—

लौकिकः पावको ह्यग्निः प्रथमः परिकल्पितः।

अग्निस्तु मारुतो नामा गर्भाधाने विधीयते॥ १॥

जपान्ते मत्यहं मन्त्री होमयेत्तद्दशांशतः। तर्पणञ्चाभिषेकञ्च विप्रभोजनमाचरेत्॥ अथवा सर्वपूर्तौ च होमादिकमथाऽऽचरेत्॥ (होमप्रशंसा) -

पुंसवने चान्द्रमसः शुङ्गाकर्मणि शोभनः।

सीमन्ते मंगलो नाम प्रगल्भो जातकर्मणि॥ २॥

यद्यदङ्गं भवेद्भग्नं तत्संख्यादिगुणो जपः। होमाभावे जपः कार्यो होमसंख्या

प्राणायामं कुर्यात् । तत्रादौ वरणविधिः ॥ पाद्यादीनि समर्पयामि स्वर्णांगुलीयसहितवासोभ्यो नमः । इति वरणद्रव्यं सम्पूज्य ॥ वरणं कुर्यात् ॥ आचार्यो वदेत् आस्ये ॥ ततो यजमानः ॐ नमोऽस्त्वनन्ता येत्यादि मन्त्रैः पादप्रक्षालनं विधाय—ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः । ॐ आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः ॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादरेणवः ॥ ॐ यत्फलं कपिलादाने कार्त्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ॥ तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ विप्राणां पादधावने ।। ॐ भूमिर्देवाप्रेत्यर्घं दत्त्वा ॐ गन्धद्वारेति गन्धविलेपनं कृत्वाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य ॐ यदश्नायेति वस्त्रम्, ॐ देवेभ्य इति मुकुटकङ्कणकुण्डलादिभिः सम्पूज्य ॥ वरणसामग्रीं करे गृहीत्वा ॥ अद्येहेत्यादि करिष्यमाणामुकहोमकर्मणि एभिर्गन्धाक्षतपुष्पपूगीफलयज्ञोपवीतस्वर्णांगुलीयवासोलङ्करणादिभिरग्निबृहस्पत्यादिदैवतैराचार्यकर्म कर्तुं आचार्यत्वेनामुकगोत्रममुकशर्माणममुकवेदाध्यायिनं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे ॥ इति वरणद्रव्यं आचार्यहस्ते दद्यात् । वृतोऽस्मीत्याचार्यो वदेत् । ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोतीति पठेत् ॥ अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि त्वं मे आचार्यो भव ॥ अहं भवानीति प्रत्युक्तिः ॥ आचार्यं प्रार्थयेत्—ॐ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ॥ ॐ संसारभय० इति सम्प्रार्थ्य ॥ ततो यजमानो ब्रूयात् । यथाविहितं कर्म कुरु । करवाणि इत्याचार्यो वदेत् ॥ अथ ब्रह्मवरणम्—पूर्ववत्सम्पूज्य ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकोऽहं ममामुकयज्ञकर्मणि ममसंरक्षणाय कृताकृतावेक्षणाय ब्रह्मकर्मकर्तुमेभिः स्वर्णांगुलीयवासोभिरग्निबृहस्पति दैवतैरमुकगोत्रममुकशर्माणम मुकवेदाध्यायिनं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । इति वरणद्रव्यं ब्रह्मणे दत्त्वा प्रार्थयेत्—यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा वेदशास्त्रविशारदः । तथा त्वं मम यज्ञेऽ-

---

चतुर्मुखः । विप्राणां क्षत्रियाणान्तु दशसंख्यागुणः स्मृतः ॥ वैश्यानां बहु-
नाम्नि वै पार्थिवो अग्निः प्राशने तु शुचिः स्मृतः ।
सभ्यनामाथ चूडे तु व्रतारम्भे समुद्भवः ॥ ३ ॥
माङ्गल्यकर्मणा श्रौतामयं विधिः ॥ एषां ब्राह्मणादिनामित्यर्थः ॥ ब्राह्मणवनु-
सारमेव ब्राह्मणादिश्रौतामपि विधि रितिभावः ॥ अत्राप्ययमो तु 'होमकर्म-
गोदाने सूर्यनामा च केशान्ते अग्निरुच्यते ।
वैश्वानरो विसर्गे तु विवाहे योजकः स्मृत ॥ ४ ॥
षट्संख्या विप्राणां द्विगुणो नरः । क्षत्रियाणान्तु वर्णानां त्रिगुणादिः समीरितः ॥

स्मिन्भव ब्रह्मा द्विजोत्तम । अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव ॥ अहं भवानि ॥ यथाविहितं कर्म्म कुरु ॥ करवाणि ॥ अथ ऋत्विग्वरणम्—ब्राह्मणान्पूजयेत् अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममामुकनाम्नि महायज्ञे सर्वतः क्षेमाद्युपलब्धये ऋग्वेदपठनार्थं, उत्तरद्वारे, एभिर्वासोगुलीयासनफलैर्बृहस्पतिवह्निवनस्पतिदैवतैरमुकगोत्रानमुकशर्म्मणो ब्राह्मणान् होमकर्तृत्वेन युष्मान् वृणे ॥ पुनश्च ॥ तदङ्गतया यज्ञसम्बन्धि—शान्तिपाठवाचकेभ्यो गणेशगायत्र्यादिजापकेभ्यो रुद्राध्यायविष्णुसहस्रनामचण्डीपाठकेभ्यो तथा ग्रामदेवतास्थानदेवतादीनां पूजकेभ्यः सावार्यपुराणशास्त्रादिवाचकेभ्यः, अमुकनामगोत्रान् ब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे इति तेभ्यो वरणद्रव्याणि दत्त्वा ॥ वृत्ताः स्म इति ते प्रतिब्रूयुः ॥ यथाविहितं कर्म्म कुरुत इति कर्त्ता वदेत् ॥ करवाम इति ब्राह्मणा वदेयुः ॥ प्रार्थना—अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि यूयं मे ऋत्विजो भवन्तु ॥ वयं भवाम इति प्रत्युक्तिः ॥ अथ रक्षाबन्धनं कुर्यात्—ॐ गणाधिप नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ १ ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् । धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ २ ॥ इत्यादि मंत्रैः सर्षपाक्षतैः रक्षां कृत्वा कङ्कणमभिमन्त्र्य दक्षिणकरे बध्नीयात् । बन्धन मंत्रः । येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल । इति कृत्वा । विधिना मधुपर्कं कृत्वा वैश्वानर लक्षणं वाचयेत्—यज्ञपुरुषो वैश्वानरः कपिलो वर्णो ब्रह्मा ऋषिर्विष्णुश्छन्दो रुद्रो देवता चतुर्वेदा ऋषयो होमे विनियोगः ॥ १ ॥ पूर्वान्तनस्थितराग्नि ऋत्विजः पूर्वदिङ्मुखाः । पूर्वे च देवताः सूर्याः कथन्तु प्राङ्मुखो भवेत् ॥ २ ॥ पूज्यपूज्यकयोर्मध्ये प्राचीदिक् सा स्मृता बुधैः । आवाहयेत्ततो ह्यग्निं मन्त्रपूतेन वारिणा ॥ ३ ॥ अनलः सजलं दृष्ट्वा भीत्वा प्रत्यङ्मुखो भवेत् । अत एवाग्नौ विद्वद्भिर्जलस्पर्शो न कारयितव्यः ॥ ४ ॥ नारद उवाच—पावकस्य किं रूपं लक्षणं चैव कीदृशम् । शिखा उदरजिह्वाश्च चक्षुः श्रोत्रं मुखं कथम् ॥ ५ ॥ ब्रह्मोवाच—पावकोद्विजरूपस्तु त्रिनेत्रः त्रिशिरास्तथा । पञ्चलक्षणसंयुक्ताः सप्तजिह्वाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

(अथ कुण्डलक्षणविचारः) तत्राष्टविधानि कुण्डानि—चतुरस्रं योनिरर्द्धं·

चतुर्थ्यां तु शिखी नाम धृतिरग्निस्तथापरे ।
आवसथ्ये भवो ज्ञेयो वैश्वदेवे तु पावकः ॥ ५ ॥
ब्रह्मा वै गार्हपत्याग्निरीश्वरो दक्षिणस्तथा ।
विष्णुराहवनीयश्च अग्निहोत्रे त्रयोऽग्नयः ॥ ६ ॥

त्रिभागे तन्मुखं ज्ञेय ह्यादावन्ते च मध्यके । उत्तरास्ये स्थितो विष्णुर्दक्षिणास्ये प्रजापति ॥ ७ ॥ मध्यवक्त्रे शिवो ज्ञेयो ह्येव ब्रह्मा जगाद है । मूर्ध्नि स्थितोऽहं ब्रह्मा वै मुखे चैव तु शङ्कर ॥ ८ ॥ जिह्वायां च स्थितो विष्णुर्दंष्ट्राग्रे तु ब्रह्मा स्थिता । घ्राणे तु देवता सर्वाश्चक्षुयो शशिभास्करौ ॥ ९ ॥ हृदये यस्य ऋग्वेदो बाहुस्थाने यजुस्तथा । उदरे कट्यां च शिश्ने वा सामवेद प्रकीर्त्तित ॥ १० ॥ अथर्व पादयोर्जङ्घे, ग्रीवायां प्रणवस्तथा । पृष्ठभागे तु गायत्री एव रूप बुधै स्तुतम् ॥ ११ ॥ नारद उवाच कस्य पुत्रो वैश्वानर कस्मिन्कुले चोत्पन्न का माता क पिता ॥ १२ ॥ ब्रह्मोवाच—शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिलीत्रय शाण्डिल्यासितदेवलेति त्रिप्रवर अरुणी माता वरुण पिता ॥ १३ ॥ अग्निस्थापन सङ्कल्प कुर्यात् । ॐ नम परमात्मने पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्यब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गतक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे केदारखण्डे बदरिकाश्रमे इह स्थाने श्रीविष्णुप्रभृति अमुकदेवताय पुण्यतमक्षेत्रे बौद्धावतारे अस्मिन् वर्तमाने अमुकनाम सम्वत्सरे ऽमुकायने ऽमुकर्त्तावमुकमासे ऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे ऽमुकनक्षत्रे ऽमुकयोगे ऽमुककरणे ऽमुकराशौ स्थिते रवौ, चन्द्रे, भौमे, बुधे, गुरौ, शुक्रे, शनौ राहौ, केतौ, सन्निर्दिष्टसमये ऽमुकगोत्रो० मुकराशि सपत्नीक सपुत्रादिपरिवारो ऽमुकशर्माहं मम यजमानस्य ज्ञाताज्ञातमनोवाक्कायकर्मजनितनिखिलाघस्तोमनिरसनपूर्वकाधिभौतिकाधिदैविकाध्यात्मिकसमुत्पन्नतापत्रयापनोदायदु स्वप्नदु शकुनदुर्निमित्ताधिव्याधिप्रत्यूहव्यूहसंभवितदुर्घटबाधोपलिप्तदारिद्र्यदु खनिवृ

सत्यहोमे वह्नि नामा वृष्टिहोमे हुताशन ।
चन्द्रं रूपम् मुखचु लम् । पदम् पङ्कजाकारतष्टाम् वानि नामत ॥ सर्वसिद्धिकर कुण्ड चतुरस्रमुदाहृतम् । पुनर्भद शान्तिकुण्डमर्धेन्द्वाभ शुभप्रदम् । यत्र
प्रायश्चित्त विधिश्चैव पाकयज्ञे षु साहस ॥ ७ ॥
देवाना हव्यवाहस्तु पितृणां कव्यवाहन ।
पूर्णाहुत्या मृडो नाम शान्तिके वरदस्तथा ॥ ८ ॥
पौष्टिके बलदश्चैव क्रोधाग्निश्चाभिचारिके ।
वश्यार्थे कामदो नाम वनदाहे तु वधन ॥ ९ ॥
चतरस्र "रम् चतुष्क शान्तिकर्मणि । वृत्तमावश्य कुण्ड पदम् पद्मसन्निभम् । इषिद गणदानन कुण्डमध्यसुनाविवन् । (वर्जं भद्रन कुण्डभद.)—विनायक

तत्रह्माण्डवर्त्तिचराचर चतुरशीतिलक्षयोनिसमुद्भूतनानाविधातङ्कसमुदायदूरीकरणमुखदीर्घायुष्यनैरुज्यबलपुष्टिप्राप्त्यनन्तरं सार्वजनीनहृद्गतचर्मगतम निष्कगतामयसंशोधनोत्तरकालिकधर्म्मार्थकाममोक्ष प्रतिबन्धकसमस्तान्तरायक्षपणसाधनकर्त्तव्यभौमांतरिक्षमहोत्पातेतिभयमूलसमुच्छेदनमूलकचतुर्वर्गसिद्धिकोशोद्घाटकसर्वनिगमागमोक्तशु भफलप्राप्तयेऽमुकयज्ञपूर्वाङ्गतया यजुःशाखीयपद्धत्युक्तप्रकारेणाग्निस्थापन करिष्ये ॥ कुशैर्हस्तमात्रमितांभूमि परिसमूह्य तान्कुशानैशान्यां दिशि परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रजापतिभागगृहीतेन यथोरं त्रिरोरेखा विलिख्यल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्यपूर्वं क्षिप्त्वा जलेनाभ्युक्ष्य पीठं पूजयेत् कुशाक्षतैः । ॐ रत्नमन्दिराय नमः ॐ चतुर्द्वारमंडलाय नमः, ॐ रत्नवेदिकायै नमः, ॐ श्वेतच्छत्राय नमः, ॐ रत्नसिंहासनाय नमः, ॐ वैराग्याय नमः ॐ ऐश्वर्याय नमः, ॐ अधर्माय नमः, ॐ अज्ञानाय नमः, ॐ अवैराग्याय नमः, ॐ अनैश्वर्याय नमः ॥ इति पञ्चभूसंस्कारान्कृत्वा ॥ ततः कांस्यादिपात्रे पैप्पलक्षादिरशाम्यारणिज सूर्यकान्तज श्रोत्रियागारजं वाऽग्निं संस्थाप्य, अग्निसंस्कारं कुर्यात् । ॐ मीयगृह्णाम्यग्ने अग्नि रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ इति ग्रहणम् ॥ ॐ गर्भो अस्योषधीना गर्भो वनस्पतीना गर्भो विश्वस्य भूतस्यग्निगर्भो अपामसि ॥ इति गर्भाधानम् ॥ ॐ विवस्वानादित्यैष ते सोमपीथ तस्मिन्मत्स्व-श्रदस्मै नरो वर्चसे दधातन ॥ यदाशीर्दादम्पतिर्वमिमश्नतः पुमान्पुत्रो

कोष्ठे तु जाठराग्निः स्यात्क्रव्यादोऽमृतभक्षणे ।
समुद्रे वाडवो ज्ञेयः क्षये संवर्त को भवेत् ॥ १० ॥ इति ॥

ब्राह्मणलक्षणम्—

ब्राह्मणाश्च कुलीनाश्च वेदवेदाङ्गपारगाः ।
षट्कर्मनिरताः शुद्धाः स्वाध्याये चैव तत्पराः ॥ १ ॥

चतुरस्रं त्वाद्राशां वर्तुलमिष्यते । वैश्यानामर्धचन्द्राभं शूद्राणां त्र्यस्रमीरितम् । चतुरस्रन्तु सर्वे पाकेनिदिच्छान्ति तान्त्रिकाः ॥ (दुर्गाहोमे त्रिकोणकुण्डं स्थल्)

जितेन्द्रिया जितक्रोधा अग्निहोत्रपरायणाः ।
धनहीना निर्विषया सत्यशौचपरायणाः ॥ २ ॥
उभयोः कुलयोः शुद्धा ये शुद्धा वाचकाः स्मृताः ।
कुटुम्बिनो महाभागास्ते विप्राः फलदायकाः ॥ ३ ॥
मूकाश्च बधिराश्चैव पङ्गुलाः श्यामदन्तकाः ।

'होमार्थं चेत् कर्तव्यं कुण्डमचेत् त्रिकोण...। स्थण्डिलं वा प्रकर्तव्यं त्रिकोण मानतः।शम्भु'—इति वह्निभाने दत्तात्रेयवचनात् शारदातिलकादिसर्वत्र-

जायते विंद्ते वसुधा विश्वाहा २थ एधते गृहे ॥ इति पुंसवनम् ॥ ॐ कस्त्वा सत्यो मदानामं ऽहिंष्ठो मत्सदंधसः दृढाचिदारुजे वसु: ॥ इति सोमन्तोन्नयनम् ॥ ॐ अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः ॥ गोजोरया ऽहमाणः परन्ध्या ॥ इति जातकर्म ॥ ॐ यदापि एष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन् एतदग्ने अनृणो भवाम्यहं तौ पितरौ मया सम्भचरुस्थां सन्मा भद्रेण पृक्तो विपृचस्यविमपाप्मना पृह्ल ॥ इति नामकर्म ॥ ॐ पूषा पश्चात्तरेण पव दिश चदजयत्तो ऽन्वेष ऽ सविता पडत्तरेण पड्तूनुदजयत्तानुज्जेपम्मरुतः सप्तात्तरेण सप्त ग्राम्यान्पशूनुदजय ऽ स्तानुज्जेषं वृहस्पतिष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत्ता- मुज्जेषम् ॥ इति निष्क्रमणम् ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्य नो धेह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ इत्यन्न- प्राशनम् ॥ ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ इति चूडाकर्म ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ऽ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ इति कर्णवेधः ॥ ॐ अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत्तमुज्जेप- मश्विनौ द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयतान्तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रीँलोकानुदजयत्तानुज्जेषं सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशूनुदजयत्तानुज्जे- षम् ॥ इत्युपनयनम् ॥ ॐ अश्वस्यात्रस्य सम्पत्तिः पुत्राणामभिसम्पदे ॥ आयुर्वर्चश्रियाददन्त्या सा न एहि रुन्धति ॥ इति वेदारम्भः ॥ ॐ प्रत्तं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ॥ देवी धियं मनामहे सुमृलीका- मभिष्टये वर्चो धायज्ञवाह ऽ सुतीर्थानो असद्वशे ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवस्ते नोवन्तु ते नो यन्तु तेभ्यः इति समावर्त्तनम् ॥ ॐ गाय उपावतावर्त्तं पक्वस्य रप्सुदा उभा कर्णा हिरण्यया ॥ इति गोदानम् ॥ ॐ भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम तत्त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एतामनेह ॥ इति विवाहः ॥ ॐ ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य

मवादी च परद्वेषा आशाचारः शठस्तथा ॥ ४ ॥
नित्यमंनृतवादी च शरीरं क्रूरकर्मणि ।
पाखण्डनिरतो यश्च देवब्राह्मणनिन्दकः ॥ ५ ॥
गोलकाः कुण्डकाश्चैव निन्दकाः प्रेतमानसाः ।
राजसेवा परा विप्रा यज्ञकर्मणि वर्जिताः ॥

इत्येवं नु चतुरस्रत्वेन प्राशस्त्यमुक्तम् । समस्तकुण्डविधानप्रतिपादकनिबन्धे- ष्वप्येवमेव, एवं सर्वास्वपि देशाचारेषु या व्यवस्था । (कुण्डस्वरूपम्)—

ज्योतिष्मती अस्तृङ्वर्ममीमहे ॥ इति चतुर्थी॥ अथावाहनम्—ॐ उपयाम गृहीतोऽस्यग्ने त्वा वर्चस एप ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे अग्ने वर्चस्विन् वर्चस्वाँस्त्वं देवेष्वसि वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥ इति षोडशसंस्कारान्कृत्वा ॥ अग्निं वेद्यां वा कुण्डे स्वाभिमुखं स्थापयेत् ॥ ॐ वैश्वानरो न ऊतय आप्रयातु परावतः अग्निर्न्नः सुष्टुती रुप ॥ ॐ अग्निं दूतं० ॥ इत्यग्निं संस्थाप्य ॥ तत्र यज्ञियकाष्ठानि ॐ त्वामद्य ऋषय आर्षेयेति मन्त्रेण संस्थापयेत् ॥ ॐ अग्निमूर्द्धेति मन्त्रेणाग्निं प्रज्वालयेत् ॥ अनामिकाङ्गुष्ठयोगेन प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्—ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव । ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु विश्वेदेवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥ ॐ तदस्तु मित्रा० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ अथ ध्यानम्—ॐ इष्टं शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दोर्भिर्धारयन्तं जपाभम् । हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ॥ कुशकण्डिकाक्रमः—यजमानोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य, अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव, भवानीति, तयस्तस्मिन्नासने कृताग्निपरिक्रमं ब्रह्माणमुदङ्मुखं उपवेशयेत्। प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्, एकाशीतिदर्भानादाय विंशतिमाग्नेयादीशानान्तम्. विंशतिं ब्रह्मणोग्निपर्यन्तं त्रिंशति नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्, विंशतिनैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्, विंशतिमग्नितः प्रणीतापर्यन्तं परिस्तीर्य कुशमवशिष्टमेकं स्वदक्षिणतः स्रुवस्थापनार्थं स्थापयेत्। अग्नेरुत्तरः पश्चिमशि पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशाद्वयं, पवित्रच्छेदनार्थं कुशात्रयम्,

---

आसनानि व्यासः—

कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च ।

दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत् ॥

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि ।

कुशाजिने व्याधिनाशः कम्बले दुःखमोचनम् ॥

प्राच्यां शिरः समाख्यातं बाहू दक्षिणसौम्ययोः । उदरं कुण्डमित्युक्तं योनिः पादौ च पश्चिमे स यावत्कुण्डस्य विस्तारः खननं तावदीरितम् । कुशानां

अभिनादे नीलवर्णं रक्तं वर्णादिकमपि ।

शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेषां चित्रकम्बलम् ।

पञ्चाशद्भिः कृतो ब्रह्मा ॥ तदर्धेन तु विष्टरः ।

कुण्डस्य मध्यमं पार्श्वं मन्त्रेणास्य प्रकीर्तितम् ।

प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशाः पञ्चकुशाः, वेणीरूपोपयमनकुशाः सप्त, पलाशसमिधस्तिस्रः, स्रुवः, आज्यम्, षट्पञ्चाशदुत्तरमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नं तण्डुलपूर्णपात्रं सदक्षिणम्, एतानि सर्वाणि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशिक्रमेणासादनीयानि स्थापनीयानि] पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयेण साग्रमनन्तर्गर्भं कुशद्वयं छित्त्वा सपवित्रदक्षिणकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय, व्यस्तम्, द्वाभ्यामनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रं पवित्रं धृत्वा तेन प्रोक्षणीजलस्य त्रिरुत्प्लवनं कुर्यात् प्रोक्षणीपात्रं वामहस्ते कृत्वा, दक्षिणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहीत्वा तेन प्रोक्षणीजलं त्रिरुत्क्षिप्य, प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं विधाय, प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनं कृत्वा, अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् आज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्य, अधिश्रित्य [तापयित्वा] ज्वलदुल्मुकेन प्रदक्षिणक्रमेण हविर्वेष्टयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षिपेत्, स्रुवमधोमुखं प्रतप्य सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः सम्मृज्य, प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य, पुनः प्रतप्य, स्वदक्षिणतो धृतकुशोपरि निदध्यात्, अग्नेर्दक्षिणक्रमेणाज्यमग्नेरुत्तरतो निदध्यात् प्रोक्षणीवत् त्रिरुत्प्लाव्य, अवेक्ष्य, सत्यपद्रव्ये तन्निरस्य, पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनं कुर्यात् वेणीरूपोपयमनकुशान् (उपसंग्रहार्थीयान्कुशान्) वामहस्ते कृत्वा उत्थाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा घृताक्ताः पालाशसमिधस्तिस्रः समिद्धतमे

यस्मिन् सर्वाणि कार्याणि साधनीयानि नित्यशः ॥ १ ॥
यादृशं रूपं मेखलानाञ्च तादृशम् ॥ (होमप्रमाणेन कुण्डमानम्)—मुष्टिमात्रमपि तु कुण्डं शतार्धे सम्प्रचक्षते । शतहोमविधिस्तिमात्रं हस्तमात्रं सहस्रके ।
यथाचाह कातीये—

आज्यस्थाली तैजसी वा मृन्मयी वा प्रकीर्तिता ।
द्वादशाङ्गुलविस्तीर्णा प्रादेशोच्चा शुभा स्मृता ॥ १ ॥
आज्यस्थाली समा नैव चरुस्थाली प्रशस्यते ।
प्रणीता वारणा प्राग्रा द्वादशाङ्गुलसम्मिता ॥ २ ॥

द्विहस्तमयुते लक्षे चतुर्हस्तमुदीरितम् ॥ (कुण्डमानेन मेखलामानम्)—
कुण्डानां मेखलाश्चिह्ना मुष्टिमात्रे त्रयं वा क्रमात् । उत्सेधायामतो ये वा

स्थाउन दव्यलकदाकृत्या पद्मपत्रवत् ।
पुरोडाशस्य पात्री तु चतुरस्रा समानव ॥ ३ ॥
स्रावेन स्रुवं खनैव युवा पर्णे प्रशस्यते ।
खादिरा वाद्युवाप्यस्तु उदु स्रुवकः स्व ॥ ४ ॥
प्रान्तिमात्रा दैर्घ्येण वर्तुलाङ्गुष्ठ प्रकीर्तितः ।

ऽग्नौ तूष्णीं जुहुयात् ॥ उपविश्य ॥ सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य, प्रणीतापात्रे पवित्रं निधाय पातितदक्षिणजानुर्ब्रह्मणान्वारब्धः (ब्रह्मणो दक्षिणहस्तेन दक्षिणस्थकुशेन वा अनुस्पृष्टः) समिद्धतमेऽग्नावाज्याहुतीः स्रुवेण दद्यात्, प्रजापत्यादिद्वादशाहुतिपर्यन्तं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः ॥ अथाहुतयः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये, इति पूर्वद्वारहोमः । ॐ इंद्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय, इत्यग्निमध्ये उत्तरद्वारहोमः । ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये, इत्याधारौ दक्षिणपूर्वार्द्धे ॐ सोमाय स्वाहा, इद ᳪ सोमाय इत्याज्यभागौ, उत्तरपूर्वार्द्धे । इति चतुर्द्वारहोमः ॥ अथ व्याहृतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥ ॐ स्वः स्वाहा, इद ᳪ सूर्याय ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं सवितृभ्यः ॥ एता महाव्याहृतयः ॥ अथ पञ्चवारुणो (प्रायश्चित्त) होमः ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ᳪ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ १ ॥ ॐ स त्वन्नो अग्नेवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ॥ अवयक्ष्व नो वरुण ᳪ रराणो वीहि मृडीक ᳪ सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ २ ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्व मया असि ॥ अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ᳪ स्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ३ ॥ ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तस्तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे

द्वयेकार्धांगुलसम्मिताः । वितस्तिमाने कुण्डे वेदाग्निनयनांगुलाः । कुण्डे द्विहस्ते वा ज्ञेया रसवेदगुणांगुलाः । चतुर्हस्तेषु कुण्डे षड्वसुयुगांगुलाः ।

अर्धचन्द्रस्य आल्या च युक्तो नासाकृतिर्भवेत् ॥ ५ ॥

उपभृत् स्रुक्स्रुवौ स्रुक् च पुष्करसुक्रयेव च ।

अग्निहोत्रस्य हवणी तथा वैकङ्कतः स्रुवः ॥ ६ ॥

पवित्रप्रमाणम् ।

द्व्यङ्गुलं मूलपर्वं मध्येऽङ्गुलं निर्भवेत् ।

मेखलानां भवेदन्तः परितो नेमिरंगुलात् । एकहस्तस्य कुण्डस्य नर्धेदघ्रकर्णा-स्मृताः । विस्तारोत्सेधतो ज्ञेया मेखला सर्वतो बुधैः । कुण्डे योनिरायतानु-

नतु युगकमम स्यात्वितस्य प्रमाणकन् ॥ १ ॥

दशाङ्गुलं त्रिवृतं पत्रं त्र्यङ्गुलं व्यासमर्धकम् ।

विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः ॥ ४ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायादितये ॥ ५ ॥ अथाग्निपूजनम्—ऋग्वेदं स्थापयेत्पूर्वं यजुर्वेदन्तु दक्षिणे। पश्चिमे सामवेदन्तु उत्तरे च ह्यथर्वणम् ॥ इति चतुर्दिक्षु पाद्यादिभिर्वेदान्सम्पूज्य ततोग्निजिह्वापूजनम्—ॐ काल्यै नमः, ॐ कराल्यै नमः, ॐ मनोजवायै नमः, ॐ सुलोहितायै नमः, ॐ सुधूम्रवर्णायै नम, ॐ स्फुलिङ्गिन्यै नमः, ॐविश्वरुचये नमः, ॐ लोलायमानायै नमः सप्तजिह्वामुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तजिह्वा इहागच्छत इह तिष्ठत पाद्यादीनि समर्पयामि ॥ सप्तजिह्वाभ्यो नमः सम्पूज्य ॥ अथावाहनम्—ॐ तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ॥ तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥ १ ॥ सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि ॥ नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चम मध्ये परिजग्रभत् ॥ २ ॥ न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः ॥ हिरण्यगर्भ इत्येषः मा मा हिंसीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येष ॥ ३ ॥ एषो ह देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः स एव जातः ॥ स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनांस्तिष्ठति सर्वतोमुखः ॥ ४ ॥ चत्वारि शृङ्गास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आविवेश ॥ ५ ॥ रुद्रकल्पे—रुद्रतेजसमुद्भूतं० ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ पुरुष एवेद ॥ सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति इत्यासनम् ॥ आसनार्थे, पुष्पं समर्पयामि श्रीमदग्नये नमः ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय

---

* घमन्त्वात्मवत्वं मूर्ध्नि पंचपात्रमिति स्मृतम् ॥ २ ॥
पौष्टिके पंच दर्भाश्च चतुर्दर्भाश्च शान्तिके।
वैश्विके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि ॥ ३ ॥

पर्यश्वत्थपत्रवत् ॥ रुद्रकल्पे कुण्डानां कुण्डाना योनिराख्याता। पटवत्पद्मपंक्तु, आयाम विस्तारोन्नतिशालिनी ॥ एकाङ्गुलन्तु योन्यग्रं कुर्यादीषदधोमुखम्।

मार्कण्डेय,—
चतुर्विंदर्भपिञ्जूलैर्ब्रह्मस्य पवित्रकम् ॥
एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्णे यथाक्रमम् ॥ ४ ॥

अत्रिः—
अनामिकामूलदेशे पवित्रं धारयेद् द्विजः।

एकैकाङ्गुलजो योनिं कुण्डेष्वन्येषु वर्धयेत्। नवपञ्चकमेणैव योन्यग्रमपि वर्धयेत् ॥ स्थलादारभ्य नालं स्यायोन्यं मध्यं शरम्भकम्। नार्धैकुण्डकोणेषु

आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः । इति पाद्यं समर्पयामि ॥ श्रीमदग्नये नमः ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ इत्यर्घं समर्पयामि ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ इत्याचमनीयं सम० ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्याग्राम्याश्च ये इति स्नानीयं सम०॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥ इति पञ्चामृतं सम० ॥ ततः पञ्चामृतस्नानानन्तरं शुद्धोदकं सम० ॥ ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः ॥ तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥ इति वस्त्रं सम० ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः इति यज्ञोपवीतं सम०॥ ॐ अलङ्करणमसि भूयोऽलङ्करणं भूयाः ॥ इति भूषणाभावे रजतादि द्रव्यं समर्प० ॥ ॐ अ छं-शुना ते अ छं शुः पृच्यतां परुषा परुः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥ इति चन्दनं सम० ॥ ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया ऽ धूषत ॥ अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न्विष्ठयामती योजान्विन्द्र ते हरी ॥ इत्यक्षतान्सम० ॥ ॐ याहरयमदग्निश्रद्धायै कामायेन्द्रियाय त्वा अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च । इति पुष्पाणि स० ॥ ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः । देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥ इति धूपमाघ्रापयामि ॥ ॐ चन्द्रमा मनसः इति दीपं दर्शयामि ॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो धेह्यनमीवस्य शुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

अग्निनियमस्तु संग्रहे—

उत्तमोऽरणिजन्योऽग्निर्मध्यमः सूर्यकान्तिजः ।

उत्तमः श्रोत्रियागारान्मध्यमः स्वगृहादपि ॥ १ ॥

अथ समिधाहोममन्त्राः—

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।

योनिं वा तत्रनितमः ॥ कुण्डानां कल्पयेदन्तर्नाभिमश्वत्थसन्निभाम् । तत्तत्कुण्डानुरूपं वा मानमस्य निगद्यते ॥ मुष्ट्यरत्न्येकहस्तानां नाभिरुत्सेधता-

अस्मिन्हव्या जुहोतन स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन ।

अग्नये जातवेदसे स्वाहा ॥ २ ॥

इति नैवेद्यं निवेदयामि श्री० ॥ तृषा दूरीकरणार्थमिदं जलं समर्प० ॥ ततः करमुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्प० ॥ मुखवासार्थे पूगीफलताम्बूलं समर्प० ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ इति दक्षिणां सम० ॥ कर्पूरारार्तिक्यं दर्शयामि ॥ ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वाऽनुपदसि नूपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोसि तेजसे त्वा ॥ इति परिक्रमणम् ॥ ततो नमस्कारः । ॐ नमस्ते देव देवेश नमस्ते वरद प्रभो ॥ वैश्वानर नमस्तेस्तु सर्वदा मङ्गलं कुरु ॥ इति षोडशोपचारेण अग्निपूजनम् ॥ अथ पञ्चगव्यहोमः-सामैः सप्तपत्रैर्हरितैः कुशैर्दशाहुतीर्जुहुयात् ॥ तत्र मन्त्राः—ॐ इरावतीधेनुमतीहि भूत छ सूयवासिनी मनवे दशस्या ॥ व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथ्वीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥ इदं पृथ्व्यै ॥ १ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाछसुरे स्वाहा ॥ इदं विष्णवे ॥ २ ॥ ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ॥ मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमि त्वा हवामहे स्वाहा, इदं रुद्राय ॥ ३ ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ॥ सुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे ॥ ४ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये ॥ ५ ॥ ॐ सोमाय स्वाहाः इदं सोमाय ॥ ६ ॥ ॐ तत्सवितु० इदं सूर्याय ॥ ७ ॥ ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयछस्याम पतयो रयीणां स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ ८ ॥ ॐ स्वाहायै ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते ॥ १० ॥ पुनर्ऽ ॐ देवकृत० ॥ इति पञ्चगव्यहोमः ॥ अथ यथाविधिहोमसम्पत्त्व-

---

ॐ तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि ।
बृहच्छोचाय विष्ट्य स्वाहा ॥ ३ ॥

रतः । द्विविंशदङ्गुलोपेता कुण्डेष्वन्येषु वर्धयेत् ॥ यवद्वयक्रमेणैव नाभि पृथगुदाहृतः । योनिकुण्डे योनिमन्यकुण्डे नाभिं विवर्जयेत् ॥ कुण्डविहृतौ

ॐ उपत्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत ।
जुषस्व समिधो मम स्वाहा ॥ ४ ॥ इति समिधाहोमः ॥

गणाधिपतये देया प्रथमा तु वराहुतिः ।
यस्यपा विरक्तं कर्म येऽन्येतद्विनिरिचतम् ऐ
दे मार्थे चक्ष्यमाणम्—
चतुर्भागं यवाहृत्वा द्विभागं चाज्यमेव च ।

प्रोक्षणम्—ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ॐ तेजोऽसि शुक्रस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ इति हृतद्रव्याण्येकीकृत्य पश्चात् ॐ आपो हिष्ठेत्यादि मन्त्रैः सम्प्रोक्ष्यैरर्घजलेन ॥ हवनीयद्रव्याय नमः सम्पूज्य, एष गन्धः एतानक्षतान् इमानि पुष्पाणि, धूपमाघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि, दक्षिणां समर्पयामि ॥ ग्रहसमिधः—अर्कः पलाशः खदिरो ह्यपामार्गोऽथ पिप्पलः ॥ औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् । समिद्भ्यो नमः पाद्यादीनि समर्पयामि इति सम्पूज्य ॥ ततः तस्मिन् यवादिहोमद्रव्ये यजमानो ब्राह्मण एव वा संकल्पं कुर्यात् ॥ यवकुशजलतण्डुलान्यादाय ॥ अद्येत्यादि० अमुकशर्माऽहं ममात्मनो वा अमुष्य यजमानस्य श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासोक्तसत्फलप्राप्त्यर्थं [वा अमुकग्रामवासिनां] सर्वैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सकलमनईप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि—प्राप्त्यर्थं, इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं समस्तभयव्याधिजरापीडाल्पमृत्युपरिहारद्वार आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सकलदुष्टग्रहजनितानिष्टफलनिराकरणार्थं सर्वोपद्रवादिनाशहेतवे; आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थं आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्वर्गफलावाप्तये अमुकक्षेत्रे वा तीर्थे, करिष्यमाणे अमुकनाम्नि महायज्ञे पूर्वाङ्गतया गणपत्यादिचतुर्देवानां प्रीतये ऋग्वेदादिचतुर्वेदानां संप्रीत्यर्थं, अधिप्रत्यधिदेव-

---

दोषः) खातेऽधिके भवद्रोगी हीने धेनु धनक्षयः । वक्रकुण्डे तु सन्तापो, मरणं छिन्नमेखले । मेखलारहिते शोकोऽप्यधिके वित्तसंक्षयः । भार्याविनाशनं प्रोक्तं

कृष्णास्तिलाज्यभागं च ह्येकभागं च तण्डुलम् ।
शर्करायाश्चार्द्धकाणं हवनस्य विधिस्त्वयम् ॥ १ ॥

अन्यच्च—

तिलं घृत समं कृत्वा यवान्नं द्विगुणी कृतम् ।
तदर्द्धं तण्डुला देया होमसामान्यकर्मणि ॥ २ ॥

कुण्डे योन्या विना कृते । अतस्त्र ध्वंसनमुक्तं कुण्डं यत्नपठवर्जितम् । तदेवं कुण्डनिर्माणस्यातीव दुष्करतया न्यूनाधिक्याच्च दोषभयात्कुण्ड-

अपि च—

चतुर्भागं तिलान्नं च द्विभागं चाज्यमेव च ।
यवाद्यन्तु त्रिभागं स्यादेकभागन्तु तण्डुलम् ॥ ३ ॥

वासद्विवसूर्यादिनवग्रहदेवतानां वैदिकमन्त्रैर्घृताभिघारितचरुसमिधाभिः तथा पंचलोकपालगणपत्यादीनां, अष्टलोकपालानां च [इन्द्रादिदशदिक्पाल] अगस्तिध्रुवपृथिवीवास्तुकूर्मक्षेत्रपालादिदेवानां प्रसन्नतार्थं तथा च विष्णुसर्पकूष्मांडोश्रियो मेधायाश्च रक्षोघ्नीगायत्रीजातवेदेति मन्त्रैः श्रीलक्ष्मीनारायणयज्ञपुरुषप्रीत्यर्थं च सतिलयवतंडुलाज्यैर्नृगीमुद्रानिर्दिष्टैर्यथाविधिना होमं करिष्ये ॥ तथा च सम्वत्सरारम्य होमपूर्वोत्तराङ्गपूर्णाहुतिपर्यन्तं चरुस्थालीपाकेन वा होमं करिष्ये ॥ तदङ्गतया विश्वेदेवार्चनपूर्वकनान्दीमुखश्राद्धं वा घृतच्छायाऽऽच करिष्ये ॥ इति सङ्कल्पं होमद्रव्यादी त्यक्त्वा ॥ अथ पूर्वाक्षिप्रतिचरणे विश्वेदेवापूजनम्—ॐ विष्णुर्विष्णुर्हरिर्हरिः त्रिराचम्य ॥ अञ्जलिं बध्वा—ॐ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ॥ यज्ञकर्मणि ये देवा सावधाना भवन्तु ते ॥ ॐ विश्वे देवान्भवन्तु आवाहयिष्ये ॐ आवाहय, इत्यावाहनमुद्रां प्रदर्श्य पुष्पाक्षतैः—ॐ विश्वेदेवास आगत शृणुता मइम ५ हवम् ॥ एदम्बर्हिर्निषीदत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्विश्वेदेवा इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु इह सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ ब्रह्मविष्णुशिवात्मकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सम्पूज्य पाद्यं समर्पयामि, एष गन्धः, एतानक्षतान्, इमानि पुष्पाणि, धूपमाघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि, दक्षिणां समर्पयामि, ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः (यवकुशजलान्यादाय ॥ अमुकश्राद्धे आभ्युदयिकश्राद्धे सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानामेष हिरण्यपादार्घो वो नमः स्वाहा ॥ १ ॥ गणपत्यादिदेवेभ्यो नवग्रहेभ्य इन्द्रादिदिक्पालेभ्यः पञ्चलोकपालेभ्योऽश्विन्यापष्ठाविशतिनक्षत्रेभ्यो नान्दीमुखेभ्य एष एष हिरण्यपादार्घो वो नमः स्वाहा ॥२।

फलम्—

आयुर्नाशं घृताधिक्ये पुत्रनाशं तिलाधिके ।

स्थाने स्थण्डिलमेव कुर्यात् । तदुक्तम्—नित्यं नैमित्तिककाम्यं स्थण्डिले वा समाचरेत् । हस्तमात्रे प्र तत्कुर्यादासुकाभिः मृशोभनम् । कुण्डमन्येषला कृत्वा योनि

धनधान्यसमृद्धिः स्याद्यवाधिक्ये न संशयः ।

तण्डुलाधिके हानिः शर्कराधिके भयम् ॥ ४ ॥

अन्य—प्रायुक्षयोय वा० ॥

अथ होमद्रव्यग्रहणे मुद्रात्रयम्—

मयूरी कुक्कुटी हंसी सूकरी च मृगी तथा ।

हरवा ततः परम् । सौराष्ट्र मते शौकं स्पंडिअमनगुरक्षकम् । दिरकगुलभवेरकदाम्यावरव समर्प यथा ॥ (अग्नेः सप्तजिह्वाः)—काली कराली च मनोजवा

मेषादिद्वादशराशिभ्य उपग्रहेभ्योऽन्येभ्योऽपिमहमण्डलसंस्थेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्य एष हिंगुलापादार्घो वो नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ अगस्त्यादिभ्यो ध्रुवादिभ्यो नान्दीमुखेभ्यः एष हिंगुलापादार्घो वो नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ कुलदेवताभ्यो वास्तुपुरुषक्षेत्रपालादिभ्यो नान्दीमुखेभ्य एष हिंगुलापादार्घो वो नमः स्वाहा ॥ ५ ॥ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो देवर्षिपितृमनुष्येभ्यो नांदीमुखेभ्य एष हिंगुलापादार्घो वो नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ इति विश्वेदेवाग्रे दद्यात् ॥ ॐ आब्रह्मन्निति मंत्रेणार्घजलेन विश्वेदेवानामभिषिञ्चनं कुर्यात् ॥ इति नान्दीमुखश्राद्धम् अथ घृतच्छायाविधानम् । तैजसे पात्रे घृतं प्रक्षिपेत्–ध्रुवोसीति प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो ध्रुवो देवता घृतच्छायायां विनियोगः ॥ ॐ ध्रुवोसी ध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात् ॥ घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य च्छदिरसि विश्वजनस्यच्छाया स्वाहा ॥ इति वारत्रयं कृत्वा ॥ शेषं घृतं–ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते स्वाहा ॥ इति वह्नौ प्रक्षिपेत् ॥ ॐ यानि कानीति परिक्रमणं कृत्वा ब्रह्माचार्यर्त्विगादिभिर्ब्राह्मणैराशिषं गन्धाक्षतांश्च गृह्णीयात् ॥ समिद्धोमं विधाय ॥

अथ यवादिहोमद्रव्याहुतिः प्रारम्भः ॥ आदौ गणपत्यादि चतुर्देवहोमः– हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधं स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ॥ सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ विष्णोररटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवे त्वा स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः

पञ्च मुद्रा विजानीयाद्धोमद्रव्यग्रहे बुधः ॥ १ ॥
मुष्टिजेन पाणिना द्रव्यं तर्जनीरहितेन यत् ।
क्रियते हवनं विप्रैर्मयूरीं तां विदुर्बुधाः ॥ २ ॥
अङ्गुष्ठरहिताः सर्वा अङ्गुल्योतानलक्षिताः ।
हवनं क्रियते ताभिः कुक्कुरी सा प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥

च सुलोहिता चैव सुधूम्रवर्णा । स्फुलिङ्गिनो विश्वरुचिस्तथा च चलायमाना इति सप्तजिह्वाः ॥ ॥ एतास्वोक्ता विशेषेण आतम्या ब्राह्मणेन तु ॥ (होमे

सूकरी करसङ्कोची मृगी मुक्तकनिष्ठिका ।
हंसी स्यात्तर्जनी मुक्ता त्रिधा मुद्राः प्रकीर्तिताः ॥ ४ ॥
शान्ति के च मृगी ज्ञेया हंसी पौष्टिककर्मणि ।

शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥ ४ ॥ ततः पञ्चगव्याभिषेकः प्रतिहोमान्ते कर्त्तव्य. ॥ यथा-ॐ यथावाणप्रहाराणां कवचं वारणं भवेत् ॥ तद्वद् देवोपघातानां शान्तिर्भवति वारणम् ॥१॥ यथा समुत्थित यंत्रं यन्त्रेण प्रतिहन्यते ॥ तथा समुत्थितं घोरं शीघ्रं शान्त्या प्रशाम्यति ॥ २ ॥ ब्रह्मा गावो नरेन्द्राश्च ब्राह्मणाश्च विशेषतः ॥ पूजिताः प्रतिपूज्यन्ते निर्दहन्त्यपमानिताः ॥ ३ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ठ्ठ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ठ्ठ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ४ ॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ ५ ॥ ॐ शान्तिः ३ ॥

अथ चतुर्वेदहोमः ॥ ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमं स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अग्न आयाहि वीतयेगृणानो हव्यदातये ॥ निहोता सत्सि बर्हिषि स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा ॥ ४ ॥ पूर्ववदभिषेकः ॥ ४ ॥ पूर्ववदभिषेकः ॥ इति ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणहोमः

अथादित्यधिदेवताधिवत्नवग्रहाणां होमः । हरि ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ आसादयादिह स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ आकृष्णेनरजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता

अभिचारे युकरी स्यादिष्टदेपोच्चाटनादिषु ॥ ५ ॥
मुद्राहीनं तु यं मोह ॥ ६ ॥ आरमारयं कुक्कुटी ॥ इति ॥

मुद्राः)—मयूरी कुक्कुटी. हंसी सूकरो च मृगी. तथा । पञ्च मुद्रा विजानीयाद्होमद्रव्यप्रदे बुधः ॥ न्युब्जेन पाणिना द्रव्यं तर्जनीरहितेन यत् ।–क्रियते

अथाग्निलक्षणानि शारदायाम्–
यत्र काष्ठ तत्र श्रोत्र यत्र धूमस्तत्र नासिका ।
यत्राल्पज्वलनं नेत्रं यत्रो भस्म ततः शिरः ।
यत्र प्रज्वलितो वह्निस्तन्मुखं जातवेदसम् ॥ १ ॥

हवनं विप्रैर्मयूरी ता विदुर्बुधाः ॥ अंगुष्ठमध्यमा. सर्वा अंगुल्योऽयानलक्षिताः हवनं क्रियते याभिः कुक्कुटी या मकीर्तिता ॥ विकनिष्ठा तु हंसी स्यान्मुकुला

रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्स्वाहा ॥ इदं हविरादित्याय स्वाहा ॥ ॐ अप्स्वग्ने सधिष्ट वसौषधीरनुरुद्धयसे गर्भे सञ्जायसे पुनः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ इमन्देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ जातवेदसे सुनवामसो ममरातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुन्दुरिता त्यग्निः स्वाहा ॥ ६ ॥ इद हविश्चन्द्रमसे स्योनापृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ अग्निम्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ॥ अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथम जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्य महिजातन्ते अर्वन्स्वाहा ॥ इदं हरिभौमाय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥ ॐ उद्‌बुद्धयस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च अस्मिन्त्सधस्थे अद्‌ध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ विष्णोरराटम० ॥ १२ ॥ इद हविर्बुधाय स्वाहा ॥ ॐ महाँ २ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु हन्तु पाप्मान योस्मान्द्वेष्टि उपयाम गृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हा द्युमद्विभाति

फलम्—

वैयथ्यत्वं कर्णहोमे नेत्रेऽन्धत्वमवाप्नुयात् ।
नासिकाया,मनः पीडा शिरोहोमो हि राजदः ॥
अधोमुख ऊर्ध्वपाद; प्राङमुखो हव्यवाहनः ।
तिष्ठत्येव स्वभावेन आहुतिः कुत्र दीयते ॥ १ ॥

सूकरी मता । मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैर्मृगी चैवोपलक्षिता ॥ फलमूलयजौ ज्ञेया मुद्रा श्रेष्ठा शिखण्डिनो । जारमारणकर्त्तव्ये कुक्कुटी तु प्रकीर्तिता ॥ वश्यो

स्र्पवित्राम्बुहस्तेन वह्नेः कुर्यात्प्रदक्षिणा ।
हव्यवाट् सलिलं दृष्ट्वा बिभेति सम्मुखो भवेत् ॥ २ ॥ इति भृगुः ॥

अथ स्रुवधारणविधिः—

अग्रे धृत्वार्थनाशाय मध्ये चैव मृतप्रजा ।
मूले च म्रियते होता स्रुवस्थान ह्य भवेत् ॥ १ ॥

क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रं स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ अह्वायसानं० ॥ १५ ॥ इदं हविर्बृहस्पतये स्वाहा ॥ ॐ शुक्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यंहाः स्वाहा ॥ १६ ॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ॥ ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोमृतं मधु स्वाहा ॥ १७ ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रं ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा ॥ १८ ॥ इदं हविः शुक्राय स्वाहा ॥ ॐ प्रजापतेन त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणां स्वाहा ॥ १९ ॥ ॐ शन्नो देवी० ॥ २० ॥ ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवास्त्वा सविता मध्वा नक्तु पृथिव्याः संस्पृशस्पाहि ॥ अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि स्वाहा ॥ २१ ॥ इदं हवि शनैश्चराय स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा ॥ २२ ॥ ॐ कया नश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा ॥ कया शचिष्ठया वृता स्वाहा ॥ २३ ॥ ॐ काण्डात्काण्डात् ... समुद्रस्य त्वावित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा ॥ २४ ॥ इदं हविः राहवे स्वाहा ॥ ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो अभिवर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पतां स्वाहा ॥ २५ ॥ ॐ

उच्चाटनपूर्वांचा कर्मणा शूकरी मता ॥ शान्तिके पौष्टिके कार्ये मृगी हंसो यथो-चता ॥ (शाक्तप्रमाणम् —वितास्तु द्विगुणाः प्रोक्ता यवेभ्यश्चैव सर्वदा । प्रमाणमध्यास्य ... मध्यैवः ।

स्रुवं धारयते विद्वान् ... च सदा बुधैः ॥ २ ॥
तर्जनी च बहिः कृत्वा कनिष्ठां च बहिस्तथा ।
मध्यदानामिकाङ्गुष्ठैः स्रुचं धारयते द्विजः ॥ ३ ॥
चतुरङ्गुल परित्यज्य ... वा ।

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं तिलाधिक्यं ... ॥ (शारदातिलके ...) वास्तुप्रदीपे यथा—

... ॥ ४ ॥
अग्निः सोमश्च सूर्यश्च रुद्रश्चैव प्रजापतिः ।

केतुङ्कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः स्वाहा ॥ २६ ॥ ॐ इन्धानास्त्वा शत ँ हिमा द्युमन्त ँ समिधीमहि वयस्वन्तो वयस्कृत ँ सह स्वन्त-सहस्कृतं अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासो अदाभ्यं चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा ॥ २७ ॥ इदं हविः केतवे स्वाहा ॥ अभिषेकः ॥

अथ पञ्चलोकपालहोमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा० इदं गणपतये स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ जातवेद से० इदं दुर्गायै स्वाहा ॥ २ ॥ वाता वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तवि ँ शतिः ॥ ते अग्रेश्वमयु ञ्जँस्ते अस्मिञ्जवमादधुः स्वाहा ॥ इदं वायवे स्वाहा ॥३॥ ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यान्त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यान्त्वा स्वाहा ॥ इदमाकाशाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणबलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि स्वाहा ॥ इदमश्विभ्यां स्वाहा ॥ ५ ॥ पूर्ववदभिषेकः ॥

अथ गणपत्यादीनामष्टलोकपालानाञ्च होमः । हरिः ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ॐ गणपतये स्वाहा ॥ ॐ मूषकाधिपतये स्वाहा । ॐ परशुबाणाय स्वाहा [ॐ ईश्वराय स्वाहा ॥ ॐ सर्वोत्पातप्रशमनाय स्वाहा ॥ ॐ श्रियै स्वाहा ॥ ॐ तिथिदेवतायै स्वाहा ॥ ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ॥ सचेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे स्वाहा ॥ एवं सर्वत्र] ॐ गणपतये मूषकाधिपतये परशुबाणाय इदमग्नये स्वाहा ।१।

पश्यन्तु यजदैवत्यं देवतास्तु स्रुवे सदा ॥ ५ ॥
यमभागं त्यजेन्मूलं षोडशाङ्गुलमग्रतः ।
प्रजाभागे स्रुवो धार्यः, सर्वकर्मप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

चतुर्भागास्तिलाः कार्यास्त्रिभागास्त्वाज्यमेव च । श्वेता यवा द्विभागाः स्युस्तदर्धं तण्डुलाः स्मृताः । तदर्धं शर्करा शेयेत्यादि यथेष्टं शर्कराऽऽज्यश्चेत्यपि क्वचि-फलम्—

स्वाग्रे वाऽते वह्निर्विभागश्चतुरङ्गुलः ।
अग्निस्थानेऽग्निसन्तापः सोमे क्लेश उदाहृतः ।
सूर्ये पशुविनाशः स्याद्रौद्रे रौद्रभयं भवेत् ।
प्रजापतौ प्रजावृद्धिर्यमे मृत्युभयं भवेत् ॥ इतिस्रुवधारणविधिः ॥

दुपलभ्यते । एवं शास्त्रसम्मतत्वेऽपि निर्धना यजमाना महर्घत्वादाज्यस्य भागद्वयं तत्राप्यशक्तावेकभागमेवाऽऽददीरन् तु भागत्रयमेव । देशकालपात्रानुरूपं

ॐ इन्द्रायेन्दुꣳ सरस्वती नरा शꣳ सेन नग्नहुम् ॥ अयातामश्विना मधुभेषजं भिषजासु ते स्वाहा ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ शचीपतये स्वाहा॥ ॐ वज्रबाधाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ॐ इन्द्राय शचीपतये वज्रबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अग्नि दूतं पुरो० ॥ ॐ अग्नये स्वाहा ॥ ॐ मेषाधिपतये स्वाहा ॥ ओं ज्वालबाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं अग्नये मेषाधिपतये ज्वालबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत् ॥ गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्व वसवो निरतष्ट स्वाहा ॥ ओं यमाय स्वाहा ॥ ओं प्रेताधिपतये स्वाहा ॥ ओं दण्डबाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ओं यमाय प्रेताधिपतये दण्डबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छसात इत्यानमोदेवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा ॥ ओं वैश्रवणाय स्वाहा ॥ ओं यक्षाधिपतये स्वाहा ॥ ओं खड्गबाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं वैश्रवणाय यक्षाधिपतये खड्गबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतुसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद स्वाहा ॥ ओं वरुणाय स्वाहा ॥ ओं मकराधिपतये स्वाहा ॥ ओं पाशबाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं वरुणाय मकराधिपतये पाशबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं वातो वामनो वा० ॥ ओं वायवे स्वाहा ओं अन्तरिक्षाधिपतये स्वाहा ॥ ओं ध्वजबाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं वायवे अन्तरिक्षा-

---

कर्मविशेषे नियमाः—

पादेन पादमाक्रम्य जप नैव तु कारयेत् ।
शिरः प्रावृत्य वस्त्रेण ध्यानं नैव प्रशस्यते ॥ १ ॥
न पाणिपादचपलो न नेत्रचपलो द्विजः ।
न च गात्रचपलश्चैव कश्चिदिमवाप्नुयात् ॥ २ ॥

धर्मस्य त्वरिपतेः । समुद्रास्तु शास्त्रनिर्देशानुरूपमेव सम्पादनीयाः । शिलान्यासर्वाधिकार्यं सर्वप्रयोगेन समुद्रानामावश्यकमेव, अन्यथा प्रत्यवायभवयाज्ञवल्क्यसंहितायाम्—

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह ।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात् ॥

धिपतये ध्वजबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं सोमो धेनु ॅ सोमो अर्वन्तमाशु ॅ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति सादन्यं विदथ्य ॅ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै स्वाहा ॥ ओं सोमाय स्वाहा ॥ ओं नक्षत्राधिपतये स्वाहा । ओं अमृतबाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् । ओं सोमाय नक्षत्राधिपतये अमृतबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं विष्णोरराट० ॥ ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ओं लक्ष्मीपतये स्वाहा ॥ ओं चक्रबाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ओं विष्णवे लक्ष्मीपतये चक्रबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ईशावास्यमिद ॅ सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्याञ्जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनं स्वाहा ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥ ओं उमापतये स्वाहा । ओं त्रिशूलबाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरयेति पूर्ववत् ॥ ओं ईशानाय, उमापतये त्रिशूलबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ १० ॥ ओं ब्रह्मयज्ञानं० ॥ ॥ ओं ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ओं ब्रह्माधिपतये स्वाहा ॥ ओं कुशबाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं ब्रह्मणे ब्रह्माधिपतये कुश [पाणये] बाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं पातालाधिपतये स्वाहा ॥ ओं विषबाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ओं सर्पाय पातालाधिपतये विषबाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ १२ ॥ अभिषेकः ॥ इत्यष्टलोकपालहोमः ॥

अथागस्त्यादित्रिं अपालहोमः । हरिः ओं अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्राजापत्यबल मोदयमानः ॥ उभावर्णावृषिरुग्र पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम स्वाहा ॥ १ ॥ ओं ध्रुवन्ते राजा वरुणो ध्रुवन्देवो बृहस्पतिः ॥ ध्रुवन्त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवं स्वाहा ॥ २ ॥ ओं स्योना पृथिवी० ॥ ३ ॥ ओं वास्तोष्पते प्रति जानाह्यस्मान्स्ववेशो अनमीवो भवः न ॥ यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे

यात् ॥ (द्रव्यभेदेनाऽऽहुतिप्रमाणम्)—कर्षमात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पयः स्मृतम् । गुडं पलमानं स्याच्छर्करापि तथा मता ॥ व्रीहयो मुष्टिमात्राः

सकारे सूतकं नाम हकारे मृत्युसूतकम् ।
अक्षरद्वयसंयुक्ता आहुतिः कस्य दीयते ॥ १ ॥
सकारे शङ्करश्चैव हकारे हरिरुच्यते ।
अक्षरद्वयसंयुक्ता आहुतिस्तस्य दीयते ॥ १ ॥
कुण्डस्य पूर्वदिग्भागे काली जिह्वा प्रकीर्तिता ।

स्मुपुदगमापा यवा अपि । तण्डुलः स्युस्तदर्धोशश्चकमाषार्धमेव च ॥ आज्यपयआदितस्यापि स्रुवेण, समिधो, मूलओ द्वयंगुलं विहाय मध्यमाना-

स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्द्धया त्वम् ॥ तस्मै देवा अधिब्रुवन्नयञ्च ब्रह्मणस्पतिः स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं क्षेत्रस्य पतिना वय हि तेनेव जयामसि ॥ ग मश्व पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे स्वाहा ॥ ६ ॥ पूर्ववदभिषेक इति क्षेत्रपालहोम ॥

अथ विष्णुहोम हरि ओं त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्य ॥ अतो धर्माणि धारयन्स्वाहा ॥ १ ॥ ओं तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदं स्वाहा ॥ २ ॥ ओं अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ॥ पृथिव्या सप्त धामभि स्वाहा ॥ ३ ॥ अभिषेक ॥

अथ सर्पहोम । हरि ओं नमोस्तु सर्पेभ्यो० ॥ १ ॥ ओं या इषवो यातुधानाना ये वा वनस्पतीꣳरनु ॥ ये वावटेषु शेरते तेभ्य सर्पेभ्यो नम स्वाहा ॥ २ ॥ ओं ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ॥ येषामप्सु सदस्कृत तेभ्य सर्पेभ्यो नम स्वाहा ॥ ३ ॥ अभि० ॥

अथ कूष्माण्डहोम । हरि ओं यद्देवा देवहेडन देवासश्चकृमा वयम् ॥ अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहस स्वाहा ॥ १ ॥ ओं यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम् ॥ वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहस स्वाहा ॥ २ ॥ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम् ॥ सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहस स्वाहा ॥ ३ ॥ अभिषेक ॥

अथ श्रियो मेधायाश्च होम । हरि ओं सदसस्पतिमद्भुतम्प्रिय मिन्द्रस्य काम्यम् ॥ सनिम्मेधामयासिषꣳस्वाहा ॥ १ ॥ ओं याम्मेधा देवगणा पितरश्चोपासते ॥ तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविन

आग्नेये तु कराळाख्या दक्षिणे तु मनोजवा ॥
तुम्रोहिता च नैर्ऋत्ये धूम्रवर्णा तु वारुणे ।
स्फुलिङ्गिनी तु वायव्ये सौम्ये विश्वरुचिस्तथा ॥ १ ॥
आयुतप्रभृत्याहोममन्त्रा —
गायत्र्याग्नौ शतं हुत्वाऽष्टौ शतं त्र्यम्बकेन च ।
मिळागुर्वं हुत्वा । चरु पायसम हविषैव जुहुयात् । आचार्य चरुमित्यपे ।
अन्यं सर्वत्रैव तदभावे यजिरा इरसेन जुहुयात् । विशिष्टैर्विमिश्राहुति,
ततो महादिमन्त्रैश्च जुहुयाद्दशनेत्रतः ॥
त्र्यम्बकस्यापिमन्त्रेण शतमष्टोत्तरं ततः ।
शतमष्ट सुधासंहेरकादशशतं च ॥

कुरु स्वाहा ॥ २ ॥ ओं मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजा- पतिः मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं इदम्मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ॥ मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमान्तस्यै ते स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या- वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाण मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण स्वाहा ॥ ५ ॥ अभि०

अथ रक्षोघ्न । हरिः ओं [ओं त्र्यम्बकं यजा० ॥ ओं काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च स्वाहा ॥ ओं या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहसे तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा वयं स्वाहा । ओं यास्ते अग्ने सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः ॥ ताभिर्नो अद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि स्वाहा] कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजे वा मवाँ इभेन तृष्वीमनु प्रसितिन्द्रूणानोस्तासि विध्यरक्ष- स्तपिष्ठैः स्वाहा ॥ १ ॥ ओं तव भ्रमास आशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गा न सन्दितो विसृजविष्व- ग्गुल्काः स्वाहा ॥ २ ॥ ओं प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः ॥ यो नो दूरे अघशंसो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत्स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्य- मित्राँ ओषतात्तिग्महेते ॥ यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचातं धक्ष्यतसन्न शुष्कं स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदावि- ष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ॥ अवस्थिरा तनुहि यातु जूनां जामि- मजामिं प्रमृणीहि शत्रून् अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि स्वाहा ॥ ५ ॥ अभि०

अथ दिग्होमः । हरिः ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा

मीढुष्टमेति मन्त्रेण रक्षोघ्नैः शतपञ्चकम् ।

रक्षोहा विश्वचर्षणिमनुहुयात्पञ्च वा शतम् ।

वेदेषु निरपेक्षका । (पूर्व द्रव्यपरित्यागः)-आदौ द्रव्यपरित्यागः पश्चाद्धोमो विधीयते । प्रत्याहुतिद्रव्यत्यागस्तु कर्तुमशक्यत्वादादौ द्रव्यत्यागः । (पवित्र-

सहस्र जातवेदेति काण्डात्काण्डादथैव च ।

पदशतं मेऽरत्न तेनैव निशत शक्रदेवतैः ॥

एतेषु दशमाहस्र हुत्वा स्नानं समाचरेत् ॥

इत्यद्भुतप्रकाशमन्त्राः ॥

दवाः)-पालाशाश्वत्थप्लक्षवटोदुम्बराश्च । अश्वत्थ,उदुम्बरो बिल्वश्चन्दनः सरलस्तथा । शालश्च देवदारुश्च खदिरश्चेति याज्ञिकाः । (समिधः)-(१)-

दक्षिणायै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा ॥ १ ॥ पूर्ववदभिषेकः ॥

अथ गायत्रीहोमः । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्स्वाहा ॥ इति जपित्वाष्टोत्तरशतवारं जुहुयात् ॥ अभिषेकः ॥ तथैव-श्रों जातवेदसे० इत्यष्टाविंशत्यधिकशतवारं पठित्वा होमं कुर्यात् ॥ अभिषेकः ॥ इति यथादिहोमद्रव्याहुतिं दत्त्वा । सूर्यमन्त्रैः पूजिताग्नौ घृतधारां कुर्यात् ॥ उत्थाय तत्र मन्त्रा-श्रादित्यं गर्भं पयसामंधिसहस्रस्य प्रतिमा विश्वरूपम् ॥ परिवृङ्धि हर सामाभिर्मं शतायुर्ष कृणुहि चीयमानः स्वाहा ॥ श्रों विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखः विश्वतो बाहुरुत विश्वत स्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः स्वाहा ॥

अथ सम्वत्सरहोमः । श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः श्रों मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ॥ परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि स्वाहा । १ ॥ श्रों अश्वावती सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम् ॥ आवित्सि सर्वा ओषधीरस्मा अरिष्टाततये स्वाहा ॥२ ॥ श्रों सम्वत्सरोसि परिवत्सरोसीदावत्सरोसीद्वत्सरोसि वत्सरोसि ॥ उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्द्धमासास्ते कल्पन्तान्मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ता सम्वत्सरास्ते: कल्पन्ताम् ॥ प्रेत्या एत्यैसञ्चां च प्रचसारय सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवः सीद स्वाहा ॥ ३ ॥ अभिषेकः ॥

अथ ऋतुहोमः । हरिः श्रों वसंतेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः ॥

मनुर्वस्याहोममन्त्राः—

गायत्र्या दशसहस्रं मानस्तोकेन षड्गुणम् ।
त्रियद्ग्रहादिमन्त्रैश्च चत्वारि विष्णुदैवतैः ॥ १ ॥

नाङ्गुष्ठादधिका कार्या समित्स्थूलतया क्वचित् । न वियुक्ता त्वचा चैव न सकीटा न पाटिता । प्रादेशमात्रा संयोज्या समित्तत्र न नाधिका ॥ (समिदादीनामा-

पुष्मायदैर्जुहुयात्तद्य० ॥
इत्यादि मन्त्रैः मनुर्वस्याहोममन्त्राः ॥
पूर्वं प्रज्वलितो वह्निर्विर्द्धव्यं मुमुक्षवे ।
भूयो निर्धूमनिर्ज्वाला मृदाग्निः परिकीर्तितः ॥ १ ॥

नयनम्) समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत् । शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन्व्रजत्यधः ॥ समिदं चत होमम्मन्-योऽन्यस्मिन्नपि जुहोत्यग्नौ व्यग्रादिषि

क्षिथ्शेमृतास्तु ताः ॥ सत्येन रेवतीः क्षत्रथ्ं हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥ ६ ॥ अभिषेकः ॥

अथ मासहोमः [ओं नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरात्रेभ्यः स्वाहार्द्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहार्त्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याथ्ं स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा ॥ ॐ एकस्मै स्वाहा द्वाभ्याथ्ंस्वाहा शताय स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम स्वाहा] अर्द्धमासाः परूथ्ंषि ते मासा आच्छ्यन्तु शम्यन्तः ॥ अहो रात्राणि मरुतो विलिष्टथ्ं सूदयन्तु ते स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहा ईषाय स्वाहोर्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहाथ्ंहसस्पतये स्वाहा ॥

अथ पक्षहोमः । हरिः ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्याथ्ं रक्षाथ्ंस्यपहथ्ंस्यग्ने ॥ ताभ्याम्पतेमसकृतामुलोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः स्वाहा १ अभिषेकः ॥

अथ तिथिहोमः । हरिः ॐ अग्नेः पक्षतिर्वायोर्निपक्षतिरिन्द्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थ्यदित्यै पञ्चमीन्द्राण्यै षष्ठी मरुताथ्ंसप्तमी बृहस्पतेरष्टम्यर्य्यम्णो नवमी धातुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी

सूतकविचारः—

व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे ॥
आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम् ॥ १ ॥
प्रारम्भो वरणं यज्ञे सङ्कल्पो व्रतसत्रयोः ।
नान्दीश्राद्धं विवाहदौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया ॥ २ ॥

च मानवः । मन्दाग्निरामयावी च दरिद्रश्चैव जायते ॥ भवेदन्धः सधूमे तु जुहुयाद्यो हुताशने । तस्मात्समिद्धे होतव्यं नासमिद्धे कदाचन ॥ (अग्निप-

पैठीनसिस्मृतेः—

विवाहदुर्गयज्ञेषु यात्रायां तीर्थकर्मणि ।
न तत्र सूतकं तद्वत् कर्म यज्ञादि कारयेत् ॥ ३ ॥

यमस्य त्रयोदशी स्वाहा १ ॐ नन्दायै स्वाहा, ॐ भद्रायै स्वाहा, ओं जयायै स्वाहा, ओं. ओं रिक्तायै स्वाहा, ओं पूर्णायै स्वाहा ॥ इति ॥ त्रिवारमुच्चार्य जुहुयात् ॥ अभिषेकः ॥

अथ सप्तवारहोमः । हरि ॐ आकृष्णेन रजसा० इति सूर्याय ॥ ओं इमन्देवा असु० इति चन्द्रमसे एव सर्वेषां मन्त्रैर्जुहुयात् ॥ ओं कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या० ॥ इति च क्वचित् ॥ अभिषेक. ॥

अथ राशिहोमः । हरि ओं अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सोना पौष्णः श्यामो नाभ्याꣳ सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतपुच्छ इन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः स्वाहा ॥ १ ॥ ओं प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा भरन्नग्निम्पुरीष्यमापाद्यायुषः पुरा ॥ वृषाग्निं वृषणम्भरन्नपाङ्गर्भं [illegible] समुद्रियंमग्न आयाहि वीतये स्वाहा ॥ २ ॥ ओं अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने ॥ इममपाꣳ सङ्गमे सूर्यस्य शिशुन्न विप्रा मतिभी रिहन्ति उपयाम गृहीतो सिमर्काय त्वा स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम् ॥ सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मत्वा का दभिभाविश्व्या विदित्स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं याव्याघ्रं विपू चिकोभौ वृकं च रक्षति ॥ श्येनं पतत्रिणꣳ सिꣳहꣳ सम पात्वꣳ हसः स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं कोदात्कस्मा अदात्कामोदात्कामायादात् ॥ कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं बीभत्सायै पौल्कसं वर्णाय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं पश्चाद्दोषाय ग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनमार्त्यै जनवादिनं व्यृद्ध्या अपगल्भꣳ सꣳशराय प्रच्छिदं स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं नमोऽस्तु सर्पे० ॥ ८ ॥ ओं विश्वे

मनन्)—न वस्त्रपाणिना कुर्यात्पाणिसर्पेषु वादिभिः । न कुर्याद् गमनम् कदाचिद् व्यजनादिना । मुखेनैव धमेदग्निं धमन्या वेणुजातया ॥ 'मुखादेव व्य-

अथ संध्याहोममन्त्राः—

ओं नमो वः किरिकेभ्यो देवाना हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ॥ ओं रक्षोहा विश्वचर्षणिरभियोनिमयो हते ॥ द्रोणे सधस्थमासदत्स्वाहा ॥ ओं अग्ने नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर । सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ॥ वायो अस्मिन्सदने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा ॥ इति ॥

ज्ञापक' —इति चतुष्पादस्थाने पाठान्तरम् । (स्वयमोक्षमेव कर्तव्यम्)—१६२

धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवाँ २ उत ॥ अनेशन्नस्यया इषव आभुरस्यनिषं गधिः स्वाहा ॥ ९ ॥ त्वामवस्युराराचस स्वाहा ॥ १० ॥ ओं वायव्यौ वायव्यान्याप्नोति शतेन द्रोणकलशम् ॥ कुम्भीभ्यामम्भृणौ सुते स्थालीभिः स्थालीराप्नोति स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिस स्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधासौ देशे भवत्सरित्स्वाहा ॥ १२ ॥ अभिषेकः ॥

अथ नक्षत्रहोमः । हरिः ओं अश्विन तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् ॥ वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियं स्वाहा ॥ १ ॥ ओं यमाय त्वा मखा० ॥ २ ॥ ओं अग्निं मूर्द्धादि० ॥ ३ । ओं प्रजापतेनत्वाद्स्ता ॥ ४ ॥ ओं सोमो धेनुंꣳसो० ॥ ५ ॥ ओं नमस्ते रुद्र मन्यवय उतोत इषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ॥ विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वं स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं वाचस्पतये पवस्व वृष्णो अꣳशुभ्या गमस्तिपूतः ॥ देवा देवेभ्यः पवस्व येषां भागोसि स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं नमोस्तु सर्पे१ ॥ ९ ॥ ओं पितृभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वं स्वाहा ॥ १० ॥ ओं भग एव भगवाँ २ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्त स्याम ॥ तन्त्वा भग सर्व इज्जोहवीति सानो भग पुर एता भवेह स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय । वाचं विष्णुꣳ सरस्वतीꣳ सवितारञ्च वाजिनꣳ स्वाहा ॥ १२ ॥ ओं सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुमिरिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा

सप्तजिह्वामुद्रा—

मध्यमे संहते धार्ये मिलिताङ्गुष्ठयोरधः ।

शेषा अङ्गुलयो मुक्ता मुद्रेयं सप्तजिह्विका ॥ १ ॥

वा स्वगृह्योक्तं यस्य कर्म प्रकीर्त्तितम् । तस्य तावति शास्त्रार्थे कृते सर्वं कृतं भवेत् ॥ (द्रव्यप्रतिनिधयः)—यथोक्तवस्त्वसंपत्तौ ग्राह्यं तदनुकारि यत् ।

स्कान्दे—

अन्नहीनो दहेद्राष्ट्रं मन्त्रहीनश्च ऋत्विजः ।

यजमानमदाक्षिण्यो नास्ति यज्ञसमो रिपुः ।

ऋग्सामसमन्त्रा उच्चैर्याजुषा मन्त्रा उपांशवः ॥

यावानामिव गोधूमा व्रीहियामिव शालयः ॥ दध्यलाभे पयः कार्यं मध्वलाभे तथा गुडः । घृतप्रतिनिधिं कुर्यात्पयो वा दधि वा नृप ॥ आग्रहोमेषु सर्वेष

वरुणेनौजसाग्निना तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना देशन्या देवतया प्रसूतः प्रसर्पामि स्वाहा ॥ १३ ॥ ओं त्वष्टावीरन्देवकामं जजान त्वष्टुरर्वा जायत आशुरश्वः ॥ त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्त्तारमिह यक्षि होतः स्वाहा ॥ १४ ॥ ओं वायो वामनोऽ ॥ १५ ॥ ओं इन्द्राग्नी आगत छं सुतङ्गीर्भिर्नभो वरेण्यम् ॥ अस्य पातं धियेषिता स्वाहा ॥ १६ ॥ ओं मित्रस्य चर्षणीधृतो वो देवस्य सानसि ॥ द्युम्नं चित्रः श्रवस्तमं स्वाहा ॥ १७ ॥ ओं आवारमिन्द्र० ॥ १८ ॥ ओं असुन्वन्त० ॥ १९ ॥ ओं अप्स्वग्नेसधि० ॥ २० ॥ ओं विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे स्वाहा ॥ २१ ॥ ओं ब्रह्मजज्ञानं० ॥ २२ ॥ ओं विष्णोर० राट० ॥ २३ ॥ ओं वसुभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा संज्ञानाथान्द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् ॥ व्यन्तु वयोक्त छं रिहाणा मरुतांपृषती॰ गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह ॥ चक्षुष्पा अग्नेसि चक्षुर्मे पाहि ॥ २४ ॥ ओं वरुणस्योत्तहूं ॥ २५ ॥ ओं अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनु मिवायतीमुषासम् ॥ २६ ॥ ॐ उत यवानामिव गोधूमा व्रीहिणामिव शालयः ॥ द्रव्यलाभे पयः कार्यं मध्वलाभे तथा गुडः । घृतप्रीतिनिधि कुर्यात्तयो वा दधि वा नृप ॥ आज्यद्रव्येषु सर्वेषु नोहिर्द्रुध्य अणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः ॥ विश्वेदेवा ऋतावृधा हुवानास्तु मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु स्वाहा ॥ २७ ॥ ओं प्रपन्वव व्रते वयन्न रिष्येम कदाचन ॥ स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा ॥ २८ ॥ अभिषेकः ॥ इति नक्षत्रहोमः ॥

अथ विष्कुम्भादियोगहोमः ॥ हरिः ओं ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे ॥ सखाय इन्द्र मूर्त्तये स्वाहा ॥ १ ॥ ओं विष्कुम्भाय स्वाहा ॥ एवं प्रत्येकं जुहुयात् ॥

अथ समुद्रहोमः ॥ हरि ओं [ओं सप्त ऋषयः प्रतिहिताः

पठनीयाः स्वशाखीयी अन्यथाऽनर्थभाग्जनः ॥

अथ ब्राह्मणभोजनम्–

गर्भाधानादिकर्मेषु ब्राह्मणान्भोजयेद्द्रा ।

प्रायश्च्ये चतुर्विंशद्भ्याधाने शतात्परम् ॥

गव्यमेव तु पूर्वं भवेत् । तदभावे महिष्यास्तु आजमाविकमेव च ॥ (द्रव्यदेवतयोरनुक्तौ व्यवस्था)—आज्यं द्रव्यमनादेशे जुहोतिषु विधीयते । मंत्रस्य देवता

प्राधान्ये च प्रायश्चित्ते विनान्दश पञ्च वा ।

गहर्स ब्राह्मभोजने ब्रह्मणानां शतं परो ।

शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ॥ सप्तापः स्वपितो लोकमीयुस्तत्र जाग्रतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ स्वाहा ॥ ओं पितृभ्य स्वधा० ॥ ओं पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञं वष्टु धिया वसुः स्वाहा ॥ ओं मातेव पत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि ꣳ स्वे योनाव-भारुषा ॥ ताम्वि श्वैर्दे वे ऋतुभिः सविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु स्वाहा समुद्रोसि नभस्वा नार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयो भूरभिमा-वाहि स्वाहा *॥ मारुतोसिमरुताङ्गणः शम्भूर्म्मयो भूरभिमावाहि स्वाहा ॥ मारुतोऽसि मरुताङ्गणः शंभूर्मयोभू रभिमावाहि स्वाहा ॥ वस्यूरसि द्रुवस्वाब्ळम्भूर्मयोभूरभिमावाहि स्वाहा ॥ १ ॥ ओं आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन सो घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वꣳ हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरातूत एभिर्दीता तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवाꣳ शग्माम्परिधे भद्रं वर्णम्पुष्यन्स्वाहा ॥ २ ॥ ओं समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनानायन्त्यनिविशमानाः इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा ऊत वा याः स्वयंजाः समुद्रार्थाः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम् ॥ मधुश्चुतः शुचयो या पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं यासु राजा वरुणो यासु सोमः विश्वे देवा या सूर्यं मदन्ति ॥ वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह माम-वन्तु स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं नदीभ्यः पौञ्जिष्ठमृत्तीकाभ्यो नैषादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं गधर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं प्रयुग्भ्यः उन्मत्तꣳ सर्पदेवजनेभ्यो प्रतिपदमयेभ्यः उन्मत्तꣳ सर्पदेवजनेभ्यो प्रतिपदनयेभ्यः कितवमीर्यता या अकितवम्पिशाचेभ्यो विदलकारीं यातुधानेभ्यः

---

¹ चातुर्मास्येषु चत्वारि शतानि च सुरामखे ।
अयुतं वाजपेये च अश्वमेधे चतुर्गुणम् ॥

चापि प्रजापतिरिति स्थितिः ॥ (काम्यहोमादौ वह्निनिवासादिविचारः)--सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः । सौख्याय होमे, शशियु--

ऋत्विग्नियमः--
कन्दमूलफलाहारा दधिक्षीराशिनोऽपि वा ।
दिनार्द्ध हवन कुर्युः संवीताः विरजोम्बराः ॥ १ ॥
अथ मधपानाचार्यादीनां दक्षिणानियमः--

×मशेषे प्रार्थनाशो दिवि भूतले च ॥ शुक्लादिनो वर्त्तमानतिथिरेकाधिका

कण्टकोकारां स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं इमम्मे गङ्ग यमुने सरस्वति शतद्रु स्तोमं सचता परुष्ण्या ॥ असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तया-र्जीकीये शृणुह्यासु मोपया स्वाहा ॥ ८ ॥ (केषुचित्पुस्तकेषु पर्वहोमः-ॐ ॥ पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्न वश्चरन्ति स्वसि च इयानाः ॥ ता आव वृत्रन्नधरागुदक्ता अहिर्बुध्न्यमनुरीयमाणाः ॥ विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि स्वाहा) ओं यथावाणप्रहारणां कवचं० इत्यादि मन्त्रैः पूर्ववदभिषेकः ॥ इति यवादिहोमद्रव्याहुतिं दत्त्वा द्वितीयवारं सूर्यमन्त्रैः पूर्ववत् घृतधारां कुर्यात् ॥ ओं शारदा मातरः प्रोक्ता मघरश्च मागरास्तथा । ततश्च देवताहोमं क्षेत्राद्याः कुलदेवताः ॥ असङ्ख्याताः सहस्राणि स्वर्गमर्त्ये च भूतले । तद्रजाप्यंततः कृत्वा स्वस्ति कुर्यात्ततः परम् ॥ इति संवत्सरादिसमुद्रहोमः समाप्तः । ततश्चर्वाज्यद्रव्यैः स्थालीपाकहोमं कुर्यात् । संख्यामन्त्रैः संख्यायोक्त-विधानेन जुहुयात् ॥ पश्चादेवं परिरुद्र, वैष्णवी, आदित्य. विभ्राड्, पञ्चभद्र, आदिहोमं कृत्वा ॥

अथोत्तराङ्गहोमः ॥ तत्रादौ सङ्कल्पः ॥ ओं अद्येहेत्यादि० अमुक-होमकर्मणि मया कारितस्य ब्राह्मणद्वारा नवग्रहादिमन्त्रांगहोमकर्मण उत्तरांगसिद्धये होमं करिष्ये ॥ व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णि-गनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवता उत्तरांगहोमे विनियोगः ॥ ओं भूः स्वाहा इदमग्नये । ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥ ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ॥ ततः ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ॥ इति स्विष्टकृद्धोमः ॥ संभवं कृद्धोमाः ॥ संभवं प्राश्य पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे दद्यात् ॥ पाद्यादिभिः पूर्णपात्रं संपूज्य ॥ अद्येहेत्यादि० मया कारितस्य ब्राह्मणद्वारा, अमुक-कर्मांगहोमकर्मणः सांगफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थं च इदं तण्डुलपूर्णपात्रं सदक्षिणं प्रजापतिदैवतममुकगोत्राय, अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं

वर्धमानवारेण वहिता चतुर्भिर्विभक्त्या, त्रिशेषे शून्यशेषे च भुवि वासः
स्वर्णं रौप्यं च ताम्रं वदवरमपि यद्दक्षिणा ॥
स्यात्सदेवाऽऽशायांशामर्षं मार्गं तदनुमदकुलाद्दारपाना तदर्दम् । १ ॥
पन्यापेभ्यो वहीत्वं गुरुचिवतनभूपयानि मदयादीनाभामग्रच बन्धू-
मन्दु विदतविमदोस्तरैपदप्योऽन्ये: ॥ २ ॥
शुभः, एकद्वित्रयं क्रमादिदि भूतले वासोऽशुभ इत्यर्थः । पूर्वमात् त्रित्रिभे चन्द्रे गुर्वेन्दुजतनयः । चन्द्रारेज्यानुषिभिन्नो नेष्टा होमाहुतिः भवे । पूर्वः-
चन्द्रे गुर्वेन्दुजतनयः । चन्द्रारेज्यानुषिभिन्नो नेष्टा होमाहुतिः भवे । पूर्व-

सम्प्रददे ॥ ओं अकर्म्मेति दत्त्वा ॥ स्वतीत ब्राह्मणः प्रतिब्रूयात् ॥

अथ पूर्णाहुतिहोमः ॥ अद्येहेत्यादि अमुककर्माङ्गहोमकर्मणः साङ्गफलप्राप्तये न्यूनातिरिक्तपरिपूर्त्त्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये ॥ पाद्यादिभिर्ह्यग्निं संपूज्य ओं स्रुवश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मे ऽधिषवणे च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ इति रक्तसूत्रेण स्रुवं वेष्टयित्वा सम्पूज्य ॥ स्रुवपात्रे सप्तद्रव्यं पीतवस्त्राच्छादितं घृताभिधारितं नारिकेलपूगीफलादिफलं संस्थाप्य तत्पात्रं वामहस्ते धृत्वा उत्थाय यजमानदक्षिणहस्तेन—पूर्णा दर्वीति हिरण्यगर्भऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो महावैश्वानरो देवता मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिहोमे विनियोगः ॥ ओं पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ꣳ शतक्रतो स्वाहा ॥ १ ॥ ओं सप्त ते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धाम प्रियाणि सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृण स्वधृते स्वाहा ॥ २ ॥ ओं पुनस्त्वादित्या रुद्राः वसवाः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेन त्वन्तन्वन्वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ॥ कवि ꣳ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं जयन्ती मङ्गला० ॥ ५ ॥ इति घृतदिग्धं पीतश्वेतवस्त्रावृतं स्रुकपुटितं नारिकेलादिफलं प्रज्वलितेऽग्नौ घृतावच्छिन्नधारया सह जुहुयात् ॥ ततः ओं वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे स्रुवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् [वा० पुराणमन्त्रैः] इति पठन्तः स्रुवहस्तेनाज्यसहिता यजमानब्रह्माऽऽचार्यत्विजादिब्राह्मणाः

कात्यायनः—

ब्राह्मणे दक्षिणा देया या यत्र परिकीर्तिता ॥ इति ॥

होमकर्माचशक्तानां विप्राणां द्विगुणो जपः ।

इतरेषान्तु वर्णानां त्रिचतुःपञ्चसंख्यया ॥ १ ॥

वित् बुधः, पंगुः शनिः, आरः भौमः, इज्यः गुरुः, अगुः राहुः, शिखी केतुः । कश्चिदग्निवासादिविचारणमात्रो निर्णयसिन्धौ]-नित्ये नैमित्तिके दुर्गाहोमादौ न

होमद्विगुणजापेन सम्पूर्णं तर्पणं भवेत् ।

अकृते मार्जने प्रोक्तं तर्पणाद् द्विगुणो जपः ॥ २ ॥

प्रत्याम्नाये ब्रह्मभोज्यो न कुत्रापि मया श्रुतः ।

सर्वथा भोजयेद्विप्रान् कृतघ्नत्वसिद्धये ॥ ३ ॥

अग्नेर्देवतायाश्च प्रदक्षिणाचतुष्टयं कुर्युः ॥ अथान्यालम्भनम्—ओं तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि ओं वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि ॥ ओं सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति सपवित्राभ्यां हस्ताभ्यां प्रणीताजलेन शिरः सम्मृज्य दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यं च, वयं द्विष्मः इतिप्रणीतापात्रमैशान्यां न्युब्जीकुर्यात् ॥ ओं देवा गातु वित्वा मातुमित्वमनसस्पत ॥ इमं देवयज्ञ छ स्वाहा वातेधाः ॥ इति बर्हिर्होमः ॥ अथ त्र्यायुकरम्—ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ॥ मा नो वीरानुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हमावहे ॥ ओं इम छ स्तनमूर्जस्वन्तः ॥ इति नारिकेलफलस्य वा यज्ञद्रव्यस्य विभूतिं गृहीत्वा त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिरुष्णिक् छन्दः शिवो देवता त्र्यायुपकरणे विनियोगाः ॥ ओं घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनि घृते श्रितो घृतं वस्य धाम अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥ इति घृतालोडनम् ॥ तत्रादौ देवतायास्त्र्यायुपकरणं कृत्वा पश्चाद्यजमानं दद्यात् ॥ ओं त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे ओं कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम् ओं यद्देवेषु, इति हृदि ॥ ततः श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं बलं श्रियम् ॥ आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ इति प्रणम्य ॥ यज्ञदशांशं तर्पणम्, तर्पणदशांशं मार्जनम्, मार्जनदशांश ब्राह्मणभोजनम्, ततो यज्ञदक्षिणासङ्कल्पः ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकशर्माहं मया ब्राह्मणद्वारा कारितस्य अमुक (संख्यक) होमनवग्रहशान्तिमखकर्मणः साङ्गफलावाप्त्ये इमां सुवर्णरजतवात्रादिदक्षिणां, अग्न्यादिदैवत्यां, अमुकामुकगोत्रेभ्यो ऋत्विग्भ्यो तथा शान्तिपाठवाचकेभ्यो गणेशगायत्र्यादिजापकेभ्यो रुद्राध्यायविष्णुसहस्रनामपाठकेभ्यो ऋग्वेदादिचतुर्वेदोच्चारणकारकेभ्योतथा ग्रामदेवस्थानदेववादीनां पूजकेभ्यः सांचार्यपुराण-शास्त्रादिवाचकेभ्योऽमुका-

---

विचारयेत् ॥ अन्यच्च—दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुंसोत्सवे गर्भाधान विधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु । मौञ्जीबन्धनवैश्वदेवकरणे संस्का-

यज्ञियकाष्ठानि ब्रह्मपुराणे—

पलाशाश्वत्थन्यग्रोधप्लक्षवैकंकतोद्भवाः ।

शमी चोदुम्बरो बिल्वश्चन्दनं सरलस्तथा॥

शालश्च देवदारुश्च खदिरश्च त्रयोदश ॥ १ ॥

तदभावे कण्टकवर्ज्यं इति ॥

रनैमित्तिके होमे नित्यमवे न दोषकथनं चक्रस्य वह्नेरपि ॥ जपाद्यंगहोमेऽपि न दिनं शोध्यं तस्य तदङ्गकालत्वाभावादिति । (होमे प्रथमाहुतिर्गणपतेः—

सुकनामभ्यो पूर्वपूजितकर्मकारकब्राह्मणेभ्यो वस्त्राभरणादिकं च विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ ॐ तत्सन्न मम ॥ तथा भूयसीं दक्षिणां, अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये ॥ इति ब्रह्माचार्यद्विजादिब्राह्मणान्सुवर्ण-वस्त्रादिदानेन संतोष्य ॥ ततोऽग्निं विसर्जयेत्—ओं गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ भो भो वह्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक । कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय माकिकाम् । इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ ओं यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा एष ते यज्ञो यज्ञपते सह सूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥ ओं धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । स चेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥ अथाभिषेकं कुर्यात् ॥ ओं यत्त यमं वैवस्वतं मनो जगाम दूरकं ॥ तत्त आवर्त्तयामसि क्षयाय जीवसे ॥ १ ॥ ओं यत्ते भूमिं चतुर्भृष्टिं मनो जगाम० ॥ २ ॥ ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतये त्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ ४ ॥ ओं अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिर्देवता इन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ५ ॥ ओंद्यौः शान्ति- ॥ ६ ॥

अथ यज्ञारम्भमुहूर्तः-

सूर्य के उत्तरायण में तथा तीनहूँ उत्तरा, रोहिणी, विशाखा, कृत्तिका, रेवती, मृगशिर, ज्येष्ठा, पुष्य नक्षत्रों में रिक्तातिथि छोड़ यज्ञारम्भ करना परन्तु आहुति में वह्निवास लग्नदान शुद्धि भी देखनी चाहिये ॥ गणाधिपतये देवा प्रथम तु वराहुतिः । अन्यथा विफलं सर्वं भवतीह न संशयः । इवञ्च प्रथमाहुति पञ्चवारुणी [प्रायश्चित्तसंज्ञक] होमान-

आहुति–सूर्य के नक्षत्र से ३ । ३ करके चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त क्रम से सु०, बु०, शु०, श० चं०, मं०, बृ०, रा०, के०, के मुख को आहुति होती है पापग्रह की शुभ नहीं है ॥

वह्निवास–वर्तमान तिथि में १ जोड़ के वार जोड़ना ४ से शेष करना० । ३ रहे तो पृथ्वी में अग्नि का वास है होम में सिद्धि होगी २ । १ शेष रहे तो अग्निवास पृथ्वी में नहीं होमादि कर्म में प्राणधनादि नाश हो ॥

न्तरक्रियमाणहोमस्याऽऽदिभूतेति ज्ञेयम् । पञ्चवारुणीहोमस्तु गणप-तेरपि प्रागेव भवतीति तात्पर्यम् ॥ इति परिभाषायां सामान्यभागः ।

ओं अमृताभिषेकोऽस्तु ३ इत्यभिषेकः ॥ ततः कङ्कणं मोचयित्वा गोदानं विधाय गणपत्यादिदेवता विसृज्य। यजमानं तिलकदूर्वाभिराशिषंदद्यात् ॥ ब्रह्माचार्यऋत्विग्ब्राह्मणादीन्भोजयित्वा स्वयमपि भुञ्जीत ॥ शुभम् ॥

अथ सूर्योपस्थान-प्रयोगः ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सङ्कल्पः—अथ पूर्वोच्चारित्त वर्तमान-एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ ममाऽत्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री सविता सूर्यनारायण प्रीत्यर्थं सूर्योपस्थान महं करिष्ये। कुश पवित्रधारणम्—ओं पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वं ÷ प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि ÷ १ तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्काम ऽः पुनेतच्छकेयम् ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण दक्षिण वाम हस्तयो रनामिकयोः कुश पवित्रं धार्य॥ सूर्यपूजनम्—ओं उदुत्यञ्जात वेद सं० ॥ २ ॥ सूर्यमुदीक्षन्—ओं उद्वयन्तमस० ॥ ३ ॥ ओं उदुत्यञ्जा० ॥ ४ ॥ ओं चित्रन्देवाना० ॥ ५ ॥ ओं तच्चक्षु र्दे० ॥६॥ ओं तत्सवितु० ॥ ७ ॥ अनुवाकः—ओं विभ्राड्० ॥ १० ॥ पुरुषसूक्तम्—ओं सहस्र शीर्षा० ॥ १६ ॥

शिव सङ्कल्पः—ओं यज्जाग्रतो० सुषारथि रश्वान्तम् ॥ ६ ॥ एते मन्त्रारुद्र्ध्यायेद्रष्टव्याः, मण्डल ब्राह्मणम्,—ओं यदेतन्मण्डलन्तपति तन्मह दुक्थन्ताऽऋच ऽः स ऋचां लोकोथयर् तद् चिर्दीप्यते तन्महा व्रतं तानि सामानि स साम्नां लोकोथ य ऽएष ऽएत स्मिन्मण्डले पुरुष ऽः सोग्निस्तानियजू ६ षि सयजुषां लोक ऽः ॥ १ ॥ सैषा त्रय्येव विद्या तपति तद्धैतदप्य विद्वा ६ स आहुस्त्रयी, वा ऽएषा विद्या तपतीति वाग्धैव तत्पश्यन्ती वदति ॥ २ ॥ स ऽएष ऽएव मृत्युर्य ऽएष ऽएतस्मि न्मण्डले पुरुषो यै तद् सूतं यदे तदर्चिं दीप्यते तस्मान्मृत्युर्न म्रियतेमृतेह्यन्तस्तस्माद्रु न दृश्यते मृतेह्यन्त ऽः ॥ ३ तदेष श्लोको भवति—अन्तरं मृत्योरमृत मित्त्य वर ६ ह्ये तन्मृत्यो रमृतम्मृत्या वभूत माहित मित्त्ये वरिमन्द्रि-पुरुष ऽएतन्मण्डलम्प्रतिष्ठितं तपति मृत्युर्व्ववास्यन्तं वस्तऽइत्यसौ । वा ऽआ-

---

(१) इति मन्त्रेण सूर्यं गन्धाक्षत पुष्पैः सम्पूज्य (२) दक्षिण वाम पादयां द्वौ द्वौ सामदर्भौगन्धाक्षत श्वेत पुष्प तुलसीदल सहितोधृत्वा पश्चादेते मन्त्राः पठनीयाः ॥

(इदं सूर्योपस्थानं श्रावण्यां तथा श्राद्धदिने कुर्वन्ति ॥)

दित्यो विवस्वा नेपद्मोरात्रे विवस्ते त मेप वस्ते मर्व्वतोह्येनेन परिवृतोमृत्त्यो रात्मा विवस्वती त्ये वस्मिन्हि मण्डलऽएतस्य पुरुस्या स्मैत देप श्लोको भवति ॥ ४ ॥ वयोर्द्धा ऽएतयोरुभयोर रेतस्य चार्चिपऽएतस्य च पुरुपस्यैतन्मण्डलं प्रविष्टा तस्मान्मह दुक्थ न्परस्मै न श हि सेन्रे देतांप्रतिष्ठां छिनदा ऽइत्येता ओं ह स प्रतिष्ठां छिन्तेऽयो मह दुक्थ परस्मैरा हि सोव तस्मा दुक्थ श सम्भूयिष्टं परि चह्नतेप्रतिष्टा छिन्नोहि भवतीत्यधि देवतम् ॥ ५ ॥

अथाधि यज्ञम्:—यदेतन्मण्डलं तपत्य य हि स रुक्मोथपदेत दर्विर्द्दीप्यत ऽइदं तत्रपुष्करपर्णं प्रापोह्ये ताऽआप ऽपुष्कर पर्णं :मथय ऽएप ऽएतस्मिन्मण्डले पुरुपो यमेव [redacted] योय हि हिरण्मय ऽः पुरुपस्तदेतदेवैसत्रय [redacted] संस्कृरये हो पधत्तेतद्यज्ञ स्ये वातु स हि स्था मूर्द्ध मुम्कामति तदे तम प्येतिय ऽएप तपति तस्मादग्नि मात्रियेत परि हन्तुम मुत्र होप तदा भवतीत्यु ऽएवाधियज्ञम् ॥ ६ ॥ अथा-ध्यात्मम् यदे तन्मण्डल तपति यश्चेप रुक्म ऽइदं तच्छुक्ल मत्तन्नथ यद्देतदर्विर्द्दीप्यनेयच्चेतस्पुष्कर पर्णं मिदं तत्कृष्ण मत्तन्नथ य ऽएप ऽएतस्मिन्मण्डले पुरुपो यश्चैप हिरण्मय ऽः पुरुपो यमेव सयोयं दक्षिणे क्षन्पुरुप ऽः ॥ ७ ॥ स ऽएप ऽएव लोकं पृणता मेव सर्व्वोभि राभि सम्पद्यते तस्यै तन्मिथुन यो य हि सध्येतन् पुरुपोद्ध मह्ये तदात्मनो यन्मिथुनं यदा वै सह मिथुने नाथ सर्व्वोथ कृत्स्न ऽः कृत्स्न तायैतदद्वेद्धे भवतो द्वन्द्व हि हि मिथुनम्प्रजननं तस्मा-द्वे द्वे लोकं पृणे ऽवपधीयेते तस्मा दुद्वाभ्यां द्वाभ्यांवितिम्प्रण यन्ति ॥ ८ ॥ स ऽएष ऽएवेन्द्र ऽः यो यं दक्षिणेक्षन् पुरुपोथेयमिन्द्राणी ताभ्यां देवा ऽएतां विधृतिमकुर्व न्न सिक्तान्तस्मा ज्जायाया अन्ते नाश्नीया द्वीर्य्यं वान्हारमा ज्जायते वीर्य्यं वन्त मुह सात्तनयति यस्या ऽअन्ते नाश्नाति ॥ ६ ॥ तदेव ह वव्रत हि राजन्य बन्धवो मनुष्याणा मनुतमांगोपायन्ति तस्मादु तेपु व्वीर्य्यं वा ज्जायते मृत-वाका वयसा [redacted] सा क्षिप्रस्येन जनयति ॥ १० ॥ तो हृदयस्या काशं प्रत्यवेत्य मिथुनी भव तस्तौ यदा मिथुनस्यान्तङ्गच्छतोथ हैतत्पुरुप ऽः स्वपिति तद्यथा हैवेदम्मानुपस्य मिथुनस्यान्त-ङ्गत्वा संविद ऽइव भवत्येव हि है वैतद संविद् ऽइव भवति देव हि ह्येतन्मिथुनम्परमो ह्येप ऽआनन्द ऽः ॥ १२ ॥ तस्मा देव विस्वप्यान् ॥ योक्य हि हे वेऽएतत्तदेवते मिथुनेन-प्रियेणाप्मान्नासमर्द्ध यति तस्मादुह स्वपन्तधुरेव न बोधयेन्न्नेदेते देवते मिथुनी भवन्त्यौ हिनसानीति तस्मादु है तत्सुप्तु पुप ऽः श्लेष्मण मिव

सुखम्भवत्येते ऽ एव तद्देवत्तेरेव ऽः सिश्रतस्तस्मा द्वेवसऽहृद ७ सर्व ७ सम्भवति यदिदं किञ्च ॥ १२ ॥ स ऽ एष ऽ एव मृत्यु ७ ॥ य ऽ एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषो यश्चा यन्दक्षिणे क्षन्पुरुष स्तस्य हृ तस्य हृदये पादावविहृतौतोहृ तदाच्छिद्योत्क्रामति स यदोत्क्रामत्यथ हृ तत्पुरुषो म्रियते तस्मा दुहृ तत्रैवमाहु राच्छेद्य स्येति ॥ १३ ॥ एष ऽ वऽएव प्राण ऽः । एष हीमा ऽः सर्व्वा ऽः प्रजा ऽः प्रणयति तस्यैते प्राणा ऽः स्वा ऽः स यदा स्वपिति यैन मेते प्राणा ऽः स्वाऽअपियन्ति तस्मात्स्वाप्यय ऽः स्वाप्ययोहवै त ७ स्वप्नऽइत्या चक्षतेपरोक्षन्परोक्षकामाहि देवा ऽः ॥ १४ ॥ स ऽ एतै ऽः सुप्तो न कस्य च न ·स्वेदन मनसा सङ्कल्पयति न व्वाचान्नस्य रसंव्विजानाति न प्राणेन गन्ध व्विजा नाति न चक्षुषा· पश्यन्ति न श्रोत्रेण श्ृणोत्ते त ७ ह्येते तदापीतामवन्ति स ऽ एषऽ एक सन्प्रजासु बहुधा व्याविष्ट स्तस्मा देका सतो लोकम्पृणा सर्व· मग्निमनु व्विभवत्यथ यदेक ऽ एव तस्मा देकः ॥ १५ ॥ तदाहु ऽः । ऽएको पुरुर्वहवऽइत्येकश्च बहवश्चेति ह्य् याचदिहा स्मायमुत्र तेनै कोथ यदिह प्रजासु बहुधाव्याविष्ट स्तेनो बहव ऽः ॥ १६ ॥ तदाहु ऽः । ऽअन्तिके मृत्युर्दू राऽइत्यन्तिके च दूरे चेतिह व्याख्या वृहाय मिहाध्या· त्मन्ते नान्तिकेथ यदसा वमुत्र तेनो दूरे ॥ १७ ॥ तदेष श्लोको भवति । अन्ये मात्यपश्रितो रसाना ७ स तरे मृतऽइतियदेतन्मण्डलं तपति तदन्न· मथ ·य ऽ एष ऽ एतस्मिन्मण्डले पुरुषः ऽः सोत्ता स ऽ एतस्मिन्नन्ने पश्रितो भातीत्यग्नि देवतम् ॥ १८ ॥ अथाध्यात्मम्—इदमेव शरीर मन्नमुथयोयं दक्षिणे क्षन् पुरुष ऽः सोत्ता स ऽएतस्मिन्नन्ने पश्रितो भाति ॥ १९ ॥ तमेव मग्निरित्यध्वर्यवऽउपासते ॥ यजुरित्येष हीद ७ सर्व्वं· युनक्ति सामेति छन्दोगाऽएतस्मिन्हीद ७ सर्वं ७ समानमुक्तमिति· वह्वृचाऽ एष हीद ७ सर्व्वं मुत्थाप यति यातुरिति यातुविदऽएतेन हीद्र श्रौं सर्व्वं यतं व्विषमिति सर्पा ऽः सर्प्प ऽइति सर्प्प विद ऽऊर्गिति देवा रयिरिति मनुष्या मायेत्य सुरा ऽः स्वधेति पितरो देवजन ऽइति देवजन विदो रूपमितिगन्धर्वा गन्ध ऽइत्यप्सर सस्त यथा यथो पासते तदेव भवति तद्धैनान् भूत्वा वति. तस्मा देन मेवं विरमवे रेवेते दपासीत सर्व्वं ७ हैतद्भवति सर्व्वं ७ हैनमेतद्भूत्वा ऽवति ॥ २० ॥ स ऽएष श्रीष्ट कोग्नि र्द्वगेका यजुरेका सामेकावयाद्वा; स्वात्रर्षोप दधाति रुक्म ऽएव तस्या ऽआयत नमथ यां यजुषा पुरुष ऽएवतस्या ऽआवतनमथ श्रौं साम्ना· पुष्कर पर्णमेव तस्याऽआयतन मेवंविष्टक ऽः ॥ २१ ॥ तै वाऽएते ऽत्रे ऽएष च रुक्मऽएनम पुष्कर पर्णं मेवमपुरुषमपतिऽत्रेभ्य

क्सामे यजुरपतिऽएवम्वेकेष्टक ऽः ॥ २२ ॥ स ऽएषःऽएवमृत्यु ऽः ऽएष एतस्मिन्मण्डले पुरुषो यश्चायं दक्षिणे चन्पुरुष ऽः सऽएष ऽएवं विद् ऽः आत्मा भवति स यदेवं विदस्मॉं ल्लोकात्प्रैत्य थेत मेवा त्मान मभि सम्भवति सो मृतो भवति मृत्युर्ह्यस्यात्मा भवति ॥ २३ ॥ तेन वाऽइदमग्रे सदासी न्नैव सदासीत् ॥ मण्डल ब्राह्मणम् ॥

तदाहु[१] ऽः—किञ्छन्द ऽः कादेवतामे ऽः शिरऽइति गायत्री छन्दोऽग्नि र्देवताशिर ऽः ॥ १ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता ग्रीवा ऽइत्युष्णिक छन्द ऽः सविता देवताग्रीवा ॥ २१ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता नूक मिति बृहती छन्दो बृहस्पति र्देवता नूकम ॥ ३ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता पक्षाविति बृहद्रथन्तरे छन्दो द्यावा पृथिवी देवते पक्षौ ॥ ४ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता मध्य मितित्रिष्टुप् छन्द ऽइन्द्रोदेवता मध्यम् ॥ ५ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता श्रोणीऽइति जगती छन्दऽआदित्यो देवता श्रोणी ॥ ६ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता यस्मादिदं प्राणा द्रेत ऽः सिच्यतऽइत्यतिच्छन्द श्छन्दऽप्रजापतिर्देवता ॥ ७ ॥ किञ्छन्दऽका देवता योय मवाङ् प्राणऽइति यज्ञायज्ञियं छन्दो वैश्वा नरो देवता ॥८॥ किञ्छन्दऽका देवतोरूवइत्य नुष्टुप् छन्दो विश्वे देवादेवतोरू ॥ ६ ॥ किञ्छन्दऽका देवताष्ठी वन्ता विति पंक्तिश्छन्दो मरुतो देवताष्ठीवन्तौ ॥ १० ॥ किञ्छन्दऽका देवता प्रतिष्ठेऽइति द्विपदा छन्दो विष्णुं देवता प्रतिष्ठे ॥ ११ ॥ किञ्छन्दऽका देवता प्राणऽइत्तिविश्छन्दऽछन्दो वायु देवता प्राणाऽ ॥ १२ ॥ किञ्छन्दः का देवता नातिरिक्ता नीति न्यूनाक्षरा छन्दऽआपो देवता नातिरिक्तानि सैषात्म विद्यै वैतन्मयो हैवैताऽएतमात्मा नमभि सम्भवत्ति न हत्रान्या लोक्यत्ता याऽआशीरास्ति ॥ १३ ॥ धीरोह शातपर्णेयः ॥ ब्राह्मणम् ॥

ॐ त्रयं वाऽइदन्नामरूपं कर्म तेषा नाम्नां वागित्येतदेषा मुक्थ मत्तोहि सर्वाणि नामान्युतिष्ठन्त्ये तदेषाऽसामैतद्धि सर्वैर्नामभिऽसममेतदेषां ब्रह्मे तद्धि सर्वाणि नामानि बिभर्त्ति ॥ १ ॥ अथ रूपाणाम् – चक्षुरित्येत देषा, मुक्थमतो हि सर्वाणि रूपाण्यु त्तिष्ठन्त्येत देषाऽसामैतद्धि सर्वै रूपैऽसममेव देषां ब्रह्मै तद्धि सर्वाणि रूपाणि बिभर्ति ॥ २ ॥ अथकर्मणाम् —आत्मेत्येतदेषा मुक्थ मतो हि सर्वाणि कर्माण्यु त्तिष्ठन्त्येतदेषाऽसामैतद्धि सर्वैऽकर्मभिऽसममेतदेषां ब्रह्मै तद्धि सर्वाणि कर्माणि

(१) तदाहु रित्यारभ्य लिखित माध्य द्रयं केचित्पठन्ति केचिन्न ॥

रमति तदेन त्रयᳪ सदेक मयमात्माऽएकःसन्नेतत्त्रयं तदेतदमृतᳪ सत्येन छन्नं प्राणो वाऽअमृतं नामरूपे सत्यं ताभ्यामयं प्राणश्छन्नऽ ब्राह्मणम् ॥ ३ ॥ दृप्तबालाकिर्हानूचानो गार्ग्यऽआस—भूमिरन्तरिक्षं द्यौरिति अष्टावक्षराण्यष्टाक्षरᳪ ह वाऽएकम्। गायत्र्यै पदमेतदु हैवास्याऽएतत्स यावदेषु लोकेषु तावद्ध जयति योऽस्याऽएतदेवं पदं वेद ॥ १ ॥ ऋचो यजूᳪषि सामानीत्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षरᳪ ह वाऽएकं गायत्र्यै पदमेतदु हैवास्याऽएतत्स यावतीयं त्रयी विद्या तावद्ध जयति योऽस्याऽएतदेवं पदं वेद ॥ २ ॥ प्राणोऽपानो व्यानऽइत्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षरᳪ ह वाऽएकं गायत्र्यै पदमेतदु हैवास्याऽएतत्स यावदिदं प्राणि तावद्ध जयति योऽस्याऽएतदेवं पदं वेद ॥ ३ ॥ अथास्याऽएतदेव तुरीयं दर्शतं पदं परोरजा यऽएष तपति यद्वै चतुर्थं तत्तुरीयं दर्शतं पदमिति ददृशऽइव ह्येष परोरजाऽइति सर्वमु ह्येवैष रजऽउपर्युपरि तपत्येवᳪ हैव श्रिया यशसा तपति योऽस्याऽएतदेवं पदं वेद ॥ ४ ॥ सैषा गायत्र्येतस्मिंस्तुरीये दर्शते पदे परोरजसि प्रतिष्ठिता तद्वै तत्सत्ये प्रतिष्ठितं चक्षुर्वै सत्यं चक्षुर्हि वै सत्यं तस्माद्यदिदानीं द्वौ विवदमानावेयातामहमदर्शमहमश्रौषमिति यऽएवं ब्रूयादहमदर्शमिति तस्माऽएव श्रद्दधाम ॥ ५ ॥ तद्वै तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितम्। प्राणो वै बलं तत्प्राणे प्रतिष्ठितं तस्मादाहुर्बलᳪ सत्यादोगीयऽइत्येवम्वेषा गायत्र्यध्यात्मं प्रतिष्ठिता ॥ ६ ॥ सा हैषा गयाᳪस्तत्रे,—प्राणा वै गयास्तत्प्राणाᳪस्तत्रे तद्यद्गयाᳪस्तत्रे तस्माद्गायत्री नाम स यामेवामूᳪ सावित्रीमन्वाहैषैव सा स यस्माऽअन्वाह तस्य प्राणाᳪस्त्रायते ॥ ७ ॥ ताᳪ हैके—सावित्रीमनुष्टुभमन्वाहुर्वागनुष्टुबेतद्वाचमनुब्रूमऽइति न तथा कुर्याद्गायत्रीमेवानुब्रूयाद्यदि ह वाऽअपि बह्विव प्रतिगृह्णाति न हैव तद्गायत्र्याऽएकञ्चन पदं प्रति ॥ ८ ॥ स यऽइमाँस्त्रीँल्लोकान्पूर्णान्प्रतिगृह्णीयात्सोऽस्याऽएतत्प्रथमं पदमाप्नुयादथ यावतीयं त्रयी विद्या यस्तावत्प्रतिगृह्णीयात्सोऽस्याऽएतद्द्वितीयं पदमाप्नुयादथ यावदिदं प्राणि यस्तावत्प्रतिगृह्णीयात्सोऽस्याऽएतत्तृतीयं पदमाप्नुयादथास्याऽएतदेव तुरीयं दर्शतं पदं परोरजा यऽएष तपति नैव केनचनाप्यं कुतऽउऽएतावत्प्रतिगृह्णीयात् ॥ ९ ॥ तस्या उपस्थापनम्—[ऋत्वाय]—गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे। नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापदिति यं द्विष्यादसावस्मै कामो मा समृद्धीति वा न हैवास्मै स कामः समृध्यते यस्माऽएवमुपतिष्ठतेऽहमदः प्रापमिति वा ॥ १० ॥ एतद्ध वै तज्जनको वैदेहो बुडिलमाश्वतराश्विमुवाच—यन्नु हो तद्गायत्रीविदब्रूथाऽअथ कथᳪ हस्तीभूतो वहसीति मुखᳪ ह्यस्याः सम्राण्न विदाञ्चकरेति होवाच ॥ ११ ॥ तस्याऽअग्निरेव मुखम्। यदि ह वाऽअपि बह्विवाग्नावभ्यादधति सर्वमेव

तत्सदह्ल्येव छे द्दे वै य विरायपि वद्धीव पापं करोति सर्वमेव तत्संसाय शुद्ध ऽः पूतोजरोऽऽमृतः सम्भवति ॥ १२ ॥ ब्राह्मणम् ॥ श्वेतकेतुर्ह्वाऽ श्रारुणेयऽ-प्रदक्षिणं कृत्य नमस्कृत्योपविशेत् ॥ १३ ॥ इति मण्डल ब्राह्मणम् ॥ (पात्र्योर्गृहीत कुशानां कुशपवित्रयोश्च पूर्वस्यां दिशि त्यागः कर्तव्यः) ॥ अर्पणम्—अनेन यथा शक्त्या कृतेन सूर्योपस्थान कर्मणा श्रीभगवान् सविता सूर्यनारायणः प्रीयतां नममः ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति सूर्योपस्थान प्रयोगः ।

अथ प्रायश्चित्तादि गोदान प्रयोगः ।

कुशतिल जलमादाय अद्येत्यादि श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति कामो गोदान कर्माहं करिष्ये । गोदान निमित्तक ब्राह्मण वरणार्थं चंदनादिकमादाय ब्राह्मणमभ्यर्च्य अद्यकर्तव्यगोदाने एभिर्चंदनाक्षतपूगीफलतांबूलद्रव्यवस्त्रालङ्कारैरभ्यर्च्य अमुक शर्माणं ब्राह्मणम् एभिर्गन्धाक्षत पूगीफलै,गोदानमहितत्वेनचाहंवृणेवृतस्त्वोसीतिप्रति वचनम्, व्रतेनदीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते । ततोगोदान सामग्री सम्प्रोक्ष्य गां सवत्सां पूज्येत् ॥ गवां मगेपुतिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवमेस्यादिह लोके परत्र च । गोभ्यः आसनम् । पाद्यम् अर्घ्यम् आचमनं स्नानम् ॥ मन्त्रविल् ॥ वस्त्रम्— आच्छादनं मया सम्यक् शुद्धं चैव सुनिर्मलम् । सुरभी वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरी । इति वस्त्रेण गामाच्छाद्य ॥ गावोमे चाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवांमध्ये वसाम्यहम् ॥ इतिमन्त्रेण अक्षत पूजा प्रार्थना पंच गावःसमुत्पन्ना मथ्य माने महो दधौ॥ तासां मध्ये तथा श्रेष्टा तस्यैधेन्वै नमो नमः ॥ इति मन्त्रेणगन्धाः दिभिःपूजयेत् ॥ पूजितासिवसिष्टेन विश्वामित्रेणधीमता ॥- सुरभि हरमे पापं यन्मयादुष्कृतं कृतम् पुष्प माला ॥ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभे योभ्य एवच ॥ नमोब्रह्म सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो-नमः ॥ सुरभि त्वं जगन्माता नित्यं विष्णु पदेस्थिता ॥ मातर्गृहाण मे दत्तं गोमातस्त्रातुमर्हसि ॥ इति मन्त्रेण गोभ्यो नैवेद्यम् ॥ धूपदीपादिकं दत्त फलानि विविधा निच ॥ गृणाणार्घ्यं मया दत्तं देहि मे वाञ्छितं फलम् ॥ रूपं देहि जयंदेहि भाग्यभवति देहि मे॥ पुत्रान् देहि धनदेहि सर्वान्कामांश्चदेहिमे॥ इति मन्त्रेण अर्घं दत्वा ।तवोङ्ग पूजा॥ पृष्ठे ब्रह्मणे ब्रह्मणे नमः । गले विष्णवे नमः ।मुखेरुद्राय नमः । रोमकूपेषु सर्वेभ्योमहर्षिभ्यो नमो नमः पुच्छे सर्व्र नागेभ्यो नमः । स्तनेषु चतुस्समुद्रेभ्यो

नमः । खुराग्रेऽष्टकुल पर्वतेभ्यो नमः । नेत्रयोः शशिभा कराभ्यां नमः । शृंगयोर्मध्येसर्वतीर्थेभ्यो नमः मूत्रे गंगादि सर्व नदीभ्यो नमः । गोमये लक्ष्म्यै नमः । कर्णयोरश्विनी कुमाराभ्यां नमः । जिह्वायां सरस्वत्यै-नमः नासा पुटयोः सुमुखायनमः उदरे पृथिव्यै नमः । दक्षिण पार्श्वे कुबेराय नमः । वामपार्श्वे वरुणाय नमः । हूं—कारे सर्व वेदेभ्योनमः । इति अंगपूजा ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या समानिच ॥ तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ अथप्रार्थना ॥ पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णुर्मुखे रुद्रः प्रतिष्ठितः ॥ मध्ये देवगणाः सर्वे रोमकूपे महर्षयः । नागाः पुच्छे खुराग्रेषु येचाष्टौ कुल पर्वताः ॥ मूत्रे गंगादयो नद्यो नेत्रयो शशि भास्करौ एते यस्यास्तनौ देवाः साधेनुर्वरदास्तुमे ॥ या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्ववस्थिता ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ विष्णो र्वक्षसि या लक्ष्मीः स्वाहा याच विभावसोः ॥ चन्द्रार्क शक्र शक्तिर्या सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ चतुर्मुखस्यया लक्ष्मी लक्ष्मीर्या धनदस्य च ॥ या लक्ष्मी लोक पालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ या स्वधा पितृमुख्यानां स्वाहा यज्ञ भुज स्तथा ॥ सर्व पाप हराधेनुः सामे शांतिं प्रयच्छतु ॥ मनोमे तर्पयेत् चक्षुं मेतर्पयेत् । श्रोत्रं मे तर्पयेत्, प्रजान्मे तर्पयेत् गणान्मेतर्पयेत मिति गोपुच्छ तर्पणं इति सर्वाङ्ग तर्पयेत् ॥ ततः सङ्कल्पः - पूर्व . सङ्कल्प सिद्धि रस्तु देश कालौ सङ्कल्प—

मम इह जन्मनि जन्मांतरे वा अज्ञान वशतः प्रकृति वियोगा च गुणत्रय कारण मनोवाक् काय कल्पितत्रिविध समस्त पाप संपट्टन पर दाराभिमर्पण ब्राह्मण हनन मद्यपान गुरु तल्प गमनेन्धनार्थ द्रुम च्छेदन स्त्री हिंसौषध जीवन सवित्री विधवा दासी वेश्याभि गमन रहस्य पातको पपातका गम्या गमनाभक्ष्य भक्षण लेह्या लेह्या पेया पेयपा भोज्या भोजना स्पृश्य स्पर्शनानिन्द्राभोजन पंक्ति भेद वेदविक्रय हय विक्रय शूद्र संसर्ग देवता हरण फलादि हरणाजनित सफल पातका पनोदन पूर्वक मायुरारोग्य धनधान्य मं प्राप्त्यर्थम् इमां गां रुद्र दैवत्या वस्त्र द्वयाच्छन्नां स्वर्ण शृंगीं रौप्य खुरां रत्न पुच्छीं ताम्र पृष्ठां घंटा चामर संयुतां कांस्य दोहनीं श्री विष्णोः प्रीत्यर्थम् अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय मुद्रितमाय तुभ्यमहं संप्रदे, नमम इति, ब्राह्मणम्—प्रति—गृह्णामि—स्वस्ति—कोदात् मिति मन्त्रं पठेत् ॥ कपिले सर्व देवानां पूजनीयासि रोहिणीम । तीर्थ देव मयायस्मा द्रुत शान्तीं प्रय० ॥ दानप्रतिष्ठा—अद्य कृतैतत् श्री परमेश्वर प्रीतये कृतस्य यत्किंचित्

सालंकारादि गोदान प्रतिष्ठार्थं रौप्यं चन्द्र दैवतं हिरण्यम् अग्नि दैवत अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे, ओं तत्सत् न मम-इति प्रदक्षिणां कृत्वा, गांनत्वा, ब्राह्मणं नत्वा, भूयसीं दत्वा स्तुवीत। गावः पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा ॥ गावोस्माकं वयं शान्तिः यतो गावस्ततो वयम् ॥ गावःपवित्राः परमं गावो मंगल मुत्तमम् ॥ गावः स्वर्गस्य सोपानं गावोधन्याः सनातनाः ॥ घृत क्षीर प्रदा गावो घृत योन्यो घृतोद्भवाः। घृत नद्यो घृतवसा स्तामे संतु सदागृहे ॥ अनेन गोदानेन श्री गोविन्दः प्रीयताम् ओंः शान्तिमितिअभिषेच ॥

सर्व प्रायश्चित गोदान सङ्कल्प

अद्येह ऽमुक गोत्रः अमुक प्रवरः अमुक शर्मा मयाजन्म प्रभृति अद्य यावत् आचरितस्य समस्त पातकस्य अकृत प्रायश्चित्तस्य आमरणान्तं पापापनोद कामः इमां" वस्त्र द्वययुतां स्वर्ण शृगीं रौप्य खुरां रत्न पुच्छीं ताम्र पृष्ठीं घंटा चामर संयुतां कांस्य दोहनीं कपिलां 'धेनुं' रुद्र' दैवतां (तत्प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवतं, विष्णोः प्रीत्यर्थंप्रायश्चित्त त्वेन अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे। न मम-इति। गो प्रार्थना। प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने निष्कृतिर्नष्कृवा कचित् तस्य पापस्य शुद्धयर्थं धेनुमेवां ददामिते ॥ १ ॥ गोदान प्रतिष्ठा— अद्यकृतैतत् श्री—परमेश्वर प्रीतये कृतस्य यत्किंचित्सालं कारादियुत प्रायश्चित्त गो (प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्यदान कर्मणः) दान-प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवताकं अमुक गोत्राय इत्यादि ॥

व्रत प्रतिष्ठा गोदान सं० ॥

मम श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम् एकादश्यादि तत्तद्व्रत कर्मणः प्रतिष्ठार्थम् इमां गां रुद्रदैवतां (तत्प्रत्याम्नायीभूतं रजतं चन्द्र दैवतां ताम्र खण्डं श्री सूर्य दैवतं) यथानाम गोत्राययथा नाम शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य महं सं प्रददे॥ एकादश्यादि तत्तत् व्रतकर्मणः प्रतिष्ठार्थं गोप्रत्याम्नायीभूतानि द्रव्याणि तत्तत् दैवतानि नानानाम गोत्रेभ्यो नाना नाम शर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥

पाप पनोद धेनुदानम् ॥

ॐ तत्सत् पूर्व संकल्प सिद्धि रस्तु अद्येह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम मनोवाक्काय कर्मभिराजन्मोपार्जित पापापनोदार्थम् इमां कृष्णां पापापनोद धेनुं रुद्रदैवत्यां (तत्प्रत्याम्नायीभूतं रौप्य खण्डं चन्द्रदैवतं) अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य मह संप्रददे नमम इति । प्रार्थना मन्त्र ।

आजन्मो पार्जितं मनोवाक्काय कर्मभिः । तत्सर्वं नाशमायातु पाप धेनु प्रदानतः ॥ दानप्रतिष्ठा–अद्यकृतैतत् पापापनोद धेनुं [प्रत्याम्नायी भूत अमुक द्रव्यदान कर्मणः] दानप्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय दान प्रतिष्ठा त्वेनतुभ्यमहं संप्रददे ।

ऋणापनोद धेनुदानम् ॥

ॐ तत्सत् पूर्व संकल्प सिद्धिरस्तु अद्येह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम आजन्मो पार्जितैहि कामुष्मिक समस्त ऋण जन्यपातक छेद काम इमां ऋणापनोद धेनुं रुद्र दैवतां [तत्प्रत्याम्नायी भूत अमुक द्रव्य खण्डं अमुक देवतं] अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य मह संप्रददेन मम इति प्रार्थना—ऐहि कामुष्मिकं यच्च, सप्त जन्मार्जितमृणम् । तत्सर्व नाशमायातु, गामे कां ददतोमम ॥ दान प्रतिष्ठा—अद्य कृतैतत् ऋणापनोद [प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य दान कर्मणः] दान प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्यं अमुक दैवतं ॥ इत्यादि ॥

अथ-मोक्षधेनु दान—

मोक्षदो यातु देवस्तु । वेद शास्त्रैस्तु गीयते ॥ तत्प्रीतये द्विजाग्र्याय, मोक्ष धेनुं ददाम्यहम् ॥ ॐ तत्सत् पूर्व सङ्कल्प सिद्धिरस्तु अद्येह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम समस्त पापक्षय पूर्वक संसार मोक्ष प्राप्ति कामः पापा मह महा विष्णु प्रीति कामश्च इमां—मोक्षधेनुं रुद्रदैवत्यां [तत्प्रत्याम्नायीभूतं अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवतं] अमुक अमुकगोत्राय शर्मणे सुपूजिताय तुभ्य मह संप्रददे । न मम इति । मोक्षधेनु प्रार्थना मन्त्रः ।—मोक्षं देहि हृषीकेश । मोक्षं देहि जनार्दन ॥ मोक्ष धेनु प्रदानेन ममयोक्षोऽस्तुयतः ॥ दान प्रतिष्ठा अ० कृ० मो० धे० [प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य दान कर्मणः] दान प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्यं अमुक दैवतं इत्यादि ॥

तिल दान विधिः ॥

काँश पात्र कृष्ण तिल सुवर्ण सहित-संकल्प्यं ॥—

मम जन्म प्रभूति मरणान्तं कृत नाना विधपाप नाश नार्थं सहिरण्यं तिल पात्रं सोम दैवतम् अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय सूपूजिताय तुभ्य मह' अंप्रददे। तिलाः पुण्याः पवित्राश्च तिलाः स्वर्गकाराः स्मृताः ॥ शुक्ला वायदिवा ,कृष्णा ऋषिगोत्र समुद्भवाः ॥ यानि कानि चपापानि ब्रह्म हत्या समानिच ॥ तिल पात्र प्रदानेन तानि नाश्यंतु सर्वदा महर्षि गोत्र संभूताः कश्यपस्य तिलाः स्मृताः ॥ तस्मात्ते पां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥ इति कुश जलान्दत्वा ॥ दान प्रतिष्ठा-अद्य कृतैतत् सहिरण्य तिलक पात्र दानं प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं दक्षिणां हिरण्यं अग्निदैवतं [तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्यम् अमुक दैवतं] यथा नाम गोत्राय इत्यादि ।

उत्क्रान्ति धेनु

मम सुखेन प्राणोत्क्रमणार्थं श्री नारायण प्रीतये इमांउत् क्रान्ति धेनु रुद्रदैवत्यां [तत्प्रत्याम्नानी भूतंरजतं चन्द्र दैवत ताम्रखंडं श्री सूर्य दैवत] यथा नाम गोत्राय यथा नाम शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रदे प्रार्थनामृत्यूत्क्रान्तौप्रवृत्तस्य दुःखोत्क्रांतिनिवृत्तयोः तुभ्यं सम्प्रदेनाम्नां गांसमुत्क्रं ति संज्ञिकाम् ॥ दान प्रतिष्ठा अद्यकृतैतत् उत्क्रान्तिधेनुप्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य दान कमर्णः दानप्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्यं अमुक दैवतं इत्यादि ।

दशदान संकल्पः

मम श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गो-भू-तिल-हिरण्य-आज्य-वास-धान्य-गुड-रौप्य लवण प्रत्याम्नायी भूतानि इमानि रौप्य खण्डानि नाना नाम गोत्रेभ्यो नाना नाम शर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे दान प्रतिष्ठा-अद्यकृतैतत् दश दान कृतप्रत्याम्नायी भूत कर्मणः प्रतिष्ठा सांगता सिद्धयर्थं यथोक्त फलप्राप्त्ये श्री नारायणप्रीतये इमानि रजत खण्डानि चन्द्र दैवतानि गोभूम्यादि दशदान प्रत्याम्नायद्रव्य दान प्रतिष्ठात्वेन अहं संप्रददे ॥

कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्य जानता, मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पंचत्व मागतम् ॥ १ ॥ धर्माधर्म समायुक्तं लोभमोह समावृत्तम् ॥ दहेयं सर्वं गोत्राणि दिव्यॉंल्लोकात्सगच्छतु ।

अथ वृहद्गोदानविधिः

सर्वाघनाशनं पुण्यं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ।
स्वर्गापवर्गदं चाथ वक्ष्ये गोदानमद्भुतम् ॥ १ ॥
अयने विषुवे याते वैधृतौ सूर्य्यसङ्क्रमे ।
सौलेन्दौ पौर्णमास्यां वा द्वादश्यां राहुपर्वणि ॥ २ ॥
मन्वादौ च युगादौ च जन्मर्क्षे पुत्रजन्मनि ।
यात्राकाले महोत्पाते दुःस्वप्नेऽद्भुतदर्शने ॥ ३ ॥
व्रते यागे प्रविष्टासु गावो देया शिवार्थिना ।
तीर्थे देवालये गोष्ठे सङ्गमे यज्ञमण्डपे ॥ ४ ॥
शालग्रामशिलाग्रे च शिवलिङ्गस्य सन्निधौ ।
इत्यादिशुभदेशेषु स्वगृहे वा पयस्विनीम् ॥ ५ ॥
श्रद्धास्तिकयुद्धया तां सदेसां द्विजपुङ्गवे ।
कुलीनाय सुशीलाय वेदवेदाङ्गवादिने ॥ ६ ॥
सद्वृत्तायाप्रमत्ताय दान्ताय कुशवृत्तये ।
क्रोधहिंसाविहीनाय सदा सन्तोषजीविने ॥ ७ ॥
पितृमातृगुरूणां च भक्ताय प्रियवादिने ।
अनिंद्यदेशजाताय सांगाय व्रतचारिणे ॥ ८ ॥
जपस्वाध्यायनिष्ठाय तथा सत्यपराय च ।
परदारनिवृत्ताय ह्यहिंसे वारताय च ॥ ९ ॥
सर्वदानानि देयानि विष्णुवस्तु विचिन्तयेत् ।
अपराबाधमक्लेशं स्वयत्नेनार्जितं धनम् ॥
स्वल्पं वा विपुलं वापि देयमित्यभिधीयते ॥ १० ॥

तत्र दाता सुस्नातः गोदानसामग्रीं स्वागतः संपाद्य सुलिप्तायां भूमौ सपत्नीकः स्वासने उपविश्य यथोक्तलक्षणां सवत्सां गां प्राङ्मुखी-मवस्थाप्य उदङ्मुखं ब्राह्मणं संस्थाप्य गणेशं नत्वा स्वागतः गन्धा-दिना अर्घ्यं संस्थाप्य कुशतिलजलयवान्यादाय सङ्कल्पं कुर्यात् ॥ ॐ विष्णुः ३ अद्येह अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्म्मा सपत्नीकोऽहम् श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये सकलमनोरथसिद्धये च कृतैतद् श्रीयज्ञ-पुरुषप्रीतये गोदानं करिष्ये तत्प्रतिग्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणञ्च करिष्ये ।

उदङ्मुखं ब्राह्मणं अर्घ्यादिभिः सम्पूज्य वरणसामग्रीं करे कृत्वा, एभिर्गन्धाक्षतपुष्पमालायज्ञोपवीतताम्बूलफलादिभिः गोदानप्रतिग्रहार्थे अमुक-गोत्रममुकवेदाध्यायिनममुकशर्म्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मीति

ब्राह्मणो वदेत् ॥ ततः पुष्पमालादिभिर्ब्राह्मणं चालंकृत्य तत्र मंत्राः ॐ या आहरदिति भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवता पुष्पमालाग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामयेन्द्रियाय अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च ॥ ॐ यद्यशोऽप्सरसमिति भारद्वाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवता पुष्पमालाबन्धने विनियोगः। ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु तेन संग्रथिताः सुमनसः आबध्नामि यशो मयि। ततो ब्राह्मणं प्रार्थयेत्। यदर्चनं कृतं विप्र तव विष्णुस्वरूपिणः ॥ तत्सर्वं मम दीनस्य विष्णवेऽस्तु समर्पणम्। ततः स्वपुरतः प्राङ्मुखीं गां सवत्सामवस्थाप्य तदुत्तरतो न्यस्य पूजयेत् ॥ तत्र सङ्कल्पः ॥ ॐ विष्णुः ३ अद्येहेत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माहं गोदानपूर्वाङ्गत्वेन सवत्सायाः गोः यथामिलितोप चारैः पूजनं करिष्ये। आवाहनम्। आवाहयाम्यहं देवी गां त्वां त्रैलोक्यमातरम् ॥ यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥ त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा। गायत्री त्वं च सावित्री गङ्गा त्वं च सरस्वती ॥ २ ॥ तृणानि भक्षसे नित्यममृतं स्रवसे प्रभो ॥ भूतप्रेतपिशाचांश्च पितृदैवतमानुषान्। सर्वांस्तारयसे देवि नरकात्पापसंकटात्। इत्यावाह्य पूजयेत् ॥ सर्व देव० इत्यादि

सवत्सायै गवे नमः पाद्यं स्नानं समर्पयामि। पुष्पं गृहीत्वा ॥ नमो विश्वमूर्तिभ्यः विश्वमातृभ्य एव च। लोकाधिवासिनीभ्यश्च रोहिणीभ्यो नमो नमः ॥ गोः अग्रपादाभ्यां नमः ॥ गोः पश्चात्पादाभ्यां नमः ॥ देहस्था या च रुद्राणां शङ्करस्य सदा प्रिया। धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ गोरास्याय नमः ॥ विष्णोर्वक्षसि या देवी स्वाहा या च विभावसोः। चन्द्रार्कशक्रशक्तिर्या सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ गोः शृङ्गाभ्यां नमः गोः कर्णाभ्यां नमः। चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मीर्धनदस्य च लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ गोः पृष्ठाय नमः। स्वधा त्वं पितृमुख्यानां स्वाहा यज्ञभुजां तथा। सर्वपापहरा धेनुस्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे ॥ गोः पुच्छाय नमः ॥ वस्त्रम् ॥ आच्छादनं मया दत्तं सम्यक् शुद्धं सुनिर्मलं। सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरि ॥ गन्धम् ॥ सर्वदेवप्रियं देवि चन्दनं कुङ्कुमान्वितम् ॥ कर्पूरादिसमायुक्तं गौर्गन्धः प्रतिगृह्यताम् ॥ अक्षताः ॥ अक्षता अतिशुभ्राश्च कुंकुमाक्ताः सुशोभनाः। मयानीता मिथार्थं तान् गृहाण त्वं गवेश्वरि ॥ पुष्पाणि पुष्पमाला ॥ धूपम् ॥ आनन्दकृत् सर्वलोके देवानाञ्च सदा

प्रिये । गौस्त्वं पाहि जगन्माता धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम् ॥ साज्यं सद्वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेशि सर्वं तस्तिमिरापहम् ॥ गोग्रासः ॥ सुरभिस्त्वं जगन्माता, नित्यं विष्णुपदे स्थिता ॥ गोग्रासं च मया दत्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ भूषणार्थे द्रव्यम् ॥ घण्टां चामरञ्च समर्प्य ॥ (क) ततो गोदेहतीर्थानि पूजयेत् ॥ अत्रत्रिवारं प्र०

गन्धाक्षतपुष्पैः—शृङ्गमूले ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः । शृंगाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः । शिरोमध्ये महादेवाय नमः । ललाटेगौर्य्यै नमः । नासरन्ध्रे षण्मुखाय नमः । नासापुटयोः कम्बलाश्वतराभ्यां नमः । दन्तेषु वायवे नमः । जिह्वायां वरुणाय नमः । हूँकारे सरस्वत्यै नमः । गण्डयोः मासपक्षाभ्यां नमः । ओष्ठयोः सन्ध्याद्वयाभ्यां नमः । ग्रीवायां रक्षोभ्यो नमः । कुक्षौ साध्येभ्यो नमः । जंघासु धर्म्माय नमः । खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः । खुराग्रे कुलपर्वतेभ्यो नमः । खुरपश्चिमाग्रेषु अप्सरोगणेभ्यो नमः । पृष्ठे एकादश रुद्रेभ्यो नमः । सर्वसन्धिषु वसुभ्यो नमः श्रोण्योः पितृगणेभ्यो नमः । पुच्छे सोमाय नमः । पुच्छकेशेषु सूर्य्यरश्मिभ्यो नमः । गोमूत्रे गङ्गायै नमः गोमये यमुनायै नमः । क्षीरे सरस्वत्यै नमः । दध्नि नर्मदायै नमः । घृते वह्नये नमः । रोमसु कोटिदेवेभ्यो नमः । उदरे पृथिव्यै नमः । स्तनेषु चतुः सागरेभ्यो नमः । एते यस्याः स्तनौ देवाः सा धेनुर्वरदा मम । स्वर्णशृंगी रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां मुक्ताफलसमर्पितलांगूलवतीं कांस्यगोदोहनिकां विधाय प्रार्थयेत् ॥ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः । ततः सकुशाक्षतत्रयं गोपुच्छं गृहीत्वा ॥ प्राङ्मुखो यजमानो देवतीर्थेन देवांस्तर्पयेत् । ॐ या नन्दिनी सुशीलाद्याः कामदाश्चैव धेनवः । ताः सर्वाः पुच्छतो येन तर्पितास्तर्पयन्तु माम् ॥ ब्रह्मा विष्णुर्महादेवः कार्तिकेयो गणाधिपः । पुष्पचापो महेन्द्रश्च भगवानच्युताग्रजः ॥ देवाः समस्ताः सगणाः सवाहन परिच्छदाः । वसवोऽष्टौ द्वादशार्का रुद्रा एकादशैव तु ॥ विश्वेदेवाश्च साध्याश्चाष्टौ, मरुतो मातरस्तथा । गन्धर्वा गुह्यकाश्चैव सागराः सरितस्तथा ॥ राक्षसा यक्षनागाः पूतनाः पर्वता द्रुमाः । तीर्थान्यप्सरसश्चैव पशवः पन्नगाः खगाः ऋक्षाणि राशयो योगा मासवर्षर्तुवासराः । अयने च युगाः कल्पाः तथा मन्वन्तराणि च ॥ भुवनानि दिशश्चैव तथा सर्वेन्द्रियाणि च । ॐकारश्चैव गायत्री छन्दांस्यंगानि चैव हि ॥ वेदाश्च स्मृतयश्चैव पुरा-

[क] अत्र त्रिवारं प्रदक्षिणीकार्या ।

णानि तथैव च । आयुर्वेदो धनुर्वेदो गन्धर्वो मन्त्रगह्वरः ॥ ओषध्यो वनसंभूता ग्राम्याश्चत्र सुपिप्पलाः । सानुगा देवताश्चैव मुनयः सगणास्तथा ॥ ऋषयः ऋषिपत्न्यश्च सिद्धाश्च सगणास्तथा ॥ प्रजा प्रजापतिश्चैव येऽन्ये विघ्नविनायकाः ॥ विद्याधराश्च दैत्याश्च आचार्य्या गुरवस्तथा । डाकिन्यः क्षेत्रपालाश्च भैरवाश्चाष्टसंख्यकाः ॥ स्थावरा जंगमाश्चैव भूतग्रामश्चतुर्विधः । अक्षयेनामृतेनैव मंगलेन सुवारिणा ॥ गोपुच्छाग्रच्युतेनेह मद्दत्तेन हितेऽखिलाः । शाश्वती तृप्तिमायान्तु दीर्घयुक्तवरप्रदाः सूर्य्यः सोमो कुजः सौम्यो गुरुः शुक्रः शनैश्चरः । ग्रहाश्च तृप्तिमायान्तु राहुकेतुसमन्विताः ॥ इन्द्रो वह्निर्यमो रक्षः पाशी वायुर्धनाधिपः । ईशोऽनन्तस्तथा ब्रह्मा सर्वे ते तर्पिता मया ॥ सावित्र्या सह लोकेशः सलक्ष्मीकश्चतुर्भुजः । महेशश्चोमया सार्द्धं तृप्तिमायान्तु शाश्वतीम् ॥ अत्रिवशिष्टो भृगुगौतमौ च मरीचिदक्षौ पुलहः पुलस्त्यः । प्राचेतसः काश्यपविश्वमित्रौ भरद्वाजसंज्ञो यदमग्निरेव ॥ अन्ये च सर्वे मुनिपुंगवाश्च गृह्णन्तु दत्तं जलमद्य तुष्टाः । जीवत्पितृकस्य तर्पणे निषेधोऽवस्तेन तन्न कार्य्यम् ॥ ततो यज्ञोपवीतं कण्ठावरोहणं कृत्वा साक्षतकुशैः मनुष्यतीर्थेन मनुष्यांस्तर्पयेत् ॥ सनकः सनन्दनश्चैव सनातनस्तथैव च । कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा । ते तृप्तिमखिलायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणे ॥ ततोऽपसव्यं विधाय । द्विगुणित कुशतिलजलैः पितॄंस्तर्पयेत् कव्यवाडनलः सोमो यमश्चैवार्य्यमा तथा । अग्निष्वात्ताः सोमपाश्च तथा वर्हिषदश्चये ॥ तर्पितास्तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकर्पणे । यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च ॥ वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च । औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने ॥ वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥ मातापितामही चैवतथैव प्रपितामही । मातामहःप्रमातामही वृद्धप्रमाता महस्तथा। मातामही प्रमातामही वृद्धप्रमातामही तथा अक्षयां तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणे॥ ये मृता वै पितृव्याश्च मातुलाः श्वशुरास्तथा । आचार्य्यगुरुमित्राद्या गृह्णन्त्वेतं जलं मुदा । ये च सम्बन्धिनोऽपुत्रा वह्निदाह विवर्जिताः । अपमृत्युमृता येचते गृह्णन्तुशुभं जलमक्षतं च शोभृतायेच मान् यंशेष येमृताः । गुरुश्वगुरुवंधूनां ये चान्ये बांधवा स्मृताः ॥ येन्ने कुले लुप्तपिंडा क्रियालोपगताश्चये । विरूपा आमगर्भाश्चज्ञाता ज्ञाताः कुले मम ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥ इत्थं तर्पणं विधाय सव्येनाचम्य ॥ आप् उदङ्मुखो गाम् उदङ्मुखो विप्रः पुच्छदेशे स्वयं स्थित्वा आम्रपात्रं सतिलं कनकेन (सुवर्णेन) अन्वितं (युक्तं) प्रगृह्य गोपुच्छं तदग्रे निधाय दानसंकल्पं कुर्वीत ॥ ॐ विष्णुः ३ अद्येत्यादि उपाय

अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्त्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक वासरे अमुकतिथौ अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशि-स्थिते सूर्य्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथ राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मन श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्य्याभिवृद्ध्यर्थम्, सकलमनईप्सित कामनासंसिद्ध्यर्थम्, लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय लाभादिप्राप्त्यर्थम्, इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थ, तथा मम सभार्य्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशो समस्तभयव्याधिजरापीडा मृत्युपरिहार द्वारा आयुरारोग्यैश्वर्य्याभिवृद्ध्यर्थम् तथा मम जन्मराशेरखिल कुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादशस्थान स्थित क्रूरग्रहास्तैः सूचित सूचयिष्यमाणश्च यत्सर्वारिष्ट तद्विनाशद्वारा एकादश स्थान स्थित वच्छुभफल प्राप्त्यर्थम्, आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थम् तथा इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नता सिद्ध्यर्थम्, आधिदैविक-आधिभौतिक-आध्यात्मिकत्रिविधतापोपशम नार्थम्, धर्मार्थकाममोक्ष फलावाप्त्यर्थञ्च यथोक्तफलावाप्तये अमुकगोत्राय अमुकवेदाध्यायिनेऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। दानवाक्यम् । यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघविनाशिनी। विश्वरूपधरो देव प्रीयता मनया गवा कपिले सर्व देवानां पूजनीया शिरोहिणी। तीर्थं देव मयादत्ता तस्मात्शान्ति प्रयच्छ मे। इत्युक्त्वाच्छ्यं सकुशगोपुच्छं विप्रहस्ते दद्यात् विप्रोऽपि॥ ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु॥ ॐ देवस्य त्वा सवितु प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम पूष्णो हस्ताभ्याम्। ॐ कोदात् कस्माऽ अदात् कामोदात् कामा दाता काम प्रतिगृहीता कामैतत्ते॥ स्वस्तीति वदेत्॥

दानप्रतिष्ठा सङ्कल्प॥ ॐ विष्णु ३ अद्येहेत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माऽहं कृतैतद्गोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थम् इदं सुवर्णमग्निदैवतं यथाशक्तिमितमायतनसहितं ब्राह्मणायदास्ये ॐ तत्सत्॥इति दद्यात्। ब्राह्मण पुच्छोदकेनाभिषेकं कुर्यात्॥ ॐ शान्ति ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति पृथिवी शान्तिराप शान्तिरोषधय शान्तिर्वनस्पतय शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वं शान्ति शान्तिरेव शान्ति सामा शान्तिरेधि॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्नऽआसुव॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु,
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ अच्युतायनमः।

इत्यभिषेकं कृत्वा, मन्त्राशिषं च दद्यात् ॥ ततो यजमानः ब्राह्मणेन समन्वितो गां त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य ॥ प्रदक्षिणामन्त्रो ॥ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥ ततो दक्षिणां भूयसीं च दद्यात् । ॐ विष्णुः ३ अद्येह अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माहं गोदानकर्मणः साङ्गफलवाप्तये सादगुण्यार्थं च इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे तथा भूयसीं दक्षिणाम् अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये ॐ स्वस्ति । तथा यथोपपन्नेनान्नेन ब्राह्मणांश्च भोजयिष्ये ॥ (क) ततो ब्राह्मणा आशिषं दद्यात् मन्त्रपाठः ॥

ॐ गोमो धेनु ँ सोमो ऽअर्वन्तमाशु ँ सोमो वीर ँ कर्म्मण्यन्ददाति ॥ सादन्यं विदथ्य ँ सभेयम्पितृश्रवणं यो ददाश दस्मै ॥ १ ॥ ब्राह्मणयुक्तां त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य गोमतीं पठित्वा ततो गोदान दक्षिणाभूयसीसंकल्पं कुर्यात् । गोमती अग्रे द्रष्टव्या ।

गोदाने विशेषः

त्रिकं मातामहार्थं च मातामह्यादिकं त्रयम् । ते च तान्य प्रदत्तं मे स्वीकुर्वन्तु जलं मुदा ॥ १ ॥ गोत्रे मदीये विमुवा मृता ये गोत्रे च मातुर्मम ये विपन्नाः । गर्भच्युताः श्राद्धविवर्जिताश्च तेभ्यः स्वधानेन जलेन कृत्वा ॥ २ ॥ भूम्यग्निवज्रादिजलादिशस्त्रैर्विषाणदन्तैर्नखरैर्भुजङ्गैः । पञ्चत्वभावं विगताश्च ये च तेभ्यः प्रदत्तं शिवमस्तु तोयम् ॥ ३ ॥ ये रौरवादौ नरके निमग्नाः क्रियाविलुप्ताश्च कृतपकाराः । जन्मान्तरे ये मम दासभूतास्तेऽप्यक्षयां तृप्तिमिहाभजन्तु ॥ ४ ॥ ये बांधवा अबांधवा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकवारिभिः ॥ ५ ॥ धेनुपुच्छे करं कृत्वा तर्पणं च करोति यः । आत्मानं तारयेद्विप्रो दशपूर्वान् दशापरान् ॥ ६ ॥ सन्तर्पिता मया ये च गोपुच्छोदकतर्पणे । आयुर्वृद्धिं तथा तुष्टिं मेधां प्रज्ञां च सन्ततिम् ॥ ७ ॥ आरोग्यं धनधान्यं च मन्तुष्टाः ददन्तु मे ॥

गोमतीं पठेत्–गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिकाः । गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत् ॥ १ ॥ पावनं सर्वभूतानां

(क) ॐ स्वस्ति दक्षिणा दत्ता-यस्य स्मृतिमात्रादि मां सन्धुताय नमः इति विष्णुं स्मरेत् ।

चरन्ति च वहन्ति च । हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान्दिवि ॥ २ ॥ ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमे प्रतिष्ठिता । सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम् ॥ ३ ॥ गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः । गावः पवित्रं परमं गावो मङ्गलमुत्तमम् ॥ ४ ॥ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ ५ ॥ ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम् । एकत्रमन्त्रास्तिष्ठन्ति ॥ ६ ॥ गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृङ्गाः पयोमुचः । सुरभ्यः सौरभेय्यश्च सरितः सागरास्तथा ॥ ७ ॥ गावः पश्यान्त्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा । गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ॥८॥ घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः । घृतनद्यो घृतावर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे ॥९॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मामुपतिष्ठन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥१०॥ एवं रात्रौ दिवा रात्रि समेषु विषमेषु च । भयेषु च नरो नित्यं कीर्तयन्मुच्यते भयात् ॥११॥ इत्यायम्च जपन्प्रातः सायं वा पुरुषस्तथा । यद्रात्र्या कुरुते पापं तद्रात्र्या प्रतिमुच्यते । यदह्ना कुरुते पापं तदह्ना प्रतिमुच्यते ॥ १२ ॥

अथ ब्रह्मयज्ञ प्रयोग ॥

(सूर्योपस्थानानन्तरं प्रदक्षिणी कृत्य नमस्कृत्योपविशत् । दर्भेषु परिस्य दर्भपाणिर्भूत्वा स्वाध्यायं च यथा शक्त्या द्वावाचम्यादम्) आचम्य प्राणानायम्य ॥ कुशपवित्र धारणम् —ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्काम पुन तच्छकेयम् ॥ १ ॥

सङ्कल्प —अद्य पूर्वोच्चारित एव गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं ॐ तत्सत् परमेश्वर प्रीत्यर्थं यथाशक्ति ब्रह्मयज्ञं नाऽहं करिष्ये । अथवा ब्रह्मयज्ञ न्यारव्या स्याम —द्वितीय सङ्कल्प — इषेत्वादिषु मन्त्रेषु एव ब्रह्मान्तेषु दश प्रणव सहितेषु क्रिया किया स्तत्र विश्वता तृप्ति प्रजापति देवता । सर्वाणि कराऽसि सर्वाणि सामानि प्रतिलिङ्ग रूप श्रवा । ब्रह्म यज्ञे विनियोग ॥ ब्रह्म यज्ञारम्भ यज्ञ । विश्वस्तादा छन्द पुरुषऽशरीर न्यसन् । तिर्यग्विकल्प यमऽऽयं बुध छन्द पुरुषस्य च ॥ न्यासा —ॐ गौतम भरद्वाजाभ्यां नम नेत्रयो । ॐ विश्वामित्र जमदग्निभ्यां नम नासिकयो । ॐ अत्रये नम वाचि । ॐ गायत्र्याग्निभ्यां नम शिरसि । ॐ उष्णिक्स

वितृभ्यांनमः श्रोत्रायाम् ॐ बृहती बृहतिभ्यां नमः-अनुके । (हनौ) ॥ ॐ वृहद्रथन्तरत्वात्रा पृथिवीभ्यां नमः-बाह्वोः । ॐ त्रिष्टुबिन्द्राभ्यां नमः—नाभौ । ॐ जगत्यादित्याभ्यां नमः-श्रोण्योः । ॐ अतिच्छन्दा प्रजापतिभ्यांनमः-लिङ्गे । ॐ यज्ञा याज्ञे वैश्वानाभ्यां नमः—गुदे । ॐ अनुष्टु विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः—ऊर्वोः । ॐ पङ्क्ति वरुणोनमः जान्वोः । ॐद्विपदा-विष्णुभ्यां नमः—पादयोः । ॐ विछन्दा वायुभ्यां नमः । नासापुटस्थ प्राणेषु । ॐ न्यूनाक्षरा छन्दोभ्यो नमः—सर्वाङ्गेषु ॥ एव मेवाङ्गानि-योजयित्वा वेदमयः सम्पद्यते । [न कुत्रारिचद्भयं विन्दते । शापा नुग्रह सामर्थ्यं ब्राह्म तेजश्च वर्द्धते । स्वर्गं लोकं पर साधनम् । धर्मार्थं काम मोक्षस्य च । तस्य दारिद्र दुःख शोक रोगभयं नभवति । ऋषि देवता छन्दा ७ सिविदित्वाः ऋग्मयो यजुर्मयः साममयोऽथर्वमयोऽमृतमयो विष्णु रिदं कात्यायनस्य च ॥ ॐ भूर्भुवस्स्वः तत्स विनु० ॥ २ ॥ ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्प्ययतु श्रेष्ठ तमाय कर्म्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याइन्द्राय भागम्प्रजा वतीर नमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशत् माघर्श ७ सो ध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ ३ ॥ वसोऽपवित्रम् ॥ हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याऽपिहितम्मुखम् । योसावादित्ये पुरुषऽसो सावहम् ॥ ॐ खम् । खम्ब्रह्म । अग्निर्वै त्वमन्तरेणा हवनीयञ्च गार्ह पत्यञ्च प्राङ्तिष्ठन्नपऽउप स्पृशति तद्यद्पऽउपस्पृशत्य मध्यो वै पुरुषो यद् नृतम्वदति तेन पूति रन्तरतो मेध्यावाऽआपो मेध्यो भूत्वा व्रत मुपायानीति पवित्रम् वाऽआपऽपवित्र पूतो व्रत मुपायनीति तस्माद्वाऽअपऽउपस्पृशति ॥ १ ॥ सोग्नि मेवा भीक्षमाणो व्रत मुपैति ॥ [ॐ पूर्ण मदःपूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदुच्यते । पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते । ॐ खं ब्रह्म । ॐ खं पुराणम् ॐ वायुरेव खम् मिति स्माह कौर व्यायणी पुत्रो वेदय ब्राह्मण विदुर्वेदेन न यद्वे दितव्यम्] ॥ ॐ प्राश्नी पुत्राद्-आसुरि वासिनः ऽप्राश्नी पुत्रऽआसुरायण दासुरायणऽआसुरेरासुरि र्याज्ञवल्क्याद्याज्ञवल्क्य उद्दालकाऽदुद्दालकोऽरुणादरुणऽउ पवेशे रुपवेशिः कुश्रेऽर्वाजश्रवसो वाजश्रवाजिह्वावतो बाध्योगाज्जिह्वावान् बाध्योगोऽसितावार्षगणादसितो वार्षगणो हरि तात् कश्यपाद्धरितःऽशिल्पात्कश्यप

---

[१] एते मन्त्राः स्वर पूर्वकं पठनीया इति केशाचिन्न मत्ते । परं च द्वतापुरः एवंवति प्राक्मुखः प्राणमेव कुशेषु पविश्य वाम हस्त जले कुश पवित्रे [द्वौदर्भौ] कृत्वा वदुत्तरदिग्यि हस्त यत्रो मुलं कृत्वा ॐकार पूर्विका गायत्री तथा चतुरो वेदादीन् पठेत् ॥ [२] इदंयजुर्वेदोपलक्षणम् ॥

चिद्रूप ऽकस्यत ऽकस्यपात्रे धृवे ऽकम्यपोने अग्निर्वाचो वाग्निभिश्चया ऽग्निभिश्चया दित्या दादित्या नामानि शुक्लानि यजूं षि यानशने यत याज्ञवल्क्य ना ख्यायन्ते ॥ २ ॥ (इत्युक्त्वा ऋग्वेदस्यो पनि पदि] ॥ ॐ अग्नि मीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्न धातमम् ॥ ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ २ ॥ ॐ शन्नो देवीर भिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये । श यारभिस्रवन्तु न ऽ ॥ ३ ॥ चतुर्वेदानन्तरं अङ्गानि पठेत् अथातुशासनं वक्ष्यामि । मरुद्गण दक्षिणा मन्ति हृदयम् । अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि, अथातो ऽधिकार फल युक्तानि कर्माणि । अथातो गृह्यस्थालीपाकानां कर्मवृद्धिरत्र । समाम्नाय समाम्नात मय रसतत्वमनन्तम् संमितम् । पञ्च संवत् सर मये युगाध्यक्षम् । गौर्ग्मा अथातो धर्म जिज्ञासा, अथातो ब्रह्म जिज्ञासा, याज्ञवल्क्यं याज्ञवल्क्य । नारायण नमस्कृत्यइति । विद्यातपो यानि यानिविष्णुतादितं । यत्पर्वं नार्चितो देव श्रीयतां मे जनार्दन । (पत्र तत्र यज्ञोपवीत पात्रयोर्मध्ये कुशानां कुशा पवित्रस्य च उत्तरेणा त्याग कुर्यात्) अर्पणम्—अनेनमया यज्ञाख्येन कर्मणा श्री भगवान् परमे श्वर प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सत्ब्रह्मार्पण मस्तु ॥ यस्यस्मृत्या० इति ब्रह्म यज्ञ प्रयोग ॥ शुभम् भवतु ॥

अथ श्रावणी प्रयोगः ॥

अथ श्रावणी प्रयोग [[1]तत्र श्रावणस्य पूर्णिमादिकाले प्रातः स्नान सन्ध्यादि नित्यकर्म विधाय गुरु शिष्यगणैः सह मार्गादि प्राच्यामुदीच्यां वा नद्यादि रम्ये जलाशय गत्वा तत्तीरे शुभ्रा यथा देश सम्भवा या मृत्तिकाई गोमयं भस्म कुशान् तिलाक्षतान् सुवर्णादि पुष्पाणि [2] दूर्वाङ्कुराणि पञ्चगव्य यज्ञोपवीतादि सर्वां श्रावणी सामग्री सम्पाद्य ऋषिस्थापनार्थपीठ (स्त्रैव वस्त्रस्थापन वा) पूजनार्थगन्ध पुष्पादि पूजासम्भार च सम्पाद्य मृल्लेपन पूर्वकं प्रक्षालित हस्त पाद श्राद्ध कुश [3] ब्रह्म ग्रन्था वा सपवित्र करो गुरु कृताचम्य प्राणायामादियुक्तं शिष्य सहाचम्य प्राणा नायम्य देशकालौसङ्कीर्त्य सर्वे सह सङ्कल्पं कुर्युः ॥ यथा — सङ्कल्प,—अधीतानामध्येष्यमाणानां चाध्याय नां न्यायननिष्कृतं कोश धायमुञ्चन्ति इति दुर्वेध ब्रह्मो भारित यशा नापूरमयानां गता पयस्विन्यादिरूपोपाहित वर्णानां

(१) इदं कुशदानम० (२) इदंवामवदायनम० (३) इदं पञ्च गव्य लक्षणम् ॥

द्विरुक्तस्पष्ट वर्णविघट्टनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यथातयामत्वं तत्परिहारार्थं अष्टत्रिंशदनध्याया ध्ययनेरध्यारम्भतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययनेम्लेच्छान्त्य जादेः शृण्वतोऽध्ययने अशुचिदेशेऽध्ययने आत्मनोऽशुचित्वेऽध्ययने अक्षरस्वरानुस्वार पदच्छेद कण्डिका व्यञ्जनह्रस्व दीर्घप्लुत कण्ठ तालु मूर्धन्योष्ठ्य दन्त्य नासिकानुनासिक रेफ जिह्वामूलीयो पध्मा नीयो दात्तानुदात्त स्वरितादीनां ध्वः ये लोपरे माधुर्यान्तर व्यक्ति हीनत्वाधनेक प्रत्य वाय परिहार पूर्वं सर्वस्य वेदस्य स वीर्यत्वसम्पादन द्वारा यथावत्फलप्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं सशिष्योऽहं शुक्लयजुर्वेदोत्सर्गोपा करणं करिष्ये इति सङ्कल्प्य, गुरुः शिष्यैः सह उभाकवीत्युर्वैः पठेत् ॥ तथा—ॐ उभाक वीयुवा नो धर्मः परागतत् । परिसव्यानि धर्मिणो विसरव्यानिविसृजामहे ॥ इतिमन्त्रं पठित्वा यथा क्रमेण सर्वे गुरोरभिवादनं कुर्युः । (पुनश्चदेशकालौ स्मृत्वा सङ्कल्पयेद्यथा) सङ्कल्पः—अध्यायोत्सर्ग कर्म निमित्तं गण स्नानं महं करिष्ये । पुनश्च इपेत्यादि ॐ सर्वब्रह्मान्तेषु याः क्रिया स्तत्रविवस्वान् ऋषिः सर्वाणियुजु ✱ षिसर्वाणि छन्दा ✱ सि प्रजापतिलिङ्गोक्ता देवता स्नानादि सर्व कर्मसु विनि योगः इत्युक्त्वा' स्नाना तुज्ञां मार्थयेत् । यथा—नमोऽस्तु देव देवाय शिति कण्ठाय वेधसे । रुद्राय चाप हस्ताय दण्डिने चक्रिणे नमः । सरस्वती च गायत्री वेदमाता गरीयसी । सन्निधात्री भव त्वं च सर्वपाप प्रणाशिनी ॥ यद्वा सागर निर्घोष दण्ड हस्ता सुरान्तक । जगत्स्रष्टर्जगन्मित्र नमामि त्वांसुरान्तक । तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं सुरा सुरैर्वन्दितदिव्यरूपम् ॥ भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यंभावानुसारेण सदा नराणाम् ॥ (इमं मन्त्रं समुच्चार्य तीर्थ स्नानं समाचरेत् । अन्यथा तत्फल स्यार्धं तीर्थज्ञोहरति ध्रुवम्, उत्तिष्ठन्तु महाभूता ये भूतानुमि वासिनः ॥ भूता नाम विरोधन स्नान कर्म समारभे ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता स्तीर्थदूषकाः । येभूता विघ्न कर्तार स्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया । पुष्करा यानि तीर्थानि गङ्गाद्या सरितस्तथा ; आगच्छन्तु पवित्राणि स्नान काले सदामम ॥ अपा

अग्रामार्ग मिश्रितैः त्रिभि स्त्रिभिः कुशैः पृथक् पृथक् गायत्र्या पठित्वा ब्रह्म ग्रन्थि युक्ताः सप्तर्षय कार्याः । ते च पीठे नवं स दशं धौतं वस्त्रं रम्भापत्रं वा प्रसार्य दाक्षिणाग्रमागमा उदगग्रा वारयाय नीताः । । ।

माचि पति स्त्व च तीर्थेषु वसविस्तव । वरुणाय नमस्तुभ्य स्नानानुज्ञाप्रयच्छमे ॥ अधिष्ठात्र्यश्च तीर्थाना तीर्थेषुविचरन्ति या । देवतास्ता प्रयच्छन्तु स्नानाज्ञानम सर्वदा ॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदेसिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिंकुरु ॥ तत' ॐ उरु ७ हि राजा वरुणश्चकार० इतिमन्त्रेण तोयमभिमन्त्रयेत् ॥ शेष स्नानविधि. प्रयाग वत्कर्तव्य ॥ तत धौत वाससो परिधाय दर्भा सनादौ प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पवित्र भस्म गोपी चन्दनादि धृत्वा पवित्र पाणि रान्य माध्याह्न सन्ध्या कुर्यात् । तत सूर्यो पस्थान मण्डल ब्राह्मण च सम्पाद्य । तत ब्रह्म यज्ञ देवर्षि मनुष्य पितृ तर्पण च कुर्यात् । अथ ऋषिपूजनम्—तत्रादौ स्वस्ति नाच मिति सूक्त सर्वं पठनीयम । (इद सूक्त तद् शान्त्याध्याये द्रष्टव्यम्)। ऋषिप्रतिष्ठा—ॐमनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मा दयन्ता मोम्प्रतिष्ठ । १२ । एष वै प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रे तेनयज्ञेन यजन्ते सर्व मेव प्रतिष्ठित मस्तु ॥ इति मन्त्रेण ऋष्युपरि अक्षतान् निक्षिपेत् ॥ ऋषि आवाहनम्— ॐभूर्भुव स्व कश्यपाय नम कश्यप आवाहयामि भोकश्यप इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाणमम स मुख सु प्रसन्नोवरदो भव ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुव स्व भरद्वाजाय नम भरद्वाजं आवा हयामि भो भरद्वाज इहागच्छ इहतिष्ठ पूजा गृहाण ममसमुख सुप्रसन्नो वरदोभव ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुव स्व गौतमा य नम गौतम आवाहयामि । भोगौतम इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण ममसंमुख सुप्रसन्नो वरदोभव ॥ ३ ॥ ॐ अत्रये नम अत्रिं आवाहयामि भो अत्रे इहागच्छ इहतिष्ठपूजागृहाण ममसंमुख सुप्रसो वरदो भव ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुव स्व जमदग्नय नम जमदग्नि आवाहयामि भो जमदग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ पूजागृहाण ममसमुख सुप्रसन्ना वरदोभव ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुव स्व वसिष्ठ इहागच्छ इहतिष्ठपूजागृहाण मम संमुख सुप्रसन्नो वरदोभव ॥ ० ॥ ॐ भूर्भुव स्व विश्वामित्र नम आवा हयामि । भो विश्वामित्र इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुख सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुव अरुन्धत्यै नम अरुन्धत्यै नम अरुन्धती मावाहयामि भो अरुन्धति । इहागच्छ इहतिष्ठ पूजा गृहाण मम संमुख सुप्रसन्ना वरदाभव ॥ ८ ॥ ॐ भूर्भुव स्व याज्ञवल्क्याय नम याज्ञवल्क्य मावा हयामि । भोयाज्ञवल्क्य इहागच्छ इहतिष्ठ पूजागृहाण मम समुख सुप्रसन्नोवरदो भव ॥ ६ ॥ ॐ इमा वेव गौतम भरद्वाजा वयमेव-

गौतमोऽयंभारद्वाजऽइमावेव विश्वामित्र जमदग्नीऽअयमेव विश्वामित्रो-ऽयं जमदग्निरिमा वेव वसिष्ठ कश्यपा वयमेव वसिष्ठोऽयं कश्यपो वागेयात्रि र्वाचग्हन्न मद्यतेतिर्हवै नामैतद्यदत्रिरिति सर्वस्याता भवति सर्वस्यान्नभवति यऽएवं वेद ॥ ४ ॥ सङ्कल्पः—अद्येत्यादि शुभपुण्य तिथौ ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं उत्सर्जनाङ्गत्वेन अरुन्धती सहित कश्यपादि सप्तर्षिस्व ऋषि पूजन महं करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं महागणपति पूजनं स्मरणं वा करिष्ये । [एवं गणपतिपूजां स्मरणं वा कृत्वा ऋषीन्ध्या-येत्] ॥ ध्यानम्—ॐ सप्तऽऋषयः प्रतिहिताःऽशरीरं सप्त रक्षन्ति सद् मप्रमादम् । सप्तापःऽस्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽअस्वप्नजौसत्र सदौ चदेवौ ॥ ३ ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ मस्यपा छ सुरेस्वाहा ॥ ४ ॥ सहस्रशी० ॥ ५ ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः अरुन्-धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः ध्यान पूर्वक मा वाहनं समर्पयामि ॥ आसनम्—सुवर्ण घटित दिव्यं नाना रत्न समन्वितम् । आसनं रुचिरं यत्र गृह्यतांभो मुनीश्वराः ॐ पुरुष ए० ॥ ६ ॥ ॐ भू-र्भुवः स्वः अरुन्धती सहित काश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नमः आसनं समर्पयामि ॥ पाद्यम्—गङ्गाजलं समानीतं गन्ध द्रव्येण संयुतम् । पाद्यार्थं प्रति गृह्णन्तु कश्यपाद्या महर्षयः [१]—ॐ एतावानस्य० । ७ ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः पाद्यं सम-र्पयामि ॥ अर्घ्यम्—सुवर्ण पात्र संयुक्तं गन्ध पुष्पाक्षतैर्युतम् । सप्तर्षयः प्रगृह्णन्तु इद मर्घ्यं मयार्पितम् ॥ ॐ त्रिपादू० ॥ ८ ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ आच-मनम्—कर्पूर वासितं तोयं सुवर्ण कलशेस्थितम् । दत्तमाचमनीयं च ऋषिणां प्रीतये सदा । —ॐ ततो वि० ॥ ९ ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः अरु-न्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ स्नानम्—सुगन्ध द्रव्य संयुक्तं पवित्रं मङ्गलं जलम् । स्नानार्थं वः समानीतं मुनयः प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ तस्मा द्यज्ञात्सर्व० । १० ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः स्नानं समर्पयामि ॥ अथ पञ्च—पञ्चामृतस्नानम्—पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् । पञ्चामृत मयानीत स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्:—ॐ पञ्चनद्यस० ॥ ११ ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ॥ गन्धोदकस्नानम्—ॐ गन्ध द्वारा दु० ॥ १२ ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नमः गन्ध स्नानं समर्पयामि:—पूर्वपूजां समाप्य । पुरुष सूक्ते

नाभिषेकं कुर्यात् ॥ ॐ सहस्रशी० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिसप्त ऋषिभ्यो नमः महाभिषेक स्नानं समर्पयामि ॥ इति चोप कम् ॥ वस्त्रम्—सूक्ष्मास्य तीन शुभ्राणि वस्त्राणि विविधानि च । ऋषयः प्रति गृह्णन्तु उष्ण शीत निवारणो ।] ॐ वस्मात्ता० ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिसप्त ऋषिभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतम्

यज्ञोपवीतम्—नानामन्त्रै समुद्भूत त्रिवृत्त ब्रह्मसूत्रकम् । प्रत्येकं दीयते स्वच्छ ऋषयः प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ तस्मा दश्वा० ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिसप्तऋषिभ्यो नमः यज्ञोपवीतइतिसमर्पयामि ॥ गन्धम्—आत्मसन्तापहार च सुगन्ध द्रव्य संयुतम् । चन्दनं समर्पयामि ऋषीणामीतिहेतवे ॥ ॐ तस्यज्ञ० ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिसप्त ऋषिभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि ॥ अक्षतेपम्—अक्षता शुभ्र तन्दुल जा शुक्ला शङ्ख शुभ्रा मनोरमा । अक्षतान्सम्प्रयच्छामि गृह्णन्तु मुनि पुङ्गवाः । ॐ अक्षन्नमी० ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिसप्त ऋषिभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि हरिद्रा—हरिद्राकुङ्कुम चैव कज्जलभूषणानि च ॥ कङ्कण कण्ठ सूत्र च गृहाण परमेश्वरि ॥ ॐ अहिरिव० ॥ १० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धतीसहित कश्यपादिसप्त ऋषिभ्यो नमः हरिद्रा कुङ्कुमादि द्रव्याणि समर्पयामि ॥ इति चोपकम् ॥ पुष्पाणि (तुलसीदल—बिल्वपत्र—कमलानि च ऋषिभ्यो विशेषत) माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि सत्तमा । मयार्पितानि पुष्पाणि गृह्णन्तु मुनिपुङ्गवा ॥—ॐ यत्पुरु० ॥ १८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि ऋषिभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवपुष्पाणि समर्पयामि । धूपम्—कृष्णागुरुसमुद्भूतो धूपोऽयं च मशाङ्कं । सुगन्ध कश्यपादिभ्य ऋषीभ्यो दीयतेऽधुना ॥ ॐ ब्राह्म० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिसप्त ऋषिभ्यो नमः धूपं दर्शयामि ॥ दीपम्—पञ्च वर्ति समायुक्त सर्व मङ्गल शोभन । ममानिरुद्धिो भक्त्या दीपोऽयंप्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ चन्द्रमा म० ॥ २० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिसप्त ऋषिभ्यो नमः दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्—फलमूल समायुक्त नाना शाक समन्वितम् । शर्कराघृत संयुक्त नैवेद्य प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ नाभ्याऽआ० ॥ २१ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपादिसप्त ऋषिभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि ॥ नैवेद्य मध्ये पानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशनं हस्त प्रक्षालनं मुख प्रक्षालनं करोद्वर्तनार्थे चन्दनं च समर्पयामि ॥

(अथ क्षेपकम्—फलम्—नारिकेलं कूष्माण्डंच कदली कर्कटी फलम्। ऋतुकालोद्भवं चान्यद्दीयतेऽद्य मुनीश्वराः। १। ॐ याः फलि० ॥ २२ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धतीसहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः फलानि समर्पयामि ॥ इति क्षेपकम् ॥ ताम्बूलम्—पूगी फलं ■ कर्पूरं नाग वल्ली दलैर्युतम् ॥ एला लवङ्ग संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ— यत्पुरुषे० ॥ २३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नमः ताम्बूलंसमर्पयामि ॥ अथ क्षेपकम्—दक्षिणा' हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। अनन्त पुण्य फलद मतः शान्तिप्रयच्छमे ॥ ॐहिरण्य गर्भः० ॥ २४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः— अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥ कर्पूरार्त्तिक्यम्'—अक्षिष्टा ब्रह्मरूपाश्च कश्यपाद्या महर्षयः। ब्रह्म यज्ञादि दातारः सन्तु मे कीर्ति कर्मणि ॥ ॐ इदंँहि० ॥ २५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नमः कर्पूरार्त्तिक्यं दर्शयामि ॥ इति क्षेपकम् ॥ प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥ ॐ सप्तास्यास्या० ॥ २६ ॥ ओं भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारः—शरणागत दीनार्थ परि त्राण परायणाः। रक्षन्तु मुनय सर्वे मामद्य शरणागतम्। सप्तर्षयः शुभाः श्रेष्ठा सर्वेषां च शुभ प्रदाः। पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृह्णन्तु मुनिसत्तमाः ॥—ॐ यज्ञेन यज्ञ० ॥ २७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नमः मन्त्र पुष्प युक्तं नमस्कारं समर्पयामि ॥ प्रार्थना'—मन्त्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीन मुनीश्वराः। यत्पूजितं मया सर्वं परि पूर्णं तदस्तुमे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्वऋषिभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि ॥ अर्पणम्—अनेनमया वेदोत्सर्जनाङ्गत्वेन कृतेन ध्याना वाहनादिषोडशोपचारादि पूजनेन अरुन्धती सहित कश्यपादि सप्तर्षिस्व ऋषयः प्रीयन्तां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति ऋषि पूजनम् ॥ ततः स्व'पितृभ्यो यज्ञोपवीत दानम्—अमुक गोत्रेभ्यः अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः। तथा द्वितीयं अमुक गोत्रेभ्यः अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः। तृतीयं—कव्यवाड नलादि

(१) प्राचीनावीति दक्षिणाभिमुखः सर्वे कुशोदकं गृहीत्वापुरतोयज्ञोपवीतानि निधाय ॥

दिव्यपितृभ्य इमानि यज्ञोपवीतानित्वया सम्पद्यन्ताम् इति स्रुच्यपरि समर्पयेत् ॥ [जीवित्पितृ के रपि पितु पितादिभ्यो मातामहादिभ्यश्च यज्ञोपवीतानि देयानि ॥] तत सभ्य कृत्वा सर्वान्ब्राह्मणान् । गन्धादिना सम्पूज्य तेभ्यो यज्ञोपवीतानि दत्त्वा पश्चात् सर्वे स्वय मपिधार्याणि ॥ यज्ञो पवीत धारण प्रयोग[1]—आचम्य प्राणानायम्य ॥ सङ्कल्प, अद्येत्यादि मम श्रौत स्मार्त कर्मानुष्ठान सिद्ध्यर्थं तथाच अमुक कर्माङ्गत्वेन यज्ञो पवीतधारण मह करिष्ये । सूत्र त्रिगुणी करणम्—इद विष्णुरिति मेधातिथिरृषि । विष्णुर्देवता । गायत्री छन्द सूत्र त्रिगुणी करणे विनियोग —ॐ इद विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ मस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा ॥१॥

प्रक्षालनम्—आपोहिष्ठेतिसिन्धुद्वीप ऋषि । आपो देवता । गायत्री छन्द । यज्ञोपवीत प्रक्षालने विनियोग —ॐ आपोहिष्ठा मयो भुव स्तानऽऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे ॥२॥ यो व —शिव तमो रस स्तस्यभाजयतेह न —उशतीरिवमातर ॥ ३ ॥ तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा चनऽ ॥४॥ ततो यज्ञो पवीतानि प्रक्षाल्य नवतं दशगायत्री मन्त्रेरभि मन्त्र्य ॥ तन्तु देवतानामा वाहनम्—प्रणवस्य । ब्रह्मा ऋषि परमात्मा देवता । गायत्री छन्द प्रथम तन्तौ ॐ कारा वाहने विनियोग । ॐ प्रथम तन्तौ ॐ कार मावाहयामि । अग्निन्दूतमिति मेधा तिथि ऋषि । अग्नि देवता । गायत्री छन्द । द्वितीय तन्तौ अग्न्यावाहने विनियोग —ॐ अग्नि न्दूतम्पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे । देवा २ ꣳ ऽ आसा दयादिह ॥ ५ ॥ द्वितीय तन्तौ अग्निमावाहयामि । नमोस्तु सर्पेभ्य इत्यस्य प्रजापति ऋषि सर्पा देवता । अनुष्टुप् छन्द । तृतीय तन्तौ सर्पा वाहने विनियोग —ॐ नमोस्तु । सर्पेभ्यो येकच पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे येदिवि तेभ्य—सर्पेभ्यो नम — ॥ ६ ॥ तृतीय तन्तौ सर्पाना वाहयामि । वय ꣳ सोमेत्यस्य बन्धु ऋषि सोमो देवता । गायत्री छन्द । चतुर्थ तन्तौ सोमा वाहने विनियोग —ॐ वय सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत । प्रजावन्तऽ सचेमहि ॥७॥ चतुर्थ तन्तौ सोममावाहयामि ॥ उदीरतामित्यस्य शङ्ख ऋषि । पितरो देवता । त्रिष्टुप छन्द पञ्चम तन्तौ पित्रा वाहने विनियोग —ॐ उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमा ऽ पितर—सोम्यास— । असु यऽ ईयुर वृकाऽऋतज्ञा स्तेनो वन्तु पितरो हवेषु ॥ ८ ॥ पञ्चम तन्तौ पित्रा नावाहयामि ॥ प्रजापतेरित्यस्य हिरण्यगर्भ ऋषि । प्रजापतिर्देवता ।

---

(१) अथ पूजा प्रयोग् यज्ञोपवम् ।

त्रिष्टप् छन्दः। षष्ट तन्वौ प्रजापत्या वाहने विनियोगः—ॐ प्रजाप तेन। त्वदेता न्यन्न्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव। यस्कामास्ते जुह्व- मस्तन्नोऽअस्तु वयं थं स्याम पतयोरयीणाम्॥ ६॥ षष्ठतन्वौ प्रजापतये- नमः प्रजापतिमा वाहयामि आनो नियुद्भिरित्यस्य। वसिष्टऋषि। अनिलो देवता त्रिष्टप् छन्दः। सप्तम तन्वौ अनिला वाहने विनियोगः। ॐ आनो नियुद्भिः शतीनोभिरद्वर ■ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्॥ व्वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदान ऽः ॥ १०॥ सप्तम तन्वौ अनिलाय नमः अनिल मावाहयामि॥ सुगाव इत्यस्यात्रिऋषिः। गृह पतयो. देवता। आर्षी त्रिष्टप् छन्दः॥ अष्टमं तन्वौयमा वाहने विनियोगः—ॐ सुगावो देवाः सदनाऽ अकर्म्मयऽआजग्मेदथसवनञ्जुषाणाऽ। भरमाणा वहमाना हवी थव्य- स्मेधत्त वसवो वसूनि स्वाहा॥ १॥ अष्टम तन्वौयमाय नमः यममावा हयामि॥ विश्वेदेवासऽआगत इत्यस्यामधु छन्दा ऋषिः। विश्वेदेवा देवता। त्रिष्टुप्छन्दः। नवम तन्वौ विश्वेषां देवानामा वाहने विनि- योगः—ॐ विश्वेदेवासऽआगत शृणुतामऽइमथ हवम्। एदम्बर्हिर्नि॰ षीदत॥ १२॥ नवम तन्वो विश्वेदेवेभ्यो नमः विश्वान्देवा ना वाहयामि॥ यज्ञो पवीत ग्रन्थि देवताऽयाहनम्—ब्रह्मजज्ञान मित्यस्य। प्रजापतिऋषिः। ब्रह्मा देवता गायत्री छन्दः। ग्रन्थि मध्ये ब्रह्मा वाहने विनियोग॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथम स्पुरस्ता द्विसीमतःऽ सुरुचोव्वेनऽ- आवऽ सबुद्धन्याऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाऽ सतश्च योनिमसतश्च व्विवः। १३॥ इद विष्णुरित्यस्यमेधा तिथिऋषिः। विष्णुर्देवता। गायत्री छन्द। ग्रन्थि मध्ये विष्णवा वाहने विनियोगः—ॐ इदंविष्णु॰ ॥ १४॥ त्र्यम्बक मित्यस्य। वसिष्ट ऋषिः रुद्रो देवता। विराट् आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः। ग्रन्थि मध्येरुद्रा वाहने विनियोग.—ॐ त्र्य- म्बकं॰ ॥ १५॥ यज्ञोपवीत ग्रन्थि देवताभ्यो नमः—ग्रन्थि देवता आवा हयामि॥ प्रणवाद्या वाहित देवताभ्यो नमः यथास्थानमहं न्यसामि॥ मानसो पचारैः सम्पूज्य। अथ ध्यानम्—प्रजापतेर्यत्सहज पवित्र कार्पास सूत्रोद्भव मद्य सूत्रम्। ब्रह्मत्व सिद्ध्यै च यशः प्रकाश जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्म सूत्रम्॥ ॐ युवा सुवासा परिवीत ऽआगात्सऽउश्रेया- न्भवति जायमानः। तन्धीरास. कवय उन्नयन्ति स्वाध्या मनसा देव- यन्त.। यज्ञोपवीत धारणम्—यज्ञोपवीत मिति मन्त्रस्य। परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। यज्ञोपवीत धारणे विनि योग—ॐ यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात्। आयुष्य मग्र्यम्प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतम्बल मस्तु तेजः यज्ञोपवीत मसि यज्ञस्य त्वा यज्ञो-

पवीते नोपत स्यामि ॥ अनेन मन्त्रेण यज्ञोपवीतानां पृथक्-पृथक् धारणं कुर्यात्। प्रति यज्ञोपवीत धारण स्याचम्नयंनाचमम् धारणान्ते जीर्णसूत्र त्याग मन्त्र:'—एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम् ॥ इति मन्त्रेण जीर्णं यज्ञोपवीतं शिरो मार्गेण निःसार्य शुद्ध भूमौ त्यजेत ॥ पश्चा यथा शक्ति गायत्री मन्त्र जपं कुर्यात् ॥ अर्पणम्—अनेन नव यज्ञोपवीत धारणार्थे कृतेन यथा शक्ति गायत्री जप कर्मणा श्री सविता देवता प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सत्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ यस्य० ॥ इति यज्ञोपवीत धारण प्रयोग ॥

अथोत्सर्ग तर्पणम्

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य छन्दसां क्वचिदन ध्यायादि काले पठनादनधिकरिमिः प्रावग्र प्राप्त मालिन्यस्य निरासार्थं सुत्र्यार्थिाय तर्पणमहं करिष्ये इति सङ्कल्प्य । देवतर्पणम्[१] — ॐ विश्वेदेवासऽ आगत श्रृणुताम इम ऽ हवम् । एदम्बर्हि निषीदत ॥ २६ ॥ विश्वे देवाऽ शृणु तेम ऽ हवम्येऽअन्तरिक्षे यऽउपद्यव विष्ठ । ये अग्नि जिह्वाऽउतवा यजत्राःआसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ ३० ॥ इति मन्त्राभ्यां देवाना वाहा । ॐ देवास्तृप्यन्तु । छन्दा ऽ सि तृप्यन्तु । ॐ वेदास्तृप्यन्तु ॥ ॐ ऋषय स्तृप्यन्तु । ॐ पुराणा चार्या स्तृप्यताम् । ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् । ॐ इतर चार्यास्तृप्यताम् । [अथ क्षेपकम्—केचित्संवत्सरादयवाना पृथक्त्वेन तर्पयन्ति तद्यथा]– ॐ अहोरात्रा स्तृप्यन्ताम् । अर्धमासा स्तृप्यन्ताम् । ॐ मासास्तृप्यन्ताम । ॐ ऋतव स्तृप्यन्ताम । ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम् ॥ इति क्षेपकम् ॥] ॐ पितर स्तृप्यन्ताम् ॥ आचार्या स्तृप्यन्ताम् तत सव्यं जान्वाच्य दक्षिणासि मुखो ऽपसव्येन तिलमिश्रित जलमञ्जलीगृहीत्वाअमुक गोत्राःअस्मत्पितरः अमुकशर्माणो वसुरूपा स्तृप्यन्तस्वधानमः । अमुकगोत्राः अस्मत्पितामहाः अमुक शर्माणो रुद्ररूपा स्तृप्यन्त स्वधानमः ॥[अन्येतु आभि रद्भिः यदोग्ता मित्यादि मोक्त तर्पण विधिना शिष्यैरह्रहः क्रियमाणेन सर्वान् पितॄन् तर्पयन्ति।जीवत्पितृकैः पुत्रैशिष्यैस्त्वाचार्य पितृतर्पणंकार्यम्।तच—अमुकगोत्राः अस्मदा चार्यस्य पितरः अमुक शर्माण स्तृप्यन्त्वस्वधा । एवं आचार्यस्य पितामह प्रपितामहानां ज्ञेयम ॥]

---

(२) दक्षिण जान्वाच्येशानाभि मुखाः सव्येन प्रागग्रैर्दर्भैर्देवतीर्थेन देवाना मञ्जलि त्रयं दद्यात् ॥

ततः आचमनम्,—तूष्णीम् पश्चात् ॥

वंशानां ब्रुवणम्

अथ य ६ शाः समान मासाञ्जीवी पुत्रात्साञ्जीवी पुत्रो माण्डूकायने र्माण्डूक्यार्थानिर्माण्डव्या न्माण्डव्यः कौत्सात्कौत्सो माहित्ये र्माहित्थि-र्वामकक्षायणाद्वामकक्षायणो वात्स्याद्वात्स्यःऽशाण्डिल्या च्छाण्डिल्य-ऽःकुश्रेऽःकुश्रिर्यज्ञ वचसो राजस्तम्बायनाद्यज्ञ वचा राजस्तम्बायनस्तु रास्का-वपेयात्तुरऽः कावषेयऽःप्रजापतेऽः प्रजापतिर्ब्रह्मणोब्रह्मास्वयम्भु ब्रह्मणे नमऽः ।१।। वंशोक्ता ऋषय स्तृप्यन्ताम् । (एवं ऋष्युपरि उदकं क्षिपेत्) अथ वंश शस्तदिदं वय ६ शौर्पणाय्याच्छौर्पणाय्यो गौतमाद्गौत्तमो वात्स्यां द्वात्स्यो र्वात्स्याच्च पारा शर्य्याच्च पाराशर्य्यऽः साङ्कृत्याच्च भारद्वाजा-च्भारद्वाज ऽऔद्वा हेश्च शाण्डिल्याच्च शाण्डिल्यो वैजवाच्च गौतमाच्च गौतमो वैजवापायनाच्च वैष्ठ पुरे याच्च वैष्ट पुरेयऽः शाण्डिल्याच्च रौहिणायनाच्च रौहिणा यनऽःशौनका च्चात्रेयाच्च रैभ्या [illegible] रैभ्यऽः पौतिमाष्या-यणाच्चकौण्डिन्यायनाच्च कौण्डिन्यायनऽः कौण्डिन्यात्कौण्डिन्यः कौण्डि-न्यात्कौण्डिन्यः कौण्डिन्याच्चाग्नि वेश्याच्च ॥२॥ आग्नि वैश्यः सैतवात्-सैतवऽः पाराशर्य्यात्पाराशर्य्योजातुकर्ण्याज्जातू कर्ण्योभारद्वाजा द्भारद्वाजो-भारद्वाजःश्चा सुरायणाच्च गौतमाच्चगौतमोभारद्वाजा द्भारद्वाजोवैजवा पायना-द्वैजवा पायनऽः कौशिकायनेः कौशिकायनि र्घृतकौशिकाद्घृत कौशिकऽः पाराशर्य्यायणात्पाराशर्य्यायणऽः पाराशर्य्या त्पाराशर्य्यो जातुकर्ण्या जातु कर्ण्यो भारद्वाजा द्भारद्वाजो भारद्वाजाच्चा सुरायणच्च यास्काच्चा सुरायणस्त्रै-वणेस्त्रै वणि रोपजन्धने रौप जन्ध निरासुरेरासुरि र्भारद्वाजा द्भारद्वाजा आत्रे यात् ॥३॥ आत्रेयोमाण्टे र्माण्टिर्गौतमाद् गौतमो-गौतमा द्गौतमो र्वात्स्याद्वात्स्यः शाण्डिल्याच्छाण्डिल्यऽ कैशोर्य्यात्काप्यात्कैशोर्य्यऽःकाप्य-ऽकुमारहारितात्कुमारहारितोगालवाद्गालवोविदर्भी कौण्डिन्या द्विदर्भीकौण्डि-न्योवत्सन पातोबाभ्रवाद्वत्सन पाद्बाभ्रवऽः पथऽःसौभरात्पन्थाऽःसौभ-रोऽयास्यादाङ्गि रसादयास्यऽ आङ्गिरसऽआभूतेस्त्वाष्ट्रां दा भूतिस्त्वाष्ट्रो-र्विश्वरूपा त्त्वाष्ट्राद्विश्वरूपस्त्वाष्ट्रोऽश्विभ्यामश्विनोदधीचा थर्वणाद्दध्य-ङ्ङाथर्व्वणो दैवाद् थर्वा दैवोमृत्योऽःप्राध्व [illegible] सनान्मृत्युः प्राध्वंश सनात्प्राध्वंऽः ६ सनऽएकर्षेरेकर्षि र्विप्रजितेर्विप्रजिति र्व्यष्टे र्व्यष्टिऽः सनारो ऽःसनारु ऽः सनातनात्सनातनऽः सनगात्सनगऽः परमेष्टिनऽः परमेष्टी ब्रह्मणो ब्रह्मस्वयम्भु ब्रह्मणे नम ऽः ॥ ४ ॥ वंशोक्ताऽऋषयस्तृप्यन्ताम् अथव ६ शस्त दिदं वयशौर्पणाय्याच्छौर्पणा-

त्यो गौतमाद्गौतमोवात्स्याद्व त्स्योवात्स्यात्स्याच्च पाराशर्य्याच्च पाराशर्य्यं सांकृ
त्याच्च भारद्वाजाच्चभारद्वाजऽऔदवाहेश्चशाण्डिल्याच्च शाण्डिल्योवैजवापाच्च
गौतमाच्च गौतमो वैजवा पायनाच्च वैष्ठ पुरेयाच्च वैष्ठयऽ
शाण्डिल्याच्चरौहिणायनाच्च रौहिणायनऽ शौनकाच्चजैवन्तायनाच्च
रैभ्याच्चरैभ्यऽपौतिमाष्यायणाच्च कौण्डिन्यायनाच्चऽ कौण्डिन्यायनऽ
कौण्डिन्याभ्यां कौण्डिन्याऽ औणवाभेभ्यऽ औणवाभाऽ कौण्डिन्या
त्कौण्डिन्यऽ कौण्डिन्या त्कौण्डिन्यऽ कौण्डिन्याच्चाग्नि वेश्याच्च ॥ ५ ॥
आग्निवेश्यऽ सैतवा त्सैतवऽ पारा शर्य्या त्पाराशर्य्यो जातू कर्ण्याज्जातू
कर्ण्यो भारद्वाजाद्भार द्वाजोभारद्वाजाच्चासुरायणाच्च गौतमाच्च गौतमोभार
द्वाजाद्भारद्वाजो वलाका कौशिका द्वलाका कौशिकऽ काषायणात्कायणऽ
सौकरायणात्सौकरायणस्त्रै वणेस्त्रै वणिरौपजन्धनेरौप जन्धनिऽ सायकाय
नात्सायकायन ऽकौशिकायनेऽ कौशिकायनि र्घृत कौशिकाद्धृत कौशिकऽ
पाराशर्य्यायणा त्पाराशर्य्यायणऽ पाराशर्य्यात्पाराशर्य्यो जातू कर्ण्याज्जातू
कर्ण्यो भारद्वाजो भारद्वाजे भारद्वाजाच्चासुरायणाच्चयास्काच्चासुरायणस्त्रैवणे
स्त्रै वणिरौप जन्धन रौप जन्धनिरासुरेरासुरिभारद्वाजाद्भारद्वाजऽ आत्रे यात्
॥६॥आत्रेयाद्रात्रेयो माण्टेर्माण्टि गौतमा द्गौतमागौतमा द्गौतमो वात्स्याद्वा
त्स्यशाण्डिल्याच्छाण्डिल्यऽ कैशोर्य्यात्काप्या त्कैशोर्य्यऽ काप्यऽ कुमार
हारिताकुमार हारितोगालवा द्गालवाद्विदर्भी कौण्डिन्यो वत्सनपातो
बाभ्रवाद्वत्सन पाद्वाभ्रवऽ पथः सौभरात्पन्थाऽ सौभेरायास्याद्वाङ्गिरसा
द्यास्यऽआङ्गिरसऽ आभूतेस्त्वाष्ट्राद् भूतिस्त्वाष्ट्रोविश्वरूपा त्वाष्ट्राद्
विश्वरूपस्त्वाष्ट्रो विश्वम्यामश्विनो दधीचऽ आथर्वणाद्ध्यङ्ङाथर्वणो दैवाद
थर्वादैवाद्मृत्या प्राध्व ध्व सनान्मृत्यु प्राध्व ध्व सनात् प्राध्व सनऽ
एकर्षे रेकर्ष विप्रजित्ते विप्रजित्तिर्व्यष्टे र्व्यष्टि सनारोऽ सनारुऽ सनातना
त्सनातनऽ सनगात्सनगऽ परमेष्ठिनऽ परमेष्ठी ब्रह्मणो ब्रह्म स्वयम्भु
ब्रह्मणेनमऽ वशाकाऽ रूपयलृप्यन्वाम् ॥७॥ अथवंश शस्त दिद रयऽ भार
द्वाजापुत्रा भारद्वाजीपुत्रो वात्सीमाण्डवी पुत्रा द्वात्सीमाण्डवी पुत्रऽपारा
शरी पुत्रा पाराशरी पुत्रो गार्गी पुत्राद्गार्गी पुत्रऽ पाराशरी कौण्डिनी
पुत्रा त्पारा शरी कौण्डिनी पुत्रोगार्गी पुत्रा द्गार्गी पुत्रो वाडयी पुत्राद्वाडेयी
पुत्रा मौषिकी पुत्रा न्मौषिकिपुत्रो हारिकर्णी पुत्राद्धारि कर्णी पुत्रोभारद्वाजी
पुत्राऽद्भारद्वाजो पुत्रऽ पैङ्गी पुत्रात्पैङ्गी पुत्रऽ शौनकी पुत्राच्छौनकी पुत्रऽ
काश्यपी बाला क्या माठरी पुत्रा त्काश्यपी बालाक्यामाठरी पुत्रऽ
कौत्सी पुत्रा त्कौत्सी पुत्रो बौधी पुत्रा द्बौधीपुत्रऽ शालङ्कायनी पुत्राच्छा
लङ्कायनी पुत्रा वार्षगणी पुत्रा द्वार्षगणी पुत्रो गौतमी पुत्राद्गौतमीपुत्र
आत्रेयी पुत्रा दात्रेयी पुत्रो गौतमी पुत्राद्गौतमी पुत्र वात्सी पुत्रा द्वात्सी

पुत्रो भारद्वाजी पुत्राद्भारद्वाजी पुत्रऽः पाराशरी पुत्रा त्पाराशरी पुत्रोव्वार्का-रुणीपुत्राव्वार्कारुणी पुत्रऽआर्तभागी पुत्रादार्तभागीपुत्रऽःशौङ्गीपुत्राच्छौङ्गी पुत्रऽः साङ्कृती पुत्रात्साङ्कृतीपुत्रऽः ॥ ६ ॥ आलम्बी पुत्रादालम्बी-पुत्रऽआलम्बायनी पुत्रादालम्बायनी पुत्रो जायन्ती पुत्राज्जायन्ती पुत्रो-माण्डूकायनी पुत्रान्माण्डूकायनी पुत्रो माण्डकीपुत्रान्माण्डकी पुत्रऽः शाण्डिलीपुत्राच्छाण्डिलीपुत्रो राथीतरी पुत्राद्राथी तरीपुत्रऽःक्रौञ्चिकी पुत्राभ्यां क्रौञ्चिकी पुत्रोवैदभृती पुत्रा द्वैदभृतीपुत्रो भालुकी पुत्राद्भालुकी पुत्र ऽः प्राचीन योगी पुत्रा त्प्राचीन योगीपुत्रऽः साञ्जीवी पुत्रात्साञ्जीवी पुत्रऽः कार्शकेयी पुत्रात्कार्शकेयी पुत्र ॥ १० ॥ प्राश्नी पुत्रा दासुरि वासिनः । प्राश्नीपुत्रऽआसुरायणा दासुरायणऽ आसुरेरासुरिर्य्याज्ञ वल्क्याद्याज्ञ वल्क्यऽउद्दालकादुद्दालको रुणादरुणऽउपवेशेरुपवेशिरिः कुश्रेऽः कुश्रिर्व्वाजश्रवसोव्वाजश्रवसोव्वाज-श्रवाज्जिह्वा वतोबाध्योगाज्जिह्वावा न्वाध्योगोसिताद्वार्षगणाद् सितोव्वा र्षगणो हारितात्कश्यपाद्धरितऽः कश्यपऽः शिल्पा त्कश्यपा च्छिल्पऽः कश्यपऽ कश्यपान्नैध्रुवेः कश्यपोनैध्रुविर्व्वाचो वागम्भि-ण्याऽ अम्भिण्यादित्यादा दित्यानीमानि शुक्लानियजु ध्ंषि वाज वल्केयना ख्यायन्ते ॥ ११ ॥ वंशोक्ताऽऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ ॐ तत्सवितु-रिति चतुर्वारं गायत्री पठेत् ॥ इति प्रति वंश वंशोक्ता नामृषीणां तर्पणम् । ततः तत्स वितुर्व० साविश्याश्चतु. कृत्वाऽनुप्र वरणम् । सर्वेषांवदन्ते ॐ विरताः स्म इतिसकृदुच्चैर्ब्रू यात ॥ अध्यायाः—इषेत्वा ॥ १ । कृष्णोसि ॥ २ ॥ समिधाग्निम् ॥ ३ ॥ एदम् ॥ ४ ॥ अग्ने-स्तनूऽः ॥ ५ ॥ देवस्यत्वा ॥ ६ ॥ व्वाचस्पतये ॥ ७ । उपयाम गृहीतोसि ॥ ८ ॥ देवसवितः ॥ ९ ॥ अपो देवा ऽः ॥ १० ॥ युञ्जान ऽः प्रथमम ॥ ११ ॥ दृशानो रुक्म ऽः ॥ १२ ॥ मयि गृह्णामि ॥ १३ ॥ ध्रु वक्षितिध्रु वयोनि ऽः ॥ १४ ॥ अग्ने जातान् ॥ १५ ॥ नमस्ते ॥ १६ ॥ अश्मन्नूर्ज्जम् ॥ १७ ॥ व्वाजश्च ॥ १८ ॥ स्वाद्वीन्त्वां ॥ १९ ॥ क्षत्रस्ययोनि ॥ २० ॥ इमम्मे ॥ २१ ॥ तेजोसि ॥ २२ ॥ हिरण्य गर्ब्भ ऽः सम् ॥ २३ ॥ अश्वस्तूपर ऽः ॥ २४ ॥ शादन्दद्भि ऽ ॥ २५ ॥ अग्निश्च ॥ २६ ॥ समास्त्वा ॥ २७ ॥ होता यक्षत् ॥ २८ ॥ समिद्धोऽ अञ्जन् ॥ २९ ॥ देवसवित ऽः ॥ ३० ॥ सहस्र शीर्षा पुरुष ऽः ॥ ३१ ॥ तदेव ॥ ३२ ॥ अस्या जरासः ॥ ३३ ॥ यज्जाग्रतः ऽः ॥ ३४ ॥ अपेत ऽः ॥ ३५ ॥ ऋच वाचम् ॥ ३६ ॥ देव-स्यवा ॥ ३७ ॥ देवस्य ॥ ३८ ॥ स्वाहा प्राणेभ्य ॥ ३९ ॥

ईशावास्यम् ॥ ४० ॥ ॐ हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम्मुखम् योसा वादित्ये पुरुष ऽः सोसावहम् ॥ ॐ खम् ॥ खम्ब्रह्म । अध्यायोक्ता अपयन्तृप्यन्ताम् ॥ अथकाण्डिकाः—अतमुपैष्यन् ॥ १ ॥ सर्वे कपालान्ये वान्यत्रऽउपद्यावि ॥ २ ॥ सर्वं स्त्रुच ऽः संमार्ष्टि ॥ ३ ॥ द्विरू कृत्या अवाह ॥ ४ ॥ सर्वं प्रवराया आनयति ॥ ५ ॥ अतनोद्ध्वे देवेपुयज्ञे भागमीषिरे ॥ ६ ॥ सर्वंपर्णशाखया वत्सानपा करोति ॥ ७ ॥ मनवे हवै प्रात ऽ. ॥ ८ ॥ सयन्नाह ॥ ९ ॥ स सयद्रा इत स्वेतस्य सम्मर्शति ॥ १० ॥ उद्धृत्या हवनीयम्पूर्णाहुतिं जुहोति ॥ ११ ॥ सूर्योहवाऽ अग्नि होत्रम् ॥ १२ ॥ अथ हुतेग्नि होत्रमुपतिष्ठते ॥ १३ ॥ प्रजापतिर्देवा इद मग्रऽएकऽएवास ॥ १४ ॥ पितामहा हविषा हवै देवा व्यूत्रजघ्नु ऽः ॥ १५ ॥ देवयजनं योषयन्ते ॥ १६ ॥ दक्षिणेना हवनीयं प्राचीन ग्रीवे कृष्णाजिनेऽउपस्तृणाति ॥ १७ ॥ सप्तपदान्यनुनि क्रामति ॥ १८ ॥ शिरो वै यज्ञस्यातिथ्य वाहु प्रायणियोदयनीयौ ॥ १९ ॥ तद्य ऽएव पूर्वार्ध्योक्षपिंडर्दयूपाजो भवति ॥ २० ॥ उदरमे वास्यसदऽः ॥ २१ ॥ अग्निमादत्ते ॥ २२ ॥ तदग्रे वत्सवृतो होता होतृषदन ऽउपविशति ॥ २३ ॥ प्रजा पतिर्वैप्रजा ऽ॰ मसृजानो रिरिचानऽइवामन्यत ॥ २४ ॥ प्राणो हवाऽ अस्योपा ध्रु शु ऽ. ॥ २५ ॥ चक्षुर्हवाऽअस्य शुक्रा मन्थिनौ ॥ २६ ॥ अवस्थिता समुप हूता ऽ. स्मऽइत्युक्त्वोत्तिष्ठति ॥ २७ ॥ मनोहवाऽअस्यसविता ॥ २८ ॥ आदित्येन चरुणोदय नीयेन प्रचरति ॥ २९ ॥ प्रजापतिर्वाऽएष यद ध्रु शु ऽः ॥ ३० ॥ देवाश्च वाऽअसुराश्च ॥ ३१ ॥ अथस्य वस्वाज्यविलापिनीं चाह्य ॥ ३२ ॥ अरण्योरग्नीं समारोह्य ॥ ३३ ॥ केशावत्य पुरुषस्य ॥ ३४ ॥ आग्नेयो ष्टा कपाल ऽः पुरोडाशो भवति ॥ ३५ ॥ असद्वाऽइदमग्रऽआसीत् ॥ ३६ ॥ प्रजापति परमिस्थानवध्यात् ॥ ३७ ॥ एतद्वै देवा ऽ अत्र जन् ॥ ३८ ॥ अथेनमव ऽ यन त्येव ॥ ३९ ॥ यायुरपाय निष्क्रम्य ऽस्ताऽआपो भजन्ति ॥ ४० ॥ भूया ध्र सिकतो ध्र विन्दन्ति ॥ ४१ ॥ कस्मभ्यति पुष्पर्भिर्भिन ॥ ४२ ॥ ध्वनी नाभे वाग्नि निधयित्वाहु ऽ ॥ ४३ ॥ गार्हपत्य चेष्यन्पलाश शाखया व्युदूहति ॥ ४४ ॥ अथातो नैर्ऋतोर्हरन्ति चितौगार्हपत्योभवति ॥ ४६ ॥ आसन्नमग्नि गृहीत्वेष्यन् ॥ ४७ ॥ कूर्ममुपदधाति ॥ ४८ ॥ प्राणभृत ऽउपदधाति ॥ ४९ ॥ द्वितीयांचितिमुपदधाति ॥ ५० ॥ तृतीयाचिति मुपदधाति

। ५१ ॥ चतुर्थीचितिमुपदधाति ॥ ५२ ॥ पञ्चमीं चितिमुपदधाति ॥ ५३ ॥ नाकसदऽउपदधाति ॥ ५४ ॥ अतव्याऽउपदधाति ॥ ५५ ॥ अथातःशतरुद्रियं जुहोति ॥५६॥ उपवसथीये हन् प्रात रुदितऽआदित्ये । ५७ ॥ अथातो वैश्वानरं जुहोति ॥ ५८ ॥ अथातो राष्ट्र भृतो जुहोति ॥ ५९ ॥ अथातः पयोव्रत तायै ॥ ६० ॥ अग्निरेष पुरस्ता चीयते । ६१ ॥ प्रजापतिःस्वर्ग लोक मजिगा ४ सत् ॥ ६२ ॥ प्राणो गायत्री ॥ ६३ ॥ प्रजापतिंविस्रस्तम् ॥ ६४ ॥ तस्य वाऽएतस्याऽग्नेः ॥ ६५ ॥ हेतेष्टके ॥ ६६ ॥ सम्वत्सरो वै यज्ञः प्रजापतिः ॥ ६७ ॥ त्रिर्ह वै पुरुषो जायते ॥ ६८ ॥ वाग्घवाऽएतस्याग्नि होत्रस्याग्नि होत्री ॥ ६९ ॥ उद्दालको हारुणिः ॥ ७० ॥ उर्वशी हाप्सराः ॥ ७१ भृगुर्ह वै वारुणिः ॥७२॥ पशु बन्धेन यजते ॥ ७३ ॥ तदथा हवै ॥ ७४ ॥ अयंवै यज्ञोयोयं पवते ॥ ७५ ॥ समुद्रं वाऽएते प्रचरन्ति ॥ ७६ ॥ यद्वा लोके ॥ ७७ ॥ दीर्घसत्र ४ हवाऽएतऽउपयन्ति ॥ ७८ ॥ तदाहुर्य देवदीर्घ सत्री ॥ ७९ ॥ सोमो वै राजायज्ञः प्रजापतिः ॥ ८० ॥ विश्व रूपं वे त्वाष्ट्रं मिन्द्रोऽहन् ॥ ८१ ॥ इन्द्रस्य वै यत्र ॥ ८२ । एतस्माद्वै यज्ञात्पुरुषो जायते ॥ ८३ ॥ ब्रह्मो दनं पचति ॥ ८४ ॥ प्रजापतिर्देवेभ्योयज्ञान्व्यादिशत् ॥ ८५ ॥ प्रजापते रश्वस्यवत् ॥ ८६ । प्रजापति रकामत् ॥ ८७ । अथ प्रातर्गीतमस्य ॥ ८८ ॥ पुरुषोह नारायणोऽकामयतः ॥ ८९ ॥ ब्रह्म वैस्वम्भु तपोऽतप्यत ॥ ९० । अथास्मै श्मशानं कुर्वन्त्यर्थीः शान्तिः ॥ ९१ ॥ देवा हवै सत्रंनुपेदुः ॥ ९२ ॥अथातो रौहिणौ जुहोति ॥ ९३ ॥ सर्वं तृतीये हन् ॥ ९४ ॥ द्वया ह प्राजा पत्याः ॥ ९५ ॥ हृप्त वाला कि र्हानू चानोगार्ग्यआस ॥ ९६ ॥ जनकोहवैदेहः ॥ ९७ ॥ जनक ऽ ह-वैदेहं याज्ञवल्क्यो जगाम ॥ ९८ ॥ पूर्णमदः पूर्णमिदम् । ९९ ॥ श्वेत केतुर्हवाऽआरुणेयः ॥ १०० ॥ प्राश्नीपुत्रा दासुरि वासिनः । चतुर्दश-काण्डेऽध्यायोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ अथ शतस्थानानि—ॐ इषेत्वा ॥ १ ॥ परिते ॥ २ ॥ अग्नेनयं ॥ ३ ॥ वयाम गृहीतोसि सुशर्मासि ॥ ४ ॥ [प्रथमा] सोमस्यत्विषि- ॥५॥ परस्याऽअधि ॥ ६ ॥ अन्यावःˆ ॥ ७ ॥ राज्यसि ॥ ८ ॥ नमोहिरण्य बाहवे ॥ ९ ॥ इन्द्र मम ॥ १० ॥ इनीते ॥ ११ ॥ अन्नांतपरिस्रुतःˆ ॥ १२ ॥ अश्विना तेजसा ॥ १३ । पृथिव्यै स्वाहा । १४ । प्रजापतये च ॥ १५ ॥ तेऽग्रस्य ॥ १६ ॥ वसून पात्वयः ॥ १७ ॥ अयमिह ॥ १८ ॥ भतुनः ॥ १९ ॥ इयत्यग्रे ॥ २० ॥ ([शेषं प० सप्ततिः] ॥ हिरण्मयेन पात्रेण ॥ ॐस्वस्ति ॥ शतोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ व्रतमुपैष्यन ॥ १ ॥ तद्धदेवं पिनष्टि ॥ २ ॥ अथा-ज्यलिप्ताभ्यां पवित्राभ्याम् ॥ ३ ॥ वृहच्छोचायविष्टेन ति ॥४॥ यमूनां

तानि यदा गृह्णाति ॥ ७३ ॥ योगनौतिप्रुन् ॥ ७४ ॥ कतमऽआत्मेति ॥ ७५ । अथ हैनं मनुष्याऽऊचु-॥७६॥अथ यामिच्छेद्गर्भन्दधीतेति॥७७॥ सप्त सहस्र पञ्शत शेष चतुर्विंश शति ॥ ७८ ॥ प्राश्नीपुत्रा दासुरि नासिनः । ७६ ॥ चतुर्दश काण्ड शतोक्ता अत्रयस्तृप्यन्ताम् ॥ अथ 'प्रपाठका'—व्रत मुपैष्यन् ॥ १ ॥ चतुर्धाविहितो हवाऽअग्रेनिरास ॥ २ ॥ तेनाऽआर्द्राऽस्युऽ ॥ ३ ॥ स स्रुचोत्तरा माघारयिष्यन् ॥ ४ ॥ यज्ञेन देवाऽ । यज्ञेन वै देवा दिवम पोदक्रामन् ॥ ६ । स वैस्रु चोव्यूहति ॥ ७ ॥ स यत्राऽइन् स्तेवरचसम्भरति ॥ ८ ॥ वरुणो हैनद्राज्य कामऽमादधे ॥ ६ ॥ यत्र वै प्रजापति ऽ प्रजाऽसस्रुजे ॥ ० ॥ प्रजा-पतिर्वाऽएते नाग्ने वर्त्तेने जे ॥ ११ ॥ महा हविषा ह वै देवा वृत्र जघ्नुऽ ॥ १२ ॥ देवयजन योप तन्ते ॥ १३ ॥ वाचयच्छति ॥ १४ ॥ नाडे कृष्णा जिन मास्तृणाति १५ ॥ नद्यऽएषपूर्वेर्यो वपिप्र स्थुणा रानो भवित ॥ १६ ॥ विजामानो हैवास्यधिष्ण्याऽ ॥ १७ ॥ पाश कृत्वाप्रतिमुञ्चति ॥ १८ ॥ सोत्यप य जति ॥ १६ ॥ प्राणोप्रसे हवा अस्योशु ॥ पा २० ॥ आत्मा हवाऽअस्यामयवाऽ ॥ २१ घ्नन्तिवाऽ० तवक्षम् ॥ २२ ॥ सवाऽअवभृथुमभ्य वैति ॥ २३ ॥ तद्यत्रै तद्वादशाहेन व्यूढ श्छन्द सायजते ॥ २४ ॥देवाश्चवाऽमसुराश्च । २५॥ न ह स्मैवन चरणा प्रचरति ॥ २६ ॥ सवाऽअपऽ सम्भरति ॥ २७ ॥ मैत्रावरुण्या पयस्य या प्रचरति ॥ २८ ॥ असद्वाऽइदमग्रऽआसीत ॥ २६ ॥ प्राजा-पत्यश्च पशून्वाऽआलभन्ते ॥ ३० ॥ प्रदीप्ताश्पतेग्नयो भवन्ति ॥ ३१ ॥ नस्याऽएतस्याऽआषाढा पूर्वा करोति ॥ ३२ ॥ रुक्म प्रति मुच्यनिभति ॥ ३३ ॥ गार्हपत्यञ्चेष्यन् पलाश शाखाना व्युदू हति ॥ ३४ ॥ अथ दर्भस्तम्भ मुपदधाति ॥ ३५ ॥ आत्मन्नग्निं गृह्णीतचेष्यन् ॥ ३६ ॥ कूर्म मुप दधाति ॥ ३७ प्राणभृतऽउपदधाति ॥ ३८ ॥ अथ विश्व ज्योतिषमुप दधाति ॥३६ ॥ अथा तोन्वा वृत्तम् ॥ ४० ॥ गार्हपत्यमुप दधाति ॥ ४१ ॥ अथातः शतरुद्रिय जुहोति ॥ ४२ ॥ प्रत्ये त्यग्निं मह रिष्यन् ॥ ४३ ॥ अथ कान्यद्य च्छ्नु जुहोति ॥ ४३ ॥ अथ प्रातः माव स्तुनाग मुपा करिष्यन् ॥ ४५ ॥ अग्निरेष पुरस्ता चीयते ॥ ४६ ॥ अथा तश्च यन स्येव ॥ ४७ ॥ सम्वत्सरोवै प्रजापतिरग्निः ॥ ४८ ॥ नेवनाऽइदमग्रे सदासीन्नेव सदासीत् । ४६ ॥ संवत्सरोवै यज्ञः प्रजापतिः ॥ ५० ॥ अपिवाऽस्यहि ॥ ५१ ॥ प्रजापतिर्वै प्रजाऽसृजमानोऽसप्यत ॥ ५२ ॥ अथा तऽस्याध्याय प्रशऽसा ॥ ५३ ॥ अथ वै यज्ञो नौपतनो ॥ ५४ ॥ पुरुष इह नारायण प्रजापतिरकामय ॥ ५५ ॥ सोमो वै राजा यज्ञऽ प्रजापति ॥ ५६ ॥ प्रजापतिर्यज्ञ मसृजत ॥ ५७ ॥

ब्रह्मौदनं पचति ॥ ५८ ॥ नियुक्ते पशुषु । ५९ ॥ प्रमुन्याश्वं दक्षिणेनन्वे
तिम् ॥ ६० ॥ पुरुषोह नारायणोऽकामयत ॥ ६१ ॥ देवाह वै सत्रन्नि-
षेदुः ॥ ६२ ॥ सयत्रैता ऽ होतान्वाह ॥ ६३ ॥ द्वयाह प्राजापत्याः ॥ ६४ ॥
दृप्तबालाकिर्हानूचानो गार्ग्यऽआस ॥ ६५ ॥ अथ हैनं भुज्युर्लाह्यायनिः
पप्रच्छ ॥ ६६ ॥ जनक ऽ ह वैदेहं याज्ञवल्क्यो जगाम ॥ ६७ ॥ भूमि
रन्तरिक्षं द्यौरिति ॥ ६८ ॥ प्राश्नी पुत्रादासुरिवासिनः ॥ ६९ ॥ इति चतुर्दश
काण्डे प्रपाठकाः ऋषयस्तृप्यन्ताम् । इति प्रपाठकाः ॥ अथ व्रत विसृ
जनम् स यस्मिन्हुत्वा मुँल्लोक मेत्यथ निग्राम्याभ्यो महाभ्यामिति
गृह्णतेऽथ गृहपतिः सु ब्रह्मण्या माह यनिता वाऽएतास्तानि दश भवन्ति
ताऽएताऽअङ्गुलयो मध्यमैव तृतीयाचितिः महोवाचाथर्व ऽ दत्त्वमाऽ
हँ तदुवाचमे वाऽएताऽयास्मै यस्सौत्रामणीमर्यादायाऽएवलोष्ट माहत्य
प्राश्नी पुत्रा दासुरिवासिन० ॥ १ ॥ अन्त्यकाण्डटीका ऋषयस्तृप्य-
न्ताम् । एवं व्रत विसृजेत परमाद्व्रतिद्ध्नुच्छतीति तस्माद्व्रातुपमसान्
तस्मिन् समुपहवमिष्टया स्वर्गिणोऽभ्यादधति द्वादशवा त्रयोदश वा
दक्षिणा भवन्ति यावानग्निर्यावत्यस्य मात्रा तावत्तद् भवति तस्मा-
देवमान् सम्बन्धनास्तस्मादिमे प्राणाऽउपरिष्टाद् सङ्कुन्नांऽः सर्वाद्
मे गर्हित जो लोका इति मन्त्रणो मन्त्र स्वयम्भु ब्रह्मणे नमः ऋषिभीरेवेमाऽ
प्याप्ये तर्हि प्रजा जायन्ते तस्मादिमा वात्सप्तमधिको वाह तस्मादु है
तस्यैतानाच पितात्वन सहस्रयन्ते न्वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते ॥ २ ॥
चतुर्दशकाण्ड ऋषय प्राक्ची होस्र ऋषय स्तृप्यन्ताम् ॥ नमस्कारः—
ततः वदेवदनाम्युक्तं न मृषा भ्रान्तवदन्ति देवा इति नहैवैवं विदुषः
किञ्चनमृषा भ्रान्तं भवति तथो ह्यस्मै तत्सर्वे देवाऽअवन्ति ॥ ११ ॥
इति नमस्कारः । विसर्जनम्—ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥ १४६२४८ ॥ इत्यनयान्वि
सर्जनम् ॥ ततो प्राशनम्—ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा
देवं सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा
छन्दांसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ
स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दि
वन्ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥ १२ ॥
ततो विराधमनं कुर्यात् ॥ आचार्यादि ब्राह्मण पूजन कृत्वा ॥ (तेभ्यो
दक्षिणां दत्वा आशीर्वादं गृह्णीयात् । कृतस्योपाकर्मणः कर्मणः
साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनं करिष्ये इति
सङ्कल्प्य ॥) अर्पणम्—अनेनोपाकर्मोत्सर्ग कर्माङ्गत्वेन कृतेन ऋषि
पूजन तर्पणादि कर्मणा श्रीभगवान्परमेश्वरः प्रीयतां न मम । ॐ तत्सद्-
ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति श्रावणी प्रयोगः ॥

अथ ऋषिश्राद्धम् ।

कृत प्राणायामोद्देशकालो सड्कृत्य—उत्सर्गाङ्गभूत मृषि श्राद्ध मह करिष्ये ॥ ॐ इदं विष्णुर्वि० ॥ १ ॥ इति मन्त्रे णदिग्बन्धः ॥ ऋषिश्राद्धस्योपहाराः शुचयोभवन्तु ॥ इत्यु पहार प्रोक्षणम् । देशकाल पात्रसम्पदस्तु ॥ अरुन्धती सहित कश्यपादि स्त ऋषयः यथादत्तं विभागं वः स्वाहा अरुन्धतीसहित कश्यपादि स्त ऋषयः,यथा दत्तं गन्धा यर्चनं यथायथा विभागं वः स्वाहा । इति गन्धादि दानम् । ऋषिश्राद्ध साङ्गता सिद्धयर्थ सप्त मङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकालं यथा सम्पन्नान्नेन तर्पयिष्ये । तेन अरुन्धती सहित कश्यपादि स्त ऋषयः प्रीयन्ताम् । ऋषिश्राद्ध साङ्गता सिद्धयर्थं हिरण्यनिष्क्रयभूतां दक्षिणा आचार्याय तुभ्य मह सम्प्रददे आचार्यः । ॐ कोऽदा त्कस्मा ऽअदात्कामोऽदात्कामायादात् । कामो दाता काम÷प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ॥ ४८ ॥ इति मन्त्रं पठेत् । उपविष्टेषु ब्राह्मणेषूदकादि दानम् ॥ तद्यथा-ॐ शिवा आपः सन्तु । सौमनस्यमस्तु । अक्षतं चारिष्टं चास्तु । अघोरा ऋषयः सन्तु । सर्वत्र सन्त्विति विप्राः प्रति वचनं ब्रूयुः । अस्मिन् कर्मणो न्यूनाति रिक्त दोष परिहारार्थं नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां सम्प्रददे ॥प्रार्थना—उत्सर्गाङ्गभूतं ऋषिश्राद्धं परिपूर्णं मिति आचार्य्याद्यः प्रति वचनंब्रूयु । ततः सहनोस्तु सहनौ वतु सहनऽइदं वीर्यं वदस्तु ब्रह्माऽइन्द्रस्तद्वेदयेनयथा नविद्विषामहे इति ॥ पश्चात्—उभाक वी० इति मन्त्र पठेत् ॥ इति ऋषि श्राद्धम् ॥ इद ऋषि श्राद्धं कृता कृतं अस्ति ॥ इति श्रावणी पद्धति अध्यायोपाकर्मः पारस्करगृह्यसूत्रे—अथातो ऽध्यायोपाकर्मौषधीनां प्रादु- र्भावे श्र वणेन श्रावण्यां पौर्ण मास्याऽः श्रावणस्यपञ्चम्यऽः हुस्तेनवाज्यभागाविष्ट्वा ज्याहुती जुहोति । पृथिव्याऽइत्यृग्वेदे ऽन्तरिक्षायवायव इतियद्दिवेसूर्या येति सामजुर्वेदे दिग्भ्य श्चन्द्रमसऽइत्य थर्ववेदे ब्रह्मणे छन्दोभ्यश्चे तिसर्वत्र प्रजापतयेदेवेभ्यो ऋषिभ्यः श्रद्धायै मेधायै सदसस्पतयेऽनुमतये ऽइति चैत देवव्रतोद्देशेन विसर्गेषु सदसस्पति मित्यस्तत धानास्थि सर्वेऽनुपठेयु हुत्वा हुत्वौदुम्बर्यस्तिस्त्रस्त्रिस्त्रः समिध ऽआर्द्राःसपलाशा

पञ्च गव्यम्—शरीर शुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यप्राशन कार्यम् ॥

पञ्च गव्यं पवित्रं तु आहरे ताम्र भाजने (१) गायत्र्या चैव गोमूत्र (२) गन्ध द्वारेति गोमयम् (३) आप्याय स्वेति चक्षीरं (४) दधिक्राव्णेति वैदधि (५) यिनेजोसि शुक्र मित्याज्यं (६) देवस्य त्वा कुशोदकम् ॥

घृताक्ता: सावित्र्या नहा चारिणश्च पूर्व कल्पेन राश्नो भवति स्यन्तवयानाऽग्रतोदन्तः प्राश्नीयुर्दधि क्राव्णऽइति दधि भक्षेयुः ॥ यावन्तगणमिच्छेत्तावन्तस्तिलाना कर्षफल केन जुहुयात्सावित्र्या शुक्र ज्योतिरित्य नु वाकेन वामाशानान्ते प्रत्यक्त सुरेभ्यऽउपतिष्ठेम्य ॐ कारमुस्त्वात्रिरन सावित्रीमध्याया दीन्प्रत्र यादपि मुखानि बहु चाना पर्वाणि छन्दो गाना ॥ सूक्ताम्या वर्व्वणाना छ सर्वे जपन्ति महनोस्तु महनोवतुसह न ऽइव वार्य वदस्तु नहा ऽइन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषा महऽइति त्रिरात्र नाधीयीर ओम नवा नामनिष्ट- न्वनमेके प्रागुत्सर्गात् ॥

अथोपाकर्मप्रयोगाः'—

[गुरु. हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य द्विराचम्यात्र सव्याग्रे लौकिकाग्नेर्वा पश्चाच्छिष्यैः सहप्राङ्मुख उपविश्य प्राणा याम त्रयं कृत्वा देशका लौमङ्कीर्त्य श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं अध्यायोपाकर्मणि पञ्च भूसंस्कार पूर्वक मग्निस्थापनमहं करिष्य इति सङ्कल्प्य' पञ्चभूसंस्कारान्कुर्यात्। तेच।—१र्भै. परि समुह्य २—गोमयोदकेनो पलिप्य। ३—स्रुवेणो लिख्य। ४—अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुद्धृत्य। ५—उदकेनाभ्युक्ष्य ॥ तत अग्निं प्रतिष्ठाप्य पात्र स्थापनादि कुर्यात्। तत्र पूर्वेण ब्रह्मणो- गमनम्। अग्ने हस्तत पात्रासादनम्। द्वे पवित्रे ताम्रमयी आज्य स्थाली। पात्रास्य समिध। प्राक्त्वा वाघारो। समिद्धतमे आज्य भागौ। नित्त होम सावित्री मन्त्रेण। पूर्णपात्र दक्षिणा। त्रिरात्र' सोमनन्वा नामति कृत्तनम् ॥) ॥] ऋषिच्छन्दोदेवतास्मरणम्'—इषेत्वे त्यादिकस्य खम्ब्रह्मान्तस्य माध्यन्दिनीयस्य वाज सनेय कस्य यजुर्वेदा म्नायस्य विवस्वा ऋषि। वायुर्देवता। गायत्र्यादीनिसर्वाणि छन्दांसि। अध्यायोपाकर्मणिविनियोग ॥— देवताभिध्यानम्' — तत्र—प्रजापतिम्। इन्द्रम्। अग्निम्। सोमम्। पृथिवीम्। अग्निम्। ब्रह्माणम्। छन्दा छ सि। अन्तरिक्षम्। वायुम्। ब्रह्माणम्। छन्दांऽसि। दिवम्। सूर्यम्। ब्रह्माणम्। छन्दा छ सि। दिश.। चन्द्रम- सम्। ब्रह्माणम्। छन्दा छ सि। प्रजापतिम्। देवान्। ऋषीन्। श्रद्धाम्। मेधाम्। सदसस्पतिम्। अनुमतिम् ॥ एता: प्रधानदेवता याजेन। सदसस्पतिम्। इनाभि.। सविशर्तिने। अग्निरिष्ट कृपामारोनेण। अग्निम्। वायुम्। सूर्यम्। प्रम्ना पतये।

अग्नीवरुणौ। अग्निम्। वरुणम्। सवितारम्। विष्णुम्। विश्वान्देवान्। मरुतः। स्वर्कान्। वरुणम्। प्रजापतिम्। एता अङ्ग प्रधानार्थदेवता अस्मिन्कर्मण्यहं यक्ष्ये॥

[ब्रह्मवरणम् (दक्षिण तो ब्रह्मासनमास्तीर्य। अमुक शर्मन् अस्मिन्कर्मणित्वं ब्रह्मा' भव। भवामीति प्रति वचनम्। ब्रह्मातूष्णीं आसनावलोकनं-आसनात्तृणनिरसनञ्च कृत्वा उपविशेत्॥ अग्नेरुत्तरतः प्रणीतार्थमासनद्वयंनिधाय। प्रणीता चमसं वाम हस्ते कृत्वा आत्माभिमुखं जलेनापूर्य प्रथमा सनेनिधाय चमस दण्डमालभ्यब्रह्मणोऽवलोक्य तेन सङ्केतादिना ऽनुज्ञातः प्रणीयोत्तरासनेनिदध्यात्। तत उदगग्रैः प्रागग्रैः कुशैरग्निं परिस्तीर्य। अर्थवदासाद्य। अग्नेरुत्तरतः प्राक्संस्थ मुदक्संस्थं वा पात्रासादनम्। पवित्रच्छेदनार्थं दर्भास्त्रयः। पवित्रे द्वे। प्रोक्षणी पात्रम्। आज्य स्थाली। सम्मार्जन कुशास्त्रि प्रभृतयः। उपयमनकुशाः सप्तप्रभृतयः। समिधस्त्रि प्रभृतयः। स्रुवः। आज्यम्। धानाः पूर्ण पात्रं च॥

अथोप कल्प नीयानि'—इति शिष्यं नव नव समिध आर्द्रा मपत्रा औदुम्बरस्य। दधिभक्षणार्थं। लौकिका धाना बाहु मात्र मौदुम्बर काष्ठं तिल स्थापनस्थाने सर्पफणाकार मार्कपर्फलकम्। तिलाश्चेति। पवित्र करणम्। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्विमूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणी कृत्य सर्वान्युगपद्धृत्वा नामिका ङ्गुष्ठाभ्यां—छित्वा तानुत्तरतः प्रक्षिपेत्। प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतो त्तरतो निधाय। प्रोक्षणीपात्रे पात्रान्तरेण प्रणीताद्भि स्तासांप्रोक्षणम्। ■ पवित्र हस्ते नोत्तानेन, पात्रप्रोक्षणम्। आज्य स्थाल्याः प्रोक्षणम्। सं मार्ग कुशानां प्रोक्षणम्॥ उपयमन कुशानां प्रोक्षणम्। समिधांप्रोक्षणम्॥ स्रुवस्यप्रोक्षणम्॥ आज्यस्य प्रोक्षणम्। धानानां प्रोक्षणम्॥ पूर्ण पात्रस्य प्रोक्षणम्॥ प्रणीताग्न्योर्मध्ये सञ्चरे प्रोक्षणींनिधाय। कुशोप ग्रहेण आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः। आज्याधि श्रयणम्। ततो ज्वल दुल्मुकेन पर्यग्निकरणम्। द्रवत्थाद्यर्चिः। अर्धश्रिते स्रुवंप्रतप्य। संमार्ग कुशैः संमृज्य। अग्रैर्मूलादारभ्याग्र पर्यन्तं मूलैश्च दारभ्यमूलपर्यन्त प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य।पुनः प्रतप्य। दक्षिणतो निद॰

(१) औदुम्बरस्य या शाखा फलक द्वय संयुता। द्वाकपं पलकं नामाग्रम्यज्ञैः परि कल्पितम्॥ २॥ एताः सप्तविंशत्‍ दूर्वयः आज्येन तत प्रेक्षितधानामि धारणम्॥ स्रुवेण धाना अवदाय। मदमराति मन्द्‍तमित्य यनेन मन्त्रेण जुहुयात॥

ध्यात् । आज्यं सुक्रास्य । उत्तरतो निधाय । ततोऽग्नेः पश्चिमतो निदध्यात् । पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूय । प्रोक्षणीश्चपूर्वं वदुत्पूयं । आज्यमवेक्ष्य । अप द्रव्य-निरसनम् । उपयमन कुशानादाय । तिष्ठन् समिधोऽभ्यादाय । प्रोक्षण्युदक शेषेण सपवित्रेण हस्ते नेशानमारभ्येशान पर्यन्तं प्रदक्षिणमग्निं पर्युक्ष्य । इतरथावृत्तिः । पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । सोपयमं सव्य हस्त-मुत्तानं हृदि निधाय दक्षिण जानु निपातः ब्रह्मणोन्वारम्भः । दक्षिण हस्तेनस्रुवेण होमः ।] मनसा—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ॥ त्यागान्तेद्रव्य प्रक्षेपः । प्रोक्षणीपात्रे संस्रवधारणम्) । ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्रायय नमम ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमम ॥ १ ॥ ऋग्वेदे—सप्त[1] विंशत्याहुतयः । ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै न ममः । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम । छन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो नमम् ॥ यजुर्वेदे—ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदं मन्तरिक्षाय नमम ॥ ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे नमम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो नमम । साम-वेदे—ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे नमम । ॐ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय नमम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम । ॐछन्दोभ्यःस्वाहाइदं छन्दो-भ्योनमम ॥ ४ ॥ अथर्वण वेदे:—ॐदिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो नमम । ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदचन्द्रमसे नमम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो नमम । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदंप्रजापतये नमम । ॐ देवेभ्य. स्वाहा इदं देवेभ्यो नमम । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यो नममः ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै नमम । ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै नमम ॐ सदसस्पतये स्वाहा इद सदस्पतये नमम । ॐ अनुमतये स्वाहा इद अनुमतये नम । ॐ सदसस्पति-मद्भुतम् प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनिंमेधामयासिष ॐ स्वाहा ॥ १३ ॥ इदं सदसस्पतये नमम । (इमं मन्त्रं गुरुणायपठ्यमानं शिष्या अपि सहानुपठेयुः ॥ तत उदुम्बर समिन्निचय मभिधार्यं हस्ते गृहीत्वा उत्थाय प्रेक्षमुपतिष्टन्तः) ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं० ॥ २ ॥ स्वाहा इदमग्नये नमम । (इत्युच्चार्य एकां समिधमादध्युः । एव मन्त्रेण द्वितीयां तथा तृतीयाम् । ततः सर्वे उपविशेयुः । आचार्यः पुनः । अुवेणाधाना अवा दाय ।) ॥ द्वितीयांधानाहुतिं पूर्ववत् ॐ तत्सवितु० ॥ ३ ॥ स्वाहा

---

(२) ऐताः सप्तविंशत्या हुतयः आग्नेन ततः शोधित पात्राभिधारणाम् ॥ सुवेणधाना अवदान । तत्सवितुरेव निःशनेन मन्त्रेण हुताः ॥

इदमग्नये नमम ॥ ततस्तिस्रोऽपराःसमिधो घृत्तेनाभ्यज्य। उत्थाय प्राङ् मुखास्तिष्ठन्तः—ॐ तत्सवितु० ॥ ६ ॥ स्वाहा इदमग्नये नमम। (इत्युचार्य एकां समिधमादध्युः।) पुनः ॐ तत्सवितु० ॥ ६ ॥ स्वाहा इदमग्नये नमम। एवं द्वितीया। पुन. ॐ तत्सवितु० ॥ ६ ॥ स्वाहा इद मग्नेय नमम ॥ एवं तृतीयां हुत्वा चार्योधाना हुतिंजुहुयात्। ॐ सदसस्प ० ।- स्वाहा इदं सद सस्पतये नमम ॥ मन्त्रानुपठनं (शिष्याणामपि–समिन्त्रयं पूर्व वज्जुहुयात्) ॐ तत्सवितु० ॥ ६ स्वाहा इदमग्नये नमम। एवं द्वियीयां। प्रह्म चारीतु। शिष्योऽहर हरग्नि कार्य क्रमेण समिदाधान कुर्यान् न साविभ्या। अन्यत्सर्वं समानम्।) धाना भक्षणम् (ततोधा उपकल्पितधानास्तिस्र स्तिस्रोगृहीत्वा)—ॐ शन्नोभवन्तुवाजिनो हवेषुदेव वातामितद्रवऽः स्वर्क्काऽः। जम्भयन्तोऽहिंवृकऽः रक्षा ᳪ सि सनेम्यस्म्यद्युयवन्नमीवाऽः ॥ ६ ॥ इति मन्त्रेणदन्तै स्त्वा दन्तैः प्रारनीयुः ॥ ततो–द्विराचनम्) दधिभक्षणम्"—ॐदधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यवाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रणऽआयुᳪषि तारिषत् ॥ १० ॥ इति मन्त्रेण दधि भक्षेयु.) ॥ द्विराचमनम्। (तत आचार्यो यावन्तशिष्यगणं आत्मन इच्छेत्तावतरितलान्गणयित्वा आकर्षफलकेना वदाय)—ॐ शुक्रऽ ज्ज्योतिश्चत्र। चित्त्यज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्चशुक्रश्चऽऋतपाश्चात्यᳪहाऽः॥११॥ इत्या धनु वाकेन साविभ्या वा जुहुयात्। ॐ तत्सवितु० ॥ १२ ॥ स्वाहा इदं सवित्रे न मम ॥ (सं स्रवप्रक्षेपः। ततो धानाभ्यः स्विष्टकृत्)—ॐ अग्नयेस्विष्ट कृते स्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृतेन मम ॥ भूराद्या नवाहुतयः"—(आज्येन जुहुयात्। सर्वत्र त्यागान्ते द्रव्य प्रक्षेपः। तद्यथा— ॥ १ ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेन मम ॥ २ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ३ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ४ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽ अवयासि सीष्ठाऽः। यजिष्ठो वह्नितमऽः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ᳪसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ १३ ॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ॥ ४५ ॥ सत्वन्नोऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ। अव यक्ष्व नोवरुण ᳪ रराणोव्वीहि मृडीक ᳪ सुहवो नऽएधिस्वाहा ॥ १४ ॥ इदमग्नीवरुणाभ्या न मन ॥ ६ ॥ अया श्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अया नोयज्ञं वहास्यानोधेहि भेषज ᳪ स्वाहा। (सौत्रमन्त्रः)। इदमयाय न मम। [इद मग्नये अयसे न मम इति] केचित्॥ ७ ॥ येते शतं वरुण ये सहस्रं य ज्ञयाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णु व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।

[सौत्रमन्त्राः]। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ८ ॥ उदुत्तमं वरुणपाश मस्मदवाधमं विमध्यम ॐ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसोऽदितये स्याम स्वाहा ॥ १५ ॥ इदमादित्यायादितये न मम ॥ ९ ॥ उपांशु । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । [संस्रव प्राशनम्] आचमनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नौ पवित्र प्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्ण पात्रदानम्,—यथा,—ब्रह्मन् अस्योपाकर्मणोऽङ्ग यथाविहित पूर्ण पात्रं प्रति गृह्यताम् । ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु इति मन्त्रस्य ब्रह्मा जपं कुर्यात् । (प्रणीता विमोकः । ततोऽग्निमुत्तरेण कुशेषु प्रत्यङ् मुखो पविष्टेभ्यः शिष्येभ्यः प्राङ् मुख आचार्यः ओङ्कारमुक्त्वा विरत सावित्री मनु ब्रुयात्)—यथा—ॐ तत्सवि० दयात् ३३ । (इति निः) इषेत्यादि ईशावास्यान्तम् । नव सुपेष्यग्निस्यादि सर्वं मन्त्र ब्राह्मण योरध्यायि प्रनूयात्) वह्वृचास्त्वपिसुस्तानि । पर्वाणि छन्दोगानाम् । सूक्तान्यथर्वणा नाम् । (एवं सर्व पठित्वागुरुः शिष्याश्च जपन्ति) ॥ ॐ सहनोस्तु, सहनोवतु सहनऽइदं वीर्यं वदस्तु ब्रह्म इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहे ॥ इतिमन्त्रं जपित्वा त्रि रात्रमध्ययनं लोम नखा नमति कृन्तनमवपनं च करिष्या महे ॥ इति सर्वेषा सङ्कल्पः ॥) प्रागुत्सर्गा द्वा नियमो लोमनख निकृन्तनम् । उत्सर्गा वधि लोमनखा नाम कृन्तन मह करिष्ये इति । छन्द सामुत्सर्गात्प्राङ् मन्त्र ब्राह्मण योरध्ययनम् ॥ इत्युपाकर्म प्रयोगः ॥

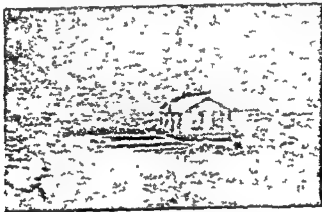
अथ तीर्थ श्राद्ध विधिः

ग्रावाध्यायोः—श्राद्धया दीयते यस्मात् श्राद्धं तेन निगद्यते । नित्यं नैमित्तिकं काम्य वृद्धि श्राद्धमथैवच इ पार्वणं चेति मनुना श्राद्ध पञ्च विध स्मृतम् ॥ अहन्येकादशेप्राप्ते पार्वणन्तु विधीयते ॥ तीर्थेपुनाब्राह्मणा नैव परीक्षेत कदा चन ॥ अन्नार्थिन मनु प्राप्तं भोज्यं न मनुर ब्रवीत् । सक्तुभि पिण्डदानं च संयावे पायसे न वा । कर्त्तव्य मृषिभि दिष्टं पिण्या केन गुडे न वा ॥ देयन्तु तिलपिण्याकं शक्ति मद्भिर नरैः सदा ॥ श्राद्धेतु तत्र कर्त्तव्य मर्घावाहन वर्जितम् ॥

अथ पार्वण तीर्थ श्राद्धम्

अथ तीर्थेत्ति कर्त्तव्यता पूर्वं तीर्थं प्राप्ति काल एवं तीर्थं साष्टांग प्रणम्य नारिकेल फल पुग्ग त्वगादिकं आदाय अमुक तीर्थाय नमः इति निवेद्य ॐ शरेण नीरं स्पृष्ट्वा ॐ नमोस्तु देव देवाय शिति कण्ठाय दण्डिने रुद्राय चाप हस्ताय चक्रिणेवेधसे नमः । सरस्वती च

सावित्री वेद माता गरीयी । सन्नि धात्री भवत् तत्रः तीर्थे पाप प्रणाशिनी ॥ तीक्ष्ण द्रंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनो पम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञा दातु महंसि ॥ इति मन्त्रेण क्षेत्रपाल गणेशं च नमस्कृत्य सचैलं स्नायात् ॥ तत. त्रिधिना पूर्ववत् तीर्थस्नानं देश काल कीर्त नान्ते यथोक्ते नस्नायात् ॥ इति स्नायायात् ॥ इति स्नात्वा ॥ प्रायश्चित्तार्थे गो भू हिरण्या दिकं दद्यात् ॥ चौरं कुर्यात् तत्र मन्त्रः—यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या समानिच । केशानां श्रित्यतिष्ठन्ति तस्मात्कैशान्वपाम्यहम् ॥ ततः प्रथमं दक्षिण कर्णं मास्य वामकर्णं पर्यन्तं उदकं सस्थम् केशववपनम् ॥ तत.श्मश्रु लोम नखा प्राणा क्रमेण वपनम् । वप्तानां केशादीनां जले गर्तेवा प्रक्षेप. ततः मृत्तिका स्नायात् तत्रमन्त्र. .. ओं अश्व क्रान्ते-रथ क्रान्ते विष्णु क्रान्ते वसुन्धरे मृत्तिके हरमे पाप यन्मया दुष्कृत कृतम् ॥ मृत्तिके ब्राह्मणा दत्ता काश्यपेयाभि मन्त्रिता ॥ मृत्तिकेदेहिमे पुष्टिं.



श्री हंसकुण्ड ब्रह्मतीर्थ

त्वइसर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ ओं इदं विष्णुर्वि० इतिमन्त्रेण । तत्र निमज्योन्मज्य जलादुत्तीर्य धौते वाससी परिधाय भस्मादीना त्रिपुण्ड्रोर्ध्व पुण्ड्रादिकं कृत्वा संध्या मुपास्य ॥ तर्पणं कुर्यात् तत सम्पादिते रूपकरणैस्तीर्थ श्राद्ध मारभेत् तत्राय विधि. ॥

श्राद्धस्थानम्.—मनु.—शुचि देशं विविक्तं तु, गोमये नोप लेपयेत् । दक्षिणा प्रवण श्चैव प्रयत्ने नोप पादयेत् ॥

श्राद्धस्थले देवस्य सं निधापनम्—पाद्मे—शिवस्य नार्मदलिङ्ग शालिग्रामशिला चयः । पीठे संस्थापयित्वा तु श्राद्धञ्च कुरुते नरः । पितर स्तस्य तिष्ठन्ति कल्प कोटि शतदिवि ॥

कुशाग्रहण मंत्र— विरिञ्चिनासहोत्पन्न परमेष्ठिनिसर्गज नुद सर्वाणि पापानि दर्भ ? स्वस्ति करो भवः ॥

हविर्विषये—आगो मूमच यच्छाद्धं माप मुद्ग विवर्जितम्। तैल पक्वैन रहित कृतमप्य कृत भवेत् ॥

सूतके—विष्णु स्मृतौ—व्रत यज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे। आरब्धे सूतकं नस्यात् अनारब्धे तु सूतकम् ॥

विधवा कर्तृक श्राद्धम् ॥ —स्वभर्तृ प्रमिति त्रिभ्ये स्वपितृभ्य स्वथैवच। विधवा कारये च्छ्राद्ध यथा काल मतिन्द्रिता ॥ आमान्ने नतु शूद्रस्य तृष्णातुद्विज पूजनम्। कृत्वा श्राद्धन्तु निर्वाप्य सजति नाशये दथ. ॥

आचम्य हरिंस्मृत्वा ॥ शुक्ल वापीत वस्त्र परिधाय आशनो परि उपविश्य दीपं धृत्वा तिल तैलवा प्रज्वाल्यरक्षोध्नदीपाय नमः इतिसम्पूज्य [दीपं दक्षिणाभिमुखं संस्थाप्यश्राद्धकर्ता पूर्वाभिमुखं उपविश्य] पुष्पाक्षत सहित नमस्कृतम्—यन्ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधान पुरुषं स्तथान्ये विश्वोद्गते कारणमीश्वरम्भा तस्मै नमोविघ्नविनाशनाय ॥ शुक्ला- म्बर धरं विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनध्यायेत् सर्व विघ्नो पशान्तये इति नमस्कृतम् ॥ स्ववामभागे गन्धादिना भूमौ चतुष्कोण मण्डलं विधाय तत्र शङ्ख चक्र च ७। ४। विलिख्य तत्र कुशानास्तीर्य्य वा त्रयमुष्टिवण्डलधृत्वा-तदुपरि कर्मपात्रे संस्थाप्य ॥ [ताम्रनीर्थ सद्‌ग] पात्रे पवित्रम्—दक्षपाणिने—ॐ पवित्रे स्थोवैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्तपुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभि. तस्यते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्तकामपुने तत्तकेयम् ॥ इति मन्त्रेण पवित्र क्षिपेत् स्व दक्षिण हस्ता नामिकाया पवित्रेस्थ इति मन्त्रेण कुश पवित्री मय धारयेत् ॥ पात्रे च शन्नोदेवीति जलम्—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतय शय्योरभिश्रवन्तुन. इति मन्त्रेण पात्रे तु जलक्षिपेत् ॥ इति मन्त्रावात् यवोसीति यवान्—ॐ यवोसियवयास्मद् द्वेषो यवयारातिदिव स्यान्तरिक्षायत्त्वापृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताम्लोका। पितृषदना पितृषदन मसि ॥ इति यवान्क्षिपेत् ॥ तिलोसीति तिलान् तिलोसी सोम देवत्यो गोसवो देवनिर्मित प्रत्नमद्भि पृक्तस्स्वधयापितृन्लोकान्प्रीणाहिन स्वाहा इतितिलान्क्षिपेत्। तत्र वरुण आह्वनं कुर्य्यात्—आवाहयाम्यहं देवीं गत्वा त्रैलोक्यमातरम् ॥ यस्या स्मरणमात्रेण सर्वपाप प्रणाशनम् ॥ ॐ भूर्भुव स्व वरुणं देवता इहाच्छ इहातिष्टसु प्रतिष्ठितोवरदोभव ॥ गन्धाक्षत (भृङ्गराज) श्वेतपुष्पादिभि. तूष्णींनिक्षिप्य। गन्धद्वारेति गन्धम्। श्री स्वस्तिदृप्प ॐ धर्म पाथं सु सम्पन्नं मस्तु। इतिमन्त्रेण

पृच्छेत् [अस्तुसु सम्पन्नं मिति यजमानोऽब्रूयात्] प्रतिवचनम् ॥ ततः तज्जलेन ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० इति मन्त्रेण श्राद्धीयवस्तूना-न्मानां च सिंचेत् पुण्डरी काक्षं स्मृत्वा इतित् श्राद्धदेशे सामग्री आत्मानं च सम्प्रोक्ष इति ॥ ततःकुशादिक आदाय ॐ अद्येत्यादि प्रधान सङ्कल्प सिद्धिरस्तुदेश काल कीर्ति नान्ते अमुक गोत्राणा मस्मत्पितृ पितामह प्रपिता महानांममुकामुक शर्माणां वा (ब्रह्माणां वा गुप्तानां) यथायोग्य सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां अक्षय तृप्त्यर्थं पार्वण श्राद्ध विधानेन धूरि लोचन सञ्ज्ञक विश्वेदेव पूर्वकं अमुक तीर्थं प्राप्त निमित्तकं सपिण्डक मामान्न तीर्थे श्राद्धं करिष्ये ॥ ॐ कुरु चेति प्रत्युक्तिः ॥ ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एवं च ॥ नमः स्वधायै स्वाहायै नित्य मेव नमो नमः इतित्रि । सप्त व्याधादशार्णे पुमृगाः कालञ्जरे गिरौः चक्रवाकाशर-द्वीपे हंसा सरसिमानसे । तेपि जाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः ॥ प्रस्थिता दीर्घ मध्वानंयू यं किमवसीदथः ॥ श्राद्धारम्भे गयांध्यात्वाध्यात्वा देवं गदाधरम् । उभाभ्यांचनमस्कृ य ततः श्राद्ध समाचरेत् ॥ गया गया गयादित्यो गायत्री च गदाधरः गया गयासुरश्चैव षड्गया मुक्तिदायकाः ईशान विष्णु कमला सन कार्तिकेय वह्नि त्रयार्क रजनी शगणेश्वराणाम् ॥ क्रौञ्चामरेन्द्र कलशोद्भव कश्यपानां पादान्नमामि सततं पितृ मुक्तिहेतोः ॥ ॐ गयायै नमः ॐ गदाधरायैनमः । ततः कृष्णकव्यमिदं रक्षमदीय मिति अपसव्येन दिगवन्धनं कुर्यात्–तिल सहित मोटकं आदाय तिलान् पूर्वादिक्रमेण विकिरेत् ओं अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीरक्षन्तु मे दिशम् ॥ अपहता असुरा रक्षा ꣳसि वेदि षद् । ओं तथा बर्हि षद यान्तुयाम्यायै पितरः स्थिता ॥ अपहता असुरा रक्षा ꣳसि वेदिषदः ॥ ओं उदीची मपि सोमपः पितरः यान्तु ॥ अपहता असुरा रक्षा ꣳसि वेदि-षदः ओं ऊर्ध्वं तस्त्वर्यमा रक्षेत्कव्यवाडनलोप्यधः ओं रक्षोभूत पिशा-चेभ्य स्तथैवाऽसुर दोषतः ॥ सर्वतः श्वधिपस्तेषां ॥ यमो रक्षा करोतुमे ॥ इति मन्त्रैस्तिलान्विकीर्यदिग्बन्धन मोटक मनेन वक्ष्यमाण मन्त्रेण वाम कट्यांधारयेत् ओं निहन्मि सर्वं पदमेध्यवद् भवेद्धतास्चसर्वेऽसुरदानवामया ॥ रक्षांसि यक्षाः स पिशाच गुह्यकाहता

श्राद्धे वैश्व देव —याजुषाःसामगाः पूर्वं श्राद्धमध्ये क्षपर्वणाःवह्वृचाः श्राद्धशेषेण कुर्युर्वैश्वदेवकम् ॥ वैश्वदेवकम् ॥ नेश्वदेव अञ्जली प्रमाणं माह अत्रिः—निर्गयवोदरान्यष्टावूर्ध्व वामद्वियस्त्रयः । अञ्जलीः सैव विज्ञेयः श्रौते स्मार्ते च कर्मणिः ॥ इति वचनात् ॥ भार्यारजस्वलात्वे–दिन चतुष्टयं प्रति पालयेत् । रजस्वला तीर्थे देवमन्दिरादौऽञ्चमदिनेन गन्तव्यम् ॥

मया यातुधानाश्च सर्वे इति ॥ ततस्तिल सहित कुशत्रयं गृहीत्वा-ययान्तु दूरतः सर्वे दैतेयादानवास्तथा ॥ सर्वे विघ्नो परान्त्यर्थं ।त्वपामिवः कुशा स्तिलान् इति मन्त्रेण दक्षिणस्या क्षिपेत् ॥ ततः सव्य-कृष्ण हव्य मिदं रक्षमदोय इति सव्यं कृत्वा हरिं स्मरेत् ओं नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषी केश! रक्षतां सवतो दिश. ॥ अथा सनम्—ततः सव्येन कुशादिक मादाय ओं अद्येहामुक गोत्राणा मस्म त्पितृ पितामह प्रपितामहानाममुकामुक शर्माणा [ब्रह्माणां गुप्तानां] यथायोग्यसपत्नी कानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां तथा द्वितीय गोत्राणामस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महाना अमुकामुक शर्माणा यथायोग्य सपत्नी कानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां श्राद्ध सम्बन्धिनाधूरि लोचन संज्ञकानां विश्वेषां देवानामिद मासन मस्तु । इदं कुशारूप आसन मास्यतां आस्ये इत्यासनंदत्वा । ततः अचनम्—कुशोसि कुशपुत्रोसि ब्राह्मणाभिर्मितः पुरा । त्वयाचितः सोर्चितोस्तु यस्याहं नाम कीर्तये ॥ पूर्ववम् अपसव्येन मोदक मादाय-ॐ अद्येहामुक गोत्राणामस्मत्पितृ पितामह प्रपिता महाना-ममुका मुकामुक शर्माणा [ब्रह्मणा-गुप्तानां] यथा योग्य सपत्नी का नां वसुरुद्रा दित्यस्वरूपाणां तथा द्वितीय गोत्राणा मस्मन्माता-मह प्रमातामहवृद्ध प्रमातामहाना ममुकामुकामुकशर्माणां सपत्नीकानां वरुण प्रजापत्याग्नी स्वरूपाणा अद्य कर्त्तव्यामुक तीर्थं श्राद्धे इदं मोदक रूप मासन पात्र। त्रिभज्य युष्मभ्य स्वधा, इदं मोदक रूप आसन मास्यतां आस्ये इत्यासन दत्वा । ततः सव्येन ॐ कुशोसि कुश पुत्रोसि ब्राह्मणा निर्मितः पुरा । त्वयार्चितः सोर्चितोस्तु यस्याहं नाम कीर्तयेति अर्चयिष्ये इति पृष्ट्वा ॐ अर्चयेति प्रत्युक्तः ॐ नमोस्त्व नन्ताय सहस्रमूर्तयेति मन्त्रेणगन्ध पुष्पाक्षत धूप दीप नैवेद्यादिभिः सम्पूज्य । कुशादिक मादाय ॐ अद्यामुक गोत्राणा मस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानाममुका मुकामुक शर्माणां (ब्रह्मणा-गुप्ताना) यथा योग्य सपत्नीका नां वसु रुद्रादित्य स्वरूपाणां श्राद्ध सम्बन्धिनोर्विश्वेदेवा धूरि लोचन नामानः एतान्यर्चना न्यत्रगन्ध पुष्पाक्षतयवा धूप दीप यज्ञो पवीत वासांसि वो नमः ॐ अर्चन-विधौ मर्व परिपूर्णं मस्तु इति जलं दद्यात् अस्तु प्रति वचनम् । ततः अपसव्येन ॐ अर्चयिष्ये इति पितृ ब्राह्मणां पृष्ट्वा ओं—अर्चयेति प्रत्युक्तः गन्धादिभि सम्पूज्य धूप दिशो वा द्वार येत् । पितृ ब्राह्मणां सम्पूज्य ॥ ओं पितृ पितामह प्रपितामहानां यथा योग्य सपत्नीकेभ्यो नमः । ओं नमोनमः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता-

महाना यथा योग्य सपत्नी का ना तथा च आप्त समस्तामा पूजन कुर्यात् ॥ कुश मोटकादिक मादाय ओं अद्यामुक गोत्रा अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहा अमुकामुकामुक शर्म्माण (ब्रह्म गुप्तो) यथा यथा योग्य सपत्नीका वसु रुद्रादित्य स्वरूपा तथा अमुक गोत्रा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महा अमुकामुकामुक शर्माण यथायोग्य सपत्नी का वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपा अद्य कर्त्तव्या मुक तीर्थे श्राद्धे एतान्यर्चनान्यत्र गन्ध पुष्पाक्षत ताम्बूलपूगीफल यज्ञोपवीत धूप दीप नैवेद्यादीनि षोढा विभज्य युष्मभ्य स्वधा इत्यु त्सृजेत् । ओं अर्चनविधे सर्वेपरि पूर्ण मस्तु इति जल दद्यात् ओं अस्तु परिपूर्ण इति प्रति वचनम् । अथ अन्नसकल्प । सव्यन सोपस्कर मन्न सम्प्रोक्ष्य सोपस्कर यव जल घृत मधुयुत मन्न उपनीय मधुनाभिधार्य ऋजुहस्ताभ्या अन्न पात्र आलभ्य पृथिवीते पात्र द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृत जुहोमि स्वाहा । इद विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्, समूढ मस्य पा ᳪ सुरेस्वाहा। ओं कृष्ण हव्यमिद रक्ष मदीयमिति पठित्वा । ओं इद अन्न इति अन्ने इमा आप इति जल इद माज्यइवि घृते ॥ इद हविरिति पुनरन्ने एतानि उपकारणानि इति क्रमेण अन्न जल घृतेषु विप्र करे दक्षिणा ङ्गुष्ठनिवेश्य ॥ ओं यवोसियवयास्म द्वेषो यववारितिमन्त्रेण यवान्नोपरि विकीर्य कुश यव जलान्यादाय—वाम हस्ताङ्गुल्यङ्गुष्टै क्रमेणान्नमापरचपृष्टवा ओं अद्यामुक गोत्राणामस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहानाममुकामुकामुक शर्माणा (ब्रह्म गुप्तो) यथायोग्य सपत्नी का ना वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणा तथा द्वितीय गोत्राणा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाममुकामुकामुक शर्माणा यथा योग्य सपत्नी का ना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा श्राद्ध सम्बन्धिभ्य धूरि लोचन सञ्ज्ञक विश्वेभ्य देवेभ्य इद मन्न अमृत स्वरूपेण सपयता न मम स्वाहा ॥ इति कुशादिक उत्सृजत् ॥ अपसव्यन ॥ सोपस्कर तिल घृत मधुजल युत मन्न उपनीय मधुना विधार्य अधो मुखाभ्या व्यस्ताभ्या पाणिभ्या अन्न पात्र आलभ्य पृथिवीते पात्र द्यौ रपिधान ब्राह्मस्य मुखे अमृते अमृत जुहोमि इद विष्णु-विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम् समूढ मस्य पा ᳪ सुरेस्वाहा ओं कृष्ण कव्यमिद रक्षमदीय इति पठित्वा ओं इद अन्न ओं इमा आप ओं इद आज्य ओं इद हविरिति पुनरन्ने । ओं—एता न्युपकारणानि क्रमेण अन्न जल घृतेषु विप्र दक्षिणा ङ्गुष्ट निवेश्य । ओं इप हता असुरा रक्षा ᳪ सि वेदिषद इति ब्राह्मणा नाम मतो भूमावेव।

तिलान् विकीर्य मोदका दीन्यादाय वाम हस्ताङ्गुष्ठाङ्गुलिभिः क्रमेणान्नं अपश्च स्पृष्ट्वा ओं अद्येहामुक गोत्रेभ्यः अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः अमुकामुकामुक शर्मभ्यः [ब्रह्म-गुप्तेभ्यः] यथा योग्य सपत्नीकेभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तथा द्वितीय गोत्रेभ्यः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः यथा योग्य सपत्नीकेभ्यः वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपेभ्यः इदं मामान्नं सजलं सोपस्करं परि विष्टं परि वेक्ष्यमाण मक्षय तृप्ति हेतोस्तेयथा यथा भागं विभज्यभुज्यतो स्वधा ॥ इति पितृ ब्राह्मण समीपे मोदकादिकमुत्सृजेत् । सकृत् अपो दत्त्वाः ततः सव्ये न देव ब्राह्मण करयोः ओं भवन्तौ प्राशयन्तो मित्य पोशान वैश्वदेव ब्राह्मणं जलं दद्यात् ॥ अपसव्येन भवन्तः प्राशयन्तु इति पितृ ब्राह्मणाय जलं दद्यात् ॥ अन्नहीन क्रिया हीनं विधि हीन च यद्भवेत् तत्सर्वं मच्छिद्र मस्तु इति जपेत् ॥ सव्येन गायत्रीं जपित्वा ओं मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधी । ओं मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिवꣳ रजः ॥ मधुद्यौरस्तुनः पिताः ॥ ओं मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधु मॉः अस्तु सूर्यः । माध्वी र्गावो भवन्तुनः ॥ ओं मधु मधु मधु इवे पश्चिा । ओं अन्नहीनं क्रिया हीनं विधिहीन चयद्भवेत् । तत्सर्वं मच्छिद्र मस्तुश्रीभास्करस्य प्रसादतः ।ओं नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुसेः । नम पिनाक हस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः इति पठेत् ॥ यथा सुखं जुषध्वम् इति वचना नन्तरं वे ब्राह्मणा मौनिनो भूत्वाभुञ्जीर संज्ञया च भक्ष्यं प्रार्थयेयुः ॥ ततोवृभोव्वासीनः गायत्रीं मधुव्वाता इत्यादि ऋचम् ओं मधु मधु मध्वीति च जपेत् । ततः कृणुष्वपाजः मिति रक्षोघ्नी ऋचं पठेत् [ऋचं अमेद्रूष्टव्यः] ततः तिलान् भूमी क्षिप्त्वा ओं उदीरता मित्यादि पितृ मन्त्रान् ओं सहस्र शीर्ष इत्यादि पुरुषं सूक्तम् ओं आशुः शिशान इत्यादि कम प्रति रथं मधुव्वाता इत्यादि पितृसूक्तं ये नमस्येऽहं इत्यादि हविष्याय.पवित्राणि ।अमेद्रूष्टव्यः) यथा शक्तिजपेत् । नमस्तुभ्य विरूपाक्ष नमस्तेऽनेकचक्षुषे नमः पिनाक हस्ताय वज्र हस्ताय वै नमः ॥ इतिपठेत् अन्यद्वापिद्विज गीतादि पारायणं पठेत् ॥ अपसव्येन पिण्डदानार्थं वेदिकां निर्माय ओं ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधयाचरन्ति । परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकान प्रणुदात्यस्मान् इति मन्त्रेण ज्वलदङ्गारं भ्रामयित्वा । तदङ्गारं दक्षिणस्यां क्षिपेत् ॥ ततः पिण्डार्थायां रेखा करणम्—वामेन पाणिनां दर्भ पिञ्जलीं गृहीत्वा सव्येन आरभ्य—ओं अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः । इति दक्षिणायां रेखां कृत्वातां मुत्तर संस्थितां, ततो जलेन ओं शन्नो देवीरिति पितृवेदीं आसिच्य, तदनु छिन्नमूल कुशानास्तीर्य,।

सव्येन ओं देवताभ्य इतित्रि. पठित्वा अपसव्येनयवपिष्ट मयान् पिण्डान्निर्माय—मोटकादिकं मादाय ओं अद्यामुक गोत्रअस्मत् पितृ अमुक शर्मन् [ब्रह्मा-गुप्त] वसुस्वरूप अमुक तीर्थ श्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्वतेस्वधा। एव पितामह. प्रपितामहा (अम्बात्रितय) मातृ पितामहि प्रपितामहा (सपत्नजननी)मातामहप्रमातामहा वृद्धप्रमातामहा पतेसस्त्रिय स्त्री-पुत्र-पुत्री—पितृव्य सखी मातुलसपत्नीक. स्वभ्रातासपत्नीक पितृ स्वपासापि अपत्यधवयुक् सापत्या सधवा, मातृष्वसा—आत्मष्वसा—श्वसुर. गुरु-शिष्या आप्तमित्राणि—नमस्त (अत्र शस्त्र-वाहनादि) पितृभ्यो वसुस्वरूपेभ्य आयकर्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धे पिण्डस्थानेऽअत्रावने निक्ष्वते स्वधा इति अवने जन छिन्न मूल कुशोपरिदद्यात् ॥ तत सव्येन भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया पिण्ड प्रदान मह करिष्ये इति पश्ने ओं कुरुष्वेत्यनुज्ञात ॥ अपसव्येन यव.पेष्टमयान् निर्माय पिण्ड मोटकादि सहितप्रथम पिण्ड आदाय—ओंअद्येहेत्यादि पूर्व सकल्पमुच्चार्य अमुक गोत्र ऽअस्मत्पित अमुक शर्मन् (ब्रह्मन् वागुप्तो) वसु स्वरूपाय कर्त्तव्य अमुक तीथश्राद्धे एष पिण्डोऽअमृत स्वरूपोऽक्षय्य तृप्तिहेतोस्ते स्वधा। इदमुदक गागम्—ओं गङ्गे चेत्यादि गङ्गा जलम्। ओं अद्ये हे त्यादि पूर्व सकल्प मुच्चार्य अमुक गोत्र. अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् रुद्रस्वरूपाय कर्त्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धे एष पिण्डो अमृतस्व रूपोऽ अक्षय तृप्ति हेतो स्वधा। इद मुदक गागम् ॥ २ ॥ ओं अद्ये हेत्यादि पूर्व सङ्कल्पमुच्चार्य अमुक गोत्र अस्मत्प्रपितामह अमुक शर्मन् आदित्य स्वरूपाय कर्त्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धे एषपिण्डो अमृतस्वरूपोऽक्षय तृप्तिहेतोस्ते स्वधा। इद उदक गागम् गगेश्च यमुनेत्यादि ॥ ३ ॥ ओं अद्येहे त्यादि पूर्व संकल्प सिद्धि रस्तुअमुक गोत्राये अस्मन्मात्रे. अमुकी देवी गायत्री स्वरूपे (सापत्ये) अद्य कर्त्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धे एप पिण्डो अमृतस्व रूपेऽक्षय तृप्तिहेतोस्ते स्वधा। इद मुदकं गागम् ॥ ओं अद्येहे त्यादि पूर्व सकल्प सिद्धिरस्तु अमुक गोत्राये अस्मत्पितामही अमुकी देवी (सापत्यादेवो) सावित्रीस्वरूपेऽय कर्त्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्ध एप पिण्डोऽमृत स्वरूपे अक्षय तृप्ति हेतोस्ते स्वधा, इदमुदकं गागम् ॥ ओं अद्येहेत्यादि पूर्व सकल्प सिद्धिरस्तु अमुक गोत्राये अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी (सधवादेव्यं) सरस्वती स्वरूपे अद्य कर्त्तव्य तीर्थ श्राद्धे एप पिण्डो अमृतस्व रूपे अक्षय तृप्ति हेतोस्ते स्वधा ॥ एव सपत्न जननी ॥ इद मुदकगागम् गगे चेत्यादि ॥ द्वितीयगोत्रम् ओं अद्येहे त्यादि पूर्व सकल्प मुच्चार्य अमुक गोत्रा अस्मन्माता मह अमुक शर्मन यथा योग्य सपत्नीकः वसु स्वरूपाय

कर्त्तव्यं अमुक तीर्थ श्राद्धे एष पिण्डो अमृतस्वरूपो अक्षय तृप्ति हेतोस्ते स्वधा इदं मुदक मागम् ॥ ओं अद्येत्यादि पूर्वं सङ्कल्प मुच्चार्य अमुकगोत्राः अस्मत्प्रमाता मह अमुक शर्मन् यथा योग्य सपत्नीक वसु स्वरूपाय कर्त्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धे एष पिण्डो अमृत स्वरूपो अक्षय तृप्ति हेतोस्ते स्वधा ॥ ओं अद्येहेत्यादि पूर्वं सङ्कल्पमुच्चार्य अमुक गोत्राः अस्मन्वृद्ध प्रमातामह अमुक शर्मन् यथायोग्य सपत्नीक वसु स्वरूपाय कर्त्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धे एष पिण्डो अमृत स्वरूपो अक्षय तृप्ति हेतोस्तेस्वधा ॥ इदं मुदक मागम् गगे चेत्यादि तीर्थ मन्त्रेण ॥ एवं श्री वनयादि पुत्र पुत्र्योऽपि पितृव्य. ज्येष्ठ कनिष्ठ यथायोग्य सपत्नीकः, मातुल. मोऽपि सखी, पितृष्वसा-मातृष्वसा आत्मस्वसा (यथायोग्या) जामापिता: गुरु शिष्या. आश्रिता समस्त पितृभ्य थाइन-अस्म शत्रादि, आद्यकर्त्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धे एषपिण्डो अमृत-स्वरूपोऽक्षय्य तृप्तिहेतोस्तेभ्यधा । इय भूमिरिति । इदं मुदक मागम् गगेचेत्यादि तीर्थ मन्त्रेण पुन एक पिण्डमादाय—ओं आब्रह्मणो ये पितृ वंश जाता मातुस्तथा वंश भवामदीयाः । कुल द्वये ये ममदासभूता भृत्यास्तथैवाश्रित सेवकाश्च मित्राणि सख्य. पशवश्च वृक्षा दृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतो पकारा. जन्मान्तरे ये मम सगतारच तेभ्य स्वधा पिण्ड मिमं ददामि ॥इति दत्वा । पुनरपर पिण्डमादाय ओं पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामह । माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ मातामहा मातिपिताचप्रमाता महत्वा त्वय । तेभ्यो पिण्डो मयादत्त ह्यक्षय्य मुपतिष्ठताम इति दत्वा ॥ तत. आलूतकुश मूलेन ओं लेप भागिना भय भागोस्तु इति लेप भागिभ्य. प्रति पक्ति लेप भागं च, दद्यात् इति कर प्रोक्ष्य मर्थ कृत्वा द्विराचम्य हरिस्मरेत् तत अपमव्यने मत्यवने जलम् । मोटकमादाय ओं अद्यामुक गोत्र अस्मत्पित. अमुक शर्मन् वसु स्वरूप त्वय कर्त्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धे पिण्डे अवनेजने जनन्ते स्वधा, एवं इति दत्वाऽन्येभ्योपि पिण्ड मत्यवने जल दत्वा हव्येन आचम्य पुन्यावत मुदीच्या उत्थाय ओं अत्र पितरो मादयध्वं यथा भागमा वृषायद्ध्वम् इति उत्तपभि मुख पठित्वा स्वाम नियम्य भास्कार मूर्तीत् पितार्द्दान्ध्यायन् ॥—ॐ अमीमदन्त पितरो यथा भागमा वृषायिषत् इति पठित्वा पुष्पादिकानि पिण्डोपरिनिक्षिपेत् । नीवी विस्रस्य । सव्येन आचम्य हरि स्मरेत् अपसव्येन सूत्रमादाय—वामेन पाणिनाभूत सूत्र दक्षिणेन आदाय ॐ नमोव. पितरो रसाय नमोव पितरः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोव पितर. स्वधायै नमोवः पितरो घोराय नमोव. पितरो मन्यवे नमोव पितर. पितरो नमो वोगृहान्न. पितरोदत्त सतोव पितरोऽस्मे वद पितरो वास इति मन्त्रेण प्रत्येक पिण्डो परिसूत्रं

दद्यात्। ततः क्रमेण प्रत्येक पिण्डान् गन्धादिभिः सम्पूज्य धूपदीप नैवेद्यादि निवेद्य ॐ पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यो नमः ॐ मातृ पितामहि प्रपितामहिभ्योनमः ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महेभ्यः अमुका मुकामुक शर्मभ्यः सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरुपेभ्यः तथाः अन्येभ्यः आऽउसमस्तेभ्यः दृच पिण्डेभ्यः आधकर्तव्य अमुक तीर्थ श्राद्धेभ्यः एतानि पिण्डार्चनानि अत्र वस्त्र सूत्र गन्ध पुष्पाक्षत धूप दीप उपायन द्रव्य नैवेद्य ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि अनेकधाभागं विभज्य युष्मभ्यः स्वधा ॥ इति पिण्डे उत्सृजेत्। ततः आशिषः प्रार्थयेत् सव्येन ॐ गोत्रन्नोवर्धताम् ॐ वर्धताम् इति प्रति वचनम्। ओं दातारोनोभिवर्धताम् ॐ वर्धन्ताम्। ओं वेदावर्धन्ताम्। ॐ सन्तति वर्धन्ताम्।—ओंवर्ध॰ताम्। ॐ श्रद्धा चनो माव्य गमत् ॐ मागात् ॐ बहुदेयं चनोस्तु ॐ अस्तु। ॐ अन्नं चनो बहुभवेत् ॐ अतिथीं श्चलभे महि। ओं लभष्यम्। ॐ याचितारश्चनः सन्तु ओंसन्तु। स्व तिलकं सत्वा नुष्टान सम्पन्नाः सर्वदा यक्ष बुद्धय. पितृमातृ परास्चैव सन्त्वस्मत् कुलजा नरा। ॐ यं कामंकाम-यते सोस्मै काम समृध्यतां मिति ब्राह्मण हस्तेनस्व तिलकं [देव ब्राह्मण (वैश्वदेव) स्पर्शन पूर्वकं] कारयेत्। ततः अपसव्येन ॐ स्वधावाच यिष्ये ॐ वाच्यताम्। रिक्ताञ्जलिना ॐ अद्यामुक गोत्रेभ्योऽऽस्मत्पितृ पितामह प्रपिता महेभ्योऽअमुका मुकामुक शर्मभ्यः यथायोग्य सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः। तथा अमुक गोत्रेभ्य. अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमाता महेभ्योऽमुका मुकामुक शर्मभ्य यथायोग्यस सपत्नी केभ्यवसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्य तथा अन्ये भ्यश्च समस्तेभ्योद्दत्त पिण्डेभ्यो: अमुक तीर्थ श्राद्धेभ्यस्वधोच्यताम् ॐ अस्तु स्वधा। ॐ ततः सपयस्कं पुटकं वाम हस्ते कृत्वा ॐ ऊर्जवहन्ती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितृ न्॥ इति दक्षिणाग्रां पयोधारां दत्वा पृच्छेत्। ओं पिण्डाः सम्पन्नाः ओं सुसम्पन्ना ओं पिण्डान्नुत्थाय यामि, ॐ उत्थापयस्व। ततः नम्री भूय पिण्डान् सव्येना माघ्र। अपसव्ये-नोत्थापयेत्। पिण्डाधार कुशानुल्मुक च वह्नौक्षिपेत्। ततः सव्येन पिण्डिकायां शङ्ख चक्रं च ७। ४ विलिख्य ॐ शङ्खायनमः। ॐ चक्राय नमः। ॐ शंख चक्राभ्यां नमः इतियवैः अपसव्येन पिण्डान् पिण्डिको परि निधाय गयायां पितृ रूपेण स्वयमेव जनार्दनः त दृष्टवा पुण्डरी काक्षं मुच्यते च ऋणत्रयात् इतिः सव्येन पूजयेत् ॐ वसन्ताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्मायच नमो नमः॥ वर्षाभ्यश्च शरत्संज्ञ ऋतवेच नमोनमः। हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शिशिरायच। मास सम्वत्सरेभ्यश्चदिवसेभ्यो नमो-नमः॥ इति वसन्तादिषड् ऋतुभ्यो नमः एवं दक्षिणाद्रव्याणि आदाय पूजयेत्—हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं इतिरेय द्रव्यावनना। ततः कुशादि

सहितं दक्षिणाद्रव्यं आदाय ॐ अद्यामुक गोत्राणा मस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानाममुकामुकामुक शर्माणा यथा योग्य सपत्नीकानां वसु रुद्रा दित्य स्वरूपाणा तथ अमुक गोत्राणामस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाममुकामुकामुक शर्माणा (वा) यथा योग्य सपत्नीकाना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा कृतैतत् अमुक तीर्थ पिण्डदान प्रतिष्ठाथ दक्षिणा द्रव्यं यथा नाम दैवत यथा नाम गोत्रायेत्यादि नाविश्वेदेव ब्राह्मणाय दद्यात्। पुन कुशादि सहित दक्षिणा द्रव्य आदाय ॐ अद्यामुक गोत्राणा मस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानाममुका मुका मुक शर्माणा (वा) यथायोग्य सपत्नी काना वसु रुद्रादित्य स्वरूपाणा। तथा द्वितीय गोत्राणा मस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाम मुका मुका मुक शर्माणा (वा] यथा योग्य सपत्नी काना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा तथा अन्येषामस्त पितृणा कृतैतत् अमुक तीर्थ श्राद्धे पिण्ड दान प्रतिष्ठार्थमिदं सुपूजितं हिरण्य यथानाम दैवत यथा नाम गोत्रेभ्य यथा यथा नाम शर्मभ्य पितृ ब्राह्मणेभ्य यथा यथा भाग विभज्य दातु मह मुत्सृजे ॥ पुन भूयसी दक्षिणामादाय ॐ अद्यामुक गोत्राणामस्म त्पितृपितामह प्रपितामहानाम मुका मुका मुक शर्माणा (वा) यथायोग्य सपत्नीका ना वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणा। द्वितीय गोत्राणा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाम मुका मुका मुक शर्माणा (वा) यथा योग्य सपत्नीकाना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा अद्य कृतैतद् मुक तीर्थ श्राद्ध सागता सिद्धये न्यूनाति रिक्तपूर्तये च अमुक द्रव्य ममुक दैवत ममुकामुकामुक गोत्रेभ्योऽमुका मुकामुकनाम शर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा भाग विभज्य यथा काले दातुमह मुत्सृजे इति ब्राह्मणेभ्यो दद्यात्। तव भूरि लोचन विश्वे देवा प्रीयन्ता मिति प्रणमेत्। अपसव्येन वाजे २ वत वाजिनो धनेषुविप्राऽमृता ऋतज्ञा अस्यमध्वा पिबमादयध्वं तृप्ताय्यात पथिभिर्देव यानै। इति मन्त्रेणपितृ न्विसृजेत ॥ सव्येन ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्यये वच नम स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नम्य इति पठेत्। ॐ यत्कृतम् तत्सुकृत मस्तु यन्न कृत तद्विष्णो प्रसादात ब्राह्मणवचनात् परिपूर्णम् स्तु अस्तुमरि पूर्णम् इति ब्राह्मणा। ॐ प्रमादा त्कुर्वता कर्म प्रच्य वेताध्वरषु स्मरणा त्तवाद्विष्णो सम्पूर्ण स्यादिति श्रुति ॥ आयु पूजा धन विद्या स्वर्ग मोक्ष सुखा नि च प्रयच्छन्तु तथा राज्य पितर —श्राद्ध तर्पिता ॥—॥ ततो वक्ष्यमान् आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्त तर्पण पितृ मानवा दीन्तिलोदकाञ्जलिभिस्तर्पयेत्—ॐ आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्त देवर्षिपितृमानवा। तृप्यन्तु पितर सर्वे मातृ मातामहादय ॥ १ ॥ /पन

वशो मृगायेव मातृ व शो तथैवच । गुरुश्वसुर बन्धूना ये चान्ये वान्धवा स्मृता ।।२।। ते तृप्ति मखिलायान्तु ये चास्मत्तोय काङ्क्षिण ये ऽबान्धवा वान्धवायेऽन्यजन्मनि वान्धवा ।३।। तेसर्वेतृप्तिमायान्तुमद्दत्तेनाम्बुनाऽखिला ।। देवासुरास्तथा यक्षानागागन्धर्वराक्षसा ।।४।।पिशाचागुह्यका सिद्धा कूष्माण्डास्तर व खगा ।। जलेचराभूमि चरा वाय्वाहाराश्च जन्तव ।।५।। ते तृप्तिमखिलायान्तुमद्दत्तेनाम्बुनाऽखिला नरकेषुसमस्तेषुयातनासुचयेस्थिता ।। ६ ।। तेषा माप्या यनायेतद्दीयते सलिल मया ।। अतीत कुलकोटीना सप्तद्वीपनिवासि नाम् ।। आवह्म भुवना, ल्लोकानिदमस्तु तलो दकम् ।। यत्र क्वचनसस्थानाा तृष्णोपहतात्मनाम् ।। इद मक्षय मेवास्तु मया दत्त तिलो दकम् ।। इतिमन्त्रे णातिल मिश्रित वारि धारा श दद्यात् । अथ वस्त्र निष्पीडन विधाय-एके चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो रिमता । ते पिबन्तु मया दत्त वस्त्र निष्पीडनो दक मिति मन्त्रेण वजल भूमौ निक्षिपेत् ।। तत सव्यं कृत्वा पूर्वाभि मुखो भूत्वा आचम्य जले ब्रह्मादि देवान पूजयेत्।।—ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथम पुरस्ताद् द्विषी मत सु रुचोऽबेन ऽआव ।। सबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्टा सतश्च योनिम सतश्चविव ओं ब्रह्मणे नम ओं इद विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् ।। समूढमस्य पा ष्ठ सुरे स्वाहा ।। ओं विष्णवे नम ।। ॐ नमस्ते रुद्र मन्य वऽउतोतऽइषवे नम ।। बाहुभ्या मुतते नम ।। ओं रुद्राय नम ।। ओं भूर्भुव स्व तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ।। धियो योन प्रचोदयात् ।। ओं मित्राय नम ।। ओं वरुण स्योत्तम्भनमसि वरुणस्य ऽस्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदन मासीद ।। ओं वरुणाय नम ।। अथोत्थाय सूर्य्यायार्घ्यं दद्यात् ।। अर्घपात्रे जलगन्धपुष्पादीनिनिधाय ।। ओं एहि सूर्य सहस्रांशोतेजो राशे जगत्पते ।। अनुकम्पयमा भक्तयागृहाणार्घ्यं दिवाकर इति मन्त्रेण अर्घ्यं दद्यात् ।। तत उत्थायैव सूर्यो पस्थानम् । ओं अदृश्र मस्य केतवोविरश्मयोजनाँ ऽ अनु ।। भ्राजन्तोऽअग्नयो यथा ।। उपयाम गृह तोसि सूर्यायत्वाभ्राजायैवते योनि सूर्यायत्वा भ्राजाय ।। सूर्यभ्राजिष्ट भ्राजिष्ट स्त्वन्देवेष्वसित्वा निष्ठोहम्मनुष्येषुभूयासम् ।। ॐ हथस शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदि षदतिथि र्दुरोणसत् ।। नृषद्वर सदृत सद् व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा ऽ अद्रिजाऽऋतम्बृहत् इति मन्त्राभ्या सूर्यं सुपस्थाय प्रदक्षिणी कृत्यदिग्भ्यो दिग्देवेभ्यश्च प्रणमेत् । ओंप्राच्यैदिशेनम । ओं इन्द्रायनम । ओं आग्नेय्यै दिशे नम । ओंअग्नये नम । ओंदक्षिणायैदिशे नम ओं यमाय । ओं नैऋर्त्यैदिशे नम ओं निऋ तये नम । ओं

प्रतीच्यैदिशे नम वरुणाय नम ॥ ओं वायव्यै दिशे नम ओं वायव्ये नम ॥ ओं उदीच्यै दिशे नम ओं कुवेराय नम ॥ ओं ईशान्यैदिशे नम ओं ईशानाय नम ॥ ओं ऊर्ध्वायैदिशेनम — ओं ब्रह्मणे नम ॥ ॐ अधोदिशे नम अनन्ताय नम ॥ तत उपविश्य प्रणमेत् ॥ ओं ब्रह्मणे नम । ओं अग्नये नम ओं पृथिव्यै नम । ओं आपधिभ्यो नम । ओं वाचे नम । ओं वाचस्पतय नम । ओं विष्णवे नम । ओं महद्भ्यो नम । ओं अद्भ्यो नम । ओं अपाम्पतये नम । ओं वरुणा । य नम । ओं सम्बद्धसाप यसा सन्त्वतु मिरण्महि मनसा स ७ शिवेन ॥ त्वष्टा तु वक्रो विबद्धातु रायो सुमाण्डु तन्वो यद्विलिष्टम् ॥ इति मन्त्रेण सनख कर द्वयेन मुख विमृश्य । तच्चक्षुरीति मन्त्रेण चक्षु स्पर्शं कुर्यात् ॥ ओं त चक्षु देवहितम्पुरस्ता च्छुक्र मुच्चरत् । पश्येम शरद शतञ्जीवेम शरद शत ७ शृणु याम शरद शत प्रब्रवाम शरद शतमदीना स्याम शरद शतम्भूयश्च शरद शतात् ॥ इति मन्त्रेण नामिकाङ्गुष्ठाभ्या जल स्पृष्ट्वा, चक्षु स्पर्शं विदधीत । तत ॐ देवागातु विदो गातु वित्वागातुमित ॥ मनसस्पतऽइमन्देवयज्ञ ७ स्वाहा वातेधा इति मन्त्रेण पितृन् विसृज्य कायेन वाचेति मन्त्रेणेश्वरार्पण कुर्यात्— कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वाबुध्यात्मनावा प्रकृति स्वभावात् ॥ करोमि यद्यत् सकल परस्मै नारायणा यति समर्पयेति ॥ कर्मपात्रस्थ कुशान्ति भूभावुत् सृजत् ॥ यस्यस्मृत्या चना मोक्तया तपोयज्ञ क्रिया दिषु । न्यून सम्पूर्ण वा याति सद्योवन्दे तमच्युतम् ॥ चतुर्मिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्या पञ्चभिरेव च हूयते च पुनर्द्वाभ्या ससेविष्णु प्रसीदन्तु इति पठेत् तत गन्धाक्षत पुष्पाद्युपचाराय यद्य मानमन्त्रा पठित्वा गन्धादिभि यजमानस्यतिलक कुर्यु ॥ वैदिक मन्त्रा ओं शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रा न श्चक्रा जरसन्तन् नाम ॥ पुत्रासोयत्र पितरो भवन्ति मानोमध्यारी रिषतायुर्गन्तो ॥ १ ॥ अदिति र्द्यौ रदिति रन्त रिक्ष मदितिर्माता सपिता सपुत्र ॥ विश्वेदेवाऽअदिति पञ्च जना ऽअदिति ज्जात अदितिर्जनित्वम् ॥ स्वादु ष ७ सद पितरोवयोधा कृच्छ्र श्रित शक्ती वन्तोगभीरा । चित्र सेनाऽइपुबला ऽअमृद्धा सतो वीरा उरवो व्रात साहा ॥ ३ ॥ ब्राह्मणा [illegible] पितर सोम्या स शिवनोद्या शा पृथिवी अनेहसा ॥ पूषा न पातुदुरिता दृता वृधा रक्षा माकिर्नोऽघशसऽईशत ॥ ४ ॥ पितृभ्य स्वधा यिभ्य स्वधानम पितामहेभ्य स्वधायिभ्य स्वधानम । प्रपितामहेभ्य स्वधायिभ्य स्वधानम । अक्षन्न पितरो मामदन्त पितरोती

तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ५ ॥ पुनन्तुमा पितरः सोम्यासः पुनन्तुमा पितामहा पुनन्तु प्रपिता महा ॥ पवित्रेण शता युषा। पुनन्तुमा पिता महाः पुनन्तु प्रपिता महाः । पवित्रेण शतायुषाविश्च म् आयुर्व्यं श्नवै ॥ ६ ॥ ततो यजमानो गृहीत तिलको ब्राह्मण पादान् प्रक्षाल्य पादोदकं गृहीत्वा ॥ तान्ब्राह्मणान् पायसादिभि र्भोजयित्वा तेभ्यो लब्ध्वाभ्यनुज्ञः सपरिवार स्वयं मपि भुञ्जीतः ॥ तत् ॥ श्राद्धीयद्रव्याणि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् तद् भावे जलेवानिक्षिपेतः इति सगृहितम् ॥ प्रा० धेनु' अ० द्रष्टव्य।

अथ पितृसूक्तम् ॥

ॐमधुमधु मधु ॐमधुव्वाताऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ मधुनक्त मुत्तोपसो मधु मत्पार्थिव ऌरज मधुद्यौ रस्तुनः पिता ॥ २ ॥ माधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ ॥ २ ॥ ऽअस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तुनः ॥ ३ ॥ ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा. सोमाय पितृ मते स्वाहा अपहृता असुरक्षा ऌसि वेदि पदः ॥ ४ ॥ ये रूपाणि प्रति मुञ्चमाना। असुराः सन्तस्स्वधया चरन्ति परा पुरोये भरन्त्यग्निष्टॉ ल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥ ५ ॥ अत्र पितरो मादयध्वम् । यथाभागमा वृषायध्वम् । अमीमदन्त पितरो यथा भागमा वृषायिषत् ॥ ६ ॥ ॐ नमोवः पितरोरसाय नमोव.पितर शोषाय नमोवः पितरोजीवाय— नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो घोराय नमोवः पितरो मन्यवे, पितर पितरो, नमोवो गृहान्नः पितरो दत्त सतोवः पितरो देष्मै तद्वः पितरोव्वास आधत्त ॥ ७ ॥ आधत्त पितरो गर्भ कुमारं पुष्कर स्रजम्। यथेह पुरुषोऽसत् ॥ ८ ॥ ऊर्ज्ज वहन्तीर मृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् स्वधास्थतर्पयतमे पितृन्॥९॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्य. स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्य. स्वधानमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्त पितरोऽती तृपन्त पितरः पितरःशुन्धद्ध्वम् ॥१०॥ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु माँ पिता महाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषाः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहा प.वित्रेण शतायुषाविश्वं आयुर्व्यश्नवै ॥ ११ ॥ अग्न आयूऌषि पवसःऽआसु वोर्ज्ज मिष च नः आरे वाधस्व दुच्छुनाम् ॥ १२ ॥ पुनन्तु माँ देव जनाः पुनन्तु मनसा धियः पुनन्तु विश्वा भूतानि जात वेदः पुनीहिमा ॥ १३ ॥ पवित्रेण पुनी हिमा शुक्रेण देव दीद्यत् अग्ने कत्वा कतूँ १ रनु यत्ते पवित्र मर्चिष्यग्ने वितत मन्तरा ब्रह्मतेन पुनातु मा ॥ १५ ॥ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः

यः पोता मपुनातुमा ॥ १६ ॥ उभाभ्यांदेव सवितः पवित्रेण न च मां पुनीहिविश्वतः ॥ १७ ॥
वैश्व देवी पुनती देव्यागा धस्यामिमा बह्वयः स्वन्वीतपृष्ठाः । तया मदन्त सधमा देपुषय स्याम पतयोरयीणाम् ॥१८॥ ये समानाःसमनसः पितरो यमराज्ये तेषां ल्लोकः स्वधानमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥ १९ ॥ ये समाना समनसो जीवा जीवेषु मामकाः तेषा ꣳ श्रीर्मयि कल्पता मस्मिल्लोके शत समाः ॥ २० ॥ द्वेसृती अशृणवं पितृणामहं देवाना मुतमर्त्यानाम् ताभ्यामिदंविश्व मेजत्समेतिय पितरं मातरंञ्च ॥ २१ ॥ इद ꣳ हविः मजननं मे अस्तु दश वीर ꣳ सर्व गणं ꣳ स्वस्तये आत्म सनि । प्रजासनि पशु सनि लोक सन्य भयसनि । अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्न पयोरेतो अस्मा सुधत्त ॥ २२ ॥ उदीरता मवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः असुय ईयुर वृका ऋतज्ञास्तेनोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ २३ ॥ अङ्गिरसोनः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः तेषांवय ꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ २४ ॥ ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनू हिरे सोमपी थं वसिष्ठाः तेभिर्यमः सꣳरराणो हवी ꣳष्यु शन्नु शद्भिः प्रति काममत्तु ॥ २५ ॥ त्वꣳ सोम प्रचिकितो मनीषा त्वꣳ रजिष्ठ मनुनेषि पन्थाम् तव प्रणीती पितरो न इन्द्रोः देवेषु रत्न मभ जन्त धीरा ॥ २६ ॥ त्वयहि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः ॥ वन्वन वातः परिधीं१ऽरपोर्णु वीरेभि रश्वै मघवा भवानः ॥ २७ ॥ त्वꣳ सोम पितृभिः संविदानोऽनुद्यावा पृथिवीः आततन्थ ॥ तस्मैत इन्द्रो हविषा विधेम वय ꣳ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ २८ ॥ बर्हिषदः पितरऽऊत्यर्वागिमायोहव्या च कृमा जुषध्वम् ॥ आगता वसा सन्त मेना थातः शंयोररपोदधात ॥ २९ ॥ आहं पितृन्त्सुविदत्रां ॥ २ ॥ अवित्सेन पात च विक्रमणञ्च विष्णो बर्हिषदोये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहा गमिष्ठा ॥ ३० ॥ उपहूताः पितरः सोमासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ॥ त आगमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्व स्मान् ॥ ३१ ॥ आयान्तुनः पितरः सोम्यासो ऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान् ॥ ३२ ॥ अग्निष्वात्ता पितर एह गच्छत सदः सदः सदतसु प्रणीतयः अत्ताहवींषिप्रयतानिबर्हिष्यथारयि ꣳ सर्वं वीरं दधातना ॥ ३३ ॥ ये अग्निष्वाता ये अनग्निष्वाता मध्ये दिवः स्वधयामादयन्ते तेभ्यः स्वराड सुनीतिमेतायथा वशतन्वं कल्पयाति ॥ ३४ ॥ अग्निष्वात्तानृतुम तोहवामहे नाराशꣳसे सोमपी थं य आशुः । तेनो विप्रासः सुहवा भवन्तु वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ३५ ॥ आच्या जानु दक्षिणतो

निषद्येम यज्ञ मभिः गृणीत विश्वे माहिंथ सिष्ठ पितरः केन चिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम ॥ ३६ ॥ आसीनासो अरुणीना मुपस्थे रयीं धत्त दाशुषे मर्त्याय पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः ॥ प्रयच्छतत इहोर्जंदधात ॥३७॥ यमग्ने कव्य वाहनत्वचिन्मन्यसे . रयिम् तन्नोगीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनयायुजम् ॥ ३८ ॥ यो अग्निः कव्य वाहनः पितृ न्यक्षदृता वृधः प्रेदुहव्यानि वो चति देवेभ्यश्चपितृभ्य आ ॥ ३६ ॥ त्वमग्न ईडितः कव्य वाहला वाहढव्यानि सुरभीणि कृत्वाप्रादाः पितृभ्यः स्वधयाते अक्षन्‌ द्धित्वं वेव प्रयता हवीऽःषि ॥ ४० ॥ ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्मयाँ ॥ २ ॥ त्वन प्रविद्म त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतंजुषष्व ॥ ४१ । इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासोय उपरास ईयुः ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वानूनं सु वृजि ना सु विक्षु ॥ ४२ ॥ अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋत माशुषाणाः शुचीदयन्दी धिति मुक्थ शासु क्षामाभिदन्तो अरुणीरपत्रन् ॥ ४३ ॥ उशन्तस्त्वा निधीमह्यु शन्तः समिधी महि । उशन्नुशत आवह पितृन् हविषे अत्तवे ॥ ४४ ॥ श्रीन्समुद्रा न्समसृप स्त्वर्गा नपां पतिं वृषभ इष्टका नाम् ॥ पुरीषंव्वसानः सुक्र तस्य लोके तत्र गच्छत यत्र पूर्वेपरेताः ॥४५॥ आप्या यस्वसेम तुते विश्वतः सोमविष्णायम् भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ ४६ ॥ सन्ते पयां ॐ सि समुयन्तु वाजाः सं वृष्ण्या न्यभि मातिषाहः आप्याय मानो अमृताय सोम दिविश्रवा ॅ स्युत्तमानिधिष्व ॥ ४७ ॥ अग्नि प्रियेषुधाम सु कामोभूतस्यभव्यस्य सम्राडेको विराजति ॥ ४८ ॥ ओं तत्सत् ॥ इतियजुर्वेदे पितृ सूक्तम् ॥

अथ हेमाद्रौ मार्कण्डेय पुराणे रुचिस्तवः ॥

रुचिरु वाच—नमस्येऽहं तीर्थं श्राद्धे येव सन्त्यधि देवताः । देवै रपिहि तर्प्यन्ते येच श्राद्धे स्वधोत्तरैः ॥ १ ॥ नमस्येऽहं पितृन्स्वर्गे ये तर्प्यन्ति महर्षिभिः । श्राद्धैर्मनोमयैर्भक्त्याभुक्ति मुक्ति मभीप्सुभिः ॥ २ ॥ नमस्येऽहं पितृन्स्वर्गे सिद्धाः संतर्पयन्ति यान् । श्राद्धेषु दिव्यैः सकलै रूप हारै रनुत्तमैः ॥ ३ ॥ नमस्येऽहं पितृ न्भक्त्यायेऽर्च्यन्ते गुह्यकैरपि । तन्मयत्वेन वाञ्छद्भि र्ऋद्धि मात्यन्ति कीं पराम् । नमस्येऽहं पितृ न्मर्त्यै रर्च्यन्ते भुविये सदा, श्राद्धेषु श्रद्धयाभिष्ट लोक प्राप्ति प्रदायिनः ॥ ५ ॥ नमस्येऽहं पितृन्विप्रैरर्च्यन्तेभुविये सदा वाञ्छिताभीष्ट लाभाय प्राजा

प्रत्ययमद्रायिनः ॥ ६ ॥ नमस्येऽहं पितृन्ये वै तर्प्यन्तेऽरण्य वासिभिः ।
वन्यैः श्राद्धैर्यता हारैस्तपो निर्धूत किल्बिषैः ॥ ७ ॥ नमस्येऽहं पितृन्विप्रै
र्नैष्ठिकं ब्रह्म चारिभिः ये सं संयतात्मभिर्नित्यम् सं तर्प्यन्ते समाधिभि ८ ॥
नमस्येऽहं पितृञ्छ्राद्धे राजन्या स्तर्पयन्ति यान् कव्यैर शेषैर्विधिव ल्लोक
त्रय फल प्रदान् ॥ ९ ॥ नमस्येऽहं पितृन्वैश्यै स्तर्प्यन्ते भुवि ये सदा
स्वकर्माभिरतै र्नित्यं पुष्प धूपान्न वारिभिः ॥ १० ॥ नमस्येऽहं पितृञ्छ्राद्धे
ये शूद्रै रपि भक्तितः सन्तर्प्यन्ते जगत्यत्र नाम्ना ज्ञाताः सु कालिनः ॥११॥
नमस्येऽहं पितृञ्छ्राद्धैः पाताले ये महा सुरैः सन्तर्प्यन्ते स्वधा हारास्त्यक्त
दम्भ मदैः सदा ॥ १२ ॥ नमस्येऽहं पितृञ्छ्राद्धै रर्च्यन्तेये रसातले ।
भोगैर शेषैर्विधि वन्नागैः कामा नभीप्सुभिः ॥ १३ ॥ न मस्येऽहं पितृ-
ञ्छ्राद्धैः सर्पैः सन्त पितान्सदा । तत्रैव विधि वन्मन्त्र भोग संपत् सम-
न्वितैः ॥ १४ ॥ पितृन्नमस्येनिवसन्ति साक्षात् ये देव लोके थ तथान्त
रिक्षे ॥ महीतले ये च सुरादि पूज्याः तेमेप्रयच्छन्तु मयोपनीतम् ॥ १५ ॥
पितृन्नमस्ये परमात्म भूता ये वै विमाने निवसन्ति मूर्ताः । यजन्ति
यानस्तमलैर्मनोभिर्योगिश्वराः क्लेश विमुक्ति हेतून् ॥ १६ ॥ पितृन्नमस्ये
दिवि ये च मूर्ताः ॥ स्वधा भुजः काम्य फलाभि सन्धौ ॥ प्रदान शक्ताः
सकलेप्सितानां वि मुक्ति दायेऽनभि सहितेषु ॥ १७ ॥ तृप्यन्तुतेऽस्मिन्पि-
तरः समस्ता इच्छावतां ये प्रदिशान्ति कामान् ॥ सुरत्वमिन्द्रत्वमतोऽधिकं
वा, सुतान्पशू न्स्वानिवल गृहाणि ॥ १८ ॥ सोमस्यये रश्मिषुयेऽर्क विम्बे,
शुक्ले विमानेच सदा वसन्ति ॥ तृप्यन्तु तेऽस्मिन्पितरोऽन्न तोयैर्गन्धा
दिनापुष्टि मितोव्रजन्तु ॥ १९ ॥ येषां हुतेऽग्नौहविषा च तृप्तिः ये भुञ्जते
विप्र शरीरभाजः ये पिण्ड दानेन मुदं प्रयान्ति तृप्यन्तु तेऽस्मिन्पितरो-
न्नतोयैः ॥ २० ॥ ये खड्गमांसेनसुरैरभीष्टैः कृष्णैस्तिलैर्दिव्यमनो हरैश्च ।
कालेन शाकेन महर्षिवर्यै संप्रीणि ता-तेमुद मन्नायान्तु ॥ २१ ॥ कव्यान्य
शेषाणि चयान्यभीष्टा न्यतीव तेषा ममराचितानाम् । तेषान्तु सानिध्य
मिहास्तुपुष्प,गन्धाम्बुभोज्येषु मयार्पितेषु ॥२२॥ दिने दिनेयेप्रतिगृह्णतेऽर्चाम् ।
मासान्त पूज्या भुवियेऽष्टकासु, येवत्सरान्तेऽभ्युदये च पूज्या प्रयान्तु ते
मे पितरोत्र तृप्तिम् ॥ २३ ॥ पूज्या द्विजाना कुमुदेन्दुभासो ये क्षत्रिया-
णाञ्च नवार्क वर्णाः । तथा विशांये कनक प्रभाता नीलीनिभा शूद्र
जनस्य येच ॥ २४ ॥ तेऽस्मिन्समस्ता मम पुष्प गन्ध, धूपान तोयादि
निवे दनेन, तथाग्नि होमेनचयान्तु तृप्ति सदा पितृभ्यः प्रणतोऽस्मि
तेभ्य ॥ २५ ॥ ये देव पूर्वाण्यति तृप्ति हेतोरश्नन्ति कव्यानि शुभा
हृतानि, तृप्ता श्चये भूति सृजो भवन्ति तृप्यन्तु तेऽस्मिन्प्रणतोऽस्मि
तेभ्यः ॥ २६ ॥ रक्षांसि भूतान्य सुरांस्तथोग्रान् निर्णाश यन्तस्त्व शिवं

प्रजानाम् ।आद्याःसुराणाममरेशपूज्यास्तृप्यन्तुतेऽस्मिन्प्रणतोऽस्मितेभ्य॥२७॥ अग्निष्वात्ता वर्हि षदः आज्यपाः, सोमपास्तथा। व्रजन्तु तृप्तिं श्राद्धेऽस्मिन् पितर स्तर्पिता मया॥ २८॥ अग्निष्वाताः पितृ गणाः प्राची रक्षन्तु मे दिशम्। तथा वर्हि षदः पान्तु याम्यां ये पितरस्तथा॥ २९॥ प्रतीचीं माज्यपा स्तद्व दुदीची मपि सोमपाः ऊर्द्ध्वंव स्त्वर्यमा रक्षेत्कव्य वाडनलोऽप्यधः॥३०॥विश्वे देवाश्चवः पान्तुऊर्द्ध्वं पान्तुमरुद्गणाः। रक्षो भूत पिशाचेभ्यस्तथैवा सुर दोषतः। सर्वतश्चाधिप स्तेषां यमो रक्षां करो तु मे। ३१॥ विश्वा विश्व भुगाराध्यो धर्मो धन्यः शुभा ननः। भूतिदो भूति कृद्भूतिः पितॄणां ये गणा नव॥ ३२॥ कल्याणः कल्पदः कर्ता कल्यः कल्पतरा श्रयः कल्पना हेतु रनघाः षडिमे ते गणा स्मृताः॥ ३३॥ वरो वरेण्यो वरदः पुष्टिद स्तुष्टिद स्तथा। विश्व पाता तथा धाता सप्तैवैते तथा गणाः॥ ३४॥ महान्महात्मा महितोमहिमवान् महाबलः। गणाः पञ्च तथैवैते पितॄणां पाप नाशनाः॥ ३५॥ सुखदो धनदश्चान्यो धर्म दोऽन्यश्चभूतिदः। पितॄणां कथ्यते चैत तथा गण चतुष्टयम्॥ ३६॥ एक त्रिंशत्पितृगणा यैर्व्याप्त मखिलं जगत्। वेमेऽत्र तृप्तापितरस्तुष्यन्तु च सदा हितम्॥३७॥ स्तोत्रेणानेन च नरो योऽस्मां स्तोष्यति भक्तितः तस्य तुष्टा वय भोगान्दास्यामो ज्ञानमुत्तमम्॥ ३८॥ तस्मा देत्त त्वया श्राद्धे विप्राणा भुञ्जतां पुरः श्रावणीय महाभाग अस्माकं तृप्ति कारकम्॥ ३९॥ इतिरुचिस्तवः॥

अथ रक्षोघ्नीश्च पठेत्॥

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवां इभेन॥ तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्यरक्षसस्त पिष्ठैः॥ १॥ तव भ्रमास आशु या पतन्त्य नुस्पृशधृषता शोशु चानः॥ तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गा न सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः॥ २॥ प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः। योनो दूरेऽअघश १० सोयोऽअन्त्यग्ने माकिष्टेव्यथिरा दधर्षीत्॥ ३॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्याते नुष्वन्य मित्रां ओषतात्तिग्म हेते॥ यो नो अराति १० समिधान चक्रेन नीचा तंधक्ष्यतसं न शुष्कम्॥ ४॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्या ध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने॥ अवस्थिरा तनु हियांतु जूनां जामिमजामिम्प्रमृणी हि शत्रून्॥ अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥ इति रक्षोघ्नी ऋचम्।

गर्गः—कृष्णे भाद्रपदे मासि श्राद्धं प्रति दिनं भवेत्। पितृणां प्रत्यहं कार्यं निषिद्धा हेऽपि तर्पणम्॥

अथ तर्पण प्रयोगः॥

आचम्य प्राणा नायम्य कुश पवित्र धारणम्—(दक्षिणहस्तस्या नामिका यां—ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्य च्छिद्रेण पवित्रे ण सूर्य्यस्य रश्मिभिः॥तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥ १॥ मन्त्रेण धारयेत्, सल्पः ॐ विष्णवे नमः—अद्यपूर्वोच्चारित एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ ममाऽऽत्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं देव ऋषि मनुष्य पितृ तर्पणा महं करिष्ये॥ आम्र पात्रे रौप्य पात्रे वा तर्पणार्थे उदक पूरणम्—(एतत्पात्रे प्रथम श्वेतगन्ध यवान्ऽतदभावेतण्डुलान्) सुगन्ध पुष्पाणि तुलसी दल सहितानिनिदध्यात् तदन्तर तत्पात्रो परि हस्त प्रमाणान प्रादेश प्रमाणान् प्राग्रोन कुशान् प्राग्मान् स्थापयित्वा पश्चान्मन्त्रेण तत्पात्रं जलेन [पूरयेत्॥)—ॐ विश्वान्देवान् भवन्तु (केषाञ्चिन्मते भाद्ध कर्माणि कुर्यात् नतु तर्पणे।) आवाहयिष्ये ॐ आवाहय॥ ॐ विश्वेदेवासऽआगत शृणुतामऽइमꣳ हवम्। एदम्बर्हिर्निषीदत॥ २॥ ॐविश्वेदेवाः। शृणुतेमꣳ हवम्मे येऽअन्तरिक्षे यऽउपद्यविष्ठ। येऽअग्नि जिह्वाऽउत वा यजत्राऽआसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ ३॥ ततो देवानामा वाहनम्—(पूर्वं पात्रे परिस्थापित त्रीन्कुशान् तुलसीदल संयुक्तानदक्षिण कर सम्पुटे धृत्वा तदनन्तरं तस्योपरि वाम हस्त मग्रो मुखं कृत्वा पश्चा देवाना वाहयेत्॥) आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तुते॥ ३॥ ॐ भवामः॥ देव तर्पणम्—ॐ ब्रह्मास्तृप्यताम्। ओं विष्णुस्तृप्यताम्। ओं रुद्रस्तृप्यन्ताम्। ओं प्रजापतिस्तृप्यताम्। ओं देवास्तृप्यन्ताम्। ओं छन्दाꣳसि स्तृप्यन्ताम्। ओं वेदास्तृप्यन्ताम्। ओं ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतरा चार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ सम्वत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम्, ॐ देव्य स्तृप्यन्ताम् ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागा स्तृप्यन्ताम्। ओं सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षाꣳसिस्तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ

भूतानिस्तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ओं ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ओं ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ओं भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्। (तैः कुशैः) प्रागग्रैः पूर्वाभिमुखो दक्षिण हस्तस्य सर्वाङ्गुल्यग्रै देवतीर्थेनान्य पात्रे एकैकाञ्जलिं क्षिपेत्॥) ओं तीर्थानि तृप्यन्ताम्। ॐ तीर्थ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ विश्वेदेवास्तृप्यन्ताम्। ॐ मोदास्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रमोदास्तृप्यन्ताम् ॐ ।: सुमुखास्तृप्यन्ताम्। ॐ दुर्मुखास्तृप्यन्ताम्। ॐ अविघ्नास्तृप्यन्ताम्। ॐ विघ्न कर्तारस्तृप्यन्ताम्॥ मालाकारे यज्ञोपवीत विधाय- मनुष्यदेव तर्पणम्॥(ततो निवीतं कृत्वा पूर्वोक्त कुशानुदगग्रान्दक्षिण हस्तस्य कनिष्ठका मूल प्रदेशेधृत्वा पश्चादुत्तराभिमुखं मनुष्य देवेभ्यो द्वौ द्वाव ञ्जली कायतीर्थेन देयौ॥) यथाॐ—सनकस्तृप्यतु। ॐ सन०॥ ॐ सनन्दनस्तृप्यतु। ॐ सनन्दन०॥ ॐ सनातनस्तृप्यतु। ॐ सना०॥ ॐ कपिलस्तृप्यतु। ॐ कपि०॥ ॐ आसुरिस्तृप्यतु। आसु०॥ ॐ वोढुस्तृप्यतु। ॐ वोढु०॥ ॐ पञ्चशिखस्तृप्यतु। ओं पञ्च०॥ पितृ तर्पणम्—: पूर्वोक्त कुशान्द्विभुग्नान्दक्षिणाग्र मूलान् द्विगुणी कृत्वाऽङ्गुष्ठ तर्जनी मध्य प्रदेशे (दक्षिण हस्तस्य) धृत्वा दक्षिणाभिमुखं पूर्वमन्त्रित् पात्र जले अपसव्येन कृष्णतिल मिश्रणं तेन जलेनाया सव्येन पितृतीर्थेन पितृ त्रीं त्रीनञ्जलीन् दद्यात्।) यथा—ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम्। ॐ कव्यवा०ॐ क०ॐ सोमस्तृप्यताम्॥३॥ ॐ यमस्तृप्यताम्॥ ३॥ ॐ अर्यमास्तृप्यताम्। ३॥ ओं अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यताम्। ३॥ ओं बर्हिषदःपितरस्तृप्यताम्। ३॥ यमतर्पणम्॥— (यमांश्चैकैकं त्रीं त्रीनञ्जलीन्दद्यादित्याहुः।) यथा—ओं यमायनमः। ओं यमाय० ओंयमाय०। ओं धर्मराजायनमः॥३॥ ओंमृत्यवेनमः॥३॥ ओं अन्तकाय नमः। ३॥ ओं वैवस्वताय नमः। ३॥ ओं कालायनमः। ३॥ ओं सर्वभूत क्षयायनमः। ३॥ ओं औदुम्बरायनमः। ३॥ ओं दध्नाय नमः। ३॥ ॐ नीलायनमः। ३॥ ओं परमेष्ठिने नमः। ३॥—ओं वृकोदरायनः। ३॥ ओं चित्राय नमः। ओं चित्रगुप्ताय नमः। ३॥ मनुष्य पितृतर्पणम्— (स्वस्व पितृणां गोत्र नामो च्चारं कृत्वा पितृ तीर्थेन प्रत्येकंत्रीं त्रीनञ्जलीन्दद्यात्॥) उशन्तस्त्वेत्या वाहनम्—ओं उशन्तस्त्वा। निधी मह्युशन्तऽ समिधी महि। उशन्नु शतऽआवह पितॄन्हविषेऽअत्तवे॥ ४॥ नमस्तपितृना वाहयित्वे—ओं आवाहय-(तर्पणेषु प्रथमा विभक्त्यन्त पद योजयेत्॥) यथा ओं उशीरका मराऽ उत्पराऽसऽउन्मजुषमाऽ शिवरं सोम्यास। अनुष्यऽईयुमहाऽ स्वत प्राहते नो यन्तु पितरो हवेषु॥ २॥ ओं अयेहा मन्योरोऽस्मलिनाऽ

मुकशर्मा (वा) वसु स्वरूप स्तृप्यता मिद् तिलोदक तस्मैस्वधा ॥
प्रथमाञ्जलिम् ॥ अङ्गिरसोन । पितरो नवग्वाऽअथर्वाणोभृगवऽ
सोम्यास — ॥ तेषाञ्वय ऽ सुमतौ यज्ञियानामपिभद्रे सौमनस
स्याम ॥ ६ ॥ ओं अद्येहामुक गोत्रोऽस्मत्पिताऽमुक शर्मा वसु स्वरू
स्तृप्यतामिद् तिलोदक तस्मैस्वधा । इतिद्वितीयाञ्जलीम् ॥ ओं आयन्तु ।
नऽ पितर—सोम्यासोग्निष्वात्ताऽ पथिभिर्देवयानैऽ । अस्मिन्यज्ञेस्व
धयामदन्तोधिब्रु वन्तुतेऽवन्त्वस्मान्॥७॥अद्येहामुकगोत्राऽस्मत्पितामुक
शर्मावसु स्वरूपस्तृप्यता मिद् तिलोदक तस्मैस्वधा ॥ इति त्रितियाञ्जलि
पित्रे दद्यात् ॥ ओं ऊर्जं वहन्ती रमृतम्घृतम्पय— कीलालम्परिस्रुतम् ।
स्वधास्थ तर्पयत मेपितॄन् ॥ ८ ॥ ओं अद्येहामुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽ
मुक शर्मा (वा) रुद्र स्वरूप स्तृप्यता मिद् तिलोदकं तस्मैस्वधा ॥ इति
प्रथम । पितृभ्य—स्वधायिभ्य । स्वधा नम+ पितामहेभ्य+स्वधा
यिभ्य+स्वधा नम +प्रपितामहेभ्य+स्वधायिभ्यस्स्वधानम+। अक्षन्पितरो
मीमदन्त पितरोतो तृपन्तपितरऽ पितरऽ शुन्धध्वम्॥६॥ओं अद्येहाऽमुक
गोत्रोऽस्मत्पिता महोऽमुक शर्मारुद्र स्वरूपस्तृ० ॥ इति द्वितीया
ञ्जलीम् ॥ ओं ये चेह पितरो येच नेह यॉश्चविद्मयॉ२॥ उच न
प्रविद्म । त्वन्वेत्थ यतिते जातवेदऽ स्वधाभिर्यज्ञंसुकृतञ्जुषस्व ०॥
ओं अद्येहाऽमुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽमुक शर्मारुद्र स्वरूपस्तृ० । इतित्रि
तीयपितामहाय,दद्यात् ओं मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धव्र ।
माध्वीर्न्नऽ सन्त्वोषधीऽ । ओं अद्येहामुक गोत्रोऽस्मत्प्रपितामहोऽमुकशर्मा
(वा आदित्य स्वरूपस्तृप्य मिद् तिलोदक तस्मैस्वधा । इति प्रथमाञ्ज
लिम्) ॥ ॐ मधुनक्त मुतो पसो मधु मत्पार्थिव ॥ रज— । मधु द्यौ
रस्तु न ऽ पिता ॥ १२ ॥ ॐ अद्येहा मुक गोत्रो ऽ स्मत्प्रपिता
महोऽमुक शर्मा आदित्य स्वरूपस्तृ० ॥ इति—द्वितीयाञ्जलिम् ॥
ॐ मधु मान्नो वनस्पतिर्म्मधुमा २ ॥ ऽअस्तु सूर्य्य — । माध्वी
र्गावोभवन्तु न ऽ ॥ १३ ॥ अद्येहा मुक गोत्रो ऽस्मत्प्रपितामहो
ऽमुक शर्मा आदित्य स्वरूपस्तृ० ॥ इति प्रपिता महाय तृतीयाञ्जलि
दद्यात् ॥ ॐ आमावाजस्य प्रसवो जगम्या न्मे द्यावा पृथिवी
विश्वरूप ॥ आमा गन्तामपितरा मातरा चामा सोमा अमृत त्वेन
गम्यात् ॥ ॐ अद्येहा मुक गोत्राऽस्मन्माता—अमुकदा (सापत्नसजवा)
गायत्री स्वरूपा तृप्यता मिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ इति प्रथमा
ञ्जलिंदद्यात् ॥ अत्र नैव चाक्यंन मात्रे द्वितीया तृतीया ञ्जली
दद्यात् ॥ ॐ आमा वाजस्य प्रसवो जगम्या दमे द्यावा पृथिवी
विश्वरूपे ॥ आमा गन्तामपितरा मातरा चामा सोमा अमृतत्वेन

गम्यात् ॥ ॐ अद्येहामुक गोत्रा ऽस्मऽस्त्पितामही अमुक दा (वा-यथा योग्या) सवित्री स्वरूपा तृप्यता मिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ इतिपितामह्यै प्रथमा ञ्जलि दत्वा ॥ अने नैव वाक्येन द्वितीय त्रितीया ञ्जली दद्यात् ॥ ततः—आमा व्वाजस्यप्रसवो जगम्या देमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे ॥ आमागन्ता म्पितरा मातरा चामा सोमो अमृत त्वेन गम्यात् ॥ ॐ अद्येहामुक गोत्राः अस्मत्प्रपि-तामही अमुकदा (यथा योग्या) सरस्वती स्वरूपा तृप्यंतामिदं तिलोदकं तस्यैस्वधा ॥ इति प्रपिता महै प्रथमा ञ्जलिं दद्यात् ॥ अने नैव वाक्येन प्रपितामह्यै द्वितीय तृतीयाञ्जली दद्यात् ॥ ॐ मधु । मधु । मधु । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् ॥ ॐ नमो व ऽः पितरो रसाय नमोव ऽः पितर ऽः शोषाय नमोव ऽः ऽः पितरो जीवाय नमोव ऽः पितर ऽः स्वधायै नमोव ऽः पितरो घोराय नमो व ऽः पितरो मन्यवे नमो व ऽः पितर ऽः पितरो नमो वो गृहान्न ÷ पितरो दत्त सतोव ÷ पितरो देष्मै तद्व÷ पितरो व्वास (आधत्त) ॥ १४ ॥ ॐ अद्येहामुक गोत्रः ऽस्मन्माता महोऽमुक शर्मणाः (वा) यथायोग्य सपत्नीकः वरुण स्वरूपः तृप्यता मिदं तिलोदकं तस्मे स्वधा ॥ इति माता महाय सपत्नी काय प्रथमाञ्जलिं दद्यात् । एवं एव नमोवः इति मन्त्रेण माता महाय (यथायोग्य सपत्नीकाय) द्वितीय तृतीयां ञ्जलीं अपि देये ॥ ॐ नमो वः इति मन्त्रं समग्रं पठित्वा ॐ अद्येद अमुक गोत्रोऽ-स्मत्प्रमाता महो ऽमुक शर्मा (वा) यथायोग्य सपत्नीकः प्रजापति स्वरूपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधा ॥ इति प्रमाता महाय प्रथमाञ्जलिं दद्यात् ॥ एतदेव वाक्य मुच्चार्य द्वितीय तृतीयाञ्जलिं अपि तस्मै देये ॥ ॐ नमो वः इति मन्त्रं समग्रं पठित्वा ॐ अद्येहामुक गोत्रो ऽस्मद् वृद्ध प्रमाता महो ऽमुक शर्मा (वा) यथा-योग्य सपत्नीकः अग्नि स्वरूपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ इति वृद्ध प्रमाता महाय सपत्नी काय प्रथमाञ्जलि दद्यात्–द्वितीय तृतीयाञ्जलि अपि एतदेव वाक्य मुच्चार्य देये ॥ [ततो वक्ष्य माण-श्लोका ऽनुसारेण तावाम्वा इति ज्ञेष्ठ कनिष्ठादोन्सपत्नी कांश्च तर्पयेत् ॥ अद्येह ऽमुक गोत्रा अस्मद् सपत्न जननी (उपमाता) अमुकदा वसुरूपा तृप्यता मिदं तिलोदकं तस्ये स्वधा । इदं तिलो-दकं तस्ये स्वधा । इदंतिलोदक तस्ये स्वधा ॥ अद्येहामुक गोत्रा ऽस्मद् पत्नी अमुक दा वसुरूपा तृप्यता मिदं तिलोदकं तस्ये स्वधा । इदं तिलोदकं तस्ये स्वधा ॥ इदं तिलोदकं तस्ये स्वधा ॥ अद्येहा-

मुक गोत्रैः अस्मत्सुतः अमुक शर्मा (वा) वसुरूप स्तृप्यता मिदं तिलो दकं तस्मै स्वधा । इदंति० ॥ अमुक गोत्रा अस्मत्कन्या अमुकदा (यथायोग्या) वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ इ० । इ० । अमुक गोत्रः अस्मत्पितृव्यः अमुकशर्मा यथा योग्य सपत्नीक (ज्येष्ट कनिष्ट) वसु स्वरूप स्तृप्यता मिदं मिदं तिलो दकं तस्मै स्वधा नमः ॥ इ० । इ० । अमुक गोत्रः अस्मन्मातुलः अमुक शर्मा यथा योग्य सपत्नीक वसुस्वरूप स्तृप्यता मिदं० । इ० । इ० ॥ अमुक गोत्रः अस्मद्भ्राता अमुक शर्मा (वा) यथायोग्य सपत्नीक वसुरूप स्तृप्यता मि० । इ० । इ० ॥ अमुक गोत्रः अस्मत्सापत्नभ्राता अमुक शर्मा (वा) यथा योग्य सपत्नीक वसुरूप स्तृप्यतामि० । इ० । इ० ॥ अमुक गोत्रा अस्मदात्म भगिनी अमुकदा (यथायोग्या वसु रूपा तृप्यता मि० । इ० । इ० ॥ अमुक गोत्रा अस्मन्मातृ भगिनी अमुकदा (यथायोग्या) वसु रूपा तृप्यतामि० । इ० । इ० ॥ अमुक गोत्रा अस्मदात्म भगिनी अमुकदा (यथायोग्या) वसु रूपा तृप्यता मि० । इ० । इ० ॥ अमुक गोत्रा अस्म त्सापत्न भगिनी अमुकदा (सापत्या) वसुरूपा तृप्यता मि० । इ० । इ०॥ अमुक गोत्रः अस्मच्छ्वशुरः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । इ० । इ०॥ अमुक गोत्रः अस्मद्गुरुः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । इ० । इ० ॥ अमुक गोत्रः अस्मच्छिष्यः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । इ । इ० ॥ अमुक गोत्रः अस्मन्मित्रः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । इ । इ० ॥ अमुक गोत्रः अस्मदाप्तः । अमुक शर्मा वसु रूपस्तृप्यता मि० । इ० । इ०॥ ततो वक्ष्यमाणान् आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्त देवर्षि पितृ मानवा दीन् तिलो दका ञ्जलिभि स्तर्पयेत् ॥ यथा—ओं आब्रह्मस्तम्बपर्य्यन्त देवर्षि पितृ मानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ माता महादय, पितृ वंशे मृता येच मातृ वंशे तथैव च । गुरुश्वशुर बन्धूना ये चान्ये बान्धवा स्मृताः ॥ ते तृप्ति मखिला यान्तु ये चास्मत्तोयकाङ्क्षिणः ॥ ये बान्धवा बान्धवा वा ये ऽन्य जन्मनिबान्धवा ॥ ३ ॥ ते सर्वे तृप्ति मायान्तु मद्दत्ते नाम्बुनाऽ खिलाः ॥ देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्व राक्षसाः ॥ ४ ॥ पिशाचा गुह्यकाः सिद्धा कूष्माण्डास्तर वः खगाः । जलेचरा भूमि चरा वाय्वा हाराश्च जन्तवः ॥५॥ ते तृप्ति मखिला यान्तु मद्दत्ते नाम्बुनाऽखिलाः । नरकेषु समस्तेषु यातना सुचयेस्थिताः तेषामाप्या यनायेतद्दीयते सलिलं मया ॥ अतीत कुल कोटीनां सप्तद्वीप निवासिनं ॥ ७ ॥ आब्रह्म भुवनां ल्लोकानिद मस्तु तिलोदकम् ॥ यतः कस्यपर संस्थानां तु तृप्यो मद्वतामृताम् ॥ ८ । ।। मघव मेवास्तु मयादत्तं तिलोदकम् ॥ अथवस्त्र

निष्पीडनम् ॥— ये के चास्म-कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः । ते गृह्णन्तु मयाऽदत्तं वस्त्र निष्पीडनोदकम् ॥ इति मन्त्रेण तज्जलं भूमौ क्षिपेत् वस्त्रं चतुर्धा कृत्वा । भूमौ वामभागे निष्पीडयेत् । तपित जले पवित्रं विसृजेत् ॥ ततः—सव्यं कृत्वा पूर्वाभि मुखो भूत्वा शुद्धोदकेनाचम्य प्राणा यामं कुर्यात् । अर्घ्ये जले ब्रह्मादि देवान्पूजयेत् । ओं ब्रह्मयज्ञा नम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत ऽः सुरुचोव्वेनऽआवऽ । सवुध्न्याऽ उपमाऽअस्यविष्ठाऽः सतश्चयोनिम सतश्चव्विवः ॥ १६ ॥ ओं ब्रह्मणे नमः ॥ इति मन्त्रेण पात्रे शुद्धोदकं पूरयित्वातन्मध्येऽनामिकयाऽष्टदलम् श्वेत गन्धाक्षतंपुष्पाणि तुलसीदलानि च प्रक्षिप्य पश्चाद्देवेभ्योऽर्घं ओं इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम् । समूढ मस्यपा ॐ सुरे स्वाहा १७॥ ओं विष्णवेनमः ॥ ओं नमस्तेरुद्रमन्यव ऽउतोतऽइषवे नमः ॥ १८ ॥ ओं रुद्रायनमः ॥ ओं तत्सवितु ॥ १६ ॥ ओं सवित्रे नमः ॥ ओं मित्रस्य चर्षणीधृतो वो देवस्य सानसिद्युम्नञ्चित्र श्रव-स्तमम् ॥ २० ॥ ओं मित्राय नमः । ओं इमम्मे वरुण श्रुधी हवामद्या च मृडय । त्वाम वस्यु राचके ॥ २१ ॥ ओं वरुणायनमः ॥ सूर्योपस्थानम् ओं अदृश्रमस्य केतवोव्विरश्मयो जना २ँ॥ ऽअनु । भ्राजन्तो ऽअग्नयो यथा । उपयाम गृहीतोसि सूर्य्याय त्वाभ्राजायैष ते योनिऽः सूर्य्याय त्वाभ्राजाय सूर्य्य भ्राजिष्ठभ्राजिष्ठ स्त्वन्देवेष्वसिभ्राजिष्ठोह मनुष्येषुभूयासम् ॥ २२ ॥ हंऽसऽशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषद तिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृत सद्व्योम सदब्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽ ऽऋतम्बृहत् ॥ २३ ॥ दिग्देवतानां नमस्काराः—प्राच्यै-ओं इन्द्रायनमः ॥ आग्नेय्यै-ओं अग्नयेनमः ॥ दक्षिणायै-ओं यमाय नमः ॥ नैर्ऋत्यै-ओं निर्ऋतये नमः ॥ पश्चिमायै-ओं वरुणायनमः ॥ वायव्यै-ओं वायवे नमः॥ उदीच्यै-ओं सोमाय नमः ॥ ईशान्यै-ओं ईशानायनमः ऊर्ध्वायै-ओं ब्रह्मणे नमः ॥ अधस्तात्-ओं विष्णवे नमः ॥ अवाच्यै-ओं अनन्ताय नमः ॥ (जलमध्ये) ओं ब्रह्मणे नमः ॥ ओं अग्नये नमः ॥ ओं पृथिव्यै नमः ॥ ओं ओषधिभ्यो नमः ॥ ओं वाचे नमः ॥ ओं वाचस्पतये नमः ॥ ओं विष्णवे नमः । ओं अद्भ्यो नमः ॥ ओं अपाम्पतये नमः ॥ ओं वरुणाय नमः ॥ मुख

वृथा मननं—भयने सफलं जन्म अयने सफलं तपः । अयने गोत्रजातैर्ये याता वानुमहादिवम् । पत्र शाखादि दानेनक्लेशितायूयमी दृशं तत् क्लेश निरहे जातः तत्वं सुन्तु मदंतुः ।

त्रिमार्जनम् (शुद्धोदकेन) ओं सम्वर्चसा पयसा सन्तनू भिरगन्महि मनसा सछ शिवेन ॥ त्वष्टा सुदत्रोव्विदधातुरायोनुमार्ष्टु तन्वो यद्वि लिष्टम् ॥ २४ ॥ विसर्जनम्-ओं देवा गातु विदोगातु व्वित्त्वागातुमित । मनसस्पतऽइमन्देव यज्ञ ॐ स्वाहाव्वातेधा ऽः ॥ २८ ॥ अर्पणम्—अनेन यथा शक्ति देव ऋषि मनुष्य पितृ तर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् मम समस्त पितृस्वरूपे जनार्दन वासु देवः प्रीयतां नमम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पण मस्तु। श्री गदाधरस्तृप्यतु। ओं विष्णवे नमः इतित्रिः इति तर्पण प्रयोग

श्री चक्र पूजनम् ॥

श्री गणेशाय नमः । अथ देव्यार्चनम्—आचम्य प्राणा नायम्य गुणान्वित मंवतु ॥ ॥ मङ्गलोच्चारणम् ॐ स्वस्तिनऽऽइन्द्रो वृद्धश्रवाऽः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाऽःस्वस्तिन स्तार्क्ष्योऽअरिष्ट नेमिऽः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ भद्रङ्कर्णेभिःऽशृणुयाम देवा भद्रम्पश्ये मा क्षभिर्य्यजत्राऽःस्थिरै रङ्गैस्तुष्टु वा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशे महि देव हित य्यदायुः ॥ २ ॥ तम्पत्न्कोभिरनुगच्छेभदेवा ऽः पुत्रै र्भ्रातृ भिरुत वा हिरण्यैः ना कङ्गभ्णनाऽः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने-दिवः ऽ ॥ ३ ॥ नमस्काराः । श्रीमन्महा गणाधिपतये नमः । इष्ट देवता-भ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । ग्राम देवताभ्यो नमः । स्थान देवताभ्यो नमः । वास्तु देवताभ्यो नमः । वाणी हिरण्य गर्भाभ्यां नमः । श्री लक्ष्मी-नारायण भ्यां नमः । श्री उमामहेश्वरा भ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृ पितृ चरण कमलाभ्यां नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । निर्विघ्न मस्तु । सुमुख श्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः । लम्बो-दरश्च विकटो विघ्न नाशो गणाधिपः । धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभाल चन्द्रो गजाननः । द्वादशै तानि नामानियः पठेच्छृणुया दपि ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लां म्बर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्नः वदन ध्यायेत् सर्व विघ्नो पशान्तये ॥ अभिप्सितार्थं सिद्धयर्थं पूजितोयः सुरा-सुरैः सर्व विघ्न हरस्तस्मैगणाधिपतये नमः । सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते । सर्वदा सर्व कार्येषु नास्तितस्तेषां ममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलाय तनम् हरिः तदेव लग्न सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्र बलं तदेव ॥ विद्या बलं दैव बलं तदैव लक्ष्मी पते तेऽङ्घ्रि युगं स्मरामिः ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषा कुतस्तेषां पराजयः । येषां मिन्दी वर स्यामो हृदय स्थो जना-र्दनः ॥ यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः तत्र श्रीर्विजयो भूति ध्रुवा नीति र्मतिर्मम ॥ सर्वेष्वा रब्ध कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः । देवादि सन्तुनः शिद्धि ब्रह्मेशान् जनार्दना ॥ विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णु-महेश्वरान् । सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये ॥ सङ्कल्पः ॥—

ओं विष्णु २: श्री मद्भगवतो महा पुरुषस्य विष्णुराज्ञाया प्रवर्त्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत वराहकल्पे वैवस्वत् मन्वन्तरेऽष्टा-विंशति तमे युगे कलि प्रथम चरणे भारतखण्डे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे आर्या वर्तान्तरगत् हिमवत् प्रवर्तक देशे केदार खण्डे बाद्रिका श्रमे शुभेन् दक्षिण पार्श्वे सरस्वती मन्दा किन्योर्मध्ये श्री शालिवाहन शाके बौद्धा वतारे अस्मिन्वर्तं माने षष्ठी सम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम सम्वत्सरे अमुकाऽयने अमुकर्तौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशि स्थिते श्री सूर्ये अमुक राशि स्थिते देव गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथं राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुण विशेषण विशि-ष्टायां शुभ पुण्य तिथौ ममात्मन .... श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिः वृध्यर्थं अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याश्चिर काल संरक्षणार्थम् एकल मन इप्सित कामना र्म सिद्ध्यर्थम् लोके वा सभायां राज द्वारे वा वा सर्वत्र यशो विजय लाभादि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे बाल्य यौवन वार्धक्या वस्थासु वाक्पाणि पाद पायू पस्थ घ्राण रसना चक्षु श्रोत्र त्वगान मनोभिः इचरित ज्ञाता ज्ञात कामा काम महापातको पपातकादि सञ्चितानां पापा नां अन्यतत् सं सर्ग रूप महापात का नां स्पृष्टा स्पृष्ट सङ्कली करण अपात्री करण जाति भ्रंश करण रस विक्रय गा विक्रय स्वरोष्ट्र विक्रय महिषि विक्रय अश्वादि पशु विक्रय ब्राह्मण दुर्भाषणे तिर्यक द्रुम च्छेदन वनानया रुणं महत्स्व हरण जाति भ्रंश करण रवि देवराज स्वाप हरण ब्राह्मण निन्दा वेद निन्दा देव निन्दा शिवनिन्दा अभक्ष्य भक्षण अभोज्य भोज्य अपोष्याऽऽपोषणम् अपेया पानम् अस्पृश्य स्पर्शनम् अश्राव्यस्य श्रवण अघ्रेया घ्राणं अहिंस्याऽहिं-सनम् अकथ्याऽऽकथनम् अचिन्त्या चिन्तनम् अयाच्याऽऽयाच-नम् अपूज्यो पूज नम व्यतिक्रम मातृ पितृ तिरस्करणम् स्त्री पुरुष प्रति भेदनम् मिथ्या वाद पर द्रोह पर हानि चौर्यकरणम्संताप संभाषण म्लेच्छ संगा सनम् अवाङ्गेषणम् स्वामि भेदनम् मित्र वचन भार्या निन्दनम् पराञ्च भोजनम् ॥ गणिकान्न भोजनम् वसु पात्र-पात्र भोजनम् शूद्रस्तान्न भोजनम् पंक्ति भेदादि करण तथा च यदि रोगादि भोजनम् कन्यास्त्रोपि शोपान सकल दुरितो पशम नार्थं तथा च गोत्रो चारण स्य पितृ पितामह प्रपिता महानां अमुक मुक शुक शर्मणां यथायोग्य (मातस्य भवता) नमो

वोध्यु रुश ६ समानऽआयुऽःप्रमोषीऽः । अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं स परिवारं सायुधं सशक्तिमा वा ह्यामि ततः-कलश प्रार्थनादेव दानव सम्वादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि सदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयंम् त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वेत्वयिस्थिताः ॥ त्वयितिष्ठन्ति भूतानित्वयि प्राण प्रतिष्ठिताः । शिव स्वयंत्वये वाऽपि विष्णुस्त्व व प्रजापतिः आदित्या वसवोरुद्रा विश्वे देवाः स पैत्रिकाः त्वयि तिष्टन्ति सर्वेपि यतः कामः फल प्रदाः । त्वत्प्रसादा दिमां पूजां, कर्तु मीहे जलो द्भवः सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भवसर्वदा । प्रसन्नो भव ॥ वरदो भव ॥ ॐ भू र्भु वः स्वः कलशस्थ वरुणाय नमः । आवा हयामि यथा मिलितो पचरार्थे गन्धा क्षत पुष्पाणि समर्पयामि । नमस्करोमि । अनन्तरम् । कलशोदकेन पूजा द्रव्या णि तथा ऽआत्मानं च अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवाः यः स्मरेत्पुण्डरी काक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ आपोहिष्ठा मयो भुव स्थान ऽ ऊर्जेदधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ योवः शिव तमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरि व मातरः तस्माऽअरङ्ग मा मवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जन यथा चन ऽः ॥ इति सम्प्रोक्ष्य ॥ पश्चात् कलश मुद्रां प्रदर्श्य ॥ शङ्ख पूजनम्—शङ्खदौ चन्द्र दैवत्यं कुक्षौ वरुण देवता पृष्ठे प्रजापति रग्रेव अमे गङ्गा सरस्वती । त्रैलोक्ये यानि तीर्थानी वासुदेवस्य चाज्ञया । शङ्खे तिष्टन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खः प्रपोजयात् । ॐ अग्निर्ऋषि ऽः पव मान ऽः पाञ्च जन्य ऽः पुरो हितः तमी महे महा गयम ॐभूर्भुवः स्वशङ्खस्थ देवतायै नमः आवा हयामि सर्वोप- चारार्थे गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । शङ्ख मुद्रांप्र । घण्टा पूजनम्—आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् । घण्टा नादंप्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टा प्रपूजयेत् । ॐ सुपर्णोसि गरुत्व मांस्त्रि वृत्ते शिरो गायत्र चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोम ऽआत्मंसा छन्दा- ६ स्यङ्गानि यजु ६ षि नाम ॥ सामते तनू र्वामदेव्यं यज्ञा य- ज्ञिय म्पुच्छन्धिष्ण्या ऽः शफा ऽः सुपर्णोसि गरुत्वमान्दिवङ्गच्छ स्वः पत ॥ ॐ भूर्भु वः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः आवाहयामि । सर्वो पचारार्थे गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । घण्टा मुद्रां

घण्टस्य गरुड मुद्रा—उत्तानौ करौ कृत्वा मंथ यित्वा कनिष्ट के पुनश्चा- धौ मुखौ कृत्वा तर्जन्यौ मोक्षयेत्ययोः । मध्यमा नामिके देवु पक्षाविवनिचा- लयेत् ॥ मद्रेषा पक्षिराजस्य सर्वविघ्ननिवारिणीय ॥

प्रदर्श्य ॥ दीप पूजनम्—त्रिनेत्रमा रक्त तनु, स शुक्लः वस्त्रं सुवर्णं स्रज मामे मीढे ॥ वराभय स्वक्ति क शक्ति हस्तं पद्म स्थ मा कल्प समूह युक्तम् ॥ ॐ अग्नि ज्योति ज्योति ज्योति रग्नि ऽः स्वाहा सूर्य्यो ज्योति ज्योति ऽः सूर्य्य ऽः स्वाहा। अग्निर्व्वर्चो ज्योति व्वर्च ऽः स्वाहा, सूर्य्यो व्वर्चो ज्योति व्वर्च ऽः स्वाहा । ज्योति ऽः सूर्य्य ऽः सूर्य्यो ज्योति ऽः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुव्वः स्वः दीप स्थ देवतायै नमः आवाहयामि सर्वो पचारार्थे गन्धा क्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥

गुं गुरुभ्यो नमः ॥ त्र्यम्बक ध्यानम्-हस्ताम्भोज युगस्थकुम्भ युगला-दुद्धृत्यतोयं शिरः सिंचिन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांकेश कुम्भौ करौ ॥ अक्षस्रग् मृगहस्त मम्बुज गतंमूर्द्ध स्थ चन्द्र स्रवं पीयूषो नत्तनुभजे सगिरिजं मृत्युंजयं त्र्यम्बकम् ॥ इति त्र्यम्बकं नत्वा ॥ तारादि नमोन्तं मूल मन्त्रम्—माला मन्त्रम्—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ओं ह्रीं श्रीं क ए ई लह्रीं ह स कहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा ॥ जपित्वा वा स्व १ माला मन्त्रम् जपेत् ॥ अस्य श्रीत्रिपुर सुन्दरी मन्त्रस्य दक्षिणा मूति ऋषिः पंक्तिः छन्दः श्री मत्रिपुर सुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कोलकं ममाभिष्टसिद्धयर्थेजपेविनियोगः॥आन्यान्यान्यासानाह—दक्षिणा मूर्तये नमो मूर्ध्नि । पक्तये नमोमुखे । त्रिपुर सुन्दर्यै नमो हृदि । ऐं बीजाय नमो गुह्ये सौः शक्त्ये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमो नाभौः । इति मुन्यादि न्यासः ॥ कर शुद्धि न्यास माह—ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्या नमः । ह्रीं श्रीं आं अनामिकाभ्यांनमः । ह्रीं श्रीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं अं अङ्गुष्टाभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं आंतर्जनीभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं सौः करतल कर पृष्टाभ्यां नमः अयं कर शुद्धि न्यासः ॥ आसन न्यासः ॥ आसन न्यासमाह देवीति—ह्रीं श्री ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः पादयोः ह्रीं श्रीं ह्रैं- हस क्लीं हसौः चक्रासनाय नमः जंघयोः । ह्रीं श्रीं ह्सैं हसक्ली हसौः सर्व मन्त्रासनाय नमः जानुनोः । ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लींल्वें साध्य सिद्धा सनाय नमोलिंगेः इत्यासन न्यासः । स तारादि नमोन्त मूलम् (माला

पडंग—हृय गुलिश्वयं न्यस्येत्तर्जन्यादि द्वयंतुके । शिखापदेशे धाङ्गष्ठ दशाङ्ग ल्यस्तु नन्नाणि ॥ हृय नेत्रं पूर्व मस्त्रं सक्ति रङ्गस्य मुद्रिका ॥ प्रसारिताभ्यां हस्ताभ्यां कृत्वा ताल त्रयं सुधा ॥ तर्जन्य गुष्ठयो रमे स्कालयं च यथा दशः ॥ पर सौभाग्य दण्डनी मुद्रा लक्षणम्—वामे मुष्टिं दृढं बध्वा तर्जनीं प्रविसारयेत् । भ्रामये द्वाम कर्णान्तं मुद्रा सौभाग्य दण्डनीति । इयं द्वयोमपि मुद्रामिति ॥

मन्त्रम्) मध्यमा नामिमाभ्या शिरसि न्यसेत् ॥ पञ्ग माह—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐंसो हृदये । श्रीं ह्रीं श्रीं शिर -आद्य कूटेन शिखा । मध्य कूटेन कवच । त्रितिय कूटेन नेत्रम् । सौ ऐं श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्रम् ॥ इति षडगम् ॥ पुन सञारादि नमोन्त मूल मध्यमा नामिकाभ्या (सुधास्रवन्ती दीपाकारा युक्त रन्ध्रस्था सौभाग्य दा देवींमाध्यायं) शिरसिन्यसेत् ॥ पुनर्वाम कर्ये पर शौभाग्य दडनी मुद्रा कृत्वा वाम पार्श्वे मूर्धादिपादान्तम् तारादि नमोन्त मूल न्यसेत ॥ पर सौभाग्य दण्डनी मुद्रा एवं क्षोभणी मुद्रा ॥ ■ तारादि नमोन्त मूल न्यसेत् ॥ दर्शयेत् ॥ रिपु जिह्वा मुद्रा एव द्राविणि मु० (तारादि नमोन्त मूल सहित न्यसेत्) दर्शयेत् । त्रिखण्डा मुद्रा एव वर्षिणी मुद्रा प्रत्येक तारादि नमोन्त मूल न्यसेत् ॥ मुखे ■ वेष्टय स्तारादि नमोन्त मूलं दक्ष कर्णा तो वामान्त कण्ठान्मुरसा समन्मेव न्यसेत् ॥ पुन प्रणव पुटा विद्या सर्वाङ्गे न्यसेत् ॥ (विद्या अ आ० इत्यादि) मुखे योनि मुद्रा बध्वा तथैव देवींन्यसेत् ॥ अथ जगद्वशीकरणान्यास ॥ देवी कान्त्या विश्वं रक्त ध्यायन् अगुष्ठा नामिका भ्या ब्रह्मरन्ध्रे मध्ये बन्धे ललाटे विद्या न्यसे दितिसमोहनो न्यास ॥ अ नम पादयो । आ नम जघयो । इ नम जानुनो । ई नम कटि भागयो । उ नम लिंगे । श्रीं नम पृष्टे । ऊ नम नाभिदेशे । ऋ नम पार्श्वयो । लृ नम स्तनयो । लॄ नम अंशयोए नम कर्णयो । ऐ नम ब्रह्मरन्ध्रे । श्रीं नम वक्त्रे श्रीं कर्णनेष्टेमि अ नम नेत्रयो । अ नम कर्णशष्कुली ॥ अथ संहार न्यास ॥ वाग्देवता न्यास माहषोडश स्वर पूर्व कतद्बीज पूर्वा वशिनी शिरसि न्यसेत्—यथा अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओं औं अ अ ब्लूं वशिनी वाग्दे वतायै नम शिरसि ॥ कवर्गस्य कामेश्वरी बीजाद्य भाले न्यसेत्—क ख ग घ ङ ज्लो ह्रो कामेश्वरी वाग्देवतायै नमो ललाटे ॥ चवर्गेण मोहनीं बीजन्भ्रू मध्ये न्यसेत् ॥—यथा—च छ ज झ ञ न्व्लीं मोहनी वाग्देवतायै नमो भ्रू मध्य ॥ टवर्गेण स्वबीजस्य विमलां कंठेन्यसेत् ॥ ट ठ ड ढ ण ह्म्ल् विमला वाग्देवतायै नम कंठे ॥ तवर्ग बीजाभ्या अरुणा हृदि

रिपु जिह्वा मुद्रा—यथा—अ गुष्ठ गर्भित मुष्टि व प्लीवया हृत्पाणिना । रिपु जिह्वा ह्यया परय मुद्रोक्ता शत्रु नाश नीति मुद्रा वाम पाद वेश इच्चेति इम द्राविणी मुद्रा ॥ त्रिखण्डा (अग्रे)

त्रिखण्डा मुद्रा लक्षणम्—परिवर्त्य करौ स्पष्टा वगुष्टौ कारयेत्समौ ॥ अनामान्तगते कृत्वा तर्जन्यो कुटिला कृती । कनिष्ठके नियु क्तेत नियमाने यहस्तयी ॥ त्रिखण्डेय समाख्याता त्रिपुरा ह्वान कर्मणि॰

न्यसेत् ॥ यथा—तं थं दं धं नं ज्ञी अरुणा वाग्देवतायै नमोहृदि ॥ पवर्ग वीजाभ्यां जयिंतीं नाभौ न्यसेत् ॥ यथा—पं फं वं भं मं हसल्व्यूं जयन्ती वाग्देवतायै न्यसेत् ॥ यवर्गो वीजाद्य सर्वेश्वरीं मूलाधारे न्यसेत् ॥—यथा—यं रं लं वं इम्ल्यूं स र्वेश्वरीवाग्देवतायैनमो मूलाधारे ॥ शादयो वीजाभ्यां कौलिनी उर्वादि पादान्तंन्यसेत्-स क्ष यथा-शं पं सं हं लं क्षंम्त्रीं कौलिनी वाग्देवतायै नमः ऊर्वादि पादान्तम् ॥ वाग्देवतायै नमः इति पदम् ॥ सृष्ठि न्यास माह—ब्रह्म रन्ध्र इतिअं ब्रह्म रन्ध्र इति ॥आं ललाटे । इं नेत्रयो । ईं कर्णयो । उं नसौ । ऊं गंडयो । ऋं दन्तेपु । ॠं ओष्ठयौ । लृं जिह्वायां । लॄं मुख मध्ये । एं प्टष्टे । ऐं सर्वांगे ओं हृदि । औं स्तनयौ । अं कुक्षौ । अः लिंगे ॥ स्थितिन्यास माहकेरति–अं अगुष्टाभ्यां न मः । आं तर्जिनीभ्यां नमः । इं मध्यमाभ्यां नमः । ईं अनामिकाभ्यां नमः । उं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ऊं ब्रह्मरन्ध्रे । ऋं मुखे । ॠं हृदि । लृं नाभ्यादि पादान्तम् । लॄं कंठादिनाभ्यन्तम् । एं ब्रह्म रन्ध्रात्कंठात् । ऐं पंच पार्दां गुलिपु ॥ (एं-ओं-औं-अं-अः) परवायुन्यासमाह ।—अं आं मूर्ध्नि वक्रं । इं ईं नेत्रयोर्द्धे, उं ऊं श्रुत्योर्द्धे, ऋं ॠं नसोर्द्धे, लृं लॄं गंडयोर्द्धे । एं ऐं ओष्टयोर्द्धे । ओं औंमुखमध्ये । अं दन्त पंक्ते । अः वदने विन्यसेत् ॥ द्वितीय माह—अं शिखा । आं शिरः इं भाले । ईं भ्रूः । उं नासाः । ऊं मुखे । ऋं ॠं-लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः दक्षकर सन्ध्येवु पंच एवं वामे पंच ॥ तृतीय माह—अं शिरः । आं ललाटे । इं ईं नेत्रयो उं मुखे । ऊं जिह्वायां । ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः दक्षपाद अंगुलिपु संध्यमं पंच एवं वामपादे पंच ॥ चतुर्थ माह–अं ललाटे । आंगले । इं हृदि । ईं नाभौ । उं मूलाधारे । ऊं ब्रह्मरंध्रे । ऋं मुखे । ॠं गुदे । लृं आधारे । लॄं हृदये । एं ब्रह्मरन्ध्रे । ऐं ओं करयो । औं-अं पार्श्वयो । अः हृदिः ॥ पंचमं माह—प्रणव पुटितां विद्यां सर्वांगे न्यसेत् नमोंतां हृदिष—श्री अं ललाटे । ह्रीं आंगले । क्लीं-इं हृदि । एं ईं नाभौ । सौं उं मूलाधारे । ओं ऊं ब्रह्मरंध्रे । ह्रीं ऋं मुखे । श्रीं ॠं गुदे । आद्यकूटेन लृं आधारे । मध्यकूटेन लॄं हृदि । तृतिय कूटेन एं ब्रह्म रंध्रे । सौः एं ऐं

इति कर्षणीति त्रिखण्डया मुद्रयातु भाले मूलं न्यसेत् ॥ त्रैलोक्यस्याखिलं स्याहं कर्त्तेवि स्वविचित येत् ॥ योनि मुद्रा श्रमे द्रष्टव्य-मुखे योनि मु०—मिथः कनिष्ठि के वध्वा तर्जनीभ्या अनामिको अनामिकोर्ध्वे धरिलष्ट दोर्घ मध्य मयोरधः अङ्गुष्टाग्र द्वयं न्यस्ये योनि मुद्रे यमीरितेति ॥ अयं जगद्वशो करण न्यासः ॥

ओं करयो । क्लीं ह्रीं-ओं अं पादयो । श्रीं अ हृदि ॥ षोढान्यासादयो निस्तरभया-न्नोक्तास्ते उच्यन्ते ॥ यथा—गणेशग्रह नक्षत्र योगिनी राशि पीठ लक्षण षोढा न्यासा ॥—गणेश मातृ का मंत्र स्य दक्षिणा मूर्ति ऋषि गायत्री छन्द श्री मातृ का सुन्दरी देवता ममो पास्य श्री विद्या गत्वेन षोढा न्यासे विनियोग ॥अक ख ग घ ङ आ ऐं हृत् । इ च० ५ क्लीं शिर । उ ट० ५ ऊ सौ शिखा । ए त० ५ ऐं सो कवचम् ।। ॐ प० ५ ओं क्लीं नेत्रम् ॥ अं यं० १० अ ऐं अस्त्र ॥ ध्यानम्—उद्यत्सूर्य सहस्राभा पीनोन्नत पयोधरा ॥ रक्त माला वरा लेप रक्त भूषण भूषिता ॥ पाशा कुश धनुर्वाण भास्वत्पाणि चतुष्टया रक्त नेत्र त्रया स्वर्ण मुकुटोद्भासि चन्द्रिकाम् ॥ एवं ध्यात्वान्यसेद्बीज पूर्वं ग अ विघ्नेश ह्रींभ्या नम । ग आ विघ्न राज श्रीभ्या नम । इत्यादि मातृ का स्थले न्यसेत् । अथग्रह मातृ का मन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषि गायत्री छन्द श्री मातृका सुन्दरी देवता ममो पास्य श्री विद्या गत्वेन षोढान्यासे विनियोग । ध्यानम् —रक्त श्वेत तथा रक्त श्यामं पीत चपाडुरम् धूम्र कृष्णं च धूम्र च धूम धूम्र विचिन्त येत् ॥ रवि मुख्यान्काम रूपान्सर्वा भरण भूषितान् ।। वामो रुन्यस्त हस्ताश्च दक्षिणे नवर प्रदान् ॥ अ १६ सूर्याय रेणुका वायै नम हृदि ॥ य ४ चन्द्राया मृता वायै नम भ्रूमध्ये । क ५ मगलाय धामा वायै नमो नेत्रयो ॥ च ५ बुधाय ज्ञान रूपा वायै नमो हृदि ॥ ट५ बृहस्पतये यशस्विन्य वायै नमो हृदयोपरिभागे। त ५ शुक्राय शाकयं वायै नम कण्ठे ॥ प ५ शनैश्चराय शाकय वायै नमो नाभौ। शं ष स ह राहवे कृष्णा वायै नमो मुखे । लं क्ष केतवेधूम्रा वायै नमो गुदे ॥ अथ नक्षत्र मातृ का मंत्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषि गायत्री छन्दो नक्षत्र रूपिणी सुन्दरी देवता विद्या गत्वेन न्यास विनियोग ध्यानम्-उज्ज्वल ज्वालाग्नि सङ्काशा मणी भरण भूषिता । नति पाणयोऽश्विनी मुख्या वरदा भय पाणय ॥ अ आ आश्विन्यैनमो ललाटे । इ

---

१ तस्या गणेश आत्मात्मपूजये दाक्षना दिभि । अभ्यर्चयं कुकुमैरास कुर्यादा वरणार्चनम् ॥ आग्नेया दिषु कोणेषु हृदय च शिर शिखां । वमाम्यचाम नेत्रादिदय स्त्रापूर्वदेःमुखो ॥ द्वितीयावरणे पूज्या मात्रावष्टे व शतप । विद्यादिमा विधात्री च भोगदा विघ्न घातिनी ॥ निधि प्रदीपा पापघ्नी पुण्या पारा-श्विम्रभा । दलाग्रेषु वक्र तुण्ड एक दंष्ट्रो महोदर ॥ गजास्य लम्बोदरश्च विकटा विघ्न राजा । धूम्रवर्णश्च दलेषु स्वकायाग्रापुर्येषु वा. ।

भरण्यैनमोदक्षनेत्रे उं ऊं कृत्तिकायैनमोवामनेत्रे । ऋं ॠं लृं लॄं रोहिण्यै नमोदक्षनेत्रे । एंमृगशिरसेनमोवामकर्णे । ऐंआर्द्रायैनमोदक्ष नसि। ॐ औं पुनर्वसवेनमोवामनासि ॥ कंपुष्यायनमःकंठे ।खं गं आश्लेषायै नमो दक्ष स्कन्धे ।घं ङमघायैनमोवामस्कन्धे । चंपूर्वा फाल्गुन्यैनमो दक्ष कूर्परे । छं जं उत्तरा फाल्गुन्यै नमो वाम कूर्परे । झं ञं हस्ताय नमो दक्षिण मणि बन्धे । टं ठं चित्रायै नमो वाम मणि बन्धे । डं स्वात्यै नमो दक्ष हस्ते । ढं णं विशाखायै नमो वाम हस्ते । तं थं दं अनुराधायै नमो नाभौ । धं ज्येष्ठायै नमो दक्ष कटौ । नं पं फं मूलाय नमो वाम कटौ । बं पूर्वाषाढायै नमो दक्षोरौ । भं उत्तराषाढायै नमो वामो रौ । मं श्रवणाय नमो दक्ष । जानुनि । यं रंधनिष्टाय नमो वाम जानुनि । लं शतभिषायै नमो दक्ष जंघायाम् । वं शं पूर्वाभाद्रपदायै नमो वाम जंघायाम्। षं सं हं उत्तरा भाद्रपदायै नमो दक्ष पादे । ळं क्षं अं अः रेवत्यै नमो वाम पादे । इति नक्षत्रमातृकाः सर्वेषु न्यासे ष्वादौ माया श्री बीजे योज्ये ॥ न्यासा न्सर्वा न्प्रकुर्वीत् माया श्री बीज पूर्व कानित्युक्त त्वात् ॥ योगिनी न्यास माह- योगिनी न्यासस्य मुनि छन्दसी पूर्वोक्ते । योगिनी रूपा सुन्दरी देवता श्री विद्यां गत्वेन न्यासे विनियोगः । ध्यानम्—सिता सिता रुणा बभ्रू चित्रा पीतारव चिंतयेत् ॥ चतुर्भुजाः समैर्वक्रैः सर्वाभरण भूषिताः एवं ध्यात्वान्यसेत् ॥ ह्रीं श्रीं डां डीं डंमल वर यूं पूं डाकिन्यै नमः । अं १६ मम त्वचं रक्ष २ त्वगात्मने नमः कंठ देशे विशुद्धौ ॥ १ ॥ ह्रीं श्रीं रां रीं रं मल वर यूं पूं राकिन्यै नमः । कं १२ मम रक्तं रक्ष २ असृगात्मने नमः हृदनाथा हृते ॥ २ ॥ लां लीं लं मलवर यूं पूं लाकिन्यै नमः । ड १० मम मांसं रक्ष २ मांसात्मने नमः नाभौ मणिपुरे ॥ ३ ॥ कां कीं कं मल वर यूं पूं काकिन्यै नमः । बं ६ मम मेदो रक्ष २ मेद आत्मने नमः लिंग मूले स्वाधिष्ठाने ॥ ४ ॥ शां शीं शं मल वर यूं पूं शाकिन्यै नमः व ४ ममास्थि रक्ष २ अस्थ्यात्मने नमः गुदे मूलाधारे ॥ ५ ॥ हां हीं हं मलवर यूं पूं हाकिन्यै नमः हं क्षं मम मज्जां रक्ष २ मज्जात्मने नमो भ्रू मध्ये आज्ञा चक्रे ॥ ६ ॥ यां यीं यं मल वरयूं पूं याकिन्यै नमः ॥ अं-मम शुक्रं रक्ष २ शुक्रात्मने नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ७ ॥ इति योगिनी मातृकाः ॥ राशि मातृका न्यास माह—राशि मातृका मन्त्रस्य मुनि छन्दसी पूर्वोक्ते । राशि रूपा सुन्दरी देवता श्री विद्यां गत्वेन न्यासे विनियोगः ॥ ध्यानं—रक्त श्वेत हरि द्वर्ण पांडु चित्रासिता- न्स्मरेत् ॥ पिशंग पिंगली बभ्र कर्बु रा शितधूम्रवान् ॥ एवंध्यात्वान्यसेत् ।

अं आं इं ईं मेषाय नमः दक्ष पाद गुल्फे ॥ १ ॥ उं ऊं ऋं वृषायनमः दक्ष जानुनि ॥ २ ॥ ॠं लृं लॄं मिथुनाय नमः दक्ष वृषणे ॥ ३ ॥ एं ऐं कर्काय नमः दक्षकुक्षौ । ओं औं सिंहाय नमः दक्ष स्कन्धे । अं अः शं षं सं हं कन्यायै नमः दक्षशिरो भागे ॥ कं खं गं घं ङं तुलायै नमो । वाम शिरो भागे ॥ चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः वामस्कन्धे । टं ठं डं ढं णं धन्विने नमः वामकुक्षौ । तं थं दं धं नं मकराय नमः वाम वृषणे । पं फं बं भं मं कुंभाय नमः वाम जानुनि । यं रं लं वं चं मीनाय नमो वाम गुल्फे । इति राशि मातृकाः ॥ पीठ मातृकाः ॥ माह—पीठ मातृका मन्त्रस्य मुनि छन्दो गानि श्री मातृका पीठ रुपिणी सुन्दरी देवता श्री विद्यां गत्वेन न्यासे विनियोगः ॥

ध्यानं —सिता सिता रुणा श्यामा हरित्पीतान्यनुक्रमात्। पुनरेवक्रमा देवी पंचाशत् स्थान शंचये ॥—ह्रीं श्रीं अं कामरूप पीठाय नमः ॥१ ॥ ह्रीं श्रीं आं वाराणसी पी० ॥ २ ॥ ह्रीं श्रीं इं नेपालपी० ॥ ३ ॥ ह्रीं श्रीं ईं पौंड्र वर्धनपी० ॥ ४ ॥ ह्रीं श्रीं उं कारमीर पी० ॥ ५ ॥ ह्रीं श्रीं ऊं कान्य कुब्ज पी० ॥ ६ ॥ ह्रीं श्रीं ऋं पूर्णागिरी पी० ॥ ७ ॥ ह्रीं श्रीं ॠं अर्बुदाचल पी० ॥ ८ ॥ ह्रीं श्रीं लृं आम्रात केश्वर पी० ॥ ९ ॥ ह्रीं श्रीं लॄं एकाम्र पी० ॥ १० ॥ ह्रीं श्रीं एं त्रिस्रोत पी० । ह्रीं श्रीं ऐं काम कोठ- पी० ॥ १२ ॥ ह्रीं श्रीं ॐ कैलाश पी० । ह्रीं श्रीं औं भृगु पी० ॥ १४ । ह्रींश्रीं अं केदार पीठा० ॥ १५ ॥ ह्रीं श्रीं अः चंद्रपुर पी० ॥ १६ ॥ ह्रीं श्रीं कं श्री पी० ॥ १७ ॥ ह्रीं श्रीं खं ॐकार पी० ॥ १८ ॥ ह्रीं श्रीं गं जालं- धर पी० ॥ १९ ॥ ह्रीं श्रीं घं मालव पी० । ह्रीं श्रीं ङं कुलान्तपी० ह्रीं श्रीं चं देवी कोट्टक पी० ॥ २२ ॥ ह्रीं श्रीं छं गोकर्ण पी० ॥ २३ ॥ ह्रीं श्रीं जं माहेश्वर पी० ॥ २४ ॥ ह्रीं श्रीं झं अट्टहास पी० । ह्रीं श्रीं ञं विरज पी० ॥ २६ ॥ ह्रीं श्रीं टं राजगृह पी० ॥ २७ ॥ ह्रीं श्रीं ठंमहापथ पी० ॥ २८ ॥ ह्रीं श्रीं डं कोल्लगिरि पी० ॥ २९ ॥ ह्रीं श्रीं ढं एलापुर पी० ॥ ३० ॥ ह्रीं श्रीं णं कालेश्वर पी० ॥ ३१ ॥ ह्रीं श्रीं तं जयंती पी० ॥ ३२ ॥ ह्रीं श्रीं थं उज्जयिनी पी० ॥ ३३ ॥ ह्रीं श्रीं दं चरित्र पी० ॥ ३४ ॥ ह्रीं श्रीं धं क्षीरिका पी० ॥ ३५ ॥ ह्रीं श्रीं नं हस्तिनापुर पी०

प्राय संयमन् ॥ पूर्व वत्–हृदयाङ्गुलिन्यं चन्यसे त्यादि ॥ मुद्राःवतद्दया मुच्यते—वरप–उन्माद–महाकुश–महायोनि ॥ वरपत–पुटाकारौ करो कृत्वा मध्यमा संकुशाकृती ॥ परिवृत्तं क्रमेणैव मध्यमे तदधो गतो क्रमेण देवि ते तेव कनिष्ठा नामिका दंयः ॥ संयोज्य निबिडाः सर्वा अंगुष्टा यमदेशतः मुद्रेयं परमे शानी सर्व वरप करी मतेति ॥ मुद्रां (क्रमं)

॥ ३६ ॥ ह्रीं श्रीं पं वडीश पी० ॥ ३७ ॥ ह्रीं श्रीं फं प्रयाग पी० ॥ ३८ ॥ ह्रीं श्रीं वं षष्टीश पी० ॥ ३९ ॥ ह्रीं श्रीं सं मायापुर पी० ॥ ४० ॥ ह्रीं श्रीं मं मलय पी० ॥ ४१ ॥ ह्रीं श्रीं यं श्री-शैल पी० ॥ ४२ ॥ ह्रीं श्रीं रं मेरु पी० ॥ ४३ ॥ ह्रीं श्रीं लं गिरि पी० । ह्रीं श्रीं वं माहेन्द्र पी० ॥ ४५ ॥ ह्रीं श्रीं शं वामन पी० ॥ ४६ ॥ ह्रीं श्रीं षं हिरण्यपुर पी० ॥ ४७ ॥ ह्रीं श्रीं सं महा लक्ष्मी पी० ॥ ४८ ॥ ह्रीं श्रीं हं उड-याण पी० ॥ ४९ ॥ ह्रीं श्रीं लं छाया पी० ॥ ५० ॥ ह्रीं श्रीं क्षं छत्रपुर पीठाय नमः ॥ ५१ ॥ इति पीठ मातृकाः आदि शब्दात्कामं मातृकादयो ज्ञेया ॥ (अग्रे स्पष्टा) एवं न्यासान् कृत्वामुद्राः प्रदर्शः । पञ्चम् ॥ ध्यानमाह—बालर्कायुत तेजसां त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं नाना लंकृति राजमान वपुषं बालोडुराट् शेखराम् । हस्तैरिक्षु धनुःसृणिं शमशरं पाशं मुद्रा बिभ्रती श्री चक्रस्थित सुन्दरी त्रिजगतामाधार भूता स्मरेत् ॥

पात्रस्थापन माह—

ॐ वज्रोद के हुं फडितिजल ग्रहणम् ॥ ॐ ह्रीं स्वाहेति पाद प्रक्षा-लनम् । ॐ ह्रीं सु विशुद्ध धर्म सर्व पाप निशाम्या शेष विकल्पानय नय स्वाहेत्या च मनम् ओं मणि धरि वज्रिणि शिखरिणि सर्व वशं करिणि हुं फट् स्वाहेति शिखाबन्धनम् । ओं रक्ष २ हुं फट् स्वाहेति विघ्न वारणम् ॥ ओं पवित्र वज्र भूमे हुं स्वाहेति भूमि निमन्त्रणम् ॥ ओं आसु रेखे वज्र रेखे हुं स्वाहेतिमंडलम् ॥ ओं यथा गताभिषेक समागिन मेहुं फडिति पुष्पशोधनम् ॥ ओं आं ह्रीं स्वाहेति चित्त शोधन मंत्रः । कलश स्थापनम्— ओं रक्ष २ फट् स्वाहा भूमि सं शोध्य ॥ तत्र-ओं आसु रेखे वज्र रेखे हुं स्वाहा मण्डल मंत्रेण-वृत्त त्रिकोणचतुष्कोणात्मक मण्डलं कुर्यात् । तत्राधार शक्ति—यथा—विश्व शक्त्यै नमः ॥ ॐ महाशक्त्यै (माया) नमः ॥ कूर्मा सनाय नमः ॥ ॐ योगास-नाय नमः ॥ ओं अनन्ता सनाय नमः । ॐ विमला सनाय नमः । मध्ये ॐ परम सुखाय नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मासनाय

उन्माद मुद्रा लक्षणम्—समुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमा मध्यमानुजे ॥ अना-मिके च सरले तदधस्तर्जनीद्वयम् ॥ दंडा कारौ ततोंगुष्ठे मध्यमा नख देशगो॥ मुद्रेशान्मादनी नामस्तेदिनी सर्व योषिता ॥ महा कुश मुद्रा लक्षण यथा— अस्यास्त्व नामिका युग्मं अधः कृत्वा कुशा कृति ॥ तर्जन्या वपिठे मैव स्मेष विनिसो अयेत् ॥ इत्नसहा कुशा मुद्राःसर्व कामार्थ साधिनोति ॥

नम । इति आधार शक्ति कूर्म शेषान् सम्पूज्य ॥ एक त्रिंदश द्वार मन्त्रेण धार पूजयेत् ।–तमाह— ॐ रा रीं रं र मल वर यूं अग्नि मण्डलाय धर्म प्रद दश कलात्मने ऐं कलशा धाराय नम । तदुपरि पात्राधारो परि आग्नेयो दश कला अर्च ये चा एवाह्— हव्य कव्यादिका वहा ॥ य धूम्रार्चि कला श्री पादुका पूजयामि । र उष्मा कला श्री पा० ॥ ल ज्वलनी कला श्री पा० ॥ व ज्वालिनी कला श्री पा० ॥ म विस्फु लिंगिनी कला श्री पा० ॥ र सुश्रे कला श्री पा० ॥ ल सुरूपाये कला श्री पा० रीं कपि लाये कला श्री पा० ॥ रा हव्याये कला श्री पा० ॥ ॐ कव्याये कला श्री पा० ॥ स्वर्णादिनिमित् कलशम्—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हमल व्यूं ह सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने क्षीं कलशाय नम । तत्रार्क कला स्तपिन्याद्या सम्पूज्य । क भं इत्यादि विलोमे मूल मातृके जपन् जलै स्त सम्पूर्य । क भ तपिन्यै नम । ख बं तापिन्यै नम । गं फ धूम्रायै नम । घ प मरीच्यै नम । ङ नज्वालि न्यै नम । च ध रुच्यै नम । छदं सुषुम्नयै नम । जथ भोगदायै नम । झं त विश्वायै नम ॥ ञ णं बोधिन्यै नम ॥ ट ढं धारिण्यै नम ॥ ठ ड-क्षमायै नम ॥ इत्यर्क मण्डलं सम्पूज्य । मूल मन्त्र पठन् सुधा बुध्या तो य सम्पूर्य तत्रगन्ध पुष्पाक्षतान् मं तपनी कला श्री पादु का पूजयामि नम । ब तापिनी कला श्री पा० ॥ सू धूम्राची कला श्रीपा० ॥ ह मरिचि कला श्री पा० । व्यू ज्वालिनी कला श्री पा० । ल रुच्ये कला श्री पा० । म सुषुम्नायै कला श्री पा० ॥ ह भोगदायै कला श्री पा० ॥ हू विश्वे कला श्री पा० ॥ ह्रीं बोधिन्यै कला श्री पा० । हा धारिण्यै कला श्री पा० ॥ ॐ क्षमायै कला श्री पा० ॥ मिति प्रयोगे मित्सएवा मुद्रा नभोक्ता ॥ मूलविद्या च मन्त्र वित ॐ सोम मण्डलाय येति कलशा मृताय नम तत ॐ सा सीं सू समल व्यूं ॥ सोम मण्डलाय कामप्रद षोडश कलात्मने सौ कलशा

महा योनि मुद्रा लक्षणम्—मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्यु परि संस्थिते ॥ अनामिका मध्य गतेतथे यदि कनिष्ठिके ॥ सर्वा एकत्र संयोज्या अङ्गुष्ठ परि पीडिता ॥ एषा तु प्रथमा मुद्रा महायोन्य भिधा मते ॥ त्रिखण्डा मुद्रा । ध्वाक्ता ॥ धोयं मन्त्रेण ॥ गंगे च त्यादि सपया ष कुश मुद्रया—मुष्टी मध्य मिका कृत्वा तर्जनी मध्य पर्वणि ॥ संयोज्या कुञ्चये किंचिन्मुद्रया कुश धक्षि दाम् ॥ मत्स्य मुद्राल०—वामो परिष्ठा स्तस्थाप्य दक्ष हस्त प्रसारयेत् अंगुष्ठो चुलयोः पार्श्व मत्स्य मुद्रे यनी रितेति ॥ गरुड मुद्रा (खमे) दक्षम—

मृताय नमः मत्रोयं जलार्चने। षोडशस्वराद्या, स्वान्तेः कलास्तज्जले र्चयेत्तत्त आह अमृतेति ॥ अं अमृतायै कला श्री पादुकां पूजयामि। आं मानदायै कला श्री पा० ॥ इं पूषायै कला श्री पा० ॥ ईं तुष्टै कला श्री पा०। उं पुष्टै कला श्री पा० ॥ ऊँ रत्यै कला श्री पा०। ऋधृत्यै कला श्री पा० ॥ ॠं शशिन्यै कला श्री पा० ॥ लृं चन्द्रिकायै कला श्रीपा लॄं कान्त्यै कला श्री पा० ॥ एं ज्योत्स्नायै कला० ॥ ऐं श्रियै कला श्रीपा ओं प्रीत्यै कला श्री पा०। औं अंगदायै कला श्री पा० ॥ अं पूर्णायैकला श्री पा० ॥ अः पूर्णामृतायै कला श्री पा० इत्यर्घ्यंसम्पूज्य ॥ तत्र तत्पट स्थापने सृणि मुद्रया गंगे चेत्यादि तीर्थं मन्त्रेणां कुरानु द्रया अर्क मण्डलात्तीर्थमावाह्य स्वहृदो देव मा वाहयेत् ॥ एका दशार्णेन मन्त्रेणां इवारं जलं मंत्रयेत् स यथा—ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्री हूं फट् हसौः हूं मिति मन्त्रेणाष्ठवार जलं मन्त्रयेत् ॥ ततो-ह्रीं वीजेन (सुधां) प्रक्षिप्य (इति तोये अमुकां प्रक्षिप्य)। कुम्भ योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्। तत्र सम्पूज्याघ जले हसक्षमलेति स्वरूपं पानीयवः। भैरव मन्त्रं आह-यथा-हसक्ष मलव्यूं आनन्द भैरवायवौषट्। (दशार्णेन इति स्वरूपम्) हसयो वैंपरित्यं-सहक्ष मल व्यूं सुधा देव्यै वौषट् ॥ इति सप्ताणं पूजयेत् ॥ मुद्रा-प्रदर्शयेत् ॥—मत्स्य-अस्त्र-कवच-धेनु-संरोधिन्यां-सन्निरुध्य-मुशल-चक्र-महामुद्रा-योनि मुद्रा-कुम्भ-पुनः अमृति मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ अर्घ्ये इति—आदयः षोडशस्वराः। कादयोणान्ता (कं० तपर्यन्तं) थादयो शान्ताः (थं० यः पर्यन्त) ते स्यं त्रिकोणं संचिन्त्य ॥ की दशं ॥ हृत्ताभ्यां मध्ये शोभितं तत्र ऐं क्लीं सौः रिति वार्ता संपूजयेत्। ओं ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण देवीं ज्योतिमयीं यजेत्। मूलं त्रिपूजने कूर्यांकुर्यात्मुद्रा समीरिताः ॥ समीरिता मुद्राः मत्स्य-अस्त्र-कवचं-धेनु-अमृ-तिसंरोधिनीसंन्निरुध्य-र रिस-मुशल-चक्र-इति नव मुद्राः कुर्यात् अर्घ्योद-केन-पूजा वस्तूनि आत्मानं चं सम्प्रोक्ष्य मूल मंत्रं स्मरन्। शङ्ख पद्म

मुसल मुद्रा—मुष्टि कृत्वा तु हस्ताभ्या वामस्यो परि दक्षिणाम्। कुर्यात् मुशल मुद्रेयं सर्व विघ्न निवारिणीति ॥ चक्र मुद्रा—हस्तौतु संमुखौ कृत्वा सं लग्नौ ॥ प्रसारितो। कनिष्ठा गुष्ठकौ लग्नौ मुद्रेषाचक्र संज्ञितेति ॥ अस्त्र मुद्रा—ददस्य तर्जनी मध्ये सव्येकर तलेक्षिपेत् अभिघातेन शब्द स्या दस्त्र मुद्रा समीरिता ॥ कवच मुद्रा—द्वनेत्र त्रिभिरा ख्यातं द्वाभ्या अस्त्रं शिरोमतम्। अङ्गुष्ठ न शिखाशेषा दिग्भिः कवच मीरितम् ॥ इति षडंगानि स्याव मुद्राम् ॥

अमृती मुद्रा—परिवृत्य करो पश्चात्तर्जनी मध्यमे मुते कौनष्ठ्यनामिकाङ्गुष्ठं परस्पर युतं कुरुः धेनु मुद्रे यथा स्यात् अमृती करणं भवेत् ॥ अर्घ्यं द्रव्य कत-

र्घ्य पर्द च प्रयोज्य ॥ मधुपर्कम्—पात्रे तुमधुपर्कस्य दध्याज्य मधुनचिपेत् । मूल श्लोक सुधामत्रे दघ्यात्तं वदने प्रभोः ॥ सुधा मत्र—सहस्रमलक्ष्यूं सुधादेव्य वौषट् । सुन्यतरः सध्वाणम् पूजयेत् । मधु पर्क मिदं देव कल्पयामि प्रसीदमे । पुनराचमनं दृघात्तन्त्र श्लोकान्तर पठनं । शुद्धि माप्नोति तस्मैतेपुनरा च मनीयकम् । स्नानं वस्त्रो पवीतान्ते नैवेद्यान्ते विलस्मृतम् ॥ पुनरा चमनं—उच्छिष्टोप्य शुचि र्वापियस्यस्मरणात्प्रवाः ॥ शुद्धि माप्नोति तस्मैते पुनरा च मनीय कम् ॥

पीठ पूजा माह्—

द्वार निर्णयः—मात्स्ये—बहवो पूर्वतः स्याप्यौ दक्षिणेतु यजुर्विदौ । सामगौ पश्चिमे तद्दुत्तरेणाथर्वणौ । इति वचनात् । (क्षुधाण्यासनं परत्वा यजेत्प्रेताभिम्बुजासनम्) दिव्या सन चक्रासनं सर्व मन्त्रा सनं ततः साध्य सिद्धा सनं प्राप्यं चक्र राजप्रपूजयेति ॥ इति मंत्र महोदधिम् ॥

तार मात्रा प्रयायम् ।—

अं ऊं म सूर्य सोमाग्नि मण्डलं गुणान् सत्त्व रज तमांसि स्वर्यां यान् । सं सत्वाय नमः र रजासाय नमः त तमसाय नमः ।

नम्,...पाद्य द्रव्याण्याह—दूर्वाङ्करेति । आचमनीय द्रव्याण्याह—लवंगेति । कंकोल मुरव्य द्रव्यमरीचोत्तमम् तिअर्घ्य पात्रे विपेत् वाक्तिकदर्भाग्र तर्पयात् । यवपुष्प, दात् गंध तेनार्घ्यमूर्मिना चरेत् ॥

धेनु मुद्रा—वामागुलिया मध्येषु दक्षिणा गुली स्थाप्य सं योज्य तर्जनीं विन दक्षा मध्य मया वामया तथा दक्ष मध्य मया वामां तर्जनी चनियो जयेत् । दक्षया नामया वामा कनिष्ठा विनियो जयेत् । विहितायो पुरतोचैपाधेनु मुद्रा प्रकीर्ति तेति । अमृत बीजत् वमितिवं जन सं राधित्वा मुद्रया वा यथा—अंगुष्ठ गर्भिणी मेव सन्नि रो रं समीरतेति ॥ अंगुष्टं गर्भ मुष्टि [redacted] दस्पर्शः । महामुद्रायथा—रामौ कृत्य करया रंगुली अन्यप्य करो वियोजयेदितियोनि मुद्रा—दंशांग्रष्ट वामांगुष्टक्षिप्ता हस्तद्वे नव शाव काया (मध्य शल्या) शुद्धि र्वा कुर्यात् वा स्वह्न मद्रयो ॥

आत्मानित्यादीन् । मायाप्रयादीन—अं आत्मने नमः । ऊं अन्तरात्मने नमः । मं परमात्मने नमः । ज्ञानात्मानं-ह्रीं ज्ञानात्मने नमः । मायातत्त्वादीनि स्वत्रर्णा यानि । मां मायातत्त्वाय नमः । कला तत्त्वाय नमः विद्यातत्त्वाय नमः । प्रपूजयेत् । ब्रह्मप्रेताय नमः विष्णु प्रेताय नमः रुद्रेश्वर प्रेतायनमः ॥ पीठ शक्ती राह—कामिन्यै नमः । कामदायिन्यै नमः । रत्यै नमः । रतिप्रयायै नमः । नन्दायै नमः । मनोन्मनायै नमः परायै नमः । वराभय करायै नमः। इति पूर्वोक्ते पीठ मातृके आदि शब्दात्कामातृकादयो (ज्ञेयाप्रयोगेषु) ततः आसन मंत्रेण पूजये चक्र नायकम्—पीठ मन्त्र मुक्तरतिस्वरूपमन्यत् यथा ऐं परोये अपरायै परा परायै हसौ सदाशिव महा प्रेतपद्मा-सनायनमः इति ॥ एवंपीठंसमभ्यर्चदद्यात्पुष्पांञ्जलितत्र॥पुष्पाञ्जलि मंत्र माह।—ह्रीं श्रीं प्रकट गुप्ततर सम्प्रदाय कुलनिगर्भ रहस्याति रहस्य परा पर रहस्य संज्ञक श्री चक्र गत योगिनी पादुकाभ्यो नमः । इति पुष्पाञ्जलिम् ॥ इति ॥

आवरणार्थे—उपचार पूजनम् ॥

पूजनप्रयोगः त्रिखण्डा मुद्रोक्ता ॥ आवाहन मंत्र माह—ध्यानपूर्वकंपुष्पं गृहित्वा—खङ्ग चक्र गदेषु चाप परिघा ञ्शूलंभुशुण्डीं शिरः शंखं संन्दधतीं करैस्त्रि नयनां सर्वाङ्ग भूषा वृताम् ॥नीलाश्मद्युति मास्यपाद दशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौ स्वपिते हरौकमल जो हन्तु मधु कैटभम् ॥ ॥ १ ॥ ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजत श्रजम् । चन्द्रां हिरण्य मयीं लक्ष्मीं जातवेदोय मा वह ॥ १ ॥ देवेशि भक्ति सुलभेसर्वा वरण सं युते । यावत्त्वां पूज यिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ॥ इदमा वाहनं प्रोक्तं ततः स्थापनमा चरेत् ॥ भैरवी मंत्र मुच्चार्य श्री मंन्त्रपुर सुन्दरि ॐभूर्भुव.स्व.

मधु पर्क मन्त्रः—ओं दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः॥ सुरभिना मुखाकरत्प्रणऽआयूंषि तारिषत् ॥ पात्रे तु दधि क्षिपेत् ॥ ओं घृतंमिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते ! श्रितो घृतम्वस्यधाम। अनुष्वधमा वह मादयं स्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥ इति घृतं क्षिपेत् ॥ ओं मधु वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोष सो मधुमत्पार्थिवंरजः। मधुद्यौ रस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ॥२॥अस्तुसूर्यः।माध्वीर्गावोभवन्तुनः ॥मधु क्षिपेत् ॥

त्रिचर्प यित्वा—शुक्र पत्तेनु—ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरि इच्छा काम फल प्रदे सर्व सत्व वशं करि सर्व जगत्क्षोभण करि हुं हुं हुं द्रा द्रीं क्लीं

श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम ध्यानावाहनसमर्पयामि नम ॥ इति प्रयोगे ॥

अथ आसनम्—ॐ अक्षस्रक् परशु गदेषु कुलिशं पद्म धनु कुण्डिका दण्डं शक्ति मसिं च चर्म जल ज घण्टा सुराभाजनम् ॥ शूल पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैं प्रसन्ना नना से वे सै रिम मर्दिनीमिह महा लक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ १ । ता ऽ आवाह जात वेदो लक्ष्मी मनप गामिनीम् । यस्या हिरण्य विन्देय गामश्व पुरुषा नहम् ॥ अनेक रत्न संयुक्त नाना मणि गणान्वितम् । कार्तस्वर मय दिव्य आसन प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ भू भुर्व स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यैनम ध्यान पुष्प सहित आसन समर्पयामि नम ॥ इति पुष्प स० ॥ तत आसन मुद्रा स्थापन्यादि दर्शयेत् । पक्षे स्मिन्कुरु सान्निध्यं नमोन्त स्थापने मनु दर्शयेन्स्थापनि मुद्रा सन्निधिं सन्निरोधनम्-सुमुखीं मुद्रा मन्त्रविद् दर्शयेत् ॥

षडङ्गम् न्यसेत्—सकली करण लिङ्गम् अव गुण्ठा मृतीकार परमीं कृत्यमहा मुद्रा प्रदर्शयेत् ॥ मुद्रा पूर्वं प्रयोगे द्रष्टव्य पात्र स्थापनादि प्रयोगम् ॥

पाद्यम्—उद्यत्भानु सहस्र कान्ति मरुण क्षोमा शिरो मालिका रक्ता लिप्त पयोधरा जप पटीं विद्या मभीतिं वराम् ॥ हस्ताब्जै दध तीं त्रिनेत्र विलसद्वक्त्रार विंद श्रिय देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वन्दे सुमन्द स्मिताम् ॥ ॐ अश्व पूर्वां रथ मध्या हस्ति नाद प्रमोदिनीम् श्रिय न्वी मुप ह्वये श्रीर्मा देवीं जुषताम् ॥ गङ्गादि सर्व तीर्थेभ्यो मयाप्रार्थं नया हृतम् तोयमे तत्सुख स्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्य ताम् ॥ ओं भू भुर्व स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम पाद्यं समर्पयामि नम ।

अर्घ्यम् कालाभ्राभा कटाक्षै रिर कुल भयदा मौलि बद्धेन्दु रेखा शङ्ख चक्र कृपाणा विशिख मपि करै रुद्वहन्ती त्रिनेत्राम् ॥ सिंह स्कन्धाधि रूढा त्रिभुवन मखिला तेजसा पूरयन्ती ध्यायेद् दुर्गा जया ख्या त्रिदश

ह्लू स सौ क्लीं ऐं ४५ कामेश्वरि नित्या श्री पादुकां पूज यामि तर्प यामि नम एत प्रयोग ॥ कृष्ण पक्षेतु विचिन्तयेत् कामेश्वर्यो चतुरानका ॥ इति मात्रा ॥ त्रिखण्डा मुद्रा उक्ता ॥ उप त्रपूजा त्रिखण्डा मुद्रा—मुद्रा त्रिखण्डा प्र राय पुष्पाक्षताद्याय चाञ्जली ॥ ध्यात्वा पूर्वां दिता देवीं मूल विद्या समुच्च रन् ॥ चैतन्यं हृत्कमल ॥ नासिका रन्ध्र निर्गतम् ॥ मन्द रंध्रस्य मार्गस्थ योजय कुसुमा ञ्जलौ ॥ महा पद्म वना वस्य कारणा नन्द विग्रहे ॥ सर्व भूत हिते मात रेह्यहि परमेश्वरि ॥ ३ ॥ महा पुष्पाम चैतन्य सयुक्त कुसुमाञ्जलिम् ॥ ५ ॥ पञ्च रात्रे मंत्रान्तर तत आक हर्षं पठत् । ४ ॥

परिस्त्वां सोवितांसिद्धि कामैः ॥ॐसौस्मितांहिरण्यप्रकारामार्द्रांज्वलन्तीतृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्म वर्णां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥ निधीनां सर्व रत्नानां त्वय नर्घ्यगुणा ह्यसि ॥ सिंहो परि स्थिते देवि । गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ ४ ॥ ओं भूर्भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामिनमः ॥ आचमनीयम्--घटा शूल हलानि शंख मुशले चक्रं धनुस्सायक हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विल सच्छीतांशुतुल्य प्रभाम् ॥ गौरी देह समुद् भवां त्रिजगतामाधारभूतामहापूर्वा मन्त्र सरस्वती मनुभजे शुंभादि दैत्यार्दिनीम् । चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रिय लोके देव जुष्ठा मुदाराम्। तां पद्मनेमीं शरण महं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वा वृणोमि ।स्वकर्पूरेण सुगन्धेन सुगन्धि स्वादु शीतलम् । तोयमा चमनी यार्थं देवि । त्वं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ मलाय कर्षण स्नानम्–नागाधीश्वर विष्टरो पणि फणोत्तं सौरुरत्नावली भास्वद्देह लतां दिवाकर निभां नेत्र त्रयोद्भासिताम् । माला कुम्भ कपालनी रज करां चन्द्रार्द्ध चूडां परां सर्वज्ञेश्वर भैरवाङ्क निलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥ आदित्य वर्णे तपसोधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः तस्यफलानि तपसानु दन्तुमायान्तरायाश्चयाबाह्याऽलक्ष्मीः ॥ मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुह वासितैः स्नानं कुरुष्व देवेशि, सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुंदर्यै नमः स्नानं समर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ मधुपर्कम्—पात्रे तु मधु पर्कस्य दद्यात्त्य मधु वक्षिपेत् । मूल श्लोक सुधा मंत्रै दद्यात्तं वक्त्रे प्रभोः ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ दधि घृतमधु समायुक्तं पात्र युग्म समन्वितम् मधु पर्कं गृहाणत्वं शुभदाभव शोभने ॥ ॐ भूर्भुवः स्व श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः ॥ ७ ॥ शुद्धोदक स्नानम्— ओं आपो अस्मान्मातरः शुन्ध यन्तु घृतेय नो घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वंहि रिप्रम्प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरा पूतएभि । दीक्षांतं पयस्विनू रसि रयां तां शिवा ॐ शगमा परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन् ॥ परमानन्द बोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये । सांगोपांग मिदं स्नान कल्पयाम्यहमीशिते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्यै नमः मधुपर्क स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं स० ॥ पुनरा च मनीयम्—उच्छिष्टोप्य शुचि र्वापि यस्यास्मरण मात्रतः शुद्धिमाप्नोति तस्यैते पुनरा चमनीयकम् ॥ सर्व लोकस्य या शक्ति र्ब्रह्म विष्णु महेश्वराः । ददाम्या च मनं तस्यै देव्यांस्तुभ्य मनोहरम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महे त्रिपुर सुन्दर्यै नमः आचमनीय समर्पयामि नमः ।

सुगन्धित स्नानम्ओं कायकाण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन चः । ओं स्नेहागृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि

महा नघे, सर्व लोकेषु शुद्धात्मन् वधामि स्नेह सुत्तम् ॥ श्रों भू र्भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः सुगंन्धित द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ दुग्ध स्नानम्—श्रों मयः पृथिव्यांम्यय श्रोपधो धीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोः धाः ॥ पयः स्ववीः प्रदिशः मन्तुमह्मम् ॥ कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवन परम्। पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थं मर्पितम् ॥ १० ॥ श्रों भू र्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पय स्नानं समर्पयामि नमः ॥ पय स्ननान्ते शुद्धोदकस्नानं—श्रों आपो अस्मान्मातरः सुन्ध यन्तु घृतेन नो घृतस्वः पुनन्तु ॥ विश्वं हि रिरिप्रं प्रवहंति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि। दिक्षांतं पक्षरित नू रसि स्वां वां शिवा। श्रों शगमा परिदधे भद्रंवर्णं पुष्यन् स्नानार्थं शुद्धोदकं समर्पयामि नमः। स्नानान्ते वस्त्रिघ्रष्टोप्यसिति पुनर्आचमनीयं समर्पयामि नमः ॥

दधिस्नानम्—ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयु [illegible] षिवारिषत् ॥ ॐ पय सत्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशि प्रभम्। दध्यानीतं मया देवी। स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पुन शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते। मन्त्रो चार्णं पूर्वकं आचमनीयथं समर्पयामि नमः। इति दधिम् ॥ घृतस्नानम्—ॐ घृतं घृत पावनः पिवत व्यसां वसा पावनः पिवतान्तरिक्ष स्य हवि रसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशोविदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ नव नीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोष कार कम्। घृत तुभ्यं प्रदा स्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ पुनः पूर्वोक्त मन्त्रोचार्णं विधेशुद्ध स्नानम्, शुद्ध स्नानान्ते चमनीयम् ॥ इति घृतम् ॥

मधुस्नानम्—मधु नक्त मुतो पसो मधु मत् पार्थिव [illegible] रजः मधु द्योरस्तु नः पिताः ॥ तरु पुष्पं समुद्भूतं सु स्वादु मधुरं मधुरं मधु ॥ तेजः पुष्टि करं॥ दिव्यं स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ मन्त्रोचारण पूर्वकं पुनः शुद्धोदक स्नानम्—स्नानान्ते आचमनीयम् ॥ इति मधुः ॥ शर्करास्नानम्— ॐ आपा [illegible] रसमुद्वयस ऽः सूर्ये सन्त ऽः ममाहित ॥ आपा [illegible] रसस्य यो रमस स्तो गृहाण्य म्युत्तम् मुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्ट गृह्णाम्येषते योनि रिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ॥ इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका। मला पहारका दिव्या स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ आपो अस्मानिति शुद्धोदकं परिधत्तमिति आचमनीय समर्प यामि नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पृथक् मन्त्रेण मुक्ता युक्त द्रव्य सहित पंच पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि नमः ॥ इति पं० अं० ॥ पञ्चामृतम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वती मपयन्ति स स्रोतसः । सरस्वतीतु पञ्चधासो देशे भवत्सरित् ॥ पयो दधि घृतं चैव मधुच शर्करान्वितम् । पञ्चामृतं मया नीतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ पुनः आपो अस्मान् मिति शुद्धोदक स्नानं ॥ उच्छिष्ट मिति आचमनीय ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि नमः ॥ गन्ध स्नानम् — ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥ मलया चल सम्भूतं चन्दना गह सम्भवम् ॥ चन्दनं देवि देवेशिः । स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ पुनः आपो अस्मान् मिति शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । स्नानान्ते उच्छिष्ट मिति आचमनीयम् ॥ उद्वर्तनम्—ॐ अ छ सुनाते अ शुः पुरुषतां परुषा परुः गन्धस्ते सोमम् भवतु मदाय रसोऽच्युतम् ॥ नाना सुगन्धि द्रव्याणि चन्दन रजनी युतम् । उद्वर्तनं मया दत्त स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् पुनः शुद्धोदक स्नानम्—आपो अस्मान्मातरः शुन्ध यन्तु मिति शुद्धोदक स्नानं ॥ उच्छिष्ट मिति आचमनीयम् ॥ ॐ भूः भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः उद्वर्तनं समर्पयामि नमः इति । तदुपरि ॐ सहस्र शीर्षे त्यादि पुरुष शुक्तेन श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः (मूर्ती) शंखविशेषाध्यं समर्पयामि नमः ।

वस्त्र वस्त्रम्—ध्यायेयं रत्नपीठे शुक कलपठितं शृण्वतीं श्याम तांगी, न्यस्तो कांघ्रि सरोजे शशि शकल धरो वल्लकीं वाद यंतीम् ॥ कल्हारा बद्धमालानियमितविलसच्चूडिकांक वस्त्रांमातंगी शंखपात्रां मधुर मधु मदां चित्रको द्भासिभालाम् ॥ उपैतु मां देव सखः कीर्ति श्च मणिना सह । प्रादु र्भूतो सुराष्ट्रे स्मिन् कीर्ति वृद्धिं ददातु मे ॥ पट्टकूल युगं देवि । कंचुकेन समान्वितम् । परिधेहि कृपां कृत्वां देवीं । दुर्गति नाशिनि ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्यै नमः वस्त्रः द्वयं समर्पयामि नमः ॥ उच्छिष्टमिति आचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ अथ–यज्ञोपवीतमरुणां करुणा तरङ्गि ताक्षीं धृत पाशां कुश पुष्प चाप हस्ताम् । अणिमा दिभिरावृताम मूखै रह मित्ये यमि भावये भवानीम् ॥ क्षुत पिपासा मलां ज्येष्ठाम लक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूति मसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् । नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं त्रिपुरेमयिम् । उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वरि ॥ ततः स्वयं आचमनीयम् । ओं भू र्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः यज्ञोपवीत (सूत्र) समर्पय मि नमः । तद्धोपपुष्पम् ॥ गन्धम्—बन्धूक–काञ्चन निभं रचि

रत्नमालापाशा कुशौ च वरदं निज बाहु दण्डै । विभ्राण मिन्दु शकला भरणत्रि नेत्र मम्बाविके शरण मिह वपुषा श्रयामि ॥ गन्धद्वारादुराधर्षां नित्य पुष्टा करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व भूताना तामिहो पह्वये श्रियम् ॥ परमानन्द सौभाग्य परिपूर्ण दिगन्तरे । गृहाण परम गन्ध कृपया परम श्वरि ॥ ओं भू र्भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम गन्ध समर्पयामि नम । शौभाग्य सूत्रम्—ओं सौभाग्य सूत्र वरदे । सुवर्णमणि सयुतम् । कण्ठे बध्नामि देवेशि ? सौभाग्य देहि मे सदा ॥ ओं भू र्भुव स्व सूत्र श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नम कण्ठ सूत्र समर्पयामि नम । अक्षतम् अक्षत सोमरन्त क्षयवश्रियाऽ अधूषत । अस्तोषत स्वभानवोऽविप्रा नविष्ठया मता यो जान्विन्द्रतेहरी ॥ अक्षता निर्मला शुद्धा मुक्तामणि समन्विताः गृहाणे मान्महादेवी ? देहिमे निर्मला धियम् ॥ इति खेपकम् ॥ ओं भू र्भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम अक्षतान्समर्पयामि नम ॥ हरिद्राचूर्णम् ॥ हरिद्रा रञ्जिते देवी । सुख शौभाग्य दायिनि ॥ तस्मा त्त्वा पूजयाम्यत्र सुखशान्ति प्रयच्छमेत् ॥ ओं भू र्भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम परिमल द्रव्य समर्पयामि नम कुङ्कुम् कुङ्क मम् कान्तिदं दिव्यं कामिनी कामसम्भवम् । कुङ्कुमे नाचिते देवि । प्रशिद्ध परमेश्वरी । ॐ भू र्भुव स्व श्री महा त्रिपुरसुन्दर्यै नम कुङ्कुमम् समर्पयामि नम ॥ सिन्दूरं—सिन्दूर मरुणा भास जवा कुसुम सन्निभ । पूजितासिमयो देवि ? प्रसीद परमेश्वरि ॥ ओं भू र्भुव स्व श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नम सिन्दूरं समर्पयामि नम । कज्जला-चक्षुभ्यां कज्जलं रम्य सुभगे । शान्ति कारके । कर्पूर ज्योति रुत्पन्न गृहाण परमेश्वरि ॥ ओं भू र्भुव स्व श्री महात्रि पुर सुन्दर्यै नम कज्जला समर्पयामि नम ॥

दुर्वाङ्कुरम्—उद्यत् हेम रुचिरा रवि चन्द्र वह्नि नेत्रा धनुश्शर युता कुश पाश शूलम् ॥ रम्यैर्भुजैश्च दधतां शिव शक्तिरूपा कामेश्वरा हृदिभजामि धृतेन्दु लेखाम् ॥ ॐ आर्द्रां पुष्करणीं पुष्टि सुवर्णा हेम मालिनीम् । सूर्याहिरण्मया लक्ष्मी जात वेदो मम। वह ॐ काण्डा त्काण्डात् प्ररो हन्ती परुष परुषस्परि एवानो दुर्वे प्रतनु सहस्रेण शते नच ॥ दुर्वां दले श्यामलस्य मही रूपे हरि प्रिय ॥ अतो दुर्वाभिर्नव्यां पूजयामि सदा शिव ॥ ॐ भूर्भु र्व स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम । दुर्वा कुर समर्पयामि ॥ बिल्व पत्रम्—आर्द्रा य करि णीं यष्ठि पिङ्गला पद्ममालिनीम् । चन्द्रा हिरण्मया लक्ष्मी जातवेदाम आवह ॥ ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नम —श्रुताय च श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चा हनन्याय च नमो धृष्णवे । अमृता द्भवः श्री वृक्षो

महा देवि। प्रियः सदा ॥ विल्व पत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरे श्वरि१ ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः विल्व पत्रं समर्पयामि नमः ॥ पल्लव अर्पणम्-तांमऽआवहं जात देवो लक्ष्मी मनप गामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्यो स्वाग्विन्देयं पुरुषा नहम् ॥ ॐ अश्वत्थेयो निषदनं पर्णेवो व्यसति स्कृता ॥ गोभाज गोभाज इत्किलासथयत्स नवथपुरुषम् ॥ गृह द्वारे धोम- पि दुष्टासुर निर्वर्हिणि ॥ पूजां करोमि चार्यंगि पल्लवानं न्नतोद्भवैः ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्रीमहा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पल्लवान् समर्पयामि नमः। फलमालां- ॐ महादेवी चविद्महे विष्णु पत्नी च धीमही ॥ तन्नो देवीम० ॥ ॐ याः फलाफलनीर्याऽ अफला याश्च पुष्पिणी ॥ पृहस्पति प्रसूता स्तानो मुञ्चन्त्व हंहसः ॥ शरत्काले समुद्भूता निशुम्भे मर्दिते त्वया॥ फल मालां वरां देवि । गृहाण सुर पूजिते। ॐ भू र्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुंदर्यै नमः फलमालां स० ॥ रत्नमालां—ॐ परि वाज पतिः कवि रग्नि र्हव्या न्यक्रमीत् ॥ तर्धद्रत्नानिदा शुषे ॥ ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम। श्री य वा सयमे गृहे मातरं पद्म मालिनीम् ॥ मुक्ताफल युतां मालां रत्न वैडूर्य सु प्रभाम् ॥ माणिक्यं स्वर्ण प्रथितां गृह्यतां वरदे१ नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः रत्न मालां स० ॥ पुष्प मालां—आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वसमे गृहे । निच देवीं मातरं श्रियं वा सयमे कुले ॥ ॐ श्री श्चते लक्ष्मी श्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नः ॥ पद्मम् शंखजपुष्पादि शत पत्रै विंचित्र ताम् ॥ पुष्प मालां प्रयेच्छामि गृहाण त्वं सुरे श्वरि ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री महत्रिपुर सुन्दर्यै नमः पुष्प मालां स० ॥ अथ पुष्पं— वालर विद्युति मिन्दु किरीटा तुङ्ग कुचां नयन त्रयं युक्ताम्। स्मेर मुखीं वरदां कुशपाशा भीति करीं प्रभजे भुवनेशीम् ॥ मनसः काम मा कूतिं वाचः सत्य् मशीमहि। पशूनां रूप मन्नयस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ पुष्पै र्नाना विधैर्दिव्यैः कुमुदै रथ चम्पकैः ॥ पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्य ताम् ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री म० पुष्पं स० ॥ अलंकारम्-विद्यु दाम सम प्रभां मृग पतिं स्कन्ध स्थितां भीषणां कन्याभिः कर वाल खेट-विलस द्धस्ता भिरा सेवितां॥ हस्तै श्चक्र गदासि खेट विशिखां श्चापं गुणं तर्ज्जनीं विभ्राणामन लात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ हार कंकण केयूर मेखला कुण्डला- दिभिः । रत्नाढय कुण्डलो पेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री म० अलकारं स० ॥ सुगन्ध द्रव्यम् वालार्क मण्डला भासां

चतु र्बाहुं त्रिनेत्रां चनाम् ॥ पाशा ङ्कुशवरांमीवीं द्वार यन्तीं शिरसं भजे ॥ ॐ अहि रिव भोगैः पर्येति बाहुं . ज्या हेति परि बाध मानः ॥ हन्त्वघ्नो विश्वान् वुनानि विद्वान्यु मान्पुमा छ सम्परि पात विश्वतः ॥ चन्दना गरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा । कस्तूर्यादि सुग न्धारच सर्वाङ्गे पु विलेपनम् ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री म० सुगन्ध द्रव्यं (इतर) स० ॥ अथ धूपम्—यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुया दाज्य मन्न्वहम् । सूक्त पञ्च दश चंच्च श्री कामः सततं जपेत् ॥ ॐ धू रसी धूर्त धूर्वन्तंधूर्वं योऽस्मा धूर्व तीव धूर्वयं वय धूर्वामः । देवाना मसि वह्नि म छ सस्नि तमं पप्रित मजुष्ट तमन्देवहू तमम् ॥ दशाङ्ग गुग्गुलं धूपं चन्दना गरु संयुतम् समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्र गृह्यताम् ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री महात्रि० धूपं स० ॥ अथ दीपम्—ॐ अग्निर्ज्योति ज्योति रग्नि स्वाहाः सूर्यो ज्योति ऽ सूर्यं ऽ स्वाहाः अग्नि र्वर्चो ज्योति र्वच ऽः स्वाहाः सूर्यो वर्चो ज्योति र्वर्च ऽः स्वाहा । ज्योति ऽः सूर्यं ऽः सूर्यो ज्योति ऽः स्वाहा ॥ सर सिज निलये सरोज हस्ते धवल तरांशुक गन्ध माल्य शोभे । भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूति करि प्रसीद मह्यम् ॥ घृ त वर्ति समा युक्त महा तेजो महो ज्वलम् । दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीताभव सर्वदा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्री० दीपं समर्पयामि नमः । अथ नैवेद्य—नैवेद्यं निवेदयामि नमः । जलेना भ्युक्ष ॥ गन्ध पुष्पा भ्या माछाद्य ॥ धेनु मुद्रया अमृती कृत्य ॥ योनि मुद्रां प्रदर्श्य ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा, ॐ आर्द्रां पुष्करिणिं पुष्टिं सुवर्णां हेम मालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात वेदो म मा वह ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् । नैवेद्यं गृह्यतां देवि । भक्तिं मे ह्यचलां कुरु । ॐ भू र्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः नैवेद्यं स० ॥ मध्ये पानीयम्—ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ म० ॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्म मालि नीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात वेदोम आवह ॥ आचम्यतां त्वयादेविभक्तिं मे ह्यचलां कुरु । ईप्सितं मे । वरं देहि परत्रच परां गतिम् ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर पा नीयम् स० ॥ करो द्वर्तनम्—करोद्वर्तन कं देवि सुगन्धै परि वासितैः ईप्सितं मे वरं देहि पर त्रच परां गतिम् । ॐ

मुद्राः—धेनु-अमृती-योनि-पूर्वं प्रयोगे द्रष्टव्याः ॥

भू भुर्वः स्वः श्री महात्रि० ॥ इतिच गन्धसमर्पयामिः ।
हस्त मुख प्रक्षालनार्थे-जलं-गन्धतोय समानीतं सुवर्ण कलशोस्थितम् ।
हस्त प्रक्षालनार्थाय पानीयंते निवेदयेत् ॥ पुनः शन्नो देवीति मंत्रस्य
उत्तरा पोसनार्थ-करमुखप्रक्षा लनार्थं जलं समर्पयामि नमः ॥ ऋतुफलम् -
याः फलिनीर्याऽअफलाऽअयुष्पायाश्च पुष्पिणीः । वृहस्पति प्रसूतास्तानो
मुञ्चन्त्वं ᳪ हसः ॥ द्राक्षाखर्जूर कदलीपन साम्रक प्रपि थकम् । नारिके
लेक्षु जंवादी फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महात्रि० ऋतु
फलं स० ॥ ताम्बूल पूगीफलम्—ॐ सप्तास्यासन् परिधय० । ॐ तामऽ
आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यांहिरयं प्रभूतिं गावो दास्यो
श्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ एला लवंग कस्तूरी कर्पूरैः पुष्पवासितांवीटि
का मुख वासार्थं मर्पयामि सुरेश्वरि ॥ ॐ भू भुर्वः स्वः श्री महात्रि०
ताम्बूल पूगीफलं सम० ॥ दक्षिणाद्रव्यं—हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं
विभावसौः । अनन्त पुण्य फलद मतः शान्ति प्रयच्छमे ॥ हिरण्य गर्भ्भऽ
समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातऽः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथिवीन्द्यमुते
माङ्कस्मैदेवाय हविषाविधेम ॥ पूजाफल समृध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरी
स्थापितं तेनमे प्रीता पूर्णान्कुरु मनो रथान् ॥ ॐ भू भुर्वः स्वः श्री
महात्रि० पूजन पूर्वकं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामिनमः ॥ कर्पूरा रात्तिक्यम०
ॐ इदᳪहविऽप्रजननम्मेऽअस्तुदशवीरᳪसर्व्वगण ᳪ स्वस्तये । आत्मस
मनिप्रजासनि पशुशनि लोक सन्यभय सनि ॥ अग्निऽःप्रजाम्बहुलाम्मे
करो त्वन्नम्-पयोरेतोऽअस्मासुधत्त ॥ नीराजनं सुमांगल्यं कर्पूरेण सम
न्वितम् । चन्द्रार्क वह्नि सदृशं महादेवि ! नमाऽस्तुते ॥ ओं भू भुर्वः स्वः
श्री महा० कर्पूरात्तिक्यं समर्पयामिः ॥ प्रदक्षिणम्—ॐ मानस्तोके तनये० ।
ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानिवै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु
प्रदक्षिण पदे पदे । सर्व पापा पनुत्तये प्रदक्षिणां करोमि ॥ ॐ भू भुर्व
स्वः श्री महा त्रि० प्रदक्षिणां स० ॥ पुष्पांञ्जलिम्—ॐ विश्वतश्चक्षुरु
विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्व तस्पात् । संबाहुभ्यांधमति स स्तत्रै
र्यावा भूमि जनयन् देवएकः ॥ नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवा
नि च । पुष्पाञ्जलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वरि ॥ ओं भू भुर्वः स्वः
श्री महात्रि० पुष्पाञ्जलिं समर्प- यामि नमः । ततः सफलार्घ्यं--पुष्पंगृहित्वा-
ध्यानम्ःकाला भ्रांभां कटाक्षै रिर कुलभयदां मौलिवद्धेन्दु रेखांशंखं चक्र
कृपाणं विशिख मपि करै रुद्वहन्तींत्रिनेत्राम् । सिंहस्कन्धाधि रूढां त्रिभु
वन मखिलं तेजसा पूरयन्तीध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश परि वृतांसेवितां
सिद्धि कामैः ॥-ऋषिरुवाच ॥ १ ॥शक्रादयः सुर गणा निहतेऽति वीर्ये
तस्मि दुरात्मनि सुरारि बले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्र शिरोधरांसा

वाग्भिः प्रहृष्ट पुलकोद्गम चारु देहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्म
शक्त्या निःशेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्या, तमम्बिका मखिल देव महर्षि
पूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभा नि सा नः ॥३॥ यस्याः प्रभाव मतुलं
भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तु मलं बलञ्च ॥ साचण्डिका
खिल जगत्परि पालनाय नाशाय चा शुभ भयस्य मतिं करोतु ॥ ४ ॥
या श्रीः स्वयं सुकृति नां भुवने ष्व लक्ष्मीः । पापात्मनां कृतधियां
हृदये षु बुद्धिः श्रद्धा सतां कुल जन प्रभवस्य लज्जा, तां त्वां
नताः स्म परि पालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥ किं वर्णयाम तव रूप
मचिन्त्य मेतत्किं चाति वीर्य मसुर क्षय कारि भूरि ॥ किं चाहवेषु
चरितानि तवाति यानि सर्वेषु देव्य सुर देव गणादिकेषु ॥ हेतुः
समस्त जगतां त्रिगुणाऽपि दोषै र्न ज्ञायसे हरि हरादिभि रप्य पारा ॥
सर्वा श्रया ऽखिल मिदं जगदं शभूत मव्या कृताहि परमाप्रकृति
स्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ यस्या समस्त सुरता समुदी रणेन तृप्तिं प्रयाति
सकलेषु मखेषु देवि ॥ स्वाहा ऽसि वै पितृ गणस्य च तृप्ति
हेतु रुच्चार्य से त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ या मुक्ति हेतु रवि
चिन्त्य महा व्रता त्वमभ्यस्य से सुनियतेन्द्रिय तत्त्व सारैः ! मोक्षार्थि-
भिर्मुनिभिरस्त समस्त दोषैर्विद्या ऽसि सा भगवती परमा हि देवि
॥ ९ ॥ शब्दात्मिका सु विमलर्ग्यजुषां निधान मुद्गीथ रम्यपद
पाठ वतां च साम्नाम् ॥ देवी त्रयी भगवती भव भावनाय वार्ता
च सर्व जगतां परमार्ति हन्त्री ॥ १० ॥ मेधाऽसि देवि विदिता
खिल शास्त्र सारा दुर्गाऽसि दुर्ग भव सागर नौरसंगा ॥ श्रीः कैट-
भारि हृदये ककृताधि वासा गौरी त्वमेव शशि मौलि कृत प्रतिष्ठा
॥ ११ ॥ ईषत्सहास ममलं परि पूर्ण चन्द्र बिम्बानु कारि कनको
त्तम कान्ति कान्तम् ॥ अत्यद्भुतं प्रहृतमा त्तरुषा तथा ऽपि वक्त्रं
विलोक्य सहसा महिषा सुरेण ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटी
कराल मुद्यच्छशा ङ्क सदृश च्छवि यन्न सद्यः ॥ प्राणान्मुमोच
महिषस्तद तीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपिता न्तक दर्श नेन ॥ १३ ॥
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाश यसि कोपवती
कुलानि ॥ विज्ञातमे तद धुनैव यदस्त मेत न्नीतं बलं सु विपुलं
महिषा सुरस्य ॥ १४ ॥ ते सं मता जन पदेषु धनानि तेषां तेषां
यशांसि न च सी दति धर्म वर्गः धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्य
दारा येषां सदा ऽभ्युदय दा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ धर्म्याणि देवि
सकलानि सदैव कर्माण्यत्या दृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं
प्रयाति च ततो भवती प्रसादा ल्लोकत्रये ऽपि फलदा ननु देवि तेन

॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मति वतीव शुभांद्दासि· दारिद्र्य दुः खभय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता ॥ १७ ॥ एभिर्हतैर्जगदु पैति सुखं तथैते, कुर्वन्तु नाम नरकाय चिरायपापम् ॥ संग्राम मृत्यु मधि गम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नून महिता न्विनि हंसि देवि ॥ १८ ॥ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वा सुरा नः रिपु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोका न्प्रयान्तु रिपवो ऽपिहि शस्त्र पूता इत्थं मति र्भवति तेष्व हितेषु साध्वी ॥ १६ ॥ खड्ग प्रभानिकर विस्फुरणै स्तथोग्रैः शूलाग्र कान्ति निवहेन दृशो ऽसुराणाम् ॥ यन्ना गता विल यमं शुभदिन्दु खण्ड योग्या ननं तव विलोक यतां तदे तत् ॥ २० ॥ दुर्वृत्त वृत्त शमनं तव देवि शीलं रूपं तथै तद विचिन्त्य मतुल्य मन्यैः ॥ वीर्यं च हन्तृ हृत देव परा क्रमाणां वैरि ष्वापि प्रकटितैव दया त्वये त्थम् ॥ २१ ॥ केनो पमा भवतु ते ऽस्य परा क्रमस्यरूपं चशत्रु-भय' कार्यति हारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समर निष्ठु रता चदृष्टा-त्वय्येव देवि वरदे भुवन त्रयेऽपि ॥ त्रैलोक्य मे तद खिलं रिपु नाशनेन, त्रातं' त्वया समर मूर्द्ध नि तेऽपिहत्वा । नीता दिवं' रिपु-गणा भय मप्य पास्त मस्मा कमुन्मद सुरारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥ शूलिन पाहिनो देवि पाहि खड्गे न चाम्बिके । घण्टा स्वनेन नः पाहि चा पज्यानिः स्वनेन च प्राच्यां रक्ष प्रती च्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे, भ्रामणे नात्म शूलस्य उत्तरस्यां तथे श्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्यविचरन्ति ते, यानि चां त्यर्थ घोराणि तै रक्षा स्मा बथा भुवम् । खड्ग शूल गदा दीनि यानि चास्त्राणि तेम्बिके, कर पल्लव संगीनि तैरस्मा नक्ष सर्व त ॥२४॥ भूमौप्रादेशांकृत्वाप्रणमेत्॥ इति मन्त्रेणार्घ्य स्थं पूगीफलंरवेष्टा ।सम्मुखे निवेशः ।ॐअनेन सफलार्घ्येण दास्तु सदा मम ॥ इत्य शंख विशापार्घ्योदकेन देवतांस्तर्पयेत् ॥ॐभूर्भुवः स्वः श्रामहात्रिपुर सुंदर्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि नम. ॥ ततःमूलमन्त्रेण ग-न्धाक्षत पुष्पधूप दीपंत्रि.पूजयेत् ।.पुनः संतर्पयेत्-मूल मन्त्रेण पुष्पान्तान्-शुल्क पक्षेत्-यथा श्रां ऐं क्लीं सौः ॐनमः कमिश्वरि इच्छा काम फलप्रदे सर्वसत्ववश करि सर्व जगत्क्षोभणकरिहुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स सौ क्लीं ऐं
४६ कामेश्वरिनित्यां श्रीपादुका पूजयामिति दंच हस्तेन । माला मन्त्र संतर्पयेत् । (वामे पां भूमि निक्षिपेत्) इतित्रिः ॥ अंआं०अः पर्यन्तं ॐभू.र्भुवः स्वः श्री महात्रि० । पुष्पा ञ्जलिं समर्पयामि नमः ॥ इति पुष्पाञ्जलिम् । कृष्ण पक्षेतुपूर्व वत् माला मन्त्र पूजयामि नमः कामेश्वरि तर्प० पुष्पं स०
प्रार्थनाम्—ॐ विद्यु दाम समप्रभां मृग पति स्कन्धस्थितां भीषणाम्

कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ताभिरा सेविताम् ॥ हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम् बिभ्राणा मनलात्मिकां शशि धरां दुर्गां त्रिनत्रां भजे ॥ सर्व स्वरूपे ! सर्वेशे सर्व शक्ति स्वरूपिणि ! पूजां गृहाण-कौमारि ! जगन्मातर्नमोऽस्तुते ॥ ओं भूर्भुवः स्वः श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्यै नमः प्रार्थनां स० ॥ तथा च । वैदिकं धार्वानिक सूक्तं प्रार्थमेव समर्पयामिः ॥ नमोदेव्यै महादेव्यै० वा श्री शुक्तं वा] अथ आवरणार्चनादि परिवार पूजनम्-शुक्ल पक्षेयजेन्नित्या कामेश्वर्य्यादि षोडश ॥ कृष्णपक्षे चित्रिशाद्याः कामेश्वर्यन्तसानकाः ॥ इति वचनात् ।—प्रयोगो यथा—

भगमालिनी माह—आं ऐं भग भुगेभगिनि भगो दरिभगमाले भगावहे भग गुह्ये भग योने भगनिपातिनि सर्व भगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भग स्वरूपे सर्व भगानि मेह्यानय वरदे रेते सुरेतेभगक्लिन्ने क्लिन्न द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभक्षो भय सर्व सत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं ज ब्लूं में ब्लूं मों ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि में वशमानय स्त्रीं हरब्लें ह्रीं भगमालिनी नित्या श्री पादुका पूजयामि नमः ॥ नित्यक्लीन्ना मन्त्र माह—शिवाचर एकां दशार्णः । ह्रीं नित्य क्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा नित्यक्लिन्ना नित्या श्री पादुकां पू० ॥ भेरुण्डामंत्रमाह—इं ओं क्रों भ्रों क्रों चीं छ्रों श्रीं ज्रों स्वाहा भेरुं डानित्या श्री पा० । वह्नि वासिनीमंत्रमाह—मायेति—ॐ ह्रीं वह्नि वासिन्यैनमः वह्नि वासिनि नित्या श्री पादुका पूजयामि नमः ॥ महाविद्ये श्वरी मंत्र माह—ॐ ह्रीं फ्रें सः नित्य क्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ॥ महाविद्येश्वरीनित्या श्री पा० ॥ शिव दूती मंत्र माह—ॐ ह्रीं शिव दूत्यै नम. ॥ शिव दूतीनित्या श्री पा० ॥ त्वरिता मंत्र माह—ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षे ह्रीं फट् त्वरिता-नित्या श्री पा० ॥ कुल सुन्दरी मंत्र माह— लुं ऐं क्लीं सौः कुल सुन्दरीनित्या श्री पा० ॥ नित्या मंत्रमाह—लूं ऐं क्लीं सौः ह्रीं० सक्लीं ह्रसौं मौः क्लीं ऐंद्रीं क्लीं ब्लूं सः नित्या श्री पा० ॥ नील पताकिन्यां मंत्रमाह—ओं ह्रीं फ्रें स्त्रूं क्रों नित्य मदद्रवे हुं फ्रें नील पताकिनीनित्या श्री पा० ॥ विजया मंत्र माह—एं स्क्लें विजयायै नम. विजयानित्या श्री पा० ॥ सर्व मङ्गला मंत्र माह—स्वों स्वौं सर्वमङ्गलायै नम. सर्व मङ्गला श्री पा० ॥ ज्वाला मालिनि मंत्रमाह—ओं नमो भगवती ज्वाला मालिनि देवि सर्व भूत संहारकारिके जात वेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलनि ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट् ज्वाला मालिनी नित्या श्री पा० ॥ चित्रिया मंत्र-माह चं क्रों चित्रिया नित्या श्री पा० ॥ एवा पंच दश नित्या ॥ एवा ॥ त्रिकोणे पंच दश संपूज्य

विन्दौ मूलेन पोडशीं यजेत् ॥ श्रं मूल महा त्रिपुर सुन्दरी नित्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ विन्दुत्रिकोण यो मध्ये त्रिभंगीभिः पंक्ति त्रयेणगुरू न्यजेत् ॥ ते त्रिविधा इत्याह ॥ यथा-पर प्रकाशा नन्दनाथ, श्री पादुकां पूजयामिः ॥ पर शक्त्यं वा श्री - पा० ओगदा नन्दनाथ श्री० पा० ॥ गगनदा नन्द नाथ श्री पा० ॥ भोग शक्त्यम्बा श्री पा०.॥

त्रिन्दो प्रागादि दिक्षु पूर्वां म्नाय देवता श्री पा० ॥ दक्षिणा म्नाय देवता श्री पा० ॥ पश्चिमा म्नाय देवता श्री पा० ॥ उत्तरां म्नाय देवता श्री पा० ॥ ततः पंच पंचिकाः पूजयेत् ॥—तत्राद्य पंचके। मूलेन श्री विद्या मध्ये पूज्या ॥ दिक्षु लक्ष्म्या द्याः लक्ष्मी मंत्र माह-श्री लक्ष्मी श्री पा० । इति पूर्वे । महा लक्ष्मी मंत्र माह-ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलेकमला लये प्रसीदर श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा लक्ष्म्यै नमः महा लक्ष्मी श्री पा० ॥ दक्षिणे ॥ त्रिशक्ति मंत्र माह-श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिशक्ति श्री पा० ॥ पश्चिमे ॥ सर्व साम्राज्या मंत्रमाह-श्रीं सहकल ह्रीं श्रीं सर्व साम्राज्या श्री पा० ॥ उत्तरे ॥ द्वितीय पंचके—पर ज्योर्ति-मंत्रं माह—ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा परं ज्योतिः श्री पा० ॥ पूर्वे ॥ पर निष्कल शाम्भवी मंत्र माह—ॐ परनिष्कल शाम्भवी श्री पा० दक्षिणे ॥ अजपामाह—हंसः अजपा श्री पा० ॥ पश्चिमे ॥ आदिक्षांत वर्णास्तु म.तृकाः ॥ श्रं आ० क्षं मातृका श्री पा० उत्तरे ॥ तृतीयं कल्प लता पंचके ॥—त्वरिता मंत्र माह-ॐ ह्री हुं खेचछेक्षः स्त्रीं हुं क्षे ह्रीं फट् त्वरिता श्री पा० ॥ पूर्वे ॥ परि जातेश्वरी मंत्र —माह ॥ ॐ ह्रीं हसकल ह्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः पारि जातेश्वरी श्री पा० । दक्षिणे ॥ त्रिपुटा मंत्र माह-श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुटा श्री पा० ॥ पश्चिमे । द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः पंच बाणेशी श्री पा० उत्तरे ॥ कामधेनु पंच के ॥ अमृत पीठेशी मंत्र माह—ऐं ब्लीं सौंः अमृत पीठेशी श्री पा० ॥ पूर्वे ॥ सुधा श्री मंत्र माह—हस्रौं स्हीं श्रीं क्लीं सुधा श्री पा० । दक्षिणे ॥ अमृते श्वरी माह—सौः क्लीं हे अमृते श्वरी श्री पा० ॥ पश्चिमे ।. अन्नपूर्णे श्वरी मंत्रमाह-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवतिमाहेश्वरि अन्न पूर्णे स्वाहा अन्न पूर्णा श्री पा० ॥ उत्तरे ॥ रत्न पञ्चके— सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र माह-ऐं क्लिन्ने क्ली मद्रवे कुले हसौंः सिद्ध लक्ष्मी श्री पा० । पूर्वे । दक्षिणे मातंगी—ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमो भगवती मातंगीश्वरि सर्व जन मनोहरि सर्वराज वशं करि, सर्व दुष्ट मृग वशंकरि सर्व लोक व शंकरि ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मातंगी श्री पादुकां प्र० ॥ दक्षिणे ॥ भुवनेश्वरी माह ह्रीं - भुवनेश्वरी श्री पा० ॥ पश्चिमे ॥ वाराही मंत्र माह—ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्ताळि

वाराहिवाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अंधेअंधिनिनमः ।रुंधेरुंधिनि नमः ।जंभेजंभिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तंभे स्तंभिनि नमः ऐं ग्लौं ऐं सर्व दुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्व वाक चित्त चक्षुर्मुख गति जिह्वा स्तम्भं कुरु २ शीघ्रं वशं कुरु २ ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा वाराही श्री पा० उत्तरे ॥ एवं पंच पंचिकाः सम्पूज्य दर्शनानि यजेत् ॥ शिव दर्शन श्री पा० ॥ शक्ति दर्शन श्री पा० ॥ ब्राह्म दर्शन श्री पा० ॥ सौर सोगतम् ॥ ॐ मूलेनत्रिस्तर्पयेत् ॥ अङ्गुष्ट तर्जनी योगे ज्ञान मुद्रां प्रदर्शयेत् । भूबिम्ब मारभ्य बिन्दु पर्यन्तं ॥ प्रतिलोमे तथा वरण पूजा आवरण देवता नामादी माया श्री बीजे अंतेतु श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ अग्नीशा सुरवायव्यं पुरोदिक्षु पूजनम् ॥ आग्नेये हृत् ॥ ईशः शिरः । नैरित्ये शिखावायव्ये कवचं । पुरो नेत्रे । दिक्ष्वस्त्रं ॥ प्रयोगो यथा—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयं वाग्देवता श्री पा० । आग्नये ॥ ॐ ह्रां श्रीं शिरः वाग्देवता श्री पा० ॥ ईशः ॥ कयेइल ह्रीं शिखा वाग्देवता श्रीं पा० । नैरित्ये ॥ हस कहल ह्रीं कवचं वाग्देवता श्री पा० ॥ सकलह्रीं नेत्रम् वाग्देवता श्री पा० ॥ पुरौ ॥ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं दिक्ष्वस्त्रं श्री पादुकां पूजयामि वाग्देवायै नमः ॥ अथम् ॥ त्रिरेखं भू गृह मस्ति । तस्याधर रेखायां अष्ट दिक्षु ऊर्ध्वं मधरचाणिमाद्या दश सिद्धीर्यजेत् ॥ ह्रीं श्रीं अणिमायैसिद्धि र्अणिमां श्री पादुकां पू० ॥ ह्रीं श्रीं महिमायै सिद्धिर्महिमां श्री पादुकां पू० ॥ ह्रीं श्रीं लघि मायै सिद्धिर्लघिमा श्री पा० ह्रीं श्रीं गिरिमायै सिद्धिगिरिमां श्री पा० ॥ ह्रीं श्री प्राप्तयैसिद्धि प्राप्तयैं श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं प्राकाम्यै सिद्धि प्राकाम्यां श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं इषितायै सिद्धि ईषितां श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वसितायै सिद्धि वसितां श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ध्यानम्—तप्त हेम समानाभाः पाशांकुशधरा शुभाः । साधकेभ्यः प्रयच्छन्ति रत्नोघं वो विचिंतयेत् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्पादिभिर्नैवद्यान्तं सम्पूजयेत ॥

भू गृह द्वितीय रेखायां पश्चिमादि ब्राह्माद्या अष्ट मातृर्यजेत् ॥ ह्रीं श्रीं ब्राह्मी मातृका श्री पादुकां पूजयामि नमः । ह्रीं श्रीं माहेश्वरी मातृ का श्री पा० ॥ ह्रां श्रीं कौमारी मातृका श्रीपा० । ह्रीं श्रीं वैष्णवी मातृ का श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वाराही मातृ का श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं इन्द्राणीमातृका श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं चामुण्डा मातृका श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं महा लक्ष्मी मातृ का श्री पा० ॥ ध्यानम्—बिभ्रा शूलं शक्ति पद्मे गदां चक्रादि दण्डकम् ॥ पद्मं कमेशु द्रुवयीः सर्वा मिष्ट प्रदायिकाः । पाद्यगन्धा चत पुष्पा दिभिः नैवेद्यान्तं सम्पूजयेत् ॥ वस्यनुपुरस्य तृतीय रेखायां दिक्षु ऊर्ध्वमधश्च दश मंद्राभाद्या दश

मुद्रा यजेत् ॥ ह्रीं श्रीं क्षोभण मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रींद्रावण मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं कर्षण मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वश्य-मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं उन्माद मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं महा कुशाः मुद्राः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं खेचरीमुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्री बीज मुद्रा श्रीपादुकां पू० ह्रीं श्री योनि मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं त्रिखण्डामुद्रा श्री पादु० ॥ एवं ॥ क्षोभ मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ प्रार्थना— ॐ अभिष्ट सिद्धि म्मे देहि शरणं गत वत्सला। भक्त्या समर्पये तुभ्यं मिदमा, वरणा र्चनम् । इत्मा वरणा र्चनम् ॥ ततः पाणा-दिति नैवेद्यान्नं सम्पूज्यः अं० मूलेन पुष्पा ञ्जलिंदद्यात् ॥ ततः षोडशारे विलो मेन पश्चिमादि षोडश कामा कर्षणा द्याः शक्तीः पूजयेत् ॥ तर्पयेत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं कामा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं, बुद्ध्या कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्री अहं कारा कर्षणी-शक्ति श्री पा० ह्रीं श्रीं शब्दाकर्षिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्पर्शा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्पर्शा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं रूपा कर्षिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्री गन्धा कर्षिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं चित्ता कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्री धैर्य्या कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्री नामा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्री बीजा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्री अमृता कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्मृत्या कर्षणी शक्ति श्री पा० ह्रीं श्रीं शरीरा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्री आत्मा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ प्रार्थना-अभिष्ट सिद्धिम्मे देहि शरणां-गत वत्सलः । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितिया वरणार्चनं । इति संप्रार्थ्यं ॥ एताः षोडश गुप्त योगिन्यः पूजितास्तर्पिताः संतित्वुक्त्वा ॥ द्रावणी मुद्रां दर्शयेत् ॥ अष्टवर्गा न्वितेः ष्टोर पूर्वादनु लोमेना नंग कुरामा द्याः पूज-येत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं अनंग कुसुमा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग मेखला श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग मदना श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग मदना तुरा श्री पा० ह्रीं श्री अनंग रेखा श्री पा० ॥ ह्रीं श्री अनंग वेगा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं-अनंग ऽकुंशाः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग मालिनि श्री पा० ॥ एवं तृतीया वरणैः सम्पूज्य सत्र सं क्षोभणे चक्रे एता अष्टौ गुप्त तर योगिन्यः पूजिताः सन्तु ॥ प्रार्थना—

क्षोभणी मुद्रा—वामे मुष्टि दृढ बंध्या तर्जनी प्रसिसार येत् । आनंदेदेयाम कर्षां तं मुद्रा क्षोभण्य दवदनोदिदृयंक्षोभणी मुद्रां इति ॥

द्राविणी मुद्रा—अंगुष्ट मर्मित मुष्टि बध्नोत्त ॠजु वाचिनी । त्रिपुरेष्विह पदारम्येयं मुद्राका शब्र् आविनीति मुद्रा नाम पाद तले पूजोक्तः ॥

अभिष्ट शिद्धिं म्मे देहि शरणागत् वत्सलः । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतिया वरणार्चने ॥ इति सं प्रार्थ्य ॥ पाद्यगन्धाक्षत पुष्पादिभिः नैवेद्यान्त सम्पूज्य- इत्युक्त्वा कर्षण मुद्रां दर्शयेत् ॥ पुनः वपयेत् ॥—

ववरचतुर्थां वरणे चतुर दशारे कादि चतुर्दशार्ण युते । इन्द्र गोपेत्याद्युक्त रूपा दर्पण पाशाङ्कुश वाम कराः । पान पात्रां कुशाब्ज दक्षकराः सर्व सं क्षोभण्यां द्या रचतुर्दश शक्तय- ॥ शक्ति पश्चादिका परिचमादि विलोमतः पूज्याः ॥ यथा—ह्रीं श्रीं सं क्षोभणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं द्राविणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं ह्लाद करी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सं मोहिनी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्तम्भन कारिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं जृम्भनि का शक्ति श्री पा० ह्रीं श्रीं वशं करी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं रंजनि का शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वो न्मादिनि शक्तिः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वार्थ साधिनी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व सम्पत्ति रूपिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व मन्त्रमयी शक्ति श्री पा० ह्रीं श्रीं सर्वद्वंद्व क्षय करी शक्ति श्री पा० ॥ एत चतुर्थ वरण माराच सर्व सौभाग्य दे चक्रे इमा चतुर्दशाम्नमप्रदाय योगिन्य- पूजिता- सन्त्वि त्युक्त्वा उन्मद मुद्रा दर्शयेत् ॥ प्रार्थना—अभिष्टसिद्धिम्मे देहि । शरणा गत वत्सले भक्त्या समर्पये तुभ्य चतुर्थां वरणार्चने ॥ इदमा वरणा र्चनम् ॥ पाद्यगन्धाक्षत पुष्पादिभिः सम्पूज्य मूले पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा । वश्यमुद्रां प्रदर्श येत् ॥ पूजितास्तर्पिता इमा ॥ णादि दश वर्ण युते दशारे पश्चिमादि व्युत्क्रमेण सर्व सिद्धिप्रदाद्या या देवी प्रत्राद्या दश पूजयेत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं सर्व सिद्धि प्रदा यादेवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व सम्पत्प्रदा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं प्रिय करी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व मंगल कारिणी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व काम प्रदा देवी श्रीपा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व दु.ख विमो।

कर्षण मुद्रा—परि वर्त्य करौ स्पष्टा वंगुष्टौ कारयेत्समौ ॥ अनामान्तर्गते कृत्वा तर्जन्यौ कुटिला कृती ॥ कनिष्ठके नियुंजीत निज स्थानेमहेश्वरि ॥ त्रिखण्डेयं समाख्याता त्रिपुरा ह्वान कर्मणि: इति कर्षणी वि ॥

वश्यमुद्रा—पुटा कारौ करौ कृत्वा तर्जन्या वंकुश्या कृतौ ॥ परि वर्त्य क्रमे णैव मध्यमे तदन्तोगते ॥ क्रमेण देवि ते नेवकनिष्ठा नामिका दयः ॥ संयोज्य निविडा- सर्वा अंगुष्ठा वम देशतः मुद्रेय परमे शानी सर्व वश्य करी भवति ॥ इति वश्य मुद्रा लक्षणम् ।

विनी देवी श्रीपादुका० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व मृत्यु प्रशमनी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व विघ्न निवारिणी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वाङ्ग सुन्दरी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रींसर्व सौभाग्य दायिनी देवी श्री पा० ॥ एवं पंचमा वरण सम्पूज्य सर्वार्थ साध के चक्रे इमा दश कुलयोगीन्यः पूजिताः सन्त्वि त्युक्त्वा ॥ प्रार्थना—अभिष्ट शिद्धि म्मे देहि शरणां गत वत्सलेः भक्तया समर्पयेत्तुभ्यं पंचमा वरणा र्चनम् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्पादिभिः नैवेद्यान्तं सम्पूज्य ॥ उन्माद मुद्रां दर्शयेत् ॥ ततो परे दशारे माचर्णयुक्ते ज्ञान मुद्रा धर दक्ष कराः टंक पाश वाम करा उद्यत्रविनिभाः सर्वज्ञा द्या देव्याद्या दश-पूजयेत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं सर्वज्ञा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व शक्ती देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व ऐश्वर्य्य फल प्रदा देवी श्री पा ॥ ह्रीं श्रीं सर्व ज्ञान मयी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व व्याधि विनाशिनी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वा धार स्वरूपा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व पापहरा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वा नन्द मयी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व रक्षा स्वरूपिणी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वेप्सितार्थ फलप्रदादेवी श्री पा० ॥ इति पश्चिमादि विलो-मगाः ॥ एवं षष्ट मा वरण मभ्यर्च्य सर्व रक्षा करे चक्रे इमा दश निगर्भ योगिन्यः पूजिता सन्त्वि त्युक्त्वा कुश मुद्रां दर्शयेत् ॥ प्रार्थना-अभिष्टसिद्धिम्मेदेहि—शरणां गत वत्सलेः भक्तया समर्पये तुभ्यं षष्टमा वरणा र्चनम् इति सं प्रार्थ्यः पाद्यगन्धाक्षत पुष्प धूपदीप नैवेद्यान्त सम्पूज्यां कुश मुद्रयाप्रदर्शयेत् ॥

ततोष्टारे रक्त वस्त्र वाणधर दक्ष करा धनु विद्या वाम करा न्यासोक्ता अष्ट वसिन्या द्या उक्त बीज पूर्विका यजेत् ॥ ह्रीं श्रीं अं आं० अः ब्लूं वशिनी वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्री-अं आं० अः क्लीं ह्रीं कौमारी वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अं-आं० अः न्ब्लीं मादिनी वाग्देवता श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अं आं०

उन्माद मुद्रा-संमुखौतु करौ कृत्वा मध्यमा मध्यमे भुजे ॥ अनामिके तु सरले तदध स्तर्जनी द्वयम् ॥ दंडा कारौ ततो गुष्टौ मध्यमा नख देशगौ ॥ मुद्रेशा न्मादनी नाम क्लेदिनी सर्व योषिता ॥

अंकुश मुद्रा—ऋज्वीं मध्यमिकाकृत्वां वर्जनी मध्य पर्वणि । संयोज्या कुन्त्वये त्किचिन्मुद्रैषांकुशसंज्ञिकम् ॥

खेचरी मुद्रा-सव्यदक्षिण हस्तेतु सव्य हस्तेतु दक्षिणम् । बाहू कृत्वा-

अ ह्लूं विमला वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ म्रीं अरुणा वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ ह्स्ल्व्यूं जयनीवावाग्देवतायै श्रीपादुका० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ झ्म्र्यूं शर्वेशी वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ अ क्ष्मीकौलिनीवस्श्वतायैश्री पा० एव सप्तमा वरणं भिष्ट्वा सर्व हरे चक्रे इमा अष्टारहस्य योगिन्य पूजिता सन्ति स्युक्त्वा ॥ प्राथना अभिष्ट सिद्धिम्मे देहि शरणा गत वत्सल भक्त्या समर्पयेत्तुभ्य सप्तमा वरणार्चनम् ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्पादिभि नैवेद्यान्त सम्पूज्य । खेचरी मुद्रा दर्शयन् ॥

ततोऽकथादि वरणरचितेत्रिकोणेपश्चिमायातु लोमेन चतुर्दलस्व स्व बीजपूर्वकान् जभ मोह वसस्तभ विशेषण विशिष्टान् कामेश्वर कामेश्वर्यो र्वाण धनु पाशांकुशान्पूजयेत् ॥

यथा—ला वा सा द्रा द्रीं क्लीं ब्लूं स कामेश्वर कामेश्वरी जभय बाणश्री पा० ॥ पश्चिमे ॥ ध थ कामेश्वर कामेश्वरी मोहन धनु श्री पा० ॥ उत्तरे ॥ आ ह्रीं कामेश्वर कामेश्वरीवशीकरणपाश श्रीपा० ॥पूर्वे। क्रौं कामेश्वर कामेश्वरी स्तम्भनांकुश श्री पा० ॥ दक्षिणे अग्नि दक्षिण वामकोणेपुकूटत्रय,(क०ह०स०)पूर्वे रुद्रविष्णु ब्रह्मणाशक्त्यश्वतिस्र कामे श्वरीवज्रेश्वरी भगमालिनीसज्ञा पूज्या ॥ प्रयागोयथाक एईल्ह्रीं कामरूप पीठे कमेश्वरी रुद्र शक्ति श्री पा० ॥ ह सकल ह्रीं पूर्णागिरी पीटे वज्रे श्वरी विष्णु शक्ति श्री पा० ॥ सकल ह्रीं जालन्धरी पीटे भग मालिनी ब्रह्म शक्ति श्री पा० ॥ एव मष्टमा वरण भिष्ट्वा सर्व सिद्धि प्रदे चक्रे इमा अति रहस्य योगिन्य पूजित सान्ति स्युक्त्वा मलेन पुष्पाञ्जलि दत्वा बीज मुद्रा प्रदर्शयेत् ॥ यथा प्रार्थना—अभिष्ट सिद्धिमेदेहि शरणा-गत् वत्सले भक्त्या समर्पयेत्तुभ्यं अष्टमा वरणार्चनम् ॥ इदमा वरणा र्चनम् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्प धूपदीप नैवेद्यादिभि सम्पूजयेत्। मूले पुष्पाञ्जलिंदत्वा मुद्रा प्रदर्शयेत् ।

तत—अ आ० इत्यादिमूल विद्या पठित्वा ध्यात्वा बिन्दौ श्री मन्त्रि॰

मुद्रा—वि हस्तौ स परि वर्तय ॥ कनिष्ट नामिका देहि युग्मजे न क्रमेश तर्जनीभ्यामसमानातेनवोर्ध्वमधिमध्यमे । अंगुष्ठौ तुमहादे विसरला कारयत्सम ।

बीज मुद्रा—अगुष्ट गर्भिणी सेव सचिराय समीरितेति अगुष्ट गर्भे नुद्दिष्टर्य इयम ॥ योनि मुद्रा नाय कनिष्ठि के बध्वा तर्जनीभ्यां मनामि के ॥ अना मिकोर्ध्वे सरिलष्ट दीर्घ मध्य मया रय । अगुष्टाग्रद्वय न्यस्य योनि मुद्रेयमी रितेति ॥ ब० वशीकरणन्याय ॥

पर सुन्दरी पादुकां पूजयामि इतियजेत् ॥ एवं नवमावरण माराध्य सर्व काम प्रदे चक्र सर्वाभीष्ट दायिनी परा पर रहस्य योगिनी श्री मत्रिपुर सुन्दरी पूजितास्त्विस्त्युक्त्वा योनि मुद्रां प्रदर्श्य त्रिस्तर्पयित्वा धूपदीपा दीनि दत्वा अग्नोवावाह्य हुत्वोद्वासयेत् ॥ अग्नि स्थापनम् । (प्र० ७०)

प्रार्थना—अभिष्ट सिद्धि म्मे देहि शरणं गत वत्सले: भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमा वरणार्चनम् ॥ इति सं प्रार्थ्य: ॥ पाद्यगन्धाक्षत धूप दीप नैवेद्य पुष्पै र्नानाविधैर्दिशेत् । वह्निसम्पूज्य पूर्वोक्त श्रीमद् त्रिपुर सुन्दर्यै नमः ॥ योनि मुद्रां प्रदर्शयेत ॥ अथ शत चण्डी

श्री सत् चण्डिविधानम् ।

विधानं प्रयोगो यथा—शास्त्रोक्त विधिना शङ्करालये भवान्या लयेवा ॥ मंडपं वेदि मध्ये निर्माय ॥ प्रतीच्यां कुण्ड मध्येवा कृत्वा सङ्कल्पं विधाय ॥ कृत नित्य क्रियो मुक कामः शत चण्डी विधान मह करिष्य इति ॥ मातृ स्थापन नांदी श्राद्धं विधाय स्वस्ति वाचनं कृत्वा ॥ उक्त लक्षणान् दश विप्रान् मधु पर्क वस्त्र हेम दाना-दिना वृणुयात् ॥ ते च यजमान दत्ता सनेपु वृत्तमालाभिः समाहि-ताः सुमन सोभगवती स्मरं तः सप्त सतीपूजा मन्त्रेण वेदां कुंभं-सस्थापयित्वां तत्र दुर्गा मा वाह्य षोडशो पचारैः संपूज्य तदग्रे प्रत्येकं दश कृत्वः सप्तसती म युतं च नवार्णं जपेयुः ॥ हविष्य भोजन ब्रह्म चर्यम् शयना स्पृश्यास्पर्शादि नियमां श्च चरेयुः ॥ यज मान श्च द्वि वर्षा द्या उक्तलक्षणा अधि कांगी त्यादि दुर्लक्षण रहिताः कुमारी त्रिमूर्तिकल्याणादिनाम्नी दश कन्या भोजन वस्त्र हेम दाना दिनामंत्रा क्षर मयी मित्यादि मंत्रेण वाह्यजगत्पूज्ये त्यादि स्व० स्व० मंत्रैः पूजयेत् ॥

नवार्णं चण्डिका मंत्रं जपेयु श्चा युतं पृथक् ॥ यजमानः पूजयेच कन्यानां दशकं शुभम् ॥ द्वि वर्षा द्या दशा व्दांवाः कुमारीः परि पूजयेत् ॥ नाधिकां गीन हीनांगीं कुष्ठिनीं च व्रणां कितम् ॥ अधां काणां केकरां च कुरूपां रोम युक्त तुम् ॥ दासी जातां रोगयुक्तां दुष्टां कन्यां न पूजयेत् विप्रांसर्वेष्ट सं सिद्धै यशसे क्षत्रियो द्भवाम् ॥ वैश्यानांधन लाभायपुत्राप्त्यै शूद्रजांयजेत् ॥ द्विवर्षा सा कुमा र्युक्ता त्रिमूर्ति र्हायन त्रिका ॥ चतुरब्दा तु कल्याणी पंचवर्षा तु रोहिणी । षडब्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्त हायनी ॥ ऽष्ट वर्षा शांम्भवी स्या दुर्गा च नव हायनी ॥ सुभद्रा दश वर्षोक्ता

स्वा मंत्रैः परि पूजयेत् ॥ एकाब्दा याः प्रोक्त भावो रुद्राब्दास्तुविवर्जिताः ।। वासा मा वाहने मंत्राः प्रोच्यन्ते शङ्करो दिवाः । मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणांरूपधारिणीम् ॥ नव दुर्गात्मिकां साक्षा त्कन्या मा वाह्याम्यहम् ॥ कुमारि कादि कन्यानां पूजा मंत्रा न्ब्रुवेऽधुना ॥ जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्व देव स्वरूपिणि ॥ पूजागृहाण कौमारि जगन्मातर नमो स्तुते ॥ त्रिपुरांत्रिपुरा धारां त्रिवर्ग ज्ञान रूपिणीम् । त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजया म्यहम् ॥ कलात्मिकां कला तीतां कारुण्य हृदयां शिवाम् ॥ कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ अणिमादि गुणाधारा मकारा द्यक्षरा त्मिकाम् ॥ अनन्तां शक्ति कां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ कामचारां शुभां कान्तां काल चक्र स्वरूपिणीम् । कामदां करुणो दारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ चण्डवीरां चंड मायां चंड मुंड प्रभञ्जनीम् पूजयामि महा देवीं चण्डिकां चण्ड विक्रमाम् ॥ सदा नन्द करीं शांता सर्व देव नमस्कृताम् ॥ सर्व भूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजया म्यहम् ।, दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवार्णव विनाशिनि ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम् ॥ सुंदरीं स्वर्ण वर्णाभां सुख सौभाग्य दायिनीम् ॥ सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ एवं मंत्रैः पुराणोक्तैः स्तावां कन्यां प्रपू जयेत् ॥ गंधै पुष्पैर्भक्ष भोज्यै

त्रिमूर्तिपूजनम् ॥

र्वस्त्रै रा भरणै रपि ॥ वेद्यां विरचिते रम्ये सर्व तो भद्र मण्डले ॥ घटं संस्थाप्य विधि वत्तत्रा वाह्य यजे च्छिवाम् ॥ तद्गर्भे कन्यका श्चापि पूजये द्ब्राह्मणा नपि ॥ उपचारै स्तु विविधैः पुर्वोक्ता वरणा न्यपि ॥ एवं तु ब्राह्मणाः पूज्याः अन्यथा होम मा चरेत् ॥ पाय मान्न स्त्रि मध्वक्तै द्राक्षरंभा फलै रपि ॥ मातु लिंगै रिक्षु खंडै नारि केलैः पुरै स्तिलैः ॥ जार्ता फलै राम्र फलै रन्यै मंधुर वस्तुभिः सप्त शत्या दशा वृत्या प्रति श्लोकं हुतं चरेत् ॥ अयुतं च स्वर्ण्येन स्वाधिष्ठानो विधानतः ॥ कर्पूरादि क्रमम् ॥ ततः आवरण देवता नाम मंत्रे स्वारादि स्वाहां ते रेकैका माहुतिं हुत्वा ॥ सर्वेष्ट सिद्धिदः कामधाश्रयविद्याः हवनीय द्रव्य प्रयोगे द्रष्टव्यः च— उन्मनीमम् ॥

उन्मनीयं—हसकल ह्रीं कल ह्रीं एक सहल ह्रीं सकल हल ह्रीं श्री क्लीं

कृष्णाय गोविन्दाय गोपी जन वल्लभाय स्वाहा ॥ मिति पुर्णा हुति कृत्वा देवीं कुंभ स्यांसम्पूज्य । आवाह्य जुहुया द्रव्यं पंचविंशति संख्यया ॥ ईशानाग्नेय नैर्ऋत्य वायुकोणेषु चक्र मात् ॥ श्री चक्रस्य बलिं दद्यात् हुत शेषेण संयुतः (ईशानादि कोणेषु वटुक योगिनी क्षेत्र पाल गणेशेभ्यो नमः)। वटुक बलि मंत्रमाह—ऐं ह्रिं देवी पुत्र वटुक नाथ कपिल जटा भार भासुर त्रिनेत्र ज्वाला मुख सर्व विघ्ना नाशाय २ सर्वो पचार सहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहेति ॥

श्री वटुकादि पूजनम् ॥

योगिनी बलि मंत्र माह—ऊर्ध्वं ब्रह्माण्ड तो वा दिविगगन तलेभूतले निष्कले वा पाताले वा नलेवा सलिल पवन यो र्यत्र कुत्रस्थितावा ॥ क्षेत्रे पीठो प पीठा दिषुच कृत पदा धूप दीपादि केन प्रीता देव्येः सदानः शुभ बलि विधिना पातु वीरेन्द्र वंद्याः ॥ यां योगिनीभ्यः स्वाहांन्तो भूमि नंदाक्षरो मनुः। योगिनी नां बलि दद्यात् अनेन विधि पूर्वकम् ॥ क्षेत्र पाल बलि मंत्र माह—क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः हुं स्थाने क्षेत्र पालेश सर्व कामं पूरय स्वाहेति ॥ गणेश बलि मंत्र माह—ॐ गांगी गूं गं गणपतये—वर वरद सर्व जनं मे वशमानाय सर्वो पचार सहितं

बलिं गृह्ण २ स्वाहेति ॥ किंचिद्वक्षी कृत्वा मध्या गणनाथ बलौस्मृता ॥ अनामा मध्यमां गुष्ठा योगिनांतु बलौ पुनः ॥ एवं सम्पूज्य संस्तुत्य ॥ नत्वाक्षमन्युप सं हरेत् ॥ सिद्ध मंत्रः प्रकुर्वीत प्रयोगान् शिवभाषितान् इत्यादि श्री चक्रस्य बलिं दद्यात् हुत शेषेण संयुतः ॥ आवरणादि परिवार पूजनं समर्पयामिः नमः ॥ नतोनमस्कारान् ॥ आचार्यस्य प्रत्येकं निष्कमको सुवर्णांमित सुवर्णं सवत्सगो दानादिकं दद्यात् ॥ ततो विप्राः कलशो दकेन यजमानं निगम पुराणोक्त मंत्रै रभिषिंचेयुराशिषश्च दद्युः ततः शतं विप्रान्नाना विधान्नैर्भोजयेत् । तेभ्योपि यथा शक्ति दक्षिणां दद्यात् ॥ गृह्णया दाशिषस्ततः ॥ शुभम् ॥

चंडीविधेः प्रकार माह—

स्वचंडी विधानं दशगुणं सहस्र चंडीतत्र शतं विप्रमवरणम् ॥ ते शत-

विप्राःप्रत्येकदशदश.सप्तशती पाठान्कुर्युः । अयुतमयुतंनवार्णं जपंचकुर्युः ॥ शत कन्या श्चभोज्याः पूज्याः ॥ एवंदश दिनेषु संपाद्य एकादशेह्नि सप्तशतो शता वृत्या प्रति श्लोकं तल्लक्षण सख्यं नवार्णेन च होमः ॥ ऋत्विग्भ्योपि दश २ निष्क मितं सुवर्णं प्रत्येकं दद्यात् ॥ शेषं पूर्वोक्तवत् । इति सहस्र चडो विधिः ॥ एतत्फलं—एवं' सहस्र संख्याकं मिति । एतद्युतचंडी विधान लक्ष चण्डी विधानयो रूप लक्षणं सहस्र चंडीदश गुणोऽयुतचंडी विधिः सदशगुणो लक्षचंडी विधिः । जपे होमे दक्षिणा यां कन्यासु विप्रभोजने च दशगुणत्वम् ॥ इति चंडीपाठ विधिः । वर्णनम् ॥

श्री देव्या आर्तिः ॥

आरती वर्त्तिका ॥

टका—जै अम्बे गौरी मय्या जय अम्बे गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावे हरी ब्रह्मा शिवजी ॥
माग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्वल से दोऊ नयना चन्द्र वदन नीको ॥ टेक
कनक समान कलेवर रक्तांबर राजे ।
रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजै ॥ टेक
केहरि वाहन राजे खड्ग खप्पर धारी ।
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःख हारी ॥ टेक
कानन कुण्डल शोभत नासामे मोती ।
कोठिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ॥ टेक
शंभु निशुंभ बिडारे महिषा सुर घाती ।
धूम्र विलो चन नयनां निशिदिन मदमाति ॥ टेक
चौसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरौं ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ टेक

भुजा चार अति शोभत खड्ग खप्पर धारी, मन वाञ्छित फल पावें सेवत नर नारी ॥ टेक ॥ कञ्चन थाल विराजत अगर कपूर बाती । श्रीमाल केतुमें राजत कोटि रत्न ज्योति ॥ टेक ॥ यह अम्बे की आरती जो कोई नर गावे । भनत शिवानन्द स्वामी सु खसम्पत्ति पावे ।

टेक—जै अम्बे गौरी मय्या जय अम्बे गौरी ॥ से० विश्वनाथ शर्मा

श्री अग्नि स्थापनम्

अग्नि स्थापन विधिमाह—आसनम्—वागीशी वागीश्वर्यो योग पीठात्मने नमः ॥ मायादिकः पीठ मन्त्रस्तयोस्ते नाशनं दिशेत् ॥ यजेतौ तारमायाभ्यां गंधाद्यै रुपचारकैः ॥ [१] लक्ष्मी नारायणौ स्वर्वे द्वैध्यावे होमकर्माणि ॥ सूर्य कान्ता दरणितः श्रोत्रिया गारवो पिवा ॥ पात्रेण पिहिते पात्रे वह्नि मानाय ये ततः ॥ अस्त्रेणदाय तत्पात्रं वर्मणो द्वादये सुतम् ॥ अस्त्र मन्त्रेण नैऋत्ये क्रव्यादां शनत स्त्यजेत् ॥ मूलने पुरतो धृत्वा संस्काराश्च ततश्चरेत् ॥ वीक्षणाद्यान्पुराप्रोक्ता नल्पं प्रोक्षण मा चरत् । परमात्मा नलेनाथ जाठरेणापि वह्निना ॥ भरत्ने स्यंवह्नि वीजा मै तन्यं योजयेत्ततः ॥ तारेण चाभि मन्त्र्याग्नि सुधया धेनु मुद्रया ॥ अमृतीकृत्य संरक्षेदस्त्र मंत्रेण मंत्र वित् ॥ मुद्रयात्वव गुंठिन्या कवचेना व गुंठयेत् ॥ कुण्डो परितवो वह्निं भ्रामयेत्त्रिध्र व (ॐ) पठत ॥ नवार्णं मुद्धरति ॥ शय्यागता मृतुस्नातां नीलेदीवर धारिणीम् ॥ देवेन भुज्य मानांतां स्मृत्वा तद्योनि मण्डले ॥ ईशारे चोधिया व हिस्थापये दात्म सं मुखम् ॥ मूलं नवार्णं चपठ ज्ञातु स्पृष्टधरातलः तरैकार्धीशेन्दु संयुक्तं गगनं वह्नि चैततः ॥ तन्याय हृदया तोय नवार्णोग्नि निधापनेः विश्राण्या च मनं देवी देवयोज्वालये द्रुसुम ॥ चतुर्विशतिवर्णेन मन्त्रेण अपणा[२] दिभिः । चित्पिंगल हना द्वह्द दह पुर्ण पचद्वयम् ॥ सर्वज्ञा ज्ञापय स्वाहा मंत्रो वेद् भुजाक्षरः प्रदेश्यं ज्वालिनीं मुद्रामुत्थाय त्रिर्हिनां जलिः ॥ श्लोक रूपेण मन्त्रेण ह्युपतिष्ठे द्वु ताशनम् ॥

क्रव्या दांशं मासाशि नो वन्हेयस्तत्र भागस्त मत्रपस्त्यजेत् ॥ वन्ह बीजात्—रमिति बीजात् ॥ सुधया वं बीजेन धेनु मुद्राः अपि गुंठिन्या अपि वक्ष्यते ॥ कवचेन हुं बीजेन ॥ त्रिधुवं प्रणवम् ॥ (ओ)

१ ह्रीं वागीशी वागीश्वर यो योग पीठात्मने नमः ।

२ श्रीं ह्रीं लक्ष्मीनारायणा भ्या नमः ॥

हुं वह्नि चैतन्याय नम इत्यग्नि स्थापने नवाक्षरो मंत्रः ॥

चतुर्विंशति वर्णो मुद्धरति—चित्पिंगलहन २ दह २ पच २ सर्वज्ञा ज्ञापय स्वाहा । वेद ४ भुजा रसा श्चतुर्विंशति वर्णाः ॥

ज्वालिनी मुद्रा लक्षणम्—मणि वन्ध युतौ नेत्वा प्रसृता गुलिकौ करौ ॥ कनिष्ठा गुष्ट युगुले मिलितावतः प्रसारित ॥ ज्वालिनी नाम मुद्रेयं वैश्वानर प्रिय करीति ॥

१ हूं वह्नि चैतन्याय नम २ अग्निम् ३ कायवादिभिः ॥ ३ ॥

श्राफ रूप अग्नि मंत्र माह—अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जात वेदं हुता शनम् ॥ सुवर्ण वर्ण ममल समिद्धं विश्व श्चतो मुखम् ॥ अथाग्नि मंत्रं विन्यस्येत्तद्विधान मुदीर्यते ॥ वैश्वानरांते जातेति वेदांते स्यादिहा वह ॥ लोहि ताक्ष पदात्सर्वं कर्माण्य तेतु साधय ॥ वह्नि प्रियांतो मंत्रोय पडिं्रशत्य क्षरान्वितः ॥ ऋषि शछन्दो देवतास्य भृगुर्गायत्र पावकाः । रं बीजं ठ द्वयं शक्ति हवने विनि योजनम् ॥ लिंगे पायौ मूर्ध्निवक्रे नसि नेत्रे रिवलांग के ॥ वह्ने जिह्वाः स्ववीजा द्वयान्यमेन्ङेता नमो न्विताः ॥ हिरण्या गगना रक्ता कृष्णा सुप्र भयान्विता । बहु रूपाति रक्तेति जिह्वा द्मुन सोमताः दीपि का नल वायु स्थाः साद्या नरण मिलोमतः । सेन्दवः सप्त जिह्वानां सप्तानां योजवा गताः ॥

१ गीर्वाण पितृ गन्धर्व यक्ष नाग पिशाचकाः । राक्षसा श्चेतिजि ह्वानां देवतास्तत्पले न्यसेत् ॥ न्यासे चैने न्युत्क्रमः स्या द्वहु रूपाति रिक्तयोः । नेत्रेति रिक्तान्य स्वव्या सर्वांगे बहु रूपिका ॥ महस्त्राचिपे हृदयं स्वस्ति पूर्णाय मस्तकम् । उत्तिष्ठ पुरुषा येति शिखामंत्रोयमीरितः ॥ धूमान्ते व्यापिने वर्म सप्त जिह्वाय नेत्रकम् । अस्त्रं धनुर्धरा येति पडंगानि समाचरेत् ॥ मूर्ध्नि वामे सकं पार्श्वे कटौ लिंगं कटौ पुनः । दक्षे पार्श्वे सके न्यसे न्मूर्ती रष्टौ विभा·

अग्निमंत्र माह—वैश्वा नर जात वेद इहा व लोहिताक्ष सर्व कर्माणि साधय स्वाहेति । ठ द्वयं स्वाहा । ङेन्ता श्चतुर्थ्यंताः जिह्वा बीजा न्युपरति । दीपिकेति । प्रत्येषु स्थिताः सकाराद्या· विलोम वर्णाः स व ॥ वलरयेति सेन्दवो नुस्वाराद्या इमे सप्त हिरण्यादि जिह्वाना बीजानी त्यर्थः । तद्यथ ॥ स्र्यूं हिरण्याये नमः । ष्र्यूं गगनाये नमः ॥ ष्र्यूं रक्ताये नमः ॥ ब्र्यूं कृष्णाये नमः । ल्र्यूं सुप्रभाये नमः । र्यूं बहुरूपाये नमः । ष्र्यूं अग्ने: सप्त जिह्वी नामानि ॥ स्र्यूं ष्र्यूं श्र्यूं ब्र्यूं ल्र्यूं र्यूं ष्र्यूं अमे — श्रानेरिक्तायेनम् जिह्वा बीजानि ।

गीर्वाण दयो जिह्वाधि देवा जिह्वा स्थानेषु पस्यान्यस्टा ॥ः सुरेभ्यो नमः लिंगे इत्यादि । जिह्वाष देवाता नामानि । प्रयोगोस्तु । ष्र्यूं ष्र्यूं श्र्यूं ब्र्यूं ल्र्यूं र्यूं य्र्यूं हिरण्याय नमो लिंगे । ष्र्यूं श्र्यूं ब्र्यूं ल्र्यूं र्यूं य्र्यूं गगनाये नमः पायौ ॥ श्र्यूं ब्र्यूं ल्र्यूं र्यूं य्र्यूं रक्ताये नमः मूर्ध्नि । ब्र्यूं ल्र्यूं र्यूं य्र्यूं कृष्णाये नमः ॥ वक्रे । ल्र्यूं र्यूं य्र्यूं सु प्रभाये नमः । नसि । र्यूं य्र्यूं बहु रूपाये नमः नेत्रो य्र्यूं अतिरिक्ताये नमः अखिलांगे ॥ मस्तके शिरो मंत्रः । सहस्त्रार्चिपे

वसोः ॥ सारामये पवा दास्ता श्चतुर्थी ममसान्विताः ॥ जातवेद्राः सप्त जिह्वो हव्य वाहन इत्यपि ॥ अश्वो दूरज संज्ञोन्य स्तथा वैश्वानरा इयः । कौमार तेजाः स्या द्विश्व मुखो देव मुख स्तथा ॥ ततो न्यसे त्रिजे देहे पीठं हाट करे वमः । वह्नि मण्डल मर्यन्त मरुङ्कु कादि यथो दितम् ॥

पीता श्वेता रुणा कृष्णा धूम्रा तीव्रा स्यु लिंगिनी । रुचिरा ज्वालिनी चेति कृशानोः पीठ शक्तयः ॥ बीज वन्ह्या सनाये.ते इदं वः पीठमन्त्रकः । एवं विन्यस्य पीठान्तं पावकं चिंतयेत्तनौ ॥ ध्यानम्-त्रिनेत्रमारक्त तनुं सु शुक्ल वस्त्रं सुवर्ण स्रज मग्नि मीडे । वराभय स्वस्तिक शक्ति हस्तं पद्मस्थ मा कल्प समूह युक्तम् ॥ एवं ध्यात्वा चंनं कुर्यान्मानसं विधि वद्वसोः ॥ परिषिं चे त्तत स्तोयैः कुण्ड स्थडिल मेववा ॥ दर्भैः परि स्तरे दग्नि प्राग्ने रद गमकैः । प्रत्यग्दक्षिण सौम्यास न्यसे त्रो न्परिधी न्क्रमात् ॥ पालाशान्वि-स्वजां स्तेषु मह विष्णु शिवान्यजेत् । वह्नौ स्तपीठ मभ्यर्च्या वाहये स्त्वद्दशे नलम् ॥ गन्धादिभिः समभ्यर्च्य पूजये त्पावकं प्रभो । पट् सु कोणेषु मध्ये च जिह्वा स्त देवता यजेत् ॥ ईशा-नादिषु वाय्वंत कोणेषुपट समर्चयेत् ॥ हिरण्याद्य तिरक्तां ता मध्येतु बहु रूपिणीम् ॥ केसरे ष्वंग पूजा स्याद्दले ष्वष्ट स्वमूर्तयः । मातरोष्टौ दलां तेषु भैरवाः- स्यु स्तदग्रतः ॥

धरा पुरेषु शक्राद्या वज्राद्या युधसंयुताः । एवमा वरणै युक्तं सप्त

पीताद्या पीठ शक्तयः । बीज मिति रं वह्न्यासनाय नमः । इति-पीठ मंत्रः ॥ ध्यानं त्रिनेत्र मिति ॥ वर स्वस्ति कौ दक्षयोः । अभीति शक्ती वामयोः ॥ आकल्प आभरणानि तत्सप युक्तम् ॥

हृदयम । स्वस्तिव्रुः मस्तकम् । उत्तिष्ठ पुरुषाय शिखा , धूम व्यापिने कवचम् सप्त जिह्वाय नेत्रम् । धनुर्धराय अस्त्रम् ओं अग्नये जात वेदसे नमो मूर्ध्नी । ओं अ० सप्त० योन । ओं अ० हव्यवा० अंसके । अश्वोद-राय पार्श्वे । वैश्वानराय कटौ । कौमार ते० लिंगे । विश्व मु० करौ । देव मु० दक्षु पार्श्वे ॥ ततो न्यसेत् त्रिजे देहे ॥ पठ हाटक रेतसः ॥

तीर्थं मन्त्रेण ॥ गंगेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मि न्सन्निधिं कुरुस्व तेन ॥ मुसलाकृतया मुद्रया ॥ मुरजो मध्य मिका कृत्वा तर्जनी मध्यमांगुलि संयोजया कुंचये त्किंचित् मुद्रेयां मुशलकृतेति कथ्यतम् ॥

भिः पावकं यजेत् असि तांगो रुरु श्चंडः क्रोध उन्मत्त संज्ञकः कपाली भीषण श्चापि संहार श्चाष्टभैरवाः ॥ वामे कुशा नथा स्तीर्य तत्र वस्तूनि निक्षिपेत् । प्रणीता प्रोक्षणीपात्रे आज्य स्थालीं स्रुवं स्रुचम् ॥ अधो मुखानि चैतानि होम द्रव्यं घृतं कुशान् ॥ समिधः पंच पालाशी रन्य दप्युप योगियत् ॥ कृत्वा पवित्रे मूलेन प्रोक्षेतानि शुभांभसा । उत्तानानि विधां याथ प्रणीतां पूरये ज्जलैः ॥ तीर्थमंत्रेण तीर्थां नि सूएया तत्रा ह्वयेत्सुधीः ॥ पवित्रे अक्षतां स्तत्रनिक्षिप्योत्पवनं चरेत् ॥ अथो दीक्ष्यां निधायै तां प्रोक्षण्यां तज्जलं क्षिपेत् ॥ हवनीयं द्रव्य जात मुक्ते तोयैः पवित्रगैः ॥ मूलेन मूल गायत्र्या यद्वा हृदयमंत्रतः । दक्षिणे पीठ मासाद्य तत्र मह्यास्य माह्वयेत् ॥

अग्नि मायाः सिद्धयोष्टौमह्मणः पीठदेवताः ।वारदस्पूर्वाकोक्तो मह्मो- मंत्रोस्य पूजने ॥ हस्ताभ्यां स्रुकस्रुवौ धृत्वाचापयेत्त्रिरधो मुखौ। वाम हस्तेन तौधृत्वा दर्भैर्दक्षेण मार्जयेत् । सं प्रोक्ष्य प्रोक्षणी तोयैः प्रतप्य पूर्वं वस्नुनः । न्यस्याग्नौ मार्जनान्दर्भां स्तयोः शक्ति त्रयंन्यसेत् ॥ इच्छा ज्ञान क्रिया संज्ञा चतुर्थी नम सान्विता ॥ दीर्घत्रयन्दु युग्व्योम पूर्वकं स्थान कत्रये ॥ हृदायुस्त्र विन्यसे२ च्छक्तिं स्रुवे शंभु तत स्तुतौ । मंत्र त्रयेण सं चेन्द्रय संपूज्य कुसुमा दिभिः ॥ कुशोपरिन्यसे द्दक्षे तयोः संस्कार ईरतः । अथोत्तिवायामाज्यस्य स्थाल्या माज्यं विनि क्षिपेत् ॥ विक्षिणादिक संस्कार संस्कृतं मूल मंत्रतः । गोमुद्रया मूर्त्ति कृत्य पट- संस्कारां स्ततश्चरेत् ॥

कुण्डोद्धृते वायु कोणे स्थितेंगारे विनिक्षिपेत् ॥ हृदेविशापनं प्रोक्तं दर्भ युग्मं प्रदीपितम् ॥ आज्ये क्षिप्त्वाद दा यद्धो पवित्री करणं क्षिपेत् ॥ आ' नीरा जये दीप्त दर्भ युग्मेन वर्त्मना ॥ अभिष्टो तत मुक्तं वहीप्तं दर्भ त्रयं घृते ॥ दर्शये दस्त्रेणो ह्योवे गृहीत्वा घृत पात्रिकाम् ।

अग्निमाया अष्टमे वद्यत ॥ मह्म मंत्र मुद्दरति ॥ वारेति । ओं नमो मह्मणे इति ॥ स्रुक स्रुव संस्कार माह ॥ हस्ताभ्यामिति ॥ शक्ति त्रय माह ॥ इच्छेति दीर्घत्रयन् आई ऊ व्योमदः ॥ तत्पूर्व काद्दा इच्छा शक्ते नमो मूले ॥ [illegible] ज्ञानशक्ते नमः मध्ये ॥ हूं क्रिया शक्ते नमः अन्ते । गोमुद्रा:-धेनु मुद्रा ॥

१—ओं नमो मह्मयोः २ नमः शक्ते नमः शम्भवे ॥

नाडी त्रय मिति ॥ इडा पिंगला सुषुम्णा ख्या ॥ तृतीया मध्ये चिराया ॥ इदा ॥ नम इति मन्त्रेण ॥ अग्नये स्वाहेति दक्षनेत्रे ॥ सोमाय स्वाहेति वामे ॥ वदा इति चतुर्थे नान्ने नेत्र मुख शाक शोभनत्वोस्यर्थः ॥

संयोज्याग्नौ तदंगारान्सलिलं संस्पृशेत्सुधीः ॥ अंगुष्ठा नामिकाभ्यान्तु दर्भावा दायिनि क्षिपेत् । निरग्नि संमुखे त्वाज्य मस्त्रेणोत्पवनं त्विदम् ॥ हृदाल संमुखं वद्धदाज्य चोपस्तु संप्लवः ॥ नीराजनादि संस्कारे त्वग्नौ दर्भान्विनिक्षिपेत् ॥ दर्भ द्वयं ग्रंथि युतं घृतमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ वाम दक्षिण योः पक्षौरमृत्वा नाड़ी त्रयं स्मरेत् । दक्षिणा द्वामतोमध्या द्धृदादाय घृतं सुधीः ॥ अग्नयेग्नि प्रिया सोमायस्वाहे त्यग्नि नेत्रयोः ॥ जुहुया दग्नी पोमाभ्यां स्वाहे त्यक्षिण तृतीयके ॥

पातये छाहुतेः शेषमाहुतिं महण स्थले ॥ भूयो हृदा तत्त भागा दादा याज्यं मुखे यजेत् ॥ अग्नये स्विष्ट कृते वन्ने त्रास्यो द्घाटनं मतम् ॥ नरसिंहं विनाविष्णु मत्रे नेत्र द्वयं यजेत् ॥ नरसिंहा न्य देवेषु वह्ने नेत्र त्रयं स्मृतम् ॥ महा व्याहृतिभि र्व्यस्त समस्ताभि चतुष्टयम् ॥ आहुती ना त्रयं वह्नि मंत्रैर्वै तत तश्चरेत् ॥ घृता हुति भिरस्त्राभि रेकैकां सत्कृतिं चरेत् ॥ ओमस्याग्ने रमु संस्कारं करो म्यग्नि वल्लभा ॥ इत्थं मनुं जपन्गर्भा धानं पुंस वनं ततः ॥ सीमंतोन्नयनं जात कर्म कृत्वा ततश्चरेत् ॥ वह्नौ पंच समिद्धोमा ग्राज्ञा पनयनं त्वसोः ॥ कुर्या द्देवाभिधानेन पूर्ववन्नाम शुष्मणः ॥ नामानंन्तर मे तस्य पितरौ स्वेष्ये दृदि ॥ अन्न प्राशं तथा चौलोपनयो दारयो जनम् ॥ संस्काराः स्युर्विवाहान्ता मृत्यंताः क्रूर कर्मणि ॥ एके का माहुतिं कुर्या द्वह्ने जिह्वाग्रमूर्तिभिः ॥ इन्द्रादिभिश्च वक्त्रार्थै र्ठिठान्ते जुहुया त्ततः ॥ स्रुवेणा ज्यं चतुर्वारं निधाय स्रुचिकां सुधीः ॥ अपि धाय स्रुवे णैवो गृह्णी यात्कर युग्मतः ॥ निष्ट्न्मूलं तयो र्नाभौ कृत्वाग्रे कुशुमक्षिपेत् ॥ वामस्त ना तं तन्मूलं

ओं अस्याग्ने गर्भाधान संस्कारं करोमि स्वाहे त्यादि ॥ पंच समिधा होमा इत्यो रसेः नालाच्छेदना स्य. संस्काराः ॥ देवाभिधानेन देव नाम्ना शुष्मणाग्ने नांम पूर्ववत् ॥ घृता हुत्यष्ट केन कुर्यात् ॥ रामाग्निः कृष्याग्नि रित्यादि ॥ पतत्स्याग्नेः पितरौ वागीशो वागीशी कुण्डात् स्व हृदि न्यसेत् ॥ उपनयन मुक्तोक्तम् । दार याजनम् विवाहः ॥

१ नरसिंहश्च अन्ये देवा अवेषु । २ भूः स्वाहा भुवः स्वाहा स्वः स्वाहा भू भुंवः स्वः स्वाहा । ३ वैश्वानर जात वेद इहा वह लोहि ताक्ष सर्व कर्माणि साधय स्वाहा ॥

कुसुम पुष्पम् ॥ दयाथा मस्तेन निमतेन ॥ तमेव विभाग माह ॥ पूर्वेति ॥ वीज पदक् ॥ नामाः नायका पर्वैव । मुग्ध. ४८३ ॥

कृत्वाग्नि मनुना सुधीः ॥ जुहुया द्वौ पडंतेन संपत्त्यर्थं मतं द्विजः ॥ महागणेश मंत्रेण व्यस्तेन दशधा ततः ॥ जुहुयाच्चसमस्तेन चतुर्वारं घृता हुतीः । पूर्वं पूर्वं युतं बीज षट्कं बाणाश्च सायकाः ॥ मुनयो मार्गणा श्चेति विभाग स्तन्मनोः स्मृतः ॥ तारो लक्ष्मी गिरि सुता कामोभूर्गण नायकः ॥ चतुर्थ्यं तो गणपति वंरांते वरदे तिच ॥ सर्वांते जन मित्युक्त्वा मेव शान्ते तु मानय ॥ स्वाहां तो वसु युग्मार्णो महा गणपतेर्मनुः । एवं कृत्वाग्नि सस्कारं पीठं देवस्य पूजयेत् ॥

श्री अग्नि पूजनम्

तत्रोष्ट देव मा वाह्य मुद्रा आवाहनादिकाः ॥ प्रदर्श्य वह्नि रूपस्य देवस्य वदने पुनः ॥ मूलेन जुहुयात्पच नेत्र संख्या घृता हुतीः ॥ वह्निदेवी करणं त्वग्नि देवयोस्ते नजायते ॥ नाड़ी संधान सिद्धयर्थं वह्नि देवतयो स्ततः ॥ जुहुयान्मूल मंत्रेण रुद्र संख्या घृता हुतीः ॥ इष्ट देवस्या धृती नामे कैका माहुतिं चरेत् । ततस्तु मूल मंत्रेण दशधा जुहुयाद् घृतम् ॥ ततः फलोक्त द्रव्येण दशांशं जुहुया ज्जपात् ॥ होमं समाप्य कुर्वीत पूर्णा

मार्गणाः पंच ॥ गणेश मंत्रमाह ॥ तार इति ॥ १ जिह्वे ति स्वदेवता नामध्युप लक्ष्यं २ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जनं मे वश मानय स्वाहा ॥ प्रयोग स्तु श्रीं स्वाहा ॥ श्रीं श्रीं स्वाहा ॥ श्रीं श्री ह्रीं स्वाहे त्यादि ॥

आवाहनादि का अग्ने वेंकल्प्याः । पञ्चनेत्र संख्या पंचविंशतिः ॥ पवित्रादि प्रति पत्तिमाह ॥ वह्ना मिति ॥ विधि प्रकाशायां विशुध्य-दक्षिणा दत्वेति शेषः ॥ स कुशान् परिस्तरय सहितान् वसा वग्नौ ॥

तर्पण मंत्र माह—मूल मंत्रान्ते कृष्णं तर्प यामि नमः ॥

कृष्णं अभिषिंचामीत्य भिषेके ॥ जपा दृशांश होमः—तद्दशां शेनाभिषेकः तद्दश शेन विप्र भोजन मिति ॥ पचागं पुरश्चरण मिति कनीयान् पक्षः ॥

अभिषेक वर्जो मध्यमः ॥ तर्पणा भिषेक वर्ज स्त्वंगउत्तमः पक्षः होम दशांश द्विज भोजन मिति ॥ किं बहुना ॥

बहु ब्राह्मण भोजने देवता प्रसादो भवति ॥ प्रक्षाल्य एवं प्रार्थना नन्तर सुगन्धि द्रव्यं देय अभिष्टमिति ॥

आर्द्रा चंद्र कर्पूरम् ॥—पवरातीर निवासिनि मिति दक्षप्यः ॥

ततः सर्वेना मति भुञ्जीरः ॥ मधुरूक मिति ॥ विश्वशर्मा लालमो० योयो या वा तनुः भत्तया भक्ष्या० मितिश्रु-तनात् ॥ शुभमस्तु ॥

हुवि मनन्यधोः ॥ होमावशिष्टे नाज्येन पूरयित्वा स्रुचं सुधीः । पुष्प फलं निधा याग्रे स्रुवेणाच्छाद्यतां पुनः ॥ उत्थितोत्तीर्णपदं तेन मूलेनजुहुया द्वशौ । तद् द्रव्येणा वृत्तो नांच जुहुया दाहुतिं पृथक् ॥ देवं विसृज्य स्वहृदि वह्ने र्जिह्वांग मूर्तिभिः । जुहुयान्चहवी हुत्वा प्रोदोत्चं प्रोक्षणी जलैः ॥ सं प्रार्थ्याः नेनमनुना नत्वातं विसृजे द्धृदि ॥ भो भो वह्ने महा शक्ते सर्व कर्म प्रसाधक ॥ कर्मांतरेपि सं प्राप्ते सानिध्यं कुरु सादरम् ॥ वह्नौ पवित्रो निक्षिप्य प्रणीतां भुभुवि क्षिपेत ॥

विधि[1] विसृज्य सकुशान्परिधीन्चिन्यसे द्वशौ । एवं होमं समाप्याथ तर्पये द्देवतां जले ॥ आवाह्य दशांशेन तर्पणा दभिषेचनम् ॥ तर्पयामि नम स्वेति द्वितीयां तेष्ट पूर्वकम् ॥ मूलां तेतु पदं देयं सिंचामीत्यभिषे चने ॥ ततो नाना विधै रन्नैस्तर्पयेद्द्विज सत्तमान् । इष्ट रूपान्समाराध्य तेभ्योदद्याच्च दक्षिणाम् । न्यूनं सम्पूर्णतां मेति ब्राह्मणाराधनानृणाम् देवताश्च प्रसीदंति सं पद्यं ते मनोरथाः ॥

श्री शरत्कालीय नवरात्र पूजामाह ॥

तत्रादौ प्रति पदि कृत्यम् ॥ तत्र निर्णयः ॥ अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपत् पूजनेमम । मुहूर्त्त मात्रं कर्त्तव्याद्वितीयादि गुणान्वितेति ॥ पुनः । देशभङ्गो भवे तत्र दुर्भिक्षं चोपजायते ॥ नन्दायां दर्श युक्तायां यत्र यात्मम पूजनमिति वचनात् ॥ भार्गवार्चन चन्द्रिकायाम् । त्वाष्ट्र वैधृतियुक्ता चेत् प्रतिपत् चण्डिकार्चने । तयो रन्ते विधातव्यं कलशोरोपणं गृहे । इति वाक्यात् ॥ चित्र नक्षत्र वैधृति योग समायुक्त प्रतिपत्तिथिं च वर्जयित्वा शुद्ध प्रतिपत्तिथौ अथवा द्वितीया तिथौ घट स्थापनं कुर्यात् ॥ यदितु प्रतिपल्लुप्ता तदाऽमाया मपिकार्य्यम् ॥ रात्रौ स्थापनं कुर्यान्न च कुम्भाभिषेचन मिति मत्स्यपुराण वाक्यात् । रात्रौ घटस्थापनं विसर्जनं च नैव कुर्यात् ॥

अथ प्रयोगः—प्रातः समयेस्नान संध्यादि । नित्य कर्म कृत्वाकदल्यादिस्तम्भ वितान तोरण वस्त्र वेष्टितमण्डिते दुर्गागृहे चतुरस्र चतुर्हस्ते वेदिको परिसर्वतो भद्रादि मण्डिते शुद्धगूढ भूमि चन्दना क्षतपुष्पधूपदीप नैवेद्य कुशातिल जल सम्पूर्ण सामग्री सम्पाद्य कर्मारम्भेदीप पूजन मित्याचारः ॥ आचम्य कर्मपात्रं कृत्वा कुशादी न्यादाय ॥ ॐ

अथ दुर्गा सप्तशती प्रयोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ अथ प्रयोगविधिः ।

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ प्रयोगान्तराणि कात्यायनी तन्त्रोक्तानि ॥ प्रति श्लोक मार्धयोः प्रणवं जपेन्मंत्र सिद्धिः ॥१॥ अमे सर्वत्र श्लोक पदं मंत्राय लक्षणम् ॥ सप्रणवमनु लोम व्याहृति प्रथमादौ अन्तेतुविलोमं वदित्येवं । प्रति श्लोके कृत्वा शतावृत्त पाठेऽपि शीघ्रसिद्धिः ॥२॥ प्रतिश्लोक मादौजात वेदमृग्न्यृचं पठेत् सर्वकाम सिद्धिः ॥३॥ अपमृत्यु वारणाय त्र्यंबक मन्त्रं पठेत् ॥ आद्यावन्ते च शतमित्यर्थः ॥ प्रतिश्लोकं तन्मन्त्र जपइत्यन्यत्र ॥४॥ प्रति श्लोकं शूलेन पाहिनो देवीतिपाठादप मृत्यु नाशः ॥ अस्य केवल स्यापि श्लोक स्य लक्षमयुतं सहस्रं

तस्मत् ३ ओं विष्णु ३ नम इत्यादि देशकालौ संकृत्य अद्येह त्यादि अमुकगोत्रस्य सदारापत्यस्यामुक शर्म्मणो मम अद्य प्रभृति नवमीपर्यन्त मुपवासादि नियमैरिष्ट देवता प्रीति द्वारा त्रिवर्ग सम्पत्ति सिद्धये नवरात्र व्रतं मह करिष्ये। तदङ्गतया करिष्यमाण नव दिन पर्यन्त महर्निशं दीप प्रज्वालनादि नवरात्रव्रतकर्माणि निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थमुश्रीगणेश्वरस्य यथामिलितोपचारैःपूजनमहंकरिष्ये,इतिसंकल्प्यः॥ एकदन्तंशूर्पकर्णं मित्या दीनाध्यात्वा आवाहनासन पाद्यार्घ्यं चमन वस्त्र यज्ञोपवीत भूषण गन्ध पुष्पाक्षत धूप दीप नैवेद्यान्ते गणा नन्त्वे तिमन्त्रेण गणेशं सम्पूज्य स्वशक्ततया मातृकां चसम्पूज्य पुण्याहा वाचनं कुर्यात्। सम्भवे मह च सस्थाप्य तत ॐ यवोसि यवयास्म द्वेष यवया राती दिवेत्वान्त रिक्षा यत्वा पृथिव्यैत्वा शुन्धतांल्लोकाः पितृषदनापितृ षदन मसि मन्त्रेण यवं प्रक्षाल्य, शुद्ध मृत्तिकायाः मण्डपं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्। अद्येह देव्यास्तुष्ट्यर्थं यवा रोपण मह करिष्ये॥ तत्र मंत्रः॥ ॐ यवस्त्वं यव रूपोसि यज्ञार्थे निर्मितोऽसिहि ॥ देवीनां तुष्टि कारी च तस्मात्त्वं वरदो भव

शतंनांजपे भ्रमृत्युवारणम्॥४॥प्रतिश्लोकं संस्तरणातद्दीनार्तेतिश्लोकपठेत्सर्व काय सिद्धिः॥६॥प्रतिश्लोकं करोतुसानःशुभेत्यद्ध पठेत्सर्व कार्यसिद्धिः ॥ ७॥ स्वाभिष्ट वर प्राप्तये एवं देव्या वर लब्ध्वे ति श्लोकं पठेत् । ८ ॥ सर्वा पत्तिवारणाय प्रति श्लोकं दुर्गेस्मृतेति पठेत्॥ अस्य केवल स्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षय युतं सहस्रं शतं वाजपः॥ ९ ॥ सर्वा बाधेत्यस्य लक्षजपे प्रति श्लोक पाठेवा श्लोकोक्तं फलम् ॥ १० ॥ इत्थं यदा यदा बाधेति श्लोकं जपे महामारी शान्तिः ॥ १० ॥ ततो वव्रे नृपो राज्य मिति मन्त्रस्य जपे पुनः स्वराज्य लाभः ॥ १२ ॥ हिनास्ति दैत्य इत्यनेन सदीप बलि दाने घंटा बंधने च बाल मह शान्तिः॥ १३ ॥ तेजांसि आद्यावृत्ति मनो लोमेन पठित्वा ततो विपर्या क्रमेण द्वितीया मनु लोमेन तृतीया मित्येव मा वृ त्त त्रयेण शीघ्र कार्य सिद्धिः १४ ॥ सर्वावृत्ति वारणाय दुर्गेस्मृतेत्यर्धं ततो यदे त्तियच दृश्के त्यृ चं तदेते दारिद्रय दुःखेत्यर्द्ध मेवं कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं सत्तं वाजपः ॥ कांस्योस्मीत्यृचं प्रति श्लोकं पठेत्तद्दयो प्राप्तेः ॥ १६ ॥ प्रति श्लोक मनृणा अस्मिन्नित्यृचं पठेदण परिहारः ॥ १७ ॥ मारणार्थं मेवमुक्त्या समुत्येति श्लोकं पठेत् मारणोक्तविधिः फलसिद्धिः ॥ १८ ज्ञानिनामपि चेतांसि इति श्लोक जप मात्रेणसर्वो मोहन मित्य नुभव सिद्धम् । प्रति श्लोकं तच्छ्लोक पाठेत्व वरयम् ॥ १९ ॥ रोगान शेषा निति श्लोकस्य प्रति श्लोक पाठे सकल रोग नाशः ॥ तस्मात् जपेदिह ॥ २० ॥

जयंती मंगला काली भद्र काली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रेण यव मारोप्य ॥ शुद्धोदकेन यवो परि सेचनम् ॥ अथ घट स्थापनम् ॥—तत्र-संकल्पः—अद्येह ममेह जन्मनि दुर्गा प्रीति द्वारा सर्वापच्छान्ति पूर्वक दीर्घायु विपुलधन पुत्र पौत्रस्य नव छिन्न सन्तन्ति वृद्धिस्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभ शत्रु परा-जय मद्मीष्ट सिद्धयर्थं शारद नवरात्र प्रतिपद्विधिः हित कलश स्थापन पूर्वकं दुर्गा कुमारी पूजन मह करिष्ये । कलश स्थापन विधिना घट संस्थाप्य । प्रयोगे पु यथा वह वो या नाड़ी वृत्ता वामा वावद्धरतेन स्यात् त्रिकोणादियंत्रे ॥

यंत्र मालिख्य ॥ तत्रास्य क्षालितं पात्रा धारं स्थापयेत् ॥ एक त्रिदंभ हर मंत्रेणाधारं पूजयेत् ॥ तमाह—ॐ यं रीं रूं रमल वर यूरं अग्नि मण्डलाय धर्मे प्रद्दश कलात्मने ऐं कलशा धाराय नमः । तदु परि पात्रा धारो परि आग्नेयी दश कला अर्चये वा प्रवाह ॥ धूम्रार्चिरिति ॥ हव्य कव्यादिका वहा । यं धुम्रार्चिः कला श्री पादुकां पूजयामि ॥ रं ऊष्मा कला श्री पा० ॥ लं ज्वालिनी कला कला श्री पा० ॥ वं ज्वालिनी कला श्री पा० ॥ मंविस्फु लिंगिनी कला श्री पा० ॥ रं सुश्री कला श्री पा० ॥ रूं सु रूपाय कला श्री पा० ॥ रीं कपिलायै कला श्री पा० ॥ यं हव्यायै कला

इत्युक्ता सा तदा देवी गंभीरेति श्लोकस्य प्रति २ श्लोकं पाठे पुष्प जपे वा विषा प्राप्तिर्वा, वैं कृत नाशश्च ॥ २१ ॥ भगवत्या कृतं सर्व मित्यादि द्वादशो सर शतावेरामन्त्रः सर्व कामदः सर्वापत्ति वारणश्च ॥ २२ ॥ देवो प्रपन्नार्ति हरे इति श्लोक [illegible] यथा कार्य तथायुत सहस्र शतान्य तम संख्या जपे प्रति श्लोकं पाठे वा सर्वा पन्निवृत्तिः सर्व कामाप्तिश्च ॥ एषु प्रयोगेषु प्रति श्लोकं दीपामे केवलमे वनमस्कारोऽपि शीघ्र सिद्धिः ॥ प्रति श्लोकं काम बीज सं पुटि तस्य एक चत्वारिंशद्दिनं त्रिग वृत्तौ सर्व काम सिद्धिः ॥ २३ ॥ एक विंशति दिन पर्यन्त मुक्त रीत्या प्रत्यह द्वादशा वृत्ती वशी करणम् ॥ २४ ॥ माया बीज सं पुटि तस्य फट् पल्लव सहितस्य सप्त दिन पर्यन्त प्रत्यो दश वृत्ता उच्चाटन सिद्धिः ॥ २५ ॥ तादृश्या मेवदिन चतुष्टय मेका दशा वृत्ती सर्वोपद्रव नाशः ॥ २६ ॥ एको न पञ्चाशद्दिन पर्य तं प्रति श्लोकं श्री बीज सं पुटि तस्य पंच दशावृत्ती लक्ष्मी प्राप्तिः ॥ २७ ॥
प्रति २ श्लोकं वाग्बीज [illegible] पुटितस्य शता वृत्या विद्या प्राप्तिः

श्री पा० ॥ ॐ कन्यायै कला श्री पा० ॥ पूजयेत् ॥ स्वर्णादि-निर्मित कलशम् ॥ अस्त्रायफडिति प्रक्षाल्य तथा घोरन्यसेत्-तमुद्धरति ॥ ॐ हां ह्रीं हुं हमल व्र्यूं इं सूर्यमण्डलाय वसु प्रद द्वादश कलात्मने क्रीं कलशाय नमः इति । सूर्य कला आह ॥ कं भं तपिन्यै नमः खं वं तापिन्यै नमः । गं फं धूम्रायै नमः ॥

धं पं मरीच्यै नमः । ङं नं ज्वालिन्यै नमः चं थं रुच्यै नमः । छं दं सुषुम्नायै नमः । जं दं भोगदायै नमः । झं तं विश्वायै नमः । ञं णं बोधिन्यै नमः । टं ढ धारिण्यै नमः । ठं डं क्षमायै नमः । इत्यर्क मण्डलं सम्पूज्यः । पुनः पूर्ववत् मं तपनी कला श्री पा० । यं तापिनी कला श्री पा० । सं धूम्रनी कला श्री पा० ॥ हं मरिचि कला श्री पा० ॥ व्र्यूं ज्वालिनी कला श्री पा० ॥ लं रुच्यै कला श्री पा० ॥ मं सु षुम्नायै कला श्री पा० ॥ हं भोग दायै कला श्री पा० ॥ हूं विश्वै कला श्री पा० ॥ ह्रीं बोधिन्यै कला श्री पा० ॥ ह्रां धारिण्यै कला श्री पा० ॥ ॐ क्षमायै कला श्री पा० ॥ मिति ॥ मूल मंत्रं पठन् सुधा बुध्या तोयं सम्पूर्य्य तत्र गन्ध पुष्पा क्षतान्-नं क्षपमि कला श्री पादुकां पूजयामि स्यादि प्रयोगे क्षिपेत् ॥ मूल-

विद्यां च मंत्र वित् कलशा मृवाद तम । ॐ सोम मण्डलायेति पूर्वेत्रिप्रणडा मुद्रां बध्या ततः ॐ सांसीं सूं समल व्र्यूं सं सोम

॥ २८ ॥ अथतत चडी विधिः पुर्वोक्त अग्नि स्थापनादि प्रयोगे द्रष्टव्यः ॥ श्री रस्तु ॥

अथ देव्याः कवचं प्रारभ्यते ।—श्री गणेशाय नमः । अद्येत्यादि० श्री महा काली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थ चण्डी सप्तशती पाठाख्यकर्म करिष्ये ॥ तदङ्गत्वे नादौ कवचार्गला कीलक पठन मार्थं तयो रष्टोत्तर शतसंख्य नवार्ण जप पूर्वकं क्रमेण रात्रि सूक्त देवी सूक्त पठनमते रहस्य त्रयपठनं च करिष्ये । इति सकल्प ॥ प्रथमं नमो देव्यै महादेव्यै शिवायैसततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियता. प्रणताः स्मताम् ॥ इति मंत्रेण पञ्चो पचारै पुस्तक पूजां कुर्यात् ॥ श्री रस्तु श्रीगणेशाय नमः ॥ ओं नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच । ओं यद् गुह्यं परमं लोके—

सर्व रक्षा करं नृणाम ॥ यन्नकस्य चित् नाख्यातं तन्मेब्रूहि पितामह ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच । अस्ति गुह्यं तमं विप्र सर्व भूतो पकारकम् ॥ देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्वमहा मुने ॥ २ ॥ प्रथमं शैल पुत्री च द्वितीयं ब्रह्म चारिणी । तृतीयं चन्द्र घण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्

मण्डलाय कामप्रद षोडश कलात्मने सोः कलशा मृताय नमः। मत्रोयं जलार्चने ॥ अमृतेति॥ अं अमृतायै कला श्री पा० ॥ आं मानदायै कला श्री पा० ॥ इं पूषायै कला श्री पा०। ईं तुष्टै कला श्री पा० ॥ उं पुष्टै कला श्री पा० ॥ ऊं रत्यै कला श्री पा० ॥ ऋं धृत्यै कला श्री पा० ॥ ॠं शशिन्यै कला श्री पा० ॥ लृं चन्द्रिकायै कला श्री पा० ॥ ॡं कान्त्यै कला श्री पा० ॥ एं ज्योत्स्न्यायै कला श्री पा० ॥ ऐंश्रियैकला श्री पा० ॥ ओं प्रीत्यैकला श्री पा० ॥ औं अंगदायै कला श्री पा० ॥ अं पूर्णायै कला श्री पा० ॥ अः पूर्णा मृतायै कला श्री पा० ॥ इत्यर्घ्यं सम्पूज्य कुम्भ योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ तत्र घटो परिप्रतिमां संस्थाप्य अथवा तदू भावे दृष्ट्वा संस्थाप्य श्री दुर्गामावाहयेत्॥ अथध्यानम्—जटा जूट समायुक्तां मूर्द्धेन्दु कृत शेखराम् लोचन त्रय सम्पन्नां पद्मेन्दु सदृशाननाम् ॥ अतसी पुष्प वर्णा भां सु प्रतिष्टां सु लोचनाम् ॥ नव यौवन संपन्नां महिषासुर मर्दिनीम् ॥ त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं च वामतः ॥ तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामतो सन्नि वेशयेत् ॥ खेटकं पूर्ण चापं च पाशमङ्कुश मूर्द्धजम् ॥ घण्टां च पाशु चापि वामतः सन्नि वेशयेत ॥ अधस्ता न्महिषं तद्व द्विशिरस्कं प्रदर्श येत् ॥ शिर च्छेदो द्भवंयद्व दानवं खड्ग पाणिनाम् ॥ हृदि शूलेन निर्भिन्नं तिर्यग्गन्ध विभू षितम् ॥ रक्त रक्ती कृताङ्गं च रक्त विस्फारितेक्षणम् वेष्टितं नाग पाशेन भ्रुकुटी भीषणा ननम् वमन् रुधिरवक्त्र-

---

॥ ३ ॥ पञ्चमं स्कंद मातेति षष्ठं कात्यायनीतिच ॥ सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धि दात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैवमहात्मना ॥ ५॥ अग्निनादह्य मानस्तु शत्रुमध्ये गतोरणे विषमे दुर्गमे चैवमयार्ताः शरणंगताः ॥ ६ ॥ न तेषां जायतेकिंचि दशुभंरणसंकटे ॥ नापदं तस्य पश्यामि शोक दुःख भयं नहि ॥ ७ ॥ यैस्तुभक्त्या स्मृता नून तेषां वृद्धिः प्रजायते ॥ येत्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः। प्रेतसंस्थातु चामुण्डा वाराही महिषा सना, ऐन्द्री गज समा रूढा वैष्णवी गरुडा सना ॥ ८ ॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखि वाहना लक्ष्मीः पद्मा सना देवी पद्म हस्ता हरि प्रिया ॥ १० ॥ श्वेत रूपधरा देवी ईश्वरी वृष वाहना ॥ ब्राह्मी हंस समा रूढा सर्वा भरण भूषिता ॥ ११ ॥ इत्येतामातरः सर्वाः सर्वयोग समन्विताः ॥ नाना भरणशोभाढ्या नाना रत्नोप शोभिताः । दृश्यन्ते रथमा रूढा

च देव्या सिंहं प्रदर्शयेत् ॥ देव्यास्तु दक्षिणं पादं सम सिंहो परि स्थितम् ॥ किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाम मङ्गुष्ठं महिषो परि ॥ स्तूय मानं च तद्रूपममरैः सन्नि वेशयेत् ॥ अथा वाहनम् ॥ एहि दुर्गे महा भागे ? रक्षार्थं मम सर्वदा ॥ आवा हयाम्यहं देवि ? सर्व-कामार्थ सिद्धये ॥ अस्यां मूर्तौसमा गच्छ इह तिष्ट इह सन्निहिता भव इह स्थिरा भव सुप्रसन्ना भव इत्या वाह्य पतन्त इति प्रति प्राप्य । ॐ दुर्गे दुर्गेरक्षणि ? स्वाहा । जयन्ती मङ्गला काली इति मन्त्रेण च दुर्गे देव्यै पाद्यार्घ्यां च मनीय पञ्चामृत स्नान शुद्धो दक स्नान वस्त्र यज्ञोपवीत भूषण चन्दन सिन्दूराञ्जना दर्शादि सौभाग्य द्रव्या क्षत पुष्प माल्य बिल्व पत्र धूप दीप-नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणादि षोडशो पचारैः पञ्चो पचारैः यथा-

---

देव्यः क्रोध समाकुलाः ॥ १२ ॥ शंखं चक्रं गदां शक्ति हलं च मुसला-युधम् ॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेवच ॥ १३ ॥ कुन्ता युधंत्रिशू-लं च शार्ङ्गमा युद्ध मुत्तमम् ॥ खड्ग चर्मत्रिशूलं च पट्टिशं मुद्गरं तथा ॥ १४ ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्ताना मभयाय च ॥ धार यन्त्या युधा नीत्थंदेवाना च हिता यवै ॥ १५ ॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर पराक्रमे ॥ महा बले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ १६ ॥ त्राहिमां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ॥ प्राच्यां रक्षतु मा मैंद्री आग्नेय्यामग्नि-देवता ॥ १७ ॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्ग धारिणी ॥ प्रतीच्यां वारुणी रक्षे द्वायव्यां मृग वाहिनी ॥ १८ ॥ उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षे दधस्ता द्वैष्णवी तथा ॥ १९ ॥

एवं दशदिशो रक्षे चामुण्डा शव वाहना ॥ जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ २० ॥ अजिता वाम पार्श्वे तु दक्षिणे चा पराजिता ॥ शिखामुद्योतिनी रक्षे दुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ २१ ॥ माला धरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षे यशस्विनी ॥ त्रिनेत्रा चभ्रुवोर्मध्ये यम घन्टा च नासिके ॥ २२ ॥ शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वार वासिनी ॥ कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्ण मूलेतु शाङ्करी ॥ २३ ॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्टे च चर्चिका ॥ अधरे चा मृत कला जिह्वा यां च सरस्वती ॥ २४ ॥ दन्तान्रक्षतु कौमारी कण्ठ देशेतु चण्डिका ॥ घण्टिकांचित्र घंटा च महामाया च तालुके ॥ २५ ॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षे द्वाचं मे सर्व मंगला ॥ ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ट वंशे धनुर्धरी ॥ २६ ॥ नील ग्रीवा बहिः कण्ठे नालिका नल कूबरी ॥ स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद्बाहू मे

सं भवैर्वा दुर्गां दुर्गां सम्पूज्य प्रणम्य प्रार्थयेत् ॥ आगच्छ देवदेवेशि ! दैत्य दर्प निषू दनि ! ॥ पूजां गृहाण सुमुखि ? नमस्ते शङ्कर प्रिये ? ॥ सर्वं तीर्थ मयं वारि सर्वं देव समन्वितम् ॥ इम घटं समागच्छ तिष्ट देव गणैः सह ॥ दुर्गे देवि ? समागच्छ सान्निध्यं कुरुवे ध्रुवम् ॥ बलिं पूजां गृहाण त्वं मष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ महिषघ्नि महा माये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ? ॥ द्रव्य मारोग्य विजयं देहि देवि ? नमः सदा ॥ सर्व मङ्गल मांङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते ॥ रूप देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहिमे ॥ पुत्रंदेहि धनं देहि सर्वा न्कामा न्मदेहिमे ॥ एवं प्रार्थना नन्तरं सुगन्धि द्रव्यं देयम् ॥ अथ कन्या पूजा ॥—गणेशं वटुकं दुर्गां प्रणम्य, संकल्पः अद्येह मम देवीप्रसादाद् विविध मनोऽभीष्ट कामना वाप्ति राज्य करणोत्तर कालिक देवी लोक गमन कामनया कुमारीं वटुकं च पूजन पूर्वकं भोज इष्यामि ॥ मन्त्रास्तु मयींलक्ष्मीं मातृणां रूपधार-

---

वज्र धारिणी ॥ २७ ॥ हस्तयो दंण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुलीषु च ॥ नखा च्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौरक्षे त्कुलेश्वरी ॥ २८ । स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोक विनाशिनी ॥

हृदये ललिता देवी उदरे शूल धारिणी ॥ २६ ॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्ये श्वरी तथा ॥ पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिष वाहिनी ॥ ३० ॥ कट्यां भगवती रक्षे ज्जानुनीविन्ध्य वासिनी ॥ जंघे महाबला रक्षे त्सर्व कामप्रदायिनी ॥ ३१ ॥ गुल्फयो र्नारसिंही च पाद पृष्ठे तु तैजसी ॥ पादांगुलीषु श्री रक्षे त्पादाधः स्थल वासिनी ॥ ३२ ॥ दंष्ट्रां करालिनी रक्षेत केशां श्चैवोर्ध्व केशिनी ॥ रोम कूपेषु कौमारी त्वंच वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥ रक्त मज्जा वसा मांसा न्यस्थि मेदांसि पार्वती ॥ अन्त्राणि काल रात्रीच पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ३४ ॥ पद्मावती पद्म कोशे कफे चूडा मणिस्तथा ॥ ज्वाला मुखी नख ज्वाला मभेद्या सर्व संधिषु ॥ ३५ ॥ शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षे च्छायां छत्रेश्वरी तथा ॥ अहंकारं मनो बुद्धिं

रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ३६ ॥ प्राणा पानौ तथा व्यान मुदा नंच समानकम् ॥ वज्र हस्ता च मेरक्षेत्प्राणं कल्याण शोभना ॥ ३७ ॥ रसेरूपे च गन्धे च शब्देस्पर्शे च योगिनी ॥ सत्त्वं रजस्त मश्चैव रक्षे नारायणी सदा ॥ ३८ ॥ आयूरक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ॥ यशः कीर्त्तिं च लक्ष्मी-

णीम् । नव दुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामा वा हयाम्यहम् ॥ इत्या वाह्य तत्र पूजा मंत्रश्च ॥ जगत्पूज्ये जगद्धात्रि सर्व शक्ति स्वरूपिणी पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मात नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रे ण पाद प्रक्षालनादिभिः पूजयेत् भोजयेद्द नाना वस्त्र पक्वान्ना लङ्कारैः स्व शक्त्या देवी पूजा नन्तरं नवमी पर्यन्त प्रत्यहं वा कुर्यात् ॥ एकैकां पूजयेत्कन्यां मेक वृद्धया तथैव च ॥ द्विगुणा चापि प्रत्येकं नवकं च विशेषतः ॥ द्विवर्ष कन्या मारभ्य दश वर्षा वधि क्रमात् ॥ पूजयेत्सर्व कार्येषु यथा विध्युक्त मार्गतः ॥ अत ऊर्ध्वान्तु या कन्या सर्व कार्येषु वर्जिता ॥ आयुर्ध्य बल वृद्धयर्थं कुमारीं पूजयेन्नरः आयुः काम स्त्रिमूर्त्तिन्तु त्रिवर्ग स्यफल प्रदाम् ॥ अल्प मृत्यु व्याधि पीड़ा दुःख दारिद्र नाशिनीम् ॥ आरोग्य सुख कामी च जय कामी तथैव च ॥ यशः कामी नरोनित्यं रोहिणीं प्रति पूजयेत् ॥ विद्यार्थी वा भयार्थी च राज्यार्थी च विशेषतः । शत्रूणां च विना शार्थी कालिकां पूजयेन्नरः ॥ ऐश्वर्यं सुख कामो च पुत्रा कामी च यो नरः ॥ सङ्ग्रामे जय कामी च चण्डिकां प्रतिपूजयेत् ॥ दुःख दारिद्र नाशाय नृपं संमोहना यच ॥ महा पाप विना शार्थं शाम्भवी च प्रपूजयेत् ॥ सर्व

च धर्न विद्या च चक्रिणी ॥ ३९ ॥ गोत्र मिन्द्राणी मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ॥ पुत्रान्रक्षेन्महालक्ष्मी र्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ ४० ॥ पथानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेम करी तथा ॥ राज द्वारे महालक्ष्मी विंजया सर्वतः स्थिता ॥ ४१ ॥ रक्षा हीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेनतु ॥ तत्सर्वं रक्षमे देवी जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥ पद मेकं नगच्छेतु यदीच्छेच्छुभ मात्मनः॥ कवचे नावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ४३ ॥ तत्र तत्रार्थ लाभश्च विजयः सर्व कामिकः ॥ यं यं चिन्तयते कामं तंतं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ ४२ ॥ परमैश्वर्य्य मतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्व पराजित. ॥ ४५ ॥ त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचे नावृतः पुमान् ॥ इदंतु देव्याः कवचं देवाना मपि दुर्लभम् ॥ ४६ ॥ यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ दैवी कला भवे त्तस्य त्रैलोक्ये चापराजितः ॥ ४७ ॥ जीवेद्वर्ष शतं साम मप मृत्युविव-र्जितः नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता विस्फोटका दयः ॥ ४८ ॥ स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिम चापियद्विषम् ॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयंत्राणि भूतले ॥ भूचराः खेचराश्चैव कुलजा श्चोपदेशिका ॥ ४९ ॥ सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ अन्त रिक्ष चरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ५० ॥ ग्रह भूत पिशा - चाश्च यक्ष गन्धर्व राक्षसाः ॥ ब्रह्म राक्षस वेतालाः ॥

लोकस्यशत्रूणांतपसाधनकर्मणि ॥ दुर्गातु दुःखनाशायपूजयेद्यत्नतोबुधः ॥ सौभाग्य धनधान्या दिवाञ्छितार्थ फलाप्तये ॥ शुभद्रां पूजयेन्मर्त्यो दासी दासादिवृद्धये ॥अथत्रिमूर्त्तिपूजा॥त्रिपुरात्रिपुराधारांत्रि वर्गं ज्ञानरूपिणीम् ॥ कामदां करुणो दारां कालीं च पूजयाम्यहम् ॥ कल्याणी पूजा मंत्रः ॥— कालादिरूको कला तीतां कारुण्य हृदयां शिवां ॥ कल्याण जननीं नित्यं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ रोहिणी पूजा मन्त्रः ॥—अणिमा दिगुणा धारा मकारा द्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्त शक्ति कां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ कालिका पूजा मंत्रः ।—कामं चारिशुभा कान्तां कालचक्र-स्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणो दारां कालीं च पूजयाम्यहम् ॥ चण्डिका पूजा मंत्रः ।—चण्डवीरां चण्ड मायां चण्डः मुण्डप्रभञ्जनीम् ॥ पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्ड विक्रमम् ॥ शाम्भवी पूजा मन्त्रः । सदानन्द करीं शांतां सर्व देव नमस्कृताम् ॥ सर्व भूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ दुर्गा पूजा मन्त्रः ॥—दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भव-दुःख विनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदाभक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम्

कुष्माण्डा भैरवा दयः ॥ ४१ ॥ नश्यन्ति दर्शना त्तस्य कवचे हृदि-संस्थिते ॥ मानो न्नतिर्भवेद्राज्ञ्यं तेजो वृद्धि करं परम् ॥ ४२ ॥ यशसा वर्धतेसोऽपि कीर्ति मण्डलभूतले ॥ तस्माज्जपेत्सदा भक्त्या कवचं कामदं मुने ॥ ४३ ॥ जपेत्सप्त शतीं चण्डीं कृत्वातु कवचं पुरा ॥ यावद् भू मण्डल धत्ते सशैल वनका ननम् ॥ ४४ ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्र पौत्रकी ॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरै रपि दुर्लभम् ॥ ४५ ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ॥ लभते परम रूपं शिवेन सह मोदते ॥ ४६ ॥ इति वाराह पुराणे हरि हर ब्रह्म विर चितं देव्याः कवचं समाप्तम् ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपा-लिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥ १ ॥ जयत्वं देवि चा मुण्डे जय भूतार्ति हारिणी ॥ जय सर्व गते देवि काल रात्रि नमोऽस्तुते ॥ २ ॥ मधुकैटभ भवि द्राविधातृ वरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३ ॥ महिषा सुर निर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥ रक्त बीज वधे देविचण्डमुण्ड विनाशिनी ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥ शुंभस्यै व निशुम्भस्य धूम्रा क्षस्य चमर्दिनी ॥ रूपं देहिजयंदेहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥ अचिन्त्य रूप चरिते सर्व शत्रु विनाशिनी ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥ नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या

॥ शुभद्रा पूजन मन्त्रः ॥—सुन्दरीं स्वर्ण वर्णाभां सुख सौभाग्य दायिनीम् । शुभद्र जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ भक्तितः कुमारीणां यत्नत पूजा कार्या ॥ कञ्चुकै श्चैव वस्त्रैश्च गन्ध पुष्पा क्षतादिभिः ॥ नाना विधैर्भक्ष्य भोज्यै भोजयेत् पायासादिभिः ॥ इति कुमारी पूजा ॥ अथ सप्त सती पाठ विधिः ॥ सकल पूजा नन्तरं सप्तसत्यादि पाठ जपादिकं कुर्यात् ॥ ब्राह्मण द्वारा कुर्यात् ॥ श्र् याद्धा ॥ अथ. सप्त सती पाठ वेद पाठानेक पुराणान्तर गत स्तोत्र पाठ गायत्री जप नवार्णव मन्त्र जाप स्वेष्ट देवता मन्त्र जपादीन् यथा शक्ति कुर्यात् ॥ अथसंकल्पः ॥ अद्येह ममभूत भविष्य वर्तमान जन्म जन्मा न्तराणां दुष्कृत नृवृत्ति दुष्कृतोत्थ समस्त पाप क्षय शत्रु दस्यु राज शला न शता यौघहेतुक भया भाव महा मारी समुद्भवा शेषो प सर्गोपगम त्रिविधो त्पातो पशम सर्वा पच्छान्ति पूर्वक रक्षो भूत पिशाच ग्रह पर कृत्या बालग्रहादि सकल बाधा शमयितो श्री दुर्गा सान्निध्य द्वारा सर्व गुणो त्पत्ति दीर्घायु विपुल धन धान्य पुत्र पौत्राद्य नव च्छिन्न सन्तति वृद्धर्थं सकल कुलानन्द स्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभ सुख प्राप्ति सदभिष्ट सिद्धि मूलक महा काली महा लक्ष्मी महा सरस्वती प्रीतये मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत सावर्णिः-

---

चण्डिके दुरितापहे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥

स्तुवद्भ्यो भक्ति पूर्वं त्वां चण्डिके व्याधि नाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि ॥ १० ॥ चण्डिके सततं ये त्वा मर्च यन्तीह भक्तितः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ११ ॥ देहि सौभाग्य मारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १२ ॥ विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बल मुच्चकैः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहिपरमां श्रियम् ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥ सुरासुर शिरोरत्ननिघृष्ट चरणे ऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मी वन्तं जनं कुरु ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १६ ॥ प्रचण्ड दैत्य दर्पघ्ने चण्डिके प्रणता यमे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो

सूर्यं तनय इत्या राभ्य सावर्णि र्भविता मनुः तथा च रहस्यादिः पर्यन्तंपाठं कर्तुं मध्या रम्य नवमी पर्यन्तं ब्राह्मणानां पूजनं वरणं च करिष्ये ॥ पाठान्ते यथा शक्ति बलिदान छाग कुष्माण्ड फलैर्वा वक्ष्य माण विधिना कार्यम् ॥ अथ द्वितियादि दिन कृत्यम् ॥ द्वितीयायां श्री परमेश्वर्यै पट्ट केशरज्जु कङ्कति कां दद्यात् ॥ तृतीयां दर्पणं सिन्दूरं,कज्जलम् ॥ चतुर्थ्यां मधु शर्करा दधि कांश्य पात्रान्नं कांश्य थालि कांस्य मधु पर्कम् ॥ कज्जलम् ॥ पञ्चम्यामुद्वर्त्तनं सौवर्णं रौप्यंश भूषणमथवा तत्पुष्पं दद्यात् ॥ प्रति संध्यं प्रति पद्मादि तिथिषु पूजनं यथा शक्त्या ॥ द्वितीयायां मध्याह्नाद् ऊर्ध्वं संध्या काला दर्वाक् बाल चन्द्र दर्शनं कुर्यात् । शंखार्घं श्वेत चन्दन दध्यक्षत तोयं निधाय जानुना वनिं स्पृष्ट्वा दक्षिण हस्तेन चन्द्रार्घ्यदानम् ॥ तत्र मंत्रः ॥ अत्रि नेत्र समुद्भूत क्षीरो दार्णव सम्भव ॥ गृहाणार्घ्यं शशां केश रोहिण्या सहित प्रभो ॥ प्रणाम मंत्रः ॥ नमः सुधांशवे तुभ्य लक्ष्मी

जहि ॥ १८ ॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥ हिमाचल सुता नाथ संस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ २० ॥ इन्द्राणीपति सद्भाव पूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥ देवि प्रचण्ड दोर्दण्ड दैत्य दर्पविनाशिनी ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २२ ॥ देवि भक्त जनो द्दाम दत्ता नन्दो दये ऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ २३ ॥ पत्नीं मनो रमां देहि मनो वृत्ता नुसारिणीम् । तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥ इदं स्तोत्रं पठित्वातु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ सप्तसप्त शती संख्याय रमाप्नोति सम्पदाम् ॥ २५ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे अर्गला स्तोत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥

ॐ नमःश्चण्डिकायै—मार्कण्डेयउवाच—विशुद्ध ज्ञानदेहाय त्रिवेदी दिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयः प्राप्ति निमित्तायनमः सोमार्धधारिणे ॥ १ ॥ सर्वमेतद्विजानीया न्मन्त्राणामपिकीलकम् ॥ सोऽपिक्षेम ममाप्नोति सततंजाप्य तत्परः ॥ २ ॥ सिद्धयन्त्यु च्चाटनादीनि वस्तूनि सकला न्यपि ॥ एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्र मात्रेणसिद्धयति ॥ ३ ॥ न मन्त्रं नौषधं तत्र न किंचिदपि विद्यते ॥ विना जाप्येन सिद्धयेत सर्वं मुच्चाटना दिकम् ॥ ४ ॥ समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोक शङ्का मिमां हरः ॥ कृत्वा निमन्त्रया मास सर्वं मेव मिदं शुभम् ॥ ५ ॥ स्तोत्रं वै चण्डिका

भ्रातर्नमोनमः ॥ निष्कलङ्किन् कला धारिन् गङ्गाधर शिरो मणे ॥ शंभोर्जटा जूट वासिन् बाल चन्द्र नमो स्तुते ॥ इति दद्यात् ॥ अथ षष्ट्यां विल्वनिमन्त्रणविधिः ॥ शुक्ल षष्ट्यां जेष्ठा युताया सूर्यास्तः वेलायां विल्व तरु सन्निधौगत्वा उपवासादिं कृत नित्य क्रिय.पूर्व मुखं उत्तर मुखं वा उपविश्याऽऽचम्य सन्ध्या काल समये दीपं प्रज्वाल्य संकल्पं कुर्यात् ॥ अद्येह० श्री दुर्गा प्रीति कामः श्री वृक्ष पूजन पूर्वकं विल्व निमन्त्रणमहं करिष्ये ॥ ॐ भगवति दुर्गे इहा गन्ध-दूहविष्टे त्वा वाह्य। पाद्यादि नैवेद्यान्तो पचारैः सम्पूजयेत् ॥ तत्र-मंत्रः ।—रावणस्य वधार्थाय रामस्या नुग्रहायच । अकाले ब्रह्मणा-म्बोधो त्वया देव्या शिवः पुरा ॥ अहं मप्याश्विनः षष्ठ्यां साया-न्हे बोधया म्यतः ॥ पूजयामीह, दुर्गे, त्वां सर्व शत्रु विनाशिनीम् ॥ देव देवांश संभूतः ? श्री वृक्षः चण्डिका प्रियः ॥ आमन्त्रयामि पूजार्थं शाखा मेकं.यच्छमे ॥ इत्यामंत्र्य । यथोक्त विधिना विल्व

याहतु तदत्व गुप्तं चकार सः ॥ समाप्नोतिः पुण्येन तां यथा वह्नि यन्त्रणाम् ॥ ६ ॥ सोऽपिक्षेममवाप्नोति सर्व भवे नराशगः । कृष्ण यां वा चतुर्दश्या मष्टम्यां वासमाहितः ॥ ७ ॥ ददाति प्रति गृह्णाति नान्य थेषा प्रसिद्धयति ॥ इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥ योनिष्कीलांविधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ॥ ससिद्धः सगणः सोऽपि गन्धर्वोजायतेनरः ॥ ९ ॥ नचैना प्यटत स्तस्य भयं क्वापि हि जायते ॥ नाप मृत्यु वंशयाति मृतो मोक्ष मवाप्नु यात् ॥ १० ॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ॥ ततोज्ञात्वैव संपन्न मिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥ सौभाग्यादि च यत्किचिद् दृश्यते ललना जने ॥ तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्य मिदंशुभम् ॥ १२ ॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन्स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ॥ भव त्येव समग्रापि ततः प्रारभ्य मेवतत् ॥ १३ ॥ ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्या रोग्य संपदः ॥ शत्रु हानिः परो मोक्षः स्तूयते सान किं जनैः ॥ १४ ॥ इतिभगवत्याः कीलक स्तोत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥ शुभंभूयात् ॥

श्री गणपति र्जयति ॥ ॐ अस्य श्री नवार्णमन्त्रस्य ॥ ब्रह्मा विष्णुरुद्रा ऋषयः ॥ गायत्र्युष्णिग नुष्टुभ श्छन्दांसि ॥ श्रीमहा काली महा लक्ष्मी महा सरस्वत्यो देवताः ॥ ऐं बीजम् ॥ ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । श्री महाकाली महा लक्ष्मी महा सरस्वती प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥ ब्रह्मविष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ गायत्र्युष्णिग नुष्टुप्छन्दोभ्यो नमोमुखे ॥

वृक्षाधि वासं कृत्वा नृत्य गीत वाद्योत्सवै रात्रौ जागरणं कृत्वा ततः पुनः । ॐ विल्व इहागच्छ इह तिष्ठ स्या बाद्य विल्वाय नमः । इति मन्त्रेण पाद्यादि सिन्दूर गन्ध पुष्पाक्षत धूप दीप ताम्बूल नैवेद्यान्त दद्यात्, विल्व वृक्षस्थच्छा मन्त्र पठेत् । श्रीशैल शिखरे जातः ? श्री फलः ? श्री निकेतन । नेतव्योसिसमागच्छ पूज्यो दुर्गास्वरूपतः ॥ इति पठेत् ॥ अथ सप्तमी दिन कृत्यम् ॥ सप्तम्यां प्रातरारभ्य पत्रिका पूजनान्तर पर्यन्तं पुस्तकादौ सरस्वतीं पूजयेत् ॥ मन्त्र मत्रे वक्ष्यते रुद्र यामलेः—मूल ऋक्षे सुराधीश पूजनीया सरस्वती ॥ इति ॥ सरस्वत्या मूल युक्तायां वा केवलायां पत्रिका प्रवेशः । तद्दिने प्रातः समये नित्य कर्म कृत्वा पुन विल्व समीपं गत्वा प्रणम्य प्रार्थयेत् । विल्व वृक्ष महाभाग सदात्वं शङ्कर प्रिय ॥ गृहीत्वा तव शाखां च पूज्या दुर्गेति चस्मृतिः ॥ उत्तिष्ठ पत्रिके देवि सर्व कल्याण हेतवे ॥ पूजां गृहाण सफला मस्माकं वरदा भव ॥ मेरु मन्दर कैलाश हिमवच्छिखरे गिरो ॥ जाता श्री फल वृक्षोत्व मम्बिका या सदा प्रिये इति प्रार्थ्य ॥ विल्व वृक्षस्य दक्षिणस्यां दिशि श्री फल युग सहितां शाखा गृहीत्वा गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ ॐ छिन्दि फट् अस्त्राय नमः । ॐ हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रेण सच्छिन्द्य वच्छा खात्रोटनं कृत्वा वृक्षा

महा काली महा लक्ष्मी महा सरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि ॥ ऐं बीजाय नमो गुह्ये ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ क्लीं कील काय नमोनाभौ ॥ इति मूलेन करौ संशोध्य ॥ ॐ ऐं अंगुष्ठा भ्यांनमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि ॥ ततोऽक्षर न्यास. ॥ ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ ॐ ह्रीं नमो दक्षिण नेत्रे ॥ ॐ क्लीं नमो वाम नेत्रे ॥ ॐ चां नमो दक्षिण कर्णे ॥ ॐ मुं नमो वाम कर्णे ॥ ॐ डां नमो दक्षिण नासायाम् ॥ ॐ यैं नमोवाम नासायाम् ॥ ॐ विनमोमुखे ॐ च्चें नमो गुह्ये ॥ एवं विन्यस्याष्ट वारं मूलेन व्यापकं कुर्यात् ॥ ॐ ऐं प्राच्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः ॥ ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः ॥ ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ क्लीं वायव्यै नमः ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः । अथ ध्यानम् ॥ खड्ग चक्र गदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करै स्त्रि नयनां सर्वाङ्ग भूषा वृताम् ॥ नीलाश्म द्युति

देवतीर्थं । कदली स्तम्भ दाडिम धान्य वृक्ष हरिद्र वृक्ष मानक कचूर बिल्व पत्रा शोक जयन्ती द्रोण पुष्पान्य पुष्प फलं चयल्लम्यं सम्पूर्ण मा हत्य प्राथयेत् ॥ शाखाच्छेदेन यद् दुःखं यत्कृतं हिमया प्रभो ॥ क्षम्यतां मम वृक्षेश बिल्व वृक्ष नमोस्तुते ॥ बिल्व वृक्ष महाभाग सर्वदा शङ्कर प्रिय ॥ गृहीत्वा तव शाखां च देवी पूजां करोम्यहम् ॥ इति प्रार्थ्य ॥ ॐ ह्रीं हुँ क्लीं चामुण्डे चल चल शीघ्रं स्वम्बिके प्रविश ॥ आदिशस्त्वं दुर्गं रूपासि सुर तेजा महावज्रे । प्रविश्य तिष्ठ यज्ञोस्मिन् यावत् पूजां करोम्यहम् ॥ इति प्रविश्यस्थापयेत् ॥ ॐ स्थां स्थीं इति स्थिरोभव । आरोपितासि दुर्गेत्वं मृण्मयं श्री फलत्तवा ॥ स्थिरी भूता च त्वं देवि गृहाण कामदा भव ॥ इति स्थिरी कृत्य पत्रिका मुत्थाप्य दोलायामारोप्य दोलां स्कन्धे निधाय मौनी सन् गृह समीपे आनीय नाना वादित्रादि मङ्गल पुरस्सर पत्रिकायां यथामिलितो पचारैः सम्पूज्य ततो देवी गृहाभ्यन्तरे सायं काले पत्रिकां प्रवेशयेत् ॥ अथ सप्तम्यां सन्ध्योत्तर कृत्यम् ॥ ततो भूतादीनां कुष्माराभ बलिंदद्यात् ॥ ॐ भूत इहागच्छेहतिष्ठे त्या वाह्यसंस्थाप्य भूतादिभ्यो नमः ॥ इति

मास्य पाद दशकां सेवे महा कालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमल जोहन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥ अक्षस्रक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्ति मसिंच चर्म जलजं घण्टा- सुरा भाजनम् ॥ शूल पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नां ननां सेवेसै रिभ मर्दिनी मिह महा लक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥ घण्टा शूल हलानि शङ्ख मुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छीतांशु तुल्य प्रभाम् ॥ गौरी देह समुद्भवां त्रिनयना माधार भूतामहा पूर्वां मंत्र सरस्वती मनुभजेच्छुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥ अष्टो चर शत सङ्ख्यमंत्रराज -- ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे ॥ पीज प्रयायविद्महे तत्वानायधीमहेतन्नशक्ति प्रचो दयात् ॥ १०८ ॥ जपेत् ॥ इति नवार्णा विधिः ॥

अथ रात्रि सूक्तम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति संहार कारिणीम् । निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसःप्रभुः ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वं स्वाहात्वं स्वधा त्वं हि वषट् कार स्वरात्मिका ॥ सुधात्व मक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिकास्थिता ॥ २ ॥ अर्ध मात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥ त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ ३ ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥

पाद्यादि नैवेद्यान्तैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ भूता प्रेता. पिशाचश्च येत्र सन्त्यत्र भूतले ॥ तेगृह्णन्तु मयादत्तं बलिमे तत्प्रसादितम् ॥ पूजिता बलि पुष्पाद्यैस्तथिवा बलिभिस्तथा देशा दुस्माद्भिनिः सृत्य पूजां गृह्णन्तु यत्कृताम् ॥ एष माष बलिः भूतादिभ्यो नमः सर्षपंच विकीर्य वस्तु परिदीपं प्रज्वाल्य गृहाद्बहिः स्थापयेत् ॥ ततः सप्तम्यां पुस्तका दौ प्रभाते वा पत्रिका पूजनानंतरं वा सरस्वतीं स्थापयेत् यथा । वेद शास्त्र पुराणानि स्मृति व्याकरणानिच ॥ ज्योतिषं मन्त्र विद्यां च सर्व विद्या मनेक धा । त्रितत्वं पुस्तके मातनिश्चयं कुरुमेगृहे ॥ संजीवन कुलेजातं पुस्तकाय नमो नमः । इति मन्त्रादिना पूजयेत् ॥ अद्येहे त्यादि सर्वापच्छान्ति सर्वाभिष्ट सौख्य प्राप्ति पूर्वक शारत्कालीय नव दुर्गा शाकम्भरी स्थापन महं करिष्ये ॥ मृण्मयीं दुर्गा प्रतिमां सफलां बिल्व शाखां, कदल्यादि नव पत्रिकां च संस्थाप्य पञ्चामृतेन संस्थाप्य एतन्त इति प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् ॥ पत्रिका नामानि । कदली दाडिमं धान्यं हरिद्रा मानकं कचम् ॥ बिल्वा शोकौ जयन्ती च विज्ञेया नवपत्रिका ॥ प्रत्येकं नव पत्रिका पूजनं यथा शक्ति कृत्वा स्नानीयं दद्यात् ॥ तद्यथा ॥ आपगेयो नर्मदा गङ्गा यमुना च सरस्वती ॥ शरयू गण्डकी पुण्या श्वेत गङ्गा च कौशिकी ॥ यर्वा च पाताले स्वर्गे मन्दाकिनी तथा ॥ सर्वाः सुमन सोभूत्वा शंकरं स्नपयन्तुवै ॥

विसृष्टौ सृष्टि रूपा त्वं स्थिति रूपा च पालने ॥ तथा संहृति रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ८ ॥ महा विद्या महा माया महा मेधा महास्मृतिः । महामोहा चभवती महा देवी महासुरी ॥ ९ ॥ प्रकृतिस्त्वं चसर्वस्य गुण त्रय भाविभाविनी ॥ काल रात्रिमहारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणः ॥ ७ ॥ त्वं श्री स्त्वमीश्वरी त्वं ह्री स्त्वं बुद्धिर्बोध लक्षणा ॥ लज्जा पुष्टि स्तथातुष्टि स्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेवच ॥ ८ ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा शङ्खिनी चापिनी-बाण भुशुण्डी परिघा युधा ॥ ९ ॥ सौम्या सौम्य तर शेष सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी ॥ परा पराणां परमात्वमेव परमेश्वरी ॥ १० ॥ यच्चकिंचित्क्वचिद्वस्तु सद सद्वाखिलात्मके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सात्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ११ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ।. सोऽपिनिद्रा वशं नीतः कस्त्वांस्तोतुमि हेश्वरः ॥
विष्णुः शरीर ग्रहण मह मीशान एव च ॥ कारि तास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्ति मान्भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारै र्दवि संस्तुता ॥ मोह यैतौ दुराधर्षौ वसुरौ मधु कैटभौ ॥ १४ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ बोध

कदल्यै नमः । कदल्या ब्रह्माणी ह्यागच्छे इविष्टे त्वा वाह्य ब्रह्माण्यै नमः इति पाद्यादि नैवेद्यान्त दद्यात् ॥ दाडिम्या रक्त चण्डिकाम् । सर्वेषा मधिपो देव ईशानो नाम नामतः ॥ शूलपाणि महादेवो श्रृङ्गारे स्नपयन्तुवे ॥ पूर्व वद् इहागच्छे त्यादिना सम्पूज्येत् ॥ धान्ये लक्ष्मीम् । पुण्यस्त्वं पुण्य शाखाना मङ्गलानां च मङ्गलम् । विष्णुना विधृतो नित्य मतः शान्ति प्रयच्छमे ॥ मन्दाकिन्या स्तुते वारि सर्व पाप हर शुभम् । स्वर्गस्रोतस्तु वैष्णव्यं श्रृङ्गारैस्नपयन्तुते ॥ पूर्व वत्संपूजयेत् ॥ मानके चामुण्डम् । गन्धाढ्यं चन्दनं दिव्यं तच्छीतल सुरप्रियम् ॥ सर्व पाप हरं चैव श्रृंगारै स्नपयन्तुते ॥ पूर्ववत्सपूजयेत् ॥ कचे कालिकाम्—सागरा सरितः सर्वा सरः स्रोतोद्भवस्तथा ॥ सर्वौषधीभिः पापघ्ना शतशः स्नप यन्तुते ॥ सर्वाः सुमनसो भूत्वा श्रृगारैस्न पयन्तुते ॥ पूर्व वत्सम्पूजयेत् ॥ बिल्वेशिवाम् ॥ हिमवद्धेम कूटाद्या रत्नाधिविश्चन्तु पर्वताः निर्झरोदक पूर्णेन पट्टेन कलशे नतु । सर्वा सुमन सोभूत्वा श्रृंगारे स्नपयन्तुते ॥ पूर्ववत्सम्पूजयेत् ॥ अशोके शोक हारिणीम्

श्चक्रियता मस्य हन्तु मेतौ महा सुरौ ॥ १५ ॥ इति ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सप्त शती न्यासः ॥ अथ प्रथम मध्यमो त्तम चरि त्राणां ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः । श्री महा काली महा लक्ष्मी महा सरस्वत्यो देवताः ॥ गायत्र्युष्णिग नुष्टु भछन्दांसि ॥ नन्दा शाकम्भरी भीमाः शक्तयः ॥ रक्त दन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि ॥ अग्निर्वायुः सूर्यस्तत्त्वानि ॥ ऋग्यजुः साम वेदाध्यानानि ॥ सकल कामना सिद्धये श्री महा काली महालक्ष्मी महा-सरस्वती देवत प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः । तत्रादौ न्यासः ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाण भुशुण्डी परिघायुधा ॥ अंगुष्ठाभ्या नमः ॥ शूलेन पाहिनो देविपाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टा स्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेनच ॥ तर्जनी भ्या नमः ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्या च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणे नात्म शूलस्य उत्तरस्या तथेश्वरि ॥ मध्यमाभ्या नमः ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्तिते ॥ यानि चात्यर्थ घोराणि तै रक्षा स्मां स्तथा भुवम् ॥ अनामिकाभ्यां नमः ॥ खड्ग शूलगदा दीनि यानि चास्त्राणि ते ऽम्बिके ॥ कर पल्लव सङ्गीनि तैरस्मा त्रक्ष सर्वतः ॥ कनिष्ठि काभ्यां नमः ॥ सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्व शक्ति समन्विते ॥ भयेभ्य स्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमो

॥ स्नपयेत्तु सुरा सर्पि दधि क्षीर जलै स्तथा ॥ सर्वा सुमनसो भूत्वा शृंगारैः स्नपयन्तु ते ॥ पूर्व वत्सम्पूजयेत् ॥ जयन्त्यां कार्त्तिकाम् ॥– दुर्गा चण्डी श्वरी चण्डी वाराही कार्तिकी तथा ॥ हरसिद्धि तथा काली रुद्राणी वैष्णवी तथा ॥ भद्रकाली विशालाक्षी भैरवी सर्व रूपणी ॥ सर्वा सुमनसो भूत्वा शृङ्गारैः स्नापयन्तु ते ॥ पूर्ववत्सम्पूज्य ॥ तत्रैव तक्षकादींश्चस्नापयेत् पूजयेच्च ॥ तक्षकाद्या श्चये चान्ये पाताल तल वासिनः ॥ सर्वा सुमनसो भूत्वा शृङ्गारैः स्नापयन्तु ते ॥ अनेन प्रकारेण प्रत्येकं पत्रिकान् स्नापयित्वा पूजयेत् ॥ ततो बिल्व फल शाखायां श्री परमेश्वरी मावाहयेत् । अथा वाहनम् ॥ आवाहयाम्यहं देवीं श्री फले मृण्मये तथा ॥ आयुरारोग्य मैश्वर्यं देहि देवि नमः सदा । कैलाश शिखरे देवी हिमाद्रे हिमपर्वतात् । आगच्छ बिल्व शाखायां चण्डिके कुरु सन्निधम् ॥ स्थापितासि महादुर्गे । पूजयेत्वा प्रसीदमे । दुर्गे देवि ! इहा गच्छ सानिध्य मम कल्पय ॥ यज्ञ भागान्गृहाणत्वं योगिनी कोटिभिः सह ॥ इत्यावाह्य सर्वत्र यन्त्रं विकीर्य ॥ ओं दुर्गे-दुर्गे रक्ष स्वाहा दुर्गायै नमः ॥ जयन्ती मङ्गला काली चेति पाद्याभ्यां चमनीय मधुपर्क पञ्चामृत शुद्धस्नान वस्त्रा

ऽस्तुते ॥ कर तल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादिषु ॥ खड्गनी शूलिनी घोरा० हृदयाय नमः ॥ शूलेन पाहिनो देवी० शिरसे स्वाहा ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यांच० शिखायै वषट् ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय हुम् ॥ खड्ग शूल गदा दीनि० नेत्र त्रयाय वौ षट् ॥ सर्व स्वरूपे सर्वेशे० अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम्

विद्युद्दाम सम प्रभां मृग पति स्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवाल खेट विल-सद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखां श्चापं गुणं तर्जनी बिभ्राणा मनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ १ ॥ इति ध्यानम् ॥ प्रथम चरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः महाकाली देवता गायत्रीच्छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्त दन्तिका बीजम् । अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्री महाकाली प्रीत्यर्थे प्रथम चरित्र जपे योगः विनि ॥ अथ ध्यानम्खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शंखं सन्दधतीं करै स्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषा वृताम् ॥ नीलाश्म द्युति मास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकांयामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तु मधुकैटभम् ॥ २ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ १ ॥ सावर्णिः सूर्य तनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निशामय तदु त्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम ॥ २ ॥ महामाया

भूषण गन्धाक्षत पुष्प सिन्दूर कज्जलादि द्रव्य धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलादि समस्त पत्रिका स्वरूपायै भगवत्यै दुर्गा देव्यै नमः ।
इत्यादीनां दत्वा नमस्कारः ॥ ॐ चण्डे रुद्र चण्डे चण्डोमे चण्ड नाशिनी ॥ चण्डिके चण्ड वत्यास्त्व चण्डि ! तुभ्यं नमोनमः ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ॥ क्षेम मारोग्य मैश्वर्यं देहि देवि ! नमोऽस्तुते ॥ इतिप्रणम्य प्रार्थयेत् ॥ बिल्व पत्र मादाय ॥ सुधोद्भव च श्री वृक्षं शङ्करस्य सदा प्रियम् । पवित्रंते प्रयच्छामि बिल्व पत्रं सुरेश्वरि द्रोण पुष्पमादाय । ब्रह्मा विष्णु शिवा दीनां द्रोण पुष्प सदा प्रियम् ॥ हरो दुर्गे । प्रयच्छामि सर्व कामार्थ सिद्धये ॥ कुङ्कुमेन समालिप्ते चन्दनेन चिले चिले ॥ विरूप पत्र कृताऽऽपीडे दुर्गे ह' शरणं गतः ॥ रूपं देहि यशो देहि, भगंभगवति त्वं तथा ॥ पुत्रान्देहि धनन्देहि सर्वान्कामान्प्रदेहिमे ॥
अथ प्रत्येक नव पत्रिका पूजा ॥ अद्येहेत्यादि नव पत्रिकायां नव देवीनां पूजन मह' करिष्ये इति संकल्प्य आवाहनादि ताम्बूलान्तैः सम्पूज्य प्रत्येकं प्रार्थयेत् ॥ कल्पयां ब्राह्मणी पूजा ॥ दुर्गे देवि ! समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥ रम्भा रूपेणमेनित्यं शान्ति कुरु सदा शुभे ॥ ब्रह्मायै नमः ॥ दाडिम्यां रक्त चण्डिकां पूजयेत् ॥ दाडिमि त्वं पुरा युद्धे रक्त बीज-

---

नुभावने यथा मन्वन्तराधिपः । स भवभूयं महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ ३ ॥ स्वारो चिपेऽन्तरे पूर्वं चैत्र वंश समुद्भवः ॥ सुरथो नाम नाम राजाभूत्समस्ते क्षिति मण्डले ॥ ४ ॥ तस्य पालयतः सम्यक्प्रजाः पुत्रा निवौ रसान् ॥ बभूवः शत्रवो भूपाः कोला विध्वंसिभिर्जितः ॥ ६ ॥ ततः स्वपुर माया यो निज देशा धिपो भवत् ॥ आक्रान्तः समहाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ७ ॥ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्यदुरात्मभिः ॥ कोशो बलं चाप हृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥ ततो मृगया व्याजेन हृत स्वाम्यः समूपतिः ॥ एकाकी हयमा रुह्य जगाम गहन वनम् ॥ ६ ॥ स वग़ा श्रम मद्राक्षोद्द्विजवर्यस्य मेधसः । प्रशान्तश्वा पदा कीर्णं मुनि शिष्यो पशो भितम् ॥ १० ॥ तस्थौ कंचित्स कालच मुनिना तेन सत्कृत ॥ इत श्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनि वरा श्रमे ॥ ११ ॥ सोऽचिन्त यत्तदा तत्र ममत्वा कृष्ट चेतनः मत्पूर्वैः पालितं पूर्व मयाहीनं पुरंहि तत् । १२ ॥ मद्भृत्यै स्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते नवा ॥ न जाने स प्रधानोमेशूर हस्ती सदामद ॥ १३ ॥ मम वैरिवशंयातः कान्भोगा नुपलप्स्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसाद धनभोजनैः ॥ १४ ॥ अनुवृत्तिं ध्रुवंतेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमही भृताम् ॥ असम्यग्व्यय शीलैस्तैः कुर्वद्भिः सत सन्व्ययम् ॥ १५ ॥ सचितः सोऽति दुःखेन क्षयं कोशोगमिष्यति ॥ एत-

न्य सम्मुखे ॥ नमः कार्यकर्त्रि यस्मा दुर्गे देवि नमो नमः ॥ २ ॥ धान्ये लक्ष्मीं पूजयेत् ॥ जगतः प्राण रक्षार्थं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ उमा प्रीति करंधान्यं तस्मात्त्वत्तु सर्वदा ॥ ३ । हरिद्रायां दुर्गां पूजयेत् ॥ हरिद्रेय वरदे देवि उमा रूपासि सुव्रते ? ॥ मम विघ्न विनाशाय पूजां चैव गृहाण भो ॥ ४ ॥ मानके चामुण्डां पूजयेत् ॥ अस्मिन्देवि समाविष्ट मान वृक्षे रार्वोप्रिये मम चानुग्रहार्थाय पूजारनीकरणायच ॥ ५ ॥ कच्चूर के कालिकापूजयेत् ॥ महिषासुर युद्धेषु कालि भूतासि सुव्रते ! ॥ मम चानु ग्रहार्थाय आगतासि हर प्रिये ॥ ६ ॥ बिल्वे शिवां पूजयेत् ॥ महादेव प्रिय करो वासुदेव प्रियः नदा ॥ उमा प्रीति करोय.स्याद्बिल्व वृक्ष ॥ नमोस्तुते ॥ ७ ॥ अशोके शोक हारिणीम्—हरप्रिय करो वृक्ष ! सदात्वं शोक नाशनः ॥ दुर्गा प्रीति करोयस्मात् तस्मात्वम् रक्षमां सदामिति पूजयेत् ॥ जयन्त्यां कार्तिकीं पूजयेत् ॥ निशुम्भ शुम्भ मथने सेन्द्रैर्देव गणैः सह ॥ जयन्ति ! पूजयामित्वा यस्माकं वरदाभव ॥ ८ ॥ इति नव पत्रिकां सम्पूज्य प्रार्थयेत ॥ खड्ग छुरिकाधनुर्ध्वज पता का शक्ति धमीसि दुन्दुभि शङ्ख कुठारक छत्र चामरे शस्त्राणि श्रीदुर्गा समीपे सस्थापयेत् इति सप्तम्या पत्रिका प्रवेशः पूजनविधिश्च ॥ अथ महाष्टम्यां काल

स्थान्य च सतत चिन्तया मास पार्थिवः ॥ १६ ॥ तत्र विप्रा श्रमाभ्यासे वैश्यमेकं ददर्श सः ॥ सपृष्टस्तेन कस्त्वंभो हेतुश्चा गमनेऽत्रकः ॥ १७ ॥ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इवलक्ष्यसे ॥ इत्या कर्ण्यवचस्तस्य भूपतेः प्रणयो दितम् ॥ १८ ॥ प्रत्युवाचसतं वैश्यः प्रश्रया वनतो नृपम् ॥ १९ ॥ वैश्य उवाच ॥ २० ॥ समाधिर्नाम वैश्योऽहं मुत्पन्नोधनिनां कुले ॥२१॥ पुत्र दारे निरंवस्चधनलोभादिसाधुभिः विहीनश्चधनैर्दारे:पुत्रै रादाय मेधनम् ॥ २२ ॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्त श्चाप्तबन्धुभिः ॥ सोऽहंन वेद्मि पुत्राणां कुशला कुशलात्मिकाम् ॥ २३ ॥ प्रवृत्तिं स्वजनां नां च दाराणां चात्रसंस्थितः । किंनु तेषां गृहे क्षेम मक्षेम किनुसां प्रति ॥ २४ ॥ कथं ते किंनु सद्वृत्ताः दुर्वृत्ताः किंनु मे सुताः ॥ २५ ॥ राजो वाच ॥ २६ ॥ यैर्निरस्तोभवाँल्लुब्धैः पुत्रदारा दिभिर्धनैः ॥ २७ ॥ तेषुकिं भवतः स्नेह मनुबध्नातिमानसम् ॥२८॥ वैश्य उवाच ॥ २९ ॥ एव मेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतंवच ॥ ३० ॥ किं करोमि नबध्नातिमम निष्ठु रतांमनः ॥ ये. संत्यज्य पितृ स्नेहं धन लुब्धैर्निराकृतः ॥ ३१ ॥ पति स्वजन हार्दंच हार्दितेष्वेवमे मनः किमे तन्ना भिजानामि जाननपि महामते ॥ ३२ ॥

यत्प्रेम प्रवणंचित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ॥ तेषां कृते मेनि श्वासो·

रात्रौ भद्रिका पूजा निर्णयः ॥ नाष्टमी सप्तमी युक्ता सप्तमी नाष्टमी युता ॥ नवम्या सह कार्यास्या दष्टमी सर्वदा बुधैः । अष्टमी सप्तमी युग्मे महोत्साहे महोत्सवः ॥ इति वाक्यात् । नवमी युक्तायाः प्राशस्त्याभि धानात् सति संभवे सप्तमी विद्धा सर्वथा वर्जनीया ॥ यदि स सूर्यो दये न स्या नवमी नापरे ऽहनि ॥ तदाष्टमीं प्रकुर्वीत सप्तम्यासहितां नृपः इति ॥ अहं भद्रा चभद्रा च आवयो रन्तरं नहि ॥ सर्व सिद्धि प्रदास्यामि भद्रायां मर्चिता प्यहमिति वचनं भद्र काल्य र्चन परेण महाष्टम्यां निशीथ काले पूजा कर्त्तव्या । दक्ष यज्ञ विनाशिन्या अर्द्ध रात्रे प्रादुर्भावात् ॥ तत्राष्टम्यां महा काली दक्ष यज्ञ विनाशिनी ॥ प्रादुर्भूता महाघोरा ह्यर्द्धरात्रे चन्द्र मण्डले ॥ इति ब्रह्म वचनात् ॥ सप्तमी विद्धां न कुर्वीत मुख्य शुद्धाष्टम्यां काल रात्रि कुर्यात् अष्टम्यां सायं सन्ध्योत्तरं देवी पूजा कार्या ॥ अद्येह दुर्भिक्षादिदुःखादि निवृत्ति दीर्घा युष्य परमानन्द परम पद गमन दशाश्व मेध फल ध्वज माला कुल विमान वरा रोहण शाश्वत

दौर्मनस्य च जायते ॥ ३३ ॥ करोमि किं यत्र मनस्ते ष्वप्रीतिपु निष्ठुरम् ॥ ३४ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ ३६ ॥ समाधिर्नाम वैश्यो ऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ॥ कृत्वातु तौ यथा न्यायं यथां र्हतेन संविदम् ॥ ३७ ॥ उपविष्टौ यथाः काश्चि त्कथाश्चक्रतु वैश्य पार्थिवौ ॥ ३८ ॥ राजो वाच ॥ ३६ ॥ भगवं स्त्वा मह प्रष्टु मिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ४ ॥ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्ता यत्ततांविना ॥ ममत्व गतराजस्य राज्याङ्गे खखिले ष्वपि ॥ ४१ ॥ जानतो ऽपि यथाज्ञस्य किमे तन्मुनि सत्तम ॥ अयं चनिकृतः पुत्रै दोरै र्भृत्यै स्तथो ज्झितः ॥ ४२ ॥ स्वजनेन च स त्यक्त स्तेषु हार्दी तथा प्यति ॥ एव मेष तथा हं च द्वावप्य त्यन्त दुः खितौ ॥ ४३ ॥ दृष्ट दोषे ऽपि विषये ममत्वा कृष्ट मानसौ ॥ तत्किमे तन्महा भाग यन्मोहो ज्ञानिनो रपि ॥ ४४ ॥ ममास्य च भव त्येषा विवेकान्ध स्यमूढता ॥ ४५ ॥ ऋषिरु वाच ॥ ४६ ॥ ज्ञान मस्ति समस्तस्य जन्तो र्विषय गोचरे ॥ ४७ ॥ विषयाश्च महा भाग यानि चैवं पृथक्पृथक् ॥ दिवान्धाः प्राणिनः केचि द्रात्रा वन्धा स्तथा परे ॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिन स्तुल्य दृष्टयः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं नुते नहि केवलम् ॥ यतोहि ज्ञानिनः सर्वे पशु पक्षि मृगादयः ॥ ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृग पक्षिणाम् ॥ ५० ॥ मनुष्याणां च

फाला ऽवच्छिन्न हर्ष विजय कामः श्री दुर्गा देव्याः पूजनं ध्यानं चाहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ ततः गणेश दीप पूजनादं स्थापनं कृत्वा ॥ जटा जूट समायुक्ते त्यादि पूर्वोक्त ध्यानं कुर्यात् ॥ अथावाहनम् ॥ एहि दुर्गे महाभागे ? रक्षार्थं मम सर्वदा ॥ आवाहयाम्यहं देवि ? सर्व कामार्थ सिद्धये ॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वेश्वरि ? नमो स्तुते ॥ ॐ एतन्तेवि भगवति दुर्गे ? इहागच्छ इह तिष्ठेह सन्निहिता भव इह स्थिरा भव सुप्रसन्ना भव इत्यां वाहा ॥ ॐ जयन्ती मङ्गला कालीति दुर्गे दुर्गे रक्षणि ! स्वाहा ॐ दुर्गायै नमः ॥ इति मन्त्रेण आसन पाद्यार्घ्य पञ्चामृत स्नानाचमन शुद्धोदक स्नान रक्त वस्त्र भूषण सिन्दूर चन्दना क्षत पुष्प कज्जल धूपदीप नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणान्तं कृत्वा आवरणं पूजये ॥ देव्या दक्षिण भागे एका दश गौरीः पूजयेत् ॥ ॐ ह्रीं जयन्त्यै नमः इति । प्रणवादि नमोन्तं सर्वत्र ज्ञेयम् ॥ ॐ ह्रीं मङ्गलायै नमः । ॐ ह्रीं काल्यै नमः । ॐ ह्रीं ह्रीं भद्र काल्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं कपालिन्यै नमः । ओं ह्रीं दुर्गायै नमः । ओं ह्रीं क्षमायै नमः । ओं ह्रीं शिवायै नमः । ओं ह्रीं धात्र्यै नमः ॥ ओं ह्रीं

यत्तेषां तुल्य मन्य स्तयो भयोः ॥ ज्ञाने ऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गां
श्छाव चंचुषु ॥ ५१ ॥ कणमोक्षा दृतान्मोहा त्पीड्य मानानपि क्षुधा ॥ मानुषा मनुज व्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति ॥ ५२ ॥
लोभात्प्रत्यु पकाराय नन्वे तान्कि न पश्यसि ॥ तथापि ममता
वर्ते मोह गर्तेनिपातिताः ॥ ५३ ॥ महा माया प्रभावेण संसार स्थिति
कारिणा ॥ तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिन्द्रा जगत्पतेः ॥ ५४ ॥
महामाया हरे श्चैषा तया सं मोह्यते जगत् ॥ ज्ञानिना मपि चेतांसि
देवी भगवती हिसा ॥ ५५ ॥ बलादा कृष्य मोहाय महामाया प्रय-
च्छति ॥ तया विसृज्यतेविश्वं जगदे तच्चरा चरम् ॥ ५६ ॥ सैषा
प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्ते र्हेतुभूता
सनातनी ॥ ५७ ॥ संसार बन्धु हेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ५८ ॥ राजो
वाच ॥ ५९ ॥ भगवान्काहिसा देवी महामायेतियांभवान् ॥ ६० ॥
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ॥ यत्स्वभावा च सा देवी यत्स्व
रूपायदुद्भवा ॥ ६१ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदांवर ॥ ६२ ॥
ऋषिरुवाच ॥ ६३ ॥ नित्यैवसा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥
तथापि तत्समुत्पत्ति र्बहुधा श्रूयतांमम ॥ देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति
सायदा ॥ ६५ ॥ उत्पन्नेति तदालोके सानित्याप्यभिधीयते ॥ योग निद्रां

स्वाहानमः । ओं ह्रीं स्वधा नमः ॥ अर्घ्यादि नैवेद्यान्तः पूजयेत् । देव्याः पृष्ट भागे द्वादश देवी पूजनम् कुर्यात् ॥ ह्रीं मादि नमोन्ताः प्रयोगो यथा— ह्रीं उग्र चण्डायै नमः । ह्रीं प्रचण्डायै नमः । ह्रीं चण्डोग्रायै नमः । ह्रीं चण्डनायिकायै नमः ॥ ह्रीं चण्डायै नमः । ह्रीं चण्डवत्यै नमः । ह्रीं चण्डरूपायै नमः । ह्रीं चण्डिकायै नमः । प्रत्येकं सम्पूज्य, देव्या वाम भागे नव देवीःपूजयेत् ॥ ह्रीं उग्र दृंष्ट्रायै नमः । ह्रीं शुभ दृष्ट्रायै नमः ॥ ह्रीं करालिन्यै नमः ॥ ह्रीं भीम नेत्रायै नमः ॥ ह्रीं विशाल दृशे नमः ॥ ह्रीं मङ्गलायै नमः ॥ ह्रीं जयायैनम ॥ ह्रीं विजयायै नमः इति सम्पूज्य ॥ देव्यग्रभागे षोडश देवी । पूजयेत् ॥ ह्रीं मङ्गलायै नमः । ह्रीं नन्दिन्यै नम. । ह्रीं रुद्रायै नमः । ह्रीं लक्ष्म्यै नम. ॥ ह्रीं कीर्त्यै नमः । ह्रीं यशस्विन्यै नमः । ह्रीं पुष्टयै नमः । ह्रीं शिवायै नमः ह्रीं साध्व्यै नमः ह्रीं यशोवत्यै नमः । ह्रीं शोभायै नमः

यदा विष्णुजगत्ये कार्णवीकृते ॥ ६६ ॥ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान्प्रभुः ॥ तदाद्वाव सुरौ घोरौ विख्यातो मधुकैटभौ ॥ ६७ ॥ विष्णु कर्ण मलोद्भूतौ हन्तुं ब्राह्मणमुद्यतौ ॥ सनाभि कमले विष्णोःस्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८ ॥ दृष्ठवाताव सुरौ चोग्रौ प्रसुप्तंच जनार्दनम् ॥ तुष्टाव योग निद्रां तामेकाग्र हृदयः स्थितः ॥ ६९ ॥ विबोधनार्थाय हरे हरिर्नेत्र कृतालयाम् ॥ ७० ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति संहार कारिणीम् ॥ निद्रांभगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१ ॥ ब्रह्मो वाच ॥ ७२ ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्ध मात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः । त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देविजननी परा ॥ ७४ ॥ त्वयै तद्धार्यते विश्वं त्वयै तत्सृज्यते जगत् ॥ ७५ ॥ त्वयेतत् पाल्यते देवित्व मत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपात्वं स्थिति रूपाच पालने ॥ ७६ ॥ तथा संहृति रूपान्ते जगतोस्य जगन्मये ॥ महा विद्या महा माया महामेधा महास्मृतिः ॥ ७७ ॥ महा मोहा च भवती महा देवी महासुरी ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुण त्रय विभाविनी ॥ ७८ ॥ कालरात्रिमहारात्रि मोहरात्रिश्चदारुणा ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीं स्त्वं बुद्धिर्बोध लक्षणा ॥ ७९ ॥

लज्जा पुष्टि तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेवच । खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ ८० ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा ॥ सौम्या सौम्य तराऽशेष सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी ॥ ८१ ॥ परा परा णां परमात्वमेव परमेश्वरी । यच्चकिंचित्क्वचिद्वस्तुसदसद्वाखिलात्मिके तस्य सर्वस्यया शक्तिः सात्वं किं स्तूयसे तदा ॥ यया त्वयाजगत्स्रष्टा जगत्पा-

प्रजयायै नमः । ह्रीं धृत्यै नमः । ह्रीं आनन्दायै नमः ह्रीं मेधायै नम ह्रीं नन्दायै नमः । इति पूर्ववत्सम्पूजयेत् देव्याश्च भागे चतुः षष्टिर्देवीं ह्रीं श्रीजायै नमः पूजयामि ॥ ह्रीं मङ्गलायै नमः पूजयामि ॥ ह्रीं भद्रायै नमपूजयामि ॥ ह्रीं धृत्यैनमः पू० । ह्रीं शान्त्यै नमः पू० । ह्रीं शिवायैनमः पू० । ह्रीं क्षमायै नमः पू० । ह्रीं सिद्धै नमः पू० । ह्रीं तुष्ट्यै नमः पू० । ह्रीं पुष्ट्यै नमः पू० । ह्रीं उमायै नमः पू० । ह्रीं श्रियै नमः पू० । ह्रीं ऋद्ध्यै नमः पू० । ह्रीं रत्यै नमः पू० । ह्रीं दीप्तायै नमः । पू० ॥ ह्रीं कान्त्यै नमः पू० । ह्रीं लक्ष्म्यै नमः पू० ॥ ह्रीं ईश्वर्य्यै नमः पू० । ह्रीं वृद्ध्यै नमः पू० ह्रीं शक्त्यै नमः पू० । ह्रीं जया वत्यै नमः पू० । ह्रीं ब्राह्म्यै नमः पू० । ह्रीं जयन्त्यै नमः पू० । ह्रीं अपराजितायै नमः पू० । ह्रीं

स्थितियो जगत् ॥ ८३ ॥ सोऽपि निद्रा वशं नीतः कस्त्वां स्तोतु मिहेश्वरः ॥ विष्णुः शरीर ग्रहण मह मीशान एवच ॥ ८४ ॥ कारि तास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतु शक्तिमान्भवेत्॥ सात्व मित्थं प्रभावैः स्वैः रुदारैर्देवि संस्तुता ॥ ८५ ॥ मोहयैतौ दुराधर्षा वसुरौ मधुकैटभौ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयता मच्युतो लघु ॥ ८६ ॥ बोधश्च क्रियता मस्य हन्तु मेतौ महासुरौ ॥ ८७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ८८ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ८९ ॥ विष्णोः प्रबोध नार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥ नेत्रास्य नासिका बाहू हृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ ९० ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्त जन्मनः ॥ उत्तस्थौच जगन्नाथ स्तया मुक्तोजनार्दनः ॥ ॥ ९१ ॥ एकार्णवेऽहि शयना त्ततः सदहशे च तौ ॥ मधुकैटभौ दुरात्मानावति वीर्य पराक्रमौ ॥ ९२ ॥ क्रोधरक्ते क्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितो यमौ ॥ समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान्हरिः ॥ ९३ ॥ पञ्च वर्ष सहस्राणि बाहु प्रहरणो विभुः ॥ तावप्यति बलोन्मत्तौ महामाया विमोहितौ ॥ ९४ ॥ उक्त वन्तौ वरोस्मत्तो व्रियता मितिकेशवम् ॥ ९५ ॥ भगवानुवाच ॥ ९६ ॥ भवेता मद्यमे तुष्टौ मम वध्या वुभा वपि ॥ ९७ ॥ किमन्येन वरे णात्र एतावद्धि वृत्तं मया ॥ ९८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ९९ ॥ वाञ्छिताभ्यो मिति तदा सर्वं मापो मयं जगत् ॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान्कमले क्षणः, आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ १ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २ ॥ तथेत्युक्त्वा भगवता शंख चक्र गदाभृता ॥ कृत्वा चक्रेण वैच्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ ३ ॥ एव मेपा समुत् पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ॥ प्रभाव मस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामिते ॥ ४ । इति मार्कण्डेय पुराणे सार्वर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्मे मधुकैटभ वधो नाम प्रथमोध्यायः ॥ १॥ उवाच ॥ १४ ॥ अर्ध० ॥ २४ ॥ श्लो० ६६ ॥ एवम् ॥ १०४॥

अजितायै नमः पू० । ह्रीं मातङ्ग्यै नमः पू० । ह्रीं दित्यै नमः पू० । ह्रीं मायायै नमः पू० । ह्रीं महा भयायै नमः पू० ह्रीं मोहिन्यै नमः पू० । ह्रीं रति लालसायै नमः पू० । ह्रीं तारायै नमः पू० ह्रीं विमलायै नमः पू० । ह्रीं गौर्य्यै नमः पूजयामि । ह्रीं शरण्यायै नमः पू० । ह्रीं कौशिक्यै नमः पूजयामि । ह्रीं सत्यै नमः पू० । ह्रीं दुर्गायै नमः पू० ॥ ह्रीं क्रियायै नमः । पू० । ह्रीं अरुन्धत्यै नमः पू० । ह्रीं घण्टायै नमः पू० । ह्रीं कर्णायै नमः पू० ॥ ह्रीं कपालिन्यै नमः पू० । ॥ ह्रीं रौद्रै नमः पू० । ह्रीं काल्यै नमः पू० । ह्रीं मातृर्यै नमः पू० । ह्रीं त्रिनेत्राय नमः पू० । ह्रीं स्वरूपिण्यै नमः पू० । ह्रीं बहु रूपायै नमः पू० ॥ ह्रीं रिपु हन्त्र्यै नमः पू० । ह्रीं अम्बिकायै नमः पू० ॥ ह्रीं चर्चिकायै नमः पू० । ह्रीं सुर पूजितायै नमः पू० । ह्रीं वैवस्वत्यै नमः पू० । ह्रीं कौमार्यै नमः पू० ह्रीं माहेश्वर्यै नमः पू० । ह्रीं वैष्णव्यै नमः पू० । ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः पू० । ह्रीं शिवदूत्यै नमः पू० । ह्रीं कार्त्तिक्यै नमः पू० । ह्रीं कुशिकायै नमः पू० । ह्रीं चामुण्डायै नमः पू० । इति संपूज्या

मध्यम चरितस्य ॥ विष्णु ऋषिः ॥ महा लक्ष्मी देवता ॥ उष्णिक छन्दः ॥ शाकंभरी शक्तिः ॥ दुर्गाबीजम् ॥ वायुस्तत्त्वम् ॥ यजुर्वेदः स्वरूपम् ॥ महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं मध्यम चरित जपे विनियोगः ॥ अथध्यानम् । ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां दण्डं शक्ति मसिं च चर्म जलजं घण्टां सुरा भाजनम् ॥ शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनी मिह महालक्ष्मी सरोज स्थिताम् ॥ १ ॥ ऋषिरुवाच देवा सुर मभूद्युद्धं पूर्णं मब्द शतं पुरा ॥ महिषे सुराणाम धिपे देवानां च पुरं दरे ॥ २ ॥ तत्रा सुरै र्महा वीर्यै देव सैन्यं पराजितम् ॥ जित्वा च सकला न्देवानिन्द्रो ऽभून महिषा सुरः ॥ ३ ॥ ततः परा जिता देवाः पद्म योनिं प्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेश गरुडध्वजौ ॥ ४ ॥ यथा वृत्तं तयो स्तद्वन्महिषा सुर चेष्टितम् ॥ ५ ॥ त्रिदशाः कथया मासुर्देवाभि भवविस्तरम् ॥ ५ ॥ सूर्ये न्द्राग्न्य निलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ॥ अन्येषां चाधि का रान्स स्वयमेवाभितिष्ठति ॥ ६ ॥ स्वर्गा न्निराकृताः सर्वे तेन देव गणा भुवि ॥ विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥ एतद्वः कथितं सर्व ममरारि विचेष्टितम् ॥ शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वध स्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधु सूदनः ॥ चकार कोपं शंभुश्च भ्रुकुटी कुटिला ननौ,

अष्ट मातृकाणां अष्टदिक्षु पूजनं कुर्यात् ॥ ब्राह्मण्यै नमः । माहे-
श्वर्यै नमः । कौमार्यैनमः । वैष्णव्यै नमः । वाराह्यै नमः ।
इन्द्राण्यै नमः । चामुण्डायै नमः । महालक्ष्म्यै नमः । मध्ये चण्डि-
कायै नम- । देव्या अग्रभागे भैर वाय नमः । इति पूजयेत् ॥
तत्र मन्त्रः ॥ भैर वं परमं देवं सर्व काम प्रसाधनम् । पूजयाम्यु-
द्वेगो देव्याः सर्वाधिक फल प्रदम् ॥ ततः श्री परमेश्वर्यै जल
दुग्ध कुश दधि घरद तण्डुल यव सर्षपादि दश सहस्र वर्षा व
च्छिन्न दुर्गा लोक मही पतित्व काम पयो ह्याह्गो ऽर्घो भगवत्यै
दुर्गा देव्यै मया दत्तः ॥ दुर्गे ! दुर्गे ! रक्षिणि स्वाहा
दुर्गा देव्यै नमः । इत्यर्घं दत्वा चन्दनं दद्यात् ॥ अग्नि ष्टोम
यज्ञ फल फल प्राप्ति कामनया चन्दनेन भगवत्यै दुर्गा देव्यै
अनुलेपनं दत्तं दुर्गा देव्यै नमः ॥ विल्वपत्र माला मादाय ॥
चन्दनेन समाक्लिप्ते कुङ्कुमेन विलेपिते । विल्व पत्र कृतां मालां
गृहाणासुर वर्धिने ! ॥ दुर्गा देव्यै नमः । अथ सिंह पूजा ॥ ॐ
ह्रौं ह्रः ह्रः महा शार्दूल विताताय पिङ्गल लोचनाय नमः ॥

॥ ६ ॥ ततो ऽति कोप पूर्णस्य चक्रिणो वदना त्ततः ॥
निश्च क्राम मह त्तेजो ब्रह्मणः शंकर स्यच ॥ १० ॥
अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ॥ निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं
समगच्छत ॥ ११ ॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम् ॥
दद्द शुस्ते सुरा स्तत्र ज्वाला व्याप्त दिगन्तरम् ॥ १२ ॥ अतुलं
तत्र तत्तेजः सर्व देव शरीरजम् ॥ एकस्थं तद भून्नारी व्याप्त
लोक त्रयंत्विषा ॥ १३ ॥ यदभू च्छाम्भवं तेज स्तेना जायत
तन्मुखम् ॥ याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णु तेजसा ॥ १४ ॥
सौम्येन स्तनयो र्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ॥ वारुणेन च
जंघोरू नितम्ब स्तेजसा भुवः ॥ १५ ॥ ब्रह्मण स्तेजसा पादौ तद
गुल्यो ऽर्कतेजसा ॥ वसूनां च करां गुल्यः कौबेरेण च नासिका
॥ १६ ॥ तस्यास्तु दन्ताः संभूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥ नयनत्रितयं
जज्ञे तथा पावक तेजसा ॥ १७ ॥ भ्रुवौ च संध्ययो स्तेजः
श्रवणा वनिलस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां संभव स्तेजसां
शिवा ॥ १८ ॥ ततः समस्त देवानां तेजो राशिस मुद्भवाम् ॥
तां विलोक्य मुदं प्रापु रमरा महिषार्दिताः ॥ १९ ॥ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य
ददौ तस्यै पिनाक धृक् ॥ चक्रं च दत्त वान्कृष्णः समुत्पाद्य
स्व चक्रतः ॥ २० ॥ शंखं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुता-

अथ देव्याः षडङ्ग पूजा । ॐ कालीवज्रे श्वरी लोह दंष्ट्राय स्वाहा हृदयाय नमः । ॐ काली वज्रे श्वरी लोह दंष्ट्राय स्वाहा शिरसे नमः । ॐ काली वज्रेश्वरी लो० शिखायै वषट् ॥ ॐ काली वज्रेश्वरी लो० कवचाय हुम् ॥ ॐ स्वाहा काली वज्रेश्वरी लोह दंष्ट्राय स्वाहा ॥ नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ॐ काली वज्रे श्वरी लोह दंष्ट्राय स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ अथास्त्र पूजा-त्रिशूलायनमः । खड्गाय नमः । चक्रायनमः । तीक्ष्ण बाणायनमः । शक्तैनमः । इति दक्षिणे ॥ खड्गायनमः पूर्ण चापायनमः । अङ्कुशाय-नमः । घण्टायै नमः इतिवामे । अथ सिंहासन पूजा । वज्र नख दंष्ट्रायु धाय महासिंहाय हुं फट् नमः ॥ विजयो जयदो जेता विप्रभेत्ता भयङ्करः । दुःखहा धर्मदः शान्तः सर्वारिष्ट विनाशिकः ॥ इत्यष्टौ तव नामानि तस्मात्सिंहपराक्रमः । तेन सिंहासनो नित्यं नाम्ना देवेषुगीयते ॥ त्वयि स्थितः शिवः साक्षात्त्वयि शक्रः सुरेश्वरि ! ॥ त्वयि स्थितो हरो देवस्त्व दर्थं तप्यते तपः ॥ नमस्ते सर्वतो भद्रं भद्रतो नव भूपते ॥ त्रैलोक्य जय सर्वस्व सिंहासन ! नमोऽस्तुते ॥ अथ खड्ग पूजा ॥ असि विसर्जनम् ॥ खड्गः तीक्ष्णधारो दुरासदः ॥ श्री गर्भो विजयश्चैव धर्म राजस्तथैवच ॥ इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा ॥ नक्षत्रं कृत्तिकातेतु गुरुर्देवो

मानः ॥ मारुतोदत्त यांश्चापि बाण पूर्णे तथेषुधी ॥ २१ ॥ वज्र मिन्द्रः समुत्पाद्यकुलिशा दमराधिपः ॥ ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टा मैरावता द्गजात् ॥ २२ ॥ कालदण्डाद्यमोदण्डं पाशं चाम्बु पतिर्ददौ ॥ प्रजापतिरक्ष-माला दद्दौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥ समस्त रोम कूपेषु निजरश्मीन्दिवा-करः ॥ कालश्चदत्त वान्खड्गं तस्याश्चर्मंच निर्मलम् ॥ २४ ॥ क्षीरोदश्चा मलं हार मजरे च तथाम्बरे ॥ चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटका निच ॥ २५ ॥ अर्ध चन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान्सर्व बाहुषु ॥ नूपुरौ विमलौ तद्वद्ग्रैवेय कमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ अङ्गुलीयक रत्नानि समस्ता स्वङ्गुलीषुच ॥ विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चाति निर्मलम् ॥ २७ ॥ अस्त्राण्य नेक रूपाणि तथा भेद्यं च दंशनम् ॥ अम्लान पंकजां मालां शिरस्यु रसि चापराम् ॥ अददज्जलधिस्तस्यै पंकजं चाति शोभनम् ॥ हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ २८ ॥ ददाव शून्यं सुरया पान पात्रं धनाधिपः ॥ शेषश्च सर्व नागेशो महामणि विभूषितम् ॥ ३० ॥ नागहारं ददौ तस्यैधत्तेयः पृथिवी मिमाम् अन्यै रपि सुरै र्देवी भूषणै रायुधै स्तथा ॥ ३१ ॥ सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः ॥ तस्यानादेनघोरेण कृत्स्नमा पूरितं नभः ॥ ३२ ॥ अमायतातिमहतापति शब्दो महानभूत ॥ चुक्षुभु-

महेश्वरः ॥ रोहिणीशच शरीरं वेधारा देवो जनार्दनः ॥ पिता पिता महो देवस्त्वं मा पालयसर्वदा ॥ नीलजी भृत शङ्कारास्तीक्ष्ण द्रष्ट कृशोदरः ॥ विशुद्ध धर्मा सततं तीक्ष्णधारस्तथैवच ॥ इयं येन हता सौणी हतश्च महिषा सुरः तीक्ष्णधार य शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥ अथ छुरिका पूजा ॥ ॥ सर्वायुधानां प्रथमं निर्मितोसिपिनाकिना ॥ शूला पुर्यो द्विनि कृत्य कृत्वा मुष्टि मह शुभम् ॥ चण्डिकायै प्रदत्तासि सर्व दुष्ट विनाशिनी ॥ तथा विस्तारिता चासि देवानां प्रति पादिता ॥ सर्व सत्वाङ्ग भूतानि सर्व दुष्ट निवारिणी ॥ छुरस्के रक्षमां नित्यं शान्ति यच्छ नमोस्तुते ॥ अथ कट्टार पू० ॥ कट्टारक ! जगद्रक्ष ! रक्ष त्राजि गता निच ॥ समरेहं सदा रक्ष कट्टारक ! नमोस्तुते । अथधनु० ॥ सर्वायुध महाशास्त्र सर्व देवा रसूदन ॥ चाप ! मां समरेरक्ष सायकैः सुरसेवितः ॥ धृतं कृष्णेन रक्षार्थे संहाराय हरे रक ॥ त्रयीमूर्ति श्च त्वं देव ! धनुरस्त्रं नमाम्यहम् ॥ अथ चर्म० ॥ चर्म प्रदस्त्वं समरे सर्व सैन्यस्य रक्षकः ॥ रक्षमां रक्षणीयो हं त्वयाः सदा ! नमोस्तुते ॥ अथ

सकला लोकाः समुद्राश्च चकं पिरे ॥ ३३ ॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ॥ जयेति देवाश्च मुदाता मूचुः सिंह वाहिनीम् ३४ ॥ तुष्टुवु मुनय श्चैनां भक्ति नम्रात्ममूर्तयः ॥ दृष्ट्वा समस्तं स क्षुब्ध त्रैलोक्य मपरारयः ॥ ३५ ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्तैसमुत्तस्थुरुदा युधाः ॥ आः कि मेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥ अभ्यधावतत शब्द मशेषैरसुरैर्वृतः ॥ सददर्श ततो देवीं व्याप्त लोक त्रयात्विषा ॥ ३७ ॥ पादा क्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम् ॥ क्षोभित शेष पातालां धनुर्ज्यानिः स्वनेनताम् ॥ ३८ ॥ दिशो भुजसहस्रेणसमन्ता द्व्याप्य संस्थि ताम् ततःप्रववृतेयुद्धं तया देव्यासुरद्विषाम् । ३९॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तै रादी पितदिगन्तरम् ॥ महिषा सुर सेनानीश्चिक्षुराख्यो महा सुरः ॥ ४० ॥ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरग बलान्वितः ॥ रथानां मयुतै पड्भिरुद प्राख्यो महासुरः ॥ ४१ ॥ अयुध्य ता युतानां चसहस्रेण महाहनु पञ्चा शद्भिश्च नियुतै रसि लोमा महासुरः ॥ ४२ ॥ अयुतानां शतैः पड्भिर्वाष्कलोयुयुधेरणे ॥ गज वाजि सहस्रौघैरनेकैः परिवा रितः ॥ ४३ ॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ॥ विडाला ख्योऽयुतानांच पञ्चाशद्भि रथायुतैः ॥ ४४ ॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ॥ अन्ये च तत्रायुतशो रथ नाग हयैर्वृताः ॥ ४५ ॥ युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महा सुराः ॥ कोटि कोटि सहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ ४६ ॥ हयानां च वृतो युद्धे तत्रा भून्महिषा सुरः । तोमरै

वारण० ॥ खड्गायुधानां त्रातात्वंवारणः सर्ववारणाः॥वीराणां देहिधारीत्वं वारयं सिद्धि नायक ! ॥ अथ मर्द्दल० नर्त्तकी नर्त्तकश्चैव वल्लभ ! त्वं नृपस्य च । मृदु मर्द्दलमा रत्न गम्भीर ध्वनि मर्द्दल ॥ अथ दुन्दुभि० ॥ दुन्दुभैश्च सपत्नानां घोषो हृदय कम्पनः ॥ त्वत्पूजकानां सौम्यानां तथा विजय वर्द्धनः ॥ यथा जीमूत घोषेण हृष्यन्ति वर वारणाः ॥ तथास्तु तव शब्देन घोषोऽस्माकंमयावहः ॥ अथ बाण० ॥ कामदेवस्य देवानां सफलाश्चार्जुनस्य च ॥ रामस्य च यथा बाणास्तथास्माकं भवन्त्विह ॥ अथ द्रोण० । रक्त वृत्त स्थितं त्वं च पूर्ण मायुध सायकैः ॥ सङ्ग्रामे विजयं नित्यं द्रोण काय नमोस्तुते ॥ अथ कुन्त० ॥ पाश पातय शत्रु त्वं त्वनया लोक मायया ॥ गृहाण जीवितं तेषां मम सैन्यं च रक्षताम् ॥

अथ पताका० ॥ नागकिन्नर गन्धर्व यक्षभूत महोरगाः प्रमथाश्च— महादेवो भूतेशोमातृभिः सह ॥ शक्र सेनापति स्कन्दो वरुणश्चाश्रित- स्त्वयि ! ॥ प्रद हन्तु रिपून् सर्वान् विजयं चस गच्छतु ॥ यानि मुक्तालि- रिपुभि भूषणानि समन्ततः ॥ निहि तानि सदातानि त्वया दुष्प्रिदयतेजसा

भिन्दि पालैश्च शक्ति भिर्मुसलैस्तथा ॥ ४७ ॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशु पट्टिशैः ॥ केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथा परे ॥ देवीं खड्ग प्रहारैस्तु ते तां हन्तु प्रचक्रमुः ॥ सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ लीलयैवः प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्र वर्षिणी ॥ अनायस्ता नना देवीस्तूय माना सुरर्षिभिः ॥ ५० ॥ मुमोचा सुर देहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ॥ सोऽपि क्रुद्धोधुत सटो देव्या वाहन केसरी ॥ ५१ ॥

चचारा सुर सैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ॥निःश्वासान्मुमुचे यांश्चयुध्य मानारणेऽम्बिका ॥ त एवसद्यः संभूतागणाः शत सहस्रशः ॥ युयुधुस्ते परशुभि र्भिन्दि पालासि पट्टिशैः ॥ ५३ ॥ नाशयन्तोऽसुरगणान्देवी शक्त्यु पबृंहिता ॥ अवादयन्त पटहान्गणाः शंखांस्तथा परे ॥ ५४ ॥ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन्युद्ध महोत्सवे ॥ ततो देवी त्रिशूलेन गदयाशक्ति वृष्टिभिः ॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महा सुरान् ॥ पातयामास चैवान्यान्घण्टास्वन विमोहितान् । असुरान्भुवि पाशेन बध्वा चान्या न कर्षयत् ॥ केचिद्द्विधाकृता स्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे । ५७ ॥ विपो- थिता निपातेन गदया भुविशेरते ॥ वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेनभृशंहता ५८ केचिन्निपतिताभूमौभिन्नाःशूलेनवक्षसि ॥निरन्तराःशरौघेणकृताः केचिद्र- णाजिरे ॥ सेनानुकारिणःप्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः॥केषांचिद्बाहवश्छिन्ना- श्छिन्नग्रीवास्तथा परे ॥ ६० ॥ शिरांसि पेतुरन्येषामन्येमध्येविदारिताः ॥ विच्छिन्न जंघा स्त्वपरे पेतु रुर्व्यां महासुरा ॥ ६१ ॥ एक

काल नेमिवधे युद्धे तथा त्रिपुर घातने ॥ हिरण्यकश्यपोर्युद्ध यथा देवासुरे तथा ॥ शोभितासि सुरैं चन्या शोभसे संयुगे ततः ॥ नीलांरवेता मिमां दृष्ट्वा विनश्यन्तु ममारयः ॥ अथध्वजापूजा ॥ शक्र केतु महावीर सुवर्णस्त्वत्युपासितः ॥ त्वया प्रधान योगानां कुरु रक्षां रिपोर्भयात् ॥ अथ वीणा० शारदा वल्लभे ! त्वं हि अङ्गना शत भूपिते ॥ वीणे । त्वं रक्षमां नित्यं विदग्ध नृप वल्लभे ॥ अथ जिरह० शर्म दस्त्वं हि समरे धर्मं सैन्य संशोधने ॥ रक्षमां रक्षणीयोऽहं तवा नघ । नमोस्तुते ॥ अथ कुण्डल० ॥ प्राण हन्त्री रिपुस्त्वं चा मलयाऽऽलोकमालया ॥ गृहाण जीवितन्तेषां सैन्यं चव मम रक्षताम् ॥ अथ चामरम् ॥ शशाङ्क कर शङ्काशो हिमडिण्डि महासुर- प्रोत्सारयाशु दुरितं चामरा मर पूजित ॥ अथ छत्रम् ॥ यथाम्बुधं छादयति शिवायेमां वसुन्धराम् ॥ तथा छादय मा छत्र विजया रोग्यवर्द्धये ॥ अथ शङ्ख ॥ पुण्यदः शङ्खः ! पुण्यानां मङ्गलानां च मङ्गलम् ॥ विष्णुना त्वं धृतो नित्य मतः शान्ति

बाहुच्छिचरणाः केचिद्देव्याद्विधा कृताः ॥ छिन्नेऽपि चान्यैः शिरसि पतिता पुनरुत्थिताः कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीत परमा युधाः ॥ ननृतुश्चापरे तत्रयुद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३ ॥ कबन्धाश्छिन्न शिरसः खड्गशक्त्यृष्टि पाणयः ॥ तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥ पातितैरथ नागाश्वैर सुरैश्च वसुन्धरा अगम्या साऽ भवत्त त्रयत्रा भूत्समहारणः ६५॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र विसुस्रुवुः ॥ मध्ये चा सुर सैन्यस्य वारणा सुरवाजिनाम् ॥ ६६ । क्षणेन तन्महा सैन्यमसुराणां तथाम्बिका ॥ निन्येक्षयं यथा वह्निस्तृण दारु महाचयम् ॥ ६७ ॥ स च सिंहो महानाद मुत्सृजन्धुतकेसरः ॥ शरीरेभ्योऽमरारीणा मसूनिव विचिन्वति ॥ ६८ । देव्यागणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्ध तथासुरैः ॥ यथैषां तुष्टुवुर्देवाःपुष्पवृष्टि मुचो दिवि ॥ ६९ ॥ इतिमार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तेर देवी माहात्म्ये महिषासुर सैन्य वधो नाम द्वितीयोऽध्यायः २ ॥ उवाच ।१। श्लोक ॥ ६८ ॥ एवम् । ६९ ॥ एव मादितः ॥ १७३ ॥

अथध्यानम्—अथद्भानु सहस्र कान्ति मरुण क्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तप योधरां जपवटीं विद्याम भीतिवरम् ॥ हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दास्मिताम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ निहन्य मानंतत्सैन्य मवलोक्य महासुरः ॥ सेनानी श्चिक्षुरः कोपाद्ययौयोद्धु मथाम्बिकाम् ॥ सदेवीं शर वर्षेण ववर्ष समरे ऽसुरः ॥ यथामेरु गिरेःश्रृङ्ग तोय वर्षेणतोयदः ॥ २ ॥ तस्यच्छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान ॥ जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैववाजिनाम् ४॥

प्रयच्छमे ॥ इति शस्त्राख पूजा ॥ श्री परमेश्वर्यै नाना पुष्पमाल्य दीप माला धाना पक्वान्न कदली फलाम्रेक्षु नारङ्गबीज पूर मूलक कुष्माण्ड ताम्बूल पूगी फले त्यादिमिष्टमिष्ट द्रव्यं यथा शक्ति दत्वा ॥ रक्त पुष्पाञ्जलिमादाय स्तुतिं पठेत् ॥ ॐ दुर्गां शिवां शान्ति करीं ब्राह्मणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्व लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदा प्रियाम् ॥ मङ्गलां शोभनां शुद्धांनिष्फलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्वमातां प्रणमामि सदा उमाम् ॥ सर्व देवमयीं देवीं सर्व रोगभया पहाम् ॥ ब्रह्मेश विष्णु नमितां चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्य निलया दिव्य स्थान निवासिनीम् ॥ योगिनीं योग जननीं चण्डिकां प्रणमा म्यहम् ॥ ईशान मातरं देवी मीश्वरी मीश्वर प्रियाम् ॥ प्रणतास्मिसदादुर्गांसंसारार्णव तारि- णीम् ॥यइदं पठतेस्तोत्रं शृणुयां द्वापियो नरः॥ समुक्तःसर्वपापैस्तुमोदते दुर्गयासह ॥ इतिस्तुत्वा प्रणमेत् ॥ यत्रनस्याद्विलिदानंतत्रगोदानमीरितम अथाग्निस्थापन विधिनाअग्निस्थापनंकृत्वा होमं कुर्यात् अथ बलिदान विधिः ॥ प्रथम छाग सेचनं ॥ स्वयंभूर्वासुदेवश्च शङ्करश्चमहोदयः सदा- रश्चस पुत्राश्च सगणाश्चस शक्तयः ॥ प्रीतन्तु त्वां पशु श्रेष्ट मेते विश्वैक हेतवः ॥ छागाय नमः इति अर्घ चन्दन पुष्प धूप दीप नैवेद्यान्तैः पूजां विधाय खड्गाय नमः इति खड्गं संपूजयेत् ॥ अत्र प्रसङ्गत्वच्छागमहिषादि रुधि रेण तृप्तिमाह ॥ मेषरुधिरेण एकवर्ष

चिच्छेदचधनुःसद्यो ध्वजं चाति समुच्छ्रितम् ॥ विव्याध चैवगात्रे पुच्छिन्न धन्वा नमाशुगैः ॥ ५ ॥ सच्छिन्नधन्वा विरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ अभ्यधा वतवां देवीं खड्ग चर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ सिंह माहत्य खड्गेन तीक्ष्ण धारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सव्ये देवी मप्यति वेगवान् ॥ ७ ॥ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्यपफाल नृप नन्दन ॥ ततो जग्राह शूलं सकोपो दरुण लोचनः ॥ ८ ॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ॥ जाज्वल्य मानं तेजोभी रवि बिम्ब मिवाम्बरात् ॥ दृष्ट्वातदा पतच्छूलं देवीशूलममुञ्चत ॥ तच्छूलंशतधातेन नीतं सच महासुरः ॥१०॥ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमू पतौ ॥ आज गाम गजारूढश्चामर स्त्रिदशार्दनः ११ ॥ सोऽपि शक्तिं मुमो चाथ देव्यास्तामम्बिकाद्रुतम् ॥ हु काराभि हतां भूमौ पातया मासनिष्प्रभाम् ॥१२॥ भग्नां शक्ति निपतितां दृष्ट्वा क्रोध समन्वितः ॥ चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपिसाच्छिनत् १३ ततः सिंहः समुत्पत्यगज कुम्भान्तरेस्थितः ॥ बाहु युद्धेन युयुधे तेनुच्चैस्त्रि दशारिणा ॥ १४ ॥ युध्यमानौ ततस्तौतुतस्मान्नागान्महीं गतौ ॥ युयुधातेऽति संरब्धौ प्रहारै रति दारुणैः ॥ १५ ॥ ततो वेगात्खमुत्पत्य

तृप्तिः॥ छागरुधिरेणदशवर्षतृप्तिः॥ महिषरुधिरेणशतवर्षतृप्तिः॥ स्वदेहरुधिरेणसहस्रवर्षतृप्तिः ॥ अथछागोत्सर्गसंकल्पः ॥ ॐश्रीमद्दुर्गादर्शनाभिवन्दन स्पर्शन तर्पण जनन पूर्वकं सदारापत्यस्य ममाखिला' पच्छान्ति नानाविध कल्याणोत्पत्ति दीर्घायुष्य बल पुष्टिवृद्धि दुर्गाप्रीतिकाम.श्रीदुर्गादेव्यैअमुक छाग बलि वह्नि दैवतं नमः॥ पशुं गायत्रीं श्रावयेत् ॥ ॐ पशु पाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि तन्नो पशुः प्रचोदयात् ॥ अञ्जलिबध्वा पशुं प्रार्थयेत् । यज्ञार्थं पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशु घातनम् ॥ अतस्त्वां घात यिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ शिवा दत्तं रिमैः पिण्डैं रतस्त्वं शिवतां गतः ॥ अपस्यं च पशोर्हित्वं चाशिवं च शिवो भिहि ॥ पशुस्त्वं बाण रूपेण मम भाग्यादुपस्थितः ॥ चण्डिकाप्रीति दानेन मम चापाद्विनाशनम् । पशुरूप परित्यज्यगन्धर्वस्त्वं स्वरूपधृक गोरी लोकं समा साद्य मम कल्याण दो भव ॥ पशु पाशविमोचाय हेम कूटस्थिता यच । पशवे च नमः स्तुभ्य नमस्ते बलि रूपिणे ॥ छेदोसि बलि रूपस्त्व माज्ञया

निपत्य च मृगारिणा ॥ कर प्रहारेण शिरश्चामस्य पृथक्कृतम् ॥ १६ ॥ चद्मश्चरणे देव्या शिला वृक्षादिभिर्हतः ॥ दन्त मुष्टि तलैश्चैव कराश्च निपातितः ॥ १७ ॥ देवी क्रुद्धागदापातैश्चूर्णया मास चोद्धतम् ॥ वाष्कलंभिन्दि पालेन वाणैस्ताम्रं तथान्धकम् । उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव चमहा हनुम् ॥ त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥ १८ ॥ बिडालस्या सिना कायात्पातया मास वैशिरः ॥ दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरै र्निन्ये यमक्षयम् २० ॥ एवं संक्षीय माणेतु स्वसैन्ये महिषा सुरः ॥ माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामासवान्गणान् ॥२१॥ कांश्चित्तुण्ड प्रहारेण खुरक्षेपै स्तथा परान् ॥ लांगूल ताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ २२ ॥ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च ॥ निः श्वासपवने नान्या न्पातया मासभूतले ॥ २३ ॥ निपात्य प्रमथा नीक मभ्यधावतसोऽसुरः ॥ सिंह हन्तु महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ २४ ॥ सोऽपि कोपान्महा वीर्यः खुर क्षुण्णमहीतल ॥ शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननादच ॥२५॥ वेग भ्रमण विक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ॥ लांगूले नाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥२६॥ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डंययुर्घनाः ॥ श्वासानिलास्ताः शतशोनिपेतु र्नभसोः चलाः ॥ इति क्रोध समाध्मात मापतन्तं महा सुरम् ॥ दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाऽकरोत् ॥ साक्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तंबबन्ध महासुरम् ॥ तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥२८॥ ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ॥ छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥ ३० ॥ तत एवाशु पुरुषं देवी

पेत्या गुरोः ॥ छेदभेदोद्भवं दुःखं क्षमस्व पशुरूप-भृक् ॥ पशु योनि प्रशुनोसि पूजा होमादि कर्मणि ॥ तुष्टा भवति सादेवी सात्कैः पिशितै वनः ॥ इति स्तुत्वा ॥ ॐ काली काली वज्रेश्वरी लोह दण्डायै नमः ॥ पूर्वोक्तैरसि विसर्जनादिमन्त्रैः खड्गंप्रणम्य ॥ श्री परमेश्वरीध्यात्वैक प्रहारेणच्छिन्द्यात् ॥ कर्पूरमिश्रितं रुधिरं समर्पयेत् ॥ अथ पुनर्गौतमोक्त छागोत्सर्ग विधिः ॥ कुशाग्रण छागं प्रोक्षय । ॐ अग्निः पशु रासी त्तेना यजन्तस एतँल्लोकमजयस्मिन्नग्निः सत्ते लोको भविष्यति तन्तेस्यसि पिबैता अपः ॥ ॐ वायुः पशुरासी त्तेना यजन्त सएतँल्लोक मजयस्मिन्न ग्निः सत्ते लोको भविष्याति तन्वेष्यसि पिबैता अप. ॥ ॐ सूर्य पशु-रासी त्तेना यजन्तस एतँल्लोक मजयस्मिन्नग्निः सते लोको भविष्यति तन्वेष्यसि पिबैता अपः (ओंचण्डः पशुरासी दित्यादि ॥ ॐ गन्धर्वाः पशुरासी दित्यादिना ॥) छागं हस्तेनस्पृशेत् ॥ ॐ वाचं ते शुन्धामि ॥ ॐ शिरस्ते शुन्धामि ॥ चक्षुस्ते शुन्धामि मुखस्ते शुन्धामि ॥ ॐ कर्णौते शुन्धामि ॥ ॐ वक्षं ते शु० ॥ ॐ कण्ठते शु० ॥ ॐ मेढ्रं ते शु० ॥ ॐ सर्व गात्राणि ते शुन्धामीइति अक्षतान् पशु गात्रे निक्षिप्य ॥ ॐ वाक्

ते। आप्याचिच्छेदसायकैः॥तत्स्तच चर्मणा।सार्धं ततःसोऽभून्महागजः।।३१॥ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ॥ कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निर कृन्तत ॥ ३२ ॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ॥ तथैव क्षोभया मास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ३३ ॥ ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम् ॥ पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुण लोचना ॥ ३४ । ननर्द चासुरः सोऽपि बल वीर्य मदोद्धतः ॥ विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥ साचता न्प्रहिता स्तेन चूर्णं यन्ती शरोत्करैः उवाचतं मदोद्धूत मुख रागा कुला क्षरम् ॥ ३६ ॥ देव्युवाच ॥ ३७ ॥ गर्जगर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ॥ मयात्वयिहतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ ३८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३९ ॥ एवं मुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महा सुरम् । पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैन मताडयत् ॥ ४० ॥ ततः सोऽपि पदा क्रान्तस्तया निज मुखात्ततः ॥ अर्ध निष्क्रान्त एवासो देव्या वीर्येण संवृतः ॥ ४१ ॥

अर्ध निष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः ॥ तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ ततो हाहा कृतं सर्वं दैत्य सैन्यंननाश तत् ॥ प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवता गणाः ॥ ४३ ॥ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यै महर्षिभिः ॥ जगुर्गन्धर्व पतयो ननृतुश्चाप्सरो गणाः ॥ ४४ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये महिषा-

यताम् ॥ ॐ शिरस्ते आप्यायताम् ॥ ॐ शृङ्गे त आप्यायताम् ॥ ॐ चक्षुस्त आ० ॥ ॐ कर्णौत आ० ॐ वक्त्रं त आ० ॥ कण्ठंत आ० ॥ मेढ्रं त आ० ॥ ॐ सर्वा गात्राणित आप्यायताम् ॥ पशोरुपरि पुष्पाणि निक्षिप्य प्रार्थयेत् ॥ शिरः कण्ठे ललाटे च पादयोर्जङ्घयोस्तथा ॥ नेत्रयोः सर्वगात्रेषु सुरचन्तुपशु देवताः ॥ अनेन न्यासं प्रोक्ष्य पशुगायत्रीं श्रावयेत् ॥ ॐ पशु पाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि ॥ तन्नोब्रह्मः प्रचोदयात् ॥ पुष्पाक्षतैः पूजयेत् ॥ क्लींक्लीं फेंवारि सरस्वति जीयतां नमः फट् वौषट् ॥ इत्यादि क्रमेण सॉ पादयोः पृथिवी जीयताम् ॥ सॉं पायौ मित्रो जीयताम्। सॉं चक्षुषोस्तेजो जीयताम् सॉं उपस्थे जलं जीयताम् । सॉं कर्णयोर्नभो । जीयताम् । सॉं सर्वाङ्गे पु दिशो जीयताम् ॥ सॉं मनसि काली जीयतां फट् वौषट् ॥ इति वचस्थाने लीनं कृत्वा वचद्वयाङ्ग स्पृशेत् । ॐ चामुण्डायै नमः कपाले ॥ ॐ यमायनमः शृङ्गयोः ॥ ॐ शशिभास्कराभ्यां० नेत्रयोः ॥

सुर वधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ उवाच ॥ १ ॥ श्लोकाः ॥ ४१ ॥ एवम् ॥ ४३ ॥ एवमादितः ॥ २१७ ॥

अथ ध्यानम् ॥ कालाभ्राभां कटाक्षै ररि कुल भयदां मौलि बद्धेन्दु रेखां शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करै रुद्ध हन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंह स्कन्धाधि रूढां त्रिभुवन मखिलं तेजसा पूरयन्तीं ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश परि वृतां सेवितां सिद्धि कामैः ॥ ४ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ शक्रादयः सुर गणा निहतेऽति वीर्ये ॥ तस्मिन्दुरात्मनि सुरारि बले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणति नम्र शिरोधरांसा । वाग्भिः प्रहर्ष पुलकोद्गम चारु देहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या । निःशेष देव गण शक्ति समूह मूर्त्या । तामम्बिका मखिल देव महर्षि पूज्यां । भक्त्या नताः स्मविदधातु शुभानिसानः ॥ ३ ॥ यस्याः प्रभाव मतुलं भगवान नन्तो । ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तु मलं बलंच ॥ सा चण्डिकाऽखिल जगत्परि पाल नाय नाशाय चा शुभ भयस्यमतिं करोतु ॥ ४ ॥ या श्रीः स्वयं सुकृति नां भवनेष्व लक्ष्मीः । पापात्मना कृतधियां हृदयेषुबुद्धिः ॥ श्रद्धा सतां कुल जन प्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परि पालय देविविश्वम् ॥ ५ ॥ किं वर्णयाम तव रूप मचिन्त्यमेतत् । किं चाति वीर्य मसुर क्षय कारिभूरि ॥ किं चाहवेषु चरि तानि तवाति यानि, सर्वेषु देव्य सुर देवगणा दिकेषु ॥ ६ ॥ हेतुः समस्त जगतां त्रिगुणाऽपि दोषै । नज्ञायसे हरि हरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्रयाऽखिलमिदं जगदंशभूत । मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ यस्याः समस्त सुरता समुदीरणेन । तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ॥

गृहपतये०कर्णयोः ॥ॐचन्द्राय कपोलयोः ॥ॐऋषिरवदनाय०मुखे ॥ॐ रक्तदन्तिका यैनमः दन्ते॥ॐपृथिव्यै०नासिकयोॐमहादेवाय०कण्ठे॥ॐ पृथिव्यै० उदरे ॥ॐप्रजापतये०मेदसि ॥ॐकूर्माय०पृष्टे॥ॐसाङ्गोपाङ्गाय नमःपुच्छे॥ ततः पूर्वोक्त यज्ञार्थे पशवः सृष्टा इति मन्त्रेण पशुं प्रार्थयित्वा खड्गं पाद्या दिना संपूज्य ॥ ॐ मध्ये ब्रह्मणे नमः ॐ अग्रे महादेवाय नमः। ॐ पृष्टे यमा य नमः ॥ ॐ आधारेकालाय नमः ॥ पूर्वोक्तं असिविमर्जनं पठित्वा ॥ छागस्कन्धे घर्षयेत् यावद् गात्र शिरो वलिं न चाज यति ताव-द्वलीकाल्ये नम इति मन्त्रेण जलंप्रक्षिपेत्। अथ रुधिर सेक संकल्पः ॥ ॐ अद्येह दश वर्षा वच्छिन्न दुर्गा प्रीति कामनया इदं छाग रुधिरं भगवत्यैमयादत्तम् ॥अजमेषमहिषादिवलिदानेतु॥अष्टम्यां अष्टम्यामर्द्ध रात्रे मम-सर्वापच्छान्ति पूर्वक सर्व कल्याणोत्पत्तिदारुणगृहपीडोपशमनशत्रु मारण पूर्वक दिग्विजय राष्ट्र प्राप्ति कामनया इमं महिषं यम दैवतमजं वह्नि दैवतं मेषं वरुण दैवतं कुसयक्ष विनाशिन्यै महाघोरायै कोटि योगनी परि वृतायै भद्र काल्यै ह्रीं-दुर्गे। रक्षणि स्वाहा श्री दुर्गादेवी प्रतिये घातयिष्ये ॥ ततो नाम मन्त्रेण कूष्माण्डं सम्पूज्य ॥ अद्येह सबीज वलका ननदान जन्य

स्वाहाऽसि वै पितृगणस्य च तृप्ति हेतु। रुचार्य से त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ८ ॥ यामुक्ति हेतु रवि चिन्त्य महा व्रता त्व। मभ्यस्यसे मुनि-यतेन्द्रिय तत्त्व सारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषे। विद्याऽसिसा भगवती परमाहि देवि ॥ ६ ॥ शब्दात्मिकासु विमलर्ग्यजुषां निधान। मुद्गीथरम्य पदपाठ वतांचसाम्नाम् ॥देवीत्रयीभगवतीभवभावनायवार्ता च सर्व जगतां परमार्ति हन्त्री ॥ १० ॥ मेधाऽसि देवि विदिता खिल शास्त्र सारा दुर्गासि दुर्ग भव सागर नौर संगा ॥ श्रीः कैट भारि हृदयै कृताधि वासा। गौरी त्वमेव शशिमौलि कृत प्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ ईषत्सहा सममलं परि पूर्ण चन्द्र विम्बानु कारि कनकोत्तम कान्ति कान्तम् ॥ अत्यद्भुतं प्रहृत मात्तरुषा तथाऽपिवक्त्रंविलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ १२। दृष्ट्वातु देवि कुपितं भ्रु कुटी कराल मुद्यच्छशाङ्कसदृशाच्छवि यन्न सद्यः ॥ प्राणान्मुमोच महिषस्तद तीवचित्रं कैर्जीव्यतेहि कुपितान्त कदर्शनेन ॥ १३ ॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोप वती कुलानि ॥ विज्ञातमे तदधुनैव यदस्त मेतन्नीतं बलंसु विपुलं महिषासुरस्य ॥ १४ ॥ ते संमता जन पदेषुधनानि तेषां तेषां यशांसि न षसी दति धर्म वर्गः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्य दारा येषां सदाऽभ्युदय दाभवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्या दृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा।

फल प्राप्ति कामेः कुष्माण्ड फलं वनस्पति दैवतं भगवत्यै दुर्गा देव्यै मया दत्तम् इति संकल्प्य । कूष्माण्ड फलं देवी प्रीतये दद्यात् ॥ ततो महिष रुधिर दान संकल्पः । अद्यशत वर्षा वच्छिन्न दुर्गा प्रीति काम नया इदं महिष रुधिरं भगवत्यै दुर्गा देव्यै मया दत्तं नमः ॥ पशु कपालं देव्या पुरतो थाम भागे संस्थाप्य पुष्पाक्षतयुतं दीपं नरकपालो परि दद्यात् ततोवशिष्ट रक्तं धृत्वा कुशाविभिरष्टधा विभज्य तेन पूर्वे चा मुण्डां तर्पयामि ॥ दक्षिणे योगिनीं तर्पयामि ॥ पश्चिमे डाकिनीं तर्पयामि ॥ उत्तरे भैरवीं तर्पयामि ॥ आग्नेये विदारिकांतर्पयामि ॥ नैर्ऋत्ये पाप राक्षसीं तर्पयामि ॥ वायव्ये पूतनां तर्प यामि ॥ ईशाने कालिकां तर्प यामि ॥ इति सन्तर्प्य ॥ खड्गाय खलनाशाय भक्त कार्याय तत्परः ॥ पशु च्छेद स्त्वया कार्य्यो खड्ग रूपिन्न मोस्तुते ॥ इति खड्गं प्रणमेत् ॥ बहुशोज महिषा घातें अधशतसंख्या वर्षा व च्छिन्न दुर्गा प्रीति काम-

---

श्लोक त्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तोः स्वस्थैःस्मृता मति मतीव शुभांददासि ॥ दारिद्र्यदुःख भय हारिणि का त्वदन्या । सर्वो पकार करणाय सदार्द्रचित्ता ॥ १७ ॥ एभिर्हतैर्जगदु पैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नर काय चिराय पापम् ॥ संग्राम मृत्यु मधिगम्य दिव प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान्विनि हंसि देवि ॥ १८ ॥ दृष्टैवकिं न भवती प्रकरोति भस्म । सर्वा सुरा नरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपिहि शस्त्रपूता ॥ इत्थं मति भवति तेष्व हितेषु साध्वी ॥ १६ ॥ खड्ग प्रभानिकर विस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्र कान्ति निवहेन दृशोऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विल यमं शुभविन्दु खण्ड । योग्या ननं तव विलोक यतां वदे तत् ॥ २० ॥ दुर्वृत्त वृत्त शमनं तवदेवि शीलं । रूपं तथै तदविचिन्त्य मतुल्य मन्यैः ॥ वीर्यं च हन्तृ हृत देव परा क्रमाणां वैरि ष्वपि प्रकटि तैव दयात्वयेत्थम् ॥ २१ ॥ केनो पमाभवतु ते ऽस्य परा क्रमस्य । रूपं च शत्रुभय कार्यति हारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवन त्रयेऽपि ॥ २२ ॥ त्रैलोक्य मेतद् खिलं रिपु नाशनेन । त्रातं त्वया समर मूर्द्धनि ते ऽपिहत्वा । नीता दिवं रिपु गणाभयमप्य पास्त मस्मा कमुन्मद सुरारि भवं नमस्ते ॥ २३ ॥ शूलेन पाहिनो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टा स्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वने नच ॥ प्राच्यां रक्ष म-

नया एतान्छागान् वह्निदैवतान् एतान्मेषान् वरुण दैवतान् एतान् महिषान् यम दैवतान् श्री दुर्गा देव्यै प्रीतये अहं घातयिष्ये ॥ महिष त्वेन कुमाण्डं बीजपूरं नर स्ततः ॥ छागा भावे कर्कटी स्यान्मत्स्या भावे तु मूलकं ॥ मधु त्रयं घृत मधु शर्करा परि कीर्त्तितम् ॥ नारि केलोदकं पुण्यं रहस्यहि शिवोदकंम् ॥ इति विशेष वाक्येन नर महिष छाग मत्स्या भावे बीज पूरकं कुष्माण्ड कर्कटी फलम् मूलकं घृत मधु शर्करा नारि केलादिकं भगवत्यै दुर्गा देव्यै क्रमेणनिवेदयेत् ॥ कदली वृन्ताकं जम्बीरं नारङ्ग कोशातक च दद्यात् ॥ अथ स्तुतिः ॥ जयदेवि जगन्मात जय पापौघ हारिणी ॥ जय जन्म जरा व्याधि तृष्णा दावा नला कृते ? ॥ जय सर्व विपत्तिघ्नि जयत्रिदश वन्दिते ? ॥ जय नित्या नन्द रूपे जय कल्याण दायिनि ? ॥ जय शत्रु क्षय करि जय रोग प्रणाशिनी ? ॥

ती च्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणे नात्म शूलस्य उत्तरस्यां तथे श्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानिरूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते । यानि चात्यर्थ घोराणि तैरक्षा स्मां स्तथा भुवम् ॥ खड्ग शूल गदा दीनि यानि चास्त्राणि ते ऽम्बिके । कर पल्लव संगीनि तै रस्मान् रक्षसर्वतः ॥ २७ । ऋषिरु वाच । २८ ॥ एवं स्तुता सुरै र्दिव्यैः कुसुमै नन्दनोद्भवैः ॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानु लेपनैः ॥ २९ ॥ भक्त्या समस्तैस्त्रि दशै दिंव्यै धूपैः सुधूपिता ॥ प्राह प्रसाद सुमुखी समस्तान्प्रणतान्सुरान् ॥ ३० ॥ देव्यु वाच ॥ ३१ ॥ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्म त्तो ऽभिवाञ्छितम् ॥ ददा म्यह मति प्रीत्या स्तवै रेभिः सुपूजिता ॥ ३२ ॥ देवा ऊचु ॥ ३३ ॥ भग वत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ! यदयं निहतः शत्रु रस्माक महिषा सुरः ॥ ३४ ॥ यदि चापि वरो देयस्त्वया ऽस्माक महे श्वरि ॥ संस्मृतासस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ ३५ ॥ यश्च मर्त्यः स्तवै रेभिस्त्वां स्तोष्यत्य मला नने ॥ तस्य वित्तर्द्धि विभवै —र्धनदारादिसंपदाम् ॥ ३६ ॥ वृद्धये ऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्व दाम्बिके ॥ ३७ ॥ ऋषीरु वाच ॥ ३८ ॥ इति प्रसादिता देवै जंगतो ऽर्थे तथात्मनः ॥ तथे त्युक्त्वाभद्र काली बभूवा न्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूपसम्भूता सा यथा पुरा ॥ देवी देव शरीरेभ्या जगत्त्रय हितैषिणी ॥ ४० ॥ पुनश्चगौरी देहात्सा समुद्भूता यथाऽभवत् ॥ वधाय दुष्ट दैत्यानां तथा शुम्भ निशुम्भयोः ४१ । रक्षणाय चलोकानां देवानामुपकारिणी ॥ तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथा वत्कथया

जय· भीमे जया घोरे जय सङ्कट वारिणि ।. ॥ जयामृत रसा स्वाद
तुन्दिला नन्दविग्रहे ! ॥ त्रिनेत्रे त्रिकरालास्ये मुण्डमाला विभूषिते ! ॥
सर्वासुर वध करि खड्गखट्वांगधारिणि ! ॥ महाघोरे महारात्रे दैत्य
दर्प निषूदिनि ! ॥ इमं पशु मलिं ! देवि गृहीत्वा काल रात्रि के ! ॥
प्रीताभव महा चण्डि रक्षमां शरणागतम् ॥ आयुर्देहि धन
देहि भाग्यं कीर्तिं च देहिमे ॥ स्त्रियं देहि सुतान् देहि सर्वान्का·
मांश्चदेहि मे ॥ उग्र चण्डेग्र चण्डासि प्रचण्डकर वालिनी ॥ महा
चण्डोग्रदोर्दण्डे त्रिश्वेश्वरी नमोस्तुते ॥ रक्षमां शरणापन्नं त्वत्पादां त
मानसम् ॥ हर पापहर क्लेशंहर शोकं हरा सुखम् ॥ हर रोगं हर
क्षोभं हर दैन्यं हर प्रिये ॥ स्तुति मेतां पठित्वैव दण्डवत् प्रणमेद् सुधि ॥
गुह्य कालि जगद्धात्रि सर्वान्तर्यामिनीश्वरि ! ॥ गृहि त्वेतां पशु बलिं
यथोक्त फलदा भव ॥ कायेन मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥ चान्त

मिते ॥ ४२ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणेसावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये
शक्रादिस्तुति र्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ उवाच ॥ ५ ॥ अर्धं ॥ २ ॥
श्लोक ॥ ३५ ॥ एवम् ॥ एव मादितः । २५६ ॥

उत्तम चरितस्य ॥ रुद्र ऋषिः ॥ महा सरस्वती देवता ॥ अनुष्टु
प्छन्दः ॥ भीमाशक्तिः ॥ भ्रामरी बीजम् । सूर्यस्तत्वम् ॥ सामवेदः
स्वरूपम् । महा सरस्वती प्रीत्यर्थं उत्तम चरित जपे विनियोगः ॥ अथ
ध्यानम्—घण्टा शूल हलानि शंख मुशले चक्रं धनु सायक हस्ताब्जैर्दधतीं
घनान्त विलसच्छीतांशु तुल्य प्रभाम् ॥ गौरीदेह समुद्भवां त्रिजगतां
माधार भूतां महा पूर्वा मंत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यादिनीम् ॥५॥

ऋषि उवाच ॥१॥ पुराशुम्भनि शुम्भाभ्यामसुराभ्यांशचीपतेः त्रैलोक्यं·
यज्ञभागाश्चहृतामद बला श्रयात् ॥ तावेव सूर्यतां तद्वदधि कारं तथेन्दवम् ॥
कौवेर मथ याम्यं च चक्राते वरुणस्यच ॥ तावेवपव नार्धि च चक्रतु·
र्वह्नि कर्मच ॥ ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्ट राज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥ हृता·
धिकारा स्त्रि दशां स्ताभ्या सर्वे निराकृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवीं संस्मर
न्त्य पराजिताम् ॥ ५ ॥ तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथापत्सुस्मृताऽखिलाः ॥
भयवां नाश यिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ ६ ॥ इति कृत्वा मतिं देवा
हिम वन्त नगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णु मायां प्रतुष्टुवुः ॥ ७ ॥
देवा ऊचुः ॥ ८ ॥ नमो देव्यै महा देव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः
प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥ ९ ॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै
धात्र्यै नमो नमः ॥ ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ १० ॥
कल्याण्यै प्रणता वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्मो नमो नमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां

श्चरसि भूतानां दृष्टिस्त्वं परमेश्वरि ! ॥इतिस्तुत्वागीतवाद्यादिकं च कृत्वा पुनर्देव्यै स्तोत्रपाठादिनापुष्पाञ्जलिंदद्यात् ॥पद्भ्यांकराभ्यांजानुभ्यां मनसा वचसा दृशा ॥ उरसा शिरसा चेति प्रणामोऽष्टांग ईरितः ॥ इति प्रणम्य ॥ श्रीपरमेश्वरी प्रीतये नवार्णवमन्त्रं वाऽथवा जयन्तीमंगलेतिमन्त्रं वालक्षं सहस्रम् अष्टोत्तर शतं वायथा शक्तिहोमं कृत्वा इष्ट देवताभ्यां कुलदेवताभ्यांच संपूज्याऽऽहुतिं दत्वा बह्माण्याद्यष्ट दलेषु बलिदानं कुर्यात् यथा–ब्रह्माणी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही नार सिंहि ऐन्द्री शिव दूती मध्ये च चण्डिका ॥ बलिदान मन्त्रः ॥ ॐ भगवति ब्रह्माणि एषबहु घृत दीप मास समन्वित भावभक्त बलिंतुभ्यं नमः क्रमेण सर्वेभ्यो मातृभ्योबलिंदद्यात् ॥

अथ सामान्य बलिदानम् ॥ ॐ नमः कपाली ग्रह नक्षत्र सुरासुर गन्धर्व यक्षेश विद्याधर गरुड़ महोरग किन्नर गजेन्द्र देवता राक्षस भूत क्रव्याद पिशाच मनुष्य मातृगण योगिनी शाकिनी डाकिनी गणा इमां बलिं गृह्णन्त स्वाहा ॥ पूर्ववत् दद्यात् ॥ ॐ शिवाः कङ्काल

लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥११॥ दुर्गायै दुर्गपारायैसारायैसर्व कारिण्यै ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ १२ ॥ अति सौम्याति रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ॥नमोजगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमोनमः ॥१३॥ या देवी सर्व भूतेषुविष्णुमायेतिशब्दिता ॥नमस्तस्यै॥१४॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥१६॥यादेवीस भूतेषुचेतनेत्यभिधीयते॥नमस्तस्यै ॥१७॥ नमस्तस्यै १८ नमस्तस्यै नमोनमः १९ या देवी सर्वभूतेषुबुद्धिरूपेणसंस्थिता नमस्तस्यै ॥ २० ॥ नमस्तस्यै ॥ २१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ या देवीसर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ॥नमस्तस्यै॥२४॥नमस्तस्यैनमस्तस्यै ॥ नमो नमः ॥ २५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधा रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २६ ॥ नमस्तस्यै ॥ २७ । नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २८ ॥ या देवी सर्व भूतेषु छाया रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ २९ । नमस्तस्यै ॥ ३० ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ३१ ॥ या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३३ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ३४ ॥ या देवी सर्व भूतेषु तृष्णा रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३६ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ३७ ॥ या देवी सर्व भूतेषु क्षान्ति रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३९ ॥नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ४० ॥ या देवी सर्व भूतेषुजाति रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४२ ॥ नमस्तस्यै नमोनम. ॥ ४३ ॥ या देवी सर्व भूतेषु लज्जा रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ नमस्तस्यै । ४५ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ४६ ॥ या देवी सर्व भूतेषु शान्ति रूपेण

वेतालाः पूतना जम्भका दयः ॥ ते सर्वे तृप्ति मायान्तु बलिदानेन तर्पिताः ॥ इति बलिं दद्यात् ॥ क्षेत्रपालाय कृष्णरान्नं बाद्ध्य सुत बलिं दत्त्वा होमं समाप्य होमान्ते श्री परमेश्वर्या विशेषतः पूजां कुर्यात् ॥

इति महाष्टम्यां काल रात्रि विधिः ॥

अथ महा नवमी पूजा विधिः ॥ सातु पूर्व युता ग्राह्य तदथा हेमाद्रौ स्कान्दे ॥ पूर्व विद्धा प्रकर्तव्या नवमी बलि कर्मणि ॥ न कुर्यान्नवमीं तात दशमी संयुत्तां सदेत्यादि वचनात् ॥ पूर्व.विद्धा शुभेति प्रति भाति ॥ अष्टमी दशमी सन्धौ तृतीयं खलु कथ्यते ॥ तस्मिन्कृते बलिर्दाने पुत्र-नाशो भवेद्ध्रुवः इति ॥ नवम्या मपरा ह्रेतु बलि दानं प्रशस्यते ॥ इति धौम्य वचनात् ॥ शुद्धा नवमी महा नवमीं न विद्धा ॥ शुद्धाया अभावे अपराह्ने यत्र नवमी तत्रैवेति ॥ नवम्या मपरा ह्रेतु बलिदानं प्रशस्यते ॥ दशमीं वर्जये त्तत्र नात्र कार्या विचारणेति मदन रत्नोक्तत्वात् ब्रह्म वैवर्तेऽपि ॥ नन्दायां ज्वलते वह्निः पूर्णायां पशुघातनम् ॥ भद्रायां गोकुल क्रीडा तत्र राज्य विनश्यति ॥ यदातु नवमी त्रुटित्ता तदाष्टम्यां

सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४७ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४८ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ४९ ॥ या देवी सर्व भूतेषु श्रद्धा रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५० ॥ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५२ ॥ या देवी सर्व भूतेषु कान्ति रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५३ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ५५ ॥ या देवी सर्व भूतेषु लक्ष्मी रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५६ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५७ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ५८ ॥ या देवी सर्व भूतेषु वृत्ति रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥ या देवी सर्व भूतेषु स्मृति रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ६४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दया रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ६७ ॥ या देवी सर्व भूतेषु तुष्टि रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७० ॥ या देवी सर्व-भूतेषु मातृ रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७२ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७३ ॥ या देवी सर्व भूतेषु भ्रांति रूपेणसस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७५ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७६ ॥ इन्द्रियाणा मधिष्ठात्री भूतानां चा खिलेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमोनमः । चिति रूपेण या कृत्स्न मेत द्व्याप्य स्थिता जगत् । नमस्तस्यै । ७८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ नमस्तस्यै नमो-

नवमी पूजा कार्या ॥ तत्र पूजन विधिः ॥ अद्येत्यादि आश्विनस्य शुक्ल महा नवम्यां सकल पाप क्षय पूर्वक धर्म यशो दीर्घायुष्य ब्रह्म लोक गमन ब्रह्मेन्द्र रुद्र विष्णवादि प्राप्य परम पद प्राप्ति काम स्त्रि शूलिनी दुर्गा चण्डिका पूजन महं करिष्ये ॥ ॐ त्रिशूलिनी हा गच्छेह तिष्ठेत्या वाह्य त्रिशूलिन्यै नमः ॥ इति मन्त्रेण पाद्यादि नैवेद्यान्तैः सम्पूज्य तत्र दुर्गां शिवां शङ्करीं चण्डिकां च सम्पूज्य अष्टम्यामिवोक्त प्रकारेण बलिदानं कुमारी पूजनं शस्त्रास्त्र पूजनं कुर्यात् ॥ इतिमहा नवमी विधिः ॥

अथ दशम्यामपराजिता पूजा ॥ श्रवणर्क्षेण संयुक्ता दशमी शुक्ल पक्षगा इषे मासि स्थिता ज्ञेया विजया दशमी तिथिः सा नवमी विद्धा कर्तव्या नत्वेकादशी युक्ता ॥ मध्याह्ने विजय मुहूर्त इति केषां चिन्मतम् ॥ सन्ध्यासमये केषां चिन्मतम् ॥ विजया रयोऽष्टमस्मृत इति वशान्तराजः ॥ किंचित्सन्ध्या मतिक्रम्य किश्चिदुत्पन्न तारकः ॥ विजयो नाम योगोयं सर्व कर्मसु सिद्धदः ॥ इति गर्ग संहितायां मुक्तम् । श्रवण युक्ता शुद्धा

नमः ॥ ८० ॥ स्तुता सुरैः पूर्व मभीष्टसंश्रया त्तथासुरेंद्रेणदिनेषु सेविता ॥ करोतु सानः शुभ हेतुरीश्वरी । शुभानि भद्राण्य भिहन्तु चापदः ॥ ८१ ॥ या सांप्रतं चोद्धत दैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या चस्मृता तत्क्षणमेव हन्तिनः सर्वा पदोभक्ति विनम्र मूर्तिभिः ॥ ८२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥ एवं स्तवादि युक्तानां देवानां तत्र पार्वती । स्नातु मभ्या ययौतोये जाह्नव्या नृप नन्दन ॥ ८४ ॥ साऽब्रवीत्तान्सुरासुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का शरीर कोश श्चास्याः समुद्भूता ब्रवीच्छिवा ॥ ८५ ॥ स्तोत्र ममैतत्क्रियते शुम्भ दैत्य निरा कृतैः ॥ देवैःसमेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ८६॥ शरीर कोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निः सृताम्बिका । कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ८७ ॥ तस्यां विनिर्गतायांतु कृष्णा भूत्सापि पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचल कृताश्रया ॥ ततोम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनो हरम् ॥ ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुंभ निशुम्भयोः ॥ ८९ ॥ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनो हरा काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयंती हिमा चलम् ॥ नैवतादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केन चिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चा सुरेश्वर ॥ ९१ ॥ स्त्रीरत्नमति चार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ॥ सातुतिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवां-द्रष्टु मर्हति ॥ ९२ ॥ यानिरत्नानि मणयो गजाश्वा दीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्येतु समस्ता निसां प्रतं भांति ते गृहे ॥ ९३ ॥ ऐरावतः समानी तो गज रत्नं पुरान ॥ पारिजात तरुश्चायं तथैवोच्चैः श्रवा हय ॥ ९४॥

दशमी ॥ अथवा नवमी युता वा विजया दशमी अद्याश्विन शुक्ल दशम्याम पराजिताया विजय सिद्धयर्थं नवदुर्गा पूजाया न्यूनाति रिक्त परि पूरणार्थं मपराजिता देवी पूजन पूर्वक विसर्जन महं करिष्ये चन्दने नाष्ट दलं लिखित्वा तन्मध्ये मृण्मय पात्र त्रयं संस्थाप्यावाहयेत ॥ अथवा पूगीफल पुष्पाक्षतेष्वावाहयेत् । मध्ये ॐ अपराजितायै नमः ॥ दक्षिणे क्रियासिद्धयै जयायै नमः ॥ वामे ॐ उमायै विजयायै नमः ॥ नाम मन्त्रे प्रतिष्ठाप्या वाह्य । चतुर्भुजां पीत वर्णां सर्वा भरण भूषितां । इत्यादिना शङ्ख चर्म धरां वराभय हस्तां त्रिनेत्रां मीषत्प्रहसित वदनां सर्वाङ्ग सुन्दरी मपराजितां श्री भगवतीध्यात्वा ॐ अपराजितायै नमः ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ॐ विजयायै नमः इति नाम मन्त्रैः पाद्यार्घ्य चमन वस्त्रा भूषण चन्दनाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलादि दक्षिणान्तं दत्वा, पार्थयेत् । चारुध्या मुख पद्मेन विचित्र कनको ज्वला ॥ जया देवी शिवे भक्ता सर्वान्कामान्ददातु मे ॥ काञ्चनेन विचित्रेण केयूरेण च भूषिता ॥ जय प्रदा महा माया शिव-

---

विमानं संयुक्त मेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे ॥ रत्न भूत मिहा नीतं यदासीद्वेधसोद्भुतम् ॥ ६५ ॥ निधि रेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्माला मम्लान पंकजाम् । छत्रं ते वारुणं गेहे कांचन स्त्रावितिष्ठति ॥ तथायं स्यंदन वरो यः पुरासीत्प्रजापतेः ॥ ६७ ॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ॥ पाशः सलिल राजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ६८ ॥ निशुंभस्याब्धि जाताश्च समस्ता रत्न जातयः ॥ वह्नि रपि ददौ तुभ्य मग्नि शौचे च वाससी ॥ ६९ ॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्या हृतानिते ॥ स्त्री रत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ १०० ॥ ऋषि रुवाच ॥ १ ॥ निशम्येति वचः शुंभःसतदा चंड मुण्डयोः ॥ प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥ २ ॥ इति चेति वक्तव्यासागत्या वचनान्मम ॥ यथा चाभ्येति सं प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ ३ ॥ स तत्र गत्वा यत्राऽऽस्ते शैलो देशेऽति शोभने ॥ सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुर या गिरा ॥ ४ ॥ दूत उवाच ॥ ५ ॥ देवि दैत्येश्वरः शुंभ स्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ॥ दूतो ऽहं प्रेषि तस्तेन त्वत्सकाश मिहा गतः ॥ ६ ॥ अव्याहताज्ञः सर्वासुपः सदा देव योनिषु ॥ निर्जिता खिल दैत्यारिः स यदा हार्युष्मान् ॥ ७ ॥ मम त्रैलोक्य मखिलं मम देवा वशा नुगाः ॥ यज्ञ भागा नहं सर्वा नु पास्नामि पृथक् पृथक् ॥ ८ ॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्य शेषतः ॥ तथैव गजं रत्नं च हृतं देवेन्द्र वाहनम् ॥ ९ ॥ क्षीरोद

भावित चेतसा ॥ विजयात्र महाभागा ददातु विजयं मम ॥ हारेण शुचि चित्रेण भास्वत्कनक मेखला ॥ अपराजिता रुद्ररता करोतु विजयं मम ॥ इति मन्त्रैः संप्रार्थ्य हरिद्रा सर्षप दूर्वा युक्त पीत वस्त्र पोटलिकां पीत सूत्रेण ॐ कार मुच्चारन बद्धाबा एतन्तेति प्रविष्ठ्ययामि मन्त्रवेत् ॥ सदा पराजिते यस्मात् त्वंल रा मुत्तमा स्मृता ॥ सर्वकामार्थं सिद्धयर्थं तस्मात् त्वां पूजया म्यहम् ॥ मया पराजिते देवि ? मम सर्वं समृद्धये ॥ पूजितायां त्वयि श्रेयो ममास्तु दुरितं हत मिति मन्त्रेणापराजितां देवीं समीपे अभिमन्त्र्य ॥ अथ धारण मन्त्रः ॥ जयदे वरदे देवि ! दशम्याम पराजिते ? ॥ धारयामि भुजे दक्षे जय लाभाभि वृद्धये ॥ बलमा देहि बलाय मायशत्रौ पराजयम् ॥ तन्धारणात्भवे युर्मे धनधान्य समृद्धयः ॥ इति मन्त्रेण दक्षिण बाहौ धारयेत् ॥ ततो मूल देवीं सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भवति देहिमे ॥ पुत्रान्देहितथा मातः सर्वान्कामा श्चदेहिमे ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ? ॥ आयुरा

मथनोद्भूत मश्वरत्न ममामरैः ॥ उच्चैः श्रव समस्तं तत्माणिपत्य समर्पितम् ॥ १० ॥यानि चान्यानि देवेषु गंधर्वेषु रुगेषुच॥ रत्न भूतानि- भूतानि तानि मध्येन शोभने ॥ ११ ॥ स्त्री रत्न भूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् ॥ सात्व मस्मा नुपा गच्छ यतो रत्न भुजो वयम् ॥ १२ ॥ मांवाममानुजं वापिनि शुम्भ मुरु विक्रमम् ॥ भजत्वं चञ्चला पांगि रत्न भूता सिवैयतः ॥ १३ ॥ परमैश्वर्य मतुल प्राप्स्य सेमत्परि- ग्रहात् ॥ एतद् बुद्धया समा लोक्य मत्परि ग्रहतां व्रज ॥ १४ ॥ ऋषि- रुवाच ॥ १५ ॥ इत्युक्ता सा तदा देवी गंभीरां वः स्मिता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रायये द् धार्यते जगत् ॥ १६ ॥ देव्युवाच ॥ १७ ॥ सत्य मुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किं चित्त्वयो दितम् ॥ त्रैलोक्याधि पति शुम्भो निशुंभ श्चापि तादृशः ॥ किंत्वत्र यत्प्रति ज्ञात मिथ्या तत्क्रियते कथम् ॥ श्रूयता मल्प बुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ १९ ॥ योमां जयति संग्रामे योमे दर्पं व्यपो हति ॥ योमे प्रति बलो लोके समे भर्ता भविष्यति ॥ २० ॥ तदा गच्छतु शुम्भोत्र निशुंभो वा महासुरः ॥ मां जित्वा किंचिरे णात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥ २१ ॥ दूत उवाच ॥ २२॥ अव लिप्तासिमैवं त्वा देवि ब्रूहि मामतः ॥ त्रैलोक्ये कपुमां स्तिष्ठे दमे शुंभ निशुंभयो ॥ २३ ॥ अन्येषा मपि दैत्यानां सर्वे देवा नवै युधि विष्टन्ति संमुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वयेकिका ॥ २४ ॥ इन्द्राद्याः सकला देवा स्तस्थुर्येषां न सयुगे । शुम्भादीनां कथ तेषां स्त्री प्रयास्यसि संमुखम् ॥ १२५ ॥ सात्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुंभ निशुंभयोः ॥

रोग्य मैश्वर्यं देहि देवि ! नमोस्तुते ॥ ततः प्रणमेत् ॥ इयं पूजा मया
देवि ; यथा शक्त्या निवेदिता ॥ रक्षार्थं त्वत्प्रसादाय यत्रज स्वस्थान
मुत्तमम् ॥ इति प्रणाम्य ॐ कारेण विसर्जयेत् ॥ ॐ दुर्गे
देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ! ॥ सम्वत्सरे व्यतीते
तु पुनरा गमनं तव ॥ इति विसृज्य देवी मुत्थापये
इत्तिष्ट देवि चण्डेशि ? शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम
कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्था-
नं देवि· चण्डिके ? ॥ ब्रजस्रोतो जलं वृद्धये स्थीयतां च जले
त्वया ॥ ततो जपपाठ नव रात्र व्रत देवी पूजनादि· कृतस्य
सम्पूर्णं कर्मणो इति अ संकल्पं कुर्यात् ॥ पूर्वं स्थापित पत्रिकां
मृण्मय प्रतिमाञ्चोत्थाप्य शिविकादि शुभयानो परि सन्निवेश्य गीत
वादित्र निः स्वनैर्जल समीपे गत्वा पूर्वोक्त दुर्गे देवि जगन्मातः
रिति श्लोकेन इमां पूजां मया देवि ? इति श्लोकेन च जले

केशा कर्षणा निर्धूत गौरवामा गमिष्यसि ॥ २६ ॥ देव्युवाच ॥ १२७॥
एवमेत द्बली शुंभो निशुंभ श्चाति वीर्य वान् ॥ किं करोमि प्रति
ज्ञामे यदना लोचिता पुरा ॥ १२८ ॥ सत्वंगच्छ मयोक्त ते यदेतत्सर्वं
माहत· ॥ तदा चक्षा सुरेंद्राय सच युक्तं करोतु यत् ॥ १२९ ॥ इति श्री
मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये देव्यादूत संवादो
नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥॥ उवाच ॥ ९ ॥ अर्धश्लोकानि ॥ ६६ ॥ श्लोका
॥ ५४ ॥ एवं ॥ १२९ ॥ एव मादितः ॥ ३८८ ॥

अथ ध्यानम्

नागाधीश्वर विष्टरां फणि फणोत्तंसोक रत्ना वली भास्वद्देह लतादिवाकर
निभां नेत्र त्रयो द्भासिताम् ॥ माला कुम्भ कपालनी रजकरा चन्द्रार्ध
चूडां परां सर्वज्ञे श्वरभैरवाङ्क निलयां पद्मा वतीं चिन्तये ॥ ९ ॥
ऋषिरु वाच ॥ १ ॥ इत्या कर्ण्य वचो देव्याः सदूतो मर्षपूरितः॥
समा चष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥ २ ॥ तस्य दूतस्य
तद्वाक्य माकर्ण्या सुरराट ततः । स क्रोधः प्राह दैत्या ना मधिपं
धूम्रलोचनम् ॥ ३ ॥ हे धूम्र लोचनाशु त्वं स्व सैन्य परि
वारितः । तामा नय बलाद्द दुष्टां केशा कर्षण विह्वलाम् ॥ ४ ॥
तत्परित्राणदः कश्चिद्यदिवोत्तिष्ठते ऽपरः । स हन्तव्यो ऽमरो वापि
यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥ ऋषिरु वाच ॥ ६ ॥ तेना ज्ञप्त
स्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्र लोचनः । वृतः षष्ट्या सहस्राणा
मसुराणांद्रुतं ययौ ॥ ७ ॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिना चल

प्रवाहयेत् ॥ ततो अपराजिता पत्र त्रयं तंडुल त्रयं च ॐ सः हू
सहक वरा हॉ, सः हुमिविमंत्रेण प्राशयेत् ॥ ततः शमी वृक्षान्ते
गत्वा पूजा कार्या ॥ मंत्रः ॥ शमी शम यते पापं शमीलोहित
कन्टका ॥ धारिण्य र्जुन बाणानां रामस्य प्रिय वादिनी ॥ करिष्यमाण
यात्रायां यथा कालं सुखं मया ॥ तत्रनिर्विघ्न कर्त्री त्वं भव श्री
राम पूजिता ॥ इति मन्त्रेण शमीं पूजयित्वा ॥ पुष्पाणि साक्षता
मार्द्रां शमी मूल गतां मृदम् ॥ शमी शाखां च गृहित्वा शिवि-
कादि यानो परि सन्नि वेश्य गीतवादित्रनिर्घोषैः स्वगृहं प्रत्या
नयेत् ॥ ततः स्वजनैः सह वेदोक्त पुराण मन्त्र रभिषेकं कृत्वा
वस्त्र भूषण तिलका दिकं धारयेत् ॥ ततो जल समीपे ॥ गोष्टे
नद्यां वा खञ्जनं विलोक येत् ॥ प्रणाममन्त्रः । नीलग्रीव शुभ
ग्रीव सर्व काम फल प्रद ? ॥ पृथिव्या मव तीर्णोसि खञ्जरीट ?
नमोस्तु ते ॥ इति प्रणम्य ब्राह्मणेभ्यो ? ? दक्षिणां दत्वा आशी-
र्वादं गृहीत्वा यथा सुखं विहरेत् । इति शारत्कालिक दुर्गोत्सव

सस्थितम् । जगादोच्चैः मया हीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८ ॥ न
चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तार मुपैष्यति । ततो बला न्नयाम्येष केशाकर्षण
विह्वलाम् ॥ ९ ॥ देव्युवाच ॥ १० ॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बल वान् बल
संवृतः । बलान्नयसि मामेवं ततः किं तेकरो म्यहम् ॥ ११ ॥ ऋषिरु वाच
॥ १२ ॥इत्युक्तः सोभ्यधावत्ता मसुरो धुम्र लोचनः ॥ हुंकारे णैवतं भस्म
साच कारां बिका ततः ॥ १३ ॥ अथ क्रुद्धं महासैन्य मसुराणां
तथाम्बिका ॥ ववर्ष सायकै स्तीक्ष्णै स्तथा शक्ति पर श्वधैः
॥ १४ ॥ ततोधुत सटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ॥ पपात सुर
सेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ १५ ॥ कांश्चित्कर प्रहारेण
दैत्यां नास्येन चा परान् ॥ आक्रान्त्या चाधरेणान्या न्सजघानमहा-
सुरान् ॥ १६ ॥ केषां चित्पाटया मास नखैः कोष्टानि केसरी ॥
तथा तल प्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् ॥ १७ ॥ विच्छिन्न बाहु
शिरसः कृतास्तेन तथा परे ॥ पपौचरुधिरं कोष्ठा दन्येषाधुत
केसरः ॥ १८ ॥ क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ॥ तेन
के सरिणा देव्यावाहने नाति कोपिना ॥ १९ ॥ श्रुत्वा तम सुरे
देव्या निहतं धूम्र लोचनम् ॥ बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवी केसरि-
णाततः ॥ २० ॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ॥
आज्ञापयास च तौ चण्ड मुंण्डौ महा सुरौ ॥ २१ ॥ हे चण्ड

पूजा विधिः ॥ ॥ शुभम् भूयात् ॥ ले०सेवकविश्वनाथ शर्मा ।

स्त्री कर्तृ—दीप दान प्रयोगः ।

स्वेष्ट देवता समीपे निवेद्यः ॥ अथ लव वर्त्तिका दीप दान विधिः ॥ कर्त्ता शुचिरा चान्तः दीपं प्रज्वाल्य नमोस्त्व नन्तायेति दीपं सम्पूज्य ॥ अर्घ स्थापनं कुर्यात् ॥ अर्घ स्थापन माह ॥ स्ववामामेत्रिकोणषट्कोण वृत्त चतुरस्राणि कृत्वा शंख मुद्रयास्तमयेत् ॥ ततः पुष्पाक्षतैर्गन्धादिषु पडंगानि सम्पूज्यास्त्र क्षालित माधारं मंवह्नि मंडलाय दश कलात्मनेदे॰ नार्घ्य पात्रा सनाय नम इत्याधारं त्रिकोणे स्थापयेत् ॥ तत्राग्नेः कला भूत्रार्चि राद्याः पूजयेत् शस्त्र मन्त्रक्षालितं शंखम् ॥ अंसूर्य मंडलाय द्वादश

हे मुण्ड चलैर्बहुभिः परि वारि तौ ॥ तत्र गच्छत गत्वा च सासमा नीयतां लघु ॥ २२ ॥ केशेष्वा कृष्य बद्ध्वावा यदि वः स शयोयुधि ॥ तदा शेषा युधै स्सर्वै र सुरै विनि हन्य ताम् ॥ २३ ॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनि पातिते ॥ शीघ्र मा गम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वाता मथांबिकाम् ॥ २४ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्मये धूम्र- लोचन वधो नाम षष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥उवाच ॥४॥ अर्धं ॥ ८ ॥ श्लोकाः१ एवम् २४ ॥ एवमादितः ॥ ४१२ ॥

अथध्यानम्—ध्यायेयं रत्न पीठे शुक कल पठित शृण्वती श्याम लांगी न्यस्तै काघ्रि सरोजे श शि शकल धरां वल्लकीं वाद यन्तीम् ॥ कह्लारा बद्धमाला नियमित विलसच्चूलिकां रक्त वस्त्रां मातंगी शंख पात्रां मधुर मधु मदां चित्रकोद्भासि भालाम् ॥ ५ ॥ ऋषि रुवाच ॥ १ ॥ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्या श्चण्डमुण्ड पुरोगमाः ॥ चतुरंग बलोपेता ययुरभ्यु- द्यता युधाः ॥२॥ ददृ शुस्ते ततो देवी मीषद्धासां व्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्यो परिशैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ ३ ॥ तेदृष्ट्वा तांसमादातुमुद्यमंच क्रुरुद्यताः ॥ आकृष्ट चापा सिधास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥४॥ ततः कोप च कारोच्चै रंबिका तानरीन्प्रति ॥ कोपेन चास्या वदनमषीवर्णमभूत्तदा ५ भ्रुकुटी कुटिलात्तस्या ललाट फलकाद् द्रुतम् ॥ काली कराल वदना विनिष्क्रांता सिपाशिनी । ६ । विचित्र खट्वांग धरानर मालाविभूषणा ॥ द्वीपि चर्मपरीधाना शुष्क मांसातिभैरवा ॥ ७ ॥ अति विस्तार वदना जिह्वा ललन भीषणा ॥ निमग्नारक्त नयना नादा पूरित दिक् मुखा ॥८॥ ।सावेगेना।भिपतिता।घा॰त यन्ती ततो महासुरान् ॥ सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्ष

कलात्मनेदेवार्घ्यपात्राय नमः इति तमाधारे स्थापयेत् ॥ त्र्यत्तिवर्णा वां स्त्रयोविंशति वर्णाः अमुक पदस्थाने इष्ट देवता नामोच्चार्य रामार्घ्ये त्यादि रांख मत्र माह ॥ ॐ क्लीं महाजल चरायहुंफट् स्वाहा प.पजन्याय नम इति ॥ कामः क्लींमिति त्र्यत्तिवर्णा.तत्रार्क कलास्तपिन्य द्याः सम्पूज्य विलोमे मूल मातृके कं मं तपिन्यादिकान्जपन्जलैस्तं सम्पूर्य ॥ ॐ सोम मण्डलाय षोडशकलात्मनेदेवार्घ्या मृतायनमइत्यर्घ्यंसंपूज्य तत्र तन्मत्रंसृणि मुद्रया गंगे चेत्यादितीर्थ ॥ंत्रेणकुशमुद्रयाऽ कं मंडलात्तीर्थमा वाह्यस्वहृ-दोदेवमावाहयेत्॥अंकुशमुद्रा॥लक्षणंमुक्तम्॥ मत्स्यमुद्रोक्ता ॥ अंगुष्ठतर्जनी स्फोटच्छोटिकामुद्रा॥वाम मुष्टिंनिर्गतंतर्जनींकंकृत्वाशंखोपरिभ्रमणमवगुंटन पनमुद्रा॥प्राग्वणाहुं॥वीजेनगोमुद्रांधेनुमुद्राम् ।साडक्ता॥अमृतबीजत.वमिति बीजेनसंरोधिन्यामुद्राय॥तत्रार्घ्यमुद्रा.शंखाद्याः॥शस्त्रमुशलचक्र मुद्रा वक्ताः । महामुद्रांकुर्वन् ॥ परमीकृत्यकरयोरंगुलीसमध्यकरौवियोजयेदिति महामुद्रे स्का करां गुल्य माणि वक्रो कृत्य संमुखं योजि तानि गालिनी मुद्रा गरुडमुद्रा उक्ताः ॥ तेन प्रोक्षणी जलेन निजांग मुक्षेत् सिंचेत् ॥

तवद्बलम् ॥ ६ ॥ । ६ ॥ पार्ष्णिग्राहां कुशग्राहि योध घंटा समन्वितान् ॥ समादायैक हस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ १० ॥ तथैवयोधं तुरगै रथं सारथि ना सह ॥ निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयंत्य.ति भैरवम् ॥ ११ ॥ एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायाम् अथ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्य मुर सान्य मपोथयन् ॥ १२ ॥ तै मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः ॥ मुखे न जग्राह रुषा दशनैर्मथिता न्यपि ॥ १३ ॥ बलिनां तद्बलं सर्व मसुराणां दुरात्मनाम् ममर्दाभक्षयचान्या नन्यांश्चा ताडयत्तथा ॥ १४ ॥ असिना निहताः केचित्केचित्खट्वांग ताडिताः ॥ जग्मुर्विनाशमसुरादंताग्राभि हितास्तथा ॥ १५ ॥ क्षणेन तद्बलं सर्व मसुराणां निपातितम् ॥ दृष्ट्वा चंडो भिदुद्राव तां काली मतिभीषणाम् ॥ १६ ॥ शरवर्षैर्महाभीमैर्भी माक्षीतां महासुरः ॥ छादयामासचक्रैश्च मुंडःक्षिप्तैः सहस्र शः ॥ १७ ॥ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् ॥ बभुर्यथार्क बिंबानि सुबहूनि घनो दरम् ॥ १८ ॥ ततो जहासा तिरुषा भीमं भैरव नादिनी ॥ काली कराल वक्त्रांत र्दुर्दर्श दशनोज्ज्वला ॥ १९ ॥ उत्थाय च महा सिंह देवी चंड मधावत ॥ गृहीत्वा चास्यकेशेषु शिरस्ते नासिनाच्छिनत् ॥ २० ॥ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चंडं निपातितम् ॥ तमप्य पातयद् भूमौ सा खड्गाभिहतंरुषा ॥ हत शेषं ततः सैन्य दृष्ट्वा चंडं निपातितम् ॥ मुंडं च सु महावीर्यं दिशो भेजेभया तुरम् ॥ २२ ॥ शिरश्चंडस्य काली च गृहीत्वा मुण्ड मेव च ॥ प्राह प्रचण्डा-

अथ संकल्पः ॥ अद्येत्यादि मम समस्त जन्म बाल्य यौवन वार्धक्या वस्थो पार्जित कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक सकल पाप क्षय पूर्वकैहिकानेक विधि निरवधिक भोगा नु भवानन्तरे श्री परमेश्वर प्रीति द्वाराब्रह्मा शिव विष्णु सायुज्य पद प्राप्ति कामोऽखण्डर्चिकाप्रज्वालनतदङ्ग भूत दीप कलश गणेश पूजन पूर्वक ब्रह्मा विष्णु महेश्वरं पूजनं प्रधान देवता पूजनं चाह करिष्ये ॥ दीपं सम्पूज्य कलश गणेश पूजनं च कुर्यात् ॥ अन्य फलश मध्ये इदं विष्णु रिति मन्त्रेण हेम सिंहासन स्थितं श्रिया सहित विष्णुं पूजयेत् ॥ वह्निद्यो ब्रह्म यज्ञानमिति सावित्री सहितं ब्रह्माणं पूजयेत् ॥ वह्निचरे नमः शम्भवायेति मन्त्रेण उमा सहितं शिवं पूजयेत् ॥ प्रधान देवतां गङ्गा च षोडशो पचारैः सम्पूज्य ॥ ततः मनो जूति रिति मन्त्रेण प्राणं प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ सहस्र शीर्षेति

द्रुहासमि श्रमम्येत्य चण्डिकाम् ॥ २३ ॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्ड मुण्डौ महापशू ॥ युद्ध यज्ञे स्वयं शुंभं निशुम्भं चहनिष्यसि ॥ २४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २५ ॥ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्ड मुण्डौ महासुरौ ॥ उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिकावचः ॥ २६ ॥ यस्मा च्चंडं च मुंडं च गृहीत्वा त्वमुपागता ॥ चामुडेतिततो लोकेख्याता देवि भविष्यसि ॥ २७ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये चण्ड मुण्ड वधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ उवाच ॥ २ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥ एवम् २७ ॥ एवमादितः ॥ ४२६ ॥ अथ अष्टमः ॥

अथ ध्यानम्—अरुणां करुणा तरङ्गिताक्षीं धृत पाशा कुंश पुष्प चाप हस्ताम् ॥ अणिमा द्विभिरा वृतां मयूखैरह मित्ये वविभावये भवानीम् ॥ ८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते । बहुलेषु च सैन्येषु क्षयिते ष्वसुरे श्वरः ॥ २ ॥ ततः कोप पराधीन चेताः शुम्भः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्व सैन्यानां दैत्या नामादिदेशह ॥ ३ ॥ अद्य सर्व बलै र्दैत्याःषडशीतिरुदायुधाः कम्बूनां चतुराशीति निर्यान्तु स्वबलै र्वृताः ॥ ३ ॥ कोटि वीर्याणि पञ्चाशद सुराणां कुलानिवै । शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५ ॥ कालका दौहृदा मौर्याः कालकेयास्तथा सुराः युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ इत्याज्ञाप्या सुरपतिः शुम्भो भैरव शासनः ॥ निर्जगाम महासैन्य सहस्रै र्बहुभिर्वृतः ॥ ७ ॥ आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्य मति भीषणम् । ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीं गगनान्तरम् ॥ ८ ॥ ततः सिंहो महानाद मतीव कृतवान्नृप ॥ घण्टा स्वनेन तन्नादम म्बिका चोप बृंहयत् ॥ ९ ॥ धनुर्ज्या सिंह घण्टाना नादापूरित दिङ्मुखा ॥

श्रासनम् ॥ ॐ पुरुष एवेति उपवेशनम् ॥ ॐ एतावानस्येति पाद्यम् ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वेतिअर्घ्यम् ॥ॐ ततो विराडितिआचमनीयम् ॥ॐतस्माद्यज्ञादिति स्नानम्॥त माद्यज्ञात्समितिआच्छादनम्ॐतस्मादश्वेतियज्ञोपवीतम्॥ ॐतं यज्ञमितिगन्धम्ॐयत्पुरुषमितिपुष्पम् ॥बृहस्पते० इतिचन्दनम्॥ यत्रोसीतिय-वान् ॥ ॐब्राह्मणोस्येतिधूपम् ॥ॐचन्द्रमामनसोइतिदीपम्,ॐनाभ्याआसी दितिनैवेद्यम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण इति अञ्जलिकरणम् ॥ॐसप्तास्यासन्निति-प्रदक्षिणा ॥ इति सम्पूज्य ॥ गरुडं हंसं वृषभं च सम्पूज्य ॥ ततोऽङ्ग पूजा ॥ कालाय नमः शिरः पूजयामि ॥ ॐ विष्णुवे नमः ललाटं पूज-यामि ॥ ॐ वह्नये नमः नेत्रं पूजयामि ॥ ॐ रवेये नमः कर्णौ पूजयामि ॥ ॐ दीप्ताय नमः नासिकां पूजयामि ॥ ॐ निशा कराय नमः मुखं पूजयामि ॥ ॐ रुद्राय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ ॐ शेषाय नमः स्कन्ध पूजयामि ॥ ॐ जगद्व्यापिने

निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिता नना ॥ १० ॥ तं निनाद मुप श्रुत्य दैत्य सैन्यैश्चतु दिशम् ॥ देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवा-रिता ॥ ११ ॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुर द्विषाम ॥ भवायामर सिंहाना मति वीर्य बलान्विताः ॥ १२ ॥ ब्रह्मेश गुहविष्णु नां तथेन्द्रस्यच शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥ १३ ॥ यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषण वाहनम् ॥ तद्वदेवहितच्छक्ति रसुरान्योद्धुमाययौ ॥ १४ ॥

हंसयुक्त विमानाग्रे साक्षसूत्र कमण्डलुः । आयाता ब्रह्मणः शक्ति ब्रह्माणी साभिधीयते ॥ १५ ॥ माहेश्वरी वृषा रूढात्रिशूल वरधा-रिणी । महाहिवलयाप्राप्ता चन्द्ररेखा विभूषणा ॥ १६ ॥ कौमारी शक्ति हस्ता च मयूर वर वाहना । योद्धुमभ्याययौ दैत्या नाम्बिका गुहरूपिणी ॥ १७ ॥ तथैव वैष्णवी शक्ति र्गरुडो परि सास्थिता । शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग खड्ग हस्ताभ्युपा ययौ ॥ १८ ॥ यज्ञ वाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ॥ शक्तिः साप्या ययौ तत्र वाराही बिभ्रतीतनुम् ॥ १९ ॥ नार सिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः । प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्त नक्षत्र संहतिः ॥ २० ॥ वज्र हस्ता तथैवैन्द्री गज राजो परि स्थिता । प्राप्ता सहस्र नयना यथा शक्र स्तथैव सा ॥ २१ ॥ ततः परिवृतस्ता भिरी शानो देव शक्तिभिः ॥ हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम् ॥ २२ ॥ ततो देवी शरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ॥ चण्डिका शक्ति रत्युग्रा शिवा शतनिनादिनी ॥ २३ ॥ सा चाह धूम्र जटिल मीशान

नमः बाहू पूजयामि ॥ ॐ तेजो रूपाय नमः स्तनौ पूजयामि ॥ ॐ महेश्वराय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ॐ विश्वरूपाय नमः कटीं पूजयामि ॥ ॐ जगत्प्रभवे नमः गुदं पूजयामि ॥ ॐ स्वप्रकाशाय नमः ऊरू पूजयामि ॥ ॐ स्वय ज्योतिषे नमः जानुनी पूजयामि ॥ ॐ चतुर्व्यूहाय नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ ॐ जनाधिपाय नमः पादौ पूजयामि ॥ ॐ पर ब्रह्मणे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ ॐ धात्रे नमः पादौ पूजयामि ॥ विधात्रे नमः जङ्घे पूजयामि ॥ स्रष्टे नमः ऊरू पूजयामि ॥ ॐ प्रजापतये नमः मेढ्रं पूजयामि ॥ ॐ परमेष्ठिने नमः कटीं पूजयामि ॥ ॐ अग्नि रूपाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ॐ पद्मनाभाय नमः हृदयं पूजयामि ॥ वेधसे नमः बाहूपूजयामि ॥ ॐ दामोदराय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ ॐ हिरण्य गर्भाय नमः मुखंपूजयामि ॥ ब्रह्मणे नमः शिरं पूजयामि ॥ विष्णवे नमः सर्वाङ्गम् पूजयामि ॥ विशेषो पहारादि समर्पयेत् । अथ दीप

मपराजिता ॥ दूत त्वंगच्छ ,भगवान्पार्श्वं शुम्भ निशुम्भयोः ॥ २४ ॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवा वति गर्वितौ । ये चान्ये दानवा स्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ २५ ॥ त्रैलोक्य मिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ॥ यूय प्रयात पातालं यदि जीवितु मिच्छथ ॥ २६ ॥ बलावले पादथ चेद्भवन्तो युद्ध काङ्क्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितने वः ॥ २७ ॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम ॥ शिव दूतीति लोके ऽस्मिं स्ततः सा ख्यातिमागता ॥ २८ ॥ ते ऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यात महासुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्मुर्यतः कात्यायनी स्थिता ॥ २९ ॥ ततः प्रथममेवाग्रे शर शक्त्यृष्टि वृष्टिभिः ॥ ववर्षु रुद्धतामर्षा स्तान्देवी ममरारयः ॥ ३० ॥ सा च तान्प्रहितान् वाणा ञ्छूल शक्ति पर श्वधान् ॥ चिच्छेद लीलयाध्मात धनुर्मुक्तै र्महेषुभि- ॥ ३१ ॥ तस्याग्रतस्तथा काली शूल पात विदारि तान् । खट्वाङ्ग पोथितां श्चारीन् कुर्वती व्यचर त्तदा ॥ ३२ ॥ कमण्डलु जला क्षेप हत वीर्यान्हतौ जसः ॥ ब्रह्माणी चाकरो च्छत्रू न्येन येनस्म धावति ॥ ३३ ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ॥ दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यादि कोपना ॥ ३४ ॥ ऐन्द्री कुलिश पातेन शतशो दैत्य दानवाः ॥ पेतु र्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ ३५ ॥ तुण्ड प्रहार विध्वस्ता दंष्ट्राग्र क्षत वक्षसः ॥ वाराह मूर्त्या न्यपतं श्चक्रेण च विदारिताः ॥ ३६ ॥ नखै विदारितां श्चान्या-

दान सङ्कल्पः ॥ अद्येहेत्यादि पूर्व सङ्कल्प सिद्धि रस्तु अमुक गोत्रायाः अमुक नाम्नी देव्या ममसमस्त जन्म बाल्य यौवन वार्धक्या वस्थो पार्जित कायिक वाचिक मानसिक सां सर्गिक सकल पापक्षय पूर्वकैहि कानेक विष निर वधिक भोगा नुभावा नन्तरं श्री परमेश्वर प्रीतये तिल तैला क्तान् घृताक्तान् स पाद लक्ष संख्य काम् प्रज्वालितान् दीपान् अमुक देवता राधन पक्षे ब्रह्मणे विष्णवे, ईश्वराय, देव्यैगङ्गायै, तुलस्यै, सूर्याय, गणपतये समर्पया मीति शर्मयेत् ॥ अथ कांस्य पात्र रौप्य पात्रस्थ हेम वर्त्तिका दान मंत्रः ॥ रौप्य पात्र स्थित दीपं हेम वर्त्ति समन्वितम् ॥ कांस्य पात्रेण सहितं ददामि व्रत पूर्त्तये ॥ ततो भूयसी दक्षिणा दानम् ॥ इदं व्रतं मयादेव कृतं प्रित्यै तव प्रभो ! न्यूनं सम्पूर्ण तांयातु प्रसादा त्तव केशव ! ॥ गृहीत्वाऽपि व्रतदेव यद्य पूर्णं करोम्यहम् ॥

न्भ्यवन्तो महा सुरान् । नार सिंही चचाराजौ नादा पूर्ण दिगम्बरा ॥ ३७ ॥ चण्डा ट्टहा सैरसुराः शिव दूत्यभि दू- षिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतिताँश्चखादाथ साचरा ॥ ३८ ॥ इति मातृ गणं क्रुद्धं मर्दयन्त महा सुरान् ॥ दृष्ट्वाभ्यु पायैर्विविधैर्नेशुर्देवारि सैनिकाः ॥ ३९ ॥ पलायन परान् दृष्ट्वा दैत्यान्मातृ गणार्दितान् ॥ योद्धु मभ्या ययौ क्रुद्धो रक्त बीजो महासुरः ॥ ४० ॥ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौपतत्यस्य शरीरतः ॥ समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥ ४१ ॥ युयुधे सगदा पाणि रिन्द्र शक्त्या महासुरः ॥ ततश्चैन्द्रीस्व वज्रे ण रक्त बीजमताडयत् ४२ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रू पास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्त विन्दवः ॥ तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्य बल विक्रमाः ॥ ४४ ॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्त सम्भवाः ॥ समं मातृभिरत्यग्र शस्त्रपातातिभीषणम् ॥ ४५ ॥ पुनश्च वज्र पातेनक्षतमस्य शिरोयदा । ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥ ४६ ॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह । गदया ताडया मासैन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ ४७ ॥ वैष्णवी चक्र भिन्नस्य रुधिर स्राव सम्भवैः । सहस्र शो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणै र्महासुरैः ॥ ४८ ॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्त बीजमहासुरम् ॥ ४९ ॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवा हनत्पृथक ॥ मातृः कोपा समाविष्टोरक्त बीजो महासुरः ॥ ५० ॥ तस्या हतस्य बहुधा शक्ति शूलादिभि र्भुवि ॥ पपात यो वैरक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽ सुराः ॥ ५१ ॥ तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् ॥ व्याप्त

तन्मेभवतुसम्पूर्णं त्वत्प्रसादाज्जनार्दनः ॥यस्यस्मृत्येतिकायेनवाचेत्यादि नाप-
रमेश्वरंसमर्प्यततोविसर्जनंकुर्यात् ॥इतिलक्षवर्तिकादीपदानविधि-समाप्तः॥
पूर्वोक्तविधिर्श्रीमत्याचित्रानाम्न्यादेव्यासङ्कल्पोक्तदेवानां चार्पणं कृतम् ॥

अथ महाष्टमी व्रतप्रतिष्ठा ॥ सर्वतो भद्र मण्डलैक
देशे कलशं सम्पूज्य ॥ तदुपरि सुवर्णं प्रतिमां तत्पूजाविधिना
सम्पूज्य रात्रौ जागरणं प्रातर्देव्या उत्तर पूजां विधाय ॥ ॐअथ महाष्टमी
अम्बे अम्बिकेति १०८ होमं समाप्य प्रार्थयेत् ॥ महिषघ्नि ! महा माये
चामुण्डे मुण्ड मालिनि ! ॥ द्रव्यमारोग्य विजयं देहि देवि ! नमोस्तुते ।
भूतप्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरी ! देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्योर
क्षमा सदा ॥ सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥ उमे ब्रह्माणि
कौमारी विश्वरूपे ! प्र प्रसीद मे ॥ इतिसंप्रार्थ्य ॥ नव ब्राह्मणेभ्यो यथा
शक्ति रक्त च दक्षिणादि दानं कुर्यात् ॥

मासीत्ततो देवाभयमाजग्मुरुत्तमम् ।५२॥तान्विषण्णान्सुरान् दृष्ट्वाचण्-
डिका प्राहसत्वरा ॥उवाच कालींचामुण्डेविस्तरंवदनं कुरु ॥५३॥ मच्छस्त्र-
पात सम्भू तान् रक्तबिन्दून्महासुरान ॥ रक्तबिन्दोः प्रतीच्छत्वंवक्त्रेण नेत-
वेगिना ॥५४॥भक्षयन्ती चररणे दुत्पन्नान्महा सुरान ॥ एवमेष क्षयं दैत्य-
क्षीणरक्तो गमिष्यति ।५५॥ भक्ष्यमाणा स्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति
चापरे ॥ इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूले नाभि जघानतम् ॥५६॥मुखेन काली
जगृहेरक्तबीजस्यशोणितम् ॥ततोऽसावाजघानाथगदयातत्रचण्डिकाम्।५७॥
न चास्याः वेदनां चक्रे गदा पातोऽल्पि कामपि ॥ तस्या हतस्य
देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ५८ ॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा
सम्प्रतीच्छति । मुखे समुद्गतायेऽस्या रक्त पातान्महासुराः ॥ ५९ ॥ तांश्च-
खादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ देवी शूलेन वज्रेण बाणी
रसिभि र्ऋष्टिभिः ॥ ६० ॥ जघान रक्त बीजं तं चामुण्डा पीत शोणि-
तम् ॥ पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घ समाहतः ॥ ६१ ॥ नीरक्तश्च मही-
पाल रक्त बीजो महासुरः ॥ ततस्ते हर्ष मतुलमवापु स्त्रि दशा नृप ॥ ६२॥
तेषांमातृगणो जातो ननर्तासृक् मदोद्धतः ॥६३॥इति मार्कण्डेय पुराणे
सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये रक्तबीज वधो नामाष्टमोऽध्यायः ।
उवाच ॥ १ ॥ अर्ध ॥ १ ॥श्लोक ६१ ॥ म० ६३ ॥ एवमादितः ॥५०२॥

अथ ध्यानम्—बन्धूक काञ्चन निभांरुचिराक्ष मालांपाशाङ्कुशौ च
वरदां निज बाहु दण्डैः । बिभ्राण मिन्दुशकल भरणां त्रिनेत्रामम्बिके
शर्मनिशं वपुरा श्रयामि ॥ १ ॥ राजोवाच ॥ १ ॥ विचित्र मिदमाख्यात
भगवन्भवतामम ॥ देव्याश्चरित माहात्म्यं रक्तबीज वधाश्रितम् ॥ २ ॥

अथ कुमारी पूजनम्

सुतिष्ठ भूमौ स्थापिता सनेषु प्राङ्मुखोः कुमारीः संस्थाप्य संकल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि मम कृतस्या शुक्लाष्टमी व्रतस्यो द्यापन कर्मणः प्रतिष्ठा साङ्गता सिद्धये देवी प्रीत्यर्थं एतावत्संख्याक कुमारीणां यथा साऽद्त सामग्रिणां पूजन पूर्वकं भोजनं चाहं करिष्ये ॥ तासां पाद प्रक्षालनम् ॥ जगत्पूज्ये ! जगद्वन्द्ये सर्वशत्रुविनाशिनि ! ॥ पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मात नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रेण पाद्यादि नैवेद्यान्तं समर्च्य विभवानुसारेण सौभाग्य द्रव्य वस्त्र भूषणा दीनि दद्यात् ॥ खण्ड मोदक घृत दुग्ध दधि मधुनि यथा सुखं शनैः शनैः भोजयेत् ॥ तासां दत्ता च मनीया नां करेण चत पुष्पादिकं दत्वाप्रतिगृह्यविसर्जयेत्

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्त बीजे निपातिते ॥ चकार शुंभो यत्कर्म निशुंभ श्चाति कोपनः ॥ ३ ॥ ऋषिरु वाच ॥ ४ ॥ चकार कोपमतुलं रक्त बीजे निपातिते ॥ शुंभा शुरो निशुंभश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ५ ॥ हन्य मानं महा सैन्यं विलोक्या मर्षमुद्वहन् ॥ अभ्यधा वन्नि शुंभोथ मुख्यया सुरसेनया ॥ ६ ॥ तस्याग्रत स्तथापृष्टे पार्श्वयोश्च महासुराः संदष्टोष्ट पुटाः क्रुद्धाहंतुं देवी मुपा ययुः ॥ ७ ॥ आज गामममहावीर्यः शुंभोपि स्वबले र्वृतः ॥ निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धंतु मातृभिः ॥ ८ ॥ ततो युद्ध मती वासी देव्याः शुंभ निशुंभयोः ॥ शर वर्षमती वोग्रं मेघयो रिव वर्षतो ॥ ९ ॥ चिच्छेदा स्ताञ्छरां स्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ॥ ताडया मास चांगेषु शस्त्रौघे रसुरेश्वरौ ॥ १० ॥ निशुंभो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ॥ अताडय न्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहन मुत्तमम् ॥ ११ ॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निशुंभस्या शचि च्छेद चर्म चा प्यष्ट चन्द्रकम् ॥ १२ ॥ छिन्ने चर्मणि खड्गेच शक्ति चिक्षेपमोसुरः ॥ तामप्यस्यद्विधा चक्रे चक्रेणाभि मुखा गताम् ॥ कोपाध्मातो निशुम्भोथ शूलं जग्राह दानवः आयांतं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्य चूर्णयत् ॥ १४ ॥ आविद्धयाथ गदां सोपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ॥ सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्नाभस्म त्वमागता ॥ १५ ॥ ततः परशु हस्तं त मायान्तं दैत्य पुङ्गवम् ॥ आहत्य देवी बाणौघै रपात यत भूतले ॥ १६ ॥ तस्मिन्नि पतिते भूमौ निशुम्भे भीम विक्रमे। भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमंबिकाम् ॥ १७ ॥ सरथस्थ स्तथा त्युच्चैर्गृहीत परमायुधैः ॥

अथ श्री विष्णु पूजन प्रयोग

आचाम्य प्राणा नायाम्य भूतादि शुद्धिं संविधायश् शान्ति भंवतु। मङ्गलोच्चारणम्—ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवा ऽः। स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः ऽ स्वस्तिन स्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिऽ स्वस्तिनो वृहस्पति र्दधातु ॥ १ ॥ भद्रङ्कर्णेभिऽ शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमा क्षभिर्य्यजत्राः ऽः स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशे महि देव हितं यदायुः ॥ २ ॥ तम्पत्नीभि रनुगच्छेम देवाःऽपुत्रै र्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैःऽ। नाकङ्गृभ्णानाःऽ सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधि

भुजै रष्टाभि रतुलै र्व्याप्यां शेषं बभौ नभः ॥ १८ ॥ ततायान्तं समालोक्य देवी शङ्ख मवा दयत् ॥ ज्या शब्दं चापि धनुषश्चकाराःतीवदुःसहम् १६ ॥ पूरयामास ककुभोनिज घण्टास्वने नच ॥ समस्त दैत्य सैन्यानां तेजो वध विधायिना ॥ २० ॥ ततः सिंहो महा नादैस्त्याजितेभ महामदैः ॥ पूरयामास गगनं गां तथेव दिशोदश ॥ २१ ॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ॥ कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्तेतिरोहिताः ॥ २२ ॥ अट्टाट्टहा सम शिवमशिव दूती च कारह ॥ तैः शद्वैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परंययौ ॥ २३ ॥ दुरात्मवितिष्ठतिष्ठेतिव्याजहाराम्बिका यदा ॥ तदा जयेत्यभिहितं देवैरा काशसंस्थितैः ॥ २४ ॥ शुम्भेनागत्यया शक्ति मुक्ताज्वालातिभीषणा ॥ आयांती वह्निकूटा भासानिरस्ता महोल्कया ॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोक त्रयान्तरम् ॥ निर्घातनिः स्वनो घोरो जितवा नवनी पते ॥ २६ ॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेदस्वशरै रुग्रैः शत शोथ सहस्रशः ॥ २७ ॥ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूले नाभिजघानतम् ॥ सतदा निहतो भूमौ मूर्छितो निपपातह ॥ २८ ॥ ततो निशुंभः संप्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ॥ आजघान शरैर्देवीं काली के शरिणं तथा ॥ २६ ॥ पुनश्च कृत्वाबा हूना मयुतं दनुजेश्वरः ॥ चक्रायुधेन दितिजश्छादया मास चंडिकाम् ॥ ३० ॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गाति नाशिनी ॥ चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्चतान् ॥ ततो निशुंभोवेगेन गदा मादाय चंडिकाम् ॥ अभ्यधावतवै हंतुं दैत्य सेना समा वृतः ॥ ३२ ॥ तस्या पतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ॥ खड्गेन शित धारेण सच शूलं समाददे ॥ ३३ ॥ शूलं हस्तंसमायांतं निशुंभ ममरार्दनम् हृदि विव्याधशूलेन वेगाविद्धेनचण्डिका ॥ ३४ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निः सृतोपरः ॥ महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषोवदन ॥ ३५ ॥ तस्य निष्क्रामतो देवीप्रहस्यस्वन

रोचनेदिवऽ ॥ ३ ॥ नमस्काराः—श्री मन्महा गणाधि पतये नमः। इष्ट देवता भ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तु देवताभ्यो नमः । वाणी हिरण्य गर्भाभ्यां नमः । श्री उमामहेश्वराभ्यां-नमः । श्री लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः । शची पुरन्दराभ्यां नमः । मातृ पितृ चरणकमलेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । निर्विघ्न—मस्तु ॥ सुमुख श्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः। लम्बोदरश्चविकटो विघ्न नाशो गणाधिपः ॥ धूम्र केतुर्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो गजानन० ॥ इत्यादिभि र्मन्त्रैर्गणेशं सम्पूज्य तत्र—सङ्कल्पः—ॐ विष्णु ३—

वत्ततः ॥ शिरश्चिच्छेदखड्गेन ततो सात पतद्भुवि ॥ ३६ ॥ ततःसिंह श्चखादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ॥ असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथा परान् ॥ ३७ ॥ कौमारी शक्ति निर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥ ब्रह्माणी मंत्र पूतेनतोयेनान्येनिराकृताः ॥३८॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथा परे ॥ वाराही तुंड घातेन केचिच्चूर्णी कृता भुवि ॥ ३६ ॥ खंडखंड च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वज्रेण चैन्द्री हस्ताग्र विमुक्तेन तथा परे ॥ ४० ॥ केचिद्विने शुर सुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ॥ भक्षिताश्चापरे काली शिव दूतीमृगाधिपैः ॥ ४१ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये निशुम्भ वधो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ६ ॥ उवाच ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ३८ ॥ पदं ॥ २१ ॥ एवमादितः ॥ ५४३ ॥

अथध्यानम्—उत्तप्त हेम रुचिरां रवि चन्द्र वह्नि नेत्रां धनुश्शरयुता कुश पाश शूलम् ॥ रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिव शक्ति रूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दु लेखाम् ॥ १० ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ निशुंभ निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राण संमितम् ॥ हन्यमानं बलं चैव शुंभः क्रुद्धोऽब्रवी द्वचः ॥ २ ॥ बला वलेपाद्दुष्टे त्वं मादुर्गे गर्वमा वह ॥ अन्यासां बल मा श्रित्य युद्ध सेयाति मानिनी ॥ ३ ॥

देव्युवाच ॥ ४ ॥ एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया काममापरा ॥ पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ ऋषिरुवाच ॥ ५ ॥ ततः समस्ता स्तादेव्यो ब्रह्माणि प्रमुखालयम् ॥ ६ ॥ तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकै वासीत्तदांबिका ॥ ७ ॥ देव्युवाच ॥ ८ ॥ अहं विभूत्या बहुभि रिह रूपै र्यदास्थिता ॥ तत्सं हृतं मयै कैवतिष्ठा म्याजौ स्थिरो भव ॥ ६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १० ॥ ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुंभस्य चोभयोः ॥ पश्यतां सर्व देवानामसुराणां चदारुणम् ॥ ११ ॥ शर वर्षैः

श्री मद्भगवतो महा पुरुषस्य विष्णु राज्ञया प्रवर्त्त - मानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टा विंशति तमे युगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारतखण्डे बद्रिका-श्रमे भारत वर्षे आर्य्या वर्ता न्तर्गतहिमपर्वतैक देशे केदार खण्डान्तर्गत पुण्य क्षेत्रे अलक नन्दामन्दाकिन्यो मध्ये बौद्धा वतारे अस्मिन्व-र्तमाने अमुक नाम संम्वत्सरे अमुका ऽयने अमुकर्तौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशि स्थिते श्री सूर्य्ये अमुक राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथं राशि स्थानस्थि-तेषु सत्सु एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम ऽत्मनः

शिवैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः तयोर्युद्ध मभूद्भूयः सर्व लोक भयं करम् ॥ १२ ॥ दिव्यान्यस्त्राणीस शरो मुमुचे यान्यथाम्बिका ॥ बभंजतानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघात कर्तृभि ॥ १३ ॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ॥ व भंजलीलयै वोग्र हुंकारोच्चारणा दिभिः ॥ १४ ॥ ततश्शर शतैर्देवी माच्छादयत सो सुरः ॥ सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १५ ॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्ति मथा ददे ॥ चिच्छेद । देवी चक्रेण ताम प्यस्य करेस्थिताम् ॥ १६ । ततः खङ्ग मुपादाय शत चन्द्रं च भानुमत् ॥अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्याना-मधिपेश्वरः१७ ॥तस्यापततएवाशुखङ्गंचिच्छेद चण्डिका ॥ धनुर्मुक्तैः शितै-र्बाणैश्चर्मचार्ककरामलम् ॥ १८ ॥ हताश्व सतदा दैत्य श्छिन्नधन्वाविसा रथिः ॥ जग्राह मुद्गरं घोरमंबिका निधनोद्यतः ॥ १९ ॥ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ॥ तथापिसोऽभ्यधा वत्तां मुष्टि मुद्यम्य वेग वान् ॥ २० ॥ समुष्टिं पातयामास हृदयेदैत्य पुङ्गवः ॥ देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनो रस्य ताडयत् ॥ २१ ॥ तल प्रहाराभिहतो निप पातमही तले ॥ स दैत्य राजः सहसा पुन रेव तथोत्थितः ॥ २२ ॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगन मास्थितः ॥ तत्रापि सानिराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ २३ ॥ नियुद्धंखे तदा दैत्यश्च-ण्डिकाच परस्परम् ॥ चक्रतुः प्रथम सिद्ध मुनिविस्मय कारकम् ॥ ततोनियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ॥ २४ ॥ उत्पात्य भ्रामया मास चिक्षेप धरणी तले ॥ २५ ॥ सक्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टि मुद्यम्य वेगितः ॥ अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिका निधने च्छया ॥ २६ ॥ तमा यांतं ततो देवी सर्व दैत्य जने श्वरम् । जगत्यां पातया मास भित्वा शूलेन वक्षसि ॥ २७ ॥ सगतां सुः पपा

श्रुति स्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं(मम ऐश्वर्याभि वृद्धयर्थम् ।अप्राप्तलक्ष्मी-प्राप्त्यर्थम् ।सकलमनईप्सितकामनासंसिद्धयर्थम् । लोकेवासभायांराजद्वारेवा सर्व त्रयशोविजयलाभादिप्राप्त्यर्थंमृइहजन्मान्तरेवासकलदुरितोपशमनार्थं तथा ममसभार्यस्य सुपुत्रस्य सुबान्धवस्यअखिलकुटुम्ब सहितस्य स पशोः समस्त भय व्याधि जरापीड़ामृत्यु परि हार द्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभि वृद्धयर्थम् । तथा मम जन्मराशेर खिल कुटुम्बस्य वाजन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टमद्वादशस्थान स्थित क्रूर ग्रहास्तै सूचितं सूचयिष्य माणं च यत्सर्वारिष्टुंतद्विनाशद्वारा एकादश स्थान स्थिर वच्छुभ फल

तोर्व्यां देवी शत्रुम विनिहत ॥ चाल यन्स कलां पृथ्वीं साप्ति द्वीपांसपर्व ताम्॥२८॥ ततःप्रशान्तमखिलंहतेतस्मिन्दुरात्मनि ॥जगत्स्वास्थ्य-तीवापनिर्मलं चाभवन्नभः उत्पातमेघास्सोल्कायेे प्रागासन्ते शमं ययुः॥ सरितो मार्ग वा हिन्यस्तथा सस्तत्र पातिते ॥ ३० ॥ ततो देवा गणाः सर्वे हर्ष निर्भरमानसाः ॥ बभू वुर्निहते तस्मिन्गन्धर्वा ललितं जगुः ॥ ३१ ॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतु श्चाप्सरोगणाः ॥ ववुः पुण्यास्तथा स्वस्त्वासुप्रभोभूद्दिवा करः ॥ जज्वलुरग्नयश्शांताःशान्ता दिग्जनिः॥३२॥इतिमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरेदेवीमाहात्म्येशुंभ वधो नामाद-शमोऽध्यायः॥१०॥उवाच॥४॥अर्ध॥१॥श्लो०॥२७॥ एवमादितः ॥ ५७६ ॥

अथध्यानम्—बालर विद्युति मिन्दु किरीटां तुङ्ग कुचां नयन त्रय युक्ताम् ॥ स्मेरमुखी वरदां कुश पाशा भीति करीं प्रभजे भुवनेशीम् ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रेसेंद्राः सुरा वह्नि पुरोग मास्ताम् कात्यानीं तुष्टुव रिष्ट लाभाद्विकासिवक्त्राब्जविकासि ताशाः ॥ २ ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर जगतो खिलस्य । प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं । त्वमीश्वरी देविचरा चरस्य ॥ ३ ॥ आधार भूता जगतस्त्वमेका । मही स्वरूपेणयतः स्थितासि अपां स्वरूप स्थितया त्वयैत दाप्यायते कृत्स्नमलघ्यवीर्ये ॥ ४ ॥ त्वं वैष्णवी शक्ति रनंत वीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया ।। सं मोहितं देवि समस्त मेत त्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५ ॥ विद्याः समस्ता स्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ॥ त्वयैकया पूरितमं बयैतत् । कावेस्तुतिः स्तव्य परापरोक्तिः ॥ ६ ॥ सर्व भूतायदा देवी स्वर्ग मुक्ति प्रदायिनी ॥ त्वं स्तुतास्तुतये काया भवंति परमोक्तयः ॥ ७ ॥ सवर्गा बुद्धि रूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ॥ स्वर्गा पवर्गदे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥ ८ ॥ कला काष्ठादि रूपेण परिणाम प्रदायिनि ॥ विश्वस्यो परतौशक्ते नारायणि नमोस्तुते ॥ ९ ॥ सर्व मंगलमा मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥ शरण्ये

प्राप्त्यर्थम्। पुत्र पौत्रादि सन्तते रविच्छिन्न वृद्धयर्थम्। आदित्यादि नवमहानु कूललवा सिद्धयर्थम्। तथा इन्द्रादि दशदिक्पाल प्रसन्नवा सिद्धयर्थम्। अधिदैविकाऽधिभौतिकाऽध्यात्मिकत्रिविध तापो पशम नार्थम्। धर्मार्थ काम मोक्ष फलावाप्त्यर्थंच ॐ भूर्भुवःस्वः श्री लक्ष्मी नारायण अनन्तो प्रीत्यर्थं यथा ज्ञानेन यथामिलितोपचार द्रव्यैः पुरुष सूक्तेन—ध्याना वाहनादि षोडशोपचार सहितस्य अनन्तो पचारैः पूजन महं करिष्ये। तत्रादौषडङ्ग न्यास पूर्वकं पुरुष सूक्त षोडशाङ्ग न्यास पूर्वकं वा। कलशादि पूजन करिष्ये ॥ ॐ भूर्भुवः कलशस्य कश्यणाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

त्र्यंबके गौरि नारायणी नमोस्तुते ॥१०॥ सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्ति भूतेसना तनि ॥ गुणाश्रयेगुणमये नारायणि नमोस्तुते ॥११॥ शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे ॥ सर्वस्यार्ति हरेदेवि नारायणि नमोस्तुते १२॥ हंसयुक्त विमान स्थे ब्रह्माणी रूपधारिणि ॥ कोशांभः क्षीरके देवि नारायणि नमोस्तुते ॥ १३ ॥ त्रिशूल चन्द्राहि धरे महावृषभ वाहिनि माहेश्वरी स्वरूपेण नारायणि नमोस्तुते ॥ १४ ॥ मयूर कुक्कुट वृते महाशक्ति धरे नघे ॥ कौमारी रूप संस्थाने नारायणि नमोस्तुते ॥ १५ ॥ शंख चक्र गदा शार्ङ्ग गृहीत परमा युधे प्रसीद वैष्णवी रूपे नारायणि नमोस्तुते ॥ १६ ॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृत वसुंधरे ॥ वाराह रूपिणि शिवे नारायणि नमोस्तुते ॥ १७ ॥ नृसिंहरू पेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान्कृ- तोद्यमे त्रैलोक्य त्राणसहिते नारायणि नमोस्तुते ॥ १८ ॥ किरीटिनि महा वज्रे सहस्र नयनोज्ज्वले ॥ वृत्र प्राणहरे चैंद्रिनारायणि नमोस्तुते ॥ २० ॥ दंष्ट्रा कराल वदने शिरोमाला विभूषणे ॥ चामुंडे मुंड मथने नारायणि नमोस्तुते ॥ २१ ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥ महारात्रि महाविद्ये नारायणि नमोस्तुते ॥ २२ ॥ मेधे सरस्वति वरे भूतिबाभ्रवितामसि ॥ नियते त्वं प्रसीदेशेनारायणि नमोस्तुते। २३ ॥ सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्व शक्ति समन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहिनोदेवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥ २४ ॥ एतत्ते वदनंसौम्यं लोचनं त्रय भूषितम् ॥ पातुनः सर्वभीतिभ्युः कात्यायनि नमोस्तुते ॥ ज्वाला कराल मत्युग्र मशेषासुर सूदनम् ॥ त्रिशूल पातुनोभीतिभेद्र कालि नमोस्तुते ॥ २६ ॥ हिनस्ति दैत्य तेजांसि स्वनेना पूर्य्या जगत् ॥ सार्घंटा पातुनो देवि पापेभ्योनः सुतानिव ॥ २७ ॥ असुरा सृग्वसा पंक चर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गोभवतु चंडिके त्वां नताश्वयम् ॥ २८ ॥ रोगा न शेषा नपि हंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकला नभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां न विप-

नमस्करोमि। अनन्तरं कलशोदकेन पूजा द्रव्याणि तथाऽऽत्मानं च—अपवित्रः आपोहिष्टा। इत्यादि मन्त्रेण चासम्प्रोक्ष्य यथा—अपवित्रः॥ पवित्रो वासर्वा वस्थां गतोऽपिवा। यःस्मरेत्पुण्डरी काक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ॐ आपोहिष्टा मयो। भुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणाय चक्षुसे॥ ५॥ यो व ÷ शिव तमो रसस्तस्य भाजयतेहन ÷ उशतीरि वमातरः ÷॥ ६॥ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ। आपो जनयथा चनः॥ ७॥ पश्चात्कलकलशशामुद्रां प्रदर्श्य॥ शङ्खपूजनम्—शङ्खादौ चन्द्र दैवत्यं कुक्षौ वरुण देवता। पृष्टे प्रजापतिश्चैव अग्रेगङ्गा सरस्वती। त्रैलोक्ये यानितीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्रतस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत्॥त्वम्पुरासागरोत्पन्नोविष्णुनाविधृतःकरे। निर्मितःसर्वदेवैश्च पाञ्चजन्यायनमोऽस्तुतेपाञ्चजन्यायविद्महेपावमानायधीमहि।

न्नराणां त्वामा श्रिताह्याश्रयतां प्रयांति॥ २९॥ एतत्कृतंयत्कदनं त्वयाऽद्य धर्म द्विषां देवि महासुराणाम्॥ रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्ति। कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोतिकाऽन्या॥ ३०॥ विद्यासु शास्त्रे पुविवेक दीपे। प्वाद्येषु वाक्येषुचका त्वदन्या॥ ममत्वगर्तेति महांधकारे। विभ्रामयत्ये तदतीव विश्वम्॥ ३०॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्यु बलानि यत्र॥ दावा नलोयत्र तथाब्धि मध्ये तत्रस्थिता त्वं परि पासि विश्वम्॥ ३२॥ विश्वेश्वरित्वं परि पासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्॥ विश्वेश वन्द्या भवती भवंति॥ विश्वा श्रयायेत्वयिभक्ति नाम्नः॥ ३३॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते नित्यं यथा सुरवधा दधुनैव सद्यः। पापानि सर्व जगतां प्रशमं नयाशु। उत्पातपाक जनितांश्च महोपसर्गान्॥ ३४॥ प्रणतानां प्रसीदत्वं देवि विश्वार्ति हारिणी॥ त्रैलोक्य वासिना मीड्ये लोकानां वरदा भव॥ ३६॥ देव्युवाच॥॥ ३७॥ वर दाहं सुर गणा वरं यंमनसेच्छथ॥ तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्॥ ३७॥ देवाऊचुः॥ ३८॥ सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्या खिलेश्वरि॥ एव मेवत्वया कार्यं मस्मद्वैरि विनाशनम्॥ ३६॥ देव्युवाच॥ ४०॥ वैवस्वते ऽतरे प्राप्ते अष्टा विंशतिमेयुगे॥ शुंभो निशुंभ श्चैवान्या वुत्पत्स्येते महासुरौ॥ ४१॥ नद गोप गृहे जाता यशोदा गर्भ संभवा॥ ततस्तौ नाश यिष्यामि विंध्या चल निवासिनी॥ ४२॥ पुनरप्यति रौद्रेण रूपेण पृथिवी तले॥ अव तीर्य हनिष्यामि वैप्र चित्तांस्तु दान वान्॥ ४३॥ भक्षयंत्याश्चतानुग्रान्वैप्र चित्तान्महासुरान् रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमी कुसुमोपमाः॥ ४४॥ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्ये लोके च मानवाः॥ स्तुवंतो व्याह रिष्यंति

तन्न शङ्ख प्रचोदयात् ॥) ॐ अग्नि ऋषिऽ पवमान ऽ पाञ्चजन्य ऽ पुरोहित ऽ तमीमहे महागयम् ॥ ८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थ देवतायै नमः आवाहयामि सर्वो पचारार्थे गन्धं पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । शङ्खमुद्राप्रदर्श्य ॥ (घण्टा पूजनम्) आगमार्थं तु देवाना गमनार्थं तु रक्षसाम् । घण्टा नादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टा प्रपूजयेत्) ॐ सुपर्णोसि ॥ गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्र्यञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्मा छन्दांसि अङ्गानि यजूंषि नाम । सामते तनुर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः ऽ शफाः ऽ ॥ सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वःपत ॥ ९ ॥—ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः आवाहयामि । सर्वो पचारार्थे गन्धं पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । घण्टामुद्रा प्रदर्श्य ॥ अथ दीपकम्—ततो दीप पूजन भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । त्राहि मां निरयाद् घोरा दीप ज्योति नमोऽस्तुते ॥ ॐ अग्नि ज्योति ज्योति रग्निऽ स्वाहा सूर्यो ज्योति ज्योति ऽ सूर्यऽ स्वाहा अग्नि र्वर्च्चो ज्योति र्वर्च ऽ स्वाहा सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्च ऽ स्वाहा ॥ ज्योतिऽ सूर्यऽ सूर्यो ज्योतिऽ स्वाहा ॥ १० । ॐ भूर्भुवः स्वः

सवत रक्त दतिकाम् । ४८ ॥ भूयश्च शतवार्षिक्या मनावृष्ट्या मनम्भसि ॥ मुनिभिः संस्मृता भूमौ सम्भविष्याम्य योनिजा ॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ॥ कीर्तयिष्यन्ति मनुजा शताक्षी मिति मां ततः ॥ ४० ॥ ततोऽहम खिल लोकमात्म देहसमुद्भवैः ॥ भरिष्यामि सुराः शाकैरा वृष्टेः प्राण धारकैः ॥ ४८ ॥ शाकम्भरीति विख्याति तदा यास्या म्यहं भुवि ॥ तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यंमहासुरम् ॥४०॥ दुर्गादेवीति विख्यातन्मेनाम भविष्यति । पुनश्चाहं यदाभीम रूपं कृत्वा हिमाचले ५० रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राण कारणात् ॥ तदा मां मुनयः सर्वे स्तो ष्यन्त्या नम्रमूर्तयः ॥ ५१ ॥ भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नामभविष्यति ॥ यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ ५२ ॥ तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वा सङ्ख्येयषट्पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महा सुरम् ॥ ५३ ॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदास्तोष्यन्ति सर्वतः ॥ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ ५४ ॥ तदा तदा वतीर्याहं करिष्या म्यरिसंक्षयम् ॥ ५५ ॥

इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये देव्याः स्तुति नारायणी स्तुतिनाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ उवाच ॥ ४ ॥ अर्धे । १ । श्लोक । ४० । एवम् । ४५ । एवमादितः ॥ ६३० ।

दीपस्थ देवतायै नमः आवा हयामि सर्वो पचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्क रोमि ॥ ध्यानम्—शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्। लक्ष्मी कान्त कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं वन्दे विष्णु भवभय हरं सर्व लोकैकनाथम्। अथ—ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोऽः श्नाप्त्रे स्थो विष्णोस्यूरसि विष्णो र्ध्रुवोसि ॥ वैष्णव मसि विष्णवेत्वा ॥ ११ ॥ अथ विष्णोरावा हनम्।—आवाहयेत्तं गरुड़ो परिस्थितं रमार्ध देहंसुरराज वन्दितम्। कन्सान्तकं चक्र गदाब्ज हस्तं भजामि देवं वसुदेव सूनुम्। ॐ विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम्। समूढ मस्य पा ॐ सुरे स्वाहा। आवाहनम्—आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। याव त्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ ॐ सहस्रशीर्षायुरुप ऽः सहस्राक्षऽः सहस्रपात् ॥

अथ ध्यानम्—विद्युद्दाम समप्रभां मृगपति स्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः कर वालखेट विलसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तै चक्र गदासि खेट विशिखा श्चापगुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मिका शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रांभजे १२ ॥ देव्युवाच ॥ १ ॥ एभिःस्तवैश्चमां नित्यं स्तोष्यतेयः समाहितः ॥ तस्याहं सकलां बाधां नाश यिष्याम्य संशयम् ॥२॥ मधु कैटभ नाशं चमहिषासुरघातनम् ॥ कीर्तयिष्यंतियेतद्वधं शुंभ निशुंभयोः ॥ ३ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैक चेतसः ॥ श्रोष्यन्ति चैवये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥ नतेषां दुष्कृतं किंचिद्दुष्कृतोत्थान चापदः। भविष्यति नदारिद्र्यं नचै वेष्टवियो जनम् ॥ ५ ॥ शत्रुतोन भयं तस्य दस्युतोवानराजतः ॥ न शस्त्रा नलतो योघात्कदाचित्सं भविष्यति। ६ ॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठि तव्यं समाहितैः। श्रोतव्यं च सदाभक्त्या परं स्वस्त्ययनंहितत् ॥ ७ ॥ उपसर्गान शेषांस्तु महामारी समुद्भवान् ॥ तथा त्रिविध मुत्पातं माहात्म्यं समयेन्मम। ८। येत्रै तत्पठ्यते सम्यङ् नित्यमाय तनेमम।.सदान तद्विमोक्ष्यामिसान्निध्यं तत्र मेस्थितम् ॥ ९ ॥ बलिप्रदाने पूजाया मग्निकार्ये महोत्सवे ॥ सर्वंममैत च्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥ १० ॥ जानता जानता वापि बलिपूजां तथा कृताम् ॥ प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्यावह्नि होमं तथा कृतम् ॥११॥ शरत्काले महापूजाक्रियतेयाच वार्षिकीतस्या ममै तन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः ॥ १२ ॥ सर्वं बाधाविनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यति नसंशयः ॥ १३ ॥ श्रुत्वा ममैतन् माहात्म्य तथाचोत्पत्तयः शुभाः ॥ परा क्रमं च युद्धेषु जायते

म भूमिंध्व सर्वतं तस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ॐ ॥ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णुनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आवाहन पूर्वकं ध्यानं समर्पयामि ॥ आसनम् ॥ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम् । आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ पुरुषऽएवेदं सर्वं यद्भूतंयच्च भाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मीनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि । पाद्यम्— उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम् । पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रति गृह्यताम् ॥— ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि । ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि ॥ अर्घ्यम्—अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्ध पुष्पाक्षतैः सह । करुणा कर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि । ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवता-

---

निर्मय. पुमान् ॥ १४ ॥ रिपवः सङ्क्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ॥ नं दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥ १५ ॥ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुः स्वप्न दर्शने ॥ ग्रह पीड़ा सुचो ग्रासु माहात्म्य स्रणुयान्मम ॥ १६ ॥ उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रह पीडाश्च दारुणाः ॥ दुः स्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुप जायते ॥ १७ ॥ बाल ग्रहाभि भूतानां बालानां शान्ति कारकम् ॥ सघातभेदे च नृणां मैत्री करणमुत्तमम् ॥ १८ ॥ दुर्वृत्ता नाम शेषाणां बलहानि करं परम् ॥ रक्षो भूत पिशाचानां पठना देव नाशनम् ॥ १९ ॥ सर्वं ममैतन् माहात्म्य् मम सन्निधि कारकम् ॥ पशुपुष्पार्घ्य धूपे रगन्ध दीपै स्तथो त्तमैः ॥ २० ॥ विप्राणां भोजनै र्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ॥ अन्यै श्चविविधै र्भोगैः प्रदानै र्वत्सरेणया ॥ २१ ॥ प्रीतिम क्रियते सास्मि न्सकृदु च्चरिते श्रुते ॥ श्रुत हरति पापानि तथा रोग्यं प्रयच्छति ॥ २२ ॥ रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनंमम ॥ युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्ट दैत्य निवर्हणम् ॥ २३ ॥ तास्मि न्छुते वैरि कृतं भयं पुंसां न जायते ॥ युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ २४ ॥ ब्रह्मणाच कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभामतिम् ॥ अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्नि परिवारितः ॥ २५ ॥

भ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ आचमनम्—सर्व तीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् । आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥—ॐ ततो विराड जायत विराजो ऽअधि पुरुष ऽः । स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथो पुर ऽः ॐ भूर्भुवः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि । स्नानम्—गङ्गा—सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जले । स्नापितो ऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्वमे ॥ ॐ तस्माद्यज्ञा त्सर्वहुतः ऽः सम्भृतम्पृषदा ज्यम् । पशूँ स्ताँ श्चक्रे वायव्या नारण्याग्ग्रा म्याश्चये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः स्नानं समर्पयामि ॥ [अथ क्षेपकम्-पञ्चामृतस्नानम्-पयो दधि घृत चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयानीतंस्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ पञ्चनद्य ःऽ सरस्वती मपि यन्ति सस्रोतसःऽ । सरस्वतीतु पञ्च धा सोदेशे भवत्सरित् ॥

दस्युभिः वावृतः शून्ये गृहीतो वारि शत्रुभिः ॥ सिंह व्याघ्रानुया तो वा वनेवा वन हस्तिभिः ॥ २६ ॥ राज्ञा क्रुद्धे नचा ज्ञप्तो वध्यो बंधगतोपिवा । आघूर्णितोवा वातेन स्थितः पोते महार्णवे । २७॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृश दारुणे ॥ सर्वं बाधा सुघोरासु वेदनाभ्यर्दितो पिवा ॥ २८ ॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् ॥ मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथाः दूरा देव पलायन्ते स्मरत श्चरितं मम ॥ ३० ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३१ ॥ इत्युक्त्वा साभगवती चण्डिका चंडविक्रमा ॥ ३२ ॥ पश्यता मेव देवानां तत्रैवा न्तरधीयत ॥ तेपि देवा निरा तङ्काः स्वाधि कारा न्यथा पुरा ॥ ३३ ॥ यज्ञ भाग भुजः सर्वे चक्रुर्विनि हतारयः ॥ दैत्याश्च देव्या निहते शुंभे देव रिपौयुधि ॥ ३४ ॥ जगद्विध्वंसके तस्मिन्महाग्रे तुल विक्रमे । निशुंभेच महा वीर्ये शेषाः पातालमा ययुः ॥ ३५ ॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ॥ संभूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ३६ ॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैवविश्वंप्रसूयते ॥ सायाचिता चविज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥ ३७ ॥ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्ड मनुजे श्वर ॥ महा काल्या महा काले महामारी स्वरूपया ॥ ३८ ॥ सैव काले महामारी सैव सृष्टि र्भवत्यजा ॥ स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ ३९ ॥ भव काले नृणां सैव लक्ष्मी र्वृद्धि प्रदा गृहे ॥ सैवा भावे तथा लक्ष्मीर्विनाशायो पजायते ॥ ४० ॥ स्तुता संपूजिता पुष्पै धूपं गन्धादिभि स्तथा ॥ ददातिवित्तं पुत्रांश्च मतिंधर्मे गतिं शुभाम् इति श्री मार्कण्डेय

ॐ भू र्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः एकमन्त्रेण पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानम्—ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतस्वः पुनन्तु ॥ विश्वञ्छ हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीं रुदि दाभ्यः शुचिरा पूत एमि । दीक्षान्तं पसस्ति नूराशितवां तां शिवा ॥ ॐ शगमा परि वृधे भद्रं वर्णं पुष्यन् ॥ परमानन्द बोधाब्धि निमग्नं निजमूर्त्तये । सांगो पांग मिदं स्नानं कल्पयाम्यह मीशिते ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयम्—उच्छिष्टोऽप्य शुचि र्वापि यस्यस्मरण मात्रतः शुद्धि माप्नोति तस्मैते पुनराच मनीयकम् ॥ ॐ भू र्भुवः स्वः श्री लक्ष्मीनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि ॥ अथवा पृथग्मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम्—तत्र-पयः स्नानम् कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थ मर्पितम् ॥—

पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देव्याश्चरित माहात्म्ये नाम-द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ उवाच २ अर्ध २ श्लोक ३७ एवम् ४१ एवमादितः ६७१ ॥

अथध्यानम्—बालार्क मण्डला भासा चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ॥ पाशाङ्कुश वरा भीती र्धर यन्ती शिवांभजे ॥ १३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ एतत्ते कथितं भूप देवी माहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवं प्रभावा सादेवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ २ ॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णु मायया । तया त्वमेष वैश्यश्च तथै वान्ये विवेकिनः ॥ ३ ॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोह मेष्यंति चापरे ॥ तामु पैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ४ ॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गा पवर्ग दा ॥ ५ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥ इति तस्यवचः श्रुत्वा सुरथः सनराधिपः ॥ ७ ॥ प्रणिपत्यमहाभाग तमृषिं संशित व्रतम् ॥ निर्विण्णोति ममत्वेन राज्यापहरणे न च ॥ ८ ॥ जगाम सद्यस्तपसे सच वैश्यो महामुने ॥ सं दर्शनार्थं मं बाया नदी पुलिनमास्थितः ॥ ९ ॥ सच वैश्यस्तपस्तेपे देवी सूक्तं परं जपन् ॥ तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिमहीं मयीम् ॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्प धूपाग्नि तर्पणैः ॥ निरा हारौ यता हारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ ११ ॥ ददतुस्तौ बलिं चैव निज गात्रा सृगु क्षितम् ॥ एवं समाराधयतो स्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ १२ ॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥ १३ ॥ देव्युवाच ॥ १४ ॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूपत्वयाच कुलनन्दन ॥ १५ ॥ मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददा मतत् ॥ १६ ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ १७ ॥ ततो वव्रे नृपोराज्य मविभ्रंश्यन्य जन्मनि

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः पयः स्नानं समर्पयामि॥ पयः स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥ दधिस्नानम्—पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्॥ दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्॥—ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिष जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽआयू ᳪषि तारिषत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः दधि स्नानं समर्पयामि॥ दधि स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥ मधुस्नानम्—नवनीत समुत्पन्न सर्वसन्तोष कारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्॥—ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य

॥ १८ ॥ भ्रष्टं चच निजं राज्यं हत शत्रु बलं बलात्॥ सोपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रेनिर्विण्णमानसः॥ १९॥ ममेत्यह मितिप्राज्ञः सङ्ग विच्युति कारकम्॥ २०॥ देव्युवाच॥ २१॥ स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वराज्यं प्राप्स्यते भवान्॥ हत्वारिपून स्खलितं तव तत्र भविष्यति॥ २२॥ मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः॥ २३॥ सावर्णिको नाम मनुर्भवान्भुवि भविष्यति॥ वैश्य वर्यत्वयायश्च वरोस्मत्तोभिवाञ्छितः॥ २४॥ तंप्रयच्छामि संसिद्धयै तव ज्ञानं भविष्यति॥ २५॥ मार्कण्डेय उवाच॥ २६॥ इति दत्वा तयो र्देवी यथाभिलषितं वरम्॥ २७॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता॥ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः॥ २८॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः॥ २९॥ सावर्णि र्भवितामनु रिति द्विरभ्यासेनीयः॥

इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्ययो र्वर प्रदानं नाम त्रयो दशोऽध्यायः॥ उवाच॥ ६ अर्धाणि॥ ११॥ श्लोकाः॥ १२॥ एवम् २६ एवमादितः॥ ५८०॥——अथोत्तरन्यासाः॥—खड्गिनी शूलिनी—घोरा० हृदयायनमः। शूलेनपाहिनो देवि० शिरसे स्वाहा॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च० शिखायैवषट्॥ सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय हुं खड्ग शूल गदा दीनि० नेत्रत्रयायवौषट्सर्वस्वरूपे सर्वेशे० अस्त्राय फट्॥

अथसप्तशतीक देवीसूक्तम्—

अथ ध्यानम्—विद्युद्दाम समप्रभांमृग पतिस्कन्धास्थितांभीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्॥ हस्तैश्चक्रगदासि खेट विशिखां

धाम। अनुष्टुपछमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः घृत स्नानं समर्पयामि॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥मधु स्नानम्—तरु पुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टि करं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥—ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्त मुतोषसोमधुमत्पार्थिवंरजः। मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ॥ २॥ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तुनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मीनारायण (अनन्तं) देवताभ्यो नमः मधु स्नानं समर्पयामि स मधु स्नानान्ते शुद्धोदक स्नान समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥ शर्करास्नानम्—इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका। मलापहारिका दिव्यास्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥—ॐ अपांरस मुद्वयसंसूर्ये सन्तं समाहितम्। अपां ३० रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्त ममुपयाम

श्वापं गुर्वी तर्जनीं विश्राणामन लारिमकांशशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रांभजे। नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सत नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥१॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमोः॥२॥ कल्याण्यैप्रणतांवृद्ध्यैसिद्ध्यैकुर्मो नमो नमः नैऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यैशर्वाण्यै ते नमो नमः॥ ३॥ दुर्गायैदुर्गपारायै नमः। सारायै सव कारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥४॥ अति सौम्यातिरौद्राय नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ ५॥ या देवी सर्व भूतेषु विष्णु मायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमो नमः॥६॥यादेवीसर्वभूतेषुचेतनेत्य भिधीयते। नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः॥७॥या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ८॥ या देवी सर्व भूतेषु निद्रा रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ९ या देवी सर्व भूतेषु क्षुधा रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्यै नमो नमः॥ १०॥ या देवी सर्व भूतेषु छाया रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ११॥ या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १२॥ या देवी सर्व भूतेषु तृष्णा रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः १३ या देवी सर्व भूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १४॥ या देवी भूतेषु जाति रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १५॥ या देवी सर्व भूतेषु

गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्ट तमम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि ॥ शर्करास्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ षष्टं गन्धोदक स्नानम्—मलया चल सम्भूतं चन्दना गरु सम्भवम् चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्व भूतानानां तामिहो पह्वयेश्रियम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः षष्टं गन्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानम्। स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ उद्वर्तन स्नानम्—नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनी युतम्। उद्वर्तनंमया दत्तं स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥—ॐ म ध्ठ शुना ते अ ध्ठ शु ऽः पृच्यता म्परुषा परु ÷ गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसो ऽअच्युत ऽः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि ॥ उद्वर्तन स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानंसमर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥ विशेषम् ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकं शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

लज्जा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्ति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १७ ॥ या देवी सर्व भूतेषु श्रद्धा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १८ ॥ या देवी सर्व भूतेषु कान्ति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥ या देवी सर्व भूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २० ॥ या देवी सर्व भूतेषु वृत्ति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २१ ॥ या देवी सर्व भूतेषु स्मृति रूपेणसंस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥ या देवी सर्व भूतेषु दया रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २३ ॥ या देवी सर्व भूतेषु तुष्टि रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २४ ॥ या देवी सर्व भूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५ ॥ या देवी सर्व भूतेषु भ्रान्ति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २६ ॥ इन्द्रियाणा मधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषुया । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥ २७ ॥ चिति रूपेण या कृत्स्न मेत द्व्याप्य स्थिता जगत् । नमस्तस्यै नमस्-

ततः—पञ्चामृतादि स्नानाङ्ग पूजा —ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः वस्त्रोप वस्त्रार्थे अक्षतान् समर्पयामि । यज्ञो पवीतार्थे ऽक्षतान् समर्पयामि । गन्धं समर्पयामि । माला परि मल सौभाग्य द्रव्याणि. समर्पयामि । यथा ऋतुकालो द्भव पुष्पाणि समर्पयामि । धूपं दर्शयामि । दीपं दर्शयामि । शर्करो पहार नैवेद्यम्—ॐ प्राणा-यस्वाहा । ॐ अपानायस्वाहा । ॐ व्याना य स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । उदानाय स्वाहा । नैवेद्यं समर्पयामि । नैवेद्या-न्ते हस्त प्रक्षालनं मुख. प्रक्षालनं च समर्पयामि । करो-द्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि । मुख वासार्थे पूगीफल ताम्बूलं समर्पयामि । हिरण्य मुद्रा दक्षिणां समर्पयामि । कर्पूर आरार्तिक्यं दर्शयामि । प्रदक्षिणाः समर्पयामि । मन्त्र पुष्प युक्त नमस्कारं समर्पयामि । विशेषार्घ्यः' —रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्ताना

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट सं श्रया तथा सुरे न्द्रेणादिनेषु सेविता । करोतु सा नः शुभहेतुरी श्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ २९ ॥ या साम्प्रतं चोद्धत दैत्य तापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्न मस्यते । याचस्मृता तत्क्षण मेव हन्तिनः सर्वा पदो भक्ति विनम्र मूर्तिभिः ॥ ३० ॥

इति तन्त्रोक्त देवी सूक्त समाप्तम् ।

अथ प्राधानिक-रहस्यम् ।

राजो वाच—भगवन्नवतारा मे चण्डिका या स्त्वयो दिताः । एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तु मर्हसि ॥ १ ॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज । विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच—इदं रहस्यं परम मनाख्येयं प्रचक्षते । भक्तो ऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥ ३ ॥ सर्वं स्याद्यामहालक्ष्मी स्त्रिगुणा परमेश्वरी । लक्ष्या लक्ष्य स्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यव-स्थिता ॥ ४ ॥ मातु लिङ्ग गदां खेटं पान पात्रं च बिभ्रती । नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्द्धनि ॥ ५ ॥ तप्त काञ्चन वर्णाभा तप्तकाञ्चन भूषणा । शून्यं तदखिलं स्वेन पूरया मास तेजसा ॥ ६ ॥ शून्यं— तद खिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी । बभार परमं रूपं तमसा केवले नहि ॥ ७ ॥ सा भिन्नाञ्जन संकाशा दंष्ट्राङ्कित वरानना । विशाल लोचना नारी बभूवतनु मध्यमा ॥ ८ ॥ खड्ग पात्रशिरः खेटैरलङ्कृ[illegible] चतुर्भुजा । कबन्ध हारं शिरसा बिभ्राणा ऽहि

समर्थ कर्ता त्राताभवभवार्णं वात् । वरद देहि वरं देहि वांछितं वाञ्छितार्थद । अनेन सफला र्घेण फलदो ऽस्तु सदा मम ।। प्रार्थनां समर्पयामि ।। अर्पणम्—अनेन पञ्चामृतादि स्नानाङ्ग भूत पूजन कृतेन ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताः प्रीयन्ता न मम ।। निर्माल्यं विसृज्य । पुनश्च— ततः अभिषेकः कार्यः । स्नापन धारा पात्राय गन्धाक्षत पुष्पं (तुलशीदलं) समर्प्य । तदनन्तर मभिषेकार्थे देवानां गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयेत् ।। शालि-ग्रामोपरि आसनार्थे पूजार्थे च तुलसी-दलं तद्वत्समर्प्यं ।। स च—यथा—हरिःॐ—ॐ सहस्र शीर्षा० ।। पुरुष ऽद० ।। एतावानः० ।। त्रिपादूर्द्ध ऽ० ।। ततोविराड० ।। तस्माद्यज्ञात्स० ।। तस्माद्यज्ञा त्सर्व हुत ऽऋच ऽः सामानि जज्ञिरे। छन्दा छ सि जज्ञिरे तस्मा द्यजु स्तस्मा दजायत ।। तस्मा-दश्वा ऽ अजा यन्त येके चोभया दत्त ऽः । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाता ऽअजावयः॑ तं यज्ञ म्बर्हिषिप्रौ क्षन्पुरुष ञ्जात मग्रत :ऽ । तेनदेवाऽअयजन्त साद्ध्याऽऋषय श्चये ।। यत्पुरुषं व्यदधु :ऽ कतिधाव्यकल्पयन् । मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादःऽ उच्यते ।। ब्राह्मणोस्य मुख मासीद् बाहूराजन्यः॑कृत ऽ। ऊ रूतदस्य यद्वैश्यः॑पद्भ्या छ शूद्रोऽअजायत ।। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो :ऽ सूर्योऽअजायत । श्रोत्त्रा द्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्नि रजायत ।

शिरः स्नजम् ।। ६ ।। सां प्रो वाचमहा लक्ष्मी तामसो प्रमदोत्तमा । नामकर्म चमे मात देहि तुभ्यं नमोनमः ।। १० ।। तां प्रोवाच महालक्ष्मी स्तामसी प्रमदो त्तमाम् । ददामि तव नामनि यानिकर्माणि तानिते ।। ११ ।। महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा । निद्रा तृष्णा चैक वीरा काल रात्रि दुरत्यया ।। १२ ।। इमानि तव नामानि प्रति पाद्यानि कर्मभिः । एभिः कर्माणि तेज्ञात्वा योऽधीते सोश्नुते सुखम् । १३ ।। तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृपम् । सत्त्वाख्येनाति शुद्धेन गुणेनेन्दु प्रभंदधौ ।। अक्षमालाङ्कुशधरा वीणा पुस्तक धारणी । सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यैवसा ददौ । १५ ।। महा विद्या महावाणी भारती वाक्सरस्वती । आर्या ब्राह्मी कामधेनु र्वीज-गर्भा च धीश्वरी ।। १६ ।। अथो वाच महालक्ष्मी महाकाली सरस्वतीम् ।। युवां जनयनां देव्यौ मिथुने स्वानु रूपतः ।। १७ ।। इत्युक्त्वात महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुन स्वयम् हिरण्य गर्भौ रुचिरौ स्त्री पुंसौ कमलासनौ ।। १८ ।। ब्रह्मन्विधे विरञ्चे ति धात रित्याह तं नरम् । श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मी त्याह

नाभ्या ऽआसी दन्तरिक्ष ᳪ शीर्ष्णोद्यौ :ऽ समवर्त्तत । पद्भ्याम्भूमिर्दिश :ऽ श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ ॥ऽ अकल्पयन् । यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत । वसन्तोस्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽइध्म :ऽ शरद्धवि :ऽ ॥ सप्तास्या सन्नपरिध यास्त्रि :ऽ सप्त समिधः कृता :ऽ । देवा यद्यज्ञन्त-न्वाना ऽअवध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्या सन् । तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्या :ऽ सन्ति देवा :ऽ । अथा वसरे शङ्ख पूरितोदकंकेन—ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ᳪ सुरे स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण शालिग्रामंस्नापयेत् । पश्चात् स्नापनधारापात्रो दकेन श्री भगवान् विष्णु नारायण (अनन्त) देवतानां शान्त्याभिषेकं कुर्यात् सच यथा—ॐ द्यौ :ऽ शान्ति रन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी शान्ति राप :ऽ—शान्ति रोप धय :ऽ शान्तिः । वनस्पतय :ऽ शान्तिर्विश्वे देवा :ऽ शान्तिर्ब्रह्म शान्ति :ऽ सर्व ᳪ शान्ति :ऽ शान्ति रेव शान्ति :ऽ सामा

माचा चर्त्ता स्त्रियम् ॥ १६ ॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह । एतयो रपि रूपाणि नामानि च वदामिते ॥ २० ॥ नील कण्ठं रक्त बाहुं श्वेताङ्ग चन्द्र शेखरम् । जनया मास पुरुषं महाकाली सितास्त्रियम् ॥ २१ ॥ सरुद्रः शङ्करः स्थाणु कपर्दी च त्रिलोचनः । त्रयी विद्या काम-धेनुः सास्त्री भाषाक्षरास्वरा । २२ । सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्ण च पुरुषं नृप । जनया मास नामानितयो रपि वदामिते । २३ । विष्णुकृष्णोहृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः । उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥२४॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे । चक्षुष्मन्तोऽनुपश्यन्ति नेतरे वद्विदो जनाः ॥ २५ ॥ ब्रह्मणो प्रददौ पत्नीं महा लक्ष्मी नृप त्रयीम् । रुद्राय गौरी वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ २६ ॥ स्वरया सह संभूय विरञ्च्योण्ड मजी जनत् । बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान ॥ २७ ॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्य जाव मभून्नृप । महा-भूतात्मकं सर्व जगत्स्थावर जङ्गमम ॥ २८ । पुपोष पालया मास तल्लक्ष्म्या मह केशवः संजहार जगत्सर्वं सहगौर्या महेश्वरः ॥२९॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्व सत्व मयीश्वरी । निराकारा च साकारा सैव नाना भिधानभृत ॥३०॥ नामान्तरै निरूप्यैषानाम्नानान्येनकुत्रचित् ॥३१॥

इति प्राधानिक रहस्यं समाप्तम् ।

अथवैकृतिक रहस्यम्—

ऋषिरुवाच—त्रिगुणा तामसी देवी सात्विकीयात्रिधोदिता । सा सर्वा

यतो यतः समी हसे ततो नोऽअभयङ्क रु । शन्न कुरुप्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ ॐ सर्वेषां वा ऽ एष वेदाना ७ रसोयत्साम सर्वेषामेवै नमे वद् वेदना ७ रसेनाभिषिञ्चति ॥ (ब्राह्मण मन्त्राः) ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु ॥ ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः अभिषेकं समर्पयामि ॥ इतिक्षेपकम् ॥ पश्चात् देववीर्थं धृत्वा । ततो देवाचमनम्—ॐ केशवाय नमः स्वाहा ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा । इत्वा चमनं समर्पयेत् ॥ हस्त प्रक्षालनम्—ॐ गोविन्दाय नमः ॥ वस्त्रम्—सर्व भूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे । मयोऽप विवेतुभ्यं वाससीप्रति गृह्यताम् ॥ ॐ तस्मा इयज्ञात्सर्व्वहुतऽ ऋचः सा०॥ ॐ—भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमःवस्त्रं वस्त्राऽभावे तिल,ऽक्षतान्समर्पयामि ॥यज्ञोपवीतम्—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवता मयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ तस्मादश्वा ऽ अ० ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं (यज्ञो पवीताऽभावेऽक्षतान्) समर्पयामि ॥

चण्डिकादुर्गाभद्रा भगवतीर्यते ॥ १ ॥ योग निन्द्रा हरे रुक्ता महाकाला तमोगुणा । मधुकैटभ नाशार्थं यां तुष्टा वाम्बुजासनः ॥ २ ॥ दश वक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा । विशालया राज माना त्रिशल्लोचन मालया ॥ ३ ॥ स्फुरद्दशन दंष्ट्रासा भीम रूपापि भूमिप । रूप सौभाग्य कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥ ४ ॥ खड्ग बाणगदा शूल शङ्ख चक्र भुशुण्डिभृत् । परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्चयो तद्रुधिरं दधौ ॥ ५ ॥ एषासा वैष्णवी माया महा काली दुरत्यया आराधिता वशी कुर्यात्पूजा कर्तुश्चरा चरम् ॥ ६ ॥ सर्वदेव शरीरेभ्योयाऽविर्भूताऽभित प्रभा । त्रिगुणामा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ श्वेतानना नील भुजा. सुश्वेतस्तन मण्डला रक्त मध्या रक्त पादा नील जङ्घोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥ सुचित्र जघना चित्र माल्याम्बर विभूषणा चित्रानुलेपना कान्ति रूप सौभाग्य शालिनी ॥ ६ ॥ अष्टादश भुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती । आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः कर क्रमात् ॥ १० ॥ अक्षमाला चकमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा । चक्रं त्रिशूलं परशुं शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥ ११ ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पान पात्रं कमण्डलु । अलङ्कृत भुजामे भिरायुधैः कमलासना ॥ १२ ॥ सर्व देव मयी मीशां महालक्ष्मी मिमां नृप । पूजयेत्सर्व लोकानां सदेवानां प्रभुर्भवेत् ॥१३॥ गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैक गुणाश्रया । साक्षात्सरस्वतीप्रोक्ता शुम्भासुर निबर्हिणी ॥ १४ ॥

गंधम्—श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्य सुमनोहरम् । विलेपनं सुर श्रेष्ट चन्दनं प्रति गृह्यताम् ॥ ओं त्र्यम्बकम्० ओं भूर्भुव स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवेभ्यः गन्धं अक्षता सहितं सौभाग्य द्रव्यादीनि अनामिका ङ्गुष्ठेनसमर्पयामि ॥ अथ क्षेपकम्—अक्षताः (यव, अक्षतार सुर श्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ तिलान् ओं अक्षन्नमीम दन्तह्यवप्रियाऽअधूषत । अस्तोषत स्वभानवोविप्रा नविष्ठ्यामती यो जान्विन्द्रते हरी ॥ ओं भूर्भुवः स्वः श्री विष्णुनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः अक्षतान्समर्पयामि ॥ इति क्षेपकम् पुष्पाणि—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्या दीनि वै प्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥ ओं पुरुषं० ॥ ओं भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः पुष्पाणि (सौभाग्यद्रव्य सहितं च) समर्पयामि । (शालि ग्रामस्यासनार्थं तुलसी दलं ॥ समर्प्य ।) एवं यवतिला ऽक्षतान्समर्पयामि) तुलशीदलापणम्—तुलशीहेमरूपां चरत्न रूपां चमञ्जरीम् । भव मोक्ष प्रदां तुभ्यं र्पयामि हरिं प्रियाम् ॥ — ॐ विष्णोः कर्म्माणि । पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः ऽ सखा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मीनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः तुलशीदलं समर्पयामि ॥ पृथक मन्त्रेण सौभाग्य द्रव्यम्—हरिद्रां कुङ्कुमं चैवसिन्दूरं कज्जला न्वितम् । सौभाग्य द्रव्य संयुक्तं गृहाण परमेश्वरी ॥ ॐ अहिरिव भोगैः ऽ पर्य्येति बाहुं ज्ययाया हेतिम्परि बाधमानः । हस्तघ्नोविश्वा व्ययुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ध्वं सम्परि पातु विश्व-

---

कृधौ चाष्ट भुजा बाण मुसले शूल चक्र भृत । शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥ १४ ॥ एषा सपूजिता भक्त्या सर्वं ज्ञत्वं प्रय च्छति । निशुम्भ मर्दिनी देवी शुम्भा सुर निबर्हिणी ॥ १६ ॥ इत्युक्तानि स्वरूपाणिमूर्तीनां तव पार्थिव । उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशा मय ॥ १७ ॥ महा लक्ष्मी र्यदापूज्या महाकाली सरस्वती । दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुन त्रयम् ॥ १८ ॥ विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे । वामे लक्ष्म्या हृषी केशः पुरतो देवता त्रयम् ॥ १६ ॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना । दक्षिणे ऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥ २० ॥ पूर्वादि दलतः पूज्या असि ताङ्गादि भैरवाः । अष्टादश भुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ॥ २१ ॥ दशानना चाष्ट भुजा दक्षिणो त्तरयो स्तदा ॥ दश नना यदापूज्या दक्षिणो भागे स्तदा ॥ २२ ॥ काल

र्वत ÷ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नाराय ण (अनन्त) देवताभ्यो नमः सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि ॥ इति क्षेपकम् ॥

धूपम्—वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः । आघ्रेय. सर्व देवानांधूपो ऽयंप्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः÷ कृतः । उरू तदस्य यद्वैश्य ÷ पद्भ्या छ शूद्रो ऽअजायत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः धूपं दर्शयामि ॥ घृत पूरित नीराजनदीपम् आज्यंच वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरा पह ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो जात श्चक्षो. सूर्यो ऽअजायत । श्रोत्राद् वायुश्चप्राणश्च मुखा दग्निरजायत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः घृत पूरित नीरा जन दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्—शर्करा घृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् । उपहार समायुक्तं नैवेद्य प्रति गृह्य ताम् ॥ ॐ नाभ्या ऽआसी दन्तरीक्ष छ शीर्ष्णो द्यौ ऽः समवर्त्तत । पद्भ्याम्भूमिर्दिश ऽः श्रोत्रा॰ तथा लोकाँ ॥ २ ॥—ऽअकल्पयन् ॥ ॐ प्राणायस्वाहा । ॐ अपानायस्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानायस्वाहा । ॐ समानायस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भग-

---

मृत्यु च संपूज्यं सर्वा रिष्ट प्रशान्तये ॥ यदा चाष्ट भुजा पूज्या शुम्भा सुरनिबर्हिणी ॥ नवास्याः शक्तयः पूज्या स्तदारुद्रविनाय को । नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महा लक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ २४ ॥ अवतार त्रयाचार्या स्तोत्र मन्त्रा स्तदा श्रयाः ॥ अष्टादश भुजा चैषा पूज्यामहिष मर्दिनी ॥ २५ ॥ महालक्ष्मी र्महकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ॥ ईश्वरी पुण्य पापानां सर्व लोक महेश्वरी ॥ २६ ॥ महिषान्त करी येन पूजितास जगत्प्रभुः ॥ पूजये ज्जगतां धात्रीं चण्डि॰ कां भक्त वत्सलाम् ॥ २७ ॥ अर्घ्यो दिभि रल कौर गन्ध पुष्पै स्तथौत्तमैः ॥ धूपै दीपैश्च नैवेद्यै र्नाना भक्ष्य समन्वितैः ॥ २८ ॥ रुधिराक्ते न वलिना मांसे न सुरया नृप ॥ वलिमासादे पूजेयं विप्र वर्ज्या मयेरिता ॥ २९ ॥ तेषां किल सुरा मांसै र्नोक्ता पूजा नृप कत्रचित ॥ प्रणामा चमनो यैश्च चन्दनेन सुगन्धिना ॥ ३० ॥ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्ति भाव समन्वितैः ॥ वाम भागे ग्रतो देव्याश्छिन्न- शीर्षामहासुर ॥ ३१ ॥ पूजयेन्माहिषं येन प्राप्त सायुज्य मीशया । दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रंधर्म मीश्वरम् ॥ ३२ ॥ वाहनं पूजये द्देवा

वेभ्यो विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः. नैवेद्यं समर्पयामि । नैवेद्य मध्ये पानीयम्—एलो शीर लवङ्गादि कर्पूर परि वासितम् । प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥ उत्तरा पोशानं हस्त प्रक्षालनं मुख प्रक्षालनं आचमनीयं ॥ नीयञ्चसम पंयामि ।. करोद्वर्त नार्थे चन्दनं समर्पयामि ॥ मुख वासार्थे ताम्बूलम् पूगीफलं महाद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम् ।. ॐ यत्त पुरुषेण। हविषा देवायज्ञ मतन्वत, व्वसन्तो स्यासी दाज्यङ्ग् ऽेष्मऽऽइध्मऽऽशरद्धविः ॥ ॐ भूर्भुवः श्वः भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः ताम्बूलं समर्पयामि ॥ फलम्—इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव । तेनमे सफला वाप्तिर्भ वेज्जन्मनि जन्मनि ॥ ॐ याऽः फलिनीर्याऽ अफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । वृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्च न्त्वंऽ हसऽः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः फलं समर्पयामि ॥ दक्षिणा—हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीज विभावसोः । अनन्त पुण्य फलद मतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥ ॐ हिरण्य गर्भः ऽः समवर्त्त ताग्रे भूतस्य जात ऽः पतिरेकऽआसीत् सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मैदेवाय हविषाविधेम ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःभगवान् श्रीभ० विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो

धृतं येन पदं परम् ॥ ततः कृताञ्जलि भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः ॥ ३३ ॥ एकेनवा मध्यमेन नैकेने तयोरिह ॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपंश्छिद्र मवाप्नुयात् ॥ स्तोत्र मन्त्रैः स्तुवी तेमां यदिवा जगदम्बिकाम् ॥ प्रदक्षिणा नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्री मुहुर्मुहुरत न्द्रितः ॥ प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिल सर्पिषा ॥ जुहुयात्स्तोत्र मन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः ॥ भूयो नाम पदैर्देवीं पूजयेत्सु समाहितः ॥ ३७ ॥ प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्राणा नारोप्य चात्मनि ॥ सुचिरं भावयेद्देवीं चण्डिका तन्मयो भवेत् ॥ ३८ ॥ एवं य. पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् भुक्त्वा भोगान्यथा कामं देवी सायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३९ ॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्त वत्सलाम् ॥ भस्मीकृत्यास्य पुण्यानिनिर्दहेत्परमेश्वरी ॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्व लोक महेश्वरीम् ॥ यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥ ४१ ॥

इति वैकृतिकं रहस्यं समाप्तम् ॥

अथ मूर्ति रहस्यम् ॥

ऋषि रुवाच । नन्दा भगवती नामया भविष्यति नन्दजा । स्तुतापूजिताम

नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥ कर्पूरार्तिक्यम्—कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ।आरार्त्तिक्यमहं कुर्वे पश्यमेवरदोभव॥—ओं इदंऽ हविःप्रजननम्मेऽअस्तुदशवीरंऽसर्व्वगणंऽस्वस्तये।आत्मसनिप्रजासनिपशुसनिलोकसन्नय भयसनि ॥ अग्निःप्रजाम्वहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासु धत्त ॥ ओं भू र्भु वः स्वःश्रीभगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः कर्पूरारार्त्तिक्यं दर्शयामि । मन्त्र पुष्प युक्त प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानिवै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ।। ओं सप्तास्या सन्परि—धयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः देवांयद्यज्ञन्तन्वानाऽ अवध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ ओं भू र्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आरात्तिक्य सहितां मन्त्र पुष्प युक्त प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ मन्त्र पुष्प युक्त नमस्कारः ।—नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि-

---

भक्त्यया वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥१॥ कनकोत्तम कान्तिःसासुकान्तिकनकाम्बरा । देवी कनक वर्णाभा कनकोत्तम भूषणा ॥ २ ॥ कमलाङ्कुश पाशाब्जैरलंकृत चतुर्भुजा ॥ इन्दिरा कमला लक्ष्मी. साश्रीरुक्माम्बुजासना ॥ या रक्त दन्तिका नाम देवी प्रोक्तामयाऽनघ ॥ तस्याः स्वरूप वक्ष्यामि शृणु सर्व भया पहम् ॥ ४ ॥ यच्छ्रुत्वा सर्व पापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय. ॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्त सर्वाङ्ग भूषणा ॥ ५ ॥ रक्तायुधा रक्त नेत्रारक्त केशातिभीषणा ॥ रक्त तीक्ष्ण नखा रक्त रसना रक्त दन्तिका ॥ ६ ॥ पतिं नारी वानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ वसुधेव विशालासा सुमेरु युगलस्तनी ॥ ७ ॥ दीर्घौलम्बावति स्थूलौतावतीवमनोहरौ ॥ कर्कशावति कान्तौ तौ सर्वा नन्द पयोनिधी ॥ ८ ॥ भक्तान्सं पाययेद्देवी सर्व कामदुघौस्तनौ ॥ खड्ग पात्र शिरः खेटैरलं कृत चतुर्भुजा९ आरव्याता रक्त चा मुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ अनयाव्याप्त मखिलं जगत्स्थावर जङ्गमम् ॥ १० ॥ इमांयः पूजयेद्भक्त्यास व्याप्नोति चराचरम् ॥ भुक्त्वा भोगा न्यथा काम देवी सायुज्य माप्नुयात् ॥ अधीतेय इमं नित्यं रक्त दंत्या वपुः स्तवम् ॥ तं सा परि चेरद्देवीपतिं प्रियमिवांगना ।, १२ । शाकंभरी नीलवर्णा नीलोत्पल विलोचना ॥ गभीर नाभि स्त्रिवलीविभूषित तनूदरा ॥ १३ ॥ सुकर्कशसमोत्तुंग वृत्त पीन घनस्तनी ॥ मुष्टीं शिलीं मुखा पूर्णं कमलं कमला लया ॥ १४ ॥ पुष्प पल्लव मूलादिफलाढ्यं शाक सचयम् ॥ काम्या नन्तर सैयुक्तं क्षुत्तृणमृत्यु जरा पहम् ॥ १५ ॥ कार्मुकं चस्फुरत्कांति विभ्रति परमेश्वरी ॥ शाकंभरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ १६ ॥ नमागौरी सती चण्डी

च। पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्रपूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलि युक्त नमस्कारं समर्पयामि॥ विशेषार्घ्यः रक्ष रक्ष सुरश्रेष्ठः रक्ष त्रैलोक्य रक्षक। भक्ताना मभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवान्॥ वरद त्वा वरं देहि वाच्छितं वाञ्छितार्थद (एतेन मन्त्रेण पूर्ङ्गीफल हिरण्य गन्धाक्षत पुष्पैः संयुक्त जलेन अर्घ्यं मेकं दद्यात्।) अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मीनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि॥ प्रार्थना—कुच कुच कुच कामे पाणिषु व्या-तेषु प्रथम जलनि पुनी सहस्रेऽनम्न धाम्नि, प्रधि दनि विदलीवी बन्धनी मोक्षणार्थे चतुरविक काशः, पातुवस्त्व कृपाणिः॥ यद्विन्त्र मम्बर मणि यदपांपराति नक्र निपिब्रति यदनि

कालिका साच पार्वती॥ शाकम्भरी स्तुवन्ध्यायञ्च पन्स पूजयन्नमन् ॥ १८॥ अक्षय्य मश्नुते शीघ्र मन्न पाना मृतं जलम्॥ भीमाऽपि नील वर्णा सा दंष्ट्रा दशन भासुरा॥ १९॥ विशाल लोचना नारी वृत्तपीन पयोधरा॥ चन्द्र हासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती॥ १६॥ एक वीरा काल रात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता॥ तेजो मण्डल दुर्धर्षा भ्रामरी चित्र कान्ति भृत्॥ २०॥ चित्रं भ्रमर संकाशामहामारीतिगीयते॥ इत्येता मूर्तयो देव्या व्याख्याता वसुधाधिप॥ जगन्मातु श्चण्डिकाया कीर्तिताः कामधेनवः॥ इदं रहस्य परमं न वाच्यं कस्य चित्त्वया॥ २२॥ व्याख्यानं दिव्य मूर्तीना मधीष्व वहितः स्वयम्॥ एतस्यास्त्वं प्रसादेन सन्मान्यो भविष्यसि॥ २३॥ सर्व रूप मयी देवी सर्वं देवी मयं जगत्॥ अतोहं विश्व रूपां वां नमामि परमे श्वरीम्॥ २४॥ इति मूर्ति रहस्यं समाप्तम्॥ श्री जगदम्बार्पणमस्तु॥

श्री पार्वती पूजनम्

सा च दर्मेतु वस्य य. धाल स्वरकाल व्यापिनी तिथिरिति वष्णु धर्मो क्तेर्मंगाह व्यापिनीग्राह्या॥ पूर्वाभिमुखोभूत्वा ऽऽचम्य दीप ऽऽगमय संकल्पं कुर्यात्॥ ॐ यशोदामुकगोत्रामुक नाम्नी अहं मम दारिद्र वाचिक-मानसिक-शारीरक-दुरी करण शत्रु भीर भिद् सर्वादि भवनिवारण प्रतापम पैशाच कूष्माण्ड भूत प्रेत ब्रह्मराक्षस-शाकिन्यादि कोतन-

जोत्स्नानिशासु हिम धाम्नि चयन्मयूखः पूणपुराण पुरुषः ॥ नमो ऽस्तु तस्मै ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान्विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः प्रार्थना समर्पयामि ॥ (इयं प्रार्थना कृतास्ति)॥ शङ्ख भ्रामणम्—शङ्ख मध्येस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि। अङ्ग लग्नं मनुष्याणां ब्रह्म हत्यां व्यपोहति ॥ एवं शङ्खोदकेन-स्वशरीरं मार्जयेत् ॥ अथ ग्रन्थि पूजनम्—ॐ श्रियै नमः। मोहिन्यै नमः पद्मिन्यै नमः॥ महाबलायै नमः। अजायै नमः। अङ्गनायै नमः। वरदायै नमः। शुभायै नमः। जयायै नमः। विजयायै नमः। जयन्त्यै नमः। पापनाशिन्यै नमः। विश्वरूपायै नमः। सर्वमङ्गलायै नमः। इति ग्रंथिं सम्पूज्यः ॥ अथाङ्ग पूजा ॥—मत्स्यायनमः पादौ पूजयामि ॥ कूर्माय नमः गुल्फौ पूजयामि नमः। वराहाय नमः जानुनी पूजयामि नमः। नार सिंहाय नमः। ऊरू पूजयामि नमः वामनाय नमः कटिं पू० ॥ रामाय नमः उदरंपूज० ॥ श्री रामाय नमः हृदयं पू०॥ कृष्णाय नमः मुखं पू०। सहस्र सिरसे नमः शिरः पू०। श्रीमदनन्ताय-

---

मृत्यु सन्निपात-राज यक्ष्म-विषय ज्वर-ज्वरादि सारादि-दुर्ग्रह-दुर्योगिनी-दुः स्वप्नादि-पीड़ानिवृत्ति पुत्र मित्र-भृत्यगजाश्व-क्षेत्र धन-धान्य रत्नादि-सम्पद् भोगान्तर— गन्धर्वाप्सरोगण-संगीतादि-जात-मञ्जरी मालादि-शोभित-विमाना रोहण-पूर्वकं भगवतः श्री मद् ज्योतिलिङ्ग स्वरूपिणः सदाशिवस्य परम सायुज्य-मुक्ति कामा श्री पार्वती देवता प्रीत्यर्थेमिमं यथा मिलितोप चारे स्तद् अताङ्ग भूत देवता यारच पूजन महं करिष्ये। [श्री सूर्याय अद्य स्वधाम्नो व्रतं कर्तुं तदङ्गत्वेन जगत्साक्षिणो श्रीसूर्यायघ्र्योर्धः समर्पयामि ।।] वामे अर्घ्यस्थापनम् ॥ दक्षिणे शङ्खस्थापन. च ॥ नमोस्त्व नन्तायेति दीपं सम्पूज्य गणानां त्वेति गणपतिं सम्पूजयेत् ॥ अथ कलश पूजा ॥ भूर सीति भूमिशोधनम् ॥ धान्यमसीति धान्यम् ॥ आजिघ्रेति ,अवणं कलशं स्थाप्य वरुणस्यो-त्तम्भनमिति निर्मल तीर्थादि जलं प्रक्षिप्य या ओषधीरिति सर्वोषधीः ॥ हिरण्यगर्भेति पञ्चरत्नानि। या फलिनीरिति फलम् ओषधीयः समितिय-वान् । गन्ध द्वारा मिति चन्दनम् ॥ काण्डात्काण्डादिति दूर्वा ॥ स्योना पृथिवीति च मृदः ॥ अश्वत्थेवेति पञ्चपल्लवैस्तन्मुखं मान्छादयद्युवसत इति वस्त्र युग्मेन कलशं वेष्टयित्वा तत्वायामीति वरुणा मा वाह पूजयेत् ॥ ततः कलशेगङ्गादीश्च ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥ आयान्तुयजमानस्य दुरितक्षय कारकाः ॥ इति ॥ मन्त्रेणावाहयेत् ॥ ततः कलशाभिमन्त्रणम् ॥ कलशस्य मुखेविष्णुः कण्ठेरुद्रः समाश्रितः ॥

नमः-सर्वाङ्ग पू० इत्यङ्गम् सम्पूज्य. ॥ अथा वरणपूजा—अनन्तस्य दक्षिण पार्श्वे रमायै नमः ॥ वामपार्श्वे भूम्यै नम. । इति प्रथमा वरणम् ॥ आवरण देवता ना वाह्य हस्तं प्रक्षाल्य ॥ गन्ध पुष्प वर्जनी मध्यमा ङ्गुष्ठै धृत्वा मध्ये शंखोदकं गृहीत्वामन्त्रान्ते शंखोदकं भूमौ किञ्चित पुष्पे देवो परिनिक्षिपेत् ॥ दयाब्धे ? त्राहि संसार लक्ष्मेशो शरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमा वरणार्चनम् ॥ इति मन्त्र मुच्चार्य जलं त्यक्त्वा पुष्पं देवो परि न्यसेत् ॥ एवमने ऽपि ॥ १ ॥ पूर्वादि क्रमेण वृद्धोल्काय नमः । महोल्काय नमः । शतोल्काय नमः । सहस्रोल्काय नमः ॥ दयाब्धे ? त्राहि संसार लक्ष्मेशो सरणागतम् भक्त्या समर्पयेतुभ्यं द्वितीया वरणार्चनम् इति ॥२॥ तथैववा-सुदेवाय नम. । सङ्कर्षणाय नमः । प्रद्युम्नाय नमः । अनिरुद्धाय नमः ॥ दयाब्धेत्राहि संसार लक्ष्मेशो शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्य. त्रितियावर-णार्चनम् ॥३॥ प्राच्याम्—केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नम. । गोविन्दाय नमः । मधु सुदनाय नमः त्रिविक्रमाय नमः । वामनाय नमः । श्रीधरायनमः हृषी केशाय नमः । पद्म नाभाय नमः । दामोदराय नमः । दयाब्धेत्राहि संसार लक्ष्मेशो सरणागतम । भक्त्या समर्पये तुभ्यं

मूले तस्य स्थितो ब्रह्मामध्येमातृगणाः स्मृताः ॥ कुक्षौतु सागराः सर्वे सप्त-द्वीपा वसुन्धरा ॥ ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदोप्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ॥ कलशेदेवद्वार पूजा । ॐ गणपतये नमः ॥ ॐ गुरुभ्यो नम ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ नन्दिने नमः ॥ ॐ महाकालायनमः ॥ ॐ भृङ्गिणे नमः ॥ ॐ विनायकाय नमः ॥ ॐ स्कन्दाय नम. ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ॐ दिग्भ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि समर्पयेत ॥ ततः कुन्दश्याम्यभि. कलशासुरमाच्छादयपूजयेत् । इति शिष्टा. ॥ ॐ ब्रह्मणे नम. ॥ ॐ विष्णवेनमः ॥ ॐ महेश्वराय नम. ॥ ॐ गङ्गायै नमः ॥ ॐ यमुनायै नमः ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ गरुत्मत्ये नमः ॥ ॐ जान्हव्यै नमः ॥ ॐ नर्मदायै नमः ॥ सप्त सागरेभ्यो नम. ॥ ॐ मार्कण्डेय.दि सप्तर्षिभ्यो नमः ॥ ॐ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः ॐ अश्वत्थाम वाष्ठचिरजीविभ्यो नमः ॥ अश्विन्यादि नक्षत्रेभ्यो नमः ॥ विष्कुम्भादि सप्तविंशतियोगेभ्यो नमः ॥ मेषादि द्वादश राशिभ्यो नमः ॥ मृत्युञ्जयाय महेश्वरीसहितायनम. ॥ सम्पूर्ण कलशाय नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि रचन मुद्रयेत पुष्प समर्पयेत ॥ ततो गणेश पूजा । ॐ गणपतयेनमः ॥ विघ्नेश्वराय नमः । एक दन्ताय नमः । मूषक वाहनाय नमः ॥ लम्बोदराय नमः । गजवक्त्राय नमः ॥

चतुर्थी वरणार्चनम् ॥ ४ ॥ पूर्वादि क्रमेण । मत्स्याय नमः । कूर्माय नमः । वराहाय नमः । नारसिंहाय नमः । वामनाय नमः । परशुरामायनमः । श्री रामाय नमः । कृष्णायनमः । बौद्धायनमः । कल्क्ये नमः अनन्ताय नमः । विश्वरूपिणे नमः दयाब्धे त्राहि संसार लक्ष्मेशो सरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ ५ ॥ पूर्वादिक्रमेण—अनन्तायनमः । दक्षिणस्यां ब्रह्मणेनमः । पश्चिमायां वायवे नमः । उत्तरस्यां मीशानाय नमः । आग्नेयां वारुण्ये नमः । नैऋत्यां गायत्र्यै नमः ॥ वायव्यांभारत्यै नमः । ऐशान्यां गिरिजायै नमः । अग्रेगरुडाय नमः । वामे सुपुर्णाय नमः । दयाब्धे । त्राहि संसार लक्ष्मेशो सरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमा वरणार्चनम् ॥ ६ ॥ पूर्वादि क्रमेण—इन्द्राय नमः । अग्नये नमः । यमाय नमः निऋतये नमः । वरुणाय नमः । सोमाय नमः । ईशानाय नमः । दयाब्धे । त्राहि संसार लक्ष्मेशो सरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमा वरणार्चनम् ॥ ७ ॥ आग्नेय्यां शेषाय नमः । नैऋत्याविष्णवे नमः । वायव्यां विघ्ये नमः । ऐशान्याप्रजापतये नमः । दयाब्धे ! त्राहिसंसार लक्ष्मशो सरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमा वरणार्चनम् ॥ ८ ॥ अग्नेय्यां

पृथुहस्ताय नमः । सिद्धि विनायकाय नमः । पार्वती नन्दाय नमः । मनोरथ दायिने नमः ॥ इति मन्त्रैः रक्त सूत्रं रक्तपुष्पं च समर्पयेत् । ततो गोग्रास पूजा ॐ नन्दायै नमः । सुभद्रायै नमः । सुमनसेनमः । सुशीलाय नमः । सुभगायै नमः । पञ्चगोमात्भ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः कपिल-

सूत्रं कपिल पुष्पं च समर्पयेत् ॥ ततः कौमारीपूजा ॥ ॐ ब्रह्माण्यै नमः ॥ माहेश्वर्यै नमः ॥ कौमार्यै नमः ॥ वैष्णव्यै नमः ॥ वाराहै नमः ॥ इन्द्राण्यै नमः ॥ चामुण्डायै नमः ॥ महालक्ष्म्यै नमः ॥ शक्ति हस्तायै नमः ॥ मयूरा सनायै नमः ॥ रक्त लोचनायै नमः ॥ पराशक्त्यै नमः ॥ कुमारी मूर्त्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि रक्त सूत्रं रक्त पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततोमोहिनी पूजा ॥—ॐसर्वा जनमोहिन्यै नमः ॥जगन्मोहिन्यैनम सर्वे मोहिन्यै नमः । इति मन्त्रैः पाद्यादीनिपीत सूत्रंपीत पुष्पञ्च समर्पयेत ॥ ततोऽष्टचिरञ्जीवि पूजा ॥ ॐ अश्वत्थाम्ने नम ॥ बलये नमः ॥ व्यासाय नमः ॥ हनुमन्ते नमः ॥ विभीषणाय नमः ॥ कृपाचार्याय नमः ॥ परशु रामाय नमः ॥ मार्कण्डेयायनमः ॥ उमापतये नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि श्वेत सूत्रं श्वेत पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः पद्म बलि पूजा ॥ जलार्द्रपिष्टसेन पञ्च बलि निर्माय ॥ सिन्दूर मस्तक कृत्वा पूजयेदिति शिष्टा. ॐ बलाधतये नमः ॥ बटुकाय नमः ॥

गणपतये नमः । नैऋत्यां सप्तमातृभ्यो नमः । वायव्यां दुर्गायै नमः । ऐशान्यां क्षेत्राधिपतये नमः । दयाब्धे ! त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमा वरणार्चनम् ॥ ६ ॥ मध्ये ब्रह्मणे ॥— भास्कराय नमः । शेषाय नमः । सर्वव्यापिने नमः । ईश्वराय नमः । विश्वरूपाय नमः । महाकायाय नमः । सृष्टि कर्त्रे नमः । कृष्णाय नमः । हरये नमः । शिवाय नमः । स्थिति कारकाय नमः । अन्तकाय नमः ॥ दयाब्धे ! त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमा वरणार्चनम् ॥ १० ॥ शौरये नमः । वैकुण्ठाय नमः । महारकाय नमः । पुरुषोत्तमाय नमः । अजाय नमः । पद्मनाभाय नमः । मंगलाय नमः । हृषीकेशाय नमः । वरदाय नमः । मधुसूदनाय नमः । अच्युताय नमः । अनन्ताय नमः । गोविन्दाय नमः । विजयाय नमः । अपराजिताय नमः । कृष्णाय नमः । दयाब्धे ! त्राहि संसारात् सर्पान्मां शरणागतम् भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशा वरणार्चनम् ॥ ११ ॥ अनन्ताय नमः । कपिलाय नमः । शेषाय नमः । सङ्कर्षणाय नमः ॥ हलायुधाय नमः । तारणाय नमः । शीर पाणये नमः । बलभद्राय नमः ॥ दयाब्धे ! त्राहि संसारात् सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये

योगिनीभ्यो नमः ॥ क्षेत्रपालाय नमः ॥ पवलस्थानाधिपतये नमः अष्टिसाङ्गाद्यष्ट भैरवेभ्यो नमः ॥ वृकोदर क्षेत्रपालाय नमः ॥ रक्तकेश क्षेत्रपालाय नमः ॥ लम्बोदर क्षेत्रपालाय नमः ॥ सर्व क्षेत्र पालेभ्यो नमः ॥ सर्व पिशाचेभ्यो नमः ॥ सर्व भूतेभ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि कृत्वा सूत्रं कृष्ण पुष्पञ्च समर्पयेत ॥ ततः सूर्यादि पूजा ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥ सदा शिवाय नमः ॥ गृहलक्ष्मै नमः ॥ इष्ट देवताय नमः ॥ नागेभ्यो नमः ॥ इति मन्त्रै. पाद्यादीनि पञ्चवर्णं सूत्रं पञ्च वर्णं पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततो देवाग्रे सनकादि पूजा ॥—ॐ सनकादि ऋषिभ्यो नमः ॥ ऋषि पुत्रेभ्यो नमः ॥ दिव्याश्वनेभ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि श्वेत सूत्रं श्वेतपुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततो देवाग्रे गोमयोद्भव ब्राह्मणी वृद्ध ब्राह्मण पूजा ॥ ॐ दिव्यरूपायै नमः ॥ दिव्याम्बरायै नमः ॥ देवभक्त्यै नमः ॥ सुरूपायै नमः ॥ जटिलायै नमः ॥ बधिरायै नमः ॥ अति वृद्धायै नमः ॥ कुब्जायै नमः ॥ अतिदीर्घायै नमः ॥ इति मन्त्रै पाद्यादीनि श्वेत सूत्रं श्वेत पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ पुनस्तत्रैव नवराज पूजा—ॐ नव राजाय नमः ॥ मातृप्रसन्नाय नमः सुजन प्रियाय नमः ॥ सु चरित्राय नमः ॥ सुमतये नमः ॥ प्रियंवदाय नमः ॥ इति मन्त्रै पाद्यादीनिरक्त पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः

तुभ्य द्वादशा चरणार्चनम् ॥ १२ ॥ क्षीराब्धि शायिने नमः। अच्युताये नमः। भूम्याधाराय यनः । लोकनाथाय नमः । फणमणि विभूषणाय-नमः । सहस्रमूर्घ्ने नमः । सहस्राचिषे नमः ॥ दयाब्धे ! त्राहि संसारात् । लक्ष्मेशो सरणा गतम् । भक्त्या समपये तुभ्यं त्रयोदशा चरणार्चनम् ॥ ३ ॥ केशवादि चतुर्विंशति नामभिः ॥ केशवाय नम केशिहायनमः । हरये नमः। कामदेवाय नमः। कामपालाय नमः। काम्याय नमः। कान्ताय नमः। कृतागमायनमः । अनिर्देश्याय नमः । वपुषे नमः। विष्णु वीराय नम। अनन्ताय नमः । धनञ्जयाय नमः । ब्रह्म ण्याय नमः। ब्रह्म कृद् ब्रह्मणे नमः । ब्रह्म २ विवर्धनाये नम । ब्रह्म विद् ब्राह्मणाये नमः। ब्रह्मी ब्रह्मज्ञाये नमः। ब्राह्मण प्रियाये नमः । महा-क्रमोमहा कर्माये नमः । महा तेजाये नमः। महोरगाये नमः । महा क्रतु महायज्ञाये नमः। महा यज्ञो महा हविये नमः ॥ २४ ॥ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मांसरणा गतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्दशा चरणार्चनम ॥ इति मन्त्र मुखाये जलं त्यक्त्वा पुष्पं देवी परि न्यसेत् ॥ अथपत्र पूजा ॥—कृष्णाय नमः। पलास पत्रं समर्पयामि ॥ विष्णवे नमः औन्दुम्बर पत्रं समर्पयामि ॥ हरये नमः आस्वत्थपत्रं समर्पयामि ॥ शम्भवे नमः भृङ्गराज पत्रं समर्पयामि ॥ ब्रह्मणे।

पापिनी पूजा छत्र दोषा रोहणां पापिनी कुर्वंद निमग्नां पूजयामिति शिष्टाचार ॥ नरराजपत्न्यै नमः ॥ पापमूर्त्यै नमः ॥ कुशीलायै नमः ॥ कुभा पित्र्ये नमः ॥ धर्मद्वेषिण्यै नमः । इतिमन्त्रैः पापादीनि कृष्ण सूत्रं कृष्ण पुष्पाञ्च समर्पयेत ॥ ततो देवाग्रे अप्सरः पूजा ॥ ॐ ऊर्वश्यै नमः ॥ मेनकायै नमः ॥ रम्भायै नमः ॥ चन्द्र रेखायै नमः ॥ तिलोत्तमायै नमः ॥ वपुष्मत्यै नमः ॥ कान्ति मत्यै नमः ॥ लीलावत्यै नमः । उत्पलवत्यै नमः ॥ घृताच्यै नमः ॥ चन्द्रवदनायै नमः ॥ धर्मवत्यै नमः ॥ चकोराक्ष्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः पापादीनि पीत सूत्रं पीत पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततोधार पादपूजा ॥—ॐ धर्म शीलाय नमः। धर्म कर्त्रे नमः ॥ धर्म पतये नमः ॥ धर्म रक्षक-नमः ॥ इति श्वेत सूत्रं श्वेत पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः नाग नदी-पूजा ॥ सप्त समुद्रेभ्यो नमः ॥ अष्ट नाग राजेभ्यो नमः ॥ नदी-भ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः हरित सूत्रं हरितपुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः गिरिआदि पूजा ॥—ॐ भास्कराग्ने नमः ॥ जनयेनमः । व्यासाय नमः ॥ हनुमते नमः ॥ विभीषणाय नमः ॥ कृपा चार्याय नमः ॥

नमः । जटा धारि पत्रं समर्पयामि ॥ भास्करायनमः अशोकपत्रं समर्पयामि ॥ शेषाय नमः कपित्थपत्रं समर्पयामि ॥ सर्वव्यापिने नमः वट पत्रं समर्पयामि ॥ ईश्वराय नमः आम्रपत्रं समर्पयामि ॥ विश्वरूपिणे नमः कदली पत्रं समर्पयामि ॥ महाकालाय नमः अपामार्ग पत्रं समर्पयामि ॥ सृष्टि कर्त्रे नमः करवीर पत्रं समर्पयामि ॥ स्थिति कर्त्रे नमः पुन्नागपत्रं समर्पयामि ॥ अन्तकाय नमः नागवल्ली पत्रं समर्पयामि ॥ अथपुष्प पूजा—अनन्ताय नमः पद्म पुष्पं समर्पयामि । विष्णवे नमः जाति पुष्पं समर्पयामि ॥ अव्ययाय नमः कह्लार पुष्पं समर्पयामि । सहस्रजिते नमः केतकी पुष्पं समर्पयामि ॥ अनन्त रूपिणेनमःवकुलपुष्पंसमर्पयामि ।इष्टायनमःशतपुष्पंसमर्पयामि विशिष्टाय नमःपुन्नागपुष्पंसमर्पयामि । शिष्टेष्टायनमःकरवीरपुष्प समर्पयामि । शिख-ण्डिने नमः धत्तूरपुष्प समर्पयामि ॥ विश्ववाहवेनमः मल्लिका पुष्पं समर्पयामि । मही धराय नमः मालती पुष्पं समर्पयामि । उच्युताय

परशुरामाय नमः ॥ मार्कण्डेयाय नमः ॥ प्रजापतये नमः ॥ इति मन्त्रैः श्वेत सूत्रं श्वेत पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ॐ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो ... सुप्रतिष्ठिताः सन्तो वरदाः भवन्तु इति मन्त्रेण लाजाः क्षिपेत् ॥ ततः सिन्दूर भाण्डे पूजा ॥—पार्वत्यैनमः ॥ गौर्यै नमः ॥ सौभाग्य वृद्धि कर्त्र्यै नमः ॥ इति रक्त सूत्रं रक्त पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ शिवपूजा ॥ महेश्वराय नमः ॥ ईश्वराय नमः ॥ सत्य शिवाय नमः ॥ इति श्वेत सूत्रं श्वेत पुष्पं च समर्पयेत् ॥ अथ मूल देवता पूजा ॥ ध्यानम् ।—मन्दार माला कुलिता लकायै कपाल माला ङ्कित शेखराय ॥ दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ॐ सहस्र शीर्षत्या वाहनम् ॥ पुरुष एवेत्या सनम् ॥ ॐ आधार शक्तये अनन्ताय नमः ॥ स्कन्दाय नमः ॥ नारायणाय नमः ॥ पद्माय नमः ॥ पत्रेभ्यो नमः ॥ कर्णिकायै नमः ॥ केशरेभ्यो नमः ॥ सूर्याय नमः । सिद्धाय नमः ॥ इति मन्त्रैः पत्रादीनि समर्पयेत ॥ एतावानस्येति पाद्यम् ॥ त्रिपादूर्ध्वेत्यर्घ्यम् ॥ ततो विराडित्या चमनम् ॥ पयः पृथिव्यां० दधि क्राव्ण० घृतमि मिश्रे मधुव्वाता० आप्यायस्व समित्यादिभिः पञ्चामृतम् ॥ आपो अस्मानिति शुद्धोदक स्नानम् ॥ मङ्गलि पुरुष सम्पाद्य शक्ति शिवाभ्यामिदं मधुपर्कं समर्पयामिति मधुपर्कम् ॥ यूवसु न इति वस्त्रम् । तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः सम्भृत-मिति रक्त सूत्रं श्वेत सूत्रञ्च ॥ तस्मा दश्वा इति यज्ञो-पवीतम् ॥ देवी शक्ति सिन्दूर देवी शिवाय नमः । शिवाय

नमः कार्णी कार पुष्पं समर्पयामि । अन्तकाय नमः कदली पुष्पं समर्पयामि ॥ अथा अष्टोत्तर सत नामभिः पूजयेत् । अनन्ताय नमः । अच्युताय नमः । अद्भुत कर्मणे नमः । अजित विक्रमाय नमः । अपरा जिताय नमः । अखण्डाय नमः । अग्नि नयनाय नमः अग्नि वपुषे नमः । अदृश्याय नम ! अत्रि पुत्राय नमः । अनन्तकुणाय नमः । अनाशिने नमः । अब्दनीलाय नमः । अहर्हाय नमः । अष्टमूर्तये नमः । अनिरुद्धाय नमः । अनिविष्टाय नमः । अचञ्चलाय नमः । शब्दातिगाय नमः । अचल रूपाय नमः । अखिल धाराय नमः अव्यक्ताय नमः । अनुरूपाय नमः । अभये कराय नमः । अद्भुताय नमः । अवपुषे नमः । अयोनिजाय नमः । अरविन्दाय नमः । अज्ञान वर्जिताय नमः । अधोक्षजाय नम । अदिति पुत्राय नमः अम्बिकापतिपूर्व जाय नमः । अपस्मार नाशिनेनमः अव्ययाय नमः । अनादयेनमः । अप्रमेयाय नमः । अघशत्रवे नमः । अमरारिघ्नाय नमः । अनश्वराय नमः अजाय नमः । अघोराय नमः । अनादि निधनाय नमः । अमर प्रभवे नमः । आमाद्याय नमः । अक्रूराय नमः । अनुत्तमाय नमः अरूपाय नमः । अर्हते नमः । अमोघाधि पतये नमः । अजाय नमः । अक्षयाय नमः । अमृताय नम । अघोर वीर्याय नमः । अव्यङ्गाय नमः । अविघ्नाय नमः । अतिन्द्रियाय नमः । अमित

इति मन्त्राभ्यामदर्शं चामर ,व्यञ्जनानि ॥ त यन्न मिति चन्दनम् ॥ यत्तम मीत्य त्वा ॥ वत्पुरुपमिति , पुष्पाणि ॥ तत. पुष्पम् ॥ माल्योचित यथा पुष्पं परव वर्णैः सुगन्धिभिः ॥ विचित्र ग्रथितां माला- गृहाण परमेश्वरी ॥ ततो विल्व पत्रम् ॥ स्नानां तु सहस्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ॥ तत्फल लभते पत्रं दत्वा विल्वस्य शोभनम् ॥ धत्तूरम् ॥ एक धत्तूर पुष्पेणाय. पूजयति शङ्करम् ॥ सर्वपाप विनिर्मुक्त शिवलोके महीयते ॥ दूर्वा ॥ दूर्वाङ्कुरं यस्तु शम्भो.पूजा काले प्रयच्छति ॥ पूजाफल शतगुण सदा प्राप्नोति मानव. ॥ कमलम् नमः शम्भवाय इति मन्त्रेण नील - कमलम् ॥ देवो द्वारेति मन्त्रेण जाति पुष्पम् ॥ नमः शम्भवायेति मन्त्रेण च दमन पुष्पम् ॥ कन्दर्प भस्मसञ्जात पवित्रं दमन शुभम् गृहाण श्री महेशानो भक्त्या दत्तं मया शिवौ । सहस्रसूत्रम् ॥ कार्पास निर्मितं सूत्र पवित्रंसु मनोहरम् ॥ सर्वपाप विनाशाय शिवेशाम्या नमो नमः नमस्ते देव देवेश सुरासुर नमस्कृत ! ॥ नमस्ते जगतामात. पार्वति ! वरदायिनि ! ॥ इति मन्त्रेणाष्ट वार सद्- मोङ्कर कुन्द पुष्प पार्वती सहिताय शङ्कराय नमः ॥ शम्भवे गिरिजा

तेजसे नमः । अमितये नमः । अष्टमूर्तये नमः । अनिलायनमः । ईश्वराय नमः । अणोरणीयसेनमः । अशोकायनमः।अरविन्दाक्षायनमः ।अधिष्ठाय नमः ।अमितनयनाय नमः ।अरण्यवासिने नमः। अप्रमत्तायनम । अनन्त-रूपायनमः।अनलायनमः अनिमिषायनमः।अनन्तरूपायनमः।अप्रमेयायनमः। अपरिमितायनमः।अनन्तकायनमः ।अचिन्त्यायनम।अपांनिधयेनमः।अविमुक्त-रायनमः।अमरप्रियायनमः। अष्टसिद्धिप्रदायनमः।अरविन्दप्रियायनमः।अरवि-न्दोद्भवाय नमः । अनघायनमः । अर्थायनमः । अक्षोभ्यायनमः । अधि-पतये नमः । अनेक मूर्तये नमः । अनेक ब्रह्माण्डपतये नमः । अनन्त शयनाय नमः । अमराधिपतये नमः । अनाधाराय नमः । अनन्त नाम्ने नमः । अनन्तश्रिये नमः । अक्षराय नमः । अमायाय नमः । आश्रम स्थानायनमः । आश्रमा तीतायनमः । अन्नदायनमः । आत्मयोनये नमः । अवनी पतये नमः अवनीधराय नमः । अनादये नमः । आदित्याय नमः । अमृताय नमः । अष्टवर्ग प्रदाय नमः । अव्यक्ताय नमः । अनन्ताय नमः । इत्यष्टोत्तर शतनाम पूजा ॥ अथ धूपम्—दशाङ्ग गुग्गुलोद्भूतं चन्दनागरु संयुतम् ॥ सर्वेश उत्तम धूप गृहाण सुर पूजि-तम् । यत्पुरुष मिति धूपम् ॥ दीपम्—साज्यं चवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीप । गृहाण देवेश ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ ब्राह्मणोस्य मुख मासीत् इति दीपम् ॥ नैवेद्यं—अन्नं चतुर्विधं स्वादुपयो दधि घृतेगुडम् ॥ नाना व्यंजन शोभाढ्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ चन्द्रमा मनस इति नैवेद्यम ॥ नैवेद्य मध्ये पानीयम् । उत्तरापोषणार्थं ते, दधि तोयं सुवासितम् । गृहाण सुमुखो भूत्वा अनन्ताय नमो नमः । उम-

---

सहिताय नमः । महेश्वराय उमासहिताय नमः । ॐ महादेवाय गौरी सहिताय नमः । ॐ स्थाणवे विशालाक्षी सहिताय नमः ॥ ॐ शिवाय श्री सुखी सहिताय नमः । पशुपतये नारायणी सहिताय नमः उमाय माधवी सहिताय नमः ॐ शुभ सत्वाय श्री सहिताय नमः । ईश्वराय मङ्गल सहिताय नमः ॥ रुद्रायाम्बिका सहिताय नमः ॥ वृषध्वजाय महेषी सहिताय नमः ॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥ सर्वाण्यै नमः ॥ ओम् अम्बिकायै नमः ॥ सर्वभूतदमन्ये नमः ॥ स्वस्थानीपरमेश्वर्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि समर्पयेत् ॥ ब्राह्मणोस्येति धूपम् ॥ चन्द्रमा मनस इति दीपम् । नाभ्या आसीदिति नैवेद्यम् ॥ पुनराचमनं ताम्बूलादि द्रव्यं निवेदयेत् ॥ हिरण्य गर्भेतिदक्ष्यम् ॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानिच ॥ तानि २ प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ इति प्रदक्षिणां । निर्देवेति नीराजनम् ॥ अथ कर्पूरम ॥ सूर्येन्दु तारका वह्नि तेजः पुञ्जविराजितम् ॥

रांपोपणम् ॥ मुख प्रक्षालनम्—हस्त प्रक्षालनम् । करोद्वर्तनं कदेवमया दत्तंहि भक्तितः ॥ चारु चन्द्र प्रभ दिव्यं गृहाण जगदीश्वर ! ॥ इति करोद्वर्तनम् ॥ फलम् इदं-फल मया देव ! स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेनमेस फला वाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ ताम्बूलम् —पूगी फल महाद्दिव्यं नागवल्या दलैर्युतम् ॥—कर्पू रैला समायुक्तं ताम्बूलम्प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ हिरण्य गर्भेति दक्षिणाम् ॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ॥ तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ नाभ्या आसीदिति प्रदक्षिणाम् ॥ नमस्कारम्—नमस्ते भगवन्भूयो नमस्ते धरणीधर ! ॥ नमस्ते सर्व देवेश ! नमस्ते मधुसूदन ! ॥ सप्तास्यासन्- इति नमस्कारान् ॥ मन्त्र पुष्पम्—नमस्ते देव देवेश ! नमस्ते गरुड़ध्वज ! ॥ नमस्ते कमला कान्त ! अनन्ताय नमो नमः ॥ यज्ञेन यज्ञमय जं० इति मन्त्र-पुष्पं । प्रार्थना—अनन्ताय नमस्तुभ्यं सहस्र शिरसे नमः नमोस्तुपद्म-नाभाय नागानां पतये नमः ॥ अनन्त कामदः कामा ननन्तो मे प्रयच्छतु ॥ अनन्तो दोर रूपेण पुत्र पौत्राभिवर्धतु ॥ इति सम्प्रार्थ्य दोरकं गृहीत्वा—अथ दोरक बन्धन मन्त्रः ॥—अनन्त संसार महासमुद्र मग्नं समभ्युद्धरवासुदेव ! ॥ अनन्त रूपे विनि योजयस्व ह्यनन्त सूत्राय नमो नमस्ते ॥ बध्नीयात् ॥ जीर्णदोर मनु देवं विसृजेद् स्ववाञ्छया ॥ इति विसृजेत् ॥

अथ वायनमन्त्रः ।—गृहाणेदं द्विज श्रेष्ठ ! वायनं दक्षिणां युतम् ॥ त्वत्प्रसादादहं देव ! मुच्येयं कर्म बन्धनात् ॥ इति गृह

दीपं देवेश ! गृहाण परमेश्वरः ! ॥ अथ पुष्पाञ्जलिः ॥—नमोस्तुते नमाहेवि स्वस्थानि परमेश्वरि ॥ त्रैलोक्य जननि ! नित्ये सत्वानां पाप हारिणि ॥ त्रिपुरघ्न महादेव ! भक्तवत्सल ! विश्व-कृत् ! ॥ नमस्करोमि देवेश ब्रह्ममाधव वन्दित ! ॥ इति नमस्कारः ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्य भावेनरक्षत्वां परमेश्वरो ॥ विसर्जनम् ॥ आवाहनं न जानामिति ॥ पुनः सूर्यार्घम् ॥—स्वस्थानी व्रतस्य सम्पूर्ण फलावाप्तये जगत्साक्षिणे श्री सूर्याय इदमर्घं समर्पयामि नमः ॥ अथ दक्षिणा संकल्पः ॥—अद्येह अनेक जन्मकृत पाप क्षयार्थं साम्वत्सरिक श्री पार्वती (स्वस्थानी) माघ व्रत पूजा साङ्गता सिद्ध्यर्थं मिमां दक्षिणां नाम सदृष्टे श्री सूर्य दैवतं रजतं वा सौम्यं यथा नाम गोत्रायेत्यादि ॥

इति पद्म पुराणोक्त माघ शुक्ल पौर्णमास्यां स्वस्थानी व्रत पूजा विधिः समाप्तः ॥ लेο कुमारी गायत्री देवीनां चार्पणं कृतम् ॥

द्विज श्रेष्ट ? अनन्तफल दायक ! ॥ पक्वान्न फल संयुक्तं दक्षिणां घृत मं युतम् ॥ वायनं द्विज वर्याय दास्यामि व्रत पूर्तये ॥ अथ जीर्ण दोरक दान मन्त्रः—अनन्तः प्रति गृह्णाति अनन्तो वै ददाति चः अनन्तस्तारको भाम्या मनन्तायनमो नमः । इति दद्यात् । ततो यथा शक्ति ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ अनेन कृतपूजनेन श्री-भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताप्रियताम् न मम ॥ मन्त्र पुष्पं, नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानिच। पुष्पाञ्जलिः शुभा देया देवता प्रीतये सदा ॥ इति ॥

आर्ति—करुणापारा वारं कलि मलपरि हारम्, कद्रु सुत शयितारं करधृत कल्हारम् । धनपट लाभ शरीर कमलोद्भवपितरम् । कलये-मुष्णु मुदारं कमलाभर्तारम् । विरतनिहारं नाथ ? निहारम् भवपारम् ॥

देवी प्र० होम द्रव्यम् ॥

तथा वृत्ति युता सर्वान कामा निंद्रा नवाप्नुयात् ॥ अथ प्रयोगा वक्ष्यते साधकाभीष्टसिद्धिदाः ॥ नव लक्ष जपेनास्य कृद्ररूपो नरो भवेत् । मल्लिका मालती पुष्पै होमा द्वागीशा तामियात् ॥ करवीरै र्जपा पुष्पै र्होमा न्मोहयते जगत् । चन्द्र (कपूर) कुंकुम कस्तूरी होमात कामाधि-कोभवेत् ॥ चंपकैः पाटलैरिरर्य वशमानयते ऽचिरात् । लाजा होमोराज्य दायी मधुलोपद्रव क्षयः ॥ लिशि कद्वाग पलै र्होमो रिपु सैन्य विनाश कृत् । दृष्वाक्य दुग्धमधुभि-क्रमाद्यो माद् मानुयात् ॥ आरोग्य संपदं मासं धनंशर्कर याञ्जु-ग्नम् ॥ कमलैर्धन संपत्ति र्दाडिमै राजवश्य ताम् ॥ क्षत्रियामातु लिगैस्तु वैश्या नारंगजैः फलैः । शूद्राः कुष्माण्ड संभूतै र्वश्याः स्यु रचिरा द्रुवैः ॥ पनसानां करु होमा दुश्यास्त्रषु स्थक वतिनः। द्राक्षा फलै रिष्ट सिद्धि रंभाभि मंत्रिणो वशाः ॥ नारिकेलैस्तु संपत्ति स्तिलैः सर्वेष्ट सिद्धयः । गुग्गुलेदुः ख नाशः स्यात् सर्वेष्ट शर्करागुडैः ॥ पायसे धन धान्यासि र्वेक्षुकैः प्राणिनो वशा । पञ्चोपचूतफले होमा द्धवमाशा इवश्वरा ॥ लवणैरा जका मुक्तौ होमा-द्दृष्ट विनाशनः । कपूर होमा द्भवते वाक् पतिस्त्रं नरो ऽचिरात् ॥ कर्त न फल होमेन भूतप्रेतादयो वशाः । बिल्वैः स्या दतुला लक्ष्मी रिक्षुदंडैः सुखाप्तयः ॥ घृत होमादीप्तिवाप्तिः शान्तिः स्यात्तिल तण्डुलैः । कि बहूक्तेन-देवेशा सर्वेष्ट साधिता मृणाम् ॥ ५२ ॥ मन्त्र कूट त्रिके भेदा यथान्तर नियो जनात् । पदवो ध्येन गदिता

रतो दक पान विधि ।

ॐ ह्रूँ ह्रूँ च्छूँ च्छूँ ह्रूँ च्छूँ ह्रूँ ह्रूँ ॐ इतिमन्त्रः ॥ दिशा न्यास माह ॥—दिशा न्यासंमहा देवि कथया मितया नघे । ॐकारंविन्यसेद्भद्रे ऊर्ध्वतःपापनाशनम् ॥ १ ॥ह्रूँकार पूर्व दिग्भगे वह्नौ च्छूँ कारमेवचः । ह्रूँ कारं धर्मराजे चः च्छूँ कारं नैऋते तथाः ॥ पश्चिमे चैव ह्रूँ कारं च्छूँ कारं वायु के तथा ॥ ह्रूँ कारं उत्तरे चैव ह्रूँ कारं स्त्वीशां दैवते ॥ ३ ॥ ॐ कारं तु अध श्चैव दिङ् न्यासं तव कारयेत् । दिङ् न से च कृते देवि कुरङ्ग न्यासं विच क्षणः ॥ ४ ॥ अङ्ग न्यासं यथा कुर्य्या तथा च शृणु पार्वति—ॐ कारं विन्यसे न्मूर्ध्नि ह्रूँ कारं नेत्रयो स्तथा ॥ ५ ॥ च्छूँ कारं वक्त्र मध्येतु ह्रूँ कारं कंठ देशतः । च्छूँ कारं स्कन्धयोर्देशे ह्रूँ कारं हृदये तथा ॥ ६ ॥ च्छूँ कारं गुह्य देशेतु ह्रूँ कारं जंघयो स्तथा । ह्रूँ कारं सर्वसंधौच ॐ कारं पादयोस्तथा ॥ ७ ॥ अथ कर न्यासः । देह न्यासे कृते देविकर न्यासं तु कारयेत् । वामाङ्गुष्ठे न्यसेद् भद्रे ॐ कारन्तु त्रि दैवतम् ॥ ८ ॥ ह्रूँ कारं वह्नि बीजं च तर्जन्यां तु न्यसे तथा । मध्यमायान्तु च्छूँ कारं पवित्रा यां न्यसे च ह्रूँ ॥ ९ ॥ कनिष्ठा यां च च्छूँ कारं दक्षां गुष्ठे त्रि दैवतम् । तर्जन्या देवि ह्रूँ कारं च्छूँ कारं मध्यत-स्तथा ॥ १० ॥ ह्रूँ कारं च पवित्रा यां कनिष्ठायां तमे वह्नि ॥ इत्थं न्यासे कृते देवि सर्व सिद्धि भवेत्ततः ॥ इति न्यासविधि. ॥ अथ प्राशन विधि. ॥—ततिपवेद्भक्ति संयुक्तो मध्यैव हित चेतसा । दक्षिणे नैव हस्तेन त्रीन् वारांश्च सुरे श्वरी । ईशानाभि मुखो भूत्वा पिबेद् वामेन पाणिना दक्षिणे न ततः पीत्वा पिबेन्त वृषभो यथा ॥ भूमिमागत्य जानूभ्यां हस्त युग्म प्रसार्य च । ईषन्मात्रं च वारास्त्रीं स्त्रिवास्फोट तु कारयेत् । अहं ब्रह्मा स्त्वह विष्णु रहं रुद्रो महेश्वरः कर स्फोटं ततः कृत्वा वदेद् वै साधको त्तमः ॥ इति रेतोदक प्राशनविधिः ॥ गुं गुरुभ्यो नमः पूजयेत् ॥ ॐ अमम्यक मिति प्रार्थ येत् ॥

मंध गौरव भीवितः ॥ ५३ ॥ भेदा नाह–सर्वेष्ट सिद्धेश्च मुख्ये पंच काम राज विद्या ॥ यथा—हसकल पईलह्रीं हसकल पईल ह्रीं सहक पईल ह्रीं हसकह पईल ह्रीं सहकह पईल ह्रीं कह-कह पईल ह्रीं ॥ पतत्कोपेरो इयं हृष्ट इयंकाम राजीयम् ॥

अथाऽभिषेक विधिः ।

अश्वत्थपल्लवैः वा आम्रपल्लवैः ब्राह्मणा. वरुण जल यजमान शरीरे। अभिषिञ्चन कुर्यात् ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभु. । प्रद्युम्नश्चानि रुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते । आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निऋ तिस्तथा । वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्मणा सहित. शेषो दिक् पाला पातु ते सदा । कीर्तिलक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रियामति । बुद्धिर्लज्जा वप. शान्तिर्माया निद्रा च भावनाः । एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यस्त्वमागताः । आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः । ग्रहा-स्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुकेतुश्चतर्पिताः देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः । ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।देवपत्न्यो द्रुमा नागादैत्याश्चाप्सर-सोगणाः । अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च । औषधानि च रत्नानि कालस्य वयवाश्चयं । सरित सागरा. शैलास्तीर्थानिजल दानदाः एतास्त्वामभिषिञ्चंतु सर्वकामार्थसिद्धये । यथाविधि कला-न्यास विधानमथ कथ्यते । निवृत्तिम् जानुपर्य्यन्तं न्यसेत्पादतलाकलाम् । जान्वादि नाभिपर्य्यन्तं प्रतिष्ठा विन्यसे ततः । नाभ्यादि कण्ठपर्य्यन्त ततो विद्या प्रविन्यसेत् । कण्ठाल्ललाटपर्य्यन्त तत. शान्तिकलां न्यसेत् । ललाटात् ब्रह्मरन्ध्रान्ते शान्त्या तीता ततो न्यसेत् ॥ इति अभिषेकम् ॥

अथ आशीर्वादमन्त्राः

॥

हरिः ॐ पृथिव्याऽअहमुदन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद्दिवमारुहम् । दिवो नाकस्य पृष्ठात्स्वर्ज्योतिरगामहम् ॥ १ ॥ स्वर्य्यन्तोनापेक्षन्तऽआद्याथं रोहन्ति रोदसी । यज्ञं येविश्वतोधारꣳ सोविद्वाꣳसो वितेनिरे ॥ २ ॥ अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयतां चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम् । इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति ॥ ३ ॥ योधा मे । ऽग्नस्यग्रचलोपविद्वरमहिष्टरस्यप्रसूतस्यरजावऽ ।पीपविस्त्रोऽग्नुत्त्यो गृणाति त्वम्द्राकष्ठे तम्न्व कनन्देऽअग्ने ॥ ४ । सत्रोधि । भूरिम्मधवाञ्च सुपते त्वसुरावन् । पुषोवयस्मद्वद्व पा छ सिधिरश्चकर्म्मणो स्वाहा । ५ । पनास्त्वा । दिव्याकद्रापसव ऽ समिन्धनाम्पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञेऽ घृतेन त्वन्तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य

कामा ऽ ॥ ६। यथेमाम्वाच कल्याणी मा वदानि जनेभ्यऽ। महारा-
जन्या भ्या ॐ शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवा-
नान्दक्षिणायै दातुरिह भूयासमय-म्मेकाम ऽ समृद्ध्यता मुप मादो
नमतु ॥ ७ ॥ स्वस्ति नऽऽ इन्द्रो व्वृद्धश्रवा ऽ स्वस्ति न ÷ पूषा विश्ववे-
वेदाः। स्वस्ति न स्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिऽ स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु
॥ ८ ॥ शतं भवति शतायुर्वै पुरुषः शतेन्द्रियऽआयुरेवेन्द्रिय वीर्य्यमात्म-
न्धत्ते ॥ इत्याशीर्वादमन्त्राः ॥

ग्रंथकर्तु वंशाष्टकम्

ग्रामे च शोणितपुर नाम धेये, बभूव कश्चिन्निज बंश दीपः।
श्री देवि दीन स्तनय स्तदीपो, भवानि दीनो यजु वाजपेयः १ ॥
तस्य पुत्रा त्रयो भूवन्दातारामोगुणान्वितः।
राम चन्द्राभिध स्चैकस्तृतीयोविदुषांमिनः ॥ २ ॥
नारायणदत्त शास्त्री विद्यालय प्रवर्तकः ॥
श्रीदातारामं तनयो सभापा देवि दीपकः ॥ ३ ॥
पुरोहितोस्ति श्री केदारे नेपाल देश वासिनाम् ॥
लालमोहरिया प्रसिद्धया नीविविहितो दिवि देवना ॥ ४ ॥
विचक्षणो नीवि गुणै विश्वनाथ इवापर. ॥
कर्मकाण्डरतो धीमाञ्छ्रीमान् विनय वारिधिः ॥ ५ ॥
तेनेयं रचिता तीर्थविधान चन्द्रिका नृणाम् ॥
श्री देव्यार्चन विधौ नवरात्र विधानकम् ॥ ६ ॥
ज्ञात्वायां कृत कृत्या वाजायन्ते भुवि मानवाः ॥
गत्वा तीर्थे पिण्ड दानं विधि यत्पर्णादिकम् ॥ ७ ॥
गृह मेस्य प्रकर्त्तव्या देवी पूजा च मुक्तिदा ॥
पितृणा आत्मनोर्थे वा सर्वोपायुप कारिका ॥ ८ ॥

(इति नागपुर थाला ग्रामस्थो भोलादत्त निवेदकः)

ग्रन्थ समाप्ता

मन्त्रा गां पठने विधान मखिलं जानन्ति यस्माद् बुधाः।
तत्सर्वं सुविचार्य शास्त्र निचयं श्री कर्म ठानां मुदे॥
सृत्वा इच्च तमं सुशास्त्र विहित लोको प्रकार चमम्।
ग्रन्थोऽयं प्रकटी कृतो निजधिया श्री विश्वनाथैर्महान्॥ १॥

द्वय सहस्र नवाधिक वत्सरे स्वसित के मधु मासि अमाधिती।
कृति रियञ्च समाप्ति सु पूर्त्तिगा, पशुपतेश्च विशेषत आशिषा॥२॥

इति अखिल महर्षि प्रणीता नेक ग्रन्थ सम्मता सर्व साधारण जना

ह्लादिनी तीर्थ विधान पद्धतिः समाप्ता

(लौकिके पाप नाशाय वैदिके स्वर्ग मास्तु यात्॥) इति॥ सम॥

महता प्रयत्नेन इमा विरच्या विदुषा मये-
प्रकाशते त्रुटिस्तु यत्र दर्शिभि विंज्ञैः
शोधनीयेति कामयेत ग्रन्थकारः॥
श्रीकेदारनाथो जयति॥
शुभमस्तु॥



प्रकाशक—

ग्रन्थ स० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया

पता—

पं० विश्वनाथ नेत्रप्रसाद शर्मा लालमोहरिया
शोणितपुर पो० गुप्त काशी
गढ़वाल उत्तर प्रदेश